

ततः साध्विति तद्वाक्यं ब्राह्मणाः प्रत्यपूजयन् ।
वसिष्ठप्रमुखाः सर्वे पार्थिवस्य मुखाच्युतम् ॥ १०
ऋष्यशृङ्गपुरोगाश्च प्रत्युच्युर्नृपति तदा ।
संभाराः संभ्रियन्तां ते तुरगश्च विमुच्यताम् ॥ ११
सर्वा प्राप्यसे पुनांश्चतुरोऽमितविक्रमान् ।

B D10 13 M4 सप्तम् (for कर्मणा) D9 पूजेण प्रत्यपूजयन्
—D9 om 9°-10° —°) N V B D10 13 T1 2 G2 M1 4
(T1 2 G2 M1 second time) प्रसादेन, D3 5 11 (after
corr) °ण (for प्रभावेन) —°) S1 D1 3 5 11 12 काम, D7
कांशा (for कामान्) D3 प्रत्यामि (sic), G2 प्राप्नोमि (for
प्राप्यामि) S1 D5 11 12 [अ] हृदिजा, D1 [अ] मीप्सित, D3
वाय्वह (for वाय्वहम्) N V B D10 13 M4 भवता चापि
तेजसा —For 9°d, Dt D1 6 8 14 T G M1-3 Cm g k t
(all first time) subst

352* कथं प्राप्याम्यहं कामं बुद्धिरत्र विचार्यताम् ।

[Dt D5 8 निचित्वा (for विचार्यताम्)]

—After 9 N V B D10 11 12 M4 ins

353* अतुष्टुर्नृपति नाम्न भवन्त शरणागतम् ।

[M4 तत्र (for अथ)]

10 D9 om 10°d (cf v1 9) —°) V8 साधु (for
ततः) V2 चामान्य (for तद्वाक्य) —°) N V B D10 13
M4 तेन्यम्, D2 तत्र, D3 7 सम° (for प्रत्यपूजयन्) —°) N
V B D10 13 M4 प्रीति (for सर्वे) M3 वसिष्ठमुपया सर्वे च
—°) Dt D5 8 14 S (except M4) Ct (all first time)
मुहोरित, D1 2 9 मुखच्युत, G2 (second time) मुखा
च्युत, Cg (first time) as in text (for मुखाच्युतम्)
N V2-4 B D10 13 M4 प्रशारसुखं त वृष, V1 प्रशारस्वसुत
नृप (sic)

12 °) S1 N V B D10 13 M4 तम्बुर, D12 प्रसवे (sic) (for प्रत्युच्युत)
S1 D1-3 5 7 11-12 ततः, N V B D10 M4 पुन (for तदा)
T2 (second time) प्रत्युवाच मदीपति —For 11°d, Dt
D4 6 8 14 T G M1-3 (all first time) subst

354* अतुष्टुश्च परमनीति सर्वं दूराय वच ।

11°d=3°d —°) D12 संभार (sic) (for संभारा) V2 3
D2 सन्ध्यना, B4 समिधावाश (both sic) (for संभ्रियन्ता)
N V B D10 13 च, M4 ये (for ते) —°) N V1 B2 4 D10
M3 (first time) तुरगश्च, V2-4 तुरग च D1 तुरगश्च (sic)
(for तुरगश्च) V3 प्रमुच्यता (for विमुच्यताम्) —After
11 Dt D5 8 T3 (for the third time cf v1 3) D4
M2 (for the second time cf v1 1 8 4) read 15°d

12 °) M3 सर्वथा (°था inf lin sec m) D3 प्रा
प्तये (sic) (for प्राप्यसे) —°) M3 reads श inf lin in
पुनाश्च D4 T2 (both second time) च वारो (for चतुरो)
S1 सेजस (for विजमान्) Dt D4 6 8 14 T G M1-3 (all

यस्य ते धार्मिकी बुद्धिरियं पुनार्थमागता ॥ १२

ततः प्रीतोऽभ्यद्राजा श्रुत्वा तद्विजमापितम् ।

अमात्यांश्चापनीन्द्राजा हर्षणेन शुभाक्षरम् ॥ १३

गुरुणां वचनाच्छीघ्रं संभाराः संभ्रियन्तु मे ।

समर्थाधिष्ठितवाक्यः सोपाध्यायो विमुच्यताम् ॥ १४

first time) क्षमिरे (D4 T2 °प्री) ताश्च पार्थिव (T3 राघव)
—°) D2 3 7 ईदृशी (D2 ह्य ते) समुपागता —For 12 N
V B D10 13 subst

355* प्राप्तासि नियतं पुनालीक्षितान्तरमद्युतो ।

पुनार्थं धर्मसंयुक्ता यस्य ते मतिरीदृशी ।

[(1 1) V1 2 4 B1 9 4 D10 प्राप्तासि, D12 प्राप्नोषि (for
प्राप्तासि) V1 *** युतो, V2 अमर° (for परमयुतो) —(1
2) V2 4 पुनार्थं (for पुनार्थ)]

13 °) Dt D5 8 (all first time) तुष्टो (for प्रीतो)
—°) N V B Dt D4 6 10 15 T3 G1 M2 3 (Dt D4 6 M2 3
first time T3 both times) [ए] तद्, Dt D5 8 (all
second time) तु, D1 3 च, D4 (second time) [ए] व (for
तद्) N V B D10 13 ऋषि° (for द्विजमापितम्) —°) Dt
D5 8 (all both times) अत्रवीद् (for चात्रवीद्) S1
D1-3 5 7 12 M4 तत्र (for राजा) D12 अमत्याश्चापनीन्द्र
(sic) —°) T3 (second time) च [for [इ]दं] S1
D1-3 5 7 9 11 12 हर्षणैवाकुलक्षर, Dt D5 8 (all first time)
हर्षणैवाकुललोचन, D1 14 S (except M4) Cg k (all first
time) हर्षणैवाकुलक्षण —For 13°d, N V B D10 13
subst

356* सुमन्त्रप्रभृतिर्ब्रह्ममनवीन्मन्त्रिषत्समा ।

[D12 मन्त्रिणस्तदा (for मन्त्रिणसमा)]

14 °d) D3 अत्र (for अत्रक्षत्र) T3 (second time)
संभारान् (for संभारा) D2 संयुक्तं (sic) (for संभ्रियन्तु)
Dt D4 6 8 14 S (except M4) (D12 T1 G4 both times
others first time) संभारा संभ्रियता मे गुरुणा वचनादिह
—For 14°d N V B D10 13 subst

357* गुरुणामाज्यैषा मे यज्ञसंभारविस्तर ।

आशु संभ्रियता कृद्मो युष्माभिर्मम चाज्या ।

[V1 [ए] व * B4 [ए] जेषा मे (hypermetric) (for
[ए] वा मे) N9 य * B1 यज्ञे (for यज्ञ) B1 विस्तर D10
विस्तरान् (for विस्तर) —(1 2) V2 3 सन्ध्यना B4 सन्ध्यना
(sic) (for सन्ध्यना) V3 कृद्मो (for कृद्मो) N3 V1 3 B2 4
D10 शासनान् (for चाज्या)]

—Thereafter cont

358* यथा न भवति लिङ्गं केनचित्द्विधीयताम् ।

[V1 केनचित्द्विधीयता (sic) V4 D13 तथा नीतिविधीयतां (for
the post half)]

सरय्वाश्चोत्तरे तरे यज्ञभूमिर्निधीयताम् ।
 शान्तयश्चाभिर्यन्तां यथाकल्पं यथाविधि ॥ १५
 शक्यः कर्तुमयं यज्ञः सर्वेणापि महीक्षिता ।
 नापराधो भवेत्कष्टो यद्यस्मिन्क्रतुसत्तमे ॥ १६

—V₄ om 14^a-15^b —^a Śi D1-3 5 7 9 12 अमात्याविधिः
 (D1 3 7 १३) तद्व (D₉ १३), N₁ V1-3 B D10 11 12
 सुमन्त्रा, N₂ सुमन्त्राविगतश्च (for समर्थो विहितश्च) D2 3 7
 चास्य, D₉ साश्च, G₂ चास (sic) (for चाश्च) —^a D₂
 तुरगश्च, D₃ 7 तुरगश्च (for सोपाध्यायो)

15 Śi V₄ om 15^{ab} (for V₄ cf v1 14) Dt
 D₈ T₃ (third time) D₄ M₂ (second time) after
 11 D1₄ T1 2 G1 3 4 (first time) after 1 8 4, G₂
 M1 3 (second time) after 3 read 15^{ab} D1-3 5 7 9 11
 read 15^{ab} after 16^{ab} —^a B₃ Dt (both times)
 D₄ (second time) 7 8 (second time before corr)
 10 n दार^a (for सरय्वाश्च) N₁ V1 3 B D10 13 च (V₃
 चा) परे (V1 missing) पारे, D1 3 5 11 12 सरित पारे, D₄
 (second time) reads in marg, M₄ कूले (for चोत्तरे
 तरे) M₃ (second time) रमणीयप्रदेशे तु —^a D1₂
 शातयित्वा (sic) (for शातयश्च) Śi [अ]भिर्यन्ता, N₁
 B₃ [य] च क्रियता, N₂ V1 4 B1 2 4 D10 13 [य] च तत्रैव,
 V₃ तथैवात्र, Dt D₄ 5 9 11 T G₂ M1 2 (D1₄ T G₂ M1
 both times G₄ second time all others first time)
 [अ] पि^a, D1 [अ]भिर्यन्त्यता (sic), D₂ 3 5 9 11 12 [अ] पि
 कल्प (D₂ १६, D1₂ १६ [sic]) ता, D₇ [अ] पि जल्पता,
 M₄ [अ] पि मे तत्र (for [अ]भिर्यन्ता) —^a Śi D1-3
 5 7 9 11 12 तत्र कल्पे (D1₂ १६), N₁ यथाविधि, G1 3
 यथाकाल (for यथाकल्प) N₂ 1 निमित्ता, D1 2 M₃ (second
 time) यथा विधि (for यथाविधि) N₁ V B₂ 4 D10 13 M₄
 क्रियतां (V₃ B₄ D10 M₄ यतां) विधिनिर्मिता, B₁ विधिना
 विधिनिर्मिता —After 15 D1₂ ins

359* दान्यमास(सु) यथा यज्ञं तत्सर्वं सविधीयताम् ।

[Cf 16^{ab} in Śi D₄ 5 9]

16 G₂ reads 16 and 17 after 1 8 4 omitting here
 —^a Śi D1-3 5 7 9 M₄ दान्यम् (for दान्य) N₁ illeg
 after दान्य Śi D1-3 5 7 9 M₄ दासु, N₂ V1 3 4 B₃ 4
 D10 13 दासुम्; V₂ B1 यदुम्, B₂ D1₂ [अ] वासुम्, Dt
 D₈ 14 T₃ 3 G M1 3 (M₃ both times all others first
 time, प्रासुम्, D1₁ [अ] व्यासुम् (for कर्तुम्) Śi महा,
 D1-3 5 7 9 M₄ यथा (for यथे) Śi D1 2 5 9 यज्ञ (for यज्ञ)
 —^a N₁ V B D10 13 M₄ नाराधेन, D1 १६, D1₁ 13 नाराधो
 न (for सर्वेणापि) V₄ १६, D1₁ 13 क्षिणा (for महीक्षिता)
 Śi D₂ 5 9 तत्सर्वं सविधीयतां, D₂ 7 तथा सर्वं सविधीयतां —^a
 Śi D1 2 (second time) 5 9 11 M₁ नापराधो, D₂ 3 नोपचरो,

छिद्रं हि मृगयन्तेऽत्र विद्वांसो ब्रह्मराक्षसाः ।
 निधिहीनस्य यज्ञस्य सद्यः कर्ता विनश्यति ॥ १७
 तद्यथा विधिपूर्वं मे क्रतुरेप समाप्यते ।
 तथा विधानं क्रियतां समर्थाः करणेऽपिह ॥ १८

D₇ नोपचरो, D1₂ नाचपरो (sic), G₂ M1 (both first
 time) न प्रमादो (for नापराधो) Śi D₂ 12 राट्, D1 3 7
 दुष्टो, D₂ क्रुद्धो, D1₁ कश्चिद् (for कष्टो) —^a Śi D1-3
 5 7 11 यथा (for यदि) Śi D1-3 5 7 11 12 पुगवे (D₂ १८
 sic) (for सत्तमे) —For 16^{ab}, N₁ V B D10 13 M₄
 subst while D1₂ ins after 16^{ab}

360* न चैवाश्रद्धानेन न चात्यद्विणेन च ।

[V₂ नान्य, V₃ नचान्य D10 om (hapl) न (for न
 चाल्य) M₄ न चाद्व्येन कश्चिद् (for the post half)]

17 G₂ om 17 (cf v1 16) —^a M₄ छिद्राणि
 (for छिद्र हि) Śi D₂ 12 मृगयते तु, N₁ V1 3 4 B D₂ 3
 7 9 13 G₄ M1 (G₂ 4 M1 second time) मृगयत्यत्र, V₃
 D1 10 मृगयत्यत्र, Dt D₈ 8 (all second time) मृगय
 स्येते (first time) यत्ते स्म (for मृगयन्तेऽत्र) —^a N₁
 (N₂ illeg) य १०, V B D₂ 3 7 10-13 M₄ यज्ञ (B₄ १०
 before corr) प्रा (for विद्वांसो) —^a Śi D1 5 12 विज्ञे
 तु तस्य, N₁ D₄ (both times) 13 विज्ञितस्य हि (D1₂ तु),
 N₂ V1-3 B1 D10 M1 विज्ञितस्य च, V₄ विज्ञभूतस्य, D₂ विधि
 तस्य तु D1₁ विज्ञितस्य तु (sic), D1₂ (second time) T1 2
 (both both times) G₄ (second time) वि (first time
 नि) हृतस्य च, M₃ (both times) निहृतस्य हि (first time
 तु), M₄ विनिज्ञितस्य (for विधिहीनस्य) —^a Śi या
 (probably क) र्ता सद्यो, N₁ V1 2 B1 2 सहतापि, N₂ B₃
 संयष्टापि, V₃ सकतापि, V₄ B₄ स भतापि, D1-3 5 7 9
 11 12 कता सद्यो (by transp), D1₂ कतापि हि (for सद्य
 कर्ता)

18 ^a D₂ तथा च, D₃ 7 M₄ यथा च (for तद्यथा) N₁
 V B D10 13 M₄ [अ] यमविज्ञेन, D₈ (second time) १६
 मे (for निधिपूर्वं मे) —^a N₁ V B D10 13 M₄ मन यज्ञ
 (for क्रतुरेप), D₂ 3 7 समाप्यता —^a D₂ यथा (for तथा)
 D₄ 8 (before corr) (both second time) क्रियता (for
 क्रियता) —^a Śi D1 5 11 12 T₃ (second time) समर्थे,
 D₂ 4 (second time, before corr) समर्थे, D₃ 7 समर्थे,
 D1₁ समर्थो (for समर्था) Śi D₂ 10-12 सत्यरमेणि (Śi १७),
 Dt D₈ 8 (all first time) साधनेनैति, D1-3 7 9 तत्र कर्मणि,
 D1₂ T G M1 (first time) D1₁ G₄ both times) १८
 (for करणेऽपिह) —For 18^{ab}, N₁ V B D10 13 M₄
 subst

361* तथा समस्तैर्व्यसोऽयं भवति सविधीयताम् ।

तथेति च ततः सर्वे मन्त्रिणः प्रत्यपूजयन् ।
पार्थिवेन्द्रस्य तद्वाक्यं यथाज्ञप्तमर्जुनत ॥ १९
ततो द्विजास्ते धर्मजमस्तुवन्पार्थिवर्षमम् ।

अनुज्ञातास्ततः सर्वे पुनर्जगृह्यथगतम् ॥ २०
गतानां तु द्विजातीनां मन्त्रिणस्ताचनराधिपः ।
विसर्जयित्वा स्वं वेदम प्रविवेश महाद्युतिः ॥ २१

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे एकादशः सर्गः ॥ ११ ॥

[\tilde{N} 1 समस्ते (sic) (for समन्ते). \tilde{N} 1 यनोय (sic); \tilde{N} 2 D10 यनोय, M4 यनेने (for यनोऽय). D12 transp. समस्ते and भवद्भिः. M4 सप्रधारणा (for मन्त्रिणीकान्).]

19 * D12 repeats तथे. \tilde{S} 1 D5 11 12 तद्वचः श्रुत्वा; \tilde{N} V B D10 13 च नृपस्याज्ञां; Dt D4 6 8 14 T G M1-3 (all first time) चाद्ययन्; D1-3 7 9 तद्वचः; T3 (second time) च वचः सर्वे (for च ततः सर्वे). D9 om (hapl.) 19^b 21^a. —^a \tilde{S} 1 पून*न्; \tilde{N} V B D10 13 M4 प्रतिपृष्ट ते (B4 च), Dt D4 8 Ct (all first time) प्रतिपृष्टिता; D1-3 7 सम; T2 (second time before corr.) पूरयन्; Gg k tp (all first time) as in text (for प्रत्यपूजयन्). —^a \tilde{S} 1 D1-3 5 7 11 12 सर्वे (for दावयं) —^a Dt D4 8 (all first time) यथापूर्वं (for यथाज्ञप्तम्). Dt D4 6 8 14 T G M1-3 (all first time) निशम्य ते (for अर्जुनत). \tilde{S} 1 D1-3 5 7 11 12 य. (\tilde{S} 1 त) याज्ञां (D2 ः) प्रत्यपालयन्. —For 19^a, \tilde{N} V B D10 13 M4 subst

362* यथाज्ञप्तमदोषेण चक्रुर्नृपतिशान्तम् ।

[V3 यद् (for यथा-) V4 यज्ञम् (for [आ]ज्ञप्तम्).]

20 D9 om 20 (cf. v. 1 19). —^a Dt D4 6 8 14 T G M1-3 (all first time) तथा (for ततो). \tilde{N} 1 च; \tilde{N} 2 तु (for ते). \tilde{S} 1 Dt D1-3 11 12 14 T G M1-3 (Dt D4 6 8 14 T G M1-3 first time) धर्मज्ञाः \tilde{N} V B D10 13 M4 राजानम् (for धर्मज्ञम्). —^a \tilde{S} 1 D1-3 5 7 11 12 वर्षयित्वा च (D2 7 तु) ते (D11 ते) वृषं. \tilde{N} V B D10 13 M4 आ (V3 से) मय्य (V1 *) प्रतिपृष्ट्य (N2 V1 4 B1 D10 "गृह") च (B1 ते) Dt D4 6 8 14 T G M1-3 Crmg k t (all first time) वर्षयंतो नृपोत्तमं. —^a \tilde{S} 1 अनुजगृह्य (for अनुज्ञावात्). \tilde{S} 1 D1-3 5 7 11 12 तथा (\tilde{S} 1 D5 "द्वा, D11 "तो) राजा (for तत. सर्वे). \tilde{N} V2 4 B D10 13 M4 अधिग्रमस्त्वि त्युक्त्वा (\tilde{N} 1 **, D10 "त्युक्ता") च (V4 om च, sub-metric); V1 अधिग्रमस्ति + करि; V3 अधिग्रमस्तु तेत्युक्त्वा. —^a \tilde{S} 1 \tilde{N} V B D1-3 5 7 10-13 M4 प्रतिजगृह्य (for पुनर्जगृह्य). B3 4 "गता"; D12 तथा" (for यथागतम्)

21 D9 om. 21^a (cf. v. 1 19). —^a T3 G2 M1 (all second time) गतेषु. Dt D4 8 T2 G2 M1 (all

second time) तेषु मित्रेषु (for तु द्विजातीनां). \tilde{S} 1 D1-3 5 7 11 12 गतेषु द्विजमुद्येषु; M2 (second time) तेषां गतानां विद्यानां. —^a \tilde{S} 1 D1-3 5 7 11 12 [अ]वि; D9 [अ]य (for तन्). —For 21^a, Dt D4 6 8 14 T G M1-3 (all first time, cf. v. 1 18 4) subst. :

363* इत्युक्त्वा नृपशार्दूलः सचिवानिदमवधीत् ।

—^a \tilde{S} 1 D1-3 5 7 9 11 12 विसृज्य (D1-3 11 विसर्ज्ये) सर्वान् (for विसर्जयित्वा). D2 6 स्व- (D9 second time before corr. as in text) —^a Dt D4 8 (all both times) महामनिः (for महाद्युतिः). —For 21, \tilde{N} V B D10 13 M4 subst. :

364* तेन्यथ द्विजसुरयेषु गतेषु स नराधिपः ।

शेषानुष्ठानमाज्ञाप्य विवेशान्तं पुरं ततः ।

[(1 1) V2 तेन्येन, V4 तेषु वै (for तेन्यथ). B3 (m.) तेषु च (for तेषु) V4 om. (hapl.) from 1. 2 up to 1 12 2^b. —(1 2) V1 आज्ञाय, D19 आज्ञाप्य, M4 आश्रित्य (for आज्ञाप्य) V2 तदा]

—After 21, \tilde{S} 1 D1-3 5 7 9 11 12 ins. *

365* पुत्रार्थं सममिदं तं निवृत्तं चाभ्यमन्यत ।

[\tilde{S} 1 D2 12 प्रजावे (D5 "थे") (for पुत्रार्थं). D12 निवृत्तं (for निवृत्त). D9 "नदत्, D11 चाप्य" (for चाभ्यमन्यत).]

Colophon \tilde{S} 1 V4 D5 12 om (Sarga continued). —Kānda name \tilde{N} 2 D4 10 om V1-3 B D11 आदिः; D1 3 अयोध्या —Sarga name S om. \tilde{N} 1 V2 अश्वमेध-संभार, \tilde{N} 2 V1 B2-4 D10 अश्वमेधारंभः; V3 अश्वमेधयज्ञ-प्रारंभः; B1 अश्वमेधयज्ञसंभारः; D1 2 9 यज्ञकर्मणि (D9 "ले) पर्वः; D3 7 कर्मवितर्नः; D11 यज्ञसंभार. —Sarga no. (figures, words or both) \tilde{N} 1 V1 B1 4 D3 om. \tilde{N} 2 B2 3 D10 11 (as in text) V2 13, V4 19, D1 9 D7 8 D3 नवमः; D9 M4 एकादशः (as in text), D14 S (except M4) द्वादशः; Dt D4 6 द्वादश 12, D11 both (as in text) D13 इत्यार्ये-यणे-काशे मेधसं-नामे ध्यायः (lacuna in the place of dash). —After colophon, G1 4 M1 2 conclude with श्रीरामाय नमः, G3 with श्रीमते रामानुजाय नमः.

पुनः प्राप्ते वसन्ते तु पूर्णः संस्तरोज्झयत् ।
अभिप्राद्य वसिष्ठं च न्यायतः प्रतिपूज्य च ॥ १
अब्रवीत्प्रथितं वाक्यं प्रसन्नार्थं द्विजोत्तमम् ।
यज्ञो मे क्रियतां विप्र यथोक्तं मुनिपुंगव ॥ २
यथा न विप्रः क्रियते यज्ञाङ्गेषु विधीयताम् ।
भवान्निग्नः सुहृन्मह्यं गुरुत्वं परमो भवान् ॥ ३

12

Śi V4 D512 continue the previous Sarga. T2 begins with श्रीरामचन्द्राय नमः

1 V4 om (hapl) from line 2 of 364* up to 2⁵ (cf v1 i 11 21). Before 1, D12 ins ref सू-उ-च —^a) M4 तत (for पुन) N V1 3 B2-4 D10 च (for तु) —^b) V2 B4 D2 11 13 पूर्ण (for पूर्ण) B1 भवेत्, D5 *वत् (for उभयत्) G2 M2 4 पूर्णं सक्त्वेने शुभे (M4 तदा) Cg k as in text —After 1^a), Dt D5 5 5 14 S Cmg k t ins

366* प्रसन्नार्थं गतो यष्टुं हयमेधेन वीर्यवान् ।

[D5 प्रसन्नार्थं Dt D5 8 ततो, D9 गते (for गतो)]

—^a) Śi D5 तु, N V2 3 B D1 2 10 स, M4 त (for च) —^b) V1 स न्यायतः (hypermetric) D10 *सु (for न्यायत) Śi D1 3 5 7 9 11 12 प्रत्य (D1 12 *ति) पूजयत् (D1 *त्) N V1 B4 D10 13 प्रतिगुह्य च, V5 *पायत, B1 परि, M2 प्रत्य (sic) (for प्रतिपूज्य च) M4 प्रोवाच नृपतिस्त्वं ।

2 B4 om (hapl) from प्रथितं up to अब्रवी in 4^a M4 om 2 V4 om 2⁵ (cf v1 i) —^a) N1 V1 2 B1 3 Dt D1 9 प्रवृत्त, V5 प्रवृत्त, D5 11 12 अभुः, G1 4 M2 प्रवृत्त (sic) (for प्रथित) —^b) V1 3 B2 3 D10 13 *र्थ, D5 पूजयित्वा, Cmg k as in text (for प्रसन्नार्थं) N1 V1-3 B1-3 D10 13 नारायिण (for द्विजोत्तमम्) N2 प्रसन्नान्नारायिण —^c) Dt D5 8 14 T1 G2 4 M3 ब्रह्मन्, G2 M1 अद्य (for विप्र) —For 2^a), Śi N V B1-3 (B4 om) D1 2 5 7 9-12 subst

367* यज्ञं संस्त्रियतां श्रीर्धे यथाशास्त्रं मुनिधियम् ।

[N V3 D10 13 संस्त्रि (V3 *य) क्तां, V2 3 D1 3 7 स क्रियतां, B2 सत्रियतां (for संस्त्रियतां) D11 स यज्ञं क्रियतां (for the prior half) N V4 शास्त्र (for शास्त्र) N D1 5 मुनिधितः (D5 *त), V2 B2 3 D10 अनुष्ठितः V3 अनष्ठितः, D2 7 मुनिधितः, D12 निष्ठितः (sic) (for मुनिधियम्) V1 तदन्नातरात्मना, B1 यथा शास्त्रेषु निष्ठितः (both epic tag!) (for the post half)]

बोद्धव्यो भवता चैव भारो यज्ञस्य चोद्यतः ।
तथेति च स राजानमब्रवीद्विजसत्तमः ॥ ४
करिष्ये सर्वमेतैतद्भवता यत्समर्थितम् ।
ततोऽब्रवीद्विजान्बुद्धान्यज्ञ-कर्मसु निष्ठितान् ॥ ५
स्थापत्ये निष्ठितान्श्चैव बुद्धान्परमधार्मिकान् ।
कर्मान्तिकांश्चिह्नपकारान्वर्धकान्पुनःकानपि ॥ ६

3 B4 om 3 (cf v1 2) —^a) D5 विज्ञे Dt D5 3 Ct विज्ञा क्रियते, Cmg k as in text —^b) Śi N V1-3 B1-3 D1-3 5 7 9 10 12 13 यज्ञमेनेह (D2 *नैव, D5 *न हि) केनचित्, V4 यज्ञे मे नेह केनचित्, D11 यज्ञेहिमन्केनचित्केनचित् —^c) D5 9 14 निष्ठि (D5 *म sic) (for निष्ठि) V1 सङ्गृह्य (for सुहृन्) N V1 2 4 B1-3 D10 13 चैव (for मह्य) V5 सुवीर्य (for सुहृन्मह्यं) —^d) N V2-4 B1-3 D10 13 मम, V1 D4 T2 3 G2 M1-3 Cg t मह्यन्, D13 मत (for भवान्)

4 B4 om up to अब्रवी in 4^a (cf v1 2) D1 repeats 4^a after 29 —^a) D12 भवता (for भवता) Śi चेह, N1 V2 3 D2 3 7 चैव, B2 [ए] चैव, D12 चैव (for चैव) —^b) D5 11 12 यानय (for चोद्यत) N V B1-3 D1 (both times) —3 7 9 10 12 यज्ञायम् (V2 B1 2 उ) दत्त Śi यज्ञार्थं भार उद्यत —After 4^a), B3 ins

368* यथा श्रीर्धे भवत्येव शक्तिर्यज्ञैव वै क्रतुः ।

[Note hiatus between the two halves]

—^a) D2 च*, D11 स च (by transp) —^b) D11 उवाच (for अब्रवीत्) T3 मुनिपुंगव, G4 ऋषि (for द्विजसत्तम)

5 ^b) D14 समीक्षित, M4 समीक्षित (for समर्थितम्) Śi N V B D1-3 5 7 9-13 भवतो (D2 *त as in text) यदमीक्षित (V5 *मिकाक्षित [hypermetric] D3 10 *क्षित), Ck as in text —^c) N2 V1 3 B D10 11 T2 सर्वान्, Dt तद्भान्, Dt विद्मान्, D2 बुद्धास्तद्भान् (ditto) (for बुद्धान्) —T3 om 5^a-8^a —^d) G1 3 M3-कर्मणि, Cmg k as in text (for *कर्मसु) D1 निष्ठितान्, G1 3 [अ] वस्थितान् (for निष्ठि)

6 T3 om 6 (cf v1 5) —^a) Śi स्थापयता, B1 स्थापने (sic), D5 स्थापत्ये (sic) (marg sec m gloss स्थापत्ये स्थापत्ये), D12 स्थाप्या ये, D13 G4 स्थाप्यते (for स्थापत्ये) Śi N V1 B D1-3 5 7 9 12 13 चे (V1 D2 12 ये, B1 वि) ह स्थापयतां (for निष्ठितान्श्चैव) V2 3 स्थाप्याश्चैव स्थापयतां, V4 स्थापयन् *स्थापयता, D11 स्थापयतां वै स्थापयतो, Cmg k t as in text —^b) M4-समगन् N V B D1-3 5 7 9-12 बुद्धा परमधार्मिका —Dt om (hapl) 6^a-7^a D14 repeats (ditto) 6^a —^c) N V B D11 12 वर्गो (D12 *मो) हित्वा, Dt D5 (m gloss

गणकाञ्चिाल्पिनश्चैव तथैव नटनर्तकान् ।
तथा शुचीञ्चास्त्रपिदः पुराणसुबहुश्रुतान् ॥ ७
यज्ञरुर्म समीहन्तां भयन्तो राजशासनात् ।
इष्टका बहुसाहस्री शीघ्रमानीयतामिति ॥ ८
औपकार्याः क्रियन्तां च राज्ञां बहुगुणान्विताः ।
ब्राह्मणानसथाश्चैव कर्तव्याः शतशः शुभाः ॥ ९

भक्ष्यान्नपानैर्बहुभिः समुपेताः सुनिष्ठिताः ।
तथा पौरजनस्यापि कर्तव्या बहुनिस्तराः ॥ १०
आपासा बहुभक्ष्या चैव सर्वाभैरुपस्थिताः ।
तथा जानपदस्यापि जनस्य बहुशोभनम् ॥ ११
दातव्यमन्नं निधितस्तत्कृत्य न तु लीलया ।
सर्वमर्णा यथा पूजां प्रामुजन्ति सुसंस्कृताः ॥ १२

शिल्पिन) १० १३ १४ कर्मात्मिका (Dt Ds १११ °कान्), D1 7 9
कर्मात्मना (for कर्मात्मिका) S1 Ds १७९ लेपकरा (S1
Ds °रान्), N V B D1 10 11 13 लिपिकरा (V2 °कारा),
D1 * लपकरा, Ds ११४ G1 २४ M3 Cmg °करान्, D12
उलेपकारान् (sic) T2 G3 M2 शिल्पिकरान्, M4 गणिकरान्
(for शिल्पिकरान्) Ct as in text —^a) S1 Ds 12
खनकरा, N V B D1 ३७९ ११ १३ व (V1 D13 वा) धंका,
D4 ९ वर्षकान्, Cr mg t as in text (for वर्षकीन्) S1
Ds 12 वर्षकान्, N V B D1 ३७९ १० १३ खनका (N2 V1 ३
B2-4 D10 °कान्) Ds वनवान्, D12 खन*, M4 मानकीन्
(for खनकान्) N2 V1 ३ B2 4 D10 तथा (for अपि)

7 T3 om 7 (cf v1 5) D2 om 7^{ab} (cf v1 6)
—^a) N V B D1 7-11 13 गणका, D2 गुणकाश्च, T2 G4 M4
गणिका (M4 °कान्, m also as in text) (for गणकान्)
V2 D14 शिल्पिकाश्च (D14 °कान्) (for नन्द) N V B
D1 २७९ ११ १३ [वा]न्ये (for [ए]व) —^b) D1 ३७ तथा
(for तथैव) N V B D1 ३७९ ११ १३ नर्तका (for °कान्)
—^c) S1 N V B D1-३७९ १३ M4 ततोऽप्येव (for तथा
शुचीन्) V2 चाखं (for शाखं) —^d) S1 T1 २ G4 स
बहुम् (T1 २ G4 °श्च as in text) नान्, N1 (before corr
as in text) श्रुता, Ds r (ditto) सुबहुं, D11 च बहुं
(for सुबहुं) M4 पुराणज्ञान्यहश्रुतान्

8 T3 om 8^a (cf v1 5) —^a) S1 समारम्भात्,
N1 illeg for स (for समीहन्ता) —^b) D3 स्यामतान्
(sic) D9 दासना (for दासनात्) —^c) S1 N1 B1
D1-३७९ ११ १३ इ (D1 ३७ वि, D11 व) छिं च N2 V B2-4
D10 M4 इष्टी (V2 4 °ष्टा) श्र, D12 द्रष्टु च (for इष्टका) S1
B1 D1 २७९ ११ १३ °साह (D11 °*) स्त्री, N1 V1 ३ B2-4
D10 °स्त्री, V4 D1 14 S (except G4) Cm °सा, G4 °च,
Ct as in text (for बहुसाहस्री) —^d) N1 V1 ३ B2-4 D10
क्षिप्र (for शीघ्रम्) S1 N V1 ३ B Ds 7 13 चाह्वयत्, V2
चाह्वय तात्, V4 D1 १० १२ वा (V4 D10 वा, Ds आ) ह्वयत्, D2
चाह्वयत्, D3 चानीयत्, D11 चाह्वय च व (sic) M4 स्वाग्रिय
ताम्, Cr m as in text (for आनीयताम्) S1 N V B
D1-३७९ १३ द्विषात् (for इति)

9 ^a) S1 N V B D1-३७९ १०-१३ M4 Ck t उपकार्या
(V2 °कार्यवद् [hypermetric] V4 °काया [by corr]
D11 °कार्या, M4 °चर्या) Cr mg as in text (for
औपकार्या) D11 त्रियता (for °न्ता) D2 वै (for च) Ds

उपकार्यादि त्रियता —^a) S1 Dt Ds ६९ राज्ञो, N1 V2 4 Ds
राज्ञा (for राज्ञा) D12 यज्ञो बहुगुणान्वित, G2 M1 तथा
राज्ञा गुणान्विता —^b) D1 ब्रह्मणा M4 [अ]त्र (for [ए]व)
—^c) S1 N V B D1 ३७९ १३ त्रियता, D10-12 त्रियता
(for कर्तव्या) D2 २ तथा (for शुभा)

10 ^a) N1 अ* V1 ३ 4 Ds २७ १० १२ M4 अ (Ds मि)
ज्ञाश्च (for भक्ष्याश्च) —^b) V2 सुनिपेता N2 D9 स्वनि
(D9 °श्रुता), V2 4 Ds 7 °क्षिता, D11 प्रति, M4 °क्षिते,
Cmg k t as in text (for सुनिष्ठिता) D14 om (hapl)
from 10°—11° —^c) T2 तदा, M4 नत (for तथा) D9
जनश्च (sic), G4 पस् (for पौरजनस्य) —^d) T3 कर्तव्य
(sic) (for कर्तव्या) N1 G2 त्रि (N1 in m) श्रुता, V2
विस्तरात्, D2 4 T1 विस्तरा (for र्ता) Dt Ds ९ कर्तव्याश्च
सुक्षि — After 10 Dt Ds ९ Ct ins

369* आगताना सुदूराच पाथिबाना पृथक्पृथक् ।
वाजिवाहनशालाश्च तथा शय्यागृहाणि च ।
भयाना महदावासा वैदेशिकनिवासिनाम् ।

11 D14 om 11^{ab} (cf v1 10) —^a) V2 प्रायशो,
Dt Ds M3 आवाय, D12 आभासा (for आवासा) S1 N1
V2 B2 Ds 7 भक्ष्यान्ना, N2 B3 अ (B3 मि) क्षार्या, V1 ३
B1 4 D1 ३ १० १२ अक्षान्ना, V4 D13 विस्तीर्णा, D9 अक्षान्ना,
D12 भक्ष्याश्च, G2 M1 २ 4 भक्ष्य° (for भक्ष्या वै) —^b) B1
सर्वा काम (for °मेर) S1 N V B D1 २७९ १३ सु (N2 V2
B2 4 D10 12 प्रजृज्ति (B4 °रिज्ति, D2 सुपुनित्, M4 उपा
न्यता Cr mg t as in text (for उपस्थिता) —^c) D4
पौर, D9 यथा, T2 तदा (for तथा) S1 Ds °स्वेह, N1 °दे
क्षैव, N2 V2 B2 °द (V2 वै) श्रैव, V1 ३ B2 4 D1 १० जा (B3
या) नपद क्षैव (B3 m also जनपदैश्चैव), V4 D ३ ७ जनपद
सर्व (V4 वैव), Dt Ds १४ पौरानम्, D11 12 जनपदस्वेह,
D13 G4 जन°, Cr as in text (for जानपदस्यापि) —^d)
D2 जनाना Ct as in text (for जनस्य) S1 N V B
D1-३७९ १३ कर्तव्य (D7 °*) बहु भोजन (V3 विस्तर, V4
भोजन, D2 शोभन)

12 ^a) S1 कर्तव्यम् (for दातव्यम्) S1 अन्य, V4 अर्थ
(for अर्थ) V B1 २ 4 D1 ३ ७ १३ M4 विविध, D12 विविध*
(for निविधत्) —^b) N V B D1 ३ ७ १० १३ M4 संकृत
(B2 °ह्य in marg as in text), D12 *कृत्य, Ck t as in
text (for सचय) D10 च (for तु) S1 N V B D1 ३ ७
१३ M4 पी (V2 डी) ह्या Cmg k t as in text (for

न चानज्ञा प्रयोक्तव्या कामक्रोधनशादपि ।
 यज्ञकर्मसु येऽव्यग्राः पुरयाः शिल्पिनस्तथा ॥ १३
 तेषामपि निशेषेण पूजा कार्या यथाक्रमम् ।
 यथा सर्वं सुनिहितं न किञ्चित्परिहीयते ॥ १४
 तथा भवन्तः कुर्वन्तु प्रीतिस्निग्धेन चेतसा ।
 ततः सर्वं समागम्य वसिष्ठमिदमब्रुवन् ॥ १५
 यथोक्तं तत्करिष्यामो न किञ्चित्परिहास्यते ।
 ततः सुमन्त्रमाहूय वसिष्ठो वाक्यमब्रवीत् ॥ १६

लीलाया) —^c) Śi N̄s V 1 3 4 B Dt D 1 3 5-11 13 14 T 2
 M 1 सर्वे, Cm as in text (for सर्वे) V 4 काम (for पूजा)
 —^d) D 3 7 वंत् (for वन्ति) N̄s सुहृद् (sic) V 4
 D* 7 9 13 सस्त्रुता, D 3 सुस्तुता, D 10 स, M 4 कृता, Ct as
 in text (for सुसकृता) —After 12 B* ins

370* तथा यत्नो विधात्वो (तव्यो) भवद्भि प्रियवादमि ।

13 ^a) Śi V 3 D 1 3 5 7 11 13 नावमान (V 3 ना),
 N̄ V 1 2 B D 10 नापमान, V 4 न च मान Śi N̄ V B D 1-3
 5 7 11-13 प्रयोक्तव्य (V 3 द्या) G 2 M 1 3 न चाप्यवज्ञा
 कर्तव्या —^b) V 2 श्रोत्रं (for श्रोत्रं) Śi D 1 3 5-वश (Śi
 श्रो) क्षत्रि, N̄ V B D 1-3 7 10 11 13 कृ (V 4 कृ) द (V 2
 त, V 3 त) वृत्ति, M 4 कृतापि च, Cg as in text (for
 वशदादपि) —After 13^{ab}, D 2 1 7 (all repeating as
 subst of 23^o) ins 376* —^c) D 4 कर्मणि (for सु)
 V 1 रि*, B 1 क्षत्र्या, D 3 वज्रा, D 9 दश, D 10 मुखा (for
 ड्यग्रा) D 9 शोभनास (for शिल्पिनस) G 4 तदा (for
 तथा)

14 ^a) V 1 क्षपि च (hypermetric) (for क्षि) G 4
 कार्ये (for कार्य) Śi D 1 11 12 transp तेषामपि and
 पूजा कार्या B 4 सुच Cg k t as in text (for क्रमम्)
 —After 14^{ab}, Dt D 4 5 14 S (M 4 subst for 14^{ab})
 Cm g t ins

371* ने च स्तु सुहृता सर्वे वसुभिर्भोजनेन च ।

[D 4 Ct संघा, T 2 सुहृता (for सुहृता) Dt D 4 5 Cg
 वे स्तु भूयिषा सर्वे (for the prior half)]

—M 4 om 14^o—15^o Dt D 4 5 T G 1 3 4 M 2 repeat D 4
 reads (var) 14^o after 15 —^c) Dt D 4 5 (Dt D 4
 second time) यथेष्टे स्तु, D 4 T G 1 3 4 M 2 (all second
 time) यथेष्टे स्तु (for यथा सर्वे) N̄s स्तु, D 4 मु (for
 सु) N̄ 1 2 सुनिहितसर्वे (by transp) —^d) B 1 भूयते,
 Cg as in text (for क्षीयते)

15 D 4 M 4 om 15^{ab} (for M 4 cf v l 14) —^a) V 4
 सर्वे तु B 4 om (hapl ?), Du वृत्ति (for वृत्तम्) —^b)
 B 4 दीर्घ (sic), G 4 दीर्घा (for दीर्घा) D 4 सुभन,
 Cg as in text (for क्षिग्धेन) —After 15^{ab} B 3 ins

निमन्त्रयस्व नृपतिनृथिष्यां ये च धार्मिकाः ।
 ब्राह्मणान्क्षत्रियान्धैष्यान्क्षत्राद्यैव सहस्रशः ॥ १७
 समानयस्व सत्कृत्य सर्वदेशेषु मानवान् ।
 मिथिलाधिपतिं शूरं जनकं सत्यविक्रमम् ॥ १८
 निष्ठितं सर्वशास्त्रेषु तथा वेदेषु निष्ठितम् ।
 तमानय महाभागं स्वयमेव सुसत्कृतम् ।
 पूर्वसंनन्धिनं ज्ञात्वा ततः पूर्वं ब्रवीमि ते ॥ १९

372* परितुष्टा भवन्त्येव यथा देवा प्रपूजिता ।

—^a) D 2 3 तथा (for तत) D 1 समागत्य —^d) T 2
 वसिष्ठ (sic) D 9 धर्मवीर (sic) (for अनुवन्) —After
 15 Dt D 4 5 T G 1 3 4 M 2 repeat D 4 reads 14^o

16 ^a) Śi D 1 12 यथाकृत्य (Śi त), N̄ 1 ते, D 1 3
 तु G 1 तथोक्तं (for यथोक्त तत्) V 4 मि, D 1 4 Cr m
 सुनिहित (for करिष्यामो) —^b) V 4 B 4 D 4 क्षीयते, D 1 3 G 4
 ह्यप्यते, Cr m as in text (for ह्यस्यते) —^c) D 4 G 1 3
 M 4 क्षातीय, M 3 क्षाताय (for आहूय) —^d) G 2 वासिष्ठो
 (sic)

17 ^a) V 1 य एवं V 4 निर्वर्त्य सु, Cg as in text (for
 निमन्त्रयस्व) D 1 3 नृपते —^b) D 1 3 वृ * द्या N̄ 1 V 4 B 3 M 4
 ये च पार्थिव, V 4 D 1-3 सर्वे (V 3 येन, D 1 यात्र[sic]) धार्मि
 कान् —In T 1 the portion from द (in सहस्रत) up
 to शास्त्रे in 10^o is missing on a damaged folio —^d)
 D 1 12 read nom plu for acc plu of all nouns Śi
 D 1 12 M 4 [क्ष]पि (for [क्ष]य) B 1 विज्ञेयत, D 1 2 स्त्र *
 (for सहस्रत)

18 T 1 missing up to शास्त्रे in ^a (cf v l 17) —^a) V 1 B 4 D 4
 T 1 G 1 3 M 1 समान (D 1 नी)य सुसहृत्, B 4 नय स्वर्
 हृत्, D 3 7 1 3 नय सुसहृत् —^b) D 1 12 देवेषु (for
 देवेषु) D 2 मानवान्, D 3 साधय (for मानवान्) —^c) D 1 1
 शूद्र (sic), T 2 G 2 M 1 यीर (for शूर) —^d) Śi N̄ V 1 3 4
 B 4 D 1 3 5 7 9-12 M 4 दृष्ट, V 5 हय, Dt D 4 5 T 2 G 2 M 4
 वादिने (for सत्यविक्रमम्)

19 T 1 missing up to शास्त्रे in ^a (cf v l 17)
 Dt D 4 5 om 19^{ab} —^a) D 1 3 निष्ठित —^b) D 1 3 तदा
 (for तथा) D 3 निष्ठित (for निष्ठितम्) D 3 7 वेदेषु पतिनिष्ठिते
 —Śi om 19^o—20^o —^c) D 4 समा, G 2 तमानय (meta
 thesis) (for तमानय) D 1 13 G 2 क्षाग (for क्षाग) —^d)
 D 1 भूपमेन (for स्वयमेव) V 4 D 2 3 7 9 सस्त्रुद, M 4 सुहृ
 त (for सुमन्त्रम्) —^e) Dt D 1 3 5 11 13 T 1 3 G 1-3 M 4
 Ct पुर D 3 सर्व, Cm g k tp as in text (for पुरे)
 N̄ 1 V 1 B 4 D 1 13 M 4 स (V 4 *) यय (V 3 वि) र, Dt
 क्षात्पय, D 2 3 7 11 सत्यविक्र, D 1 3 सत्यविक्र, Cm g t

तथा काशिपतिं स्निग्धं सततं प्रियमादिनम् ।
सद्वृत्तं देवसंकाशं स्वयमेतानयस्व ॥ २०
तथा केरुराजानं वृद्धं परमधार्मिकम् ।
श्वशुरं राजसिंहस्य सपुत्रं तमिहानय ॥ २१
अङ्गेश्वरं महाभागं रोमपादं सुसंस्कृतम् ।
वयस्यं राजसिंहस्य तमानय यशस्विनम् ॥ २२
प्राचीनान्तिन्धुसौमिरान्सौराष्ट्र्यांश्च पार्थिवान् ।

as in text (for स्वन्विज) M⁴ ह्वा (for ज्वा) —¹) N¹ V (V₄ om. ततो) B D₁ 3 5 7 9-13 ततो वाक्य, G₁ 3 पूर्वमेत, Cr mkt as in text (for तत पूर्व) T₂ व्रीमि m sec m N¹ V₂ 4 B D₁₀ 13 "इयद्, V₁ "दिद्, Ck as in text (for व्रीमि ते) M⁴ तत प्रवृद्धि सचम

20 S₁ om. 20^{ab} (cf v l 19) —^a) V₃ अथ (for तथा) B₄ Dt D₂ 4 9 9 T G₁ 3 काशी B₄ D₅ 11 12 T₂ (before corr after corr sec m as in text) दूर (for स्निग्ध) —^b) V₃ सुवत्, D₁₂ सतत (for सतत) V₂ मङ्ग (for प्रिय) —In T₁ 20^a—21^a lost on a damaged fol S₁ N¹ V B D₁ 3 5 7 9-13 transp 20^{cd} and 22^{cd} —^c) S₁ N¹ V B D₁ 3 5 7 9-13 M⁴ सुयत् (for सद्वृत्त) D₂ सकात —^d) S₁ V₂ 4 B₁ D₉ 12 13 पुनं (for एवं) S₁ D₁ 3 5 7 9 11 12 स्वमानय, N¹ V B D₁₀ 13 समानय, M⁴ [आ] नयस्व त (for [आ] नयस्व ह)

21 T₁ missing up to ° (cf v l 20) D^a 3 7 12 om 21 —^a) V₃ D₂ 5 9 कैकय, V₄ केकेय, B₁ 4 D₁₀ कैकय, Cg k.t as in text (for कय) D₄ र in परम in marg —^b) D₁ सुस्व (metathesis!) (for श्वशुर) —^c) N₂ B₃ (after corr) स्वयम्, D₆ (after corr as in text) सुं, D₁₀ स्वयुर (for सयुय) N¹ V₁ B₂ 4 D₃ 10 11 T₁ 2 G₂ 4 M₂ 3 यम् (for तम्) B₄ इहानय (metathesis) S₁ तमानय यदास्विनं (= 22^d)

22 ^a) V₄ यशेश्वर S₁ N¹ V B D₁ 3 5 7 9-13 तथा स्निग्धं Dt D₂ 8 महेष्वायं, T₂ G₂ M₁ 2 4 च राजान (for महाभाग) —^b) V₄ D₂ 3 7 9 13 सुसंस्कृत, Dt सु *°, Ck p समीपगं (for सुसंस्कृतम्) S₁ N¹ V B D₁ 3 5 7 9-13 transp 22^{cd} and 20^{cd} —^c) D₁ 13 सिंहं च (for सिंहस्य) —^d) Dt T₂ Cg समानय, M^a स्व M⁴ moth-eaten for यदा in यदास्विनम् B₃ (m) D₂ 3 7 12 (all through eye wandering) सपुत्र तमिहानय (= 21^d) —After 22 Dt D₂ 8 ins

373^a तथा कोमलं तारं भातुमन् सुमहद्वत् ।
महापापिपतिं दूरं यथाशक्तिप्रसारयम् ।
प्रतिश्रं परमेष्ठिनं सपुत्रं पुरुरदमम् ।
राज्यं शान्तमादाय चोदयस्व नृपरीमान् ।

दाक्षिणात्यान्नेन्द्रांश्च समस्तानानयस्व ह ॥ २३
सन्ति स्निग्धाश्च ये चान्ये राजानः पृथिवीतले ।
तानानय यथा क्षिप्रं सातुगान्तिहयान्धमान् ॥ २४
वसिष्ठमाक्यं तच्छ्रुत्वा सुमन्त्रस्तरितस्तदा ।
व्यादिशत्पुलगांस्तत्र राज्ञामानयने शुभान् ॥ २५
स्वयमेव हि धर्मात्मा प्रययौ मुनिशासनान् ।
सुमन्त्रस्तरितो भूत्वा समानेतुं महीक्षितः ॥ २६

23 ^a) S₁ D₁ 3 5 9 11 13 प्राच्याद् (D₁ "च्या) च, N V B D₂ 10 प्राच्याश्च, Cg k.t as in text (for प्राचीनान्) V₂ सिद्ध (for सिन्धु) N¹ V B D^a 3 13 Cg सौमीरा (D₂ ***) (for सौवीरान्) —^b) S₁ N₂ V₁ 2 4 D₁₂ स्वराष्ट्रे (S₁ "ष्ट्रा) ये, N₁ V₂ B D₁₀ सुराष्ट्रे ये, D₁ 12 सौराष्ट्राश्च (D₁₂ "ष्ट्रा ये) D₂ 9 सु (D₂ सौ) राष्ट्रान्धा, T₂ "ष्ट्रीयाद्, Cg as in text (for सौराष्ट्र्याद्) —In T₁ the portion from च पार्थिवान् in ^b up to तानानय य in 24^a is lost on a damaged fol S₁ च मानवा, N¹ V B D₁₀ 1-13 "वा, D₁ [अ]न्य (for च पार्थिवान्) D₂ 9 सु (D₂ सौ) राष्ट्रान्तय (D₂ "नित्) मन्वा D₁₁ सुराष्ट्रान्तयमागधान् —^c) N₁ V B₁ 2 4 D₁₂ दा (V₄ द) क्षिपाया नरेन्द्राश्च —^d) S₁ N¹ V B D₁ 3 5 7 9-13 सवाना (D₂ "नाना[ditto] D₂ सर्वमा) नय मा विव (V₁ मारिच[metathesis] D₁₁ म्वत्), M⁴ सर्वोस्ताना नय स्वय

24 T₁ missing 24 ^{ab} (cf v l 23) —^a) S₁ N¹ V₂ 4 D₁ 3 5 7 9-13 अरि, V₁ 2 प्रीति, Cg as in text (for सति) M₂ सिद्धाद् (for क्षिपाया) D₂ तथा, D₁₂ om च (for च ये) S₁ N¹ V₃ 4 B₁ 3 D₁ 3 5 7 9 10 13 [अ]न्येपि (for चान्ये) —^b) S₁ N¹ V B D₁ 3 5 7 9-13 "श (D₂ च) रा, M⁴ "तला (for "तले) —^c) D₁₂ T₂ G₂ M₂ तथा, Cg as in text (for यथा) S₁ N¹ V B D₁ 3 5 7 10-13 M⁴ तानप्याय (V₁ तानानयस्व, D₁ 3 7 तानिहानय, M⁴ moth eaten for नय) वै क्षिप्र (V₂ क्षिप्र हि) Cg यथाक्षिप्र शौच्यस्वन्तिव्रज्य Cg —^d) V₄ स्व- (for स्व) N¹ V₁ 2 B D₁ 3 5 9-13 M⁴ "यायै V₄ "वाहान्, G₁ "युष्कात् (for "वाण्धवान्) —After 24 Dt D₂ 8 ins

374^a एतान्द्वैर्मेहामागिरानयस्व नृपाजया ।

25 ^a) D₁₂ त्रिषिद्ध (for वसिष्ठ) —^b) D₁₂ स्वमेष्ट्रम् (sic) Dt D₂ 8 T₂ त्रितरि (for "तम्) B₃ T₂ तथा, D₁₂ तत (for तदा) D₁₂ सुमेष्ट्रकामाय चोत्सुक (hyper metric) D₁₁ om 25^a—6^b —^c) V₂ व्यादिद्वान् (sic) D₂ 4 7 व्यादिद्व D₂ आदिना T₂ व्यादिना (sic) M⁴ व्यादिनु (sic) (for व्यादिनात्) —^d) S₁ N¹ V B D₁ 3 5 7 9 10 12 13 बहुन् Cm g as in text (for गुमान्)

26 D₁₁ om 26^{ab} (cf v l 25) —^a) S₁ N¹ V B D₁ 3 5 7 9 10 12 13 च M⁴ सु (for द्वि) —^b) In T₁ the

ते च कर्मान्तिकाः सर्वे वसिष्ठाय च धीमते ।
 सर्वं निवेदयन्ति स्म यज्ञे यदुपकल्पितम् ॥ २७
 ततः प्रीतो द्विजश्रेष्ठस्तान्सर्गान्पुनरब्रवीत् ।
 अवज्ञया न दातव्यं कस्यचिच्छीलयापि वा ।
 अवज्ञया कृतं हन्यादतारं नात्र संशयः ॥ २८
 ततः कैश्चिद्दहोरात्रैरुपयाता महीक्षितः ।

बहूनि रत्नान्यादाय राज्ञो दशरथस्य ह ॥ २९
 ततो वसिष्ठः सुप्रीतो राजानमिदमब्रवीत् ।
 उपयाता नरव्याघ्र राजानस्तव शासनात् ॥ ३०
 मयापि सत्कृताः सर्वे यथार्हं राजसत्तमाः ।
 यज्ञियं च कृतं राजन्यपुर्यैः सुसमाहितैः ॥ ३१

portion after प्रय in ⁸ up to च in 27⁸ is lost on a broken fol. N V B Dt (after corr) D1 4 8 8 13 T3 G1 3 प्रया (V 3 4 D3 °य) तो D10 प्रणतो (for प्रयतो) S1 N V B Dt-3 5 7 9 10 12 13 राज, M1 शुरू- (for मुनि) —D1 reads up to स in ⁸ in marg —° S1 N V B Dt 3 5 9 13 प्रयतो, D7 प्रयवो M1 moth eaten (for खरितो) —° B1 D1 7 महीक्षिता (B1 °त) Dt D3 महामनि Cg as in text (for महीक्षित)

27 T1 missing up to च in ⁸ (cf v1 26) —° S1 N V B Dt 3 5 7 9 13 M1 तत Cg k t as in text (for ते च) D7 कर्मान्तिका M4 कर्मान्तिका —° S1 D1 3 5 7 9 11 12 M4 महाप्रने, N V B Dt D3 8 10 13 Ctp सहर्षये (D3 °य) (for च धीमते) —° S1 D1 12 सर्वे N2 V B Dt-3 7 9 11 सर्वान् D10 सर्वायान् (for सर्वे नि) —° S1 D1 13 य (S1 या) शे यान् N1 1 4 B D1 10 11 13 यज्ञि (B1 4 °ज्ञी) यान् V3 D1 2 7 यज्ञार्थम् (V3 °थम्) D3 याज्ञिकान् M4 यथायद् Cg as in text (for यथे यद्) S1 N V B Dt 3 5 7 9 13 M1 उप (V3 अनु V4 °उ, D13 परि) कन्यितान् (M1 °त), Cg as in text (for °तम्)

28 ° B1 [5] प्रवीडो (for प्रीतो) —° V1 साहान्त यान् (ditto sup lin) D3 °द्विजान् D10 सर्वायान् (by transp) (for सान्त्वयान्) Dt D3 मुनिर् D1 14 T G4 हृदे (for पुनर्) —After 28⁸ S1 N V B Dt-3 5 7 9 13 M1 ins.

375° अवज्ञिनं यथा यथे परिहीयेत् किञ्चन ।

[N1 B1 D1 7 तया (for यथा) D1 2 7 यथा (for यथे) S1 V3 B1 D1 2 3 7 13 °हासयि V1 °हीयेत् V4 B1 D1 9 11 °हाये (D3 °ये) D1 (gloss) हाय स्वाये M1 °र (for परिहीयेत्) S1 °न, B1 यथा D1 2 कि न य (for किन)] T3 reads ° in marg sec m —° S1 V1 V B1 2 4 D1-2 3 7 9 11 13 M1 मा (D10 मा) यथा (V2 2 D3 °याय) प्र (V1 3 D3 न [5c]) दातव्यं —° D1 T3 न सु शीलया (for हीयतापि वा) S1 N V B Dt 3 5 7 9 13 द्विजिह्वा वनपिण्ड (B1 4 °वा) द्विजिह्वः D10 दातुस्तपोरमादरेण (cf post half of 376*) —In T1 the portion from हृत् in 28° up to रत्नान्या in 29° is missing on a damaged fol. —D10 om (hap1 i) 25° —° G3 अवज्ञाय (metathesis!) M1 अवज्ञायि (for अवज्ञया)

G1 3 कृतो, M4 कृता (for कृत) —For 28° S1 N V B Dt-3 5 7 9 12 subst (D3 7 ins (first time) after 13⁸)

376° अवज्ञया हि यदुत्त दातुस्तपोरमावहेत् ।

[V2 D1 7 तु D3 °च (for हि) D3 °दत्त After दत्त, D3 repeats (ditto) या तु दत्त S1 D1 12 तत्तुर् (by transp) V3 आह्वेत् (sic) D3 आह्वहेत् (sic) (for आवहेत्)]

29 T1 missing up to रत्नान्या in ° (cf v1 28) —° V1 D1 11 कश्चि (D1 °चि [sic]) द्, M3 वेविद् (after corr sec m as in text) (for कैश्चिद्) —° S1 N2 V4 B1 2 4 D1 10 13 उपायाता V1 जाता (sic), D11 तया (या) याता D12 °* (for उपयाता) V1 °निते, D13 °क्षिता (sic) (for क्षित) —° S1 N V B Dt 3 5 7 9 13 रत्नान्या D12 °ना [sic] दाय बहवो (S1 D1 13 सुबहून् V4 बहवो) —° B1 (after corr in m as in text) राधे (for राज्ञे) D12 missing M1 द्वा *** (for दत्तास्तस्य) S1 V2 4 B1 D1 13 G1 3 M3 °च N2 B1 D1 10 T3 हि D14 T1 2 G4 वै M1 missing (for ह) —After 29 D1 repeats 4⁸

30 D12 om 30 —° M1 damaged (for ततो) D12 T3 से (for सु) —° D3 हृदे (ditto) (for हृदम्) —° S1 N2 V2 4 B1 2 4 D1 10 13 T3 उपायः V1 °यान् D3 उपायनैर् (for उपयाता) V1 (marg as in text) सान्त्वयान् (submetric) B1 °या M2 °यान् (for नरव्याघ्र) —° V1 (m as in text) नरेण (for राजानय)

31 ° N1 महया (sic) D12 °या (for मया) N1 V1 B1 2 4 D1 13 हि N2 V2 B1 D1 2 3 7 10 12 M1 [अ] मि V4 D1 2 च (for [अ] मि) D1 7 संश्रुता (T3 missing from ⁸ up to च in 3° on a damaged fol —°) S1 D1 2 7 11 M1 यथायत् D1 12 तया (for यथादे) S1 N V2 4 B1 3 D1-3 5 7 9 12 M1 पुनिताय ते (D1 मा; D3 ये) V1 प्रतिपुनित B1 सप्तम्यश्च त Dt D3 °प्र (for राजमघमा) —° G1 3 M1 3 Cr वागीदे (M1 °यर्) वा G1 वागीयन्, M1 पूगादाय (for वसिष्ठे च) G3 M1 हृतो; M1 हृता (for हृत्) Dt D3 °सर्वे M1 राज (for राजन्) S1 N V B Dt-2 3 7 9 13 यथायत् (D3 °य) मयूतं सर्व —° S1 N V2 4 B1 2 4 D1 9 10 12 13 रयै V3 D1 ते; B1 च (for गु)

निर्यातु च भगान्यपुं यज्ञायतनमन्तिक्तात् ।
सर्गकामैरुपहृतैरुपेतं वै समन्ततः ॥ ३२
तथा वसिष्ठप्रचनादप्यश्वत्थस्य चोभयोः ।

शुभे दिवसनक्षत्रे निर्यातो जगतीपतिः ॥ ३३
ततो वसिष्ठप्रमुखाः सर्ग एव द्विजोत्तमाः ।
ऋष्यशृङ्गं पुरस्कृत्य यज्ञऋत्तारमन्तदा ॥ ३४

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे द्वादशः सर्गः ॥ १२ ॥

32 T₁ missing up to य in * (cf v.l 31)
—^a) M₂ विनिर्यातु (for निर्यातु च) —^b) T₃ उत्तम (for
अन्तिक्तात्) —For 32^{ab}, S₁ D₁-3 5 7 9 13 subst

377* सप्राप्ते च भवेदृष्टो यज्ञे सभारसंभृते ।

[D₇ सप्राप्ते (for °ते च) D₂ भवान् (for भवेद्) D₁ 3 7
विज्ञे, D₂ विज्ञे (for इष्टे) D^o 3 यज्ञ D₁₂ सभार (sic)]
while N̄ V B D₁₀ 11 13 subst for 32^{ab}

378* सुमध्रश्चानवीदृष्टो यज्ञसभारसंभृत ।

[N̄ V₂ 4 B₃ 4 सुमध्र (for °ब्रह्म) N̄₁ V₂ B₁ [अ] वदद्
(for [अ] ब्रवीद्) V₁ तुष्टे V₂ 4 दृष्ट (for इष्टे) D₁₁
चावदृष्टे (submetric) (for चाव्रीदृष्टे) V₁ 2 सभृत (V₂
°नि) (for सभृत)]

—^a) G₁ सर्वे (for सर्वे) N̄₂ V₁ 3 B₂ D₂ 7 13 °कुतैर्,
V₂ B₁ T₃ °हित, D₁ °हते, D₂ °वतैर् (sic), D₂ 11 12
°हतेर्, Cg as in text (for °हतेर्) M₄ सर्वे *** पदतैर्
—^b) S₁ N̄ V B D₁ 3 5 7 9-13 उपपन्न (V₂ B₁ 4 D₁₁ 13
°ज्ञ), M₄ उपेता वै Cg as in text (for उपेत वै) D₂ समं
तव, D₁₄ समन्त, G₂ सदृशस्य (for समन्ततः) —After
32 Dt D₁ 6 8 14 S (except M₄) Cmg k t ins

379* द्रष्टुमर्हसि रामेन्द्र मनसैव विनिर्मितम् ।

[D₁ द्रष्टुम् (for द्रष्टुम्)]

33 —^a) D₂ यथा, T₃ तदा, T₃ M₄ ततो (for तथा)
—In T₁ the portion from एव in 33^a up to द्विजो
in 34^a is lost on a damaged fol —For 33^{ab}, S₁ N̄
V B D₁-3 5 7 10-13 subst while D₂ ins after 32

380* कियता वचनान्मेदस्य ऋष्यशृङ्गस्य चैव हि ।

[N̄₂ B₂ D₁ 3 7 10 11 13 वचन (for वचनान्) S₁ D₁-3 5
7 9 12 गच्छ V₄ मे ल D₁₁ न्याय D₁₃ नोय (for मेय)]

—^a) V₂ B₂ शुभ (for शुभे) N̄₂ V₁ 3 B₂-4 D₁₀
नक्षत्रदिवसे, D₁₁ दिने च, G₂ M₁ च भग (for दिवसनक्षत्रे)

Dt D₂ 8 M₂ दिवसे शुभनक्षत्रे Cg शुभे दिवसे सोम
सोमवारादौ शुभे नक्षत्रे रोहिण्यादौ । Cg —^a) S₁ N̄ V B
D₁-3 5 7 10 11 13 निर्यातु, D₁₂ नियोतु (sic), Cg as in
text (for निर्याते) V₄ D₁₁ पृथिवी (D₁₁ *) पति (for
जगती°)

34 T₁ missing up to द्विजो (cf v.l 33) —^a)
S₁ N̄ V B D₁-3 5 7 9-13 द्विजातय M₄ द्विजर्षभा —^b) S₁
N̄ V B D₁ 2 5 10 12 13 अश्वमेध, D₂ 7 9 अश्व मेध (for
ऋष्यशृङ्ग) B₁ °*, M₄ पु *** (for पुरस्कृत्य) —^c) S₁
D₂ 13 यथा (for यज्ञ) D₂ 9 तथा (for तदा) M₄ [अ]रभत
वै N̄ V B D₁₀ 13 कर्माण्यारेभिर् (B₄ °रभते) तदा (N̄₂
B₂ D₁₀ तत) —After 34 Dt D₁ 6 8 11 14 S (except
M₄) Cmg k t ins

381* यज्ञवाट गता सर्वे यथाशास्त्रं यथाविधि ।

[D₁₄ T₃ G₁ 9 M₂ 3 जाट (for -जाट) G₂ °विधि
(sic)]

—Dt D₂ 8 14 G₂ cont

382* श्रीमाद्य सह पत्नीमी राजा दीक्षामुपाविशत् ।

[G₂ (after corr inf lin) याग (for राजा)]

Colophon *Kandā name* S₁ N̄₂ D₁₀ om V B₂-4
D₁₁ वादि, D₁ 3 जयोध्या —*Sarga name* S₁ N̄₂ V₂ 4
B₂ 3 D₁-3 5 7 9 11 13 यज्ञारभ (D₁-3 7 °भग), N̄₂ V₁
यज्ञवा (N̄₁ °ज्ञाव) ह, V₂ यज्ञवाटगमन, B₁ यज्ञवह सभार,
B₂ यज्ञवाट, D₁₀ यज्ञे यज्ञवाटारभ —*Sarga no* (figures,
words or both) S₁ N̄₁ V₁ 4 B₁ 4 D₂ 11 12 om N̄₂
B₂ 3 D₁₀ 12 (as in text) V₂ 14 V₂ 11 D₁ 10
D₂ 7 9 D₂ द्वादश, T₁ 3 M₁-9 त्रयोदश, M₄ द्वादश (as in
text) Dt D₂ 6 8 14 G₂ त्रयोदश 13 D₂ द्वादश 12 (both
as in text) D₁-कात्रेनयन द्वादश G₁ 2 4 M₁ 2 conclude
with श्रीरामाय नम , G₂ श्रीमते रामाजुजाय नम

अथ संतत्सरे पूर्णे तस्मिन्प्राप्ते तुरङ्गमे ।
 सरस्वाद्योत्तरे तीरे राज्ञो यज्ञोऽभ्यन्तर्गतः ॥ १
 ऋष्यशृङ्गं पुरस्कृत्य कम चकुर्द्विर्जर्षभाः ।
 अश्वमेधे महायज्ञे राज्ञोऽस्य सुमहात्मनः ॥ २
 कर्म कुर्यन्ति विधिवद्वाजका वेदपारगाः ।

यथाविधि यथान्यायं परिक्रामन्ति शास्त्रतः ॥ ३
 प्रवर्ग्यं शास्त्रतः कृत्वा तथैवोपसदं द्विजाः ।
 चक्रुश्च विधिवत्सर्वमाधिकं कर्म शास्त्रतः ॥ ४
 अभिपूज्य ततो हृष्टाः सर्वे चकुर्यथाविधि ।
 प्रातःसवनपूर्वाणि कर्माणि मुनिपुंगवाः ॥ ५

13

1 Before 1 Śi 1ns ३०, T₂ श्रीरामचन्द्राय नमः T₁ fol damaged. —^a) D₁₁ repeats 1^{ab} as in D₁₀ N V B D₁₀ M₄ प्रदक्षिण (V₂ ०ण) कृत्वा, Cg k t as in text (for सवत्सरे पूर्णे) —^b) N V₁ 2 B D₁₀ 13 भूमि V₃ M₄ भूमि, D₂ T₃ पुन (for तस्मिन्) Śi D₁-2.5 7 11 12 प्राप्ते (D₂ ०ता) त (D₁₂ *) सिम् (by transp) —^c) N V B D₁-3 5 7 9-13 M₄ उत्तरे (B₄ ०, D₁₁ ०र sic) दूले (D₂ 3 7 पारे) (for चोत्तरे तीरे) —^d) D₂ om यज्ञो N₁ V₁-3 B₁ यज्ञभूमिम्, N₂ V₄ B₂-4 (B₂ marg as in text) D₁₀ 13 यज्ञभूमिम् (for राज्ञो यज्ञो) N₁ B₁ अकल्पयत् (sub-metric) N₂ B₂-4 D₁₀ अकल्पयत् (B₂ marg as in V₁) V₁ 4 अकल्पयत् (hypermetric) V₂ 3 अकल्पयत्, D₂ T₃ ते D₁₃ अकल्पया Cg as in text (for अभ्यवर्तत)

2 ^b) D₁₁ M₄ द्विजोत्तमा, M₄ द्विज** (for द्विज र्जमा) —For 2^{ab} N V B D₁₀ 13 subst

383* ऋष्यशृङ्गपुरोयस्तेषां च परिनिमिता ।

[D₁₃ याजकः V₃ परिनिमिता D₁₃ परिवर्जिता..]
 B₂ cont

384* कृताश(च)सोधिता भूमिर्विधिद्वयेन यनत ।

—V₁ om 2^c 3^d —^a) V₂ 4 B D₁-3 5 7 9-13 M₄ 4 राजस्त (B₄ wrongly om स्त) स्य (for राज्ञोऽस्य सु)

3 ^a) V₁ om. 3^{ab} (cf v.1 2) —^a) D₂ कुर्वन्ति व्रमं (by transp) N V (V₁ om) B D₁₀ 13 येद्वयेन विधिना —^b) N V (V₁ om) B D₁₀ 13 तस्मिन्नेति D₂ M₄ प्राक्षणा, M₄ प्राक्षणा Cm g t as in text (for प्राक्षा) D₁-2.7 रिधि (for चेद) Śi D₁₁ 1- यज्ञाविधि (D₁₃ om विधि) —T₁ damaged from यथान्यायं up to सर्वम् in 4^d —^c) Śi न्याय्यं D₂ जयं (for न्याय) —^d) D₂ 2.7 द्याय (D₂ 1 ०सोति (for द्यायति)

4 T₁ damaged up to सर्वम् (cf v.1 3) D₂ om (hapl) from सर्वं up to ततो in 5^c —^a) D₁₁ प्रवर्ग्यान् (for प्रवर्ग्य) D₁₂ द्वाभ्याम् (sic) (for द्वाभ्याम्) D₁ कृत्वा तथैवोपसदं प्रवर्ग्यं शास्त्रतो द्विजा (by transp) —^a) Śi D₁ 2.5 7 9 11 12 तथैवोपसदं (D₁ ०स) कर्मे ते

5 D₂ om up to ततो (cf v.1 4) —^a) Śi D₂ 5 7

१ १ १२ अभिपूज्य (D₂ 11 ०त्य) D₁ धामिपूज्यस्, G₂ ०पूर्व, Cg t as in text (for अभिपूज्य) D₂ * तो, D₂ ० तदा (for ततो) D₂ 7 सर्वे हृष्टाश्च (by transp) D₁ ० विधि (for ०विधि) —^a) Śi D₁-3 5 7 9 11 13 सवनानि यथान्याय (Śi ०य्य) सोमे (D₂ ०मे) सोमपसकमा
 —For 3^c-5 N V B D₁₀ 13 M₄ subst while D₁₁ 1ns after 5

385* प्रवर्ग्यादिकर्म चक्रुः कल्पसूत्रविधानतः ।
 प्रायश्चित्तविधानानि चक्रुश्चान्वयोपत ।
 सवनानि च सर्वाणि यथाकालं प्रचक्रिरे ।

[No comm —D₁₁ om 1 १ —(1 १) N₁ V₄ प्रवर्गादिकर्म V₂ पर्व्यादिकर्म (sic) V₃ B₃ पयु (B₃ m वयु) क्षणादिक D₁₀ प्रवर्ग्यादिकर्म (for प्रवर्ग्यादिकर्म) N₂ कर्म (for कल्प) —(1 2) V₃ B₂ 3 (marg) विधान च, V₄ विधानेन (for विधानानि) V₂ दानि वि ० V₃ चान्याव (sic) B₄ पश्चाद्, M₄ द्वायवि (for चान्वयोपत) —(1 3) V₄ सवनानि, B₁ (m as in B₁) वरानि, B₂ वरानि (by metathesis) (for सवनानि) B₂ D₁₁ ० कर्म (for यथाकाल)]
 —After 5 Dt D₁ 6 8 14 S (except M₄) Cr m g t 1ns

386* ऐन्द्रश्च विधिवत्ततो राजा धामिपुत्रोऽनघ ।
 माप्यदिनं च सर्वतः प्रावर्तत यथाक्रमम् ।
 कर्त्तायस्यन चैव राज्ञोऽस्य सुमहात्मनः ।
 चक्रुस्ते शास्त्रतो हृष्टा तथा प्राक्षणापुंगवाः ।

[Cr comments on 1 १ only —(1 १) G₂ देद (for देदृष्ट) D₁ 16 T₁ 3 M₂ 3 Cg [अ]मिष्टो T₁ [अ]मिष्टो G₂ [अ]मीष्टो Cgp as in above [for [अ]मिष्टो) T₁ damaged from 1 2 up to the prior half of 1 4 —(1 2) Dt D₂ 8 मय्यं, D₁₄ ० रिच (for मय्यंदिनं) T₂ वि (for च) T₃ प्रावर्तति (sic) (for प्रावर्तत) —(1 3) T₂ 3 एविय्य (sic) G₂ एविय्य (for एविय्य) Dt सनते —(1 4) G₂ च (sic) (for च) Dt D₂ 8 T₂ यथा (for तथा)]
 —Thereafter Dt D₂ 8 G₂ M₄ (after 400*) Ct cont., while N V B D₁₀-13 1ns after 14 D₂ T₂ (transp 1 १ 2 and 3 4) M₄ after 15 M₄ after 6

387* भाग्यदोषादि तत्र दक्षार्तिविधयोपसन्नाः ।
 ऋष्यशृङ्गादयो मध्ये निशागरत्नमन्त्रिनः ।
 व्यातिनिर्गमपुरे धिक्प्रेमसाद्धानिर्वाणतः ।
 होतारो बुद्धिमान्मुहूर्तविभागिन्द्वौहृत्पराः ।

न चाहुतमभूच्च स्वलितं वापि किंचन ।
दृश्यते ब्रह्मवत्सर्पं क्षेमयुक्तं हि चकिरे ॥ ६

न तेऽप्यहःसु श्रान्तो वा क्षुधितो वापि दृश्यते ।
नानिद्वान्ब्राह्मणस्तत्र नाशतानुचरस्तथा ॥ ७

[Cr m g h do not comment —N̄ V B D10-13 transp 1 x and 2 Ts transp 1 x-2 and 3 4 —(1 x) V1 2 4 आहुवा° M3 आह्वान° (for आह्वानचकिरे) M3 चात्र (for तत्र) —(1 2) T3 [अ]मल्यैर (for मलैः) V3 शिष्टा°, G3 M3 स्वर (for शिक्षाक्षर) —(1 3) V4 वाणिमि ह, B1 क्वचिन्मि, Dt D5 9 G3 गीतिन्मि, D12 13 ध्या (D11 च्व sic) विन्मि, D13 तपिन्मि T3 गीतिन्मि, M1 विचिन्मि M3 गीतिश्च (for व्याविन्मि) M1 मयने (for मयुरे) —(1 4) N̄ 2 V2 B3 D10 13 लुडवा°, V3 B4 लुडवा°, V4 लुडवा° B1 M1 लुडुवाय Dt D5 9 T3 G3 M1 9 ददुरावाह (M1 माय) D12 लुडिगमाय (sic) (for लुडवा नादुर) D12 हविर्मागे M1 माग (for हविर्मागान्) B3 D12 °वत (for दिवावसागम्)]

6 ° D4 ना (for न) S1 D1 3 5 7 9 11 नानाहु (D1 2 7 °ह sic) तनमूत्रस्य (D1 °हृताना, D2 7 9 °हृत वा, D3 °हुत वा), N̄ V B D10 11 13 M4 नासीदपहत (V2 4 B1 3 D13 °पकृत, V3 °पुहृत, B4 °पुच्यता, D10 °पहुत; D11 °सकृन् M4 °बहुत) तेप, Cg t as in text (for °) —^d S1 सहिता, D1 3 5 9 11 हा (D5 12 स) मिल, Dr शालित (sic) Cm g t as in text (for स्वलितं) N̄ V1 4 B1 3 4 D5 10 12 13 चापि, V2 नापि V3 D5 9 वा न (for वापि) D2 कचन —After 6^{ab} D11 ins 388* —^c D2 °तत् (for ब्रह्मवत्) —^d S1 D2 5 9 11 12 प्रम°, D1 3 7 कर्म°, Cr m g t as in text (for क्षेमयुक्त) S1 D5 12 M3 च°, D1-3 7 9 11 प्रचकिरे (D2 °क्रिये [sic]), Cg as in text (for हि चकिरे) —For 6^{cd} N̄ V B D10 13 M4 subst while D11 ins after 6^{ab}

388* परेण ह्यवधानेन तं ऋतु ते प्रचकिरे ।
[V4 M4 च (M4 ह्य) विधानेन (for ह्यवधानेन) D11 ने (for त) V3 बहू ल (by transp) B3 °बहू (sic) (for न बहू) B2 तेष°, D11 वै प्र°, D13 प्रे न° (by metathesis) (for ते प्रचकिरे)]
—After 6 Ms ins 387*

7 D11 reads 7^{ab} before 6^{cd} repeating it here N V B D10 12 13 repeat 7 after 390* —^a D11 (second time) om न (submetric) V2 (first time) तेपु कश्चिद्, (second time) नेपु हासो, D2 ते विहरस्य D2 7 तव्यहस्त (Dr °वत्) (sic) D2 तेव्यहंसु Cg as in text (for तेव्यह लु) S1 N̄ V B D1 3 5 7 10-13 (N V B D10-13 second time) ब्राह्मण्य N V B D10-13 (all first time) M4 कृपण, D2 क्षुधितो, D14 शालो°, G2 3 M1 सध्यात्, Cg t as in text (for श्रान्तो वा) —^b T3 व्यधितो (for क्षुधितो) Dt n (for [अ]पि) T3 damaged for °ने G3 M3 कश्चन (for दृश्यते) S1 N̄ V B D1-3 5 7 10-13 (N̄ V B D10-13 second time) क्षुधि (S1 D3 7 °मि) ह दृश्यते (D5

दृश्यते क्षुधितं) कश्चित्, N̄ V B D10-13 (all first time) M4 क्षुधामो (D11 क्षुधितो, D13 क्षुधो नै जा (V1 ना, V4 *) व्य (V3 4 D11 पि, D10 *) दृश्यत (V3 4 D11 °ते) —After 7^{ab} (first occurrence) N̄ V B D10-13 M4 ins

389* तिर्यक्ष्वपि कुतोऽप्येव भूतेषु परितर्पित ।
कोटिशो ब्राह्मणास्तत्र तथा शतसहस्रश ।
तस्मिन्त्यत्र उपावृत्ता नानादेशनिवासिन ।

[No comm —(1 x) V1 3 तिर्यक्ष्वपि (sic) D10 निर्वागपि (for तिर्यक्ष्वपि) V2 कुतो (for कुतो) N̄ V1 4 D10 M4 [अ] परी° V1 3 °तर्पित, B3 reads first t sup l m B4 °तर्पिता, D11 °कशित, D13 °कषिण (for परितर्पित) —(1 2) D13 यथा (for तथा) —(1 3) D11 यज्ञम् (for यज्ञ) N̄ B3 तपोवृद्धा (N̄ °दा marg), V1 3 उपावृत्ता (V3 °ते) D12 तु वे वृत्ता (for उपावृत्ता) D11 निवेशिन (for निवासिन)]

—T1 damaged from ° up to चापि in 8° —^c D11 न (for ना) N̄ V2-4 B1 D10 13 (all first time) आगमस्, M4 चागतस् (sic) (for ब्राह्मणस्) S1 N̄ V B1-3 Dt D1 3 5-13 (N̄ V B1-3 D10 12 13 second time) कश्चिद् (for तत्र) —^d V1 (both times) D1 2 7 9 11 ना (D7 9 न) गता, V2 3 (first time) 4 (both times) नाम (V2 °तौ, D3 तगता (sic) D13 (first time) तथा वा T3 नाचरा (sic) Cr m g t as in text (for नाचरा) N̄ V1 4 B2 3 D1 3 5-11 13 (N̄ V1 4 B2 3 D10 13 second time) तु (V4 * inf l m द्वा) गतस्, V2 (second time) नुपगस् (sic) B4 (second time) D7 नुगतस्, D11 न्युगतस् (sic) Cr m g t as in text (for नुचरस्) N̄ V B D10 13 (all first time B4 second time also) द्विज (for तथा) S1 D5 12 (second time) दृश्यते तत्र वै त (D12 स) दा, V2 (second time) नागतानु गतस्तदा, B3 (first time in marg) न शशो नातुरदिज, D12 (first time) नादातानुवरोपि वा M4 नयानस्तथा द्विज —After 7^{cd} N̄ V B D10 13 M4 ins while D11 cont after 389* (for 1 x cf 1 6 12^{ab})

390* नानाहिताग्निर्नायं वा नावती पतितो न च ।
ब्राह्मणाना सहस्राणि तानि तत्र महामखे ।
पृथग्बुभुगिरिदशानि स्वाद्भि विविधानि च ।
महयाश्च विविधान्दवाप्यनानि पिबिषानि च ।
रुमपात्रीव्यनेकासु तानर्तापु य सर्वश । [5]
द्विजातयोऽश्वापानानि वज्रायुजत चासहस्र ।
वृषणानाथविकल ये च केचिदुपागतौ ।
तेऽप्युच्यन्ते कामेश्वर सधसस्तत्र पतिता ।

[No comm Cf 1 6 12^{ab} D11 om 1 x —(1 x) D12 repeats consecutively 1 x V1 नानाहिताग्निर् (sic) V3 नानाहमाग्निर् V4 नना° (hypermetric) (for नावत्या)

ब्राह्मणा भुञ्जते नित्यं नाथयन्तश्च भुञ्जते ।
तापसा भुञ्जते चापि श्रमणा भुञ्जते तथा ॥ ८
वृद्धाश्च व्याधिताश्चैव स्त्रियो बालास्तथैव च ।
अनिशं भुञ्जमानानां न वृत्तिरुपलभ्यते ॥ ९

D10 न त्रयी, M₄ नात्रो (for नात्रयी) N₁ नापनि, B₄ नर,
D12 *तो, D13 पतिते, M₄ नापि कश्चन (for पतिते
न च) —(1 2) N₁ V₂ B₁ D11 13 तत्र तानि (by
transp) D12 शतानि च (for तानि तत्र) D11 मुखे
(sic) (for -मुखे) —(1 3) M₄ [अ]नात्र (for इनात्रि)
M₄ [अ]स्वादिनि च दृष्टि च (for the post half)
—All the above MSS (except B₂ 3 D13) om 1 4
—(1 4) B₂ 3 read 1 4 in marg B₂ तत्र (for दृष्टान्)
—(1 5) V₂ पानीयु दिव्यात्, D12 पानीयु नेकात्, D13 पत्रिच
नेकेषु (for स्वमपाशेषनेकात्) D13 राजानेषु (sic) (for
राजनीयु) N₂ reads च *inf lin* D11 तथैव च (for च सर्वत्र)
—(1 6) V₂ मुक्त हि (sic) V₄ [अ]मुक्तु (sic) B₁ [अ]
भुजत (sic) B₄ [अ]भुजत (sic) D11 मुक्त (sic) D12
[अ]भुज * (for [अ]भुजन) D11 वा (for च) D12 सल्ला
(for चामल्ल) —All the above MSS (except B₂ 4
M₄) om 1 7 and 8 —B₂ 3 read 1 7 and 8 in marg
—(1 8) B₂ सर्वशास्त्रा (for सर्वशस्त्र) M₄ कलिपदा (for
तर्पिता)]

—Thereafter N V B D10 12 13 repeat 7

D11 further cont

392* न वायुक्कमभूतत्र समित चापि किंचन ।

8 T₁ damaged for 8^{abc} (cf v 1 7) M₄ om
8 9 —^a S₁ N₁ V B D (except Dt D₁ 6 8 14) अनाथा
Cmgt as in text (for ब्राह्मणा) V₂ B₂ D13 तत्र (for
नित्य) —^b D₂ 4 तु (for च) —^c T₂ राजसा, Ct as in
text (for तापसा) V₄ तत्र, B₁ om D₂ 7 T₂ M₂ 3 चापि,
D11 चैव, T₂ नित्य (for चापि) —^d G₂ श्रवणा Dt D₂ 8
चैव भुञ्जते S₁ N₁ B D13 5 7 9 10 12 13 भुञ्जते (B₁ om)
अस (N₁ D₁ 5 *ब) जा (by transp) अपि (B₂ in गृह-
वासिन) V₁ 2 D11 भुञ्जते चारणा अपि, V₂ भुञ्जते प्रवणा अपि,
V₄ भुञ्जते चेत्तरे जना, D₂ श्रवणानपि (sic) भुञ्जते

9 M₄ om 9 (cf v 1 8) —^a D₁ [अ]व्याधितात्
M₄ [अ]पि (for [ए]पि) —^b Dt D₁ 6 8 G₁ M₂
क्षीयात्तश्च (for क्षियो बालात्) T₂ क्षीयात्तश्चैव भुञ्जते —
For 9^{ab} S₁ N₁ V B D1-3 5 7 9-13 subst

392* अनाथानां तथा क्षीणा बालवृद्धस्य चैव हि ।

[No comm —D₂ अ *यानां D₅ या in तथा *sup lin*
D₂ वृद्धाश्च (for वृद्धस्य) V₂ वृद्धस्तथैव च (for the post
half)]

—^c D₄ भुज्य° (for भुजमानानां) S₁ N₁ V B D₁ 3
5 7 9-13 भुज्यि (D11 'पि) तानां दीनानां M₂ भुजानानां तथा

दीयतां दीयतामन्नं वासांसि निविधानि च ।
इति संचोदितास्तत्र तथा चक्रुर्नेकशः ॥ १०
अन्नकूटाश्च बहवो दृश्यन्ते पर्वतोपमाः ।
दिवसे दिवसे तत्र सिद्धस्य निधिस्तदा ॥ ११

तेषा Cmgt as in text (for °) —^a S₁ D₅ 11 12
सु, D₃ om (for न) N₁ V B D10 13 [अ]नृत्तिर (for
रुत्तिर) B₁ 3 4 D10 लक्ष्यते, D₁ लिप्यते (for लभ्यते)

10 ° T₂ देय च (for first दीयतां) D₂ om, 10°-11
T₁ damaged from ° up to वि in 11^d. —^c G₂ M₂
चोक्ता नरास् (for संचोदितास्) —For 10^{cd}, S₁ D₁-3 5 7
11 12 subst

393* यथोचितसमाख्यानि कर्म चक्रुस्तन्निद्रता ।

[D₁ अथोचिन, D₂ 7 यथोचिन D₁ 5 °ल्यत्तै, D₂ ज्ञानै,
D₂ 7 ज्ञानै D12 °प्यान (for समारयानै) D1-3 7 तथा D11
शब्द (for कर्म) D₂ [अ]नदिता, D₂ 7 'तै, D12 °या (for
[अ]तदिता)]

—For 10 N V B D10 13 M₄ subst

394* व्यधूयत च शब्दोऽत्र दीयता भुज्यतामिति ।

स्वाध्यायगीतशान्दाश्च व्यधूयन्त समन्तत ।

[No comm —(1 1) V₄ व्यधूयन्त (sic) B₄ अशूय च
M₄ सदा शब्दो (for च शब्दोऽत्र) N₂ B₂ 4 D10 [अ]य V₄
[अ]पि (for अत्र) V₁ *द्युताम् (for भुज्यताम्) —(1 2)
V₄ व्य *यत B₄ द् (for व्यधूयन्त) B₄ इति समतत (hyper-
metric)]

11 D₂ om 11 T₁ damaged up to वि in ° (for
both cf v 1 10) —^a Dt D₂ 8 transp दृश्यते and
वद्व च T₂ repeats पर्वतो —For 11^{ab} S₁ D₁ 3 5 7 11 12
subst

395* अन्न पानं च सुबहु दृश्यते पर्वतोपमम् ।

[D₂ 2 7 11 अन्न (for अन्न) D₂ 7 वतु (D₂ 'खु) वद्व (for
च सुबहु) D₂ [उ]त्तन D11 (before corr) दिजा (for
[उ]पमम्)]

On the other hand N V B D10 13 M₄ subst

396* सर्वकामयुगाश्चात्र व्यदृश्यन्ताश्च पर्वताः ।

[N₂ V₄ B₂ D10 तत्र B₂ 2 अत्र (sic) (for चान्न) V₂ व्यधूयत
(sic) B₁ *° (for व्यदृश्यन्त)]

—S₁ om 11°-14 —^c N₁ V₂ B D10 11 13 M₄ कूटा, V₁
कूटा (corrupt) V₂ दृष्टा V₄ दृष्टा, D₂ नात्र (for तत्र)
—^d D₁-3 5 7 12 सिद्धं (D₂ 12 अन्न) हु, G₂ लिप्यति (for
सिद्धस्य) D₂ तथा (for तदा) N V B D10 11 13 M₄
व्यज्जना हदा (D11 13 चया) स्तथा
—After 11 B₂ ins

397* ब्राह्मणा क्षत्रिया वैश्या शूद्राश्चैव हि भुञ्जते ।

अन्नं हि निधितस्सादु प्रशंसन्ति द्विजर्षभाः ।
अहो वृषाः स्म भद्रं ते इति शुश्राव राघवः ॥ १२
स्वलंकृताश्च पुरुषा ब्राह्मणान्पर्यवेपयन् ।
उपासते च तानन्ये सुमुष्टमणिङ्कुल्लाः ॥ १३
कर्मान्तरे तदा मित्रा हेतुनादान्वहून्पि ।

On the other hand, Dt D₁ 5 11 S (except M₁)
Cr mg t ins

398* नानादेशादुपासता पुरुषा कृगणास्तथा ।
अन्नपाने मुविहितास्तस्मिन्त्ये महात्मन ।

[(1 1) T₃ तदा (for तथा) — (1 2) D₅ मुविहितैश्च G₂
M₁ हुस (M₁ "स) हिताय]

12 Śi om 12 (cf v 1 11) —^a D₅ यथा (for
अन्न) D₁ 3 7 9 तु (for हि) D₁ 3 5 7 9 12 रसं, Cm g t as
in text (for निधिवद्) D₁ 3 7 9 स्वाध, M₂ साधु, Cm g t
as in text (for स्वादु) —^b D₃ विन्^o (sic) (for
द्विजर्षभा) — T₁ damaged from द्र ते up to कुण् in 13^d
—^c Dt *हो (for अहो) D₁ 5 11 12 स्म भद्र (by
transp) D₂ 3 7 स्म नृप (for वृषा स्म) D₃ 3 ते भद्र (by
transp) D₁ 2 भद्रच र्धद् (sic) (for भद्र ते) —^d G₂
विश्राव (for शुश्राव) D₁ रावित, D₃ रोचित (for राघव)
D₅ 7 शुश्रुविर गिर, D₅ 12 स्म भूयते भूत, D₉ इत्युचुस्ते
सुवर्णिता — For 12 Ñ V B D₁₀ 11 12 M₄ subst

399* अहो स्वादु प्रभूत च निविध चाब्रमीदमन् ।
अहो स्म वृषा भद्र च राससुरिति वै द्विजा ।

[(1 1) V₄ विचित्रा *न्नं (sic) D₁ निविचनन्नं (sic)
(for निविध चान्न) V₁ ईदुरी M₄ मृष्टम विमृज्यते (for the
post half) — (1 2) B₄ यु (for स्म) V₄ वृषा (for
वृषा) D₁ च (for व) V₁ अहो प्राचुरेता भद्र च (hyper-
metric) M₄ इति यन्नमृष्टि ता (for the prior half) V₁
स २ र (for ईदुरी) M₄ तत्र (for इति)]
Thereafter M₄ cont

400* प्रव्याहरन्त शुचयस्तास्ता धर्माधेसहिता ।

M₄ further cont 387*

13 T₁ damaged up to कुण in ^a (cf v 1 12) Śi
om 13 (cf v 1 11) M₄ om 13 15 —^a D₁ 5 12
अहृताद् G₂ M₁ ते (for च) D₁ 3 5 7 9 12 राजानो, V₃
पुरपात् (for पुरपा) —^b D₃ 1 पर्यसेव, G₂ पर्यतोप^o
(for पर्यवेपयन्) D₁ ब्राह्मणाश्च परिधेयन् (hypermetric)
— D₁ transp 13^d—31^{ab} and 31^d—41 (including
star passages) (om 14^{ab} 19 21^b 22^a and 24) —^c
Dt D₅ उपासते, Cr as in text (for उपासते) D₁ 3 5
7 9 11 12 मुश्रीन (D₁ 2 वृष) मनस सेव (cf 43^a) —^d D₁
प्रमृष्ट (for सुमुष्ट)

प्राहुः सुपाग्मिनो धीराः परस्परजिगीषया ॥ १४
दिवसे दिवसे तत्र संस्तरे कुशला द्विजाः ।
सर्गरुमाणि चक्रुस्ते यथाशास्त्रं प्रचोदिताः ॥ १५
नापङ्कजनिद्वार्मीचाप्रतो नापहृथुतः ।
सदस्यस्तस्य वै राशो नामादकुशलो द्विजः ॥ १६

—For 13 Ñ V B D₁₀ 13 subst, while D₁ subst
for 13^{ab} only

401* राजानोऽभ्यागतस्तत्र स्वयमेव स्वल्ङ्वा ।
मृष्टव्यज्जगता यज्ञे द्विजान्वै पर्यवेपयन् ।

[No comm — (1 1) Ñ₂ V₁ स्वागतान् D₁ 3 [अ]
प्रागनेष (sic) (for अभ्यागत) — (1 2) D₁ reads I 2
after 41 D₁ 3 मृष्टि^o (for मृष्टवद्) V₁ राजो (for यज्ञे) V₂
दिवार्थ, D₁ ब्राह्मणान् (for दिवा वै) V₄ पच रेचयन् (sic)
(for पर्यवेपयन्)]

14 Śi M₄ om 14 (cf v 1 11 and 13 respy)
D₁ transp 13^d—31^{ab} and 31^d—41 (om 14^{ab}, 19
21^b—22^a and 24) —^a D₁ 3 7 प्राप्ते, D₅ 12 तु (D₁ 12 त
sic) सप्राप्ते (for तदा विप्रा) Ñ V B D₁₀ 13 तत्र कर्मांतरे
प्राप्ते (V₂ णा) —^b Ñ V B D₁ 3 5 7 10 12 13 बहु (D₁
त्वद्) स्तदा (Ñ 1 [transp] V₂ B 1 4 तथा, B₃ नत्) D₅
बहुन्यपि (sic) (for बहुनपि) —^c V₂ प्रायसुर, B₃ स्व-
D₁ सदा, G₂ स्म (for प्राहुः सु) V₄ अदिनो, D₁ वामि
* (for वामिनो) D₁ 13 धीरा, G₂ घोरा, M₂ विप्रा, G₂
as in text (for धीरा) —^d D₃ प* स्पर, D₃ परस्य ति
(for परस्पर) Ñ V B D₁ 3 5 7 10—13 निगीषय, G₂ पया
(as in text) — After 14 Ñ V B D₁₀—13 ins 387*

15 M₄ om 15 (cf v 1 13) D₁ transp 13^d—
31^{ab} and 31^d—41 (om 14^{ab}, 19 21^b—22^a and 24)
—^a Śi Ñ 1 V₂ 4 B 1 2 D₁ 3 5 7 11—13 चक्रुः, Ñ₂ V 1 3 B₃ 4
D₁₀ कुशु (for तत्र) —^b Ñ₂ V₂ 4 B 1 4 D₁₀ सेभारे (B₃
दे, D₁₀ रे) V₂ सस्तान् (sic) D₃ संसार, D₁ सस्कार,
T₃ दाससु, G₂ सस्थरे (sic) Cm g t as in text (for
संस्तरे) V₂ D₁ कुशल, Dt कुश* (for कुशला) Śi D₅
om 15^a—16 —^a Ñ₂ V 1 3 B 1 2 D₁ 3 10—12 सर्व, G₂ as
in text (for सर्व) Ñ V B D₃ 3 7 10—13 कर्म यथा (Ñ₂
*) वसद् (V₂ B₃ D₁ 3 वसु, V₄ हं तद्, B₃ वच B₄
चित्त) D₁ यथानु यथा, G₂ as in text (for कर्माणि
चक्रुस्त) — T₁ damaged from 15^d up to 16 —^d Ñ
V B D₁ 3 7 10—13 यथाशास्त्रे चो (D₁ 3 7 12 13 नो) दित
(V₂ दैक्षिक V₃ दक्षिण D₅ 3 7 ता) G₂ t as in text
(for ^a) — After 15 D₄ T₃ M₁ ins 387*

16 Śi D₅ om 16 T₁ damaged (cf v 1 15)
D₁ transp 13^d—31^{ab} and 31^d—41 (om 14^{ab}, 19
21^b—22^a and 24) —^a D₁₀ नो (for न) Ñ 1 om 11 in
नापङ्कजिद् V₁ तत्र (for अत्र) —^b Ñ V B D₁₀ 11 13

प्राप्ते यूषोच्छ्रये तस्मिन्पद्मैल्याः खादिरास्तथा ।
तावन्तो विलसहिताः पर्णिनश्च तथापरे ॥ १७
श्लेष्मातकमयो दिष्टो देवदारुमयस्तथा ।
द्वात्रैव तत्र निहितौ बाहुव्यस्तपरिग्रहौ ॥ १८

M₄ सदस्यो, M₂₃ नाहते (for नाहतो) V₄ M₄ वा (for न) —^c D₄ 9 12 G₂ M₁ C_g त सदस्यास् (for सदस्यस्) D₂ 7 9 12 T₂ 3 तत्, D₃ त्वत् (for तस्य) —^d D₁ नावाचि, G₁ 3 मायेद् (for नामाद्) D₄ 9 12 G₂ M₁ C_g कुशला द्विजा —For 16^cd Ñ V B D₁₀ 11 13 M₄ subst

402* न सूत्रकल्पाकुशलो न वागबुधस्तथा ।

[V₁ सूत्रकस्यायु B₃ °कमै M₄ नामपक्ष (for न सूत्रकप)
 N₁ B₂ चाप्य V₂ B₁ s वाचा V₄ वागु (submetric) D₁₁
 वा * M₄ वाद (for वाग) V₁ नापीरो नाकुल सुखी (for the
 post half)]

17 D₁₁ transp 13^{a-d}-31^{ab} and 31^{a-d}-41 (om 14^{ab} 19 21^a-22° and 24) —^a D₂ प्राप्त (for प्राप्ते) D₂ तपोच्छ्रये, G₄ यूषाध्रये (for यूषोच्छ्रये) D₁₄ नादिमन् (for तस्मिन्) N̄ V B D₁₀ 11 13 M₁ उडिङ् (B₁ ङ्) ताश्चा भवन् (N̄₁ श्र भवन्) यूषा —^b V₃ D₁ विह्वा, D₃ विह्वा वै (for पड्यैह्वा) N̄ V₁₋₃ B D₁₀ 11 13 च पद्, D₁₂ दश, T₃ यथा (for तया) M₄ पद् च खादिता —^d C₆ अपरे (as in text) C₁ परे (for अपरे) —For 17^{a-d} S₁ D₁-3.5 7 8 12 subst

403* तथा पर्णमयाश्चैव पङ्क्त्ये ब्रह्मसंमता ।

[Ś1 स्वर्णं D5 मयाश्च (for पर्णमयाश्च) D1 विश्व (for बित्त्व) D2 ः-समिता (for -समिता)]

while N V B D_{10 11 13} M₄ subst

404* तावन्त एव पालाशास्तथैवोदुम्बरा पृथक् ।

[B₂ M₄ [औ] द्वारा M₄ पृथक्पृथ (ditto) (for पृथक्)
 N₁ V₄ B₁ यत्र तस्मिन्समाह्वा (for the post half)]

18 Ts om 18^{ab} Dii transp 13^{ab}-3r^{ab} and 3r^{ab}-4r (om 14^{ab} 19 21^b-22^a and 24) —a) S1 D 3 7 9 11 खेष्मा (S1 °ष्मा) त्वमनयो (S1 °याश्) S1 चान्ये, N1 V 3 B D11 11 M4 चैनो, V4 D13 G ल्वेनो, D2 3 7 चैव, D12 चिन्यो, Cmt as in text Cmp tp [s] सिष्ठो (for दिष्टो) D1 5 खेष्मा (D1 °ष्मा) त्वमनयोस्त्रिय (D1 °ष्ट) D9 (marg gloss) भ्रुदुदास्तमय, G4 M1 °श्च सदिष्टो —d) S1 D 3 7 पुति, Cmg t as in text (for देव) D1 5 7 दात्मन्यास् (D1 3 7 °या) N2 V1 3 B2-d D10 M4 [श्च] पर, Cmg t as in text (for तथा) —V4 om 18^{cd} —e) S1 N1 V1-3 B D1-3 5 7 8-12 M4 द्वायास्ता (V1 °रास्ताद् [sic]), G1 द्वावे ° (for द्वायेव) N1 V1 D11 नि (V1 स) दिष्टौ, V2 मिष्टौ, V3 मिष्टि, B1 निष्ठौ, B2 निष्ठो,

कारिताः सर्वे एवैते शास्त्रज्ञैर्यज्ञोविदैः ।

शोभार्थं तस्य यज्ञस्य काश्चनालंकृता भवन् ॥ १९

पिन्यस्ता पिधिप्रत्सर्वे शिल्पिभिः सुकृता दृढाः ।

अष्टाश्रयः सर्व एव श्लक्ष्णरूपसमन्विताः ॥ २०

Cg as in text (for विविदौ) —T₁ damaged from ^a up to एकविं in 406* —^a D₁: म्या स, D₂: 11 म्यास, D₃: 12 म्या सु, Cr mg t as in text (for बाहुव्यस्त) Ś1 D₇: बाहुभ्याम्^u N̄ V B D₁₀: 13 M₄ यूयौ (N̄₁ V₂ पो, V₃ वेद्, M₄ ध्रुवौ) वेदागपारौ —After 18 N̄ V (V₄ om ^{cd}) B D₁₀: 11 M₄ ins Ctp after 19 while D₁₂ ins after 20^{ab}

405* महोच्छायपरीणाहो यूपोऽन्य सर्वकाश्चन ।
यदे समभवत्तत्र शोभार्थमुपकल्पित ।

[(1 x) $\bar{N}_1 V_2 M_4$ महोच्छ (V_2 °च)य, D_{12} अष्टायानौच्छाय
(hypermetric) (for महोच्छाय) — M_4 om 1 2 — (1.
2) V_1 यज्ञो (sic), B_4 सत्वे (for यज्ञे) D_{10} सम * वद्
 D_{13} कामतस्व (for समगवत्)]

19 Ti damaged (cf v1 r8) Śi Ñ V B
D1=5 7 10 12 13 om 19 M1 om 19^{as} D11 transp
13^d-31^{as} and 31^d-41 (om 19^{as} 19 21^d-22^d and
24^d) D2 ह (for सबे) G1 [ए] देह (for [ए] ते)
—c) M1 निर्मितकत्र (for तस्य यज्ञस्य) —^d) M1 तोरण
वापि काचन —After 19 Dt D1=5 9 11 S (except M1)
Cr mg t ins

406* एकविंशतियूपास्ते एकविंशत्यरत्नय ।
वातोभिरेकविंशद्दिरेकैके समलकृता ।

[(1 x) T1 damaged for एकविं (cf v1 x8) M2 दोके
(for एक) G2 [अ]यनता M2-रतनय (for-[अ]रतनय)]
while M4 ins

407* नातायूपोच्चैस्तैश्च सर्वतः समलङ्कृतम् ।

Thereafter M₄ cont 409*

20 M₂ om 20-22 D₁₁ transp 13^{cd}-31^{ab} and 31^{cd}-41 (om 14^{ab} 19 21^d-22^c and 24) —^a) D₂ om विधि N₁ सर्व, N₂ B* D₂ 10 13 सर्व, C₂ as in text (for सर्व) —^b) M₂ damaged after विधि T₃ G₁-3 M₁ सुद्धा हृत्ता, C₂ as in text (for सुद्धा हृत्ता) — After 20^{ab}, D₁₂ ins 405*. —^c) N₁ V₂ B₁ D₂ G₂ भ्रया, V₂ भ्रौ, V₄ भ्रदा* (sic) B₂ विंत्स, D₂ भाषादा, C₂ mg as in text Ct स्य (for भ्रदाभ्रय) N₂ B₂ D₁₀ तत् (D₁₀ त पृथग्वत्, C₂ as in text (for सर्व एव) D₁₂ स्वाभ्रया सर्व एवेत् —^d) N₂ B₂ D₁₀ दुष्*, V₂ स्वाक्ष्ण* (sic) B₂ सूक्ष्म, D₂ सूक्ष्म* (sic), D₂ रूप्ता, C₂ mg t as in text (for सूक्ष्मस्त्व)

आच्छादितास्ते वासोभिः पुष्पैर्गन्धैश्च भूषिताः ।
समर्पयो दीप्तिमन्तो विराजन्ते यथा दिशि ॥ २१
इष्टाश्च यथान्याय कारिताश्च प्रमाणतः ।
चितोऽग्निर्ब्राह्मणैस्तत्र कुशलैः शुक्लकर्मणि ।
स चित्तो राजसिंहस्य संचितः कुशलैर्द्विजैः ॥ २२

21 M⁴ om 21 (cf v l 20) D¹¹ transp 13^d-31^{ab} and 31^d 41 (om 14^{ab} 19 21⁵ 22^e and 24) T¹ damaged from दि in 20^e up to यथान्या in 22^e —^a) D⁵ वासां, G² M¹ छादितास्ते सु, Cg as in text (for आच्छादितास्ते) N¹ वासो* (for वासोभिः) —S¹ N¹ V B D¹ 5 7 10 13 om 21⁵-22^e —^b) M² पुष्प (for पुष्पैः) M² गंधे पुष्पैश्च (by transp) D^t D⁴ 5 5 9 G² M¹ भूषिता T² शोभिता (for भूषिता) —^d) T² (before corr) G² विराजन्ते T² (before corr) G¹ विधि (for दिशि)

22 M⁴ om 22 (cf v l 20) S¹ N¹ V B D¹-3 5 7 10 12 13 om 22^{ab} T¹ damaged up to यथान्या in ^a (cf v l 21) D¹¹ transp 13^d-31^{ab} and 31^d 41 (om 14^{ab} 19 21⁵-22^e and 24) —^a) T² 3 न्याय (for न्याय) —^b) D⁵ प्रयन्त (for प्रमाणतः) —^c) M² चित्तो (for चितो) G² ब्राह्मणत् —^d) S¹ B² D¹ 3 11 दिशि (D³ °लि [sic] D¹ °वि) N¹ V² 4 B¹ 2 4 D^t D¹ 5 5 10 12 13 G¹ 4 M² 3 दिव्य V¹ 2 सव, D⁵ शुद्ध, T² Cm यज्ञ, Cr mp g tp as in text (for शुद्ध) N¹ V B D¹ 10 कर्मसु (V² °भि D³ °नि [sic]) Cr mp g tp as in text (for कर्मणि) —After 22^d D¹ 13 ins 409* —D¹ 13 om 22^{ef} —^d) S¹ D¹ 2 चयो D³ 7 चये D⁵ 12 सर्वे Cr mg t as in text (for चित्तो) —^f) S¹ सचितै D² रचित D⁶ संविष्ट Cr mg t as in text (for सचित) —For 22^{ef} N V B D¹ 11 subst

408* विततश्चाभयवैद्यो ब्राह्मणैर्पञ्चकर्मणि ।

[N¹ विततश्चाभ N² D¹ विविचय V¹ 2 B² (m also) निवि (V² विन) वाय, V² विविचय B² विविचय (for विततश्च) D¹ 10 वाभ * च (for वाभवच्) V¹ वैद्यो V² वैद्यो (for वैद्यो) V² विविचयान्ततक्षयो B² अविचयान्तवययो (both s c) B² निविचयत्वा* (for the prior half) N¹ ब्राह्मणे V¹ 3 4 B² (m also) कर्मणि V² D¹ 11 कर्मणि (for कर्मणि)] N² B² 4 D¹ 11 M⁴ (M⁴ after 407*) cont while D¹ 13 ins after 22^d

409* मञ्जुपौष्पयैस्तैस्तु सर्वतः समलकृतैः ।
रत्न सुन्दर यज्ञ कल्पद्रुमैर्विबोद्धितैः ।
विचित्राश्चाभयवैद्यो ब्राह्मणैर्पञ्चकर्मणि ।

[No comm M⁴ om 1 1 1 B² reads up to यज्ञ in 1 3 in marg —(1 1) D¹ 13 नत्र (for मञ्जु) B² 4 D¹ 1 मञ्जुपौष्पयैश्च —(1 2) D¹ 10 द* (for दन) D¹ 10 [उ]

गहडो रुक्मपक्षो वै त्रिगुणोऽष्टादशात्मकः ।
नियुक्तास्तत्र पशवस्तत्तदुद्दिश्य दैवतम् ॥ २३

उरगाः पक्षिणश्चैव यथाशास्त्रं प्रचोदिताः ।

शामित्रे तु ह्यस्तत्र तथा जलचराश्च ये ॥ २४

चिह्न —(1 3) D¹ 10 13 विविचय D¹ 11 विविचय M⁴ विविचय (for विविचय) B² मेष्वा B² मेष्वा D¹ 10 13 जोष्वा D¹ 11 जोष्वा M⁴ वैद्यो (for योधा) For the post half of the post half of 408*]

23 D¹ 11 transp 13^d-31^{ab} and 31^d-41 (om 14^{ab} 19 21⁵-22^e and 24) —^a) D¹ °कुक्षो D² °कक्षो, D⁵ °पक्षैः, Cr mg t as in text (for रुक्मपक्षो) —^b) S¹ D¹-3 5 7 13 द्वाद (D³ °) द्वा Cr mg t as in text (for ष्टादश) T¹ damaged from रुक्म in ^d up to शामित्रे in 24^e T² [आ]मन (for [आ]त्मक) —For 23^{ab} N¹ V B D¹ 10 11 13 M⁴ subst

410* अष्टमदक्ष कृतश्चापि गहड काष्ठनेष्टक ।

[N¹ आहो* (sic) N² B² 4 अष्ट* V¹ 4 B¹ आत्यन्त्र (V¹ °म V¹ °चु) V² आप* V² अष्टिष्ट (sic) D¹ 11 अष्टिवच D¹ 13 अष्टिवच (for अष्टमदक्ष) N¹ चात्र (for चापि) M⁴ आत्यन्त्रप्रमाणेन (for the prior half)]

—^c) N¹ V B D¹ 13 M⁴ प्रोक्षि (V¹ °पि V² प्रोक्षि) वात् Cg as in text (for नियुक्ताश्च) D² तत्र (for तत्र) M² पशवस्तत्र (by transp) (for तत्र पशवस्त) D¹ 13 T² G² पशूना त्रिशत तत्र —^d) S¹ N¹ V B D¹ 3 5 7 9-13 वास्ता (V¹ °तान्) उद्दिश्य (D¹ °वात्रुद्दिश्य [sic]) देवता Cg as in text (for ^d) —After 23 S¹ N V B D¹ 3 5 7 9-13 M⁴ ins

411* उद्कानि च स्वत्वा निनासुगवयसि च ।
जलेचरा स्थलचरा अन्तरिक्षचरास्तथा ।

[No comm —All the above MSS except B² M⁴ om 1 1 x —(1 1) M⁴ आत्मानि M⁴ स * (for सत्त्वानि) —M⁴ om 1 2 —(1 2) V² वने* D² जल* (for जलेचरा) V¹ स्थलेचरा V¹ त्व* (for अन्तरिक्ष) D¹ 13 च ये (for तथा)]

M⁴ cont 412*

24 T¹ damaged up to शामित्रे in 24^e (cf v l 23) M⁴ om 24 25^{ab} S¹ om 24 D¹ 11 transp 13^d-31^{ab} and 31^d 41 (om 14^{ab} 19 21⁵-22^e and 24) —^a) D¹ 5 5 10 12 13 पतगा D² उतगा (sic) D⁵ पक्षगा, Cg as in text (for उरगा) D⁵ पत्रिणश्च (for पक्षिणश्च) N V B D¹ 3 5 7 9 10 12 13 om 24^{ef} —^d) G² यथा (for तथा) D¹ 5 5 7 9 10 12 13 वनचरा (D¹ °) द्वा Cg as in text (for जलचराश्च) N¹ B² D¹ 10 अवि V² तथा (for च ये) —After

ऋत्विग्भिः सर्वमेवैतन्नियुक्तं शास्त्रतस्तदा ।
 पशूनां त्रिशतं तत्र यूषेण नियतं तदा ।
 अश्वरत्नोत्तमं तस्य राज्ञो दशरथस्य ह ॥ २५
 कौसल्या तं हर्यं तत्र परिचर्य समन्ततः ।
 कृपाणीर्निशशासैनं त्रिभिः परमया मुदा ॥ २६
 पतत्रिणा तदा सार्धं सुस्थितेन च चेतसा ।

24 Ñ V B D10 13 ins, while D11 ins after 25^{ab}, M4 cont after 411*

412* नानास्त्वर्पभाश्चैव हयमेधे महाक्रतौ ।
 नानासरीसृपाश्चैव नानौपध्वश्च कल्पिता ।

[No comm D13 om 1 x —(1 x) B4 महाक्रतौ —
 (1 2) B1 प्रकल्पिता]

25 Ñ V B D10 13 M4 om 25^{ab} (for M4 cf v1 24) D11 transp 13^{cd}-31^{ab} and 31^{cd}-41 (om 14^{ab} 19 21^b-22^c and 24) —^a) Śi D1-3 5 7 9 11 12 कृपभा, Dt D6 8 T G1 3 4 M3 ऋविभि Cg as in text (for ऋत्विग्भि) Śi D1-3 5 7 9 11 सर्व, D12 शास्त्र (sic) (for सर्वम्) Śi D1-3 5 7 11 12 [पृ]ति D9 [इ]ति (for [पृ]त्) —^b) Śi D1-3 5 7 9 11 12 नि (D2 om) युक्ता Cg as in text (for नियुक्त) Śi D1-3 7 11 12 T2 G2 M1 3 तथा, T3 तत्त्वत Cg as in text (for शास्त्रतस्तदा) —After 25^{ab}, D11 ins 412* —^c) T3 पशूपशूना (by ditto) Ñ1 प्रशिशत (sic), Ñ2 त्रिदश, V2 नियुत, B2 प्रोक्षित, M4 त्रिशक, Cm g as in text (for त्रिशतं) Śi D1-3 5 7 9 11 12 त्या(D2 11 12 चा)सीत्, Ñ2 V3 B3 4 D10 चापि, B2 D13 M3 चैव, Cm g as in text (for तत्र) —^d) D1 2 5 7 G4 Cm नियुत (D1 यत्ता, D2 यत्त, Cm चक) Cg as in text (for नियत) D1-3 7 9 T2 तथा (for तदा) Ñ V B D10 13 प्रत्यह (V1 समूह) प्रोक्षित (Ñ2 पित; B2 त्रिशत) द्वितै, T2 विनियोजित, M4 प्रोक्षित प्रत्य *** T1 damaged after 11 in 25^c up to पर in 26^d D1 reads 25^{cd} after 1 x of 413* —For 25^c-30^d, Ñ V B D10 13 M4 subst 413* —^e) Śi D1-3 5 7 9 11 12 स यज्ञो व(D2*)वृधे (Śi ते D9 धेते) D14 S (except T2 M2) Cm gp र, Cg t as in text (for अश्वरत्नोत्तम) Śi Dt D1-9 11 12 T2 G1 3 तत्र (for तस्य) —^f) D3 5 9 12 T2 G1-3 M1 Cg च, T2 G4 हि (for ह)

26 T1 damaged up to पर in 26^d (cf v1 25). D11 transp 13^{cd}-31^{ab} and 31^{cd}-41 (om 14^{ab} 19, 21^b-22^c 24) —^a) D2-3 7 9 11 कौसल्या T2 तु (for त) D1 कौसल्यापितृत्वं —^b) Śi D1 13 G1 4 वार्य, D1 3 7 9 वार्य, M2 3 चया (M3 यौ) Cm g t as in text (for परिचर्य) For 26^d, D11 subst 1 2 of 413* —^c) Śi D1-3 5 7 11 12 विपणेर; Cm g t as in text (for कृपाणेर)

अवसद्रजनीमेकां कौसल्या धर्मकाम्यया ॥ २७

होताध्वर्युस्तथोद्गाता हयेन समयोजयन् ।

महिष्या परिवृत्त्याथ वावातामपरां तथा ॥ २८

पतत्रिणास्तस्य वषामुद्धृत्य नियतेन्द्रियः ।

ऋत्विक्परमसंपन्नः श्रपयामास शास्त्रतः ॥ २९

Śi विससारेन, D2 सेन (sic), D3 सेना (sic), D12 सेन्य (sic) (for विशासासैन) —^a) D1 6 मत्रिभि परया (D1 मा) मुदा

27 D11 transp 13^{cd}-31^{ab} and 31^{cd}-41 (om 14^{ab}, 19, 21^b-22^c and 24) —^a) Śi पतत्रिणा तदा सार —^b) D4 T3 सुस्थिरेण (for सुस्थितेन) G4 चेतना (for चेतसा) Śi D1-3 5 7 9 11 12 (D3 before corr) तदा (D1-3 7 9 before corr, after corr as in text also) ज दत्, D12 युद् मूले समा(D2 उपा)वि (D2 दि)शत् —^c) D3 अलर्जद्; G3 अग्यसद् (sic) (for अवसद्) —^d) D1-3 7 9 11 12 कौसल्या Śi D3 11 12 काक्षया (for धर्मकाम्यया)

28 D11 transp 13^{cd}-31^{ab} and 31^{cd}-41 (om 14^{ab}, 19 21^b-22^c and 24) —^a) D4 Cg हस्तेन (for हृदेन) T1 damaged from योजयन् up to निय in 29^b. Śi D2 5 7 12 संग्रह स(D3 स)मयो यथा, D1 संग्राह (sic) स ययौ यथा D11 मन्त्रवन्तमयोज्यान् (submetric) —^b) Śi D1-3 5 7 11 12 M3 महिष्य, D4 महिषी, Cm g t as in text (for महिष्या) Śi D1-3 5 7 12 चयां, D11 चयै, D2 वित्या, Cm g t as in text (for परिवृत्त्या) Śi D1 2 4 5 7 11 12 14 T2 M2 3 Cg च, D3 ताम् (for [अ]प), —^c) T2 च तथा परा, G2 M1 च परे तदा, M2 अपरास्तया, M3 च यशस्विनी (for अपरां तथा) Śi D1 3 5 7 11 12 वामवायुस्तथापरा (D3 11 रा) D3 अवा*युस्तया पुरा (sic)

29 T1 damaged up to निय in 29^b (cf v1 28) D11 transp 13^{cd}-31^{ab} and 31^{cd}-41 (om 14^{ab}, 19 21^b-22^c and 24) —^a) Cm g पतत्रिणस् (as in text) Śi D1-3 5 7 9 11 12 Cr स(D1-3 7 9 स D4 Cr प)त्रिणस्तस्य तु वषाम् (Śi बुद्धिस् [unmetrical] D3 तुरगम्, D3 after corr as in text D11 वषाया hypermetric) —^b) Śi रयज्यते (for उद्गाय) Śi D1-3 5 7 9 11 12 नियतेन्द्रिया (Śi यै), Cg द्रिय (as in text) —^c) G4 ऋत्विगिरप, Cg t as in text (for ऋत्विक्परम) G1 संपन्न Śi D1-3 5 7 9 12 ऋत्विजश्च(D1 3 स्तु)तु(D2 तु)संपन्ता —^d) D1 वषयांचयु, Cg as in text (for श्रपयामास) Śi D2 3 5 7 9 12 श(D1 3 ते sic)प(D7 प्रथ)यांचयुरास(D2 त्म)वान् (Śi D3 13 चरिरे यथा; D2 वत् hypermetric D3 वत्)

धूमगन्धं वषायास्तु जिघ्रति स नराधिपः ।
यथाहलं यथान्यायं निर्युदन्पापमात्मनः ॥ ३०
ह्यस्य यानि चाङ्गानि तानि सर्पाणि ब्राह्मणाः ।
अग्रां प्रास्यन्ति विधिरत्समस्ताः षोडशर्त्विजः ॥ ३१

पुशशासास्तु यज्ञानामन्येषां क्रियते हविः ।
अश्वमेधस्य चैकस्य वेतमो भाग इप्यते ॥ ३२
व्यहोऽश्वमेधः संख्यातः कल्पघट्टेण ब्राह्मणैः ।
चतुष्टोममहस्तस्य प्रथमं परिकल्पितम् ॥ ३३

30 Śi D1-35791 om 30 —^a) G1 घृष गंध (for धूमगन्ध) G13 त (for तु) —^b) G13 M3 निघ्नं T3 स (for स्म) G13 M3 नराधिपः, Cg t °धिप (as in text) —For 25^a-30 N V B D1013 M4 subst while D11 ins 1 1 after 25^a, subst 1 2 for 26^a, then cont 1 3 7 and subst 1 9-10 for 29^a-30^a (om 1. 8 11)

413* अश्वमेधं यान्मृष्ये मोक्षिर्न वैधेदविकम् ।
कौसल्या त ह्य तत्र परिमण्य प्रदक्षिणम् ।
सम्बन्धम्यथैवाचके गन्धमास्त्रिभूषणे ।
अश्वयुर्महिता चैनं समालभ्य शुचिरता ।
रत्नर्त्त पयुषास्तैका कौसल्या युष्टमायता । [5]
तमश्चमुपनिष्टव्या कौसल्यायास्ततो द्विजा ।
न्यव्यशुगादय प्रीता प्रायुञ्जत तदशिप ।
विदास्यो ह्यव च वषामश्चस्य विधिरचदा ।
नविविष्टप्राश्चित्तमग्री लुहारावाहयन्पुरान् ।
तस्याश्च नृपतिर्धूम जग्री पत्नीमहायवान् [10]
वषाया ह्यमानाया पावकं पुरकाम्यया ।

[No comm —(1 1) V2 B2 4 °धैविक (B2 marg °कै) B3 D11 M4 विधैविक (M4 °वन) —After 1 1 D11 reads 25^a —(1 2) V B1 4 D10 कौसल्या V3 तद्, B2 तु (for त) M4 ह्यतर (for ह्य तत) V2 D13 °कल्प (for परिमण्य) —(1 3) M4 निलम् (for सम्पम्) —(1 4) B2 om हिता चैन D13 महिताश्च M4 तस्या (for-सहिता) V2 स*लभ्य M4 moth eaten for मालम्बयुवि V23 शुभ्रः B2 शु* (for शुधि) D11 मिता (for त्रता) —(1 5) N1 V23 B1 °कौषेका, M4 °पायैका (for पयुषास्तैका) N2 V12 B2 4 D10 तमश्च V3 तत्र (for कौसल्या) —(1 6) M4 पयुषास्तया (for उपनिष्टव्या) B2 तु ते (for ततो) —(1 7) V1 रत्नं (for अग्री) V2 4 B2 D10 प्रायुञ्ज, D13 प्रायुञ्जत M4 प्रायच्छाशिप शुभा (for the post half) For ins see below —(1 8) M4 partially moth eaten for the prior half V1 विहित्य (sic) V2 निशित्य (for विरात्य) N1 B1 कोट्ठस्य वषाम् (by transp) N2 V2 B2 4 D10 13 [उ]द्धव च (V2 D13 transp च and उद्धव) वषाम् V2 [उ]द्धव वषाया —(1 9) V1 कडि (for कलिडः) N1 आनय तान् V4 D11 मा (D11 म)वापिताम् (for मया चिताम्) D13 क्षीरै (for अग्री) V1 वरान् (for सुरान्) —(1 10) D13 धूम (for धूम) N2 B2 D10 धूम नृपतिर् (by transp) —For 1 10 D11 reads धूम तस्य नृपे जग्री जिघ्रति स्म वर (र)शिव —(1 11) B4 धूम* (sic) (for ह्यमानाया)] —After 1 7 D11 ins

414* अश्वस्य विधिरत्तत्र परिवार्य समन्तत ।
—^a) D11 T3 वथान्याय्य (for °न्याय) T1 damaged from 30^a up to सम in 31^a —^d) D11 अषावतेत स ऋतु

31 T1 damaged up to नम in 31^a (cf v 1 30) D11 transp 13^a-31^a and 31^a-41 (om 14^a, 19 21^a-22^a and 24) —^a) N V B D1013 M4 तस्य, D11 वा * (for वानि) D2 हिंगानि (for चरानि) —^b) D2 हिंगानि (for सर्वाणि) Śi D1-35791112 ते (D11 है)द्विजा, Cg t as in text (for ब्राह्मणा) N V B D1013 M4 कल्पितानि विभागात् (V1 घानत) —After 31^a, D11 ins 1 1 of 429* (for variants of v 1 429*) —^c) D2 बानौ (sic) M4 after inf lin sec m cont as in text (for बानौ). D2 2 प्राप्स्यति, D3 7 प्रास्यत (for प्राप्स्यन्ति) —^d) Śi D1 3579 समस्त, D2 सर्वे त, D4 समाप्ता, D11 T2 1 G2 सम (T1 **)त्रा (D11 °त्र)ए, G13 समस्तम् (for समस्ता) Śi D1-35713 है (D2 च) ह्ये तदा (Śi °था) D2 विहिते तथा (for षोडशर्त्विज) —For 31^a, N V B D1013 M4 subst

415* लुहुर्ध्वानरास्तत्र ययाभाग दिवौकसाम् ।

[B1 बाङ्गिरास्त्र (for बाङ्गिरास्त्र) B1 न्योग (for नाग)]
Thereafter, N V B D1013 M4 cont 420* D11 cont

416* आगय देवता सर्वा अगृह्णभागमीप्सितम् ।

32 N V B D1013 M4 om 32-35 D11 transp 13^a-31^a and 31^a-41 (om 14^a, 19 21^a-22^a and 24) —^a) D2 ह्यत (for ह्यत) —^b) Śi चुच, D1 चुच, D2 सत, D3 धुत, D7 स्तर, D11 धुच, Crgt as in text (for हवि) —^c) Dt D2 4 G2 M2 2 Cg वयस्य (for वैकस्य) —^d) D2 वेतसो, Crgt as in text (for वेतसो) Śi चुच, D1-3 7 11 12 अ (D1 अ [sic] D13 से)रा (D11 °श [sic]) T2 शास, Crgt as in text (for भाग)

33 N V B D1013 M4 om 33 (cf v 1 32) D11 transp 13^a-31^a and 31^a-41 (om 14^a, 19 21^a-22^a and 24) —^a) D2 35711 अहो, Crgt as in text (for °वहो) —^b) T2 न्युष्टेयु Śi D1-35791112 यु (D1 स्त [sic])रेयु वै द्विजै, Crgt as in text (for 3^a) T1 damaged from ह्ये in 33^a up to कारि in 34^a —^c) Crgt चतुष्टोमम् (as in text) Śi D1 35711 13 चतुर्थो यस्व* (D2 2 °यं यस्व [sic]) D2 चतुर्थं म* यस्वत्, D7 चतुर्थेऽत्र, D11 G1 3 अग्नि (D11 m sec m)ष्टोमम् —^d) G1 परिकल्पित, M4 परिकीर्तित

अथ्यं द्वितीयं संख्यातमतिरात्रं तथोत्तरम् ।
 कारितास्तत्र बहवो विहिताः शास्त्रदर्शनात् ॥ ३४
 ज्योतिषोमायुषी चैव अतिरात्रौ च निर्मितौ ।
 अभिजिद्विजिच्चैव अक्षोर्यामो महाक्रतुः ॥ ३५
 प्राचीं होत्रे ददौ राजा दिशं स्वकुलवर्धनः ।

34 T₁ damaged up to कारि in 34° (cf v l 33) N V B D₁₀ 13 M₄ om 34 (cf v l 32) D₁₁ transp 13°-31°-31° and 31°-41 (om 14° 19 21°-22° and 24) —^a S₁ D₃ 7 8 उक्थो (S₁ [before corr] D₃ उक्थो) D₂ अथ, D₃ उक्थो, D₃ उक्थं, D₁₁ उक्थो (sic), D₁₂ उक्थो (sic) Cg as in text (for उक्थं) S₁ D₃ द्वितीय D₃ संख्यात D₁ उक्थ्ये द्वितीयं सत्याम् —^b S₁ [अ]हो°, D₁-3 7 9 रात्रस्, Cg as in text (for [अ] तिरात्र) D₃ 11 12 अथो° (for तथोत्तरम्) S₁ D₃ 11 12 विचारस्, D₁ विचारस्, D₂ 7 विवादास्, Cr mg t as in text (for कारितास्) D₃ क्रतवः () तत्र (for तत्र बहवो) —^d M₃ विहिका (sic) (for विहिता)

35 N V B D₁₀ 13 M₄ om 35 (cf v l 32) D₁₁ transp 13°-31°-31° and 31°-41 (om 14° 19 21°-22° and 24) —^a S₁ D₃ 11 12 ज्योतिषम, D₁-3 7 ज्योति मौर (D₁ मौ [with hiatus], D₃ पौर) Dt D₁ 4 5 8 9 13 T G M₃ [ए]वम् [to avoid hiatus] (for [ए]व) —^b D₂ 7 G₃ अतिरात्रे (G₃ त्र) Cm t औ (as in text) D₁-3 7 9 11 12 Cg वि (for च) D₂ 7 निर्मिते, G₁ निर्मृतौ, G₃ निर्मित —^c D₃ 11 अभिजे (D₁₁ ति)द् (both sic) D₂ चेष्ट (sic) (for विश्व) Dt D₃ 8 9 11 14 S (except M₄) [ए]वम् [to avoid hiatus] (for [ए]व) —^d S₁ D₄ प्रा(D₄ स)हो° Dt D₄ 8 आ (D₄ before corr अ)होयामी, D₁ 7 9 11 Ct आ°, D₃ आहोयामी, T₁ मौ° (for अहोयामो) S₁ D₁ 2 5 7 11 12 व्रत, D₃ वृत्त (sic), Ct as in text (for महाव्रत) —After 35, D₁₁ ins

417* सतो राजा यथान्याय दक्षिणां व्यवधत्तदा ।

36 D₁₁ transp 13°-31°-31° and 31°-41 (om 14° 19 21°-22° and 24) —^a S₁ D₁-3 7 12 अथ्यये, D₁₂ होत्रौ, G₁ 3 दिश° (for होत्रे दश) —T₂ damaged from रात up to 37° N V B D₁₀ 11 12 स्तीता, G₁ 3 होत्रे, M₄ पूर्वं (for राचा) —^b G₁ 3 राजा (for दिश) D₃ स, D₃ च (for स्व) S₁ D₁-3 7 12 स्तीतां तदा ददौ (S₁ D₁ 12 ददौ तदा by transp) N V B D₁₀ 11 12 M₄ बा (D₁₁ य)हुयला (B₄ विभि)जिता (D₁₂ तं), Cg as in text (for) —^c D₁₀ 11 च (for तु) —^d N V B D₁₀ 11 12 M₄ दक्षिणां ब्रह्मणे (by transp) स्या (M₄ स व्यसवैयद्) —For 36°, S₁ D₁-3 7 12 subst

अध्यये प्रतीचीं तु ब्रह्मणे दक्षिणां दिशम् ॥ ३६
 उद्गात्रे तु तथोदीचीं दक्षिणैषा विनिर्मिता ।
 अश्वमेधे महायज्ञे स्वयंभुविहिते पुरा ॥ ३७
 क्रतुं समाप्य तु तदा न्यायतः पुरुषर्षभः ।
 श्रुतिगम्यो हि ददौ राजा धरां तां क्रतुवर्धनः ॥ ३८

418* दक्षिणा ब्रह्मणे होत्रे प्रतीचीमददादिशम् ।

[D₁ स समादिशत् (for अददादिशत्)]

37 T₁ damaged for 37° (cf v l 36) D₁₁ transp 13°-31°-31° and 31°-41 (om 14° 19 21°-22° and 24) —^a V₁ तद्गात्रे, D₁₂ उद्गात्री S₁ N V B D₂ 5 7 10 11 13 14 च, D₁ च, D₄ ये, D₁₂ om (for तु) V₄ तत्र [unmetrical] (for तथा) —^b D₁₀ [ए]पा (for [ए]पा) —For 37°, M₄ subst

419* उदीचीमपि चोद्गात्रे ब्रह्मणे पृथिवीं ददौ ।

—^c D₄ ह्य° (for अश्वमेधे) V₂ तथा (for मदा) —^d Dt D₁ 4 8 Cg त स्वयम् S₁ N V₁ 3 4 B D₁-3 5 7 9-13 पुरा कल्पे स्वयम्भवा (D₁ °व) V₂ पुराकारि स्वयं तु वा, M₄ दक्षिणा हि स्मृता मही Cg t as in text (for °द) —After 37 B₂ D₁₁ ins 1 1 of 421*

38 D₁₁ transp 13°-31°-31° and 31°-41 (om 14° 19 21°-22° and 24) B₂ reads 38-41° (omitting 39°-40°) in marg —^a D₁ क्रतु (for क्रतु) S₁ B D₁-3 5 7 9 12 संख्याय (for समाप्य) T₂ च (for तु) D₄ तथा (for तदा) —For 38°, N V B₁ 3 4 D₁₀ 13 M₄ subst while B₂ cont (all read) after 415*

420* समाप्य चैनं ब्रह्मणे राजा ब्रतुवरं तत ।

दक्षिणामददासेषा कर्मिणा तदनन्तरम् ।

[[(1 x) N₂ V₄ [ए]व V₂ B₂ M₄ [ए]व D₁₀ [ए]ने (sic) (for [ए]न) —(1 2) N₁ V₁ B₁ 2 (m) M₄ व्यद (V₁ B₁ 2 (m) °व M₄ °वाद् V₂ चाददत् (for अददात्) V₂ कर्मणां (for कर्मिणां) V₄ यज्ञमन्यन्तर (for the post half)]

—^c B₂ वारिणा (for अविगम्यो) S₁ B₂ D₁ 3 5 7 9 11 प्रददौ, G₄ [अ]भि ददौ, Cg as in text (for हि ददौ) —^d D₂ महीं, G₁ धारा (for घरा) Dt D₂ 8 M₄ कुल°, D₁ क्रतुवर्धनी, D₂ 7 सत्यमहिनी, G₂ 3 रुचुनद, M₄ कीर्ति° (for क्रतुवर्धन) G₂ M₁ दक्षिणामेवमुत्तमा —For 38°, N V B₁ 3 4 D₁₀ 13 M₄ subst while B₂ D₁₁ ins 1 1 after 37 B₂ ins 1 2-3 after 41°

421* समया पृथिवीं दत्त्वा म चानुद्धौत्रदक्षिणाम् ।

अन्येषा कर्मिणा राजा सदस्यानां च दक्षिणाम् ।

ततः ततः सद्गच्छाणां हिरण्यस्योत्सर्जनं स ।

[[(1 x) D₁₁ समया B₂ (m. also as in text) दक्षिणां, D₁₁ पृथिवी (for पृथिवी) D₁₁ दत्त्वा (for दत्त्वा) V₁ चानुद्धौ-

कस्त्रिजस्त्वनुन्मरं राजानं गतकल्मषम् ।
भवानेव महीं कृत्स्नमेवो रक्षितुमर्हति ॥ ३९
न भूम्या कार्यमस्माकं न हि शक्ताः स्म पालने ।
रताः स्वाध्यायकरणे वयं नित्यं हि भूमिप ।

मत्व V2.6 B1 D11 M4 चतुर्विंश (V2 B1 'वे'त्य (V2 स B1 च), V2 स च होये च (for स चतुर्विंश) D11 दक्षिण —D11 om 1 2 3 N1 V1.4 B1 om 1 2 —(1 2) V2 वनेन, B2 वनिन (for वनिन) B2 वन (for वान) D10 सदस्यावानं (sic) M4 सतरया * (for सतरया) —(1 3) B4 न * सान V1 सुवर्णस्य, V4 दिव्यनरय (sic) B1 दिव्य च (for दिव्यस्य) V4 B4 ह (for स) M4 दिव्यपालं च्यमर्षद्वय (for the post. half)]

—After 38^{cd}, B2 (m) reads 426*, while Dt D4 s 11 M4 ins.

422* एव दत्ता प्रहृष्टोऽभूच्छीमानिश्चानन्दन ।

[No comm.]

39 N V B1 2.4 D10 11 M4 om 39-41^{ab} D11 transp 13^{cd}-31^{ab} and 31^{cd}-41 (om 14^{ab}, 19 21^{ab}-22^{cd} and 24) B2 reads 39^{ab} in marg (cf v 1 38) —^a) D7 कृत्स्ने —T1 damaged from खसुम् in 39^{ab} up to न हि द in 40^{ab} S1 B1 D2 2.5 7.11 [म]य, D4 [म]य, D4 वा D11 ते (for तु) Dt D2 सुम् (for [म]य) —^b) Dt D1 स त्रिदिव्य (for कल्मषम्) —After 39^{ab}, B2 (marg) ins, while D11 ins after 40

423* तेषां शुभा वचस्तस्य राजा राष्ट्रविर्षन ।

[No comm D11 वै राष्ट्र (for राष्ट्रि)]

—B2 om 39^{cd} (cf v 1 38) —^c) D1 एव (for एव) S1 D1 2.5 7.11 11 स्पीताम् (for कृत्स्नाम्) —^d) D3 *क (for एवो) S1 D1-2 5.7 11 11 सास्त्रिणम्, D4 सास्त्रिणम् (sic) (for रक्षितम्) D2.2 T2 G1 M4 अहसि (sic) D11 अहसि (sic) —After 39 S1 D2.11 11 ins.

424* विषापा भव रात्रौ नैव भस्माकं दुष्टिमावह ।

[No comm Note hiatus between the two halves S1 दुष्टि (for दुष्टि)]

40 T1 damaged up to न हि द in 38^{ab}, N V B D10 11 M4 om 40 (B2 om 40^{cd}) (cf v 1 39 for B2 38) D11 transp 13^{cd}-31^{ab} and 31^{cd}-41 (om 14^{ab}, 19 21^{ab}-22^{cd} and 24) —^a) D1 सुभा D2 7 तु व, D2 illeg D1 भूम्या, Gt as in text (for भूम्या) —^b) M4 च (for हि) T2 G2 M4 च (for रस) S1 D1 2.5 7.11 11 ब्रह्मा पालने वय —^c) D2 वय (for रता) —^d) M4 नराधिप (for हि भूमिप) B2 reads 40^{cd} in marg (cf v 1 38) —^e) D4 G2 स त्रिदिव्य, D4 निश्चय, Cr mg t as in text (for निष्कय) D1 T2 M4 एवेति, D2 एवावृत्त,

निष्कयं किंचिदेवेह प्रयच्छतु मनानिति ॥ ४०

गतां शतसहस्राणि दश तेभ्यो ददौ नृपः ।

दशकोटिं सुवर्णस्य रजतस्य चतुर्गुणम् ॥ ४१

M4 अस्माकं (for एवेह) —^f) D1.2 T2 G1 s M1 s इह (for इति) —For 40^{cd}, S1 D1-2.5 7.11.13 subst

425* निष्कृतिं एवं नरभेष्ट असम्य दानुमर्हसि ।

[—Note hiatus between the two halves. D1-2 निष्कृते, D7 निष्कृते D2 त, D2 हि (for त) D1-2.7 वृषेष्ट D11 अस्याथ निष्कृतिं राजन् (for the prior half) D1-2.7 दानुमर्हसि सत्तम (D1 'म') (for the post. half)] while B2 (m) subst and reads after 35^{cd}

426* अस्या निष्कयमस्माकं देहि राजन्महायुते ।

Thereafter B2 (m) cont

427* एव हि पालयितास्माकं येनानभितुमर्हसि ।

—After 40, Dt D4 s 11 S (except M4) Cr mg t ins.

428* मणिरत्नं सुवर्णं वा गावो यद्वा समुद्यतम् ।

तत्प्रयच्छ नरभेष्ट परया न प्रयोयान् ।

एवमुक्त्वा नरविश्रादणैर्नृपराजे ।

[(1 1) D2 च (for वा) D2 यद्वा, M4 वा यद्वा (by transp) (for ददा) D2 समुद्यता —(1 2) T1 damaged for 1 2 and 3 Dt D4 s नृप, M4 व्याप्त (for नरभेष्ट)]

41 N V B1 2.4 D10 11 M4 om 41^{ab} (cf v 1 39) D11 transp 13^{cd}-31^{ab} and 31^{cd}-41 (om 14^{ab}, 19 21^{ab}-22^{cd} and 24) B2 reads 41^{ab} in marg (cf v 1 38) T1 damaged up to ते in 4^{ab} —^a) D2 सहस्रहस्राणि (sic) —^b) M4 दत्त (for दश) D4 नय (for नृप) —After 41^{ab} B2 ins 1 2 and 3 of 421* (for vari ants cf v 1 421*) —^c) S1 V2 B4 D2 s G4 M4 'कोटि', N1 V2 2.4 B1-2 D2 7 11 T2 G2 M4 'कोटी', D1 12 T2 'कोटी' (sic) D2 10 T2 'कोटि' (sic) D4 s M4 दत्त कोटि (D4 'टी'), D1 'कोटी', Ct as in text (for दशकोटि) S1 स्ववर्णस्य, T2 सुवर्णस्य (sic) M4 सहस्रस्य (for सुवर्णस्य) —^d) V2 D1 रजत च, T2 रजतश्च N1 V2 2.4 B2 s D2 10 13 गुणा (D2 'ण') B4 दत्ता D11 गणे (for गुणम्) —After 41 D11 reads 1 2 of 401* —After 41 N V B D10 11 M4 ins while D11 ins 1 1 and 2 after 31^{ab} and 42 respy

429* कृत्रिम्य प्रन्दावयान्कामास्तत्र यथेक्षितान् ।

जाग्रद्वे वसिष्ठाय वामद्वाय च प्रभु ।

कृत्रिम्यश्चाप च तदा स राणा क्रतुवर्धन ।

[No comm —(1 2) V2 अस्मात् D1 चान्यान् M4 तत्र (for अस्यान्) M4 वन दानुमर्हसि (for the post. half)

क्रत्विजस्तु ततः सर्वे प्रददुः सहिता वसु ।
 क्रण्यश्चक्राय मुनये वसिष्ठाय च धीमते ॥ ४२
 ततस्ते न्यायतः कृत्वा प्रभिर्भां द्विजोत्तमाः ।

—(1 2) V₂ जाबालाय V₂ B₃ B₄ वसिष्ठाय D₁₀ 13 वसिष्ठाय
 D₁₁ तथा चैव (for वसिष्ठाय) D₁₁ चै (for च) —D₁₁ om
 1 3 —(1 3) M₄ विमुन् (for तदा) M₄ ततस्ते द्विजोत्तमा
 (for the post half)]

42 N V B D₁₀ 13 M₄ om 42 D₁₁ transp 42^{ab}
 and 42^{cd} —^a D₁ 3 5 7 9 11 12 ते, D₁₁ च (for तु)
 D₂ 3 7 तदा (for तत) D₂ 7 (hapl) om 42^b-43^c —^b
 S₁ D₅ 11 12 आदु D₃ *दु D₄ प्रादु, T₃ प्रथमस्,
 Cr m t as in text (for प्रददु) —^c S₁ D₁ 3 5 9 11 12
 महते (for मुनये) —^d T₃ सुधीमते G₂ त धी *ते (sic)
 (for च धीमते) —After 42 D₁₁ ins 1 2 of 429* (for
 v1 cf v1 429*)

43 T₁ damaged for 43^{ab} after न्या in ^a D₂ 7
 om 43^a (cf v1 42) —^a D₃ सर्वे (for कृत्वा) —^b
 S₁ D₅ 9 12 प्रतिभाग, D₂ विभारं च Ct as in text (for
 प्रतिभाग) —After 43^{ab} S₁ B₂ D₁ 3 5 7 9 11 12 ins

430* दीनान्धकूपणानां च वृद्धानां च कलत्रिणाम् ।
 स्त्रीणां हतप्रवीराणां वृद्धानां बालपुत्रिणाम् ।
 व्याधिकर्षिताग्रानां युवर्थं चाभिराचताम् ।
 विथक्षूणां दुरिद्राणां परराट्टनिगसिनाम् ।

[No comm —(1 1) D₁₁ कूपणानां (for कूपणानां
 च) D₃ दीनान्धकूपणां च (corrupt) (for the prior
 half) B₂ D₁₁ विबलानां D₃ * (for वृद्धानां च) D₁
 [अ]कलत्रिणा —(1 2) D₁₂ प्रवीराणां (for प्रवीराणां) D₉
 om from the post half of 1 2 up to the prior
 half of 1 4 —(1 3) D₅ 11 युवर्थे D₂ चाति D₃ 7 प्रति
 (for चाति) —(1 4) B₂ विषादतां D₁ विथक्षूणां (by
 metathesis) D₂ विथक्षूणां D₃ विथक्षूणां (corrupt) D₁₁
 * दक्षूणां (for विथक्षूणां) B₂ D₁ 3 5 7 9 राट्टेयु ने (D₂ स) वस्तु
 (D₁ वस्तु [sic]) (for the post half)]

—^c D₂ सुधीता मुनय सर्वे —^d B₂ D₁ 3 5 7 9 11 समृद्धा
 Cr m g as in text (for प्रवृत्तुर्) S₁ D₂ 3 5 7 9 11 12 तदा
 B₂ D₁ तथा Cm as in text (for भृशम्) —For 43 N
 V B₁ 3 4 D₁₀ 13 M₄ subst B₂ D₁₁ ins after 43 (D₁₁
 after 432*)

431* दक्षिणा प्रतिगृह्याय सुप्रीतमनसो द्विजा ।
 ततश्च याजका सर्वे क्रपयश्च तपोयना ।
 ऊजुर्दशरथ तत्र काम ध्यायेति वै तदा ।

[(1 1) B₂-1 transp 1 1 and 2 M₄ repeats con
 secutively 1 1 (var) V₁ 3 B₂ D₁₀ 13 दक्षिणा M₄
 (first time) [ह] (for [अ]य) M₄ (first time) [अ]
 भवन् (for द्विजा) V₃ प्रीतिमनोभवान्दजा (for the post

सुप्रीतमनसः सर्वे प्रत्यूचुर्मुदिता भृशम् ॥ ४३
 ततः प्रीतमना राजा प्राप्य यज्ञमनुत्तमम् ।
 पापापहं स्वर्नयनं दुस्तर पार्थिवर्षभैः ॥ ४४

half) M₄ (second time) तत सुप्रीतमनसो दक्षिणां प्रतिगृह्य
 ते —N₁ V B₁ M₄ om 1 2 —(1 2) B₂ repeats 1 2
 (as above) after 1 2 of 436* D₁₀ वृत्तुर् (for ततश्च)
 B₂ 4 ते (for first च) B₂ तत्र (for सर्वे) B₃ 4 तथापरे (for
 तपोयना) —(1 3) D₁₁ repeats 1 3 (var) after
 colophon N₂ B₂ दशरथ (sic) V₃ त त्तु (for तत्र) B₃ 4
 काम्य M₄ काम्य (for काम) V₂ का सरया चेति D₁₁
 (second time) *प्रागुहि पार्थिव (for the post half)]

—Thereafter D₁₁ cont 436* —After 43 S₁ D₁ 3 5
 7 11 12 ins

432* ततस्तु सर्वलोकेभ्यो हिरण्यस्य समुद्यता ।
 कोटीशतं सुवर्णस्य कुलस्योद्भावनं शुभम् ।

[No comm —(1 1) D₁ प्राप्तयेत्यस्तु D₂ 7 प्राप्तयेत्यस्तु
 (for तु सर्वलोकेभ्य) D₁ 3 5 12 स (D₁₂ *) सुवर्ण (D₃ 5 °त
 sic) —(1 2) D₁₁ कुलस्यो ददौ नृप (for the post
 half)]

—Thereafter D₁₁ cont 431* —After 43 Dt D₄ 3 5
 9 14 S (except M₄) Cr m (both 1 1-2 only) g t ins

433* ततः प्रसर्पेभ्यस्तु हिरण्यं सुसमाहितं ।
 जाम्बवतं दक्षिणस्य ब्राह्मणेभ्यो ददौ तदा ।
 दक्षिणस्य द्विजायाश्च हस्तावरणमुत्तमम् ।
 कस्मैचिच्चामानाय ददौ राववेनन्दनं ।
 ततः प्रीतेषु विविधद्विजेषु द्विजवत्सलः । [5]
 प्रणाममकरोत्तेषां हर्षव्याकुलितेन्द्रियं ।
 तस्याशिषोऽथ विविधा ब्राह्मणे समुदाहता ।
 उदारस्य नृवीरस्य धारण्या प्रणतस्य च ।

[(1 1) D₉ प्रसर्पेभ्यस्तु (for प्रसर्पेभ्यस्तु) D₉ G₂ M₁
 च (for तु) D₄ सुसमाहिता D₉ हिरण्यस्य समुच्छय (for
 the post half) —(1 2) D₉ the prior half = the
 prior half of 1 2 of 432* —For ins see below —
 (1 4) M₄ कस्मैचिद (sic) —D₉ om 1 5 8 —(1 5)
 D₁₁ T₁ 3 G₂ M₄ नृपतिर् (for विविध) —(1 6) D₂ 11 S
 (except M₄) पर्वाकुलेन D₉ °क्षान (for व्याकुलितेन्द्रियं)
 —(1 7) T₃ विवधे (for विविधा) D₁₁ T₁ 3 G₂ M₄
 समुदीरिता —(1 8) M₂ [अ] विधीरस्य (for नृवीरस्य) Dt
 D₈ 8 पतिरस्य (for प्रणतस्य)]

—After 1 3 D₄ T₃ ins

434* काश्वानां शतोपेतं नवचरे समाहितम् ।

44 N V B D₁₀ 13 M₄ om 44 D₂ om 44^{ab} D₁₁
 reads 44 46 (including subst for 45^{cd}) with ins
 437* after colophon before 1 14 1 —^a T₃ पार्थिवे
 र्षभै (for पार्थिवर्षभै) S₁ D₁ 3 5 9 11 12 स्वार्थं पाप्मा (D₁ 9

ततोऽब्रवीद्विष्यशङ्कं राजा दशरथस्तदा ।
कुलस्य वर्धनं तच्च कर्तुमर्हसि सुव्रत ॥ ४५

तथेति च स राजानमुवाच द्विजसत्तमः ।
भविष्यन्ति मुता राजश्वत्वारस्ते कुलोद्बहाः ॥ ४६

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे त्रयोदशः सर्गः ॥ १३ ॥

पापापदे (D₂ तत् प्राप्यावह) चैव दुष्प्राप (D₉ 12 °प्य) सर्वे
पार्थिवे, Cg t as in text (for °d)

45 For D₁₁ cf v.1 44 —°) G₂ M₁ तदा (for
सतो) —^b) T₂ 3 तथा, M₃ वली (for तदा) —°) D₁ 12
T₁ G₂ 3 M₁ तनु, T₂ 3 G₁ M₂ 3 Cg त्वं तु (for तनु)
—For 45^{ad} S₁ D₁—3 7 9 11 12 subst

435* पुनानिच्छाम्यह विप्र कुलस्योद्भावनाम्बुबालम् ।

46 For Du cf v.1 44 —°) D₁₂ °* M₃ तथेतीव
(for तथेति च) —^b) M₃ भववीद् (for उवाच) —°)
D₁ 3 कुलोद्भवा —For 45 46 N V B D₁₀ 13 M₄ subst
while D₁₁ ins after 431*

436* ताननवीदृष्टमना राजा दशरथो द्विजान् ।

इच्छामि चतुर पुनानुदत्तान्यालविक्रमान् ।

तथेति चैव राजान तमृचुर्महवादिन ।

यथाभिलषितान्पुनानविश्राव्यमवाप्स्यमि ।

[(1 2) V₄ transp चतुर and पुनान् —After 1 2
B₃ repeats 1 2 of 431* —(1 3) M₄ [ए]न (for [इ]नि)
V₂ [इ]नि, B₁ ते (for [ए]न) M₄ ते (for तन्) —(1 4)
V₄ कामान् (for पुनान्) V₁ D₁₂ न विराट् V₄ अत्रि D₁₁
आचिरात्]

—Thereafter D₁₁ reads colophon Then repeats
(var) 1 3 of 431* then reads 44 46 —After 46 S₁
D₁ 5 7 11 12 ins

437* लोकपालोपमा वीरा परदर्पविनाशना ।

[No comm D₁ वीरा (for वीरा)]

while Dt D₈ 8 Ms Ct ins

438* स तस्य वाक्य मधुर निशम्य

प्रणम्य तस्मै प्रयतो नृपेन्द्र ।

जगाम हर्ष परम महामा

तमृष्यशङ्क पुनरप्युवाच ।

[(1 4) M₃ ऋष्यशङ्क M₃ इति (for अपि)]

Colophon S₁ D₁ 5 7 12 om (sarga continued)

D₁₁ reads colophon after 436* —Kanda name D₈

om N₂ V₁ 3 B D₁₀ 11 आदिकाण्डे, V₄ यज्ञकाण्डे D₁₂ **

काण्डे —Sarga name N₁ V₁ 2 4 B₁—4 D₁₀ यज्ञकर्म V₃

यज्ञसमापन नाम, B₁ यज्ञसमाप्त D₉ यज्ञकर्मविधान, D₁₂

** मेघप्र ** नाम —Sarga no (figures words or

both) V₂ 15 V₃ 12 B₂ 3 D₁₀ 13 (as in text) Dt

D₁ 8 12 S (except M₄) चतुर्दश Du M₄ word as in

text) D₁₂ (dash indicates lacuna) —द्वा D₉ both

as in text —After colophon G₁ 2 4 M₂ conclude with

श्रीरामाय नम G₂ धीमते रामानुजाय नम

मेधावी तु ततो ध्यात्वा स किञ्चिदिदमुत्तरम् ।
लब्धसंज्ञस्ततस्तत् तु वेदज्ञो नृपमव्रणीत् ॥ १
इष्टिं तेऽहं करिष्यामि पुत्रीयां पुत्रकारणात् ।
अथर्शिरसि प्रोक्तैर्मन्त्रैः सिद्धां विधानतः ॥ २

14

1 T₂ begins with श्रीरामचन्द्राय नम —^a) Dt D₈
G₁ M₃ (after corr sec m) [ह]ति (for तु) Cr ज्ञात्वा
(for ध्यात्वा) —^b) D₄ T₂ च (for स) T₂ उत्तम (for
उत्तरम्) —For 1 Śi D₁ 3 5 7 9 11^a subst

439* ऋष्यशृङ्गस्तु मेधावी राजान पुनरधवीद् ।

[D₂ च D₃ 7 तु (for तु)]

On the other hand N̄ V B D₁₀ 13 M₄ subst

440* अथर्ष्यशृङ्गो राजानं पुनरेवाभ्यभाषत ।

[B₁ 4 hypermetric owing to hiatus between अथ
and ऋष्य V₃ ऋष्यशृङ्गो (by transp) D₁₃ एवम (for
यथाभ्य)]

2 ^a) T₃ इष्ट B₃ च, G₄ missing (for ते) N̄ V
(V₁ with hiatus hypermetric) B D₁₀ 11 13 M₄ [5]न्या,
G₄ missing (for ऽह) Śi D₁-3 5 7 9 12 इष्टिं (D₃ "ष्ट")
करोमि भवत (Śi D₅ 12 पुत्रीया) —^b) Śi D₅ 12 भवत
(for पुत्रीया) N̄ V B D₁₀ 13 M₄ कामयया, D₅ 11 13
कारणे, Cm g k t as in text (for पुत्रकारणात्) —After
2^{ab}, B₃ ins

441* यत पुत्रा भविष्यन्ति चत्वारो देवदूरीका ।

—Śi N̄ V B D₁-3 5 7 9-13 M₄ om 2^{ab}

3 ^a) D₁₄ T₁ 3 प्राकामद्, G₄ प्रक्रमद् (for प्राकामद्)
D₄ T₃ तत प्रारब्धवानिति, G₁ M₃ तत प्रक्रिय (M₃ "क्रम्य")
तामिर् —For 3^{ab} Śi N̄ V B D₁-3 5 7 9-13 M₄ subst

442* तत प्रचेक तामिष्टिष्टि पुत्रसदृश्ये ।

[N̄ V B D₁₀ 13 M₄ प्रचक्रे कतुम् (D₁₃ कर्त्त) (for प्रचेक्रे
तामिष्टि) Śi D₅ (as in D₈ also) 13 ऋषिपुत्र D₂ 11
ऋषिपुत्र (for ऋषि पुत्र) N̄ V B D₁₀ इष्टि कामसदृश्ये D₁₃
इष्टिक समुद्दिम्य M₄ इष्टि पुरोपलब्धे (for the post half)]
N̄ V₁ 3 4 B D₁₀ 11 13 M₄ cont

443* तस्य राज्ञो दिवान्येपी विष्णोऽङ्कसुतो यशी ।

[No comm —M₄ विमङ्क V₄ मुत्त D₁₁ बली (for
यशी)]

M₄ cont 446* and om 3^a-5^b N̄ V B₁ 4 D₁₀ 13 om
3^a-^c) Dt D₁ 3 14 T₁ 3 G₄ M₃ transp च and अग्नी
Cg as in text Śi B₃ (marg) D₁-3 5 7 11 13 दीले (D₅
D₁₃ 12 स्ता)प्रात (D₇ चा)जुहोद (D₁ 5 7 11 ंद्र)स्य, D₉

ततः प्राक्रमदिष्टिं तां पुत्रीयां पुत्रकारणात् ।
जुहाव चाग्नौ तेजस्वी मन्त्रद्वयेन कर्मणा ॥ ३
ततो देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः ।
भागप्रतिग्रहार्थं वै समवेता यथाविधि ॥ ४

आजुहाव ततो हव्य —^a) Śi B₃ (marg) D₁-3 5 7 9 11 13
विधि, Cr m g k t as in text (for मन्त्र)

4 M₄ om 4 (cf v 1 3) —^a) N̄ V B D₁ 10 11 13
तत्र, Cg k t as in text (for ततो) D₂ 5 च गधर्वा, D₁₁ सु
गधर्वा —^b) D₁ सिद्धाश्च (hypermetric owing to
hiatus) D₁₃ ससिद्धा (for सिद्धाश्च) Śi D₁-3 5 7 9 11 13
ऋषिभि सह N̄ V B₃ D₁₀ 13 मुनिभि सह (for परमर्षय)
—^c) D₉ च, D₁₁ ते (for वै) —^d) Śi N̄ V B D₁-3 5 7
9-13 G₁ 3 पूर्वमेव समागता Cg as in text (for ^a)
—After 4 Śi N̄ V B D₁-3 5 7 9-13 ins

444* अथमेधे महायज्ञे राजस्तस्य महामन ।

प्रज्ञा सुरेश्वर स्थायुस्तथा नारायण प्रभु ।

चत्वारो लोकपालाश्च देवतानां च मातर ।

आस्तस्यैव सर्वे तु देवाश्च सहितास्तथा ।

हृद्मथ भागवन्साध्यामहर्षणवृत् प्रभु । [5]

[No comm N̄ V B D₁₀ 13 read 1 r after 1 5 —
(1 r) V₂ °मज्ञा (for महायज्ञे) cf 1 r 13 37^a for the
prior half D₉ महोत्सा (for महामन) Śi राज्ञो दशरथस्य
तत् (for the post half) —Śi om 1 2-5 D₅ 12 om
1 3 5 —(1 3) D₁₁ तथैव (for चत्वारो) D₁₁ लोकपालश्च
(sic) V₂ चत्वारो देवमातर (sic) (for the post half)
—(1 4) N̄ B₃ D₁₀ यज्ञे तथैव V₁ 3 4 B₄ D₁-3 7 11 यज्ञा (D₂
°ज्ञा D₇ °ज्ञ)वृ° V₂ वेदज्ञाश्च B₁ *स्त° D₉ यज्ञास्तथापि
(for आस्तस्यैव) N̄ 1 °ते N̄ 2 D₂ 3 7 9 सवत्र V₁ सर्व*
D₁₁ 11 °च (for सर्वे तु) V₁ *दाश्च V₃ B₃ D₁-3 7 9 11 13
वेदाश्च (by metathesis) (for देवाश्च) V₁ 2 D₁₃ तदा
—(1 5) V₄ चद्रश्च (for इन्द्रश्च) N̄ 2 B₃ D₁₀ समाज्ञ D₁₃
युत ° (for -युत प्रभु)]

Then Śi D₁-3 5 7 9 11 13 cont

445* आजगाम महायज्ञे राज्ञो दशरथस्य च ।

देवास्तादागतान्सर्वानश्ववीहिजसत्तम ।

प्रसादं प्रियता राज्ञ प्रसवार्थं हि देवता ।

राजाय धार्मिकं धूरं कृतविद्यं परंपर ।

प्रातवाधनमेधे च मुद्राद्याम गतकल्मष । [5]

पुण्याथ तप्यन्ते येन दीयेकालं महापुति ।

प्रयच्छन् सुदानस्ते चतुरं कुलवर्धनात् ।

[No comm Śi om 1 r —(1 r) D₅ 9 11 12 °यज्ञे
(for महायज्ञ) D₁₃ दशरथस्य (ditto) D₂ 3 7 8,
D₉ तु D₁₃ ते (for च) —(1 2) D₂ देवास्तागात् (sic)

ताः समेत्य यथान्यायं तस्मिन्सदसि देवताः ।
अब्रुवैल्लोककर्तारं ब्रह्माणं वचनं महत् ॥ ५
भगवंस्तत्प्रसादेन रावणो नाम राक्षसः ।

—D₅ om. 1. 3-5. —(1. 3) D₇ प्रसार (for प्रसारः). D₁ प्रसादाय, D₂ ० (for प्रसादाय). —(1. 4) D₁ ० (for प्रसादाय). —(1. 5) D₂ तु, D₃ ७ तु (for च). D₄ महाना (for मुहाना). —After 1. 5, D₁ ins 1. 5-7 of 446*. —(1. 6) D₂ 11 पुत्रार्थे. D₃ च तथा (for तत्पत्ने). —(1. 7) D₂ प्रयच्छतु, D₃ ७ प्रयच्छतु, D₄ प्रयच्छतु. D₁ तस्मै (for तस्मै). D₇ चर्षना (sic) (for चर्षनाम्).]
On the other hand, N V B D₁₀ 13 M₄ (M₄ after 443*) cont.

446* तत्र भागार्थितो देवानामात्मनोऽभ्यभाषत ।
रदोवेन्द्रमहेश्वरीन्द्रोऽभिपणतस्थिनः ।
अयं राजा दशरथः पुत्रार्थं तत्प्रसादयत् ।
इष्टयान्धमेधेन भवतः श्रद्धयान्वितः ।
इष्टि च पुत्रनामोऽस्यां पुनः कर्तुं समुद्यतः । [5]
तदस्य पुत्रनामस्य प्रसादं कर्तुमर्हत् ।
अभिप्राये स वः सर्गान्स्पर्धयेदं कृताञ्जलिः ।
भवेद्युस्य चक्षारः पुत्राञ्जलिस्तुविश्रुता ।

[No comm. —(1. 1) N₂ V₁ B₁ 9 D₁₀ श्रेष्ठ (V₂ ०) यावत् (B₂ marg. as in text also), V₂ 3 B₄ अभ्यभाषत (for श्रेष्ठभाषत) —N V B D₁₀ 13 om. 1 2 —(1. 3) V₄ अयं (for अय) V₂ तन (for तप) —(1. 4) D₁₀ इष्ट (for इष्टान्) M₄ चाभ्येधेन M₄ तप (for भवत) V₂ प्रयच्छतु. —D₁₁ ins 1. 5-7 after 1. 5 of 445* —(1. 5) N₂ V₁ B₁ इष्ट. N B₁ आनन्दना M₄ कामीया (for कामीया) B₁ च पुन (hypermetric), M₄ तत (for पुन) —(1. 6) M₄ तस्य (for तद) V₃ अयं (for अय) B₁ कायस्य (for कामस्य) V₁ (before corr) ० ति, V₄ त (for तद) —(1. 7) V₂ अपि वाचे वरान् V₃ ० वरान्, V₄ D₁₀ ० वर, D₁₀ ० व, M₄ अभिप्रायि व (for अभिप्राये स व). N₂ अभिप्रायेच त व का सर्वा (sic) (for the prior half) N₁ M₄ तस्यार्थे, V₂ अस्माच (sic) (for अस्मात्)]
Thereafter all the above MSS (both the groups, first group om. 1. 5-7, second 1. 4 and 8) further cont. :

447* सं तथेत्यष्टवदेवा ऋषिपुत्रं कृताञ्जलिम् ।
माननीयोऽसि नो विप्र राजा चैव विरोधतः ।
प्राप्त्यन्ते परमं काममेतदिष्टा नरादिषु ।
हृदि हि विधिवत्प्राप्ता राज्ञा दशरथेन वै ।
इत्युक्तं बालार्जुना देवासुतः शम्भुरीरमम् । [5]
तं हृदा शिषिवत्प्राप्तं श्रियमागं महर्षिणम् ।
उपेत्य लोभकृत्वा प्रजापतिमिदं वच ।
तथा तमुक्त्वा देवासु सर्वे पुन महासुनिम् ।

[No comm. —(1. 1) V₄ तथान्, D₁₀ ते (for तं

सर्वान्नो बाधते वीर्याच्छासितुं तं न शक्नुमः ॥ ६
त्वया तस्मै वरो दत्तः प्रीतेन भगवन्पुरा ।
मानयन्तश्च तं नित्यं सर्वे तस्य क्षमामहे ॥ ७

तथा). V₂ [अ]वदन् (for [अ]ब्रुवन्). S₁ देवान्, N₁ सर्वे (for देवा) S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 दिव्यवृक्ष (for ऋषिपुत्र). —(1. 2) V₂ श्वायतीये. V₁ ३ विप्र (for नो). S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 नवमानस्य पूज्यश्च (for the prior half). S₁ D₁ 5 9 12 चाय, V₂ 3 B₁ वैप, D₁₁ चायस् (sic), D₁₂ वाय (for वैव). —D₁₃ om. 1. 3-5. —(1. 3) D₁₁ लक्ष्यते (for प्राप्त्यन्ते) N₁ दिष्ट्या, N₂ इष्ट्या, D₁₀ इष्टा (for इष्ट्या). S₁ D₁-3 5 7 9 12 लक्ष्यते च परं काम पुत्रार्थे (D₂ 3 7 ०) दिव्यवृक्ष (D₁ 5 ०) M₄ प्राप्त्यन्तेमत्सरान्पुत्रान्निष्ठा स्मृतिमान्. —N V B D₁₀ 13 M₄ om. 1. 4. —(1. 4) D₂ ७ च (for दे). —S₁ D₁-3 5 7 9 13 om. 1. 5 7 —(1. 5) V₄ B₁ D₁₁ तत्र (for तत). —M₄ om. 1. 6. —(1. 6) D₁₃ ते. V₃ विष्टा (sic) (for इष्टा). B₁ दीक्षा, B₂ काम्य, D₁₃ च्याय (for च्याय). B₁ ०णा, D₁₃ पूज्यमान (for क्रियमान) —(1. 7) D₁₁ ब्रह्माण वचन महत् (for the post. half). —N V B D₁₀ 11 13 M₄ om. 1. 8 —(1. 8) D₁₂ ० मुक्त्वा (for तमुक्त्वा). D₁ महासुति.]

5 S₁ N V B D₁-3 5 7 9-13 M₄ om. 5th. —^a) D₁₂ T₂ 3 ० न्याय्यं (for यथान्यायं). —^c) G₁ अजरीत् (for अष्टवैत्) N V B D₁₀ 11 13 M₄ ऊचुः. प्रतिलयः (B₂ M₄ ० * यः) सर्वे (V₄ तत्र) —^d) N V B D₁₀ 13 M₄ वरदः Cg as in text (for वचनं). N₁ V₁ (before corr. शुभं) 2 D₁₃ M₄ तदा N₂ V₂ 4 B तथा; D₁ D₂ 8 ततः; D₁₀ वचः; Cg as in text (for महत्). D₁₁ प्रजापतिमिदं तदा.

6 ^a) D₁₂ भगवत्सु (sic) (for भगवत्सु). N V B D₁₀ 13 M₄ स्वयदिष्टवतो ब्रह्मन्. —^b) D₁₀ ० वणो (for राजणो). M₄ राक्षसेवर (for नाम राक्षसः) —^c) V₂ सर्वतो; V₄ सर्वतो (for सर्वतो) T₂ चावितुं (for बाधते). N₁ (N₂ स द्वापद् hypermetric) V₁ 2 4 B D₁₀ 13 M₄ द्वापद्, V₂ सर्वान् (for वीर्यान्) D₂ सर्वत्रायाधते वीर्यान्. —^d) S₁ D₁-3 5 7 9 11 13 वासितुं (for छासितुं). D₁ च, D₁₂ om. (for तं). D₁₃ om. न. N V B D₁₀ 13 M₄ ब्रह्मर्षी (B₄ महर्षीश्च तपोधनान् (N₁ V₃ B₄ ० रतान्) —After 6, B₂ ins.

448* देवान्सु वरो चक्रे राक्षसो बलदीर्घतः ।

7 ^a) N V₂-4 B D₁₀ 13 M₄ ह्यस्य; V₂ तस्य; D₂ [अ] स्य च (for तस्मै). —^b) D₁ प्रीते मे (for प्रीतेन). S₁ N₂ B₄ 4 D₃ 5 10 M₁ 3 भगवान्, D₁ D₂ 8 तदा (for पुन). N₁ सुप्रीतेन भवत्सु. —After 7th, N V B D₁₀-13 M₄ ms. :

449* देवदानवयक्षगणमध्योऽस्मीति कामतः ।

[No comm. M₄ मानद (for वानत).]

—V₁ om. 7th. —^c) S₁ B₁ D₂ 3 7 9 13 T₂ त (S₁ त्व) द्वाक्यं N V₂-4 B₂ 3 D₁₀ 11 13 M₄ ते वाक्यं; B₄ मे वाक्यं;

उद्वेजयति लोकांस्त्रीनुच्छिन्नाद्देष्टि दुर्मतिः ।
 शक्रं त्रिदशराजानं प्रथर्षयितुमिच्छति ॥ ८
 क्रीपिन्यक्षान्सगन्धर्वानसुरान्ब्राह्मणान्स्तथा ।
 अतिक्रामति दुर्धर्षो वरदानेन मोहितः ॥ ९
 नैनं सूर्यः प्रतपति पार्श्वे याति न मारुतः ।

Cm g as in text (for तं नित्यं) D1 5 मानवस्त (D1 °त)
 स्य तद्वाक्यं. —^d S1 तस्य; M4 वयं (for सर्वं) S1 सर्वं;
 N2 V2-3 B D10 अस्य; M4 सर्वं (for तस्य) D1-3 5 7 9 11 12
 transp सर्वं and तस्य. N1 V2 3 B D13 M4 सहामहे (N1
 ते sic); V4 महामते, D2 क्षमीवहे (sic); D10 महामनः
 (for क्षमामहे).

8 °) N V B D10 13 स बाध (V1 वार; B2 marg. द्राव;
 D13 धाव)यति (V4 °तेति); M4 स तापयित्वा; Cg as in
 text (for उद्वेजयति) —^d D7 उधितान्; D11 अस्माच्छिन्न
 (sic), Cg as in text (for उच्छिन्नान्) D1 दुर्मिमभिः (sic)
 (for दुर्मिति) N V B D10 13 M4 विहिंस (V1 3 4 विहस;
 B2 हिंस्य [m. विहिंस्य]; M4 निर्हिं) ब्राह्मणाधिपः (B4
 'सेधरः). —N V B D10 13 M4 om 8°d —^c T3 राजं च
 (for राजानं [archaic]) S1 D1-3 5 7 9 11 12 शक्रं सुरगणेशं
 च (D2 3 7 °गणपेशं); Cg.k. as in text (for °). —^d S1
 D1 5 9 11 12 स धर्षे (S1 दीप)यितुम्. D3 7 उद्यत. (for इच्छति).

9 °) S1 D1-3 5 7 9 11 12 सयक्ष (for यक्षान्स-). N
 V B D10 13 M4 देवर्षयक्ष (B °र्षयक्ष) गंधर्वां. —^d V1
 स्तान् (sic), V2 सूर्यं, V4 D14 *सुरान्; T3 M4 समुरान्;
 Cg.k. t as in text (for असुरान्). N V B1-3 D10 M4
 मान (M4 दान)वांस (N1 V1 B1 2 °द्र; V3 °वान्) (for
 ब्राह्मणां) Dt D2 8 ब्राह्मणानसुरांस (by transp.). N1 V1
 B1 2 च स; V3 पुन; D5 तदा (for तथ). B4 असुरांश्चा-
 नरांश्च स; D13 मानुषान् महाबलः. —^c D1 दुर्मेषा, T3
 दुर्धर्षो (sic) (for दुर्धर्षो). N V B D10 13 M4 अन्दायतः
 पीडयति. —^d N V B D10 13 M4 दर्पित (for मोहितः)
 D11 repeats 9 as in N1 with v 1 मानुषास्त (for मानवांश्च
 in ^d).

10 S1 D1-3 5 7 9 13 om. (hapl.) 10°d. —^a N V
 B D10 11 13 M4 न तत्र सूर्यस्तपति. Cg.k. t as in text (for
 °). —^d T3 स (for न). G1 3 न पार्श्वे वाणि (by transp.).
 N V1-3 B D10 11 13 M4 न भयाद्वादि मारुतः; V4 न च याति
 समीरणः; G4 पार्श्वे वा *मारुतः. —After 10°d, N V B
 D10 11 13 M4 ins.

450* नास्तिर्गलति पै तत्र यत्र निष्ठति रावणः ।

[No comm M4 उत्पन्नने (for उन्नति नै). D13 तत्रै
 (for नै तत्र).]

—^c S1 N V2-4 B D1-3 5 7 9-13 G1-3 M1 2 4 जलोर्मि
 (B1 महोर्मि; D2 'मे [sic] माली (D2 'ल्लिस् [sic]), Cg.k. t

चलोर्मिमाली तं दृष्ट्वा समुद्रोऽपि न कम्पते ॥ १०
 तन्महन्नो भयं तस्माद्राक्षसाद्भोरदर्शनात् ।
 वचार्थं तस्य भगवन्नुपायं कर्तुमर्हसि ॥ ११
 एवमुक्तः सुरैः सर्वैश्चिन्तयित्वा ततोऽब्रवीत् ।
 हन्तायं विहितस्तस्य वधोपायो दुरात्मनः ॥ १२

as in text (for चली°) D13 स्मृत्वा (for दृष्ट्वा). —^d S1
 D1-3 5 7 9 12 सागरो (for समुद्रो). S1 V1 3 4 B1 3 4 D2 3.
 5 9 11-13 [अ]पि च (V1 *, B1 D2 3 प्र; D13 हि) कंपते; V2
 'प्रकंपते; D1 [अ]पि च कंपति, D7 [अ]पि प्रकंपितः; D10 गपि°
 (sic), G2 M1 न प्र°; Cg.t. as in text (for उपि न कम्पते).
 —After 10, N V B D10 11 13 M4 ins. :

451* नष्टो वैश्रवणस्त्यक्त्वा लङ्कां तद्वीर्यपीडितः ।

[No comm. M4 लका त्यज्य (for लस्तवा लङ्का) V4
 °पाडित.]

D11 cont., N V B1 3 4 D10 13 M4 subst. for 11°d,
 while B2 ins after 11°d:

452* तस्मात् पाहि भगवन् रावणलोकैरावणात् ।

[M4 अस्मात्. B2 न पात्रि (marg. as in text) (sic);
 B3 त्व°, M4 त्वाहि (for न पाहि). N2 B2 भगवान् (B2
 marg. as in text). M4 राक्षसात् (for रावणात्). V3 °ण;
 B2 वाणात् (by metathesis) (for रावणात्).]

11 °) S1 B1 3 5 7 9 11 12 उत्पन्नं ने; D2 उपपन्नं;
 T2 M3 तन्महाद्यो (M3 after inf. lin. sec. m. corr जो);
 G2 M4 दुःसहं नो (for तन्महन्नो). T3 नीमाद् (for तस्माद्).
 —^d S1 D1 2 5 7 9 11 12 रक्षसो; D2 रक्षसो (sic) (for
 राक्षसाद्). S1 D2 12 भीम°; B2 D11 घोर (D11 भीम)कर्मणः
 (for घोरदर्शनात्). —For 11°d, N V B1 3 4 D10 13 M4
 subst, while B2 ins after 11°d 452*. —^c D12 तु
 भवान् (for भगवन्) D1 निश्चयं (for उपायं). S1 D1-3 5 12
 G2 M4 वक्तुम्; Cg as in text (for कर्तुम्) D1 हृष्टसि;
 D12 अर्हति. N V B D10 13 M4 उपायं तदुपायाय (B3 °य
 र्व) (B4 D13 M4 द्र) दुर्महंसि (N3 'नि) काम (M4 मान) दै.

12 °) M3 v inf. lin. sec. m. 11 एतत् D12 स वै
 (for सर्वैश्च). —^d S1 D1-3 5 7 9 11 12 द्रष्टा ध्याया; Cg as
 in text (for चिन्तयित्वा) —For 12°d, N V B D10 13
 M4 subst.

453* इति विज्ञापितो देवैर्ध्याया ग्रहोदमग्रवीत् ।

[N3 विज्ञापिते V4 ज्ञाया (for ध्याया). D13 चैव (for गदा).
 M4 transp. ध्याया and गदा.]

On the other hand, G1 3 subst.:

454* विधिस्तस्य वधोपायं चिन्तयानसतोऽमयीत् ।

—^c D1 मया; D2 हतो (sic) (for हन्त). Dt D2 8
 विहितः; D1 विहतः; T3 विधियत् (sic) (for विदितः).

तेन गन्धर्वयक्षाणां देवदानरक्षसाम् ।

अप्रध्योऽस्मीति वायुक्ता तथेत्युक्तं च तन्मया ॥ १२

नार्क्षीत्यदवज्ञानाचक्षो मानुपांस्तदा ।

तस्मात्स मानुपाद्वध्यो मृत्युर्नान्योऽस्य विद्यते ॥ १४

एतच्छ्रुत्वा प्रियं वान्मयं ब्रह्मणा समुदाहृतम् ।

देवा महर्षयः सर्वे प्रहृष्टास्तस्मिंस्तदा ॥ १५

एतस्मिन्नन्तरे विष्णुरुपधातो महाद्युतिः ।

13 ^a) Śi D1-3 5 7 9 11 12 नाग (for तेन) —^b) Śi D1-3 5 7 9 11 12 देवतासुर, Dt D6 8 देवताना च (for देव दानरा) —For 13^{ab} N V B D10 13 M4 subst

455* तेन देवर्षिगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नैः ।

[V2 ^aईर् (for नायव) M4 पन्नमल्लमाम्]

—^c) Śi D1-3 5 7 9 11 12 तेनोक्त (for वायुक्ता) N V B D10 13 M4 अवश्य स्यामि (N1 चास्मी, V2 स्यादि) ति प्रोक्त —^d) B1 missing up to क B2 M3 च त, D11 स्वतन् (sic) (for च तद्) D11 मुष्ठा (sic) (for मया)

14 ^a) G1 3 [अ]चित्, Cg as in text (for [अ] कीर्तयद्) —^b) M2 मानवात् D4 6 T3 तथा, Cg k t as in text —For 14^{ab} Śi N V B D1 3 5 7 9-12 M4 subst

456* अवज्ञाय तु वक्षो मानुषान्मकीर्तयत् ।

[N1 अस्मान्नात्, V2 B2 D2 3 7 13 अवज्ञाय B1 अवज्ञेव B1 D2 च M4 हि (for तु) Śi D1 13 रक्षस्तान् D9 खत्वात् D1 3 7 रक्षस्तान् (by transp) (for तद्रक्षो) V4 अवापपूर्वक रक्षो (for the prior half) N2 V2-4 D10 [अ]जु^a V1 [अ]जु^a B1 [अ]जुकीर्तयेत् B4 [अ]जुकीर्तनात् D13 त्वकीर्तयेत् M4 [ए]जु^a (for [अ]जुकीर्तयेत्) Śi D5 12 व्याहरन्मानुषाद्व्य D1 3 7 9 13 न व्या(D11 लोदा) इत मानुषान् (D3 ^aनवान्) (for the post half)]

—^c) Cg मानुषाद् (as in text) Śi D1 3 5 7 9 11 12 तेनानो मानुषैर्वध्यो Śi D5 12 चान्यो न (for चान्योऽस्य) N V B D10 13 M4 तस्मात्स (V4 om तस्) मानुषेणैव वध्य पापो भविष्यति

15 D12 om 15 —^a) Śi D1 3 5 7 9 11 तच्छ्रुत्वा तु, N V B D10 13 M4 इति श्रुत्वा, D6 *तच^a, G2 M1 ^aज्ञावा, Cg as in text (for एतच्छ्रुत्वा) N V1 B1 3 4 D10 13 हित, V2 ततो, V3 B2 M4 हि तद्, V4 च तद् (for त्रिय) —^b) Śi V1 D1 3 7 9 11 T3 M2 3 ^aदीर् (D9 ^aर)न (for समुदाहृतम्) —^c) D4 T3 transp दवा and सर्वे G1 3 M2 transp महर्षय and सर्वे Cg k प्रहृष्टा (as in text) Śi D1 3 5 7 9 11 गंधर्वपिममा(D1 ^aवा ऋषिस्)युक्ता प्रहृष्टा सर्वदेवता (D5 वायवमद्युत्त) N V B D10 13 M4 देवा शम्पुरोगास्ते (N2 ^aस्तु) इति सर्वेनो(D13 ^aतो)मनन्

ब्रह्मणा च समागम्य तत्र तस्यै समाहितः ॥ १६

तमद्युन्मुसुराः सर्वे समभिदूय संनताः ।

त्रां नियोक्ष्यामहे विष्णो लोकानां हितकाम्यया ॥ १७

राज्ञो दशरथस्य त्रमयोध्याधिपतेर्विभो ।

धर्मज्ञस्य वदान्यस्य महर्षिसमतेजसः ।

तस्य भार्यायु तिमृषु ह्रीश्रीकीर्त्युपमासु च ।

विष्णो पुत्रत्रमागच्छ कृत्वात्मानं चतुर्विधम् ॥ १८

16 ^a) Śi D5 विल्यु (for विल्युर्) —^b) Śi D1-3 5 7 9 12 विधिना सर्वतेजसा(Śi D5 12 ^aव ते), N V B D10 11 13 M4 तत्रायान् (V3 ^aयानो भ [hypermetric] B4 ^aगाद्, D11 ^aभ गवान्त्वय (V4 ^aन्सु) —After 16^{ab} Dt D4 6 8 14 S (except M4) Cg ins

457* शङ्खचक्रगदापाणि पीतवासा जगत्पति ।

—Thereafter Dt D6 8 14 G2 M3 cont

458* वैनतेय समाख्य भास्वर तोयदो यथा ।

तस्रहाटककेयूरो बन्धमान सुरोत्तमै ।

[Cg k do not comment Ct comments on l 1 —(1 1) Dt D6 8 भास्वर Dt D6 8 14 तोयद (sic) —(1 2) D8 कुलेवर (for सुरोत्तमै)]

—After 16^{ab}, D11 ins l 1 5 of 462*, then reads 459* —^a) D1 3 7 वै, D9 [अ]रि (for च) Dt D6 8 गत्य, Cg k as in text (for समागम्य) —^d) D1-3 7 9 transp तत्र and तस्यै —For 16^{cd} Śi D5 11 12 subst

459* देवता ब्रह्मणा सार्धं तत्पुत्रत्र समाहिता ।

—After 16 G2 M3

460* तत्राग्नं हरिं दद्या देव नारायण प्रभुम् ।

पद्मं पूजयामास प्रयुज्याय हताज्जि ।

[No comm]

17 ^b) Dt D6 T3 G2 तम^a, D14 T1 2 ^aदुल्य, G4 ^aद स्य (sic) Cg as in text (for समभिदूय) —^c) D4 नियोक्ष्यामहे —^d) Dt लोमा * * * * म्यया

18 ^b) Dt ^aपरिर् (sic) (for ^aपत्तर्) D4 14 T G1 3 4 M3 प्रमो (for विभो) —For 17-18^a Śi D1 3 5 7 9 11 12 subst N V B D10 13 ins l 7 only after l 8 of 462*

461* अद्यवस्ते वदा सर्वे सुरा मंपूर्णमानसा ।

स्या नियोक्ष्यामहे विष्णो लोकानां हितकाम्यया ।

पद्ममुक्तोऽपीदीप्तिगुणैरिति सुरमण्डलम् ।

तस्य ते रक्षकं श्रुवा व्यवन्मुनिदि सुरा ।

पुत्र राजा दशरथो हयमेधेन दीक्षित ।

अथमेधेन वज्रेण दयतानामनुप्रहृष्टम् ।

धर्मेगीर्णो गुणधाय सययादी ददत ।

तत्र त्वं मानुषो भूत्वा प्रवृद्धं लोककण्टकम् ।
अवध्यं दैवतैर्विष्णो समरे जहि रावणम् ॥ १९

[(1 1) D1 संतप्त (for संपूर्ण) — (1. 2) = 17^{ad}. D11 त्वा. D1 नियोज्या^a (for नियोज्यामहे) D12 om. विष्णो. S1 D1 5. 11 12 क्रियया (S1 'ते' हित — (1 3) D11 च सुमगल (for सुमण्डलम्). — (1 4) D11 तद्वचन (for ते तद्वच). D3 7 वच (for सुरा) — (1 5) D11 पुनार्थ दीक्षित क्षणी (for the post. half). — S1 D1-3 5 7 9 12 om. 1 6. — (1 7) N1 V1 3 4 B D1-2. 7 10 13 'श्लापी. D2 गुण श्लाघ्य (for गुणश्लाघ्य). V2 जितेन्द्रिय (for इन्द्रिय).]

—^a S1 Dt D1-3 5 9 11 12 अस्य; Cg तस्य (as in text). V2 चतुस्र (for तिस्रसु) —^r D4 G1 transp ही and श्री. S1 D1-3 5 7 9 12 हीश्री (D5 श्रीही by transp. ज्वत्पासु चीमतः; D11 हीश्रीकीर्तिषु धर्मतः; T2 'कीर्त्यसमासु (sic) च. —^s D11 चतुर्धा त्वं विभज्य स्वं प्रादुर्भविमुर्महसि. —For 16^c—18, N1 V B D10 13 M4 subst, while D1 ins. 1. 1-5 only after 16^{ad}

462* ब्रह्मणा मनसा ध्यातस्मद्ब्रह्मायामितलुपि ।
अत्रवीचं ततो ब्रह्मा विष्णुं सुराणीः सह ।
मार्गानामसि लोकानामाविष्टा मधुसूदन ।
याचामहेऽस्तस्मान्मार्गः शरणं नो भवाच्युत ।
मृत किं करवाणीति विष्णुस्तान्प्रवीक्ष्य ।
इति तस्य वचः श्रुत्वा पुनरुच्यते सुराः ।
राजा दशरथो नाम तस्यैवानुमहत्तपः ।
हृष्टवानश्वमेधेन प्रजाकामः स चाजान् ।
अप्यश्रियोगारवं विष्णो तस्य पुत्रत्वमामुहि ।
तस्य भार्यासु तिस्रसु श्रीऋषयःसु जनार्दन ।
चतुर्धा संविभज्य स्वं प्रादुर्भविमुर्महसि । [5]

[(1. 1) N2 B3 D10 transp ब्रह्मणा and मनसा. B2 समनु^o (for मनसा ध्यातव्य). B1 तत्राया^d; D13 तद्व्याख्या^o (for the post half) — (1. 2) M4 सर्वं (for विष्णु) B2 देवगणः. — (1. 3) D11 अस्मि (for अस्ति) N1 V4 B2 3 D11 मधुसूदन. — (1. 4) V4 तु. B3 च (for दत्त). V3 याचामात्वं वच त्वा^o. M4 अनन्तरमर्थव्यामोच (for the prior half) B4 मे (for नो) D13 [अ]च्युत. — (1. 5) D10 हृदि (for हृत्). D11 करवानसि (for 'णीति). N1 अ+वीक्ष्. D11 M4 तत (for वच) —After 1 5, D11 reads 459* and 461*. — (1 6) V2 याचिनस्य (for इति) M4 वच (for नरा). — (1 7) M4 तु (for तु-) — (1 8) N1 +श्वमेधेन, V2 4 B1 M4 चाश्वमेधेन. V4 पुत्र (for प्रजा) V2 सदा (for स च). —After 1 8, N1 V B D10 13 ins 1 7 of 461* (for variants cf. v1 461*). — (1 9) V1 3 B1 D13 M4 असिन्. V2 तस्मान्. V4 अस्मान्. V2 निजोमे (for निजोगान्). D13 आमुनि (sic) (for आमुहि) — (1 10) B1 illeg. for श्री. B1 जनार्जनाय (by ditto), B4 जनार्दन. — (1 11) V1 संविभज्य (corrupt), V4 B1 3 (m. also as in text) M4 [अ]र्ज विभज्य; B4 'कः; D13 स विभज्य (for सविभज्य).

स हि देवान्सगन्धर्वांसिद्धांश्च ऋषिसत्तमान् ।
राक्षसो रावणो मूर्खो वीर्योत्सेकेन बाधते ॥ २०

V1 B1 D10 M4 त्व, B4 -[अ]त्मा (for स्व). V4 प्रमविधु त्वम् (for प्रादुर्भवितुम्) B2 अर्हति.]

N1 V B D10 13 M4 cont, while D11 ins. after 18 :

463* स नियुक्तस्तदा देवैः साक्षाद्वारायणः प्रभुः ।
तानुवाच ततो देवानिदं वचनमर्थवत् ।
किं मया तत्र कर्तव्यं प्रादुर्भूतैः सः सुराः ।
कार्यं कृतो वापि भयं युष्माकमिदमीदृशम् ।
इति श्रुत्वा वचस्तस्य विष्णोरुच्यते सुराः । [5]
राक्षसास्तो भयं पित्तो रावणाहोचरावणात् ।

[For 1 1-5 cf. I. 15 1-3^{ad}. — (1. 1) V2-4 B1 2 4 तदा (for तदा) M4 ततो (for साक्षात्). — (1. 2) N2 अनुवाच (for तानुवाच) M4 पुनर् (for ततो). V2 अर्थात् (for अर्थवत्). — (1. 3) D11 मयात्र (submetric) (for मया तत्र). V2 वै (for व) V1 प्रादुर्भवेन वेषार (marg v' सुरा also) (for the post half). — D13 om (hapl.) lines 4-5 — (1. 4) B2 जात (for कार्य) M4 हि (for [अ] वि). V4 transp. वापि and भय V2 क्षमाकम् (for युष्माकम्) V4 अपि (for इदम्). V4 मीदृश (sic). — (1 5) V4 D11 तस्य वच श्रुत्वा (by transp. V3 विष्णुर्. B2 विष्णु (for विष्णोर्). — (1 6) Before line 6, D13 ins ref देवा ऋतु V1 रामणात् (for रावणात्). N2 B2 वाराण् (for रावणात्).]

19^a S1 D1 13 transp तत्र and त्वं. T2 मानुषं (for मानुषो) —^b G4 प्रवृत्तं (for प्रवृद्धं). D2 3 7 जहि कंटकं; G2 M1 देववर्टकं (G2 'कः) —^c D2 5 अवध्यो; D3 अवध्यक्यं (sic). D17 अशक्यः; Cg h त अवध्यं (as in text). D13 दैवता (sic) (for दैवतैर्) D14 सैवं; M3 देव (for विष्णो). —^d M3 (after corr sec. m. as in text) वारणं (metathesis) (for रावणम्)

20^a G4 ह (for हि) S1 D1 3-5 7 देवविं. (for देवान्स्). —^b D14 T2 G4 मुनि. (for ऋषिः). S1 D1-3 5 13 सिद्धासु (D5 12 'न्सु) रमहोरगात्. —^c M3 reads inf. lin. sec. m. रावणो. S1 D1-3 5 7 9 12 नाम (for मूर्खो). —^d Dt D1 3 5 8 ची (D1 'यै) द्वेकेन (Dt D2 8 'ण); G2 'त्येकेन (sic), Cg as in text (for चीर्योत्सेकेन) —For 19-20, N1 V B D10 11 13 M4 subst

464* मानुषीं तनुमास्थाय समुदतुं त्वमर्हसि ।
त्वतो हि नान्यस्त पापं सक्तो हन्तुं दिव्यक्रियाम् ।
स दीर्घं तस्यैवाकालं ततोऽप्युपमादिम ।
तेनार्यं परितुष्टोऽस्य भयश्च प्रवितामहः ।
ततोऽस्मै प्रद्वेष्टो तुष्टो परदो भगवान्पुरा । [5]
अभयं सर्वभूतेभ्यो वर्जयित्वा तु मानुषान् ।
ततो दत्तारथैव तस्य नान्यत्र मानुषान् ।
यथाद्रव्यमन्धनं गत्वा मानुषतां जहि ।
स हि देवर्षिगन्धर्वैस्तप सिद्धांश्च मानुषान् ।
यस्मात्तत्त्वतोऽप्येतो वापते राक्षसायमः । [10]

[For 1 1 and 3-6 in \tilde{N} V B D10 11 13 M4 cf I 15 3^d-5^d —(1 1) \tilde{N} 2 V4 B3 D10 सव (V4 °त्व)मुद्धृतम् B1 °त्व (for समुद्धृतम्) —(1 2) M4 नायसु (for हि नायसम्) —(1 3) B2 reads twice in succession 1 3-7 B2 (first time) transp म and दीव V2 D13 काम (for काल) B1 तनो (for तनो) \tilde{N} 2 B* (both times) द्युम् (for द्युम्) \tilde{N} 1 V4 B4 D11 अरिदम् —(1 4) V1 B2 (both times) येन (for तेन) —(1 5) D11 13 तदा M4 अतो (for ततो) M4 मगन्तु वद (by transp) V रव्य M4 वर (for पुरा) —(1 6) B1 अवध्य (for अभय) \tilde{N} 2 lacuna V4 B1 D10 च (for तु) V2 मानुष V4 मानवान् —After 1 6 V4 reads 1 10 followed by 1 1 of 466* —For ins see below —V3 M4 om 1 7 9 —(1 7) B1 -रक्ष (for -रस्य) \tilde{N} 2 V2 B2 (both times) 4 D10 11 13 एव (for एव) V4 एवात्र B1 नाशोच (for अवय) —D10 om 1 8 and 9 —(1 8) \tilde{N} 2 V2 B3 वधोपायम् V1 व + इयम् (for वधाइयम्) \tilde{N} 1 first letter illeg (for गत्वा) \tilde{N} 2 erroneously om च in मानुषतं —(1 9) B2 ह (for हि) V4 तप स्थित्वा च (for तप सिद्धाश्च) V2 सातुपान् (for मानुषान्) B4 सिद्धाश्च मानुषास्तथा (for the post half) —(1 10) V4 reads 1 10 after 1 6 \tilde{N} 2 D11 13 M4 -नो° V3 -नो° (for -नोमनो) V3 M4 राक्षसाधिप]

—After 1 6 B4 ins (followed by 1 8 of 466*)

465* एवमस्माद्भूत प्राप्त स राक्षसपति प्रभो ।

— \tilde{N} V B (For B4 cf v1 1 8 of 466*) D10 11 13 M4 cont

466* यज्ञाह मन्त्राह वैव मन्त्राद्विदुरुपादक ।

अवध्यो वरदानेन रात्रयो लोककण्टक ।
तेनाक्रान्ता नृपतय सरथा सहस्रजरा ।
हता भिद्रुताश्चान्ये प्राद्वन्ति दिशो दश ।
भक्षिता नृपयध्वं तथैवाप्सरसा गणा । [5]
एष सप्त सदा लोकान्द्रीडयिष च बाधते ।
अवज्ञाना पुरा तेन परदानेन मानवा ।
तस्मात्तस्य वधो दृष्टो मानुषेभ्य परतप ।

[V4 reads 1 1 after 1 10 (transp) of 464* —(1 1) M4 [अ]मो (for [ए]व) V4 पमैटि (for मन्त्राद्वि) V3 °य M4 विगिताशन (for पुष्पादक) V4 om from the post half of 1 2 up to the prior half of 1 5 —(1 2) B2 (marg) M4 -रावण (for -रव्य) —M4 om 1 3 8 —(1 3) V2 हव्य (for सत्वा) D11 lacuna (for सह) —(1 4) V2 B1 विप्रक्ष (B1 °ह)ताधान्ये (V3 काले) D13 च प्रदूर° (for विप्रदुताश्चान्ये) \tilde{N} 1 B1 2 4 D10 11 प्राद्वन्ति (for -वन्ति) —(1 5) B2 तथापि D11 °येव (for तथैव) V2 तथाप्सर° (submetric) V4 बाधतेस्सप्तं गणान् (for the post half) —(1 6) V1 (m as in text) 3 दृष्ट V2 हन् V4 B4 दृष्ट, B1 दृष्ट D13 वर (for दृष्ट) V3 सर्वान् D13 -द्व

(for स्त) V2 आकीरयिष (for श्रीदत्तव स) B1 2 (m orig थावति) बापति (sic) (for बाधते) —After 1 6 D11 reads I 15 4th 5th (var) repeating them in their proper place —1 7 and 8 = 1 15 6 which is omitted in its proper place in \tilde{N} V B D10 11 13 (cf v1 I 15 1) —(1 7) \tilde{N} V B D10 13 transp 1 7 and 8 B1 अविज्ञाता D13 [अ]नेन (for तेन) —(1 8) \tilde{N} V B D10 13 transp 1 7 and 8 and B4 repeats 1 8 here reading it for the first time after 465* V4 अमात्र 2 तस्यै (for तस्य) V1 वतो° (sic) V2 °यतो (for वधो दृष्टे) V3 B1 मनुष्येभ्य V1 4 B1 4 (second time) D13 परतप B2 (first time) सुरद्विप]

—After 20 Dt D4 8 9 14 S (except M4) Cmg h t ins

467* नृपयध्वं ततस्तेन गन्धर्वाप्सरस्तथा ।
श्रीदन्तो नन्दनवने रौद्रण किल हिसिता ।
वधापै वयमायातास्तस्य वै मुनिभि सह ।
सिद्धगन्धर्वैयक्षाश्च ततस्त्वा शरण गता ।
स्व गति परमा देव सर्वेषां न परतप । [5]
वधापै देवशत्रूणां नृणां लोके मन कुरु ।
एवमुक्तस्तु देवेशो निष्पुच्छिदशनुगव ।
पितामहपुरोगास्तान्सर्वलोकनमस्कृत ।
अमर्षो विदशास्त्वान्स्मेतान्धर्मैः सहितान् ।
भय त्यजत भद्र वो हितार्थे युधि रावणम् । [10]
सपुत्रपौत्र सामात्य समित्रजातियन्धवम् ।
हत्वा क्रूर दुरा मानं देवर्षीणां भयावहम् ।
दशवर्षसहस्राणि दशवर्षतानि च ।
वन्ध्यामि मानुषे लोक पादयन्धृषिकीमिमाम् ।
एव हत्वा वर देवो देवानां निष्पुत्रा मवान् । [15]
मानुषे चिन्तयामास जनान्ममिथामन ।
तत पञ्चपलाशाश्च कृत्वा मान चतुर्विधम् ।
वितर रोचयामास तदा दशरथं नृपम् ।
ततो देवर्षिगन्धर्वा सहसा साप्सतो गणा ।
स्तुतिभिर्दिव्यरूपाभिस्तु दुष्पुत्रं पुष्पदन्तम् । [20]

[Cr no comment —(1 1) D4 तु (for च) T2 तन् (for तथा) —(1 2) Dt D4 8 विमिश्रिता D4 °सहता G2 °क्षिता (by metathesis) (for किल हिसिता) —(1 5) D2 G1 3 M5 पतो (for परमा) G1 3 M5 देवश्च (for देव) D2 परतप —(1 6) D4 नृणां sup lin —(1 7) M5 च ° (for एवम्) Dt D4 8 रावणम् (for उक्तम्) T2 युगै (for पुत्र) —(1 8) G4 देव (for -लोक) —(1 9) M2 3 -संभि M3 °रिषितान् (for सहितान्) D2 स्मेतापैसनापितान् (for the post half) —(1 11) Dt D4 8 9 T2 -वि (for किल) —(1 12) Dt D4 8 °चर्ष G1 महा° (for दुरा मान) M4 damaged from first न to म —(1 14) M4 damaged from हो to पाल D4 वात्ये (for पादयन्) —(1 16) D4 reads 1 16 17 in marg Dt D4 8 मानुषे T2 मानुषी (for

तमुद्धतं राणमृद्धतेजसं
प्रवृद्धदर्पं त्रिदशेश्वरद्विपम् ।

निराणं साधुतपस्विकण्टकं
तपस्विनामुद्धर तं भयानहम् ॥ २१

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥

मातुषे) Dt भूमि D14 भूमिर् (for भूमिम्) Dt यथा G1 3 तदा (for अथ) —(1 17) Ds reads 1 17 in marg D14 विशालाक्ष (for पद्मपलाशाक्ष) M2 damaged from तु to थ in चतुर्विधम् —(1 18) M2 damaged for वि in तितर G1 M2 तथा (for तदा) M2 damaged from र to प in दशरथ नृप —(1 19) G1 °द्राप्सरसो (for °द्रा साप्सरसो) —(1 20) M2 partially damaged]

21 °) Ś1 Ñ V1 3 B D1-2 5 7 10-13 M4 तमु (D12 °दु) स्वण, V4 तमुन्मद, D14 T G2 3 M2 त्वमु, G1 तमु, G4 त्वमुच्यत, Cg as in text (for तमुद्धत) D1 3 7 राक्षसम् (for रावणम्) Ś1 D1 3 5 7 12 उग्रमाहवे, Ñ V B Dt D4 6 8 10 11 13 M2 4 Cm g उग्र (V1 °ख [sic] B2 °द्र [sic]) D2 उग्रमाहव, T3 इह, M2 ऋद्ध*** (for ऋद्धतेजस) —⁵) V4 प्रवृद्ध, B4 D11 विवृद्ध (for प्रवृद्ध) M2 damaged from the first द् to the second द् V2 D1 त्रिदिवेश्वर, D12 त्रिदशेश्वर (for त्रिदशेश्वर) —⁶) Ś1 Ds 12 त°, V2 त्रिद्रा, D1 3 7 T3 त्रिराविण, D13 त्व°, Cm g k t as in text (for निरावणं) Ś1 बुद्धगणस्य, Ñ V B D10 11 13 M4 सर्व°, D1 3 7 निलय°, Ds 12 विबुधगणस्य (hypermetric) Cg (gloss) साधु नि शेषम् (for साधुतपस्वि) V1 **क, D3 क** (for कण्टक) —⁷) D9 उद्धरण D14 ऋद्धतर, G1 2 3 M1 3 उग्रतर, G1 mg t as in text (for उद्धरत) M2 भयाव* Ś1 D1 3 5 7 12 पराक्रममुद्धरता भवानिति Ñ V B D10 11 13 M4 मनुष्यता D11 °*) मेल निहृतु (Ñ 2 °ह्य [sic]) मर्हसि —After 21 Dt D4 6 8 9 14 S (except M4)

Cm g k t ins

468* तमेव हत्वा सबल मवान्धनं
निरावणं रावणमग्र्यपौरुषम् ।
स्वर्लोकमागच्छ गतज्वरक्षिर
सुरेन्द्रपुत्र गतदोषकल्मषम् ।

[(1 1) D4 T3 नाहन (for नाधव) —(1 2) T3 विराविण (for विरावण) Dt Ds 3 G2 M1 उग्र (for अग्र्य) —(1 3) D9 T1 3 G2 4 M1 Cgp स्वर्लोकम् (for स्वर्लोकम्) M2 ऋ [sic] विन्वरस्य (for गलज्वरस्य) —(1 4) D14 T गतरोप° G2 3 M1 3 °किल्वि M2 सुतदोषकल्मष*]

Colophon Kanda name Ś1 Ñ2 Dt D4 10 om Kanda name V B आदि, D1 3 अयोध्या° —Sarga name Ś1 V2 D1 3 5 7 10 12 रावणवधोपाय (D10 °ध्याय) (D10 om) Ñ V1 4 B राव (V1 °न) शवधोपाय, V2 D2 रावणवधोपायधिता (V3 °भरण), D9 पायसोत्पत्ति —Sarga no (figures words or both) Ś1 Ñ1 V1 4 B1 4 Ds 12 om Ñ2 B2 3 D10 14 (as in text) V2 16 V3 13 D1 11 Ds 7 10 D2 एकादश, Ds 12 S (except M4) पचदश (D9 °न), D11 M4 चतुर्दश (as in text) Dt D4 6 8 पचदश 15 D13 ह्यार्थे यणे कांडे रा यधोपायो चतुर्दश (dash indicates lacuna) —After colophon, G1 2 4 M4 conclude with श्रीरामाय नम, G3 with श्रीमते रामानुजाय नम

ततो नारायणो निष्पुनिर्युक्तः सुरसचमैः ।
 जानन्नपि सुरानेनं श्रुत्वा वचनमब्रवीत् ॥ १
 उपायः को वधे तस्य राक्षसाधिपतेः सुराः ।
 यमहं तं समास्थाय निहन्यामपि कण्टकम् ॥ २
 एतमुक्त्वा सुराः सर्वे प्रत्यूचुर्निष्पुणमव्ययम् ।
 मानुषीं तनुमास्थाय रामणं जहि संयुगे ॥ ३
 स हि तेपे तपस्तीव्रं दीर्घकालमरिदम् ।
 येन तुष्टोऽभ्यद्रव्हा लोककृल्लोकपूजितः ॥ ४

15

Ñ V B D₁₀ 11 13 om st 1-6 (D₁₁ 1 3 and 5^{ad} 6) (cf 463* 464* and 1 7 and 8 of 466* in I 14)

1 ^{ad} D₁₄ T₁ 5 G₂ 4 M₁ 3 देवो, Cg k as in text (for विष्णुः) S₁ D₁-3 5 7 12 M₄ स (D₂ 3 स) नियुक्त सुरैः सर्वैः (M₄ सुराणैः) विष्णुर्नारायणस्तदा (S₁ D₅ 12 था) —^c S₁ D₁-3 5 7 12 M₄ उपग (D₁₂ ०) म्य, D₉ जलतापि, Cr mg k t as in text (for जानन्नपि) G₁ सुराद् (for सुरान्) S₁ D₁-3 5 7 12 सर्वान् (for एवं) —^d M₃ श्रीमान् (for श्रुत्वा) D₅ अत्र *त्

2 D₅ reads 2 and 3 in marg —^a S₁ D₁-3 5 7 12 क उपायो (by transp.), M₄ को ह्युपायो D₅ वधस् (for वधे) —^c S₁ D₅ 12 यद् (for यम्) G₃ यमहं तनु मास्थाय —^d M₄ मुनि (for क्षपि)

3 D₅ reads 3 in marg —^a D₅ उक्त्वा (sic) (for उक्ता) —^c S₁ D₁ Dt 1 3 5-8 12 मानुष रूपम्, Cg as in text (for मानुषीं तनुम्) —^d S₁ D₁-5 5 12 M₄ तद्रथोः D₇ स रक्ष (sic) (for रामण)

4 D₁₁ repeats 4^a-5^b here reading them for the first time after 1 6 of 466* —^a G₄ न (sic) (for स) S₁ D₁ 3 5 7 11 (first time) 12 तेन तप्त, Cg t as in text (for स हि तेपे, —^b Dt D₄-8 8 9 12 T₁ 3 G₁ 4 M₃ अरिदम् (D₅ म), M₄ अतद्रित —^d Dt D₄-8 8 9 12 M₄ Cg k t पूरेन, G₃ पूजित (sic) (for पूजित)

5 ^a D₁ 5 M₁ न, Cmg t as in text (for स) —^b D₄ 3 7 तदा (for प्रभु) D₁₁ (first time) ह्यव्ययता (for वर प्रभु) —^c D₅ marg D₁ om (hapl) भूतेभ्यो —^d S₁ D₁-3 5 7 12 M₄ [5 भयमन्यद्र, Cmg t as in text (for भयं नां) —After 5 M₄ ins 469*

6 ^a Dt om the portion in ^b after वर D₄ 8 12 नाने हि (for नानेन) T₂ मोहिता (for मानवा) —For

संतुष्टः प्रददौ तस्मै राक्षसाय वरं प्रभुः ।
 नानाविधेभ्यो भूतेभ्यो भयं नान्यत्र मानुषात् ॥ ५
 अवज्ञाताः पुरा तेन वरदानेन मानवाः ।
 तस्मात्तस्य वधो दृष्टो मानुषेभ्यः परंतप ॥ ६
 इत्येतद्वचनं श्रुत्वा सुराणां निष्पुरात्ममान् ।
 पितरं रोचयामास तदा दद्वारथं नृपम् ॥ ७
 स चाप्यपुत्रो नृपतिस्तस्मिन्काले महाश्रुतिः ।
 अयजत्पुत्रियामिधिं पुत्रेप्सुररिद्धदनः ॥ ८

6^{ad} S₁ D₁ 3 5 7 12 subst, while M₄ ins after 5

469* स दुर्बुद्धिर्वरं प्राप्नो राक्षसाधिपतिं प्रभो ।

[D₇ सु (for स) S₁ D₅ 12 स पूर्व हि, M₄ एवं तस्माद् (for स दुर्बुद्धिः) D₇ प्राप्य (for प्राप्नो) M₄ स राक्षसपति (for राक्षसाधिपतिः)]

—After 6^{ad} D₄ 8 8 9 12 S (except M₄) Cg ins

470* एवं पितामहात्तस्माद् प्राप्य स दयित ।

उत्साद्यति लोकालीन्विषश्चाप्यनर्पति ।

[Cr mg k t do not comment —(1 x) D₅ 8 M₄ वरदानेन गति (M₃ दुर्गति), D₉ वर प्राप्याव दयित (for the post half) —(1 2) D₅ अरि [with hiatus] (for चापि) D₈ [उ]प, D₉ [अ]न (for [अ]प)]

—^d D₂ 3 7 मानवेभ्य S₁ D₅ 12 पर तदा, D₁ 6 M₄ तप्य (sic) (for परतप)

7 ^{ad} M₃ [ए]व (for [ए]तद्) S₁ D₁-3 5 7 11 M₂ अयय, M₄ अच्युत (for आत्मवान्) Ñ V B D₁₀ 13 इत्युक्तो भगवान्देवैरिष्णुलाह (D₁₃ ० लोके [sic]) पितामह (B₁ नमस्तुत) —D₇ om 7^c-8^c —^c Ñ 2 माय in marg —^d Ñ 2 (m) V₁ 4 B D₁₀ 13 ततो, V₃ तितुर, D₄ नृप, T₃ तथा M₄ बुद्ध (for तदा) D₄ भृदा (for नृपम्)

8 D₇ om 8^{ad} (cf v 1 7) —^a S₁ D₁-3 5 11 13 अनस्त्य, V₂ समाप्य सत्रं Cg t as in text (for स चाप्य पुत्रो) —^b V₁ त्वरिम् S₁ D₁ 1 13 यदृच्छया Ñ B D₁₀ 11 महामना, V₁ 3 लन (V₃ ना) V₂ 4 यथा (for महा शुनि) —D₁₁ repeats 8^{ad} as in S₁ —^c D₁₁ illeg for वनलुङि Ñ V B D₁₀ 11 13 M₄ वानिमेयेन, D₄ कानिमेहि, Cg k t as in text (for पुत्रियामिधिः) S₁ D₁-3 5 7 12 वाज्य (D₂ च्यते द्विननुत्थेन —^d S₁ D₁ 3 5 7 पुत्रायम्, D₁₃ पुत्रया (for पुत्र्यम्) V₁ 3 B-4 D₁₀ M₄ मर्दन, D₄ समिनदन, D₁₃ वारिसुदन (to avoid hiatus) T₂ रिपु (for वारिसुदन) D₁₁ वतुना भूतिद्विणि —After 8, Dt D₄ 8 8 9 12 S (except M₄) Cg k t ins

471* स कृत्वा निश्चयं विष्णुरामन्य च पितामहम् ।
 भक्त्या नानेन ददौ पुत्रयमानो महर्षिम् ।

ततो वै यजमानस्य पात्रकादतुलप्रभम् ।
 प्रादुर्भूतं महद्भूतं महानीर्यं महानलम् ॥ ९
 कृष्णं रक्ताम्बरधरं रक्तास्यं दुन्दुभिखनम् ।
 स्निग्धहर्षक्षतनुजश्मश्रुप्रवरमूर्धजम् ॥ १०
 शुभलक्षणसंपन्नं दिव्याभरणभूषितम् ।
 शैलशृङ्गसमुत्सेधं दम्भशार्दूलनिकमम् ॥ ११

[Cr m do not comment —(1 2) D⁹ reads from ततो (for ततो) up to प्रादुर्भूत in 9^o in marg —G² वैदे M³ देव (for देवे) M³ तुलेषम (also वै inf lin sec m)]

9^a) Ś1 D1-3 5 1^o 13 तस्य, N̄ V B D7 10 11 तत्र, Cm g k t as in text (for ततो) Ś1 D5 12 13 [द]य, N̄ V B D10 11 M⁴ [S]स्य, Cg वा (for वै) V1 हृयमानस्य —^b) Ś1 D1 5 11 12 अद्भुतं, N̄ V B (B1 om from दद्भु in 9^b up to the first द्भु in 472*) D10 M⁴ अद्भुतद्युति (B⁴ ते) D2 3 7 महद्भूत, D⁹ अतुलनिकम (hypermetric) Cl t as in text (for अतुलप्रभम्) —After 9^{ab} N̄2 B³ D10 read 12^{ab} —^c) M³ reads महद्भूत inf lin sec m —^d) M³ शीर्षं (for शीर्षं) T² महद्भूत M⁴ प्रदीप्तानलवर्चस —For 9^{ad}, N̄ V B D10 subst while D13 ins after 12 (read after 9)

472* उद्भूत सुमहद्भूत प्रदीप्तानलसनिभम् ।

[B1 ** B2 D10 उद्भूत (उद्भूत) V1 4 महा (V4 उद) भूत स्रु (V1 *) द्भुत (for the prior half) D13 गृहीत्वान्न N̄1 D13 सप्रम (for सनिभम्)]
 —After 9 D13 reads 12

10^a) G⁴ Cm कृष्ण, Ct as in text (for कृष्ण) Ś1 D1 3 5 7 9 12 कृष्णावर (Ś1 D5 12 कृष्णानि) धर (D² व * ध) कृष्ण —^b) Ś1 D1 3 5 12 क्ष, D² कृष्णावर्ष (for रक्तास्य) D³ दु * मि —^c) D⁹ नयन (for नयन) Ś1 D1-3 5 7 12 हरि (D² 7 1^o रं) स्निग्धेक्षण रम्य, G1 3 स्निग्धगभीरनिर्घोष (epic tag!), Cm g k t as in text (for °) —For 10 N̄ V B D10 11 13 M⁴ subst

473* कृष्णानिधर कृष्ण हरिदमश्रुजटाधरम् ।
 पद्मरक्तान्तनयन मेघदुन्दुभिनि स्वनम् ।

[(1 1) The prior half = 10^o in Ś1 M⁴ कृष्णवर (cf 10^o in D1) V1 कृष्ण V2 B1 3 D10 हरि व M⁴ अरि (sic) (for हरि) —(1 2) B1 नय (for नयन) V⁴ सनिभ (for नि स्वनम्)]

11^a) D2 3 7 सर्व (for शुभ) ⁶¹ सपूर्ण (for संपन्न) —N̄1 om from स in समुत्सेध in ° up to r in सिंहोदर (N̄ reading) in ^a —^c) Ś1 D5 11 12 मेर, D1 शील (sic) D2 3 7 दत्त (for दौल) V1 B² D12 द्यौ (B³ D12 sic) (for द्यौ) V1 द्वो, D12 द्भूत, T³ G1 त्वेद (G1 य,

दिवाकरसमाकारं दीप्तानलशिखोपमम् ।
 तप्तजाम्बूनदमयीं राजतान्तपरिच्छदाम् ॥ १२
 दिव्यपायससंपूर्णां पारीं पत्नीमिव त्रियाम् ।
 प्रगृह्य निपुलं दोर्भ्यां स्वयं मायामयीमिव ॥ १३
 समवेक्ष्याव्रतीद्वाक्यमिदं दशरथं नृपम् ।
 प्राजापत्यं नरं निद्रि मामिहाम्यागतं नृप ॥ १४

[both sic], Cm g k t as in text (for समुत्सेध) —^a) D⁹ द्वीवि, Cm g k t as in text (for द्भु) M⁴ गामिन (for विक्रमम्) N̄ V B D10 13 सिंहोदर (N̄1 om) कटीक्षण (D13 तत्) —After 11 B³ ins

474* अपर्पदरानं दिव्य तेजोराशिसमायुतम् ।

12 N̄1 V B1 4 om 12 D⁹ om 12^{ab} D13 reads 12 after 9 N2 B3 D10 read 12^{ab} after 9^{ab} —^a) Ś1 D1-3 5 7 11 12 निभाकार N̄2 B2 3 D10 13 दिवाकरवद् (D13 रादव्य) चिन्मद्, Cg k as in text (for °) —^b) Ś1 D5 11 12 दौत (D12 तं [sic]) वद्विषमप्रभ, N̄2 B2 3 D10 13 M⁴ दुर्निरीक्ष्य (N̄2 B2 °क्ष) द्यौरवि, D1-3 7 पात्रकाद (D1 °दु) द्युत (D1 °व) प्रभं (D1 °भा, D7 °प्रभु) Cg k t as in text (for °) —N̄2 B2 3 D10 om 12^{ad} —^c) Cg as in text (for °) Ś1 D1 7 11 12 राजिता (D7 11 जर्त) नियतच्छदा M⁴ जावूनदमयीं पारीं विष्मन्नागरवर्चस Cr m g k t as in text (for °) —After 12 D13 ins 472*

13^a) D2 सपूर्ण (for पूर्ण) —^b) D10 missing (for पारीं) M⁴ पद्मा (for पत्नीम्) V3 D11 त्रियो (for त्रियाम्) —^c) D2 निमल (for विपुला) —^d) D1-3 7 माया (D1 °या, D7 मं [both sic]) D11 सयो (sic) (for स्वय) Ś1 D5 12 मयो मायामिगामुरी Cr m g k t as in text (for °) —For 13 M⁴ subst while N̄ V B D10 13 subst l r only for 13^{cd} and read before 13^{ab}

475* काञ्चनीं विहित्वा दोर्भ्यां परिगृह्याद्भुतोपमाम् ।
 पायसलामृताव्यस्य परिपूर्यं हरिच्छलम् ।

[No comm —(1 1) M⁴ काचन (for काञ्चनी) V⁴ विडिका M⁴ [अ] विडिना (for विदितं) M⁴ महायुने (for [अ] द्भुतोपमाम्)]

M⁴ cont 477*

14^a) M⁴ समुपेय, Cm g k t as in text (for समवेक्ष्य) —For 14^{ab}, Ś1 D1-3 5 7 11 12 subst

476* अमयीप्रथित वाक्यमिदं द्विजवर तदा ।

[D2 12 प्रसू D3 प्रातीन (sic) D6 प्रणिन (for प्रथिन) D11 कथ्यद्य दिन (for दद दिनार) D1 तथा (for तदा)] —^a) D11 °वर, G2 °व्यार, Cr m g k t as in text (for प्रापापय नर) —^d) Ś1 D1 3 5 7 12 स्वयं (for नृप) —For 14 N̄ V B D10 13 subst, while M⁴ ins after 475*

ततः परं तदा राजा प्रत्युयाच कृताञ्जलिः ।
भगवन्स्वागतं तेज्स्तु किमहं कर्वाणि ते ॥ १५
अथो पुनरिदं वाक्यं प्राजापत्यो नरोऽनरीत् ।
राजन्मर्चयता देवान्मघ प्राप्तामिदं त्वया ॥ १६

477* तस्यैवशृङ्ग प्रोवाच भूतमुत्पन्नमनुत्तम् ।
प्राजापत्य मिदि मा एव भूतमस्यागतं द्विज ।

[(1 x) V1 s D13 M4 तद् (for तम्) M4 "अथ" — (1 2) D13 प्राजापति B4 मा (for मा) V4 सुत्तम् (sic), B2 दूतम् (for भूतम्) M4 प्रयच्छ स्वयमेवैतद्राज्ञो हविरिति प्रभु]
—N V B D10 13 cont, while S1 D1-3 5 7 11 12 ins after 14

478* इमा पात्रीं मया दत्ता प्राप्य राजे प्रयच्छ च ।
तमुवाच ततो धीमानुत्पन्नशृङ्गो द्विजर्षभ ।
प्रयच्छ राजे पात्रीं एव स्वयमेव समुद्यताम् ।
न्यवशृङ्गवच श्रुत्वा प्राजापत्यो नरोत्तम ।
ददौ नृपत्ये पात्रीं स्वयमेव समाहित । [5]
प्रोवाचेद्वाहुदायाद परया स्वरसपदा ।
प्रीतस्तेऽहं महाराज सर्वानुत्तरसोद्भवम् ।
प्रयच्छामि गृहाण त्वमिद्वाहुकुलनन्दन ।

[No comm S1 D1-3 5 7 13 om 1 x — (1 x) D11 समा (for मया) V4 *भे (for राजे) V1 s प्रयच्छन्, B1 "ने" (for प्रयच्छ च) — (1 2) V1 कृणोत्ये V2 4 द्विजोत्तम (for द्विजर्षभ) S1 D1-3 5 7 11 12 ततोऽनरीद्विज (D11 "अ" श्रेष्ठ प्राजापत्य न (D2 3 7 11 12) रोत्तम — (1 3) D2 राज्ञो (for "भे") S1 D1 11 13 पात्रीं राजे (by transp) D3 om (hapl) from the post half of 1 3 up to the prior half of 1 5 N1 [अ] हुतोपमां, N2 V B D10 13 [अ] हुतामिति (B4 "ह" D7 "त" (sic) (for समुद्यताम्) — (1 4) S1 D2 5 7 11 12 कृणियुत्त (D2 "भे") (for कृणोत्ये) B1 damaged for स्ते नरोत्तम N V2 B2-4 (B3 m also as in V4) D10 महामतिः, V2 मदीपति, V3 महामुनि V4 D13 महापुत्रि D11 स्वतो [sic] (for नरोत्तम) — N V B D10 13 om 1 5 — (1 5) D11 मृष *भे D2 प्राप्त (for पात्री) — S1 D1-3 5 7 12 om 1 6-8 — (1 6) N1 दया * (for "द") N2 स्ववसंतदा (sic) V1 s B2 D13 सुत (for स्वरसपदा) — (1 7) D11 सदाभ्य (sic) (for महाराज) V1 s नरोत्तम (B2 "मा" B4 "नो") D10 *भे, D11 "च" (for समुद्भवम्) — (1 8) B1 प्रयच्छामि D11 पुत्र (sic) (for पुत्र) N1 *न न V3 न्वन D11 नन्दन (sic) (for नन्दन)]
D11 cont 479*

15 For 15 and 16 N V B D10 13 subst 479* — Cg t तत् पर (as in text) S1 D1-3 5 7 12 तत्तत् स नर (D13 दारणे) D2 रत्नपुत्र, D11 सुतस्य D12 T1 s G2-4 M1 s तम (G2 4 M1 "द") दूत तदा (D11 महा G3 M1 चतो) T2 "तथा G1 Ch दान", V1 साधु-पुत्रम्, M4 तास्तु स

इदं तु नरशार्दूल पायसं देवनिर्मितम् ।
प्रजाकरं गृहाण त्वं धन्यमारोग्यार्थनम् ॥ १७
भार्याणामनुरूपाणामश्रीतेति प्रयच्छ वै ।
तासु त्वं लप्स्यसे पुत्रान्यदर्थं यजसे नृप ॥ १८

(for तत् पर तदा) S1 ज्ञात्वा, D14 राजा (sic) (for राजा) —^a) D1 प्रत्यु *च —^a) D2 M2 s "वात्" (sic) (for भगवत्) —^a) D2 2,7 किं वा (D7 वा) ह (for किमह)

16 D2 om 16 —^a) Cmg ह्वयो (as in text) S1 D1-3 5 7 11 12 ततो नृपवर, D2 पुत्रोदित (for धयो पुनरिद) D2 वाक्य प्राजापत्य (sic) (for वाक्य) —^a) G4 प्राजापत्य D11 सुरो (for नरो) —^a) D1 "तो, M4 अभ्यर्चिताद्, Cmg k t as in text (for अर्चयता) M4 देवात् —^a) S1 D1-3 7 11 12 G4 सख, M4 सम्यक् (for अद्य) T1 प्राप्त inf lin S1 D1-3 5 7 11 12 फल (for इद) — For 15 and 16 N V B D10 13 subst, while D11 M4 read after 478* and 480* resp

479* प्रतिगृह्य च ता रात्रा शिरसा ण्नतोऽनरीत् ।
भगवन्किमनेनाह वरवाणीति वै तदा ।
तमनवीक्षतो भूतं प्राजापत्य तदा नृपम् ।
स्विष्टस्य ते नरपते व्युत्तिरेपा मयोद्यता ।

[(1 x) M4 [अ] ज (for च) N V B D10 11 13 त (for तत्) B1 [S] मवत् (for अनीत्) — (1 2) V3 त (for वै) — (1 3) M4 तद् (for तम्) B1 तदा, M4 पुनत् (for ततो) V1 भूत्, B1 मृष, B2 (m also as above) दत्ता (for मृत्) V1 s B2 s प्राजापत्य (for "त्य") N2 V4 B2 s (m also) D10 ततो (for तदा) V1 नृप, V2 दत्ता (for नृपम्) M4 नराणि (for तदा नृपम्) — (1 4) V2 स्विष्टम् (sic) V3 जुष्टम् D10 स्विष्टम् (submetric) D13 स्विष्टस्थिते (for स्विष्टस्य वै) V3 नृपते (submetric) V4 कृति (sic) D10 व्युत्तिरे (sic) (for व्युत्तिरेपा) V2 B4 "व्यता (sic) D10 "दित्ता, M4 महापुत्रे (for मयोद्यता)]

17 " T2 repeats (ditto) इदं तु V1 s B2 4 M4 (second time) त्व, B1 तं, Cg k as in text (for तु) Dt D2 5 11 T1 G4 M2 4 नृपशार्दूल —^a) V4 *च (for देव) M4 (second time) महत् हविश्चरे —^a) V4 प्राजापत्य (for प्राजाकर) —^a) S1 N2 B3 D5 11 13 धर्मम्, V2 पुण्यम्, B1 धनम्, D10 धर्मम्, Cg k t as in text (for धन्यम्) — After 17, M4 ins

480* इदो राजे स्वयं तस्मै ता पात्रीं हविरस्तदा ।
M4 cont 479* then repeats 17^a

18 " D2 repeats (ditto) मनुष्याणा —^a) S1 D5 11 13 अनादय (for अनरीति) D2 5 7 (for वै) —^a) S1 D14 T1 s M3 त्व प्रा, D1 s 11 12 हि प्राप्स्यसे (D1 "नि, D3 "ते [sic]) D2 2,7 प्राप्स्यसे च (D2 तां) D2 "हमते (for त्वहमते) D2 5 7 11 13 प्रीति (for पुत्रम्)

तथेति नृपतिः प्रीतः शिरसा प्रतिशृङ्खताम् ।
 पानीं देवान्नसंपूर्णां देवदत्ता हिरण्मयीम् ॥ १९
 अभिराद्य च तद्भूतमद्भुतं प्रियदर्शनम् ।
 मुदा परमया युक्तश्चकाराभिप्रदक्षिणम् ॥ २०
 ततो दशरथः प्राप्य पायसं देवनिर्मितम् ।
 बभूव परमप्रीतः प्राप्य तित्तिमिवाधनः ॥ २१

—^a) D12 यतसे (for यजसे) —For 18 N V B D10 13
 M4 subst

481* प्रयच्छ धर्मेण नीम्य प्राधीतेति नराधिप ।
 ताम्यस्व प्राप्स्यसि प्रीतिं यदर्थस्तेऽयमुद्यम ।

[(1 x) N1 °हीति D13 मुलाताम्ये (for प्राधीतेति) B1
 D13 नराधिप —(1 2) N1 D13 °हे B1 24 D10 °ते (for
 प्राप्स्यसि) D13 [5]पच (for प्रीति) N2 V3 B3 D10 यदर्प
 (for °धेत) N2 V3 B3 4 D10 13 ते सप्त° V1 लेप उ° (for
 तेऽयमुद्यम)]

19 For subst see below —^a) M4 प्रीतिं (for
 प्रीत) —^b) M4 च (for ताम्) —^c) T3 पात्र (sic)
 (for °त्री) D11 दिव्यान्न, M4 पायस, Cg देवान्न (as in
 text) T3 संपूर्ण (sic) (for °र्ण) —^d) Dt देवदत्ता

20 °) G1 M3 च तं भूत G4 ततो देवो (for च तन्वम्)
 —T1 damaged from 20° up to दय in 21^b —^d) D4
 °णा, D9 ति प्रदक्षिणा Cg k t as in text (for [अ]
 मिप्रदक्षिणम्) —For 19 and 20 S1 N V B D1-3 5 7
 10-13 subst

482* यादमियेव नृपतिमद्भुतं प्रतिपूज्य च ।
 अमरवीतन्महद्भुतं श्रेष्ठमामहितं वच ।

[(1 x) D3 शये* S1 संतुष्ट D1 स हृष्ट D2 3 5 7 11 13
 सट्ट (for तद्वच) V B D13 -गृष्ट (for -गृज्य) N2 V1 2
 (also as above) B D10 13 स (for च) —(1 2) S1
 V4 B1 D1 5 7 11 13 त (sic) N1 तु V2 स (for तत्) V1
 महापूत D3 आनदि*]

21 T1 damaged up to देय in ^b (cf v 1 20)
 D10 13 transp 21 and 22 —^a) V1 दशरथे —^b) V1
 B D10 13 तद्विद्वि (for पायस)
 —After 21^b, B3 ins

483* पायसं परमं दिव्यं गन्तुतेतोमयं तत ।

—D3 om 21° 22° —^d) T3 प्राप्त (sic) (for प्राप्य)
 V4 D1 [अ]पम (for [अ]पन)

22 D3 om 22^a (cf v 1 21) D10 13 transp
 21 and 22 —^a) D10 अगम् (for तनम्) V V B D10 13
 तद्व (V4 B1 *) जुनं Cg k t as in text (for °त) V
 V1 B D10 भूते V2 दूषा V3 दत्ता D10 उक्त्वा Cg k t
 as in text (for प्राप्य) —^d) V V1 3 B D10 13 दत्ता

ततस्तदद्भुतप्रख्यं भूतं परमभास्वरम् ।
 संप्रीतयित्वा तत्कर्म तत्रैवान्तरर्थायित ॥ २२
 हर्षरश्मिभिरुद्योतं तस्यान्तःपुरमात्रमौ ।
 शारदस्याभिरामस्य चन्द्रस्येव नभोऽंशुभिः ॥ २३
 सोऽन्तःपुरं प्रविश्यैव कौसल्यामिदमब्रवीत् ।
 पायसं प्रतिशृङ्खीय पुनीयं त्विदमात्मनः ॥ २४

V4 तस्य, Ck as in text (for भूत) N1 V2 4 B1 3
 तद्विस्मृत, N3 V1 B3 D10 13 तद्विस् (V1 °चरुम्) तन, B4
 *द्वि *त्तम, M4 °भासुम् (for परमभास्वरम्) V3 तद्विद्वि
 तमुत्तम —^a) N V B D10 13 राशे (V1 °ज्ञो) दशरथाया (V1
 °थाय), M4 सतर्पयित्वा त काम Cg m g k t as in text
 (for °) —For 22 S1 D1 3 5 7 11 12 subst and read
 before 21

484* तत स भगवात्स्वमौ पात्रीस्थ पायसोत्तमम् ।
 नृपाय दत्त्वा तत्रैव क्षिप्रमन्तरधीतम् ।

[No comm —(1 x) S1 तु (for स) D13 तत्र (for
 तत्रे) S1 D3 1° पात्री पात्र (D12 प्राप्त) वयसै (for the post
 half) —(1 2) D3 नृपा*]

—All cont

485* भद्वदथ तक्षणाद्भूत दीपवप्रचगाम ह ।
 गत तस्मि महाभूते रिमयं नृपसत्तम ।

जगाम स महातना राजा दशरथमृदा ।

रघोतेवचापि तत सभूतो भूतसंगम ।

न विज्ञाता गतस्तस्य येन मार्गेण सकुत । [5]

[No comm —(1 x) D11 प्रगाम —D12 om
 (hapl) 1 3 and 4 —(1 3) D3 तु (for स) D3 म*1
 (for मदा) —D2 3 7 om 1 4 —(1 4) D11 स (for
 स) —(1 5) S1 D7 12 ना (S1 अ) विज्ञाता (D7 °त) (for न
 विज्ञाता) D2 से गत (arcl uc), D2 7 सांगम (for संगुन)]

23 S1 N V B D1 3 5 7 10-13 om 23 T1 missing
 from m in° up to म्र in 24^b on a damaged fol —^d)
 G4 [ए]न (for [इ]प) G1 3 M4 नवागुमि, Ck t नमो
 गुमि (as in text)

24 T1 damaged for ^a (cf v 1 23) —^a) V2 शत
 (for मोऽत) V V1 3 B D10 13 M4 [अ]थ D12
 [अ]थ T3 [अ]ने (for [अ]प) V4 प्रविद्व*, B3 (m)
 also प्राविद्वि (for प्रविद्वि) —^b) D3 अमयन् (sic)
 —^c) T2 -गृहीत्वा (sic) S1 D10 13 गृहाणाधेमिनो देहि
 V V B D10 13 पुनीय (N2 °थय [d tto]) पायसं दूषि
 D1 2 7 गृहीत्वा (D1 या) धेमिनो दूषि —^d) V1 प्राप्तः N3
 V4 B3 4 D10 प्राधीति V1 प्राप्त* V2 प्राणो (sic) V4 B3 3
 प्राणै (B1 °दृष्ट) D11 13 प्रादप्य Cg p as in text (for
 पुनीय) S1 V V B D1 3 5 7 10 11 13 M4 दि (N3 om
 1 apl) तम्, D12 दिव्यम् (for विद्वम्) —After 24 D11
 repeats 24^a as in S1

कौस्तुभायै नरपतिः पायसार्थं ददौ तदा ।
अर्धादर्थं ददौ चापि सुमित्रायै नराधिपः ॥ २५
कैकेय्यै चापशिष्टार्थं ददौ पुनार्थकारणात् ।
प्रददौ चापशिष्टार्थं पायसस्यामृतोपमम् ॥ २६

इति श्रीरामायणे वालकाण्डे पञ्चदशः सर्गः ॥ १५ ॥

25 ^{ab} T₃ तथा (for तदा) N V B D₁₀ 11 13 M₄
Ctp इत्युक्त्वा प्रददौ तस्यै हविषोर्ध (V₁ अर्धं with hiatus
hypermetric) नराधिप — After 25^{ab}, N V B D₁₀ 11 13
M₄ Ctp ins

486* स्वयमेव सम कृत्वा भारं भाग्यता वर ।

[Cr m g k do not comment D₁₁ स्व M₄ नृप (for
सम) V₄ भात (for माग) V₄ B₄ भार (B₄ भग) वना D₁₁ 13
भाग्यवता]

—^c V₄ B₄ D₉ अर्धार्थं प्र (B₂ तु, D₉ च) Cg t as
in text (for अर्धादर्थं) V₄ तस्यै, D₁₁ च* (for चापि)
S₁ D₅ 12 चतुर्भागं द्विधा कृत्वा —^d N₁ B₁ कैकेयै स, N₂
V₁—3 9 10 13 कैकेयै स, V₄ B₄—4 कैकेयै स, D₁—3 7 कैकेया
स (for सुमित्रायै) S₁ D₅ 12 ददौ तदा (for नराधिप)
D₁₁ कैकेय्या * घुनदन

26 D₂ om (hapl. ?) 26 and 27^{ab} —^{ab} G₁ M₂
कैकेय्यात् (for क्यै) S₁ D₅ 12 अर्धादर्थं ददौ चापि कैकेय्या
स नराधिप (cf 25^{ab}) N V B D₁ 3 7 9 10 11 (reads
after 27^{ab}) 13 Ctp चतुर्भागं द्विधा कृत्वा सुमित्रायै ददौ
तदा (B₃ तथा, D₇ 9 11 ततः) (cf 25^{ab} in S₁) —T₁
damaged from घं in ° up to पुन in 27^b —^c S₁
D₅ 9 11 13 ए च, N V₁ 3 B D₁ 3 7 10 13 चा (B₁ अ) च
(D₁₃ च) शिष्टे तत्, V₄ 4 ए तु, Cr m k t as in text
(for चापशिष्टार्थं) —^d S₁ N₁ V B D₁ 3 5 7 9—13 पायस
देवनिर्मिते

27 D₂ om 27^{ab} T₁ damaged up to पुन in °
(for both cf v l 26) —^a V₂ अनुचिह्नै (sic) —^d
N₁ यश्चादत्त (sic) T₁ * * देव (for पुनरेव) S₁ N V B
D₁ 3 5 7 9—13 नरा (D₁₂ घना) धिय, Dt D₈ 8 T₁ महामति
(for महीपति) —After 27^{ab} D₁₂ reads 26^{ab} —N₁
V B D₁₀ 13 M₄ om 27^{cd} —For subst see below
—^c G₁ 3 साम्यो (for साम्या) —^d G₁ 3 भार्याभ्य (for
भार्याणा)

28 ^a Dt D₈ 8 चर (D₈ च) (for चरेत्) G₃
प्रादय, M₃ गृह्य (archaic) (for प्राय) —^b Dt D₈ 8 14
T₁ 3 G₁ M₃ [उत्तम T₃ *म (for *मा) —^c G₃ M₃ सवाने
M₃ सरो (sic) —^d T₃ जेपस (for जेपस) —For
27^{cd} and 28 S₁ D₁ 3 5 7 9 11 13 subst

अनुचिन्त्य सुमित्रायै पुनरेव महीपतिः ।
एवं तासां ददौ राजा भार्याणां पायसं पृथक् ॥ २७
तास्तेतत्पायसं प्राप्य नरेन्द्रस्योत्तमाः स्त्रियः ।
समानं मेनिरे सर्गाः प्रहर्षादितचेतसः ॥ २८

487* ततः प्रादय तु तत्तमं पृथक्पायसमुत्तमम् ।

श्रुत्वा पुनीयमिदं प्रहृष्टमनसोऽभवन् ।

भन्तवन्त्यश्च ता सर्वा सर्वार्थं सुसमाहिता ।

राजा सहस्रं धीरो हि प्रहर्षान्मुदितोऽभवत् ।

[(1 1) D₁₁ पायस देवनिर्मित (for the post half)
= 26^d in D₁₁ —(1 2) D₁₁ हरेण D₉ भवेत् (sic) (for
भवन्) D₂ तनुमानवन् (sic) —(1 3) D₉ तु (for च)
D₂ पत्यश्च (for ता सर्वा) D₁₁ स्त्रियश्च (for सर्वार्थं) S₁
[ए]व समा D₁ पीडिता (for सुसमाहिता) —(1 4) D₂ 9
वीरो (for धीरो) S₁ D₅ 12 प्रहसन् D₉ प्रहर्षं (for प्रहर्षान्)
Then all (except D₁₁) read App 1 (No 3)]
—D₁₁ cont while N V B D₁₀ 13 M₄ subst
for 28 whereas Dt D₄ 8 11 S (M₄ subst) Cg k t ins
after 28

488* ततो हवि प्रादय तदुत्तमस्त्रिय

स्वयं नृपेण प्रतिपादित मुदा ।

हुताशनानिदितसमानतेन स

क्रमेण गर्भान्ननिषेदिरे शुभात् ।

ततः स राजा समुपेत या स्त्रिय

प्रहृष्टगर्भा परिपुष्टमानसा ।

बभूव तुष्ट सुकृती यथा दिव

समीक्ष्य योगप्रसूतेन तेजसा ।

[(1 1) Dt D₄ 8 11 S (except M₄) ततस्तु ता M₄
हविस्तु तत् (for ततो हवि) V₂ 4 B₁ T₃ M₄ प्राय (for प्रादय)
M₄ तदा (for तत्) N₂ V₁ 2 4 B₁ 9 4 D₁₀ 11 13 उत्तम G₂
उत्तमात् (for उत्तम) —D₁₀ om (hapl) from l 2 up
to l 5 T₁ damaged from रुचम (see below) in l 2
up to गर्भा in l 4 —(1 2) Dt D₄ 8 11 S (except
M₄) Cg k t महीपतेरुत्तमपायसं पृथक् —(1 3) M₃ * गान
D₄ T₂ M₃ जेपसश्च G₄ तेनसा M₃ चर्चलो (for जेपस)
—(1 4) Dt D₄ 8 11 S T₂ 3 G₁ M₃ 3 [S] वि (D₄ T₂ M₃
वि) रेण (for कनेय) N V B D₁₁ 13 M₄ जय V₂ B₁ D₁₁
अथ V₄ 3 * तेनिरे (for प्रतिपेदिरे) N₁ (also as above)
Dt D₄ 8 11 14 S (except T₁ M₄) तदा V₄ सुराणां
(hypermetric) (for शुभात्) —(1 5) D₁₃ तय (for
तय) D₁₀ om स तय Dt D₄ 8 11 S (except M₄) तु
(for स) Dt D₄ 8 11 S T₁ G₁ 3 4 प्रतिवीक्ष्य D₁₂ T₂ 3 G₁ M₃—3
प्रसमीक्ष्य M₄ समरेक्ष्य (for समुपेत) —(1 6) T₃ प्रमाथ
(sic) (for प्रष्ट) B₂ परिपुष्ट Dt D₄ 8 11 S (except

पुत्रत्वं तु गते पिण्णौ राजस्तस्य महात्मनः ।

उवाच देवताः सर्गाः स्वयंभूर्भगवानिदम् ॥ १

सत्यसंधस्य वीरस्य सर्वेषां नो हितैषिणः ।

पिण्णोः सहायान्वलिनः सृजध्वं कामरूपिणः ॥ २

मायानिदश्च शूरांश्च वायुवेगसमाञ्जवे ।

नयज्ञान्दुद्धिसंपन्नान्विष्णुतुल्यपराक्रमान् ॥ ३

असंहार्यानुपायज्ञान्दिव्यसंहननान्वितान् ।

सर्गास्त्रिगुणसंपन्नानमृतप्राशनानिव ॥ ४

M₄) प्रतिबन्ध- D₁₃ परिहृष्ट (for परिहृष्ट) N V₁ 2 4 B Dt D₄ 6 8 14 T₁ 2 G₄ M₁ 2 4 -मानस -G₂ om 1 7 -(1 7) V₁ कृष्ण Dt D₄ 6 8 14 S (except G₂) हृष्ट (for हृष्ट) V₂ स हृष्टी Dt D₄ 6 8 14 S (except M₄) त्रिदिने (for सुहृष्टी) Dt D₄ 6 8 14 S (except M₄) हरि (for दिव) -(1 8) D₁₁ 13 समेत्य (for समीक्ष्य) V₁ योग्य V₃ 4 याग D₁₁ सत्यक (for योग) V₁ प्रतिपुष्ट (for प्रसूनेन) B₁ D₁₁ 13 चेतसा M₄ चक्षुषा (for तेजसा) Dt D₄ 6 8 14 S (except M₄) Ct सुप्रतिबिम्बिगणान्मिपूतित -After 1 8 D₁₁ ins an add colophon [Kanda name बाल° Sarga no पचदश]

After 487* S₁ D₁-3 5 7 9 12 ins while D₁₁ ins after the addl colophon after 488*

489* सत प्रादा सुविपुल धन बहुविध तदा ।
अन्यश्चन्द्राय मेधावी राजा देवसममुनि ।
प्रतिगृह्य च तत्सर्वं धन द्विजवरस्तदा ।
श्वधूम्य प्रददौ गत्वा सर्वान्म्य श्रीतिपूर्वकम् ।

[No comm -(1 x) D₂ 3 प्रादाय D₂ प्रसादात् (sic) D₂ प्रायत् (for प्रादात्) D₂ 3 विपुल -D₁₁ om 1 3 and 4 -(1 3) D₃ 7 9 तु (for च) -D₂ om 1 4 -(1 4) D₁ स्वकृते (sic) वरदो D₂ राजा (for गत्वा)]

-After, 489*, S₁ D₁-3 5 7 9 12 ins a passage given in Appendix I (no 3), while N V B D₁₀ 11 13 ins after 1 4 of 514*

Colophon D₁ om (cont the sarga) -Kanda name S₁ N₂ V₄ Dt D₄ 6 10 om V₁ 3 B आदि°, D₂ अयोध्या°, D₂ 7-9 11 12 14 T बाल° -Sarga name S₁ D₁ 3 5 7 9 12 पुनर्जन्म, N V (V₃ prefixes दिव्य B D₁₀ पायसोपपत्ति -Sarga no (figures words or both) S₁ N₁ V₁ 4 B₁ 4 D₄ 5 12 om N₂ B₂ 3 15 V₂ 17 V₂ D₁₀ 14 Dt S (except M₄) षोडश, D₂ 11 M₄ पचदश (D₂ दशम), D₄ 6 8 14 षोडश 16, D₂ एकोनविंशति 19 -D₁₃ इत्यार्ये-यणे-काडे पायसोनाम पचदश सर्ग (lacuna in place of dash) After colophon G₁ 2 4 M₂ conclude with श्रीरामाय नमः, G₃ with श्रीमते रामानुजाय नमः

16

☞ S₁ N V B D₁-3 5 7 10-12 M₄ transp Sarga 16 and 514* (subst for 1-21 in sarga 17)

1 T₂ begins with श्रीरामचन्द्राय नमः T₁ missing from स्व in^a up to र्भ in^a on a damaged fol -^a) M₄ मुन्नता S₁ D₁ read तु in marg B₂ देवे, D₂ कृष्णे (for विष्णौ) -^b) B₂ विष्णौ (for राजात्) N V B D₁₀ 13 M₄ दशरथस्य तु (N₁ V₃ D₁₃ हि, V₁ B₁ 2 च, M₄ य [sic]) -^c) S₁ देवतासंवाङ् (sic), N V B D₁₀ 13 M₄ देवानाह्वय (for देवता सर्वा) -^d) N₂ B₃ (marg as in text) D₁₀ स्वयं, V₁ विष्णु (for इदम्) N₁ इदमब्रवीत् (for भगवान्निदम्)

2 ^a) B₃ सत्यबधस्य N (N₂ marg) V B D₁₀ 13 M₄ देवस्य, D₁₂ M₂ धीरस्य (for धीरस्य) M₄ तस्य सत्यानि सधस्य -^b) N V B₁ 3 D₁₀ वो, D₂ च, D₁₃ वै, T₃ om (for नो) N₂ B₃ D₁₀ हितार्थिन, D₂ हितैषिणै (sic) (for हितैषिण) -^c) V₂ D₁₀ 13 सहायं, B₂ (marg) -^d) साहाय्य (for सहायान्) S₁ D₂ 6 7 11 12 सृजत (D₂ 'तो) N V B D₁₀ 13 M₄ समरे (B₂ marg समये) D₁ असृजत (hyper-metric) D₂ असृजत् (for बलिन) -^d) S₁ D₂ 3 6 7 11 12 बलिन, N V₁ 3 B D₁₀ 13 कुरुष्व, D₁ बलवान् Cm k as in text (for सृजध्व) D₁₃ राम (sic) (for काम)

3 ^a) S₁ D₁ 3 5 7 9 11-13 मायाविनश, Cg k t विदश (as in text) S₁ N V₂-4 B D₂ 10 12 13 च वीरा (V₂ D₁₃ 'रा)श्व, V₁ प्रवीराश्व, D₂ शूरा* (for च शूराश्च) M₄ शूरानवहितोत्साहान् -^b) V₁ राघवेण (for वायुवेग) V₃ समा* 2, V₄ 'ग्रेणे, B₁ 'न्युधि, G₂ 'कुला, M₄ परक्रमान्, Cg t as in text (for समाञ्जवे) -V₂ om 3°-4 -^c) M₃ नीति (for बुद्धि) S₁ D₁-3 5 7 12 मतिबुद्धिसमायुक्तान्, Cg as in text (for °) -T₁ missing from पराक्रमान् up to स in 4° on a damaged fol -^d) S₁ D₁-4 7 9 13 T₃ G₁-3 M₁ 2 पिण्णोस् M₄ देवतुल्यबलमुनीन्

4 D₂ om (hapl) 4-6 V₂ om 4 T₁ missing up to स in 4° (for V₂ and T₁ cf v 1 {3}) M₄ om (hapl '4) ^a-^b) D₂ 3 7 नयज्ञान्दुद्धिसंपन्नान् (= 3°) -^c) V₄ नित्य, D₄ Cg k मिह, Cr m as in text (for दिव्य) D₂ 12 सनहता (metathesis), T₂ सह* ना (for सहनता) -^c) S₁ B₁ सर्वस्तु, D₂ सर्वान्, D₂ सर्वायं, Cr m g t as in text (for सर्वाश्च) V₁ सर्वेष्टाश्च गुणोपेतान्, -^d) B₃ अमृत (sic) (for अमृत) Cr m g t प्रादानान् (as in text) S₁ D₁₁ 12 प्राशकोपमान्, N V₁ 3 4 B D₁₀ 13 M₄ प्राशिमि समान्, D₁-3 7 प्रादानोप (D₂ 'श्च) मान्, D₂ G₃ 'प्राशिता G₂ 'ना [sic] नित्य, T₃ 'प्रादानानिव M₃ प्रादानानि च (sic)

अप्सरःसु च मुख्यासु गन्धर्वीणां तन्पु च ।

यक्षपद्मगन्ध्यासु ऋक्षविद्याधरीषु च ॥ ५

किंनरीणां च गात्रेषु वानरीणां तन्पु च ।

सूत्रपं हरिरूपेण पुत्रांस्तुल्यपराक्रमात् ॥ ६

5 Ds om 5 (cf. v. l. 4) —^a B: अप्सरासु (sic) V: मुख्या* —^a Ś: N V B Dt Ds 9-13 गन्धर्वीणां (sic), Ds गन्ध्याणां (sic), Cm k t as in text (for गन्धर्वीणां) N: V B 2-4 Ds 10 11 13 वपुषु, Ds स्थनेषु (sic) (for तन्पु) —G: Ms om (hapl.) 5^{ad} Du transp 5^{ad} and 6^{ad}. Cr mg t do not comment on ^a —^c Ś: V: Ds 1: 9 11 13 कपि, N: V: B 2-4 Ds Ms ऋक्ष, V: ऋक्ष (for यक्ष) D: ऋक्ष्यासु (for गन्ध्यासु) —^a N V B Ds 10 13 तथा (for ऋक्ष) B: om, Ck विद्याधरीषु (as in text) Ś: Ds 1: 9 11 13 विद्याधरसुखासु (Ds 'नि [sic]) च, Ms किंनरीणां च येनपि (cf. 6^{ad})

6 Ds om 6 (cf. v. l. 4) Du transp 5^{ad} and 6^{ad} Cr mg k do not comment on ^a —^a Ś: N V B Ds 9-11 13 Ms किंनराणां V: om च (submetric) Ś: Ds 1: 9 11 देहेषु, N V B Ds 11 13 येषिषु (for गात्रेषु) Ms विद्याधरीणां येनपि (cf. 5^{ad}) —^a Ś: N V B Ds 10 11 13 वनरागा Ś: Ds 1: 9 11 13 तथैव च, N V B Ds 10 13 Ms च सर्वदा (for तन्पु च) —T: missing from हरिरूपेण up to जाम् in l. 1 of 490* on a damaged fol —^c T: कालरूपेण N V B Ds 10 13 Ms जनपदमपत्यानि —^a Ś: Ds 1: 9 11 13 हरितुल्य, N V B Ds 10 13 Ms हरिन्दुरि (for पुत्रास्तुल्य) Cm g k t तुल्यपराक्रमात् (as in text) —After 6 Dt Ds 8 9 10 12 S Cm g k t ins

490* पूर्वमेव मया सद्यो ज्ञान्यान्मुख्यवत् ।
जृम्भमाणस्य सदृशा भम वप्रादुपायत ।

[T: missing up to चाम् Ds (before corr as above) चाद्वार —(1 2) Ms स हरिः (for सदृश) T: अना**]

7 Ds om 7 Du om 7^{ad} —^a N V B Ds 10 Ms ते तथेति प्रतिज्ञाय ब्रह्मणो वचन (V: नात्) सुरा, Cg as in text (for ^a) —^c Ś: Ds 1: 9 11 13 जनपददेवरीषर्वा (Ds 1: 9^{ad}, Ds 1: 9^{ad}) N V 2-4 B Ds 10 Ms जनया (V: न) चकिरे पुत्रात्, V: जनया* ते पुत्रात् —^a D: 3 7 वै काम, Ds 1: वान*, Ds 1: नर (for वानर) N V B Ds 10 Ms बाह्यतुल्यपराक्रमात्

8 Ds 12 om (hapl.) 8 Ct does not comment on 8^{ad} reads 8^{ad} after 12 (after l. 3 of 495*) —^a Cg अपयक्षः (as in text) N: V 2-4 B: Ds 12 देवदेवविं (V: transp देव and देवविं) गपर्व, N: V 2-4 Ds 10 Ms देवविंशतगपर्व (Ms 'यं) —T: missing from चा up to वानरेन्द्र in l. 1 of 491* —^a Ś: N V B Ds 10 11

ते तथोक्ता भगवता तत्प्रतिश्रुत्य शासनम् ।

जनयामासुरेण ते पुत्रान्वाचनरूपिणः ॥ ७

ऋषयश्च महात्मानः सिद्धविद्याधरोरगाः ।

चारणाश्च सुतान्वीरान्स्सुसुर्जनचारिणः ॥ ८

13 सिद्धाश्च स्रष्ट (V: *) किंरै (V: पनै) Ms विद्याध्याये द्विर्वचस —After 8^{ad}, Gs ins l. 3 of 495* repeating in its proper place —^c N V B 1: 9 10 11 13 वानराक्षः V: बलिनः (for चारणाश्च) Ś: Ds 1: 9-11 13 [स] ज्ञान् (Ds 'दु) (for सुतान्) Ś: Ds 1: 9 11 (after corr sec m) 11 Ms वीरान्, N V B Ds 10 शूरात् (for वीरान्) —^a Ś: Ds 1: 9 11 वानरात्, Ds 'सुतुर, Ms अमृत् (for सत्तुर) Ś: वनवायिन, N V B Ds 10 13 काम (V: कपि) रूपिण, Ms वीरिभ्रमात्, Cg वनचारिण (as in text) Dt Ds 8 Ms repeat 8^{ad} after l. 3 of 495* —After 8 Dt Ds 8 9 10 12 S (Ms after 9) Cr mg k t ins

491* वानरेन्द्र महेन्द्राभिमित्रो वारिन्मा भवम् ।
सुधीर जनयामास तपनमपता वर ।
बृहस्पतिस्त्ववन्वचार नाम महाहरिम् ।
सर्वानरसुत्पत्त्यानु द्विमन्मनुचमम् ।
धनदत्त सुत श्रीमान्वाचनो गन्धमादन । [5]
विश्रम्भं स्वानयच्छल मान महाहरिम् ।
पाकस्व सुत श्रीमादीनोऽग्निरदृशम् ।
तेजसा यक्षमा वीर्याद्वारिच्यत वानरात् ।
रूपद्रविणसपञ्चावधिना रूपसमौ ।
मैन्द्र च द्विदिदैव जनयामासतु स्वयम् । [10]
वरणो जनयामास सुप्रेण नाम वानरम् ।
शरभ जनयामास पर्वन्त्यस्तु महाबलः ।
नारत्सामच श्रीमान्दन्माश्रम वानर ।
वज्रसहजोपेक्षो वैनतेयसमो जयै ।
सर्ववानरसुत्पत्त्येव बुद्धिमान्बलमानपि । [15]

[Cr comments only on l. 9 and 12 T: missing up to वानरे T: महामार्ग (sic) (for महेन्द्राभम्) Ds 9 10 S (except T2) लज्जि (for आभम्) —(1 2) Ms अदिलम् (for तपनम्) —Ch does not comment on l. 3 8 and Ct on l. 3-6 —(1 3) Dt Ds 8 Ms (before corr) क्रि, Ds 1: न्व, G: (before corr) 2-हरे (sic) (for हरिम्) —(1 4) Ms repeats l. 4 after 6 transp Ds (before corr as above) सुरयान —T: missing from सुन up to हा in l. 6 on a damaged fol —(1 5) T: गणपतव (sic) —Ms reads l. 6 after l. 8 —(1 6) Dt Ds 8 T: क्रि Ds 1: निदि, Ms बल (for हरिम्) —(1 8) Ds तेनो वागो Ds 9 रोचत, T: निरेक स Ms दीर्घा (for वीर्याद्वारिच्यत) Dt Ds 8 T: Gs 1 Ms (before corr) वीर्यात् —(1 9) Ds G: 'हृषी' T: 'सप' Ms इव Ms देवमर्चो (for हृ समौ) —Cm does not comment on l. 10 —(1 10) G: मैन्द्र T: 'व (sic), G: 'द्वय Ms निवि (for द्विदिदैव) Ms

ते सृष्टा बहुसाहस्रा दशग्रीवमधोद्यताः ।

अप्रमेयबला वीरा विक्रान्ताः कामरूपिणः ॥ ९

ते राजाचलसंकाशा वपुष्मन्तो महाबलाः ।

ऋक्षवानरगोपुच्छाः क्षिप्रमेनाभिजिह्वे ॥ १०

सुती (for स्वप्न) — (1 11) Ck does not comment Ds G om (hapl) from सुपेण in 1 11 up to गाम in 1 12 T1 missing from 1 11 up to गाम in 1 12 on a damaged fol — M4 om 1 12 — (1 12) D4 9 14 T1 • G M1-3 महाबल — Cm does not comment on 1 13-15 — (1 13) Dt D6 8 औरस, T3 आमन (for आमज) D6 श्रीमा * * * न् — (1 14) D9 यज्ञ (for कृ) T2 सह * ने, G2 हसननोपेनो (metathesis) (for सहननोपेनो) D9 समाह्वे (for समो चवे) — M4 om 1 15 — (1 15) Cg k t do not comment D4 सुस्तेन्यो (for सुस्तेषु)]

—After 491* M4 ins 495* (om 1 5-8)

9 D13 om (hapl) 9 Cr m do not comment —“ V1 सृष्टा (m as in text) (for सृष्टा) S1 दृष्टा (for बहु) — T1 missing from वपुषे up to राजा in 10* on a damaged fol —“ S1 न्यधेद्यता, N V B D10 11 न्यधेप्सुमि, D1 3 7 न्यधे वृता D4 Cg k t न्यधे रता, D9 न्यधे प्रिता, D14 T2 G M1-3 न्यधे छता, T3 न्यधादता, M4 न्यधैपिण, Ct as in text (for न्यधोद्यता) —After 9th B4 ins

492* महाभैरवैषकर्मणो मेघखननिनादिन ।

—Cg k t do not comment on —“ S1 D1 5 11 13 दृष्टा, N V B D10 M4 देवैर, D2 3 7 केचिद् (for योता) —“ S1 N V3-4 B D1 3 10-12 M4 वानरा, V1 सरे ते (for विरान्ता) D1 न्यारिण (for रूपिण) D2 3 7 वानरा वन चारिण —After 9 M4 ins 491*

10 V3 om 10th T1 missing up to गता (cf v 1 9) —“ S1 D1-3 5 7 11 12 ते गुजान (D1 3 7 छ, D4 M4 Cg मेरमंदर, D9 तेजवानल, Ct as in text (for ते गताचल) N V3 4 B D10 13 यस्मान्, V3 धमाज, Cg t as in text (for यस्मात्ता) —“ S1 D1-3 5 7 9 11 13 वीर्यरतो, Cg as in text (for वपुष्मन्तो) N V3 4 B D10 13 M4 मिह सहननोपेन —“ V1 D9 ऋष्य (for ऋक्ष) D12 ऋक्षे वानर गोपुत्र —“ D1 3 7 रि, D9 प्र, Cg as in text (for म सिमिन्ने) N V3 4 B D10 13 M4 जमिन्ने (V3 * * * B4 जमिन्ने) नल (B1 रिद D10 M4 मेघ) चारिण (B2 3 both marg) १०० कृपिरिण and कामरूपिण resp.)

11 “) Dt missing (for द्वाव) N V B D10 13 M4 सरे Cr m k t as in text (for स्ते) —“ N V3 4 B D10 13 M4 यद्वे य, V1 यवे यो य T3 यय G9 यय; Cr n p 3 t 75 in text (for ययो दध) S1 D 2 3 7 11 12 यययय (D1 3 7 यय न D2 3 7 11 यययय D1 मदीयं

यस्य देवस्य यद्वपं वेपो यथ पराक्रमः ।

अजायत समस्तेन तस्य तस्य सुतः पृथक् ॥ ११

गोलाङ्गुलीषु चोत्पन्नाः केचित्संमतनिक्रमाः ।

ऋक्षीषु च तथा जाता वानराः किंनरीषु च ॥ १२

तत्पराक्रम —“ S1 D1 12 जशे स सदशस्तेन, Dt D6 8 M4 1 सम तेन, D1 3 7 11 अजायन्स (all sic) दशस्तेन; D2 अजाये रत सदशास् (sic) T3 सुतस्तेन, Cg as in text (for “) —“ D2 तेन (for first तस्य) Dt D6 8 M4 Ct पृथक्, D1-3 7 11 सुतास्, D9 सुत, T3 सम, Cg as in text (for सुत) S1 D1 3 5 7 11 12 तदा, Cg t पृथक् (as in text) —For 12th N V B D10 13 M4 subst

493* तस्य तस्यैव सदश स स पुत्रो व्यजायत ।

[V1 सदश V2 4 D13 वेपो V3 तस्य B4 सम (for स स) B1 व्याजत (for व्यजायत) M4 तस्यैव सदश पुत्रतस्य तस्याभ्यजायत]

12 T1 missing 12 from द्वा on a damaged fol —“ Dt D3-9 11 13 T1 3 M4 गोलाङ्गुल्येषु, Cg as in text D9 समुपन्ना (hypermetric) —“ Dt D4 8 8 Ct किंचिद्, Cg केचित् (as in text) S1 D1 3 5 7 9 11 13 स्वमित, N V B D10 13 M4 अद्भुत, Dt D6 8 Ct उन्नत, Cg as in text (for संमत) V1 दृशना, D10 विस्मा —“ D2-9 13 T3 क्रसे (D3 7 की [sic]) पु (for ऋक्षीषु) S1 तया वीरा, D1-3 5 7 11 13 घोरा, M4 समुपन्ना (for तथा जाता) —“ S1 D1 3 5 7 11 13 14 री, Cg as in text (for याता) T2 G2 4 M4 वान, Cg t as in text (for किंनरीषु) —For 12th, N V B D10 13 M4 subst

494* वानरीष्वपि यक्षीषु किंनरीषु च वानरा ।

[N V1 B3 4 D10 10 13 विवासीषु (for [म]पि यक्षीषु) M4 [म]पि (for च)]

—After 12 Dt D4 8 8 9 14 S (M4 after 491*) Cr m g t ins

495* देवा महर्षिणा यवाभ्यामर्षयश्च यवाभिन ।

नामा हिंरुणाश्रय सिद्धिप्राधरोरमा ।

बह्वो जनयामागुदैक्षस्तत्र महदस्य ।

वानरा मुमदाकापान्वानरैश्च वनचारिण ।

अप्सर गु च मुन्यासु तथा रिवाधरीषु च । [5]

नागरुन्वासु च मदा गन्धर्वाणां तनुषु च ।

कामरूपरजोवेना यथाकामविचारिण ।

विदशाङ्गमदता द्रुपेण च यत्नैव च ।

[Ct does not comment on 495* G4 om 1 3-6 M4 om 1 5-8 G4 om 1 5-7 —(1 1) Cr does not comment T3 दशशस्तेन (for दश महर्षि) M4 दशरथ गो वे (for the prior 1 11) D4 मय, D11 G4 M4 मय, M4 यययय (for मय, दय) —(1 2) Cf I 16 4

शिलाप्रहरणाः सर्वे सर्वे पादपयोधिनः ।
नखदंष्ट्रायुधाः सर्वे सर्वे सर्पास्त्रकोविदाः ॥ १३
त्रिचालयेयुः शैलेन्द्रान्मेदयेयुः स्थिरान्द्रुमान् ।
क्षोभयेयुश्च वेगेन समुद्रं सरितां पतिम् ॥ १४

for the post half Ds सिद्धा (for सिद्ध-) Ms यथा विपापरा
रुधा (for the post half) — Cr m t do not comment
on 1 3-8 — (1 3) G1 s ins 1 3 after 8^{ab} and repeat
here Ms वस (sup lin मद्) वो (for वहवो) T3 युधा
(for ह्युध्) Ds युधा, T3 युधा Ms तास्तान् (for तत्र) Ms
वनीक्ष्म (for महस्त्र) — After 1 3 Dt Ds s Ms repeat
Ct reads 8^{ab} — (1 4) T1 missing from चारिण up to
first ch in 1 6 on a damaged fol Ms -योरात्मन्सुर् (for
-नायामसर्वान्) — (1 5) Ds अप्सराय — (1 6) Ds s 14 T2 s
G1 s Ms 3 तथा (for तदा) Ds गजवाण — (1 7) Ds Ms
-नाम (for -नाम) — (1 8) T3 विक्रमेय (for दंयेय च) T3
* लेन (for वलेन)]

13 " D1-3 7 दौल, Cg k as in text (for शिला)
N V B D10 13 Ms शैलेन्द्रान्प्रहरणा —^a N V B D10 13
Ms महा (for सर्वे) Dt Ds s पर्वत (for पादप) D2 s 7
om 13^c-14^c —^a Ns (marg as in text) पुरास्त्र, V1
युधिरा, Ds युधो (sic) (for युधा) N V B D10 13 Ms
चैव (for सर्वे) — T1 missing from सवा up to 14^b
on a damaged fol —^a S1 D1 s 11 12 वै कामरूपिण, T3
G1 s दशस्त्रा, Cg t as in text (for सर्पास्त्रकोविदा) N
V B D10 13 Ms कामरूपा (B4 D13 1 प) बलागन्विता (V2
महावला)

14 D2 s 7 om T1 missing 14^{ab} (cf v1 13) —^a
Ms आक्षेप, Cg k t as in text (for त्रिचालयेयु) —^b
Ms उन्निपेयुर् (for मेदयेयु) D2 s 12 G1 s Ms स्थितान्,
M2 सरो, Ms महा (for स्थिरान्) — For 14^{ab} S1 D1 s
11 13 subst

496* उष्पाटयेयुश्च गिरीगन्धिव प्रोधात्तथा दुमान् ।

[D1s अवलान् (for च गिरान्) S1 कोपात् (for कोपात्)
D1s transp भिषु and प्रोधात् D1s महा (for तथा)]
while N V B D10 subst

497* आचालयेयुरचलानुमग्रीयुर्महाद्रुमान् ।

[V1 वैव चान् (hypermetric) (for अचान्) V4
नयेयुर्के द्वाचान् (for the prior half) V1 वन्मूलेयुर् V2
विम्वदुर्, V3 B1 s (m as above) उन्मवदुर्, V4 विम्वदुर्
(for उन्मग्रीयुर्)]

— D2 om (hapl) after क्षोभयेयु in 14^c up to यु in
15^c —^c V3 विशोभयेयु (for क्षोभयेयुश्च) N V B D10 13

दासयेयुः क्षितिं पङ्कथामाश्रयेयुर्महापनिम् ।

नभस्तलं निशेयुश्च गृह्णीयुरपि तोयदान् ॥ १५

गृह्णीयुरपि मातङ्गान्मत्तान्प्रजतो वने ।

नर्दमानांश्च नादेन पातयेयुर्विहंगमान् ॥ १६

सहसा, Ms गभीरान् (for वेगेन) —^a N V B D10 13
गभीरान्सलिलान् (D13 1 श्र) पान् ; Ms सहसा (न्) मल्लिह्वदान्

15 D2 om up to यु in 15^c (cf v1 14) —^a
S1 D1 s 7 11 12 क्षितिं पादैर्, N V B D10 13 'दोभ्याम्, M2
damaged (for क्षितिं पङ्कथाम्) —^b S1 D1 s 11 उत्कृ, N V
B D10 13 Ms उपते, V2 s * वेयुर्, Cmg k t as in text
(for आश्रयेयुर्) S1 N V B D1 s 7 10 11 12 Ms नभस्त
(N V D1 s 1 स्थ) ल (D10 1 लान्), Dt Ds s 9 चान् (for
महापनिम्) D12 उद्भवेनक्षरस्तलं (corrupt) —^c D4 14 T G
Ms नभस्तल T3 विचेरन् (for निशेयुर्) S1 D1-3 s 7 11 12
पुतुयु (D1 3 7 अन्वयु D2 om) श्रस (D2 10 1 ना) (D1 7
च समा) विद्वान् —^d S1 D1 s 7 11 12 सचलान् (for
गृह्णीयुर्) — For 15^{cd}, N V B D10 13 Ms subst while
D1 ins after 15^{ab}

498* पातयेयुर्लथरानुत्पलकाकाचारिण ।

[D1 1 4 Ms पाट (for पातयेयुर्) V1 अन्वान् (sub-
metric) (for अन्धरान्) V1 उपेल B1 4 D13 Ms उर् (Ms
आ) कुल D10 उवति (for उत्पल) D13 [आ] काम (for [आ]
काश)]

16 " V2 श्रापि, V3 गृह्णीयु (sic) D10 रति (for
गृह्णीयुरपि) S1 D2 s 12 नागैर्दान् (for मातङ्गान्) —^a N
V1 2 4 B D1 s 11 13 Ms प्रनवितान् (D11 विनो), D10 14 T1
G M1 s Ck प्रम (D10 G2 M1 s मा) जितान् (Ms 1 तो),
Cmg t as in text (for प्रनवते) V1 क्रे, D2 2 रणे (for
वने) S1 D2 s 12 मत्तान्मुनितप्रमान्, V3 उन्मत्तश्च महापने,
D2 s 7 मत्ता (D2 अन्या) नपि हि (D2 च) दद्वि (D2 दि sic)
ण — After 16^{ab} B2 ins

499* अपर्षासन्ला सर्वे अज्जदस्त्रविशारदा ।

[Note hiatus between the two halves]

— T1 missing from मा in 16^c up to प्रसूता in 17^c on
a damaged fol —^a D2 14 T2 s G M1 s नर्दमानाश्च, Cm
मान् (as in text) Ct नादेन (as in text) S1 D1 s 5
7 11 12 नदतोपि तथा (D1 3 7 हि च) न्योनि (D1 3 7 11
ज्ञ), N V B D10 13 पत (B2 उत्तु) गानपि (D13 भामपि)
वेगेन (V4 वेगान् submetric) Ms पतगान्यप्रमानाश्च —^d
D2 घातयेयुर्, Ct पातयेयुर् (as in text) N V B D10 13
Ms नभ (V2 1 म) स्त (N2 V 1 स्थ) लान्, D3 विहंगमा (for
विहंगमान्)

ईदृशानां प्रवृत्तानि हरीणां कामरूपिणाम् ।

शतं शतसहस्राणि यूयपानां महात्मनाम् ।

वभूवुर्युयपश्रेष्ठा वीरांश्चाजनयन्हरीन् ॥ १७

17 T₁ missing up to प्रसूता (cf v l 16) —^a
 १६ °शालान्, D₁₃ °श्रीना (for ईदृशाना) A₁ V B D₁₀ 13
 तथा (N₁ V₁ B₁ 2 D₁₃ °द्वा) च (V₁ 3 4 B₁ य) ज्ञे (B₂
 D₁₀ 13 °चुर [sic]) N₂ तथा जहु (before corr °चु) र (sic),
 D₁ 3 7 संप्र (D₇ प्रत्य) मृत D₂ 5 11 12 °नां T₃ प्रभू° (for
 प्रसूतानि) —^b B₄ D₂ om (hapl), D₂ 7 °चारिणा D₄ 9
 T₃ वातरहमां (for कामरूपिणाम्) —M₂ damaged —^c
 —S₁ D₁ 3 5 7 11 °स्त्राणां (D₂ * *) (for -सहस्राणि) A₁ V B
 D₁₀ 13 अनेकानि सहस्राणि Cg k t as in text (for °) —^d
 B₄ om (hapl), M₄ महोत्तमां (for महामनाम्) —After
 17^{ad} S₁ Dt D₁ 3 11 12 13 S (M₄ after l 1 of 504*)
 Cg k t (all comm on l 2 only) ins

500* ईदृशं वीरिणं तान पुष्टिर्गुह्योपिणाम् ।
 त प्रधानेषु यूयु हरीणां हरियूयपा ।

[Except S₁ D₁ 13 all om l 1 —(l 2) M₂ fol
 damaged from first पु up to नां D₁ श्रेषु D₂ मुह्येषु
 (for यूयु)]

On the other hand S V B D₁₀ 13 ins

501* शतमादयसंरुषेयु वालरागां तरन्विनाम् ।

[No comm V₂ 3 संरुष्यन् (V₂ °नि) V₄ संरुष्यन्
 (submetric) (for -गन्विषु)]

अन्ये सञ्जयतः प्रस्थानुपतस्थुः सहस्रशः ।

अन्ये नानामिधाञ्छेलान्काननानि च भेजिरे ॥ १८

सर्वपुत्रं च सुग्रीवं शक्रपुत्रं च वालिनम् ।

आतरानुपतस्थुस्ते सर्व एव हरीश्वराः ॥ १९

19 M₄ reads 19 after 17^{ad} T₁ missing up to सुग्री
 (cf v l 18) —^a D₁₃ om च D₂ reads nominative
 in place of accusative G₁ 3 सुग्रीवं सर्वपुत्रं च (by transp)
 —^b V₁ इद्द (for दक्क) D₂ दादपुत्रश्च वालिन (sic)
 —After 19^{ad} D₁₃ ins 503* —M₂ missing from तस्थु
 up to ह in 19^{ad} on a damaged fol —^c S₁ N V B
 D₁ 3 5 7 10-13 च (for ते) —^d S₁ D₁ 3 5 7 11 13 तेनि सर्व
 (for सर्व एव) V₁ B₃ (marg) महीधरा Dt D₂ 8 सर्वे च
 हरियूयपा —After 19 S₁ D₁ 3 5 7 11 13 (D₁₃ 13 after
 20) ins

502* तथा दशभीषणपे स्वर्षमुपा
 निगम्य सर्वं विहितं शतत्रयु ।
 मनुष्यलोके प्रभुराज्ञसा ययौ
 दिशुर्दिशुर्दुसुतं सुरेश्वर ।

[(l 1) D₂ * * श्रीव —(l 2) D₂ 13 निगम्य S₁ D₁₃
 विहितं D₁₃ शतत्रु (sic) (for विहितं) D₂ 3 * * त्रु —(l 3)
 D₁ 3 7 °लोकं D₁₃ निगम्य (for मनुष्यलोके) D₂ [म]दार्
 (for ययौ) —(l 4) S₁ D₁₃ °दुः D₁ एरात्रु (for
 दशत्रुयुतं) D₁₃ रते° D₁₃ रतरे° (both sic) (for सुरेश्वर)]

On the other hand B₄ Dt D₂ 3 5 7 11 (after
 19^{ad}) 11 S Cg t ins

503* नन्त् नोन् हननममर्षाश्च हरिययपान ।

तैमेषवृन्दाचलतुल्यरूपै-
महाभलैरानुरूपथपलैः ।

बभूव भूर्भामशरीररूपैः
समावृता रामसहायहेतोः ॥ २०

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे षोडशः सर्गः ॥ १६ ॥

१७

निवृत्ते तु क्रतौ तस्मिन्हयमेधे महात्मनः ।
प्रतिगृह्य सुरा भागान्प्रतिजग्मुर्ध्यागतम् ॥ १
समाप्तदीक्षानियमः पत्नीगणतमन्वितः ।

प्रतिवेश पुरीं राजा सभृत्यबलगाहनः ॥ २
यथाहं पूजितास्तेन राज्ञा वै वृथिनीधराः ।
मुदिताः प्रययुर्देशान्प्रणम्य मुनिपुंगवम् ॥ ३

17

महाबले (for तांश्च सर्वान्) D₉ 'बाह्वल' (sic) (for महाबाहु
बली) M₉ repeats विपुल —(1 4) M₄ कृष्णान्नकिन्नरान् (for
the post half) —(1 5) G₄ 'वनाग्ने' —(1 6) D₉ विपुल
(sic) (for विविध) D₉ 'श्वग यन्त्रे' (by transp.)]

20 S₁ D₁ 3 5 7 12 om 20 —^a D₁₃ तन् (for तैर) V₂
'वृदानि च, B₄ 'तुल्याचल', D₁₃ 'वृदावलि' (for 'वृन्दाचल'
D₁ D₉ 9 कृष्टयलिभैर, D₁₄ S 'कृ' (M₄ 'कृग') कष्टवैर,
D₁₁ 'तुल्यविप्रैर' (for 'तुल्यकायैर') —^b D₁ D₉ 8 M₄ Ct
'यूपपाधिपै' (M₄ 'वलै'), D₁ 9 G₁ 'यूपपैश्च, T₃ 'यूपपाधिपै'
(for 'यूपपाधै') —^c V₂ lacuna for four letters after
व in वमृत् V₃ वमृत्तुद (for 'मृद') D₉ 'मृमिश्र', D₁₁
'भूर्भामिधरात्', D₁₃ 'भूमि स', Cr mg t as in text (for
'भूर्भामिधरीरूपै') —T₁ damaged for ^a —^d V₃ 'तौ'
D₁ समाप्त* (sic) (for समाप्ता) B₄ 'म' (for राम) M₄
गृहै (for हेतो) —After 20 D₁₃ ins 502*

Colophon Kanda name S₁ N₁ D₁ 10 om T₁
damaged V B D₁₁ भागि, D₉ 'मदोष्या' —Sarga name
S₁ N₁ 1 3 4 B₄ 4 D₁ 3 5 7 9 12 वानरोपति, V₂ देवन्म,
B₁ 'कृष्णान्नरोपति' D₁ वानराणि, D₁₃ *** 'त्यति' —
Sarga no (figures words or both) S₁ N₁ V₁ 4
D₉ 9 12 13 om. 1 2 B D₁ 11 20 V₂ 22 V₃ 19 D₁ 7 15
D₂ as in text D₈ S (except V₁ 4) सप्तदश, D₁
D₉ 11 M₄ 'सप्तद' 17 D₉ दिनाति 20 —After colo-
phon D₁₀ concludes with इति तुल्यबलैराह्वयानि प्रयतिष्ठ
वर्तनन्कथाप्रसंग समाप्त, G₁ 2 4 M₄ श्रीरामाय नमः, G₂
श्रीमते रामायणाय नम

S₁ N₁ V B D₁ 2 3 5 7 10 13 M₄ transp Sarga 16
and 514* the substitute passage of 52 lines for st
1-21 in this Sarga In addition to the subst 514*
S₁ D₁ 3 5 7 12 13 (1 1-4 are omitted in these MSS
except D₁₃) read (var) st 1 2^{ad}, 6 8^{ad} 9^{ad}
(D₁ om) and 10 also in their proper place after
transposing 10 after 2^{ad} and 8^{ad} after 9^{ad}

1 T₁ begins with श्रीरामचन्द्राय नम —^a S₁ D₁ 3 7
9 12 13 T₂ G₂ 4 M₁ 9 निवृत्ते, Cr mg k t निवृत्ते (as in text)
T₂ sup lin तु —^b M₃ वाणि, Cr k t as in text (for
हय) T₁ damaged for स्तन in महात्मन —^c D₁ तत्र
(for प्रति) D₁ D₉ 8 [अ]मरा (for सुरा) S₁ D₁ 3 5 7 12 13
भाग G₁ (before corr) 'रामान् गात्र' (sic) (for भागान्)

2 Cf v l 1 and 21 —^a D₉ पुर (for पुरी) —^b
T₁ missing from व in 2^d to त in 3^d on a damaged
fol D₉ 14 *n (for 'वाहन')

3 Cf v l 1 and 21 T₁ damaged up to मुदिता
in (cf v l 2) —^a G₁ 9 ययान् (for 'है') —^b D₁
D₉ 8 च (for वै) —After 3 D₁ D₉ 1 3 5 11 S (except
M₄) Cr k t ins

505* श्रीमन्नामचर्या तपा स्वपुरानि पुरातत ।
बलानि राज्ञा शुभ्राणि प्रदद्यानि चकारिरे ।
[Cr m do not comm —(1 1) T₁ missing (for
तेषां) D₁ D₉ 8 स्वयुराणि D₁ पु *य, T₂ मन (for पुरा)
M₄ ददा (for तप)]

गतेषु पृथिवीशेषु राजा दशरथः पुनः ।
 प्रविवेश पुरीं श्रीमान्पुरस्कृत्य द्विजोत्तमान् ॥ ४
 शान्तया प्रययौ सार्धमृष्यशृङ्गः सुपूजितः ।
 अन्वीयमानो राज्ञाथ सात्तुयात्रेण धीमता ॥ ५
 कौसल्याजनयद्रामं दिव्यलक्षणसंयुतम् ।
 विष्णोरर्धं महाभागं पुत्रमिदं कुनन्दनम् ॥ ६
 कौसल्या शुशुभे तेन पुत्रेणामितेजसा ।

यथा वरेण देवानामादित्विजपाणिना ॥ ७
 भरतो नाम कैकेय्यां जज्ञे सत्यपराक्रमः ।
 साक्षाद्विष्णोश्चतुर्भागः सर्वैः समुदितो गुणैः ॥ ८
 अथ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ सुमित्राजनयस्तुतौ ।
 वीरौ सर्पास्त्रकुशलौ विष्णोरर्धसमन्वितौ ॥ ९
 राज्ञः पुत्रा महात्मानश्चत्वारो जज्ञिरे पृथक् ।
 गुणवन्तोऽनुरूपाश्च रूपा प्रोष्ठपदोपमाः ॥ १०

4 Cf v l 1 and 21 —^a) T₃ गते तु —^b) D₁₄ T₁ 2
 G₄ M₁ 3 सदा, G₂ तथा (for पुन) —T₁ damaged from
 री in 4^a to दृ in 5^b —^c) G₂ M₁ पुर (for पुरी) —^d)
 D₁₄ T₂ 3 G₂ 4 M₁ 3 "सम, G₁ 3 द्विजप्रेम, Cg k t द्विजोत्तमान्
 (as in text)

5 Cf v l 1 and 21 T₁ damaged up to दृ in 5^b
 (cf v l 4) —^a) G₁ प्रददौ (for प्रययौ) —^c) Dt D₈ 8
 G₁ 3 M₂ अनुगम्यमानो राजा च (G₁ 3 वै, M₂ "थ) (hyper-
 metric) Ck अनुगम्यमान इत्युपश्रृङ्गविशेषणम् । अपरं
 गुरुलब्धव्यवैषम्यम् ।, Ct राजा दशरथेन अनुगम्यमान नृप्य
 शृङ्ग ॥ Ck —After 5 Dt D₈ 8-10 (D₁₀ om l 1-3 and
 ins l 4-7 after l 19 of 514*) 14 S (except M₄)
 Cr mg k t (Cr m comm on l 4-7 Ck comm on l
 1 and 4-7) ins

506* एव विसृज्य तान्सर्वात्राजा सपूर्णमानस ।
 उवास सुखितस्त्र पुनोत्पत्तिं विचिन्तयत् ।
 ततो यज्ञे समासे तु ऋतुर्वा पटु समल्युत् ।
 ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ ।
 नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोचसस्थेयु पञ्चसु । [5]
 प्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पवाविन्दुना सह ।
 प्रोचमाने जगन्नाथ सर्वलोकजनमस्कृतम् ।

[(1 x) T₃ सपृज्य (for विसृज्य) —(1 2) G₂ उवास
 (for उवास) D₈ विचिन्तयेत् —T₁ damaged from तु in l
 3 to नावमिके in l 4 —(1 3) D₈ 9 समास्यु (for समल्युत्)
 T₃ M₂ पटुमल्युत् (M₂ "गाव) —(1 4) M₂ तु (for च)
 D₈ दशमे (for द्वादशे) —(1 5) G₄ M₂ गोच (for लोच)
 —(1 7) G₁ प्रोचमाने D₈ लोचै (for लोच)]

6 Cf v l 1 and 21 —^a) D₄ वीर्ये, G₁ 3 M₁ 3 Cg
 सर्वे (for दिव्य) S₁ D₁ 3 5 7 12 13 राजनिबर (S₁ "रेव) ल
 (D₁₄ "लर metathesis) क्षण (S₁ "णै) —T₁ damaged
 from दृ in 6^a to मि in 7^b —^c) Dt "गा, D₈ **भा
 (for महामार्ग) S₁ D₁ 3 5 7 12 13 साक्षाद्विष्णोस्तदर्थे (S₁
 "र्थे) हि —^d) Dt D₈ 9 G₁ M₂ ऐश्वर्याकु (sic) G₂ Cg k
 ऐश्वर्याकु- (for इश्वर्याकु-) D₄ इश्वर्याकुलवर्द्धनं, T₃ सर्वे
 समुदित गुणै (cf 8^d) Ck ऐश्वर्याकुस्य दशरथस्य
 नन्दनम् । दार्णिडनायनेत्यादिना उकारलोपे Ck —After 6 Dt
 D₈ 8 M₂ ins

507* लोहितवाक् महाबाहु रक्तोष्ठ दुन्दुभिस्यनम् ।

[No comm M₂ रक्तस्य (for रक्तोष्ठ)]

8 Cf v l 1 and 21 —^a) T₃ कैकेय्या S₁ D₁ 3 5
 7 12 13 कैकेयी जनयामास भरत धर्मवत्सलं

9 Cf v l 1 and 21 —^b) M₂ सुपुत्रे (for [अ]
 जनयत्) S₁ D₁ 3 5 12 13 जनिता नौ सुमित्रया —T₁
 damaged from 9^a to मी in l 1 of 508* —^c) D₄ 9
 transp वीरौ and सर्वास्त्रकुशलौ —After 9 Dt D₄ 6 8 9 14
 S (except M₄) Cr mg k t ins

508* पुत्र्ये जातस्तु भरतो मीनलग्ने प्रसन्नयौ ।

सापे जातौ तु सौमित्रौ कुलीरेऽनुदिते रवौ ।

[(1 x) T₂ (before corr) पुत्र्य Dt जातस्य (sic) (for
 जातस्तु) —(1 2) D₈ (before corr as above) Ck सापे
 (for सापे) Dt D₈ G₂ जाते (sic) G₁ जातस्य (for जातौ)
 D₄ 9 M₂ च (for तु) G₁ सौमित्रि, G₄ सौमित्रे (sic) G₂ कुलीर
 (for कुलीरे)]

10 Cf v l 1 and 21 —^a) S₁ D₁ 3 5 7 12 13 तस्य,
 T₂ 2 राज, Cm g t as in text (for राज) —^b) S₁ Dt
 D₄ 6 8 13 अनुरूपम्, Cg k t as in text (for [5] अनुरूपम्)
 —^c) T₃ रूपा (for रूपा) S₁ D₁ 3 5 7 12 13 लोकपालोपमा
 (S₁ "मैर) गुणै, D₈ चत्वारो वासवोपमा Cm g k t as in
 text (for "मैर) —After 10, Dt D₄ 6 8 9 14 S (except M₄)
 Cg k t ins

509* जगु कलं च गन्धर्वा नन्दुमुद्रासरोरगा ।

देवदुन्दुभयो नेदु पुष्पवृष्टिश्च खाद्युता ।

उत्सवश्च महानासीदुद्रोप्यावा जनाकुल ।

रप्याश्च जनसवाधा मन्तनंतेकसकुल ।

गायत्रैश्च विराविष्णो वादकैश्च तथापरे । [5]

विरेजुर्विपुलास्त्र सवैरक्षसमन्विता ।

प्रदेयाश्च ददौ राजा सूतमागधमन्दिनाम् ।

ब्राह्मणेभ्यो ददौ वित्त गोपयानि सत्सदा ।

[(1 x) D₄ 9 "गुर्गपवपयो (for the prior half). T₁
 damaged from ते in l 1 to अ in l 3 —(1 2) Dt
 D₄ 8 Ct च तारावत्, M₂ पतत ह (for च तारावत्) —(L 3)
 T₃ तु (for च) —(1 4) G₂ नन्वक (sic) —(1 5) Dt

अतीत्यैकादशाहं तु नामकर्म तथाकरोत् ।
ज्येष्ठं रामं महात्मानं भरतं कैरूप्यसुतम् ॥ ११
सौमित्रिं लक्ष्मणमिति शत्रुघ्नमपरं तथा ।
वसिष्ठः परमप्रीतो नामानि कृतानांस्तदा ।
तेषां जन्मक्रियादीनि सर्वकर्माण्यकारयत् ॥ १२
तेषां केतुरिजं ज्येष्ठो रामो रतिकरः पितुः ।
वभूय भूयो भूतानां स्वयंभूरिजं संमतः ॥ १३
सर्वं वेदनिदः शूराः सर्वे लोकाहिते रताः ।
सर्वे ज्ञानोपसंपन्नाः सर्वे समुदिता गुणैः ॥ १४
तेषामपि महातेजा रामः सत्यपराक्रमः ।

वाल्यात्प्रभृति सुस्त्रिभ्यो लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धनः ॥ १५
रामस्य लोकरामस्य आतुज्येष्ठस्य नित्यशः ।
सर्वाग्रियकरस्तस्य रामस्यापि शरीरतः ॥ १६
लक्ष्मणो लक्ष्मिसंपन्नो बहिःप्राण इवापरः ।
न च तेन विना निद्रां लभते पुरुषोत्तमः ।
मृष्टमन्त्रमुपानीतमश्नाति न हि तं विना ॥ १७
यदा हि हयमारूढो मृगयां याति राघवः ।
तदैवं मृष्टतोऽभ्येति सधनुः परिपालयन् ॥ १८
भरतस्यापि शत्रुघ्नो लक्ष्मणान्नरजो हि सः ।
प्राणैः प्रियतरो नित्यं तस्य चासीत्तथा प्रियः ॥ १९

Ds ११ (before corr as above) Gs 2 M1 2 Cg k t गायकेश
(for गायकेश) Ds निनादिभ्यो (for विरादिभ्यो) Dt Ds
Cg k t बादकेश, Ds वादकेश (for वादकेश) —Ds 11 T1 2 G
M1-3 om 1 6 —(1 6) Ds reads तत्र in marg
—(1 7) Ds अदय (for प्रदेयाद्य) T3 तले (for रते) —(1
8) T1 damaged from ने up to तथा in 11⁵]

11 Cf v1 1 and 21 T1 missing up to तथा in 5
(cf v1 509*) —⁵ T3 सोहकर्म (sic) (for नामकर्म)
—^d Ms कैरूप्यी (for कैरूपी)

12 Cf v1 1 and 21 —^d Ds ११ सौमित्र, Gs Ck
सौमित्रि T1 2 Gs लक्ष्मण (for णम्) Ms ज्येष्ठ (for
हृति) Cg cites * as in text —⁵ Ds शत्रुघ्न * पर —^d
Dt Ds ११ T3 G1 3 Ms Ct कुरुते (for कृतवास्) Ds
(before corr) तथा (for तदा) —After 12^d Dt Ds १
११ S (except Ms) Cg k t ins

510* ब्राह्मणान्मोजयामास पौरजानपदानपि ।
अददद्ब्राह्मणानां च रत्नौघममितं बहु ।

[(1 2) Ds आददद्, Ds 11 T1 2 G1 3 Ms 3 अ (Ds १)
ददाद्, T3 स ददौ, Gs M1 अदाच्च Gs M1 तु (for च) Gs
रत्नम् (sic) (for रत्नौघम्) Dt Ds १ अल (for अमित) Ds
रत्नं बहुपुन तदा (for the post half)]

—^d Ds क्रम, Cr m k as in text (for क्रिया) —^d
T3 Ms Ct कार्याणि (for क्रमाणि)

13 Cf v1 1 and 21 —^d T2 (after corr sec
m) ज्येष्ठो (as in text) —⁵ M1 (before corr) प्रभु,
Cg k as in text (for पितु)

14 Cf v1 1 and 21 —^d Ds (after corr sec
m as in text) देव (for वेद) —⁵ Ds Gs सर्वे (for
सर्वे) Ds पौर (for लोक) T3 लोकाविहारदा, Cr g cite⁵
as in text —^d Ds T2 3 Ck *पपदाश्च, Ds तु ज्ञानत्, Gs
Ms ज्ञानोपसंपन्ना, Ct as in text (for ज्ञानोपसंपन्ना) —^d
T3 सर्वे (for सर्वे)

15 Cf v1 1 and 21 —After 15⁵ Dt Ds ११
S (except Ms) ins (Cg k t comm on 1 1 and 2)

511* इष्ट सर्वस्य लोकस्य शशाङ्क इव निमलः ।
गजस्कन्धेऽश्वाद्युष्टे च रथचर्यासु समतः ।
धनुर्वेदे च निरतः पितुः शुश्रूषणे रतः ।

[(1 1) Ms चान (for लोकस्य) Ds शुभाशु (for शशाङ्क)
Gs repeats from the post half of 1 1 up to स्वप्ने,
after 15^d —After 1 2 Ds ins शीनते रामानुजय नमः
—(1 3) Ds T3 repeat 1 3 after 17⁵ Ms damaged
for च in धनुर्वेदे Gs निरता (sic) Ds (second time) 14
T1 3 Gs 4 Ms 3 पितु (for पितु) T3 शिश्रूषणे, Gs शिश्रूषणे
(sic) (for शुश्रूषणे) Gs रतः (sic) (for रत)]
—^d Gs बाल्य, Cm g k as in text (for बाल्यात्)

16 Cf v1 1 and 21 —After 16^d, Gs repeats
from the post half of 1 1 to स्कन्धे in 1 2 of 511*
—^d Ds Cr सर्वे, Cm g k as in text (for सर्वे) —^d
Gs lacuna after श

17 Cf v1 1 and 21 —After 17⁵ Ds T3 repeat
1 3 of 511* —^d Ds (before corr) भवते यन्विना निद्रा
—^d T2 पुरुषोत्तम —^d T2 (after corr sec m)
अश्नाति (as in text)

18 Cf v1 1 and 21 Ms repeats 18 after 19
—^d Dt Ds ११ Ms 3 (second time) अथ, T2 Gs तथा,
Cg as in text (for तदा) Ms (second time) याति, Cg
as in text (for ऽभ्येति)

19 Cf v1 1 and 21 Ds transp 19 and 20 —⁵
D11 T1 3 G1 4 Ms 3 हित, T3 [अ]पि, Cg k t as in text
(for हि स) —^d Ds 11 प्रियतमो, Cm g तरो (as in
text) —^d T3 चापि (for चासीद्) Gs 4 तदा, Cg t as
in text (for तथा) —After 19 Ms repeats 18 and
thereafter ins

512* शत्रुघ्नमहित श्रीमान्पुरस्ताद्भरतोऽभवत् ।
नित्यं सर्वेऽनुरक्ताश्च पितरौ तोषयति ते ।

स चतुर्भिर्महाभागैः पुत्रैर्दशरथः प्रियैः ।
बभूव परमप्रीतो देवैरिव पितामहः ॥ २०

20 Cf v 1 x and 2x D₁ transp 19 and 20 —^d) T₂ s G₁ 4 M₃ दशरथ —^d) M₃ देवैर्नातायणो यथा, Ck as in text (for ^d)

21 ^a) D₄ सदा, T₁ s G₁ यथा, Cg as in text (for यदा) M₃ transp 21^d and 21^d —^b) D₉ 12 T₂ G₂ 4 M₁ सर्वै, Ct as in text (for सर्वै) —^c) D₄ 1 s G₁ 3 4 M₁—3 श्रीमत्, Cg as in text (for हीमन्त) —^d) D₁₄ (after corr sec m) सत्पत्न्या [as in text] D₄ 9 T₁ s G₂ M₃ दीर्घदर्शना (G₂ M₃ न [sic]), Cg as in text —After 21, Dt D₄ s s 12 S (except M₄) ins (Cg k comm on l 1-3 Ct on l 3)

513* तेषामेवप्रभावात् सर्वेषा दीप्ततेजसात् ।
पिता दशरथो हृष्टो ब्रह्मा लोकाधिपो यथा ।
ते चापि मनुजव्याघ्रा वैदिकव्ययने रता ।
पितृशृङ्गपरता घनुर्देव च तिष्ठता ।

[(1 x) G₁ तेषामेव च पुत्राणा (for the prior half) D₁₄ दीप्तं, G₁ दीर्घदर्शना (for दीर्घतेजसात्) —(1 2) G₂ तथा (for पिता) D₉ G₁ ब्रह्मा (for ब्रह्मा) —(1 3) G₂ मानुष (for मनुज) —(1 4) D₉ T₂ G₁ 3 पितु (for पितृ) T₂ परा (for रता), M₃ damaged for प in घनुर्देव]
—For 1-2x, S₁ N V B D₁—3 s 7 10-13 M₄ (for S₁ D₁—3 s 7 12 13 cf v 1 x) subst and read before Sarga 16 while D₉ ins after the passage no 3 in App 1

514* (1 ^a) समासेऽथ क्रतोः तस्मिन्वाजिमेधे यथाक्रमम् ।
(1 ^{cd}) हविर्भागानवाप्येष्टाजमुर्देवा यथागतम् ।
(3) { नृपयश्च महाभान प्रतिजगमु सुप्रसिता ।
राजानश्चैव ये तत्र क्रतावास्तस्मागत ।
(2 ^{ab}) समाप्तदीक्षाभित्यम् पक्षीणस्तस्मिन्वित । [5]
समृद्धमना भूत्वा राणा दशरथस्तदा ।
गतेषु पाथिषेत्रेषु सन्मुखबलवाद्न ।
(4 ^{cd}) प्रविशेता पुरीं श्रीमान्पुरस्थूल द्विजोत्तमान् ।
colophon

तत्र कालेन महता नृयशश्च सुप्रसित ।
(5 ^{ab}) दान्ताया प्रययौ साधै ब्राह्मणैश्च कृताममि । [10]
(5 ^{cd}) बन्दीयमातो राज्ञा वै सातुयात्रेण धीमता ।
राजापि धर्मण तदा रजसुसुनयै प्रजा ।
इक्ष्वाकुवंशज श्रीमान्दीक्षयाप्यायित श्रिया ।
यशसा रजयैर्लोकान्कृता मा सर्वधर्मवित् ।
धर्ममेव च सत्य च संपश्यन्निमित्ते फल्म् । [15]
तिष्ठो महिष्यस्तास्तस्य राजपैरभयपुरा ।
गुणवलोऽनुकृपाक्ष रूपेणाप्तरसं समा ।
कौशल्या सहस्री तत्र कैवेयी चाभवच्छुभा ।
सुमित्रा वामदेवस्य बभूव करणी सुता ।
तासा प्रजज्ञिरे पुत्राश्चत्वारोऽमिततेजस । [20]

ते यदा ज्ञानसंपन्नाः सर्वे समुदिता गुणैः ।
हीमन्तः कीर्तिमन्तश्च सर्वज्ञा दीर्घदर्शिनः ॥ २१

रामलक्ष्मणशृङ्गभरता देवहविण ।
तेषा ज्येष्ठ महागृह धीमन्प्रतिमीजसम् ।
(6 ^{ab}) यौदात्याजनयद्रामं विष्णुतुल्यपराक्रमम् ।
(7 ^{ab}) यौदात्या मुमुमे तेन पुत्रेणामिततेजसा ।
(7 ^{cd}) अदितिर्दशराजेन यथा बलनिघातिना । [25]
(9 ^{ab}) अथ लक्ष्मणस्तनुमौ सुमित्राजनयत्सुतौ ।
हृदमभी महीशलाहौ रामस्यानवमौ गुणै ।
(9 ^{cd}) सात्प्यास्ता चतुर्भांगौ विष्णो र्दक्षिणितानुमौ ।
चतुर्भांगस्य यस्याधर्मैरेक पादशोऽद्दात् ।
(8 ^{ab}) भरतो नाम वैवेच्या पुत्र सत्यपराक्रम । [30]
साक्षाद्विष्णोश्चतुर्भांग सर्वे समुदिता गुणै ।
ते दीप्तयशस सर्वे महेष्वासा नरर्षभा ।
अपूरयन्त ते कामान्विपुर्धर्मविशारदा ।
(20 ^{ab}) स चतुर्भिर्महाभागैः पुत्रैर्दशरथो वृत् । [35]
(20 ^{cd}) बभूव परमप्रीतो देवैरिव पितामह । [35]
(13 ^{ab}) तेषा पेतुरिव श्रेष्ठो रामो रत्नवर पितु ।
(13 ^{cd}) बभूव भूयो भूताना स्वयभूमिध धर्मत ।
(21 ^{ab}) ते यदा ज्ञानसंपन्ना तस्यैवा दीर्घदर्शिनः ।
(21 ^{cd}) सर्वैसाक्षात्पितुषो हीमन्त सत्यवाद्न ।
(14 ^{ab}) आसन्वेदविद् शूरा सर्वे शापायैर्कोविश । [40]
(14 ^{cd}) श्रीमन्त कृतनिघाश्च सर्वे समुदिता गुणै ।
(15 ^{ab}) तेषामनियथा लोके राम सत्यपराक्रम ।
(15 ^{cd}) बाल्याजभृति च द्विग्यो लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धन ।
(16 ^{ab}) सर्गभिरामं रूपेण भ्राता भ्रातरमग्रजम् ।
(16 ^{cd}) स च विप्रतरस्तस्य प्राणभ्योऽप्यरित्सूदन । [45]
(17 ^{ab}) लक्ष्मणो लक्ष्मणोपेतो रामस्य रिपुघातिन ।
(17 ^{cd}) शृष्टमन्नमुपासीतमभानि न हि त निना ।
प्रीतिर्न चास्य जायेत प्रीतिकारेणु त विना ।
(18 ^{ab}) यदा हयगुप्ताख्यो सुगया याति राघव ।
(18 ^{cd}) तदैव दृष्टतोऽप्येति सधनु पथि पालयन् । [50]
(19 ^{ab}) भरतस्यापि शत्रुघ्नो राघवस्येव लक्ष्मण ।
(19 ^{cd}) प्राणैर्नहुमतो नित्य तस्यापि स त्यागभवत् ।

[For ins see below S₁ D₁—3 s 7 9 12 om 1 1 4 —(1 x) D₁₉ समाप्ता V₄ B₄ D₁₃ तु D₁₁ च (for स) M₄ क्रमात् (for क्रतौ) V₁ वेवे (sic) (for वेवे) B₃ M₄ महाकृतौ B₄ महादृष्टे (for यथाक्रमम्) —(1 2) M₄ [अ]जगन् (for [इ]ष्टान्) D₁₁ हविर्भागेन सतुष्टा (for the prior half) D₁₄ देवा चत्तुर (by transp) N₂ चाप्यन (metathesis) B₁ क्रम (for यथागतम्) —(1 3) V₁ स (for च) N₂ प्रप्रजिता, M₄ यथाक्रम —(1 4) V₄ राजन (for राजानश्च) N₁ च च, V₃ ते च ये वेव, M₄ च प्रतिचत्तुर (for चैव ये तत्र) V₃ क्रतोरासन्, V₄ हृतागन् (sic) B₁ कतावर, M₄ ते यथागन् (for क्रतावास्तम्) —After 1 4 N V B D₁₀ 11 13 ins in a passage of 14 lines given in App I no 3 while S₁

D1-3 5 7 9 12 ins after 487* (I 15 28) —M4 om
 1 5 8 —(1 5) D13 ग (for ग) —(1 6) N1
 V1 D11 म प्रवृत्तना, N2 प्रवृत्तना D9 transp मृता and
 राग N2 V2 B1 D10 तया (for तदा) —D11 om
 1 7 8 —(1 7) V4 वेदेव्ये, D1-3 7 मानवे (for पार्थिवेदेव्ये)
 V4 नर (for नर) —(1 8) D13 आदिवेश V1 पुर (for
 पुरी) N2 V4 B3 D10 दिनान्, D1-3 7 9 द्वितीय —After
 1 8 (D11 after 1 6) all (except M4) read colophon
 [—Sarga name D11 om S1 D5 9 15 पादपोलति N V
 B1 3 D10 सन्म (N2 V1 B3 D10 om न) प्रगा, B4 D13 स
 (B4 सन्पुर) प्रवेश, D1-3 7 पादमन्त्र (D4 om म) विष्णो —
 Sarga no (figures words or both) S1 N1 V1 4 B1 4
 D11 om both N2 B2 3 D10 16 V2 18 V3 15 D1 12,
 D5 7 11 D2 द्वादश, D13 षोडश, D9 11 षोडश 16]—Be-
 fore 1 9 D13 ins ref स्रज व —(1 9) N1 V1 3 4 B
 D1-3 5 7 9 12 दानस्य महत (D11 ता) (for कालेन महता)
 N2 V2 प्रपूजित, V4 प्रतापवान्, B2 स पूजित, B4 समुद्रक D9
 स पूजित —V2 om 1 10 11, —(1 10) N1 V1 3 4 B
 D10 13 प्रवर्षी शाला (by transp) N1 नर्, N2 सव (for
 सार्ध) S1 कृतात्मि (for कृतात्मि) —For subst see
 below —M4 om 1 11 —(1 11) D2 अतीयाग्ने D11
 राग (for राजा) D13 च (for चै) V4 सन्नराग, D13 मानुषे
 द्वेण (for सानुवाग) —After 1 11 all the above MSS
 ins a passage of 127 lines given in App 1 (no 4)
 —N V B1 D10 M4 (for V1 and M4 cf v 1 1 124 and
 127 of App 1 no 4) om 1 12 15 B3 om 1
 12 14 B4 reads 1 12 15 in marg —(1 12) S1
 D5 12 13 स चचा (D13 वा) लेखन धर्म (for the prior half)
 D7 नु न्वे, D9 अनुवे D13 सुनय (sic) (for मुनवे) D2 प्रनाथ
 रत्नधर्म (for the post half) —(1 13) B3 4 D9
 सानशस्य, D1 सानश स D2 17 नश (D9 वा) विपुल (D2
 सान) (for 45 न श्रीमान्) D1 3 7 9 [आ] व्यावयव D2
 व्यावयव (for [आ] व्यावयव) B3 4 सीमा शोधन (B3 प्राचपर)
 द्विध (for the post half) —After 1 13 D11 reads 1
 127 of App 1 no 4 —D11 om 1 14 —(1 14) D2
 नन (for नन) B3 घनसखवि, B4 स्वर्नसखि —B2 reads
 1 15 in marg —(1 15) D9 दि रत्नार (for च सख च)
 B3 स 9, D9 पथवि (for स्पथन) D11 जीवित (for जीविते)
 —(1 16) S1 D1 11 12 राजो वै, B1 3 स्वत्र D1-3 7 9 12
 राजर्षे, M4 लक्ष्य (for ताम्रव) M4 तदा (for पुता) S1
 D1-3 7 9 11 12 बभ्रुस्तस्य घीत (for the post half) —
 (1 17) B4 शीतलो (for सुपथलो) D5 [अ] नुरु *श B1
 M4 [अ] नुरु सना (M4 सेयमा) S1 D1-3 7 9 12 चार्यो
 (D7 धौ) धरीय (D7 वा) मा (for the post half) —
 (1 18) V1 तस्य B4 वैव M4 सार्ध (for तव) D1-3 5 7 9
 11 12 स (D13 ता) हरी त (D11 वा) त्र (D9 त्व) वीश्या (by
 transp) V2 पुरा V2 तदा (for सुता) —(1 19) V2
 lacuna up to v, B3 राम, D11 चापि (for वामदेवस्य) B2

हर्षी, M4 बल्लभ (for बल्लभ) V2-4 B3 (m also) D1 M4
 हरी B2 चापवद, D11 रणी (for हरी) V1 lacuna V2 4
 B3 (m also) D11 M4 सुभा D5 (m) दवा (before corr
 as above) (for सुता) —After 1 19 D10 S1 D1 5 7 9 11 12
 506* —D2 3 om 1 20 21 —(1 20) S1 D1 5 7 9 11 12
 M4 ततोस्य V2 स V3 वैपा (for ताना प्र) S1 V3 D5 7 12
 विक्रमा, D11 13 सा M4 लेखनिकु (for स्मिन्नेतस) —D13
 om 1 21 24 —(1 21) S1 D1 5 7 9 सुहृत्ता D11 12 च
 महावत्ता (for देवहृत्ता) S1 D1 5 7 9 भल (D5 *) श्र महावत्ता
 (D5 लन) (for the post half) —B4 om from 1 22
 (partially) up to the prior half of 1 2 of 519* —
 (1 22) D5 श्रेष्ठ (for ज्येष्ठ) N V B1-3 D10 M4 जनने-
 शुण्ण्येष्ठ (V2 3 B3 [m also] श्रेष्ठ) (for the prior half)
 N V B1-3 D10 M4 पुत्र्य (for वीर्य) —B3 om 1 23 25
 —(1 23) D2 [अ] नन *द्राम —(1 24) M4 सा देवी (for
 वीश्या) D7 7 transp कीराय्या and शुण्ण्ये तेन D3 7 शुण्ण्ये
 पानिनीज्जा (for the post half) —(1 25) N V B1-3
 D10 13 M4 कपाधिपेन (N2 देवेन M4 वरेण) देवान् (= 7°
 in M4) (for the prior half) D1 वनिपादिना D5 7 9 11
 वनि (D11 वज्रिनि) पादिना N V B1-3 D10 13 M4 वनिविज्ञ
 पानिना (= 7°) (for the post half) —For ins see
 below —V1 reads 1 26-28 after 522* —(1 26) D7
 repeats 1 26 after 1 31 N V B1 2 4 D10 13 M4
 तथा B3 तदा (for अथ) D7 (both times) 9 11 चित्तौ
 तौ सुनिवा (= 9° as in S1) M4 सुनिवाधानायां (for
 the post half) —(1 27) V1-3 B2 इष्टमत्तौ M4 इष्टमत्तौ
 N B3 D10 महात्तानो V3 महेश्यामी (for महोत्तरी) S1
 D1-3 5 7 9 11 12 उत्तमो इष्टमत्तौ (D12 वा) नां (D2 3 7 9 11 ती)
 (for the prior half) N2 B3 D10 स्वावरतो V1 श्व दानवी
 V2 स्वावरतो (sic) V3 श्वानुवरी V4 श्वानुवरी B1 श्वानवरी
 B4 श्वानवरी (for रामशानवरी) D11 वरवीधमनश्चिने (for
 the post half) —(1 28) D1-3 7 9 तावतां तु (D2 2 7 च)
 B1 om (hapl) from चतुर्भां up to व in 521* M4
 चतुर्भां, V2 मरिचिताचतुर्भां D9 गुणी (for उली) —(1 29)
 D1-3 7 9 11 वैकृत D1 12 [अ] द्वादश D9 ददौ (for द्वादश)
 —For subst see below —(1 30) D2 ना * (for नाम)
 S1 D1 3 5 7 9 11 12 च्चे (for पुत्र) V3 शक्त D2 3 7 न (D2 प्र
 [sic] ल प्रविश्रव D10 नव D12 सास्य (for स्वराज्य)
 —For ins see below —M4 om 1 31 33 D9 om 31-
 32 N V B10 13 om 1 31 —(1 31) D2 सवे (for
 सवे) —After 1 31 D7 repeats 1 26 —(1 32) B3 प्र
 D13 उद् (for वे) N1 नेत्रम N2 B3 4 D10 मन्म (for
 वन्म) N2 स्रज D9 *वे (for सवे) D7 वरायिषा D5 12
 महप्रमा (sic) (for नरपना) —(1 33) V B1 D10 वायु-
 वले (V4 स्वत D10 ततमे ditto) D2 2 7 आर्यन्तु D2
 पूरण पिबु D1 वामास्त्रान् D9 वै कामान् (for वै वामान्)
 D2 3 7 सवे (D2 वा) (for पिबु) B3 D2 3 7 13 नरायणा
 (for विशाखा) —(1 34) N2 B2-4 D10 13 repeat while

—Thereafter Dn cont 517*

—After l 2 of 519*, B₃ ins

520* येन वै विनिहन्तव्यो रावणो राक्षसेश्वर ।

—For l 29 N̄ V B D₁₀ 13 M₄ subst, while S₁ (m) ins. after l 29

521* एक एव चतुर्भागादपरस्मादजायत ।

[B₁ om, B₄ एव च (for एक एव) B₄ अपरस्माद् (by ditto)]

—After l 30, N̄ V B D₁₀ 11 M₄ ins

522* धर्मात्मा च महात्मा च प्रत्यातवलविक्रम ।

[D₁₁ मुनील (for महात्मा) M₄ पैरुष (for विक्रम)]

—Then V₁ reads l 26-28, while M₄ cont

523* तेषामतिगुणै सर्वै श्रीमल्लिकार्जुने रत ।

—For l 37 N̄ V B D₁₀ 13 M₄ subst

524* स्वयभूरिव देवाना सर्वेषा समदर्शन ।

[M₄ भूला (for देवाना) B₄ M₄ दिय (for सम)]

—After l 41, S₁ D₁-3 5 7 9 12 13 (D₁₃ after 532*) ins

525* अथ राता यथाकाल राजवर्यमुता शुभा ।

सर्वेषामावहृद्गार्वास्त्यलक्षणवर्षस ।

जनक शत्रुरो राजा रामस्य भरतस्य च ।

कुशश्चसुताभ्या च सुमित्रानन्दनौ पत्नी ।

[(1 1) D₁₂ राजो (for राजा) D₂ 3 7 दरायो (for यथाकाल)

D₇ राजान्वय D₉ 12 राजवीर्य (D₁₂ वय) D₉ मता (for शुभा)

—(1 2) S₁ D₁ अभवद् D₁₂ भगवत् (sic) D₁₃ अक्रोद

(for भावहृद्) —(1 3) D₉ लक्षणस्य (for भरतस्य) —(1 4)

D₂ 3 7 वै (for च)]

—Thereafter D₁₃ reads l 42 of 514*

—After l 42 S₁ D₁ 3 5 7 9 12 13 ins

526* स्वयभूरिव भूला बभूव गुणवत्तर ।

तस्य भूयो विशेषेण मैथिली जनकामना ।

देवतामि समा रूपे सीता श्रीरिव रूपिणी ।

प्रिया तु सीता रामस्य दारा प्रियकृता इति ।

गुणै रूपगुणैश्चापि पुन प्रियतराभवत् ।

अतो तु तस्या दिगुण हृदये परिवर्तते ।

अनाख्यातमपि व्यक्तमावष्ट हृदय प्रियम् ।

[1 1, 2 3 4 5 and 6 7 = I 76 13^{ad}, 17, 15

(var) and 16 resp —(1 2) D₃ illeg for न in

विशेषेण —(1 3) D₃ स्वरूपे (hypermetric) —(1 4)

S₁ लोकस्य D₃ illeg for स्य in रामस्य D₃ अति D₇ अपि

D₁₃ इव (for इति) —(1 5) D₂ 3 7 [ए]व (for [अ]

वि) —(1 6) D₂ तस्माद् (for तस्या) D₉ पर्यवर्तते (for

परिवर्तते) —(1 7) D₁₃ अगि (for अपि) D₁ 3 7 आच्छे.

D₁-3 5 7 13 हृदय (for हृदय) D₇ प्रिया (for प्रिय)]

—Thereafter D₁₃ cont 531*.

—For l 46 N̄ V₁-3 B D₁₀ 13 M₄ subst

527* लक्ष्मीर्वाहृद्गमणो भ्रातुर्व्येष्टस्यारिघातिन ।

[V₂ D₁₃ भ्राता (for भ्रातुः) B₃ (m also) 4 -निपातिन, M₄ ति° (for विघातिन) V₂ भ्रातुर्व्येष्टस्य पाणिन (for the post half)]

—For l 48, N̄ 3 B₂ 3 D₁₀ 13 subst

528* न विन्दति रतिं चैव मुहुर्दमपि त विना ।

[B₂ चापि (for चैव) D₁₃ नाविन्द रतिं कापि (for the prior half)]

—For l 49-50 N̄ V B D₁₀ 13 M₄ subst

529* भृगुयामयवान्यत्र यान्त राममुनुवत् ।

लक्ष्मणोऽपि जगामैन धनुरादाय दृष्टव ।

[(1 1) V₂ 3 B₂ °च M₄ चापि न (for अथवा) M₄ चापि (for यान्त) —(1 2) D₁₃ M₄ [अ]नु (for एपि) V₄ [अ] ध M₄ [ए]व (for [ए]न) D₁₃ आधाय (for आदाय)]

—After l 51, B₃ ins

530* अनुक्तश्च भक्तश्च सतत नात्र सदाय ।

—After l 52 S₁ D₁-3 5 7 9 12 13 (after 526*) ins

531* स तु कैकयराजेन क्षेत्राच्च प्रेषितेह्यै ।

अहोपनीतो धर्मात्मा नीत स्वनगर प्रति ।

कृतदारा कृतास्त्राश्च सधना समुहद्वरा ।

शुश्रूपमाणा पितर वर्तन्ते स्म नरोत्तमा ।

रामश्च सीतया सार्धं विजहार बहूनुपसू ।

मनश्च तद्रत तस्य तस्या स हृदये स्थित ।

तथा स रात्रिपदरामिकामया

समीधिवानुत्तमराजकन्यया ।

अतीव राम शुश्रुभेऽभिरामया

विभु श्रिया शक इवामराधिप ।

[10]

colophon

[1 3 4 5 6 and 7 10 = I 76 12 14 and 18 resp.

D₁₃ om 1 1 2 —(1 1) D₁ कैकय D₇ 9 कैकेय (for

कैकय) D₁ 3 7 स D₉ [अ]नु (for च) —(1 2) S₁ D₁

य्यदो D₇ 9 अयो° (for अहोपनीतो) —(1 3) S₁ तत्तश्च (for

कृतास्त्राश्च) D₇ 9 सधना D₁ 8 (for स) D₇ 12 युगा (for

गणा) —(1 4) D₁-3 7 वर्तन्ते (D₁ ति°, D₆ 12 13 वर्तते ते

(D₁₂ *) D₆ व्यवर्तते D₁-3 7 9 अर्चमा —(1 5) D₁ रामस्य

(sic) D₂ 3 7 रामस्य D₉ राम स D₃ 3 वन्° (for बहून्)

—(1 6) D₃ तस्या (for तस्या) D₁ 3 7 9 तस्याश्च (D₂ °स्य)

हृदि सस्थित (D₉ स हृदि स्थित) (for the post half)

—(1 7) D₉ तथा (for तया) D₁ 3 7 9 नरोत्तिकाम (D₁

°स्य)या —(1 8) D₂ सनेयवानुत्तर (sic) D₂ 5 7 9 12 13 तमे°

(for समीधिवानुत्तम) D₃ om (hapl ?) 1 9 and 10 —

(1 9) D₃ निरामय (for भिरामया) —(1 10) D₁ 3 7 9

read शरीव पूर्णो दिवि दक्ष (D₂ 7 देव)कन्यया]

—Thereafter all the above MSS (except D₇ 10) read

an addl colophon [—Sarga name S₁ D₁ 3 5 9 13

अथ राजा दशरथस्तेषां दारक्रियां प्रति ।

चिन्तयामाम धर्मात्मा सोपाध्यायः सत्रान्वधः ॥ २२

पुत्रान्न (D1s adds दशरथ before पुत्र) —Sarga no (figures words or both) S1 D1s 13 om both D1 14 D1 पचदशम D1s both (19) while N V B D10 11 13 M1 ins after 1 52

532* ते ज्ञानयदास सर्वे परस्परहिते रता ।
तुष्टिमुत्पादयच्छु पितृनिनयवोदरे ।
तेषां धन इवालक्ष्यो रामो रतिकर पितु ।
प्रनामिरामश्च भृशं वभूव सङ्गैर्गुणै ।
गुणैरेवामिरामे स रञ्जयामास हि प्रजा । [5]
राम इत्यभिख्यात नाम तस्य तथा कृतम् ।
प्रतोपनयनादींश्च यथाशाल नराधिप ।
कारयामास सत्कारस्तेषां वेदगिधानत ।
ते हि चेदन्दि सर्वे सर्वशास्त्रार्थवेदिदा ।
हीनतश्च विनीताश्च सर्वे समुदिता गुणै । [10]
स्वगुणै रञ्जयामासु सर्वे तेऽर्पितमोहरा ।
पोरजानपदाश्रयं यच्छुन्यान्मनोपत ।
colophon

[(1 1) D1s वि (for ते) D1s हितेविण (for हिते रता) —(1 2) V1 षके V4 D1s यानाम B4 उ० (for उपाध्यायं चकु) V1 वचन (for विनय) —After 1 2 N2 B2 4 D10 13 M1 repeat (M1 reads) 1 34 of 514* —For ins see below —D11 om 1 3 4 —(1 3) Cf 12^{ab} V1 [अ]लक्ष्यो D1s [अ]लक्ष्यो (for [अ]लक्ष्यो) —For the post half of the post half of 1 36 of 514* V4 हित (for रत) N2 B3 (B3 m as above) 4 D10 पर (for पितु) —(1 4) V1 4 नान M1 रत्नय (for रामय) V1 4 सु (for च) V2 भूता (sic) (for घृता) —(1 5) V4 B1 D11 [अ] मिराम V1 4 च (for स) M1 गुणमिरत्नयैरुत्तिर् (for the prior half) M1 transp the post half of 1 5 and the post half of 1 6 (var) तदा for तदा V1 स V2 B2 3 ये (for हि) —(1 6) V1 M1 विरयानो V4 राखन (sic) (for विरयते) M1 transp the post half of 1 5 and the post half of 1 6 D1s तदा (for तदा) —After 1 6 M1 reads 1 9 10 —(1 8) B4 कारयामा M1 सर्वय (for तेषां) —After 1 8 V1 reads 1 12 —After 1 8 D1s reads 1 38-41 of 514* —D11 om 1 9 10 —For 1 9-10 cf 1 40-41 of 514* —(1 9) cf 1 40 of 514* V1 न (for ते) M1 वेदविदुष (for हि वेदवि) V4 शास्त्रविदारा D1s M1 सर्वे शास्त्रय (D1s गार्थय) (for the post half) —(1 10) cf 1 17 20^a for the post half V2 श्रीमतय (for हीनमतय) V1 म (for च) D1s विनेनार (for विनीताश्च) N2 V1 2 B2 4 D10 सर्वे (for सर्वे) M1 ते सर्वे मुदिता (for सर्वे समुदिता) B1 मुनि (sic) (for गुणै) —(1 11) V4 सु (for स) V1 सर्वेति V4 (with hiatus) अनि B3 वेति B3 व्यति D11 13 चापि (for सर्वे वेति) M1 मनो

तस्य चिन्तयमानस्य सत्रिमध्ये महात्मनः ।

अस्यागच्छन्महातेजा विश्रामितो महामुनिः ॥ २३

हे —After 1 11 V1 B4 read colophon For v1 see below —B4 om 1 12 V1 reads 1 12 after 1 8 —(1 12) N2 B1 3 D10 वभूव V1 बहूव (for वभूव) M1 अति (for नयान्) V1 2 B1 2 M1 विनेय (for जेयन)]

Thereafter D1s ins 525* while N V2-4 B1-3 D10 M1 read addl colophon [All except V4 read Sarga name 15 in D1s (cf v1 531*) —Sarga name V4 दशरथपुत्रनाम —Sarga no (figures words or both) N1 V1 4 B1 4 om both N2 B2 3 D10 19 V2 21 V3 18] —After the repetition of 1 34 of 514* following 1 2 of 532* N2 B4 4 D10 13 ins while M1 subst for 1 35 of 514*

533* लोकापलेखि धर्मो वृत्त साक्षात्प्रनापति ।
[B4 वृत्ते (for धर्मो) B2 साक्षादेव B4 वृत्त (for वृत्त साक्षात्)]
On the other hand D1s ins after 1 12 of 532*

534* स तैश्चतुर्भिर्गुणैश्चरित्ति [तो]
महापता शतुर्विनाशमोघ [ते] ।
सुतेनैवात्मा गुणवान्वयो तदा
वेदश्चतुर्भि कमगतनो यथा ।

—Thereafter D1s reads colophon as in B3 (cf v1 532*)

535* S1 N V B D1 3 5 7 10-13 M1 which transpose Sarga 16 (Vanarotpatti) and 514* (the substitute for st 121 of Sarga 17 Putrotpatti portion) commence fresh Sarga (Viśvāmitragamāna) from st 22

22 V1 om 22 27 —^b G4 दारक्रिया G पति (sic) (for प्रति) —For 22 B3 subst

535* भार्याश्चित्तयस्तेषां पुत्राणां तस्य धीमत ।
मनोगतायाश्चित्तया स्तुपार्थं सत्रिम सह ।
B3 cont S1 D1 3 5 7 9 11 13 ins after 22 536*

23 ^a S1 B3 D1 3 5 7 11 13 चितवत् कार्य (B3 कर्मा) Cm g as in text (for चितवत्मानस्य) —^b S1 D1 11 13 ऋषि, D9 (after corr) मिश्र Ck as in text (for सत्रिमध्ये) —^c D9 G4 M1 मन्मथगच्छ —^d D9 T2 M2 मुनि (for मुनि) —For 22 23 N V2-4 B1 2 4 D10 M1 subst S1 D1 3 5 7 9 11 13 ins after 22 (subst 1 8 for 23^{cd} reading it after 23^{ab}) V1 ins 1 1 and 2 only before 30 while B3 cont after 535*

536* ष्वत्सिमन्त्रेव कोटि नु विद्यामित्र इति श्रुत ।
महर्षिभ्ययाद्गृहमनोप्याया नराधिपम् ।
तस्य यज्ञो हि रक्षोस्मिस्तदा गिउउवे निव ।

स राज्ञो दर्शनाकाङ्क्षी द्वाराध्यक्षानुराच ह ।
शीघ्रमाख्यात मां प्राप्तं कौशिकं गाथिनः सुतम् ॥ २४
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य राजयेदम प्रदुद्रुधुः ।
संभ्रान्तमनसः सर्वे तेन वास्येन चोदिताः ॥ २५
ते गत्वा राजभवनं विश्रामित्रमृषिं तदा ।

मायावीर्यलोन्मत्तैर्ममकास्य पीतम् ।
रक्षार्थं तस्य यज्ञस्य द्रष्टुमैच्छस्य पार्थिवम् । [5]
न हि शत्रोस्त्यक्त्रेण समाप्तं स मुनिः प्रभुम् ।
सतस्तेषां विनामार्थमुद्यत स तपोनिधि ।
विश्रामित्रो महातेजा अयोध्यामभ्यगात्परीम् ।

[No com. — (1 x) Ds पारिमित्रे (hypermetric)
D1 लून, D2 M4 धुनि (for हुन) D3 ३७ विश्रामित्रे (D3
त्रेच [sic] D7 'त्रेच' मित्र (for the post half) — (1 2)
D1 अमयो (sic) D2 अभ्याद (for अभ्याद) D1-३ ७ त
(D3 ता) मयोध्या (for अयोध्या) — V1 om 1 3-7 — (1
3) S1 D1 ३ ३ ७ ११ [अ] य V2 D2 दु D11 [अ] वि (for हि)
D2 सदा (for मदा) B1 ५, D11 सितुये (sic) (for सितुये)
— (1 4) V2 B1 महा- (for माया) V3 -नयेनेर B1 -मने°,
D12 -नये° (for -नयेनेर) D3 द्य° (sic) D12 * (for
धर्ममास्य) — (1 5) V2 रक्षार्थं S1 D3 ११ इच्छामि (sic),
V2 इच्छेय B1 इच्छति B4 M4 इच्छस्य D3 इच्छय (sic)
D1 ऐच्छय * (for ऐच्छय) — (1 6) V2 स (for न) V2
च V4 om (for हि) S1 शब्दो हि B4 तवयो हि (for शक्नोति)
B2 विज्ञान (after corr in m as above) (for [अ] विज्ञेन)
S1 D3 ११ १२ स समाप्त (by transp) N V2 B1-3 D1 ३ ७ १०
तमाप्त स (D3 दु) D12 व सप्राप्त (for समाप्त स) S1 V4
D3 ११ १२ महाश्रुत (V4 'मुनि') — N1 V2-4 B1 om 1 7
— (1 7) M4 अनय (for ततय) S1 D3 ११ १२ विनाशाय (D12
with hiatus) N2 B3 (in also as above) D12 १३ वपार्थं
स B4 वपार्थं M4 विनाशार्थं (for विनाशार्थं) S1 जोषमय
(for उषत) N2 B3 4 D12 १३ च (for स) B4 (in also)
-न (for निधि) S1 D1 ३ ३ ७ ११ १२ तयो° (D11 'सा')
(for स तपोनिधि) — N1 V2 4 B1 om 1 8 — (1 8) B3 4
क्षयोध्या S1 अगम्य N2 B3 4 D1 १० १२ M4 अभ्याद]

24 V1 om 24 (cf v1 22) —⁶ N1 V2 3 B D10 १३
दृष्ट्वा द्वा स्थान्, V4 दृष्ट्वा च तान्, D3 'रा' स्थान् (for द्वाराध्य
क्षान्) S1 स (for ह) —⁷ T3 प्राप्य (for प्राप्त) —⁸
D3 कौशिक M4 * (for कौशिक) D4 ३ T3 M3 गाथि (M3
inf lin also 'य' नदन (for गाथिन सुतम्) — For
24^{ed}, N1 V2-4 B D10 १३ M4 subst

537* राज आवेदयध्व मा सप्राप्त गाथिन सुतम् ।

[V2 B1 2 D10 M4 राजे (with hiatus) D12 रक्षय (for
राज) V3 निवे° V4 D13 चावे° (for आवेदयध्व) V4 हि (for

प्राप्तमानेदयामासुर्नृपायेक्ष्वाक्ये तदा ॥ २६
तेषां तद्वचनं श्रुत्वा सपुत्रोधाः समाहितः ।
प्रत्युज्जगाम संहृष्टो ब्रह्माणमित्र वासनः ॥ २७
स दृष्ट्वा ज्वलितं दीप्त्या तापसं संशितप्रतम् ।
प्रहृष्टप्रदो राजा ततोऽर्घ्यमुपहारयत् ॥ २८

मां) V3 सु (for सं) B4 गाथिनेन M4 गाथि° (for गाथिन
सुतम्)]

25 V1 om 25 (cf v1 22) —¹ D3 14 T1 3
G2 4 M1-3 प्राप्तद् (for तस्य) S1 N V2 3 B D1-3 ३ ७
10-13 M4 तस्य तद् (N1 V2 3 B1 2 4 D12 14 M4 ते) वचनं
श्रुत्वा, V4 ते तस्य वचनं श्रुत्वा —² Dt D1 3 3 3 T3
M2 3 (inf lin as in text) राज्ञो, Ct as in text
(for राज) V2 प्रविश्य च (for प्रदुद्रुधु) — D2 om
25^{ed} — 26^{ed} —³ V4 'नयना, T2 संभ्रान्त', Ct 'मानस, Ct as
in text (for संभ्रान्तमनस) N2 V2-4 B (B4 as in text
also) D10 १३ शीघ्रं (for तर्हि) —⁴ S1 D1 ३ ३ ७ ११ मोदिता
(for चोदिता) N V2-4 B D10 १३ विश्रामित्रातुकीतेनाय्.
Ct as in text (for⁴)

26 V1 om 26 D2 om 26^{ed} (cf v1 22 and 25
respy) —¹ N1 V2-4 B D10 १३ M4 गत्वा च (for ते
गत्वा) V3 राजभवनं ते (hypermetric) —² S1 D1 ३-
३ ७ ११ १२ 'तत' D2 'था' N1 V2-4 B D10 १३ M4 महासुनिं
(for क्षयि तदा) —³ D1-३ ७ निवेदयामासुर् —⁴ D4
(before corr) 14 T Cg [दे] क्ष्व°, Ct as in text (for
[ह] क्ष्वार्थे) D3 (with hiatus) राज्ञे ऐक्ष्वाक्ये S1 D1-
३ ३ ७ ११ १२ वृषतेर्धर्म (D3 ७ 'वैर्षि') दक्षिण (D3 'शान') N1 V2-4
B D10 १३ M4 नृपाय दणता (V2 'ति') स्थिता — After 26
B3 ins

538* शीघ्रमागम्यता रानन्दानां द्विजस्य स । (sic)

27 V1 om 27 (cf v1 22) D1 reads 27 on margin
—¹ S1 D1-3 ३ ७ ११ १२ दक्षय (for तद्वचनं) S1 D1-3 ३
७ ११ १२ क्षोपाय्य सबाधय (for²) N1 V2-4 B D10 १३ M4
ततो राना दक्षय सामास सपुरोहित —³ S1 D3 ११ १२
नृपतिर, D1-2 (after corr) ७ तसुवि (for सहृष्टो) N1 V2-4
B D10 १३ M4 प्रभु (D12 अग्यु) धयी (V2 'द्रव्य') मुनि (B3
transp प्रत्युधयी and मुनिं) द्रष्टु —⁴ M4 ब्रह्मा ***

28¹ D3 हं (for सं) D4 T3 दृष्ट्वा प्र (for स दृष्ट्वा)
D3 ज्वलि, D4 [आ] ज्वलित (for ज्वलित) S1 D1-3 ३ ७
११ १२ लक्ष्म्य, Dt lacuna after द्वी (for द्वीप्या) —² S1
D1-3 ३ ७ ११ १२ भीत (D1 तत) स्वसुपिमागत M4 subst 1 १ of
539* with v1 [आ] ह for स, for 28^{ed} then om 28^{ed} —
34^{ed} —³ G2 3 M1 ३ ससुपाहारत्, Cr mg k t as in text
(for उपहारत्) D1 ३ ७ स्ववर्ध (D2 'वै') न्य (D1 ३ नि
[sic]) वेदयत्, M2 ततोऽर्घ्यमुपाहारत्

9
4
7

स राज्ञः प्रतिगृह्याध्यं शास्त्रद्वयेन कर्मणा ।
कुशलं चान्वयं चैव पर्यष्टच्छत्राधिपम् ॥ २९
वसिष्ठं च समागम्य कुशलं मुनिपुंगवः ।

29 M^a om 29 (cf v l 28) —^a Śī Dī 2 7 11 12
राज्ञश्च (Dī 1 °त्त्व) Ds 3 राज्ञ स (by transp) T₃
ततोश्च (sic) (for स राज्ञ) Dī-3 12 [अ] र्यं, Ds [अ] र्यं
(for [अ] र्यं) —^a Ds प्रिय (for [अ] र्यय) —^a Ds
सुधामिक, G² °प (for नराधिपम्)

इ- In V₁ some fol in the original MS might have
been either misplaced or injured and consequently
the sequence of the st (including the star passages
from 539* to 543*) is confused Their sequence
in the MS is 30 (om ^{ad}) 541* 31 542* (1 1)
543* 539* and 542* (1 2 5) —For 28 29 N V
(V₁ reads after 543*) B Dī 10 subst while Śī Dī
2 7 11 12 (Śī Ds 11 12 subst 1 2 for 28^{ad}) ins 1 2 3
after 28 and subst 1 4 for 29^{ad} reading it after
29^{ad}

539* त दृष्ट्वा स तदा राजा तपसा द्योतिप्रबन्धम् ।
प्रणम्य प्राञ्जलिं स्थित्वा चक्षे चाभिप्रेदक्षिणम् ।
स राज्ञा पवित्रस्तेन प्रत्युद्गम्य स्वयं तदा ।
कुशलानामयं प्रीत पप्रच्छ वसुधाधिपम् ।

[Śī Dī 3 7 11 12 om 1 1 —(1 1) N₂ V₁ B₃ (in
as above) °य Dī 10 °य (for दृष्ट्वा न) V₁ 2 4 B₃ [उ] द्योति
प्रम (V₁ °यु) B₃ °यु (for द्योतिप्रमन्) —(1 2) N₂
V₁ B₃ 2 4 Dī 10 प्रा (N₂ प्र [sic]) गम्य B₃ प्रणमेव (sic)
(for प्रणम्य) B₃ प्राञ्जलि Ds चाञ्जलि (for प्राञ्जलि) Śī Dī-
3 7 11 12 भूया B₃ कृत्वा (for स्थित्वा) V₃ Dī 10 वार्य B₃
D₂ 2 7 12 चापि Dī 11 त्वापि (for चापि) D₂ 2 7 °णा (for
प्रदक्षिणम्) —(1 3) N₂ V₃ D₂ 12 राजा B₃ मुनि (for
राज्ञा) V₃ राजा प्रपुत्रस्तेन (for the prior half) Dī 10
प्रत्युद्गम्य V₁ कृषि (for लय) Dī 10 तथा (for तदा) —(1 4)
V₂ स कुशलानामय (for कुशलानामय) V₁ cont 1 2 5 of
542*]

—After 29 Dt D₂ 1 2 3 4 S (except M₂) Cr m g k t
(Cr comm on 1 4 Cm l 3 and 4 Ct l 2 and 4) ins

540* पुरे कोशे जनपदे बान्धवेषु सुहृत्सु च ।
कुशलं कौशिको राज्ञ पर्यष्टच्छत्राधिमिक ।
अपि ते सनता सर्वं सामन्तरिपवो जिता ।
देव च मानुषं चैव कर्म ते साध्वनुष्ठितम् ।

[Ds om l 1-2 while Dī T₁ 2 G₂ M₂ om 1 2
—(1 2) M₂ पर्यष्ट* द (for पर्यष्टच्छत्र) —(1 3) Dt सर्व (for
सर्वे) Dt D₂ 1 T M₁-3 सामना Ds सनता (for सामन्त)
Ds (before corr) विजयो T₃ [अ] रिपवो (for रिपवो)
—(1 4) D₁ T₁ 3 G M₁ 2 चापि (for चैव) D₂ तद्
(for ते)]

ऋषींश्च तान्यथान्यायं महाभागानुवाच ह ॥ ३०
ते सर्वे हृष्टमनसस्तस्य राज्ञो निवेशनम् ।
निविशुः पूजितास्तत्र निपेदुश्च यथाहृतः ॥ ३१

30 M^a om 30 (cf v l 28) —Before 30 V₁ ins
1 1 2 of 536* (cf v l 22) —^a Śī Dī-3 7 11 12 Ct
वसिष्ठेन, N₂ V₃ 4 B₃ Dī 10 वसिष्ठश्च, Cm g k as in text
(for वसिष्ठ च) Śī Dī 12 सहगम्य (Ds °य), Cg k t as
in text (for समागम्य) —^a Śī N V B Dī 3 10 12 13
प्रहस (B₃ °सह metathesis) न्, D₂ 2 7 11 प्रहस्य (for
कुशलं) V₃ B₁ 2 °सत्तम (for मुनिपुंगव) Ctp
वसिष्ठश्च समागम्य प्रहसन्मुनिपुंगव । यथाहं पूजयित्वैनं पप्रच्छ
कुशलं तदा । इति कश्चिपाठ । तत्र पूर्वं मा स्पष्टमानोऽपि
मद्राजसन्निधावागत इति हास । Ctp —^a Dī T₁ 2 G₂ M₂ 3
थान्याय Ck as in text (for च तान्) —^a Dt D₂ 8
G₁ महाभाग (with hiatus) —For 30^{ad} Śī N V B
Dī 3 5 7 10-13 subst

541* यथाहं चार्चयित्वैनं पप्रच्छानामयं तत ।
ततो यथाहं मन्योन् पृथग्विधा समेत्य च ।

[(1 1) Śī Dī 2 5 13 यथार्थं (D₁ °यं D₂ °हि) D₃ 7 यथार्थं
(D₃ °हि) Dī 11 तयाहं (for यथाहं) Śī अर्चयित्वैनं N₂ B₃ D₂
7 10 पूजं V₄ °यमास D₅ 12 चा (Dī 12 चा) चैवनेन D₁ 13 अर्चं
(for चार्चयित्वैनं) —(1 2) Śī D₂ 7 12 13 यथार्थं Śī D₃ 12
अप्येन (for अन्योऽयं) V₁ प्रपृथत (for समेत्य च)]

31 M^a om 31 (cf v l 28) —^a N₂ V₂-4 B₁ 2
D₁ 12 सर्वे ते (by transp) T₃ °सा (for -मनसः) Śī V₁
Dī 3 5 7 11 12 सर्वे प्रहृष्टमनसो —^a G₂ M₂ तत्र (for तस्य)
Śī N V B Dī 3 5 7 10-13 M₃ राज्ञस्त्वय (by transp) V₁
निवेशने —^a Śī N V B Dī 3 5 7 10-13 सहिता राज्ञा (V₁
°स्त्वत्) Dt D₂ 9 °स्तेन G₁ 3 पूरुत° (sic) (for पूजितास्त्वत्)
—^a M₂ damaged from हु to य D₂ °कर्म (for
यथाहृतः) —After 31 Śī N V (V₁ l 2 5 after 539*)
B Dī 3 5 7 10-13 ins

542* उपविष्टाय तस्मै स विधामित्राय भीमते ।
वसिष्ठसदितो राज्ञा स्वयमेव महामना ।
पादमर्त्यं च गां चैव विधिना प्रत्यवेययत् ।
अर्चितं च ततो राजा मिथामित्रमभाषत ।
माञ्जलिं प्रणतो धारयमिदं प्रीतमना इव । [5]

[No comment —(1 1) Śī D₂ 12 ते तस्मै D₂ 9 विप्राय
(for तस्मै स) —For ins see below —Ds om (hapl)
from the post half of l 2 to the prior half of l 4
—(1 2) Śī Dī 3 5 7 11 12 महामना V₄ 4 D₁ 13 महामनं
(V₄ °त्मने D₁ °त्मना [sic]) (for महामना) —(1 3)
V₄ D₂ 12 अर्घं (for अर्घ्यं) V₁ om first च Śī D₂ 11 12
°तथा गां च, V₃ B₁ पापार्थं (B₁ °यं) चैव गां चैव (B₁ चापि)

अथ हृष्टमना राजा विश्वामित्रं महासुनिम् ।
उगाच परमोदारो हृष्टस्तमभिपूजयन् ॥ ३२
यथासृतस्य संप्राप्तिर्यथा वर्षमनूदके ।
यथा सदृशदारेषु पुत्रजन्माप्रजस्य च ।
प्रनष्टस्य यथा लाभो यथा हर्षो महोदये ।

(for the prior half) —(1 4) $\dot{S}i$ D1-3 5 7 11 12 अचैवित्ता
D10 °* (for अचिन्त च) V1 तदा (for ततो) —(1 5) $\dot{S}i$
B2 D1-3 5 7 11 12 प्रयतो (for प्रयतो) B1 D1 भूला (for
वक्ष्यम्) B1 D1 वाक्य B2 इति (for इति) $\dot{N}i$ D1 12 प्रीति°
(for प्रीतिमना) $\dot{S}i$ D1-3 5 7 11 12 तदा (for इव)]
—After 1 x, V1 ins

543* वसिष्ठ प्रष्टुवाचेद राजा (मा) नयन तदा ।

—Thereafter conf 539* (subst for 28-29)

32 $\dot{S}i$ $\dot{N}i$ V B D1-3 5 7 10-12 M4 om 32 (for M4
cf v1 28) —^b D2 युति (for सुनिम्) —^d M3 हृष्ट,
Cm g k t as in text (for हृष्ट) D2 अयपूजयन्

33 M4 om 33 (cf v1 28) —^a G4 सप्राप्ते —
D7 om (hapl) 33^d up to the prior half of 544*
D2 reads ^b after the prior half of 544* (read after
33^{ad}) and ^{ad} after its post half —^b $\dot{S}i$ D2 5 11 12
अवर्षक (D2 3 °ति, Cg k t as in text (for अनूदके)
 $\dot{N}i$ V B D1 10 13 यथाकाले (V1 2 °ला) मि (B3 वि) व (V2
D13 °स्यार्ण —^c) B1 यदा D2 यश्चा (sic) (for यथा)
D1-3 दारोभ्य, D2 11 12 नारीभ्य (D11 °बु) (for दारोषु)
 $\dot{S}i$ यथेष्टचनस्यकै —^d Dt repeats (erroneously)
न्याप्रज D2 °वत्ता (for पुत्रजन्म) $\dot{N}i$ V B D10 13 [अ]
मिकाक्षित, Dt D2 8 °वे, D4 9 14 S (except M4) प्रसृत्यते
(T2 °वे), D2 11 12 °हृ (for [अ]प्रसृत्य च) $\dot{S}i$ Cg
अप्रजस्य अपुत्रस्य । $\dot{S}i$ (Some southern MSS collated
but not included in the apparatus read as in
text) —After 33^{ad} $\dot{S}i$ D1-3 5 7 11 12 ins

544* यथेष्टितस्य संप्राप्तिरिष्टस्यागमनं यथा ।

[No comm D7 om the prior half (see above)
D1 5 तथा (for यथा) D2 reads the post half after
33^{ad} and the prior half after 33^{ad} For the post half
cf 33^d (as in $\dot{N}i$)]

—^a D13 प्राण° (sic) T3 प्रणष्ट*, M2 प्रप्रष्टस्य, Cm k
प्रण°, Cg t as in text (for प्रनष्टस्य) T3 यदा (for यथा)
V4 B1 D10 लाभम्, D1 3 7 लाभे, D2 T3 लोभो, Ck as in
text (for लाभो) —^c $\dot{S}i$ D1-3 5 7 12 अवदत्तं (D1 2 7
°दत्तो, D2 °द्वारो [sic]) (for यथा हर्षो) $\dot{S}i$ Dt D1 3 5 8-
11 12 T1 G1 5 M13 Ck t महोदये T3 महोदये, Cg as in
text (for महोदये) $\dot{N}i$ V B D10 13 हृष्ट (V1 मित्र, D2

तथैवागमनं मन्ये स्वागतं ते महासुने ॥ ३३
कं च ते परमं कामं करोमि किमु हर्षितः ।

पात्रभूतोऽमि मे मित्र दिष्टया प्राप्तोऽसि धार्मिक ।
अथ मे सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम् ॥ ३४

[5] हृष्ट) स्वागमनं यथा —After 33^{ad}, $\dot{S}i$ D1-3 (D2 1 x
only) 5 7 11 12 ins

545* हर्षानन्दकर मेऽद्य तथाभ्यागमनं तव ।
स्वमे यथार्थलाभं स्यान्मृतस्य पुनरागम ।
प्रहलोकनिवासश्च कस्य न प्रीतिमावहेद् ।

[No comment —(1 x) $\dot{S}i$ यथानक्षेप D2 कर्ष° (sic)
D2 11 12 °नक्षेप (for हर्षानन्दकर) D2 एव (for मेऽद्य)
D2 3 7 तव (for तथा) $\dot{S}i$ D2 11 12 [अ]भ्यागमनम् D2 3 7
सुने (for तव) —(1 2) D11 स्वमे (for स्वप्न) D1 transp
स्वप्नं and यथा D2 यथा* —(for यथार्थं) D2 7 यथा महार्थ-
लाभं स्यात् (for the prior half) D11 स्वर्गात्तस्य च जीवित
(for the post half) —(1 3) D2 प्रहलो* (for प्रहलोक)
D1 3 7 यद्यच D11 न कस्य (by transp) (for कस्य न)]

—Thereafter D1 reads 1 x of 551* with v1 नृणां
for मम, and repeats it there —For 33^{ad}, $\dot{S}i$ D1-3 5
7 11 12 subst

546* सुने तवागमनं हृष्टस्तलमेतद्वर्षमि ते ।

[D2 सवम् (for सवम्) D2 11 एव (for एतद्) D2 13
प्रतीत्यद्, D11 प्रती* ते]

—Thereafter $\dot{S}i$ reads 550*

On the other hand $\dot{N}i$ V B D10 13 subst for 33^{ad}

547* परमानन्दक मन्ये तथाच तव दर्शनम् ।

[D13 मन्ना (for परमा) V1 च (for [अ]त्त)]

—Thereafter B2 reads 1 x of 551*

34 M4 om 34^{ad} (cf v1 28) —^a D2 8 Ck किं
च, M2 * Cm g t as in text (for क च) —^b T1 °त,
M2 °ता (sic), M3 °पत, Cm as in text (for हर्षित)
—For 34^{ad} $\dot{S}i$ D1-3 7 subst.

548* कश्च ते परमं कामं विष्टये करवाण्यहम् ।

while $\dot{N}i$ V B D10 13 subst

549* कस्तोऽमिलपित कामं किं करोमि प्रसाधि माम् ।

On the other hand D2 11 13 subst while $\dot{S}i$ ins.
after 546*

550* यथाभिलषितं कार्यं किं ते हुर्मोऽभिकान्क्षितम् ।

[D11 यच्च (for यथा)]

—G1 5 transp 34^{ad} and 34^{ad} —^a V2 4 पात्री° (V4
°त्रे), M2 प्राप्त°, Cg k t as in text (for पात्रभूतो) D2 9

पूर्वं राजर्षिश्चन्द्रेण तपसा द्योतितप्रभः ।

ब्रह्मर्षित्वमनुप्राप्तः पूज्योऽसि बहुधा मया ॥ ३५

तदद्भुतमिदं निप्र पत्रिं परमं मम ।

शुभक्षेत्रगतत्वाहं तव संदर्शनात्प्रभो ॥ ३६

Ts हि (for ५सि) Ṝ नो, Gs ते (for मे) —^d Dt Ds ६ मान्दः Ms धार्मिक (for धार्मिक) Ṝ Ṝ N V B Ds 10-13 विस्त्वा (V₄ °म)भ्याग (V₄ °*)तोतिवि (D₁₃ स्थिति [sic]) D₁-३ ७ प्राप्त परमधार्मिक —S₁ Ṝ N V B D₁ ३ ५ ७ 10-13 Ms read 34^{ef} (including 551*, 552*) after 555* —^f D₂ तु, T₂ sup lin sec m (for च) —After 34 Ṝ B₂ (1 x only after 547*) D₁ ३ ५ ७ 11 12 ins

551* ब्रह्माजलमिषेकेण यथा प्रीतिर्भवेन्मम ।

तथा तवागमे निप्र परमप्रीतिमानहम् ।

[No comm D₂ reads 1 x after 545*, repeating it here —(1 2) D₁ स्य D₂ यथा (for तथा) D₁₁ परम् (for परम्) D₁ °माह D₂ °वानह D₃ °मा *ह (for प्रीतिमानहम्)] while Ṝ N V B D₁₀ 13 Ms ins after 34 (for Ṝ D₁ etc. cf v 1 36)

552* त्वामिहाभ्यागत इष्ट्वा प्रतिपूज्य प्रणम्य च ।

[No comm V₄ [अ]भ्यागत (for [अ]भ्यागत) B₁ प्रतिपूज्य च (hypermetric) D₁₃ प्रतिपूज्याभिपूज्य च (for the post half)]

On the other hand Dt Ds ६ T₂ Ms ins

553* यस्माद्विभ्रेन्द्रमद्राक्ष सुप्रभाता निरा मम ।

[No comm]

35 Ms om 35^{ab} —^a D₁-३ ७ पूज्यो, Ds पूर्व (for पूर्व) —For 35^{ab} Ṝ Ṝ N V B Ds 10-13 subst

554* एतं हि राजर्षिकुलस्तपोभिर्नियमैस्त्वया ।

[V₂ D₁₃ त्व राजर्षिकुलं तप्तम् (for the prior half) V₃ नियमैस् (for नियमैस्)]

—^a Ṝ B₂ B₃ (m also as in text) D₁ ७ महर्षिः, D₁₄ °स्त्वम् (for ब्रह्मर्षि वम्) Ms °प्राप्य (for अनुप्राप्त) —^d D₁ ३ ७ बहुशो, G₁ ३ तपसा (for बहुधा) Ms मम (for मया) Ṝ N V B Ds 10-13 तस्मात्पूज्य (B₂ °यिच)तमोसि (V₃ °हि) मे —After 35 Ṝ Ṝ N V B D₁ ३ ५ ७ 10 13 Ms ins

555* साक्षादिव ब्रह्मणे मे तवाभ्यागमनं सवम् ।

पूतोऽस्यनुगृहीतश्च तवाभ्यागमनान्मुने ।

[No comm —(1 x) V₂ ततोपि D₁₃ साक्षादि * (for साक्षादिव) V₄ ब्रह्मणे * Ms ब्रह्मणैस्त्व (for ब्रह्मणे मे) B₂ तवापां Ds °ममनात् D₁₃ त *भ्या* Ms अवापां (for तवाभ्यागमन) D₁ महत् D₂ ह्य D₁₁ प्रभो (for सवम्) —(1 2) V₄ पूतोपि B₄ प्रीतोस्मि D₁₀ योस्मि (for पूतोऽस्मि)

ब्रूहि यत्प्रार्थितं तुभ्यं कार्यमागमनं प्रति ।

इच्छाम्यनुगृहीतोऽहं त्वदर्थपरिदृश्ये ॥ ३७

कार्यस्य न निमर्शं च गन्तुमर्हसि कौशिक ।

कर्ता चाहमशेषेण दैवतं हि भगान्मम ॥ ३८

S₁ D₁-३ ७ 11 Ms [अ]स्मि (for च) D₁₀ [अ]पि Ms [अ]पि (for [अ]पि-) D₁₁ तवाभ्या * चाम्मुने (sic) (for the post half)]

—Thereafter, Ṝ Ṝ N V B D₁-३ ५ ७ 10-13 Ms read 34^{ef} (cf v 1 34)

36 Ṝ N V B D₁₀ 13 om 36 —^a Dt Ds ६ अहम्, D₇ हम्, Cr m g k t as in text (for इहं) D₁ पूतत्तदद्भुतं (for तदद्भुतमिदं) Ṝ D₁ ३ ५ ७ 11 12 Ms Cg ब्रह्मन् (for विप्र) —^b Ms त्वन्मैत्र (for पवित्र) D₁ Cr पावनं, Ct as in text (for परमं) D₁₁ शुभ, T₂ भुवि, Cr as in text (for मम) Cg as in text (for °) —D₃ om (hapl) from तत्त्वाह in ° up to ग in the prior half of 552* —^c Ds कुरक्षेत्र Ms शुभे क्षेत्रे (for शुभक्षेत्र) —^d Ṝ D₁ ३ ५ ७ 11 12 Ms संदर्शनेन वै (D₂ च, Ms ह) —After 36 Ṝ D₁ ३ ५ ७ ११ 13 ins 552* —Thereafter D₁ cont

556* धन्योऽस्मि वृत्कृलोऽस्मि भाग्यवानस्मि सत्तम ।

37 —^a T₂ य, Cm g t as in text (for यत्) —^b Dt प्रति in marg —^c Dt Ds T₂ G₁ M₂ त्वदर्थं, Cm g as in text (for त्वदर्थं) —For 37 Ṝ Ṝ N V B D₁-३ ५ ७-13 subst

557* यत्कार्यं येन पार्थेन प्राप्नोऽसि मुनिपुत्र ।

कृतमित्येव तदिदि मान्योऽसि सुपुत्र मम ।

[(1 x) Ṝ तेन (for येन) V₂ B₄ D₁₃ पार्थेन (B₄ °च) (for पार्थेन) N₂ V₄ B₃ ४ पुत्रः B₂ D₁₃ सत्तम (for पुत्रः) —(1 2) Ṝ कृत्वम् (for कृतम्) V₃ सपयेतकृत्त विदि (for the prior half) Ṝ D₁ ३ ५ ७ ११ 12 मा-योसि हि V₂ B₁ °सि त्व D₃ मा मा-योसि D₁₃ मा-योस्त्वम् (sic) (for मा-योसि तु)]

38 —^a T₂ च (for न) Ṝ Ṝ N V B D₁ ३ ५ ७ ११ 12 13 स्त्वं (V₂ ४ सु) कार्यं हि (Ṝ D₁ ३ ५ ७ ११ 12 कार्येण D₁ ९ कार्यस्व) निदृश्य (S₁ D₂ 12 °सर्गं, D₂ ७ °मर्दं, D₃ °मर् *) त्व D₁₁ स्वकार्यचिधिष्यित्व (sic) T₂ न मा कार्यविमर्शेन —^b Ṝ D₁-३ ५ ७ ११ 12 Ms Ck कर्तुम् Ṝ N V B D₁₀ 11 13 वक्तुम् (for गन्तुम्) B₄ कौशिक Dt Ds ६ सुवत्, D₂ शौलक (for कौशिक) —After 38^{ab} Ṝ Ṝ N V B D₁ ३ ५ १३ ins

558* भगवन्नास्त्वदेव मे त्वामय प्रति विद्यते ।

[No comm V₁ °देवम् D₁₃ नायम् (for नास्त्वदेव) V₁ ते B₄ च (for मे) —D₂ om from the post half up to 38° V₂-४ B₄ D₁₃ प्रतिपद्य (D₁₃ °देव)ने (V₂ °वै V₄ °हि) (for प्रति विद्यते) Ṝ D₁ ३ ५ ११ 12 त्व प्रति हि° (for the post. half)]

इति हृदयसुखं निशम्य वाक्यं
श्रुत्सुखमात्मवत्ता विनीतमुक्तम् ।

प्रथितगुणयशा गुणैर्निशिष्टः
परमक्रपिः परमं जगाम हर्षम् ॥ ३९

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे सप्तदशः सर्गः ॥ १७ ॥

१८

तच्छ्रुत्वा राजर्षिहस्य वाक्यमद्भुतमित्तरम् ।
हृष्टरोमा महातेजा निश्वाभिरोज्ज्वलभापत ॥ १
सदृशं राजशार्दूल तनैतद्भुमि नान्यतः ।

—S₁ १ V B D₅ 10-13 om 38°-39 D₉ om 38° D₁₄
om 38° except कर्ता —^d) D₂ 37 भागवन्मम (for हि
भगवन्मम) —After 38 Dt D₄ 6 8, 14 S ms

559* मम चायमनुप्राप्तो महानभ्युदयो द्विज ।
तवागमनं कृत्वा धर्मश्चानुत्तमो मम ।

[For ms see below —(1 2) G₄ M₄ [आ]गमन
Dt D₄ 8 द्विज G₄ M₄ [उ]त्तम (M₄ 'म') M₂ damaged
(for मम)]

—After 1 1 D₁ ms

560* अश्वमेधफलं जन्म जीवितं च सुवीरितम् ।

[cf 34⁴⁷]

39 *) N V B D₁₀ 12 इदं (N₁ 'इदं ditto') m(V₁ 2
D₉ 'मि)तिमयुर, Cg k t as in text (for इति हृदयसुख)
D₁₄ नि * * * (for निशम्य वाक्य) S₁ D₁ 3 5 7 11 12 इति
हृदयमनोनुग (D₇ 'नुगत, D₁₂ 'गत) तदा वै —^b) V चाभि
मुक्तम् (for श्रुत्सुखम्) V₃ D₈ आभवतो (D₈ 'ता), Cg t as
in text (for 'वता) V₃ B₄ D₁₀ युक्त (for उत्तरम्) S₁
D₁ 3 5 7 11 1* नरापिलाभिहित (D₅ '*) वचो निशम्य —^c) V₂
गुणयशो S₁ D₁ 3 5 7 9 11 13 ततो महर्षिर् (D₁₁ शुभमा
[sic]) N V B D₁₀ M₄ गुणै (B₃ तनै [sic]) निर्निशिष्टे (B₃
m also निर्निशिष्ट), Cm g k t as in text (for गुणैर्निशिष्ट)
—^d) N V B D₁₀ 15 मुनिरुपम (V₄ 'श्र), T₁ * M₂ 3
परमर्षि (submetnc) M₄ 'मुनि Cg k t as in text (for
परमर्षि) V₄ B₄ पर (for परम) S₁ D₁ 3 5 7 9 11
मुदितमना नि (D₈ 'मि)जगदा त (D₇ ततो hypermetnc)
नरेन्द्र —D₁₃ reads 39 twice (second time as in S₁)

Colophon —Aunda name N₂ D₁₀ 13 om. V (V₁
before रामायणे) B D₁₁ आदि, D₁ 3 अयोध्या —Sarga
name S₁ N V B D₁ 3 5 7 9 13 विद्यामित्रा (N₂ B₃ D₁₀ 11
'त्र, D₁ बालचरित्रे विद्यामित्राया D₂ 7 कौशिक्या D₃
'विद्यामित्र, D₈ 'श्रतया) गमनं (D₁ 5 13 'न) —Sarga no

महानिशप्रवृत्तस्य वसिष्ठस्यपदेशिनः ॥ २
यत्तु मे हृद्गतं वाक्यं तस्य कार्यस्य निश्चयम् ।
कुरुष्व राजशार्दूल भन सत्यप्रतिश्रयः ॥ ३

(figures words or both) S₁ N₁ V₁ 2 B₁ 4 D₃ 5 12
om both N₂ B₃ 3 D₉ 11 21 V₂ 23 V₃ 20 D₁ 7 16
S अष्टादश, Dt D₄ 6 8 14 अष्टादश 18 D₁₃ काडे मित्रा नाम.
(dash indicates lacuna) —After colophon G₁ 2 4
conclude with श्रीरामाय नम, G₃ श्रीमते रामानुजाय नम,
M₂ श्री म

18

1 T₂ begins with श्रीरामचन्द्राय नम —^a) M₂ त
(for तच) S₁ D₁ 12 नर (for राजर्षिहस्य) —^b) D₃
महद् (for वाक्यम्) D₁₂ वाक्य * युक्त D₁ 3 G₃ विक्रम,
D₇ 'द्वीप, Cm g k t as in text (for निशम्य) —^c) D₁₃
दष्ट, G₂ 'रोम, Cg as in text (for हृष्टरोमा) V₁ 'राज
(for महातेजा) S₁ repeats 1⁵⁰ in place of 3⁵⁰ —^d)
N₂ स्व, M₂ * * पत (for इत्यभापत)

for S₁ N V B D₁₀ 13 substitute a parallel version
for st 2 20 which is given at the end of 20

2 ^b) Dt D₂ 3 5 8 Ct तनैव, D₈ तनैवत्, D₁₃ तव तद्,
M₄ तनैवत् (for तनैवत्) Cg Cm एतत्तनैव सदृशम्। Cl
तनैवत्तुत्तरस्य वचन सदृशम्। Cg D₁ मान्यत D₄ Cg मान्यया
Cm k t as in text (for मान्यत) —^c) D₈ 'कृत्,
Cm k t as in text (for महानर) T₂ प्रसूतश्च —^d) S₁
D₁ 3 5 7 11 13 वसिष्ठवदवर्णिन (D₈ 'नी [sic]) T₃ वसिष्ठ
स्वोपदेशिन, Ck as in text.

3 Cf v l 2 and 20 —^a) D₁ च (for तु) D₁₁ हृदय
(for हृद्गत) S₁ D₁ 12 T₂ Cg कार्य, Ck as in text (for
वाक्य) S₁ om 3⁵⁰ repeating 1⁵⁰ in its place —^b)
D₄ M₄ वाक्यस्य, T₃ कार्यश्च; Cm k t as in text (for
कार्यस्य) D₁ 3 5 7 11 13 तस्य कार्य (D₁₃ 13 वाक्य तस्य)
निनिश्चय —^c) D₁ 2 7 कुरु लब्, Cg k t as in text (for
कुरुष्व) D₃ 12 नर, D₁₄ (after corr sec. m as in text)
नर, T₄ M₄ युद् (for राजशार्दूल) —^d) Cg k 'ग्रनिप्रव

अहं नियममातिष्ठे सिद्धयर्थं पुरुषर्षभ ।
 तस्य निम्नकरी द्वौ तु राक्षसौ कामरूपिणौ ॥ ४
 व्रते मे बहुशस्त्रीणं समास्यां राक्षसाग्निमौ ।
 मारीचश्च सुबाहुश्च वीर्यवन्तौ सुशिक्षितौ ।
 तौ मांसरुधिरौघेण वेदिं तामभ्यवर्षताम् ॥ ५
 अवधूते तथाभूते तस्मिन्निग्रमनिश्चये ।
 कृतश्रमो निरुत्साहस्तस्माद्देशदापाक्रमे ॥ ६
 न च मे क्रोधमुत्सृष्टं बुद्धिर्भनति पार्थिव ।

(as in text) Śi D1 ३३ ११ १२ धर्मं समनुपालय (D1 °यन्, D11 °यं) Ct as in text (for °)

4 Cf v l 2 and 20 —^a Śi Ds 11 12 हियश्च, Cg k t as in text (for नियमम्) Śi Ds 11 12 M३ आतिष्ठ, Cm g k t as in text (for आतिष्ठे) —^b Dt Ds ३ विष्यर्थ, D1 तिष्यर्थ, Cg t as in text (for सिद्धयर्थ) Ds ३ ७ कचिक्काल न्युपेतम् —After 4^{ab}, D11 ins 1 6 of 566* —^c D11 त * (for तस्य) Śi D1-३ ६ ११ १२ मे, M३ om (for तु) —^d T2 reads sup lin sec m सौ नि राक्षसौ M३ कामरूपि*

5 Cf v l 2 and 20 Śi Ds 12 om 5^{ab} G३ M1 read 5^{ab} after 5^{af} M३ transp 5^{ab} and 5^{ad} —^a Dt Ds ३ T1 २ Ct °तु, G1 २ व्रत (sic) मे, G३ व्रत मे, M३ व्रतेन, Ck as in text (for व्रते मे) T1 G३ द्वाग्निं, G३ तीर्णे, Cg k t as in text (for चीर्णे) D1-३ ७ बहुशो वितते (Ds ७ विदिते, D३ विदिते)तस्मिन् —^b D1-३ ७ ममास्ता, D३ समासी G३ ३ समासी, M३ समाते, Ck t as in text (for समाहवा) D1-३ ७ M३ °धर्मौ, D३ °धुमौ (for राक्षसाग्निमौ) —For 5^{ab}, D11 subst 1 7 of 566* and reads before 4^{ad} D1-३ ७ ११ १२ G३ M३ om T1 reads inf lin 5^{ad} —^d Śi Ds 11 १२ तस्मिन्तौ राक्षसा (Śi पुरुषा)धर्मौ, D३ ६ T३ यश्चिन्नकरी तु तौ (D३ with hiatus उभौ) —After 5^{ad}, T३ M३ ins

567* पौलस्त्यराक्षसेन्द्रेण सदृशौ घोररूपिणौ ।
 [No comment —M३ राक्षसौ (for पौलस्त्य)]
 —^a D३ स (for तौ) —^f D३ T३ वेदिकाय, D३ वेदीं ताम् (for वेदिं ताम्) —For 5^{af} Śi D1-३ ६ ११ १२ subst

562* तावभ्यविरता वेदिं मासेन रुधिरण च ।
 [Śi तावेव° D३ तावेव° D३ ७ ताववा° (for तावभ्यविरतां) D11 वेदि° (for वेदि)]

6 Cf v l 2 and 20 —^a Śi अयं, D३ अवधूते (sic) (for अवधूते) D1 °पते (for तथाभूते) —^b D७ नि * म (for नियम) Śi D1 ३ ३ १२ विरते, Cm g t as in text Ck निश्चिते (for निश्चये) —For 6^{ab}, D11 subst 1 9 of 566* —^c D1-३ ७ व्यर्थं, M३ हतु (for हत) G३ निरुत्साह, M३ निराहारस्व (for निरसाहस्व) —^d Śi

तथाभूता हि सा चर्या न शापस्तत्र मुच्यते ॥ ७

स्वपुत्रं राजशार्दूल रामं सत्यपराक्रमम् ।
 कारुण्यक्षधरं शूरं ज्येष्ठं मे दातुमर्हसि ॥ ८

शक्तो ह्येष मया गुप्तो दिव्येन स्वेन तेजसा ।
 राक्षसा ये विकर्तारस्तेषामपि विनाशने ॥ ९

श्रेयश्चास्मै प्रदास्यामि बहुरूपं न संशयः ।

त्रयाणामपि लोकानां येन ख्यातिं गमिष्यति ॥ १०

Ds ३ ६ ११ १२ ह (Śi ड)पा (D३ before corr यदा)क्रम, D1 ३ °क्रमा (D३ °म)ह, T३ G३ ६ M३ अप°, Cm g k t as in text (for अपाक्रमे)

7 Cf v l 2 and 20 —^a D1३ तव (for न च) D11 G३ M३ °सुखसुख, M३ क्रो * * स्खसु, Ck t as in text (for क्रोधमुत्सृष्ट) Śi न च क्रोध समुत्सृष्ट, D३ न चक्राम तदुत्सृष्टं —^b D७ पार्थिवं, M३ reads inf lin sec m (for पार्थिव) —^c M३ दीक्षा (for चर्या) Śi D1-३ ६ ११ १२ तथाभूत हि तस्मै, Cg k as in text (for °) —^d D३ reads 7^d in marg Śi Ds 11 १२ कोप (D३ °*)स् (for शापस्) Śi D1-३ ६ ११ १२ तस्य (D३ °न as in text) विधत्ते, Cg as in text (for तत्र मुच्यते) Cg Ck तत्र तस्या चर्यायां शापे न विमुच्यते न विक्रियते । Cg —After 7 Śi D1-३ ६ ११ १२ ins 12 14 of 566*

8 Cf v l 2 and 20 —^a D1 सुपुत्र, D३ सपुत्र, D11 स्व पुत्र, Cg k t as in text (for स्वपुत्र) —^c Śi Dt Ds ३ ६ १२ वीर (for दूर) —^d D३ प्रेष्ट (for ज्येष्ठ) Śi D1-३ ६ ११ १२ त्वं, D1३ त (for मे)

9 Cf v l 2 and 20 —^a D३ १२ दानो°, D३ दानोति (for दानो हि) D३ [प]क्ष (for [प]क्ष) —^b D३ दैतेन° (sic) D३ दिव्येनास्त्रेण, M३ सहजेन च (for दिव्येन स्वेन) —^c Śi D1 ३ ११ १२ रक्षसं, D३ ६ ७ राक्षसा (for राक्षसा) Śi अवि°, D1 २ ६ १२ सेपि°, D३ ७ सेपि नेतारस्व, D1३ M३ ये प°, G३ ३ M३ विप्रकर्तारो, all comm as in text (for ये विकर्तारस्) —^d G३ M३ ये तेषां च, Cm k t as in text (for तेषामपि) Śi D1-३ ६ ११ १२ विनिग्रहे (Śi °ह), Ck t as in text (for विनाशने)

10 Cf v l 2 and 20 —^a D1 gloss (m) अक्षदान लक्षण श्रेय (for श्रेयश्च) Śi D1 ३ ११ १२ प्रव (D1३ °य)क्यामि G३ M३ प्रयच्छामि, Ct as in text (for प्रदास्यामि) —^b M३ * * रूप (for बहुरूप) Śi असदाय, D1-३ ६ ११ १२ अमत्सर, D७ अमत्सद (sic) (for न सदाय) —^c Śi Ds 1२ °रामो, D1 °रामा (marg येनासतो also) D३ ३ ३ येनाज्येयो, D७ जेतान्ज्येयो, D1३ तेना * *, G३ M३ एव°, M३ °ह्यातो, Cg t as in text (for येन ख्यातिं) Śi D1-३ ६ ११ १२ M३ भविष्यति (for गमिष्यति)

न च तौ राममासाद्य शक्तौ स्यातुं कथंचन ।
न च तौ राघवादन्यो हन्तुमुत्सहते पुनान् ॥ ११
वीर्योत्सिक्तौ हि तौ पापौ कालपाशप्रशं गतौ ।
रामस्य राजशार्दूल न पर्याप्तौ महात्मनः ॥ १२
न च पुनकृतं स्नेहं कर्तुमर्हसि पार्थिव ।
अहं ते प्रतिजानामि हतौ तौ निद्धि राक्षसौ ॥ १३
अहं वेमि महात्मानं रामं सत्यपराक्रमम् ।

वसिष्ठोऽपि महातेजा ये चेमे तपसि स्थिताः ॥ १४
यदि ते धर्मलामं च यशश्च परमं भुवि ।
स्थिरमिच्छसि राजेन्द्र रामं मे दातुमर्हसि ॥ १५
यद्यभ्यनुज्ञां काकुत्स्थ ददते तव मन्त्रिणः ।
वसिष्ठप्रमुखाः सर्वे ततो रामं विसर्जय ॥ १६
अभिप्रेतमसंस्कृतात्मजं दातुमर्हसि ।
दशरात्रं हि यज्ञस्य रामं राजीवलोचनम् ॥ १७

11 Cf v l 2 and 20 —^a Śi D: 3 5 7 9 12 ते (for तौ) T₂ (sup. lin sec m also as in text) चेमौ (for च तौ) D₇ राम * साद्य —^b Śi D: 3 5 7 9 11 12 M₄ स्यातु शक्ता (D₁₁ n M₄ °की by transp) (for शक्तौ स्यातु) —^c M₄ om n G₂ M₂ हि (for च) Śi D: 12 तेपा च रामाभ्याम् वै, D₁-3 7 तेपा च (D₂ वै) नान्य काकुत्स्थाद् (D₂ °त्स्य) D₁₁ तयोश्च रामाभ्याम् वै —^d Śi D: 1 m without brackets gloss हतु चैतान् — 3 5 7 9 11 12 योदुम्, Ck as in text (for हन्तुम्)

12 Cf v l 2 and 20 —^a Cm g वीर्योत्सिक्तौ (as in text) T₂ पादौ (for पापौ) Śi D: 3 5 7 9 12 वीर्योत्सिक्ता हि ते (Śi स्ते, D₂ तौ [sic]) पापा —^b Śi D: 3 5 7 9 11 12 कालचरोपमा (Śi D: 12 °दत्तम, D₁ °तेपयौ, D₁₁ °दत्तमौ) रणे (Śi त्रेये), M₄ कला कोटिमपि प्रभो, Cg as in text (for^c) —^c G₁ 3 नर°, M₄ लोकुरामस्य (for राजशार्दूल) —^d T₂ पर्याप्तौ (for पर्याप्तौ) D₁ रणानिरे (for महात्मन) Śi D: 3 5 7 9 12 न सहिष्यति (D₁ °व्यत) सायकान् D₂ सहिष्यति च सायकान् D₁₁ सहिष्यते न सायकान्

13 Cf v l 2 and 20 —^a D₇ [अ]त्र (for च) Śi D₁ D₂ G₁ M₂ Ck t गते, Cm g as in text (for पुनकृतम्) —^b G₁ °महंय, M₄ क * * हंसि (for कर्तुमर्हसि) — After 13^{ad} M₄ ins

563* दशरात्रस्तु यज्ञश्च तस्मिन्नामेण राक्षसौ ।
हृत्स्वसौ विप्रकर्तारौ मम यज्ञस्य वैरिणौ ।

[No comm]

—^a Cm g t हतौ (as in text) D₂ missing तौ Śi D: 11 12 हतौ च राक्षसाभ्याम्, D₁ 3 7 हतानाम्निद्धि राक्षसात्

14 Cf v l 2 and 20 —^a Śi D: 1 3 5 7 G₁ M₄ वेद, D₂ ते वेद (hypermetnc) Cm g k as in text (for वैरि) T₂ महामहा (ditto) व्यान —^b Śi D: 3 5 7 11 12 M₄ राजीवलोचन, Cg as in text (for सत्यपराक्रमम्) —^c Śi D: 3 5 7 9 11 12 °द्वश्च, D₂ °द्वश्च, D₄ °हो हि, Cg t as in text (for वसिष्ठोऽपि) D₁₂ महोत्सेवा (sic) (for महातेजा) —^d Śi D: 3 5 7 9 11 12 [अ] ज्ये, Ck [ह] ह, T₂ से, Cg as in text (for [ह] मे) D₂ ह * * ति (for तपसि) D₁

(marg) योय यद्वा एव च also = the post half of l 28 of 566* — For 14^{ad}, M₄ subst 1 28 of 566*.

15 Cf v l 2 and 20 —^a Śi D: 3 5 7 9 11 12 स्तोत्र (D₁ °प) रा, D₄ T₂ G₁ 3 M₄ °रामश्च, Cg k t as in text (for °राम) D₁ D₂ 9 तु (for च) —^b Śi D: 3 5 12 मनश्च (for यशश्च) Śi D: 3 5 7 9 11 मन (Śi D: 9 ददा) [मि स्थित, D₁₂ पदयति स्थितु] (sic) (for परम भुवि) —^c Śi D: 3 5 7 9 11 12 M₄ om 15^{ad} —^d D₄ T₂ (after corr inf lin sec m as in text) G₁-3 Cg स्थितम् Ck स्थितम्, Ct as in text (for स्थिरम्) M₄ हृत्स्वसि, Ck t as in text (for हृत्स्वसि)

16 Cf v l 2 and 20 Śi D: 3 5 7 9 11 1- M₄ transp 16 and 17 M₄ reads 16 after 18 D₁ (sec m) reads 16^{ad}-17^{ad} in marg —^a D₂ 7 ददा (for ददि) D₄ Cg अनुज्ञा, T₂ (sup. lin sec m also as in text) G₂ 3 M₄ 3 Ck [अ]भ्यनुज्ञा, Ct as in text (for [अ]भ्यनुज्ञा) D₂ repeats क्वा wrongly T₂ 3 राजेन्द्र (for काकुत्स्थ) —^b Śi D: 5 11 12 ददति, D₂ ददाति, M₂ कुर्वत, Cm as in text (for ददते) D₂ ददति ते च राघव (sic) — For 16^{ad} M₄ subst 1 33 of 566* —^c M₄ राम (for सर्वे) —^d D₄ राघव मे (for ततो राम) M₄ ततो मे दातुमर्हसि

17 Cf v l 2 and 20 Śi D: 3 5 7 9 11 12 M₄ transp 16 and 17 D₁₂ reads 17^{ad} in marg —^a Śi D: 11 12 महाबाहुम्, D₁ (gloss in marg अनुयात्र विना एकाकिनमिवर्थ) — 3 9 (after corr as in text) G₁ असयुक्तम् (D₂ °क्ता) all comm as in text (for असयुक्तम्) D₂ अभिप्रेतसमायुक्तम् —^b D₂ स्वात्मारं, D₂ आह्वानम् (sic) T₂ राम मे, Cg as in text (for आत्मन) Śi D: 3 5 7 9 11 12 मोक्षम्, Ck as in text (for दातुम्) —^c Śi D: 3 5 7 9 11 12 °रात्रेण, M₂ द * * र°, Ck k as in text (for दशरात्र दि) D₁ 3 7 यज्ञ स. Cg k t as in text (for यज्ञस्य) —^d Śi D: 3 5 7 9 11 12 यस्मिन् (Śi D: 12 विप्रान्, D₁₁ विप्रौ) रामेण राक्षसा (D₁₁ °वै) — For 17^{ad} M₄ subst 1 31 and cont i 32 of 566* — After 17 Śi D: 3 5 7 9 11 12 ins 1 2 of 563* with all nominal duals changed into plurals (except in D₁₁) and Śi D: 11 12 राजशार्दूल (for विप्रकर्तारौ)

नात्येति कालो यज्ञस्य यथायं मम राघव ।
 तथा कुरूप भद्रं ते मा च शोके मनः कृथाः ॥ १८
 इत्येवमुक्त्वा धर्मात्मा धर्मार्थसहितं वचः ।
 निरराम महतेजा विश्वामित्रो महामुनिः ॥ १९

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे अष्टादशः सर्गः ॥ १८ ॥

18 Cf v1 2 and 20 —^a) D₂ नान्येति, D₉ अत्येति (for नान्येति) D₂ काल (sic) (for कालो) S₁ D₁ ३ ५ ९ १३ M₄ कालज्ञ, D₇ कालस्य, D₁₁ कालज्ञै (sic) Cg kt as in text (for यज्ञस्य) —^b) S₁ D₅ १३ यथा मे D₁ यथार्थ (sic), Cg kt as in text (for यथाय) S₁ D₅ १३ बहु (for मम) M₄ यथा यज्ञस्य मेनप —^c) D₂ कु+व्व, M₄ [अ]बु कुरु (for कुरुव्व) G₁ ३ राजेन्द्र (for भद्रं ते) —^d) D₄ [अ]ति (for च) —After १८ M₂ reads १६

19 Cf v1 2 and 20 —^a) D₂ धर्मात्म (for धर्मार्थ) —^b) M₂ विर** (for विरराम) —^c) Dt D₈ ९ मति, G₁ ३ M₂ वृषि (for महामुनि) —After १९ Dt D₃ ९ ९ १४ S Cg kt ins

564* स त निरास्य राजेन्द्रो विश्वामित्रवच शुभम् ।
 शोकेन महताविष्टश्चाल च मुमोह च ।
 लब्धसन्नततोत्थाय व्यपीदत भयान्वित ।

[Ck comm on l 3 only —(1) Ck does not comment on l 1 १ T₃ सर्व (for स त) —(1 2) D₄ ९ १४ S Cg शोकमभ्यागमस्वीज (for the prior half) D₄ ९ १४ S Cg om from the post half of l 2 up to the prior half of l 3 —(1 3) D₉ T₂ विपीदत (T₂ ०दत) T₃ न्यपीन Cg (as above) (for व्यपीदत) M₂ विपलद च तत्तन (for the post half)]

20 —^a) D₄ ९ ९ (changing the metre) इति स (for इति) —^b) G₁ तदि*च (for तदीय) D₁ ३ २ M₂ स तथा (D₁ तमयो, M₂ च तथा) विमुद्युवान् —^c) Dt D₁ ४ ६ ९ T₂ ९ G₁ M₂ [अ]नयन् (for [अ]गमन्) D₁ ४ G₁ M₂ महासा Cr mgp as in text (for महद्) Dt D₁ ४ ९ ११ T₂ महान् (D₁ ततो) महासा, D₁ ७ ९ ९ मना, D₂ ३ ९ T₂ G₁ M₂ महामना (for भय महद्) M₂ (after corr inf lin sec m as in M₂) नरपतिरभवमहा महामा —^d) D₁ ३ ७ ९ मत्र all comm as in text (for व्यथितमना) D₂ प्र*चाल (for प्रचचाल) D₂ ७ १४ यामनात्, D₁ १४ T₂ (before corr sec m as in text) ३ G₁ दासनात्, Ck t as in text (for चामनात्) Cg अतीव अत्यर्थं । व्यथितमना । महाद् कुलेन महान् । विचचाल मुमुह्ययं । महर्दिनि पाठे महद्वयं व्यथितमना अतीव विदारणमिति सवन्ध*, Ct महाहरपति सार्वभौम इति यावत् । महासा महावुद्धि व्यथित मना मुमुह्ययित अवयव । अवस्थातुमनाय दासनात्प्रचचाल च — १ ॥ Cg —For 20 D₁ subst 1 37-38 of 566* —For 20 S₁ D₂ १३ subst, while D₁ १३ ins after 1 40 of 566*

इति हृदयमनोपिदारणं
 मुनिवचनं तदतीनं शुश्रुवान् ।
 नरपतिरगमद्भयं मह-
 द्बुध्यथितमनाः प्रचचाल चासनात् ॥ २०

565* इत्येवमुक्त्वा निरते मुनीन्द्रे
 जगाद् भूयो रघुवशकेतु ।
 वक्ष स्थल दन्तमयूखजाले
 हारावलीरस्यमिव प्रकुर्वन् ।
 [(1 3) S₁ D₅ १२ वक्षस्थले —(1 4) S₁ D₅ हारावली]
 —For 20 N V B D₁₀ १३ subst
 566* (2^{ab}) सद्य राजाशार्दूल त्वयैतद्वायममीरितम् ।
 (2^{cd}) सौरं वशोऽभिजातेन वसिष्ठवशवर्तिना ।
 (3^{ab}) यस्तु मेऽभिमत कामस्त्वत्त प्राप्तुमभीक्षित ।
 (3^{cd}) यदुद्दिश्यागतश्चास्मि कार्यं तच्छूयतामिति ।
 (4^{ab}) यत्सिद्धिकर किञ्चिदासित्यतोऽस्मि महद्भक्तम् । [5]
 न क्रोद्धस्य मया तत्र कस्यचिद्वि भूषते ।
 (5^{ab}) व्रते चाप्यसमाप्ते मे यज्ञमी राक्षसाधमी ।
 (5^{cd}) वेदीमन्येय तस्मा कश्चिरेणाम्यवर्षताम् ।
 (6^{ab}) अभिभूतोऽसकृत्तान्ध्यामह नियमयत्रित ।
 (6^{cd}) अपकम्पाश्रमात्तस्माद्द्रष्टुं त्वामभ्युपगताम् । [10]
 (7^{ab}) न हि मे क्रोधमुख्यं क्षम तत्र कथंचन ।
 (7^{cd}) ईदृशी यज्ञदीक्षासी मम तस्मिन्महाव्रतौ ।
 त्वप्रसादाद्विक्रेन प्रापयेय क्रियाफलम् ।
 आतुमर्हसि भागार्तं शरणागिनमागतम् ।
 (8^{ab}) ततोस्तु प्रतियेदार राम सत्यपराक्रमम् । [15]
 दातुमर्हसि मे तत्र रक्षार्थमभितौनयम् ।
 (9^{ab}) दातो क्षेप मया शुभ सहजैव च तेनसा ।
 (9^{cd}) निदन्तुं समरक्षणी स्रष्टारमपि रक्षसाम् ।
 (10^{ab}) विषे चास्मि प्रयच्छामि तेषोवलयमनविते ।
 (10^{cd}) प्रयाणामपि लोकाणा येनाज्ञेयो भविष्यति । [20]
 (11^{ab}) न च तौ राममात्राव दात्री स्थानु नराज्ञौ ।
 (11^{cd}) हन्तु चैतौ न वाहु स्यादस्य उ सहते पुमात् ।
 (12^{ab}) तौ तु वीर्यवर्त्मन्तौ कालकल्यो दुरासदौ ।
 (12^{cd}) रामाखलनिर्दोषौ दास्येयेते हतौ युधि ।
 (13^{ab}) भौने चैव स्वया काया राम प्राणि वधेचन । [25]
 (13^{cd}) अहं ते प्रतिजानामि पतिनीं जिद्धि राक्षसी ।
 (14^{ab}) वेद्यमोघय राममहं सत्यपराक्रमम् ।
 (14^{cd}) वसिष्ठश्चापि वेदैर्न योऽयं यदल एव च ।
 (15^{ab}) यदि धर्मयतोलाभमभिगच्छसि पाथिव ।
 (15^{cd}) ततो राम प्रयच्छेः यदि वा धर्मापाति ने । [30]
 (17^{cd}) दत्ताश्रय मे वशो भविता यत्र राक्षसौ ।
 हन्यस्यौ तत्र पुष्टेण रामेणाद्भुतकर्मणा ।
 (16^{ab}) यदि मेऽप्यनुनामि न गुरुरस्त नराधिप ।
 (16^{cd}) वसिष्ठमनुगा सर्वं ततो रामे विनये ।
 (18^{ab}) नाप्यति काल कालज्ञ यथा यज्ञस्य मेऽनय । [35]

(18^{ed}) तथाऽपि कुरु भद्र ते शङ्कित्वा मा च पार्थिव ।

20 { इति हृदयविवरणं तदानीं
मुनिवचनं तदयो स मुमुक्षुवारम् ।
नरपतिरभवत्तो महात्मा
व्यथितमना प्रचवाल चासनात् ।

[40]

[Though S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 M₄ are not included in the subst group their variants are given here along with others as some lines of the subst group occur in them as ins or subst —(1 1) V₃ ईदस (for सदस) B₄ इति (for इतिरत) —(1 2) N₂ V₃ D₁₃ सौरवध (V₃ °धे), V₁ B₃ (m also as above) ॥ सौरवेधे (for सौर वेधे) V₁ ते is repeated wrongly in अभिजातेन V₃ सह, B₁ *स (for -स) —(1 3) V₂ त (for तु) D₁₃ [5] भित्त (for [5] भित्त) V₄ प्राप्य B₁ प्राप्त (for प्राप्तम्) V₂ पित्त, B₁ इतिपित्त (for गमिपित्त) —(1 4) V₁ तद् (for यद्) V₂ ३यनाम्, B₄ श्रूयताम् (for श्रूयताम्) D₁₃ मम (for इति) —(1 5) V₄ आ *तोसि (for आरिषोऽसि) V₁ नडादुत्तु V₄ महदुत्त, B₂ D₁₃ महाम्न (for महदुत्तम्) V₃ आरिषो महदुत्तु (for the post half) —After 4th, D₁₁ ins 1 6 —(1 6) V₁ श्रोद्ध * (for श्रोद्ध) V₂ तया, D₁₁ भवेत् (for मया) V₃ भूरि * V₃ *भूति D₁₁ वैव * D₁₃ दीक्षितेन वे (for सुवि भूते) —For 5th, D₁₁ subst 1 7 —(1 7) D₁₃ दये (for नेने) D₁₀ वैव (for चावि) D₁₃ समाते (for [अ] समाते) V₁ वे (for मे) D₁₁ पापकारिणी (for राक्षसायनी) —(1 8) V₂ यत्तम् (for वेदीम्) B₄ अये * (for अयेले) B₄ [अ] य * (for [अ] य्य वर्तताम्) —For 6th D₁₁ subst 1 9 —(1 9) D₁₀ तया (for ससद) V₁ तावद्, D₁₀ ता * (for ताम्याम्) D₁₁ तस्मिन् (for अह) V₁ *यिन V₂ नदित V₃ B₁ यजित D₁₁ विलते (for यथित) D₁₃ नियनमारिषत् —(1 10) A₂ D₁₀ 12 अतः B₃ उप * (for अपकम्) A₂ V₃ B₃ 4 D₁₀ अग्यु (D₁₀ सत्त) पापान V₁ अ * D₁₃ अनु * (for अनुपायताम्) —(1 11) V₂ न दि श्रेष्ठ सत्तुच्छु (for the prior half) V₃ B₁ सम्य (for धम) B₄ न किञ्चन (for कचचन) —After 7, S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 ins 1 12 14 —(1 12) V₂ तादृशी (for ईदृशी) S₁ D₁-3 5 7 9 11 *शा सा D₃ *शा च D₃ *ह्याय (for यद् श्यायनी) S₁ V D₁₃ तत D₃ [प] जस्मिन् (for तस्मिन्) D₁₁ ततो * (sic) (for महानतो) —(1 13) D₁₁ स्वप्रमा * (for स्वप्रमाणात्) D₁ प्रायेण D₃ 7 प्रमुखा दि (for प्रायेण) —(1 14) D₁₃ चतुष्प (for चतुष्प) S₁ D₁₃ 12 राजन् (for आर्ष) S₁ N₂ B₃ (m also as above) D₃ 10 12 दारणमन्त्र (for दारणमन्त्रम्) —(1 15) N₁ V₁ 3 4 B₁ 4 त (V₁ त) दोस्त (for सहोपात्त) V₂ 3 B₄ *पाय (for प्रतिपादात्) V₁ शुभ * V₄ *चरणा (for स्वस्वप्रमन्त्र) —(1 16) B₄ क्षिप (for तज) —(1 17) V₁ [5] नि (for दि) V₄ रवपुस्त (for मया शुभ) V₁ ३यनाम् (for दत्ताम्) —(L 18) V₁ तिपु (for निदपु) V₃ अन्त (for सन्त) V₄ दन्तात् (for स्रष्टात्) —(1 19)

N₂ V₁ B₃ (m also as above) D₁₀ प्रदास्यामि (for प्रयच्छामि) —(1 20) V₁ D₁₀ °जयो V₂ अप्रयुष्यो, V₄ येन बध्यो (sic), B₂ याया येनो D₁₃ जयार्थे यो (for येनायेनो) —(1 22) B₃ (m also) लेपु (for हन्तु) N₂ च तो V₁ B₁ चेमौ V₂ एतो V₄ तो वे (for चेती) D₁₃ तेषां च नाय कातुस्पाद (for the prior half of 11th in D₇) D₁₃ येदुम् (for अय) V₂ तस्यदते (for उत्सदते) —(1 23) D₁₃ च (for तु) V₂ मुतात् (sic) (for दुरात्त) —(1 24) V₁ निद * (for निदयो) V₁ हतोपधि (sic) (for हतोपधि) —(1 25) V₁ भिन्ने, V₂ सीतिने वे V₄ भिन्नेवे B₂ *वैव (for सीने वैव) V₃ कदाचन (for कचचन) —(1 26) V₁ 3 B₁ 2 (B₃ m also as above) तौ (for ते) —(1 27) V₂ वेदमेय (for वेदमेय) —For 14^{ed}, M₄ subst 1 28 —(L 29) V₂ B₄ धर्म (for धर्म) D₁₃ रायन (for पार्थिव) —(1 30) B₄ [प] न (for [प] न) V₃ न (for वा) N₁ *दधासि V₁ *दधासि मे (sic) V₃ [अ] दधासि, V₄ अथा * B₄ *वै (for अथासि मे) —For ins see below —For 17^{ed}, M₄ subst 1 31 —(1 31) V₃ दशरथि च (for दशरथेय) V₃ D₁₃ तस्य मे and स्यो —M₄ ins 1 32 after 17 —(1 32) V₂ बरि (for तव) —M₄ subst 1 33 for 16^{ed} —(1 33) V₂ 4 D₁₀ M₄ [ह] मे (for मे) M₄ [अ] भि (for दधि) V₂ च (for ते) V₁ 4 जनापि (V₄ °प) (for नरापि) —(1 34) V₂ तदा (for ततो) D₁₃ विसनये (sic) (for विसनये) —(1 35) V₁ B₃ नाम्नेति (for मारयेति) V₁ काच च (for काल्ज) B₃ marg. क्या यज्ञ न या काल्य —(1 36) N₂ [अ] शुभ * V₃ [अ] य दुश् B₁ त्व दुश् (for [अ] शुभ) V₄ अदस्ते (for मद् ते) V₁ [अ] य (for च) V₃ न राक्षिषाश्च V₃ B₃ 4 D₁₀ मा राक्षिषाश्च (by transp) V₄ मा राक्षिषा कदाचन (for the post half) —For 20 D₁₁ subst 1 37 38 —(1 37) N₁ V₁ B₂ तदा V₂ तु तच्छा (hypermetric) V₃ D₁₁ तदा वे (for तदानीं) —(1 38) N₂ तथा * V₂ वित्त च V₄ च ततश्च B₁ स तदा तु B₄ तदान D₁₁ सततो (for तदयो स) V₁ मुनिवचन स तथा नियम्य शील V₃ मुनिवचन स यवार्थे क्षुण्णम् —(1 40) V₃ प्रचचार (for प्रचवाल) B₃ चामनाय B₄ आसनात् (with hiatus) (for चामनात्) —After 1 40 D₁₃ ins 565 *] —After 1 30 B₂ ins

567 * विना रामेण तकार्ये न च सिद्धिर्भव्यति ।

Colophon —Kanda rāme S₁ N₂ D₁ 10 om V B D₁₁ आदिपाण्डे, D₃ अयोध्याकाण्डे —Sarga name S₁ N V B D₁ 2 3 10 12 विद्यामित्रवाचय (V₁ °य गमने), D₃ 7 कौशिक-वाचय D₃ विद्यामित्रागमो —Sarga no (figures words or both) S₁ N₁ V₁ 4 B₁ 4 D₃ 11 12 om N₂ B₂ 3 D₃ 10 22 V₂ 24 V₂ 21 D₇ 17 D₃ महादत्ताम् ; D₃ 12 3 G₁ 2 4 M₁ एकोनविंशति, T₃ एकोनविंशतिरम, G₃ M₄ एकोनविंशति (M₄ °दन्), D₁ एकोनविंशतिरम 19 D₃ एकोनविंशति 19 D₁₃ ह्यार्ये रामा-वाल्मीकिरमिन्नाम (dash indicates lacuna)

तच्छ्रुत्वा राजशार्दूलो विश्वामित्रस्य भाषितम् ।
 सुहृत्तेमिव निःसंज्ञः संज्ञायानिदमब्रवीत् ॥ १
 ऊनपोडशवर्षो मे रामो राजीवलोचनः ।
 न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः ॥ २
 इयमक्षौहिणी पूर्णा यस्याहं पतिरीश्वरः ।
 अनया संयुतो गत्वा योद्धाहं तैर्निशाचरैः ॥ ३
 इमे शूराश्च विक्रान्ता भूत्वा मेऽस्त्रविशारदाः ।
 योग्या रक्षोगणैर्योद्धुं न रामं नेतुमर्हसि ॥ ४

19

1 T₂ begins with श्रीरामः शरणं मम. V₂ wrongly transp. 1-6^d before I. 20. 1. —^a) Ñ V B D₁₀ 13 M₄ व्यपिक्तो राजा (for राजशार्दूलो). —^b) Ñ V B D₁₀ 13 M₄ विश्वामित्र (M₄ °त्रो) वचस्तदा. —^c) S₁ D₂ 11 12 आसीद्विश्वेष्टः; Ñ V B D₁₀ 13 M₄ इव निश्चेष्टो; all C_s इव (Ck एव) निःसंज्ञः (as in text) D₁-3 7 वभूव विनयाः प्रस्तः (D₁ सद्यः). —^d) S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 स दीनम् (for सज्ञायान्). Ñ V B D₁₀ 13 M₄ प्या (M₄ भू) च्चेदं वाक्य (V₂ इद as in text) मवचीत्; T₂ विश्वामित्रमयावचीत्; Ct as in text (for ^d).

2 * S₁ Ñ V B D₁ 3 5 7 10 11 13 M₄ [S]यै; Cg as in text (for मे). D₂ ऊनपोडशवर्षेणोय (sic). —^a) Ñ V B D₁₀ 11 13 M₄ अक्रु (V₁ °ष्ट) तास्त्रश्च मे सुतः. —^b) G₄ स (for न). S₁ D₂ 12 G₄ युद्धे (for युद्ध). S₁ चास्य; T₂ अन्य (sic) (for अस्य). —^d) D₁₁ [आ]सी**; T₂ वक्ष्यामि (sic) (for पश्यामि).

3 D₂ om. 3. —^a) Ñ V B D₁₀ 13 M₄ त्व (D₁₃ चा) क्षौहिणी; M₂ °हि * (for अक्षौहिणी). Dt D₂ s सेना; M₂ *र्णा (for पूर्णा). —^b) all C_s यस्याहं (as in text). T₂ प्रभुर् (for पतिर्). S₁ D₁ (marg. as in Ñ also). 3 5 7 12 यस्याः पतिर्हं प्रनोः; Ñ V B D₁₀ 11 13 M₄ बलस्य मम दुर्जया. —^c) D₄ सेनया (for अनया). Dt D₂ s सहितो (for सयुतो) M₂ भूत्वा (for गत्वा). —^d) D₄ T₂ योत्सेह्यै; Cg as in text (for योद्धाहं) M₂ *शाचरैः. —For 3^d, S₁ D₁ 3 5 7 11 12 subst. *

568* तथा परिश्रुतो युद्धं दास्यामि पिशिताशिताम् ।

[S₁ युद्धे (for युद्ध)]

On the other hand, Ñ V B D₁₀ 13 M₄ subst.

569* अनयाहं वृत्तस्य योत्स्यामि पिशिताशिताः ।

[Ñ₁ illeg. up to वृत्. B₂ तु (for [अ]ह). B₄ तेन (for तव).]

अहमेव धनुष्पाणिर्गोप्ता समरमूर्धनि ।

यावत्प्राणान्धरिष्यामि तावद्योत्स्ये निशाचरैः ॥ ५

निर्विघ्ना व्रतर्चया सा भविष्यति सुरक्षिता ।

अहं तत्र गमिष्यामि न रामं नेतुमर्हसि ॥ ६

पालो ह्यकृतविद्यश्च न च येत्ति बलाबलम् ।

न चास्त्रबलसंयुक्तो न च युद्धविशारदः ।

न चासौ रक्षसां योग्यः कूटयुद्धा हि ते ध्रुवम् ॥ ७

4 * Ñ V B₁-3 D₁₀ 13 M₄ मतिः; B₄ अति; Cm g as in text (for इमे) S₁ D₁-3 5 11 13 हि शूरा (D₂ s transp.) (for शूराश्च). Ñ V B D₁₀ M₄ मे योधाः; D₁₃ बहवो; Cm g as in text (for विक्रान्ता). D₇ इमे शूराद्विक्रान्ता (sic). —^b) S₁ D₂ शस्त्रः; D₁₂ शास्त्रः; T₂ मेत्रः; T₂ मेस्तु (for मेऽस्त्र). Ñ V B D₁₀ M₄ कालांतकयमोपमा; D₁₃ भूत्याश्च मुनिसत्तमः; M₂ °मे शस्त्रकोविद्. —D₁₃ om. 4^c-6^d. S₁ D₁-3. 5. 7 12 om. 4^d. —For 4^d, Ñ V B D₁₀ 11 M₄ subst. :

570* रक्षसां प्रतियोद्धारस्ते मया सह यान्तिवति ।

[Ñ₁ स तथा (for ते मया). V₂ प्रति- (for सह). V₁ यां* s; V₂-4 D₁₁ M₄ वांयु ते (V₂ M₄ ते); B₁ यांति (for यान्तिवति).]

5 D₁₃ om. 5 (cf. v.l. 4). Ñ V B D₁₀ M₄ om. 5^a. —^a) S₁ D₂ 11 12 चैव; D₁-3 7 चैवो (D₂ °वो) (for एव). —^b) Ñ V₁ s 4 B D₁-3 5 7 10-12 प्राणा (for प्राणान्). S₁ Ñ V₁ 2 4 B D₁ 5 10 M₄ च (M₄ ह)रिष्यति; V₂ वधिर्यन्ति; D₂ 3 7 11 भविष्यति (D₂ °व्य)ति; D₂ (before corr.) चरिष्यामि; D₁₂ परिश्रुति (sic); Cm t as in text (for चरिष्यामि). —^d) S₁ Ñ V B D₁ 5 6 10 12 M₄ युष्य (S₁ V₄ M₄ °य)तो मे (V₄ °ति मे; D₂ °मानो; M₄ °तो न) (for तावद्योत्स्ये). V₄ B₂ M₄ निशाचराः. D₂ 3 7 योष्यथो (sic) मम राक्षसैः; D₁₁ युद्धं चैव भविष्यति; M₂ तावद्योत्स्ये*चरैः.

6 S₁ D₂ 12 om. 6 D₁₃ om. 6^a (cf. v.l. 4) —^a) D₁ 2 7 अविघ्ना; D₂ अविघा (for निर्विघ्ना). Ñ V B D₁₀ M₄ अविघ्नं (Ñ₁ °घ्ना) व्रत (V₁ दूत; V₄ तत्र) चर्यायात्; D₁₁ अविघ्नं प्रह्वचर्याय. —^b) Ñ V B D₁-3. 7 10 11 M₄ तावत्त्व (Ñ₂ V₂ °य; D₂ °य; D₁₁ M₄ तव तावद्-) भविष्यति. —D₂ 3 7 om. 6^d. —^c) Ñ V B D₁₀ 11 13 M₄ स्वयं; D₂ अत्र (for तत्र). G₂ s M₂ [आ]रुमि (M₂ * °) व्यामि. —^d) Ñ V B D₁ 10 11 13 M₄ न रामो (V₁ °राम; V₂ transp.; D₁₁ न रामो है [hypermetric]) गंतुमर्हति (B₁ °रति).

7 * T₂ -वीर्यश्च (for -विद्यश्च). S₁ D₁-3 5 7 11 12 बालो हयमनीरिषु; Ñ V B D₁₀ 13 M₄ बालो (V₂ रामो) यमहतश्च (B₄ °तस्ते [sic])श्च. —^b) G₄ स (for न). S₁ D₁ 3 5 7 12.

विप्रयुक्तो हि रामेण सुहृत्तमपि नोत्सहे ।
जीवितुं मुनिशार्दूल न रामं नेतुमर्हसि ॥ ८
यदि वा राघवं ब्रह्मन्नेतुमिच्छसि सुव्रत ।
चतुरङ्गसमायुक्तं मया सह च तं नय ॥ ९

12 जानाति, D2 जानाति (sic) (for च वेति) D7 ८ ९ बल
—After 7^{ab}, B3 ins

571* न च किंचिद्विजानाति राक्षसतां बलाबलम् ।

—) T3 [अ]ति (for [अ]ति) D4 विद्या, D5 शिक्षा
(for बल) S1 D1-3 5 7 12 M4 न चा [S1 सा, D1 दा] शै
परमेरु (D5 12 M4 'शे परमे) युक्तो, N1 V1 2 4 B2-4 D10 न चासी
दा (V1 'शा) चतुरङ्गलो, V3 न चायमस्त्रकुदालो, B1 न चास्त्र
कुदालो **, D11 न शक्तिसल्लय युद्धे च, D12 न शक्तिसल्लयकुदालो
—) D12 बुद्धि, D13 तत्र (for युद्ध) —) S1 D1-3 5 7
11 12 [अ]ति, G4 [आ]सा, Ck as in text (for [अ]सी)
T1 repeats रक्षसा —) S1 D1 D1-3 5-9 11 12 राक्षसा,
D4 ते भूश (for ते भुवम्) —For 7^{ab} N1 V B D10 13
M4 subst

572* न च राक्षसयुद्धेयु धोयोऽय कूरयोविपु ।

[B4 om M4 [अ]य (for च) V3 [अ]सी M4 वे (for
57)]

8 *) G4 'युद्धो (sic), Cg k as in text (for विप्रयुक्तो).
D3 [अ]ति (for दि) N1 V B D10 13 M4 रामेणह विहीनश्च
(V4 'युद्ध) —) D11 * हृष्टम् M2 सुहृत्तमं ** त्सहे —)
B4 D2 7 9 11 13 14 G4 जीवित (G4 'ताम्) (for जीवितु)
D5 9 11 12 नत् (for मुनिशार्दूल)

9 S1 transp 9 and 10 N1 V B D1-3 5 10-13 read
9 after 11 M4 (om 11^{ab}) after 575* —) D1 यथा
हि, G1 missing M2 Ck अथ वा, Cm t as in text (for
यदि वा) M3 राघवान् (for राघव) M4 * ह्यन् —) D4 8
अर्हसि (for इच्छसि) D3 सुयुवत (by ditto) D11 सुयम्
(for सुयत) —For 9^{ab} N1 V B D10 13 M4 subst

573* अदर्थं यदि नेतव्यो रामो वैष स्वया सुने ।

[M4 चैव (for यदि) B1 D13 राघ पृथ, B4 रामेय वै, M4 यदि
रामश्च (for रामो वैष) B4 महा (for लया)]

—) S1 D1-3 5 7 11 12 बलोपेत, N1 V B D10 13 M4
बलोपेतम् (for सनायुक्त) —D4 reads 9^{ab} in marg —)
S1 D3 सार्धमसु, D1-3 7 11 'वन, D4 T3 G3 M3 च सहित,
D13 सार्धमसु, D14 T1 G1 5 M1 च सह (by transp) त, T2
वा सह व (for सह च त) N1 V B D10 13 M4 तदा (N1 V3
— B1 D13 M4 'ते) वातु मया सह, M4 मा चापि सहित नय

10 D7 om 10 and 11 S1 transp 10 and 9 —)
S1 N1 V B D1-3 5 10-13 नय, Cm g k t as in text (for
पठि) S1 सहसासु (for सहसापि) —) S1 N1 V B
D1 2 3 5 10 12 13 G3 M3 4 transp जातस्य and मम N1 V B

पठिर्वर्षतहस्राणि जातस्य मम कौशिक ।
दुःखेनोत्पादितश्चायं न रामं नेतुमर्हसि ॥ १०
चतुर्णामात्मजानां हि प्रीतिः परमिका मम ।
ज्येष्ठं धर्मप्रधानं च न रामं नेतुमर्हसि ॥ ११

D10 13 सामेत, D5 कौशिक, M4 सप्रति (for कौशिक) D5
मम प्राप्तस्य कौशिक —) Dt D5 3 T3 C2 कृच्छेण, G1 3
यवेन, Cm g t p as in text (for दुःखेन) Ck दु खं
मतोपवासयशदीक्षालक्षणम् । Ck D5 उत्पादित (for उत्पादितस्य)
S1 D1-3 5 10 दुःखेनोत्पादितश्चेमे (D1 'क्षेमे पुत्रा [hyper
metric] D13 'क्षेमे) —) D1 मया ते मे कथंचन, G4
रामं नेतुमिहार्हसि —For 10^{ab}, B2 D11 subst 574*

11 S1 D7 om 11 (for D7 cf v 1 10) B2 transp
11^{ab} and 11^{cd} —) T2 च, T3 तु (for हि) —) G3
(before corr) श्रीत (for श्रीति) D4 (before corr as
in text) * पारमिका, Cg k t as in text (for परमिका)
B2 D1-3 श्रीतिन (D1 'थीति) हि मे परा (B2 सदा, D1 पुरा),
D5 11 श्रीतिरप्य परा मम D13 श्रीति पराक * * *, T2 रामे श्रीति
परा मम, Cm k k as in text (for *) D11 ins 1 6 of
575* after 11^{ab} —For 10^{cd} 11^{ab} N1 V B D10 11 13 M4
subst (B2 D11 subst for 10^{cd} only)

574* बृहदेनोत्पदिता पुत्रा मया चैते कथंचन ।

प्राणि त्रियतरा प्रक्षन्मनेते देववर्णिन ।

[(1 1) D12 दुःखेन (for बृहदे) V2 नेते B2 [ए]नेते
M4 चेमे (for चेते) —(1 2) B1 'दना (for त्रियतरा) V1
मम * V2 6 यो मे M4 मनेमे (for मनेते)]
N1 V B D10 11 (reads 1 6 after 11^{ab}) 13 M4 cont D1
ins after 11^{ab}

575* एभिर्विना न जीवेयमिति मे निश्चिता मति ।

त्यक्त्या चान्यान्पुत्रानामे प्राणा सप्रति मे स्थिता ।

गुणभिरामे होकस्य स्तेमवप्रियदर्शने ।

उदरगुणस्वरूपमोहद्वयनन्दनम् ।

प्राणि त्रियतरा पुत्रं न मे त्व नेतुमर्हसि ।

प्रतिपक्ष च यानि त्वा कृपण पुत्रकालस्य ।

[(1 1) D11 एभिर् (for एभिर्) —(1 2) V1 om त्यक्त्या
V3 [अ]चाश्च (for चान्यान्) D1 M4 अतीतिनाम् (for त्यक्त्या
चान्यान्) D13 प्राण (for प्राणा) D1 M4 transp रामे and
प्राणा V2 'पुत्रा D2 तं D13 'स्थित (for मे स्थिता) B4
त्यक्त्या चाप्यप्राण (submetric) D11 मुने रामे महाबाहो (for
the prior half) —(1 3) N1 गुणा* N2 V1 2 B1 4
D13 'रामो V3 B2 'राम (for गुणभिरामे) V4 * * वद (for
सोमवद) N2 V1 B1 D10 13 'वदन B2 'वर्धन (for वर्धने)
V2 लोष मे त्रियतरा V3 त्रिय प्रीतिपरायण (for the post
half) —(1 4) V3 सर्वकृपण D11 त्वेन गुण (for उपायुण)
—(1 5) D11 'तम (for त्रियतरा) V1 मे तु (sic) D1 11 13
राम (for मे त्व) —D1 om 1 6 —D11 reads 1 6 after

विंशतीरा राक्षसानो च कस्य पुत्राश्च के च ते ।
 कथं प्रमाणाः के चैतावन्नन्ति मुनिपुंगव ॥ १२
 कथं च प्रतिवर्तन्त्यं तेषां रामेण रक्षाम् ।
 मामर्कैर्वा बलैर्ब्रह्मन्मया वा कृत्योचिनाम् ॥ १३
 सर्वं मे शमं भगवन्त्यं तेषां मया रणे ।
 म्यातव्यं दृष्टमावानां वीर्योन्मिता हि राक्षसाः ॥ १४
 तस्य तद्वचनं श्रुत्वा निश्चामित्रोऽभ्यभाषत ।
 पालस्त्यवशप्रभवो रावणो नाम राक्षसः ॥ १५

म ब्रह्मणा दत्तवरुणोऽस्यं बाधते मृगम् ।
 महाबलो महावीर्यो रावसर्वभूमिर्भूतः ॥ १६
 श्रूयते हि महावीर्यो रावणो राक्षसाधिपः ।
 साक्षाद्विश्रवणधृता पुत्रो विश्रवसो मुनेः ॥ १७
 यदा स्वयं न यदास निमग्नो महाबलः ।
 तेन संचोदितो तौ तु राक्षसा मुमहाबलौ ।
 मारीचश्च सुबाहुश्च यत्निग्नं करिष्यतः ॥ १८

11^a. —(1. 6) V B D_{10.12} M₈ [म] मि (for च). D₁₁ वन्तः, M₈ वृत्तं (for वृत्तं). D₁₁ वन्तः, M₈ वन्तः (for वन्तः). V₈ मायाच पुन पुन (for the post. half). M₈ reads g after 575°. —M₈ om. 11^a. —M₈ missing उपेष्ट. D_{8.11.12} (as in text also) हि (for च). N V B D_{10.12} उपेष्ट (V₁ ४) पुत्रे न मे रामे (B₄ बाण्ड); Dt D₈ Ct उपेष्ट धर्मप्रधाने च. —M₈ D₈ om. न. N V B D_{10.12} भगवन् (for न रामे). —After 11, N V B D₁₋₃ १०-१२ read g.

12^a. —N V₁ 4 B D_{10.12} M₈ read dual in place of plural. S₁ D_{1.2} १.11.12 हि; N₈ B₂ 3 D₁ तु (for च). V₈ द्वितीयो राक्षसी तौ च; V₈ विंशती राक्षसा तौ च (sic). —M₈ S₁ D₁ २.१.१२ कथं; D₁ कुचरः; G₄ च चेतके (sic); G₄ k₄ as in text (for च के च ते). N V B D_{10.12} M₈ पुत्रो कस्य पुत्रश्च तौ. —M₈ D₇ कविप्रमाणो (D₇ णा); T₈ किं प्रमाणश्च; all Cs as in text (for कथं प्रमाणाः). S₁ D_{1.2} १२ के चेतः; D₈ के चेतः; D₈ चेतै वै; T₈ G₁—M₁ के चैतान्; Cr.m as in text (for के चैतान्). N V B D_{10.12} M₈ निप्रमाणौ (V₁ ४) च कायते (V₈ कौ चेतौ; V₄ तौ चोमी; D₁₂ तौ तद्वत्; M₈ ते चैतौ [sic]). —M₈ S₁ D₈ १.11.12 राक्षसा; N₈ B₂ D_{10.12} तद्वद्भिः; V₁ १ 4 B₂ 4 राक्षसी; V₈ द्बुद्धिः; B₁ द्बुद्धयोः; D₁ द्बुद्धयः; D₈ द्बुद्धतु; Cr.m g₄ as in text (for रक्षन्ति). D₈ रक्षति मुनिपुंगवः (sic).

13^a. —V₁ repeats 13^a after the first occurrence of 17^a. D₈ दि- (for च). —After 13^a (first time), V₁ reads (for the first time) the post. half of 576°, then reads 17^a repeating in its proper place. —M₈ N V₈ 4 D₁₀ 12 तयोः; V₁ तथा; M₈ रणे (for तेषां). N V₈ 4 B_{1.2} 4 D₁₀ 12 रक्षसीः; V₁ रक्षसाः; V₈ B₂ (before corr. as in N) राक्षसोः (for रक्षसाश्च). —M₈ N₈ मामकीयेरुः; D₈ संपदौर्ध्वं (sic); D₁₂ मामकैश्च (for मामकैर्वा). N₈ B₂ D₁₀ नैरुः; V₈ रणे; B₁ D₈ बले (for बलेरु). V₈ कथं च भविता युद्धः; B₁ D₁ मामकैर्वालेनैरुः; D₁₂ सायरीव * ते प्रहन्. —M₈ S₁ D₁₂ मायया; V₈ समं वा; D₁ २ माया (sic) वा (for मया वा). N₈ B₂ २ D₁₀ १२ योचिनोः; N₈ V₁ 4 B₄ योचिना; V₈ B₁ D₈ 4 M₈ योचिनः (for योचिनाश्च).

14^a. —V₈ तयः; D₈ missing (for मे). D₈ तयं सर्वं. B₄ दो* (for दोय). —M₈ D₁ २ २.11.12 मया; D₇ तथा (for कथे). D₁ २ २ १.11.12 महा- (for मया). M₈ रण. S₁ मया ते राक्षसा मुनेः; N V B D₁₀ 12 मया तत्र कथं तयोः (V₁ तथा). —After 14^a, N V B D_{10.12} ins. :

576° यजे ते प्रतिकर्तव्यं नाम्नः कौ च तौ मुने ।
 [V₁ मन्त्र (submetric) (for च ते ते). B₁ मन्त्रं (for कर्तव्यं). —V₁ repeats the post. half here.]
 —N V B D₁₀ 12 om. 14°-16. —M₈ दीर्घोऽस्य.

15^a. —N V B D₁ २ २.11.12-12 M₈ om. 15 and 16 (for N V B D_{10.12} cf. v.l. 14). —M₈ D₁ T₁ G M₁ २ पुण्ड्रः; G₄ बोलुण्डः (as in text).

16^a. —S₁ N V B D₁ २ २.11.12-12 M₈ om. 16 (cf. v.l. 14 and 15). —M₈ G₁ ब्राह्मणः. —M₈ D₈ रावणो राक्षसैरु (for राक्षसैर्बहुभिरु).

17^a. V₁ repeats 17^a here (cf. v.l. 13). —M₈ V₁ (both times) मया (for महा-). Dt D₈ १.12 श्रूयते च महाराज (D₁₂ कीते). —M₈ S₁ N V (V₁ both times) B₂ 4 D₁ २ १.10-12 T₈ M₈ नाम रा (M₈ * *) क्षसः; B₁ T₈ M₈ राक्षसैरुः (for राक्षसाधिपः). —M₈ D₁ दूरो (for साक्षाद्). D₈ १ 12 वैश्रवणो* (D₁₂ मण) (for वैश्रवणधृता). —M₈ D₈ १ वैश्रव (D₈ * *) तो; D₁₂ वि * * तो (for विश्रवतो). D₈ १ 12 मुने. —For 17^a, N V B D_{10.12} M₈ subst. :

577° पुत्रो विश्रवतः दूरो धाता वैश्रवणस्य च ।
 [B₄ transp. the two halves. V₁ transp. पुत्रो and दूरो. V₈ तुनो हि विश्रवः (hypermetric); V₈ पुत्रो वैश्रवः; B₁ missing (for पुत्रो विश्रवः). M₈ साक्षाद् (for कृते).]

18^a. —M₈ om 18^a. —M₈ Dt D₈ २ २ G₁ २ M₈ Ct यदा न (D₄ G₁ २ M₈ तु) खलु, D₈ तदा तु खलु; D₁₂ यदा स्वयं*; T₈ यथा*; D₁₂ प्रधानः खलु; T₈ स यथा खलु; M₈ स चेतै खलु; Cr.m g₄ as in text (for यदा स्वयं न). —M₈ G₂ M₈ सविश्रयति; M₈ बृहद्वलः; Ct as in text (for महाबलः). —For 18^a, S₁ D₁ २ २ १.11.12 subst. :

578° न खल्वतो म्हाविश्रयं तवाचरन्तं दुर्मतिः ।
 [S₁ D₈ तथा (for तव).]

इत्युक्तो मुनिना तेन राजोरात्र मुनिं तदा ।
न हि शक्तोऽस्मि संग्रामे स्थातुं तस्य दुरात्मनः ॥ १९
स त्वं प्रसादं धर्मज्ञं कुरुष्व मम पुत्रे ।
मम चैवाल्पभाग्यस्य दैवतं हि भवानुरुः ॥ २०
देवदानवगन्धर्वा यक्षाः पतंगपक्षगाः ।
न शक्ता रात्रणं सोढुं किं पुनर्मानवा युधि ॥ २१

स हि वीर्यवतां वीर्यमादत्ते युधि राक्षसः ।
तेन चाहं न शक्तोऽस्मि संयोद्धुं तस्य वा बलैः ।
सबलो वा मुनिश्रेष्ठ सहितो वा ममात्मजैः ॥ २२
कथमप्यमरप्रख्यं संग्रामाणामस्मिदिम् ।
बालं मे तनयं ब्रह्मन्नैव दास्यामि पुत्रम् ॥ २३

On the other hand N V 1 2 4 B D 10 13 subst

579* स ते कश्चि यक्षस्य विप्रवृहोकरावण ।

[V 1 2 3 B 1 4 कश्चि (B 1 तु) (for कश्चित्)]
while V 3 subst

580* महाबलो महोन्मत्तो देवेदेवपतिपत्न ।

—S 1 N V B D 1 3 5 7 10-13 M 4 om 18^{cd}-19^d —^c D 3
संयोजितो (for संचोदितो) D 1 4 T 1 G 2 M 1 द्वौ तु, T 3 वीरी,
M 3 घोरी (for तौ तु) —^d D 1 D 8 8 च D 4 9 T 3 G 1
वै (for सु) —After 18^{cd} M 1 ins

581* मामाश्रित्य तु तौ वीरी राक्षसौ सुदुरासवौ ।

19 S 1 N V B D 1 3 5 7 10-13 M 4 om 19^{cd} (cf v 1
18) —^a T 3 [उक्ते] (for [उक्ते]) —^b T 3 तथा (for
तदा) —^c D 3 [अ]ह (for हि) S 1 N V B D 1 3 5 7 10
12 13 न शक्तास्त्व D 11 न साह (sic) स्वस्य T 3 न हि शक्नोमि
M 2 न हि ॥ २१ स्मि (for न हि शक्नोमि) —^d S 1 N V B
D 1 3 5 7 10-13 वय स्यात् D 8 *स्य (for स्यात् तस्य) D 8
(before corr) दुरात्मनः —For 19^{cd} M 4 subst

582* प्रतिपेधं न शक्ता हि तस्य कर्तुं वय युधि ।

20 * S 1 D 1 3 5 7 11 13 तस्मात् (for स त्वं) T 3
धर्मज्ञो (sic) (for धर्मज्ञ) —^a D 1 3 मयि (for मम)
Cm g h t अल्पभाग्यस्य (as in text) S 1 D 13 वै मंद*,
D 1 2 5 भावेय (D 1 2 5) हि D 2 7 वा बाल (D 7 7) भावेय
D 3 भागस्य (for चैवाल्पभाग्यस्य) D 4 reads from वय
up to ^a in marg —^d D 3 भवान् (for हि भवान्) S 1
D 1 3 5 7 11 13 भवान् मम D 3 transp हि and मम D 11
म *दिवत् —For 20 N V B D 10 13 M 4 subst

583* स मे त्वं बालपुत्रस्य प्रयाद कर्तुमर्हसि ।

अनतिक्रमणीयो हि भवान् मे परमो गुरु ।

[(1 1) B 4 om त्व V 1 रात्र (for बाल) V 4 प्रान
(for प्रान्) —(1 2) N 2 B 3 (marg as in text)
D 10 [अ]सि (for हि) N 1 B 1 भवान् V 1 भवान् (sic)
B 4 भवान् (B 4 वा) न (hypermetric) D 13 भवान् (for
भवामे)]

21 V 3 om 21^{ab} —^a S 1 V 2 4 B D 10 13 T 3
G 1 3 M 4 नो (D 10 ना) धर्मे (for नाध्या) —^b D 2 रक्षा
(sic) D 3 वक्ष (for वक्ष्मा) D 3 राक्षस (for पतंग)
2 V 1 3 4 B D 10 13 M 4 वक्ष्मणोऽप्यभि (B 3 पु च) —^c

T 3 रावण (for रात्रण) D 1 4 योद्धु (for सोद्ध) —^d S 1
D 2 5 7 11 13 मातुषा (for मानवा) D 3 7 मुनि (for युधि)
—For 21^{cd} N V B D 10 13 M 4 subst

584* न विद्यते रात्रणस्य प्रतिबोद्धा दुरात्मनः ।

—After 21 T 2 ins

585* येन विक्रम्य वीर्येण दक्षिणे लोकपालक ।

सिन्धो धनुराख्य साक्षाद्विधर्मेश्वर स ।

तस्मै राम कथं ब्रह्मक्षेत्रमुर्हसि नार्हसि ।

22 * S 1 D 3 महा D 2 D 5 9 G 2 4 Ct स तु Cm g
as in text (for स हि) D 3 स हि वीर्य* ॥ २३ —^b V 1
आद*व (sic) V 4 आदातुम्, D 9 (before corr न हि ते)
नादत्ते T 3 आधत्ते, all Cs as in text (for आदत्ते)
N V B D 10 11 13 M 4 इति न युत, D 1 D 8 8 रावण D 2 3 7
विद्युत् मया (for युधि राक्षस) S 1 D 1 5 12 आददा (S 1 ५)
ति सुषे (D 1 3 ५) रित —^c S 1 N V B D 1 3 5 7 10-13
M 4 साधे (for चाह) S 1 शक्ता स्म N V 1 3 B 1 3 D 10 11 13
शक्ता स्मो V 4 शक्ता*, B 4 शक्नोती D 1 3 7 गतास्मि (D 1 3
*) D 1 12 M 4 शक्ता स्म, T 3 शक्नोमि (for शक्नोमि)
—^d S 1 D 12 संयुगे D 1 3 7 संयुगे D 9 संयोक्तु (for
संयोद्धु) D 8 बलौ (for बलै) N V B D 10 11 13 M 4 योद्धुं
वीर्यं (D 1 3 ५) विधा (V 2 4 ५) निषा B 2 ५ निषा (V 2 ५ न)
—After 22^{cd} S 1 N V B D 1 3 5 7 10-13 M 4 ins

586* अधवा लवणे नाम यशहा स मयो सुत ।

[D 1 अथ S 1 D 1 3 5 7 13 M 4 लवणं ब्रह्म V 3 B 4 रावणो*

(for लवणे नाम) V 4 यशस्व (for यशः) V 4 सुत (for सुत)

S 1 D 1 3 5 7 11 13 यशस्व (D 1 ५) मयु (D 1 ५) सुत (D 1 ५)

त) M 4 यशस्व वै मयो सुत (for the post half)]

—N V B D 10 13 om 22^{cd}-23^d S 1 D 1 3 5 7 11 13 M 4

om 22^{cd} —^a D 3 सकालो (sic) (for सवलो) —^c T 3

सबलो Ct as in text (for सहितो)

23 N V B D 10 13 om 23^{ab} (cf v 1 22) —^a

D 3 M 4 कथयस्य (M 4 सि) G 1 3 कथयिद्व (for कथयति)

S 1 D 1 3 7 13 कथयस्मा (D 1 ५) मयु (D 1 ५) सुत (D 1 ५)

कथयस्माच स ब्रह्मन् Ct as in text (for *) —S 1 D 1 3 5

7 11 13 M 4 om 23^{cd} —^b T 3 संग्रामाणां यो धिदं —^c M 2

गुप्त (for बाल) V 1 B D 10 13 त्व नि न विमोक्षामि —^d

S 1 परयसि D 1 3 5 7 11 13 M 4 मोक्षसि Ct as in text
(for दास्यामि) N V B D 10 13 पु (D 1 ५) यो धिदं
(V 1 वि) दुर्जय M 2 ५ राणां M 3 रावण ५ धेनुमति

अथ कालोपमौ युद्धे सुतौ सुन्दोपसुन्दयोः ।
यज्ञनिम्नरौ तौ ते नैव दास्यामि पुनरम् ॥ २४

मारीचश्च सुग्राह्यश्च वीर्यमन्तौ सुशिक्षितौ ।
तयोः न्यतरेणाहं योद्धा स्यां समुद्ग्रहणः ॥ २५

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे एकोनविंशः सर्गः ॥ १९॥

24 D7 om (hapl) 24 —^a) N̄ V B D10 13 अथ कालावप्रपद्यौ, D8 अथ काले क्षमौ युद्धे —^b) N̄ V1 2 4 B D10 13 पुनौ, Cg as in text (for सुतौ) —For 24^{ab}, S1 D1 3 5 11 12 subst

587* सुन्दोपसुन्दयोश्चैव युगौ वैवस्वलोपमौ ।

[D11 काशान्तोपमौ]

—N̄ V B D10 13 om 24^{cd} —^a) S1 तौ हि, D1-3 5 11 13 मृदि, G2 M1 4 तौ तु (for तौ ते) —^d) S1 D1 3 5 11 12 न ते, D1 वै 7; D2 *ते, Cm t as in text (for नैव) D4 9 T3 3 G1 3 M2 [अ]ह सुते, Cg k as in text (for युद्धम्) M4 न मोक्षयाम्यहमा मने —After 24 D4 M3 4 ins

588* तौ हि राक्षसकन्यायां जातौ दैत्यकुलोद्भौ ।

[No comm M3 4 तु (for दि) D4 वयस्य (for राक्षस) M3 जातौ दैत्यकुलोद्भौ M4 वीर्यकुलोद्भौ (for the post half)]

25 ^a) V5 सुगीरश्च, D1 मारीचिश्च (for मारीचश्च) —^b) S1 N̄ V B D10-13 विज्ञे (V2 *ज्ञस्)ते (S1 वै, V3 B1 तौ, D11 च, D12 चैव [hypermetric]) कुहज (V4 *ता, D11 *तो)सह (V3 सहा, V4 B1 सदा, D11 यदि), D1-3 5 7 विज्ञ तौ यदि कुर्वत —After 25^{ab} S1 N̄ V B D1 3 5 7 10-13 ins

589* तथापि न विमोक्ष्यामि पुन राम प्रसीद मे ।

तौ हि राक्षसकन्यायां जातौ मायाविनौ किल ।

[No comm —(1 x) S1 D12 च मोक्ष्यामि V1 विप्र (for राम) —S1 D12 13 om 1 2 —(1 2) D11 अन्ययां (for न-कायां) V2 विवासितौ (for मायाविनौ) For 1 2 cf 588*]

—^a) M4 ताम्याम् (for तयोर्) Dt D4 8 9 तयोः न्यतर रोदु (D4 बाहु) —^d) Dt D4 8 वास्यामि D4 M2 3 योद्धासि Cm as in text (for योद्धा स्या) T3 *जन्, G4 सु°, M3 *द्वौ M4 *न्मुने (for समुद्ग्रहण) —For 25^{cd} S1 D2 11 12 subst while D1 3 cont after 591* D3 7 after 592*

590* एतदन्यतमौ बा तौ योद्धासि समुजो मुने ।

[D1 2 एताव D5 एवम् D11 एवम् (for एतद्) D11 अन्य तम (for 'तौ') D2 3 7 11 12 [अ]पि (for तौ) D1 तिन्यौ D3 7 पुत्रौ (for सत्तौ)]

On the other hand N̄ V B D1 3 5 7 10 13 subst

591* एष मन्यतमं हित्वा प्रणियो स्यामि सपुत्रे ।

[V4 एताम् (for एताम्) V2 अन्यतमौ (for 'तम') D2 चैव (for हित्वा) D3 7 रामाणे (D3 *मने)धामयनम् (for the prior half) D3 7 *दास्यामि D4 न प्रदास्यामि (for प्रति शोस्यामि) D1 3 read 590* after this]

Thereafter all the above MSS (which read 590*, 591*) cont while Dt D4 8 M3 4 Ct ins after 25

592* अन्यथा त्वनुनेष्यामि भवन्तं सह वान्धवै ।

[D3 7 repeat 592* (var) after 590* D3 अपुत्रा (for अन्यथा) S1 D1 5 11 न तु (D1 transp D3 ननु)पस्यामि, V1 स पुने° (sic) V2 [अ]हमुने° V3 D10 त्व न ने° (D10 तु ने), B4 स्वातुने° D3 7 *वास्यामि (for the first time) मुवि मस्यामि (for the second time) D12 न तु वास्यामि D12 तु तु मस्यामि (sic) (for त्वनुनेष्यामि) S1 D1 5 11 12 भगवत् M4 भवैत् (for भवन्त) S1 D1 5 12 जयमातन B3 D3 7 (both first time) transp सह and वाप्ये Dt D4 8 10 M3 सहवाप्य D3 7 (both second time) वज्रमातन (D3 **) D11 सपुत्रातन (for सह वाप्ये) After 592* D3 7 read 590*]

Dt D4 8 11 M3 4 cont while D1 3 14 T G M1 3 Cmg t ins after 25

593* इति नरपतिवत्पनाद्विजेन्द्र

शुशिक्षितं सुमहान्विवेश मग्न्यु ।

सुदुत इव मखेऽभिगम्यसिक्त

समभवत्पुञ्जलिता महर्विवहि ।

[[(1 x) D11 ज *नाद् —(1 2) T3 *वुनौ (sic) M1 * *सुत (for सुशिक्षित) D3 *विशेष D11 तु समाविशेत् (for समवाविशेत्) —(1 3) M4 सुशुश्रू (for सुदुत) D4 marg D11 मखेवि G1 3 मखामि M4 महामि Cg t समिद्धि (for मखेभिर्) D11 चाप्य (for आस्य) —(1 4) D11 उमाते (for उच्चलिता) D11 वया हि (for महर्षि)]]

Colophon —Kanda name S1 N2 D5 10 11 om V B आदि, D1 3 7 अयोध्या —After (V4 before) Kaṇḍa name V1 4 B1 2 4 ins बालचरिते —Sarga name S1 N̄ V B D1 3 5 7 9-12 दशरथवाक्य —Sarga no (figures, words or both) S1 N̄ V1 4 B1 D3 5 11 12 om both N2 B2 4 D3 10 23 V2 25 V3 22 D1 7 18 D2 19 (as in text) D4 8 दिश (G4 *शब्, M1 2 4 *शलि) Dt D4 14 दिश 20 D13 —कटि—यवाक्षय (dash indicates lacuna) —After colophon G1 3 4 conclude with श्रीरामाय नम, G3 धीमते रामाजुजाय नम, M3 धी ... म

२०

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य स्नेहपर्याङ्गिलाक्षरम् ।
 समन्युः कौशिको वाक्यं प्रत्युवाच महीपतिम् ॥ १
 पूर्वमर्थं प्रतिश्रुत्य प्रतिज्ञां हातुमिच्छसि ।
 राघवाणामयुक्तोऽयं कुलस्यास्य विपर्ययः ॥ २
 यदिदं ते क्षमं राजन्गमिष्यामि यथागतम् ।
 मिथ्याप्रतिज्ञाः काकुत्स्थ सुखी भव सान्धनः ॥ ३
 तस्य रोपपरीतस्य विश्वामित्रस्य धीमतः ।

20

1 T₃ begins with धीराम शरणं मम —^a) B₄ श्रुत्वा
 वद् (by transp) —^b) N₁ न्ययाङ्गिला, N₂ V B
 D₁₀ 13 M₄ न्ययाङ्गिला, D₁ 37 "कुले (D₃ *) क्षण (for
 पर्याङ्गिलाक्षरम्) —^d) D₂ 7 महामति (D₃ *ति), D₁₂
 महापति (for महीपतिम्)

2 D₁₂ om 2 —^a) T₃ श्रुत्वा (for प्रतिश्रुत्य) S₁
 D₁—3 3 7 12 करिष्यामि प्रति (D₂ *वि)ज्ञाय N V B D₁₃ पूर्व
 करिष्य (D₁₂ व्ये [note hiatus]) इत्युक्त्वा, D₁₁ करिष्या
 मीति सख्य —^b) N₂ B₁ 3 दातुम् V₂ 4 D₁₁ T₂ (after
 corr sec m as in text) G₁ 3 4 इतुम्, D₃ (before
 corr) कर्तुम् (for हातुम्) N₂ V B₁ 3 D₃ (before corr)
 G₁ अर्हति (for इच्छसि) —^c) S₁ अमुक्तो, M₄ अनुक्तो (for
 अयुक्तो) V₄ राघवेणोपयुक्तो वै (sic) —^d) N V B D₁₃ T₃
 M₄ सत्य (V₂ *वो)धर्म, D₁₁ सत्यस्यास्य, Cg k t as in text
 (for कुलस्यास्य) N₂ V₁ 3 B₂ 3 (m as in text also) 4
 न्ययिक्रम, all C₃ as in text (for विपर्यय)

3 ^a) S₁ N₁ V₁ 3 B D₁ D (except D₂ 14) M₄ Cg t
 यदि V₂ 4 न हि, Cm as in text (for यद्) S₁ D₁ 3 5 7 9
 11 12 स्व, N V B D₁₀ 13 M₄ [ए]त्त, Cm g t as in text
 (for इद्) S₁ D₁ 3 5 7 9 न क्षणे (D₂ *मी), V₁ B₃ ते क्षय,
 D₁₁ नेच्छसे, D₁₂ रक्षसे, T₃ ते क्षमा, M₃ च क्षम Cm t as
 in text (for ते क्षमे) D₁ दातु (for राजन्) —^c)
 S₁ D₁—3 5 7 11 12 हीनप्रति (D₁₁ *)ज्ञ (D₃ 5 12 "ज्ञ), T₃
 "प्रतिज्ञ, Ck as in text (for मिथ्याप्रतिज्ञ) D₃ काकुत्स्थ
 N V₂ 4 B D₁₀ 13 M₄ मिथ्या (V₂ M₄ प्या)प्रतिज्ञा कृत्वेमां
 (V₂ त [sic] मवा), V₁ मिथ्यप्रतिज्ञे कृत्वा मा —^d) N V
 B D₁₀ 13 सुते (N₁ m) सह, D₂ 8 Ct सुहृद्, D₁
 सु^a (for सवाध्व) M₄ सुखी सह सुतेभ्य

4 ^a) N₂ V B D₁₀ 13 M₄ तस्माद् (for तस्य) N₁
 दो*, B₄ श्रेय, Cg g as in text Cm श्रेय (for रोप)
 N₁ V₂ 3 B₂ 4 D₁₀ 13 ताप, N₂ ताम, V₁ पतिनद्
 (submetric) V₄ तमाद्, B₁ परीक्षातु (sic) (for
 परितस्थ) —^b) N V B D₁₀ 13 M₄ विश्वामित्र स्मरणात्
 —^c) D₁₂ चचार (as in text also) (for चचार) N₂

चचार वसुधा कृत्वा निवेश च भयं सुरान् ॥ ४
 व्रत्तरूपं तु विज्ञाय जगत्सर्वं महानृपिः ।
 नृपतिं सुव्रतो धीरो वसिष्ठो वाक्यमब्रवीत् ॥ ५
 इक्ष्वाकूणां कुले जातः साक्षाद्धर्म इनापरः ।
 घृतिमान्सुव्रतः श्रीमान्न धर्म हातुमर्हसि ॥ ६
 त्रिषु लोकेषु निर्यातो धर्मात्मा इति राघवः ।
 स्वधर्मं प्रतिपद्यस्व नाधर्मं वोदुमर्हसि ॥ ७

मीता, D₁₂ कृत्वा (for इक्ष्वा) N₂ V B D₁₀ 13 M₄ वृत्ति
 मी (V₁ *)ता —V₃ reads 6^d for 4^d repeating it in
 its proper place —^d) S₁ V₁ 2 4 B₂ 4 सुराश्च भयमा-
 पिनाद्, N₁ B₁ D₁—3 5 7 10—13 M₄ सुराश्च (D₁ 3 7 *राणा)
 भयमानिना (D₁₁ *)त्, D₂ D₃ (after corr pr m) 3
 देवाना च भय मदद् Ck सुरान्भय प्रमिदुमर्हति (प्रविदेशे
 ति) । ७

5 ^a) Cm g k t व्रत्तरूप (as in text) D₄ स (for तु)
 S₁ D₁—3 5 7 11 12 भोयामि (D₁₁ वि [sic]) मृत त ज्ञत्वा (S₁
 D₁₂ विज्ञाय [as in text] D₁₁ ज्ञाया च), N V B D₁₀ 13
 M₄ कौशिकं वृपतिं दृष्ट्वा (N₁ V B₂ M₄ मवा) —^b) S₁ N₁
 V₁ 4 B₂ 3 D₃ (after corr) 10 12 13 M₄ जगत्सर्वो, V₂ 3 B₄
 D₁ 3 7 जगन्मिरो, B₁ जगद्वाता (for जगत्सर्व) N V B
 D₁—3 5 7 10 13 M₄ महामुनि D₁₂ विश्वामित्र महामुनि —^c)
 S₁ D₁ 3 5 7 11 13 घृतिमाद् (for नृपतिं) D₁ सुव्रतो S₁ D₁—
 3 5 7 11 13 धीमान् (for धीरो) —^d) S₁ D₁₁ (m) 12 नृपम्
 D₁ 3 5 7 इदम् (for वाक्यम्) —Fcr 5^d N V B D₁₀ 13
 M₄ subst

594* वसिष्ठो भगवान्वाक्यं राजानमिदमब्रवीत् ।

[N₂ B₃ D₁₀ वीक्ष्य (for वाप)]

B₃ cont

595* दिव्यज्ञानेन भविष्य ज्ञात्वा चैव महामुनि ।

6 V₃ reads 6^d for 4^d for the first time repeat-
 ing it here —^b) N V₁ 3 4 B D₁₀ 13 स्वदे (for [अ]पर)
 —^c) D₄ घृति^a (for घृतिमाद्) S₁ D₁₂ सत्यव न् (D₁₂ मान्
 [sic]), D₄ सुव्रत (for सुव्रत) S₁ D₁₂ धीरो, D₁ धीरो
 D₂ 3 7 धी (D₂ धी) र (for श्रीमान्) N V₁ 3 B D₁₀ 13 M₄
 सत्यवाक्यसतत भूत्वा, V₄ स्व चैव सत्यवाक्यत्वे (sic) D₁₁
 प्रतिश्रुत्य दद मीति —^d) N V B D₁₀ 13 M₄ मा (V₄ अ)नृप
 (for न धर्मे) N V B₁ 3 4 D₁₃ M₄ वक्तुम् B₃ D₁₀ कर्तुम्
 G₁ 3 इतुम् (for हातुम्) S₁ D₁₁ इच्छसि D₃ अर्हति

7 D₃ om (hapl) 7^{ab} and 1 x of 596* B₃
 repeats 7^{ab} after 595*, as in D₁ x of D₁ 3 5 7 11
 विरवाते —^b) Note hiatus between धर्मात्मा and इति
 Ck धर्मात्मा इतीति । अस्ति च इच्छान्दस । ७ —S₁ D₁ 3 5 7

संश्रुत्यैव करिष्यामीत्यकुर्वाणस्य राघव ।

इहापूर्ववधो भूयात्तस्माद्रामं विसर्जय ॥ ८

कृतास्त्रमकृतास्त्रं वा नैनं शक्ष्यन्ति राक्षसाः ।

गुप्तं कुशिकपुत्रेण ज्वलनेनामृतं यथा ॥ ९

7 11 12 [ह] ति यदोघनः (D1 5 5 7 गतः; D11 ०धुना); D9 युधि राघव, T2 G2 4 M1-5 राघव; M4 [ह]ति महीपते (for इति राघव) N V B D10 15 सत्यवागिति च (V: 4 om. च [sub-metric]) प्रमो. —After 7^{ab}, S1 B2 (after repetition) D1- (D2 om 7^{ab} and 1 1) 5 5 7 11 12 ins

596* न तद्विह्वयया बुद्धया दृष्टतः कर्तुमर्हसि ।

सृष्टा धर्मव्यवस्थार्थं संपत्ता रक्षणाय च ।

क्षत्रिया क्षत्रियधेष्ट तथा सवितुमर्हसि ।

नान्यो धर्म क्षत्रियाणां रक्षणासात इत्येव ।

[No comm —(1 1) S1 [अ]ति-, B2 च (for तद्). D11 मद्रा (sic) (for बुद्धया). B2 सर्वथा हातुमर्हसि (for the post half) —B2 om 1 2-4. —(1 2) D2 धर्मय तपसा, D3 6 7 रथायां (D5 ०थे) (for धर्मव्यवस्थार्थं). S1 तपसा, D3 7 तपसे (for तपसा). D2 रक्षणाय च क्षत्रिया (for the post. half). —D2 om. (hapl.) from धर्म in 1. 4 up to na in 7^d. —(1 4) D11 विचदे, D12 उच्यते (for दप्यते).]

—^c D1 स धर्म; D3 स्वधर्म; T2 (after corr. sec. m) धर्म्य (for स्वधर्म) —^d S1 D12 धर्म हातुम् (for [अ] धर्म बोहुम्). —For 7^{ad}, N V B D10 15 subst

597* नादस्य सृष्टादी भूत्वा धर्मव्यपेक्षया ।

[B2 [अ]व्य (for [अ]व). B2 (m) D13 वक् (for नारी). B2 (m) बुद्धा, D13 राजन् (for भूत्वा) V2 B1 पुन^०. B4 २व रव्य (for धर्मव्यपेक्षया).]

8 D2 om from the last four syllables in 8^d up to शक्ष्यन्ति in 9^d —^a D2 आश्रुत्वा; D14 T2 सस्रुत्वा; G2 सस्रुत्वा (sic), Cm g as in text (for सस्रुत्वा). M1 2 4 [ए]व, Cg as in text (for [ए]व). Dt D2 S Ct प्रतिश्रुत्य करिस्वेति (archaic combination) D2 T2 राघव; Dt D2 8 (all with hiatus between ^a and ^b) 5 G1 S Ct उक्तं (D2 G1 [ह]युक्त्वा) वाच्यमनुष्यैः. S1 D1-5 7 11 12 करिष्यामीति सस्रुत्वा तत्ते (S1 ०द्वै, D2 ०व; D3 ०तो) राजब्रह्मर्षि- (D3 om ब्रह्मर्षि), N V B D10 15 कर्तारमीडि प्रतिज्ञाय न करिष्यति चेष्टुप —After 8^{ab}, N V B D10 11 (after 8) 13 ins

598* विधामित्रवचनत्वाद्वा पापमपाप्यसि ।

अमृतं मा वच कार्ष्णिमां धर्मादीनां पथः ।

[No comm —(1 1) D1 वृत्ता मि- (sic) (for विधामित्र) B1-स्रव (for स्रवत्). D10 पापम् (for पापम्). —(1 2) D12 अमृत. V2 तद्वच बुद्धिम्; D11 मा वत् (for मा वत् कार्ष्णि). N V 2 4 B2 4 D13 धर्मन् (for धर्मन्) V2

एष विग्रहवान्धर्म एष वीर्यवतां वरः ।

एष बुद्धयाधिको लोके तपसश्च परायणम् ॥ १०

एषोऽस्त्रान्विविधान्येति त्रैलोक्ये सचराचरे ।

नैनमन्यः पुमान्येति न च वेत्स्यन्ति केचन ॥ ११

नियम (sic), B2 लीनश (sic) (for नीनश) B1 मा धर्मादी नश पथ, D11 मा धर्मादिव व्यतीनश (for the post. half). —After 598*, B2 repeats 7^{ab} as in D1.]

—^c S1 D1 5 7 9 11 12 G1 M2 पूतं (D12 ०व); D2 इष्टासेवै (for इष्टापूर्ते) D1 glosses: अग्निहोत्र तपः सत्यं वेदानां चैव पापणम् । आतिथ्यं वैश्वदेवं च इष्टमित्यभिधीयते ॥ वापीकूपत-डागानि देवतायतनानि च । अन्नप्रश्नमनाराधनमित्यभिधीयते ॥ S1 D1 2 5 9 11 12 हरेद्; G1 अयो; M2 वृथा; M4-हरो; Cm g.k t as in text (for-चयो). S1 D1 2 5 7 9 11 12 M1 धर्म (D1 M4 ०मैत); Cm k.t as in text (for भूयात्) N V B D10 15 सत्यप्रतिज्ञां (V1 2 4 B1 2 4 D13 ०ज्ञ) तां रक्ष. —T1 missing from स्माद् up to पुने in 9^c on a damaged fol. —^d N V B (B1 transp राजन् and रामं) D10 11 13 राजब्रामं (for तस्माद्राम). —After 8, D11 ins 598*, then repeats 8^{ad} as in N.

9 T1 missing up to पुने in 9^c. D2 om. up to शक्ष्यन्ति in 9^d (for both cf. v.l 8). —^a M2 reads स्म inf. lin sec m. D13 वक्तृत्वात् कृतास्त्राश्च; G1 मकृतार्थं च. —^b S1 चर्द्धयति, V2 D2 दक्षयति (sic), D2 द्रक्षयति; D2 घर्द्धति, D11 12 घक्षयति (D12 ०ति) (both sic) Cr.m g.k t as in text (for शक्षयन्ति). V2 राघव (for राक्षसा). —^c N2 युसा (sic); V2 D2 युस (for युस) —^d D2 T2 (before corr. sec m) [आ]वृत्त (for [अ]सृत्त) N V B D10 13 M2 प्रघ (V2 ०ह) पयितुमाहये (B4 ०मिद्वाहये [hypermetric], M4 ०मंजसा).

10 ^a D2 गितवान् (sic) (for विग्रहं). D11 चध्र (sic) (for धर्म) —^b D2 द्वेव (for एव). N V 2 4 B1 2 4 D10 12 M2 चेत् (B4 M2 धर्म) विद्वा (N2 B2 D10 ०वतां); V2 B2 धर्ममृतां, Cm as in text (for वीर्यवतां). D11 स्वरः (sic) (for वत्) V1 एव वैधानः प्रमु. —^c Dt D4 4 5 9 T2 Cm t विद्या- (for बुद्धया) M2 वरो (for [अ]विश्वे) N V B D10 12 मा वीर्यवतां (V2 धर्ममृतां) धिष्टो. —^d G1 5 परायण; Cm g.t as in text (for परायणम्). N V B D10 13 विद्याज्ञानवरोनिधि; D2 7 तप सत्यपरायण; M2 विज्ञान तपरोनिधि.

After 10, D13 reads for the first time st. 11-19 (including star-passages) as in N group, omitting 16^{ab}, then reads (var.) as in text omitting 18 only (repeating 15^{ab}, 16^{ad}, 17^{ab} and 19^{ad}).

11 For subst in N V B D10 M2 for 11-13 see below. —^a S1 D1-5 7 9 11-12 T1 3 G1 M1 [अ]ध्र

न देवा नर्ययः केचिन्नासुरा न च राक्षसाः ।
गन्धर्वयक्षप्रपराः सकिंनरमहोरगाः ॥ १२
सर्गास्त्राणि कृशाश्वस्य पुत्राः परमधार्मिकाः ।
कौशिकाय पुरा दत्ता यदा राज्यं प्रशासति ॥ १३
तेऽपि पुत्राः कृशाश्वस्य प्रजापतिसुतासुताः ।

विविध, Cm k as in text (for ^{१२}स्त्रान्वित्विधात्) T₁ missing from 11^b up to यक्ष in 12^a —^b) D₁₁ त्रै^{१२}क्ये, G₄ °क्य (for त्रैलोक्ये) —^c) S₁ D₁ ३ ३ ७ १ १ १ ३ [ए]तद्, Cm g k t as in text (for [ए]नम्) D₉ नैनमभ्युत्सुख याति —^d) S₁ D₁ ३ ३ ७ १ १ १ ३ न च वेत्यति कश्चन, Cm k as in text (for ^a)

12 T₁ missing up to यक्ष in 12^a (cf v l 11) —^a) D₁ देवा (for देवा) D₄ G₁ ३ M₁ ३ ऋषय (for नर्यय) —^b) D₁ D₈ [अ]मरा (for [अ]सुरा) D₁₁ पद्मगा (for राक्षसा) —^c) D₁ °रक्ष (for °यक्ष) —^d) S₁ D₅ १ १ ३ न (for स) D₃ महे *गा

13 ^a) D₄ 14 S (except T₃ M₄) कृशाश्वस्य, Cg t as in text (for कृशा°) Ck कृशनाम प्रजापतिवत्के । Ct परमधार्मिका इति पठे परमधार्मिकप्रतिष्ठान्त इत्यर्थे । पतेनापि दुर्लभं च ध्वनितम् । —For 13^a S₁ D₁ ३ ३ ७ १ १ ३ subst

599* अक्ष ह्यस्मै कृशाश्वेन परै परमदुर्नैषम् ।

[S₁ D₁₅ ह्यस्मिन् D₁₁ अस्मै (for ह्यस्मै) D₁ gloss प्रजापतिनास्त्राणि दद्याति D₉ कृशाश्वेन S₁ पर D₁₁ परै (for परै) D₂ परमर्नैष (sic)]

—^c) S₁ D₁ ३ ३ ७ १ १ १ ३ दत्ते Cm g t as in text (for दत्ता) —^d) D₄ (m) यदा S₁ D₅ १ १ १ ३ समन्वशात् (S₁ °धात्, D₁₃ °न्यियात्) D₂ ३ ७ समाविशत्, D₉ °त्यति T₃ °सते, all Cs as in text (for प्रसासति) —For 11 13 N V B D₁₀ M₄ subst, D₁₃ ins after 10

600* दिव्यान्ध्र्याण्यशेषाणि वैदेष्ट कुशिकामजः ।
देवाश्च न विदुर्मानि कुतोऽप्ये सुवि मानवा ।
दत्तान्ध्र्यस्मै कृशाश्वेन दिव्यान्ध्र्याण्यशेषोपेत ।
मर्दं पालयत पूर्वं प्रीतेनामिततेजसा ।

[(1 1) V₂ दिव्यान्ध्र्याणि (sic) V₃ 4 D₁₃ M₄ [अ]शेषेण M₄ विदेष्ट सुवि कैपिक (for the post half) —(1 2) V₂ वेदाश्च न V₃ देवा नापि V₄ देवापि न (sic) (for वेदाश्च न) V₄ मानवा (for मानवा) —(1 3) V₂ दत्तास्ते तु (sic), D₁₃ दत्तान्ध्र्यस्य (for °स्मै) V₂ कृशाश्वेन (sic) B₄ दिव्यान्ध्र्य *शेषोपेत (for the post half) —(1 4) V₂ 4 B₄ पालयते D₁₃ पायता V₄ सर्वं (for पूर्व)]

14 N V B₁ D₁₀ M₄ om 14 T₁ missing from कृशा up to कन्ये सु in 15^a —^a) S₁ B₂ 4 (B₂ marg) D₁ ३ ३ ७ १ १ १ ३ त हि; D₂ न हि; Cm g t as in text (for तेऽपि) D₁ कृशाश्वस्य (sic) D₂ कृशाश्वस्य D₄ (before

नकरूपा महानीर्या दीप्तिमन्तो जयानहाः ॥ १४
जया च सुप्रभा चैव दक्षकन्ये सुमध्यमे ।
ते सुनातेऽश्वशस्त्राणि शतं परमास्त्ररम् ॥ १५
पञ्चाशतं सुतोऽहमे जया नाम वरानपुरा ।
वधायासुरसैन्यानाममेयान्कामरूपिणः ॥ १६

corr as in text) 14 T₃ G M₄ ३ भृशाश्वस्य, D₁ कृशाश्वस्य (sic) (for कृशा°) —^b) S₁ B₂ 4 D₁ ३ ३ ७ १ १ १ ३ सुतोपमा (D₁₁ °मा), D₉ सुता स्मृता, B₂ D₁₁ समप्रभा, D₁₄ सुनास्तु ये, T₃ सुता मता, G₁ सुतै समा, G₁ सुतास्तु ता, M₃ सुता हि ता, Cm g t as in text (for सुतासुता) —^c) S₁ B₂ 4 D₁ ३ ३ ७ १ १ १ ३ °मानो (for महावीर्या) —^d) S₁ जितद्रिया, B₂ D₁₁ महाबल, B₃ 4 °निरता (for जयावहा)

15 T₁ missing up to कन्ये सु in ^b (cf v l 14) —^a) D₂ जयवत्, T₃ देवा°, Cm g as in text (for जया च) N V B D₁₁ (first time) M₄ विजया (for सुप्रभा) M₄ चास्ता (for चैव) D₃ १३ जया वसुप्रभा चैव —^b) S₁ N V B D₁ ३ ३ ७ १ १ १ १ ३ (both times) M₄ दाक्षाय (S₁ V₃ ३ D₂ ३ °रि)ण्यो, D₃ दाक्षायिणी, D₈ दक्ष° (sic) (for दक्षकन्ये) N V B D₁ (first time) महाव (V₄ °म)ते (for सुमध्यमे) —^c) D₁ D₈ १० T₃ M₂ Ct सुते, Cm g as in text (for सुनाते) D₁ D₈ १० T₃ [अ]स्त्राणि, M₂ तस्य (for उश्र) S₁ D₁ ३ ३ ७ १ १ १ १ ३ तयोस्तु (D₁₁ °श्र) वान्य (D₁ °न्याय [metathesis])पत्यानि D₈ ते सुतेक्ष *शस्त्राणि; G₁ सुतेक्षाणि च°, G₃ तयोर्पत्यान्ध्र्याणि M₃ तेऽस्त्राणि चैव —^d) G₁ पर, Cg as in text (for शत) S₁ D₁ ३ ३ ७ १ १ १ १ ३ परमदुर्नैष, Cg as in text (for भास्वरम्) —For 15^a N V B M₄ subst D₁₃ ins after 15^a (first time)

601* ययोर्ह्याण्यशेषाणि जज्ञिरे विष्णुनृपता ।

[V₄ B₂ तयोर् (for ययोर्) V₂ [अ]नेकाणि B₂ [अ]शेषेण M₄ [अ]पत्यानि (for [अ]शेषाणि) D₁₃ तयो पुता अशेषेण (for the prior half) V₂ विप्र° (sic) (for विष्णुनेजा)]

16 ^a) D₁₂ पंचदात S₁ D₁ ३ ३ ७ १ १ १ १ ३ °ज (D₁ ३ १ १ ३ य)जे, N V B D₁₀ तत्र (V₂ °त्र) सुताज, G₂ सुता°, M₄ तु पुत्राणा (for सुतोऽहमे) —^b) S₁ सुता T₃ जये (for जया) S₁ D₁ D₁ ३ ३ ७ १ १ १ १ ३ G₂ M₂ लब्धवरा (for नाम वरान्) D₁ D₈ ३ Ct त वरान्, Cr m परान् (for पुरा) N V B D₁₀ M₄ जन (V₁ °)यामास वै जया —^c) S₁ D₁ ३ ३ ७ १ १ १ १ ३ (second time) M₄ पर, N V ३ B D₁₀ १३ (first time) रिपु, V₂ दैत्य, V₄ त्रिप्र (for [अ]सुर) —T₁ missing from विण (in ^d) up to क्रामान् in 17^a on a damaged folio —^d) S₁ N V B D₁ ३ ३ ७ १ १ १ १ ३ (both times) M₄ अश्या (D₁ °शु), D₂ M₃ अतोषान्, D₁₁ प्रश्रयान्, Cg as in text (for अमेयान्) D₁ D₈ Cm t अममयानरूपिण



२१

तथा वसिष्ठे ब्रुवति राजा दशरथः सुतम् ।
 प्रहृष्टवदनो राममाजुहान सलक्ष्मणम् ॥ १
 कृतस्वस्त्ययनं मात्रा पित्रा दशरथेन च ।
 पुरोधसा वसिष्ठेन मङ्गलैरभिमात्रितम् ॥ २
 स पुत्रं मूर्ध्नुपाधाय राजा दशरथः प्रियम् ।
 ददौ कुशिरुपुत्राय सुप्रतिनान्तरात्मना ॥ ३

21

1 T₂ begins with श्रीरामचन्द्राय नम —^a) Ñ V B D₁₂ 12 M₁ एवमुक्त्वा (B₁ 'क्या') वसिष्ठेन —^b) D₁ D₈ 8 स्वय (for सुतम्) —^c) Ñ V₁ 3 4 B D₁₀ 13 सप्रहृष्टमना (B₃ marg after cor^a मनसा [hypermetnc]) V₂ स्वय हृष्टमना, D₁₁ 12 'वदन (for प्रहृष्टवदनो) —^d) V₁ आजहार (sic) (for आजुहाव) D₁₁ स सलक्ष्मण (ditto) G₂ सलक्ष्मणं (for सलक्ष्मणम्)

2 ") S₁ D₁ 3 5 7 11 12 T₂ G₁ 'गनो, Cmg k t as in text (for कृतस्वस्त्ययन) —^b) D₁ राजा (for पित्रा) M₁ पित्रा दशरथस्तदा —^c) S₁ D₁ 5 11 12 तथा वामिनः, M₁ तथामिनः (for वसिष्ठेन) —^d) S₁ T₂ 'मन्त्रितौ (T₂ 'त), D₁ (gloss द्वाभ्यामनन्तरं) : 'नदित, D₈ 'नदिन (sic), D₁₁ 12 'नदितौ, D₇ 'वदित, Ct as in text (for वमिमन्त्रितम्) —For 2 Ñ V B D₁₀ 13 subst

609* बादौ कृतस्वस्त्ययनं मातुमि कृतमङ्गलम् ।
 स्वयं चैव वसिष्ठेन कृतस्वस्त्ययनप्रियम् ।

[(1 1) D₁₂ कृता (for the first कृत्) V₂ मन्त्रिणि (for मातुमि) —(1 2) V₁ 3 B₃ किमां (sic) (for किम्)]

3 ") Ñ V B D₁₀ 13 ब्रह्मामूर्धेनि (for स पुत्रं मूर्ध्नि) D₁₁ [उ]पाधाय (for [उ]पाधाय) S₁ D₁ 11 12 ततो मूर्ध्नि समाधाय, D₁ स च पुत्रौ समाधाय, D₂ तत पुत्र समाधाय, D₂ 7 तत पुत्रौ समाधाय —^b) B₃ रात्र (sic) M₁ राम (for रात्रा) D₂ द * रथ, D₁₁ ददा **, T₂ 3 M₁ 'रथ (for दशरथ) S₁ D₁ 5 11 13 सुतो, Ñ V B D₁₀ 13 सुत, D₁ D₂ 8 तदा, D₂ 7 शुभौ, M₁ स्वय (for प्रियम्) —^c) D₁ वैशिक —^d) G₁ सुहृतेन (for सुप्रतिनेन) S₁ D₁ 3 5 7 11 13 विशामिप्राय पीतते: Ñ V B D₁₀ 13 लक्ष्मणपुत्रं तदा

4 ") Ñ V₁ B₂ 3 D₁₀ 11 13 अवापुष्यो, V₂ 3 वयौ पुष्यो, B₁ 4 M₁ अमृष्युष्यो (for सुखस्पर्शो) V₁ ततो रात्र ** सुष्यो —^b) D₁ D₂ 8 9 T₂ 3 G₂ 4 नीरन्तस्को Ñ V B₂ 3 D₁₀ 13 नीरन्तस्को (V₂ 'क्ष, V₃ 'क्ष) शुभं शुचि, B₁ नीरन्तसु सम शुचि (), B₁ नीरन्तश्च (sic) शुभं शुचि, D₁₁ नीरन्तस्कुमावद्, M₁ नीरन्तस्कु शिरं शुच —For 4^a) S₁ D₁ 3 5 7 12 subst

ततो वायुः सुखस्पर्शो विरजस्को बचौ तदा ।
 निश्चामिन्नगतं रामं दृष्ट्वा राजीवलोचनम् ॥ ४
 पुष्पवृष्टिर्महत्पासीद्देनदुन्दुभिनिखनः ।
 शङ्खदुन्दुभिनिर्घोषः प्रयाते तु महात्मानि ॥ ५
 निश्चामित्रो ययाग्रे ततो रामो महापशः ।
 काकपक्षधरो धन्वी तं च सौमित्रिन्वगात् ॥ ६

G 1 25 6
 B 1 22 6
 L 1 20 6

610* त दृष्ट्वा देवगन्धर्वा पुष्पवृष्टिं समाददु ।

[S₁ D₁₂ सुत^a, D₂ 7 'दयु D₃ पत^a (for समाददु)]
 —^d) V₁ B₂ C₁ निश्चामित्र, D₁₁ * क्षामित्र D₁₀ नर,
 D₁₂ -युत, Ct [क्ष]गत (for -गत) S₁ D₂ 3 5 7 11 12 13
 T₂ 3 G₁ M₁ दृष्ट्वा राम (by transp) D₁₁ repeats
 (ditto) गत दृष्ट्वा

5 At 5^a and 5^b D₁ (gloss) दुष्टवधो भविष्यतीति
 —^b) D₁ D₁₂ निखनं, D₂ G₂ निखन, Cmg as in text
 (for निखन) D₂ 3 5 7 11 गीतवोपस्तथापर (D₂ 'र), M₁
 वीतमेधे तदावरे —For 5^b) S₁ D₁₂ subst

611* सुपुष्यवृष्टिं पङ्कजनिरासीद्विगन्धरे ।

[D₁₂ स (for सु) D₁₂ इतरे (for दिगन्तरे)]
 On the other hand Ñ V B D₁₀ 13 subst

612* पपात पुष्पवृष्टिं क्षात्रीतनादश्च शुश्रुवे ।

[V₁ 4 om V₂ वा (for वाद) V₂ रसीतनादाश्च, V₄ गीत^a,
 B₁ 'नृपय, B₁ 'नदाश्च, D₁₂ गीत वाप (for गीतनादाश्च)]
 —^b) S₁ V₁ B₂ D₁ 2 7 11 12 M₁ घोष (D₂ 7 'पा, D₁₂ 'दै)
 श्च, V₂ B₂ D₁ G₂ निघोष (D₁ G₂ 'दै) (for निघोष)
 D₃ शङ्खदुग्धादभियोगाश्च (corrupt) —D₁ illeg for 5^a
 except last two letters (स्वन) —^d) C₁ प्रयानि (for
 'त) M₂ 3 सु, M₁ वै (for सु) S₁ D₁ 11 12 प्रयावत महात्वन,
 Ñ V B D₁₀ 13 प्रयाते सुचन्दने, D₂ 3 7 प्र (D₂ प्रा)वायन
 महात्वन

6 ") S₁ विशामित्रे (sic) S₁ D₁ 3 12 प्रयाग्रे (for
 ययाग्रे) —^b) D₁₁ T₂ 3 G₂ 4 M₁ घनुर्धर (for महापशः)
 Ñ V B D₁₀ 13 त (B₃ *) राम (V₁ * *) दृष्टवोन्वगात्
 (V₂ 4 B₁ 3 [marg] 4 'न्वगात्) —^c) D₃ काकपक्ष * तौ
 D₁ (gloss) (स)नारदव्यंनने यो दि दिक्खयुक्कित्तास य ।
 ऊतपोद्दवयं यं काकपक्षधरो हि स ॥ —^d) S₁ D₁ 2 5 7 11
 तत, D₁₁ तौ (for त च) Ñ V₁ B₂ 3 D₁₀ 13 M₁ अन्वगात्
 —After 6 Ñ B₁ (marg) D₁₀ 13 ins. whereas B₂ 4
 ins after 7^a

613* विशामित्रगतं रामं दृष्ट्वा देवा नराववा ।

महर्षमनुल प्राप्तं दशभीववर्धयेन ।

[(1 2) D₁₁ प्रादुर (for प्राप्त)]

कलापिनौ धनुष्पाणी शोभयानौ दिशो दश ।
विश्वामित्रं महात्मानं त्रिशीर्षाविष पद्मगौ ।
अनुजम्मतुरधुद्रौ पितामहमिवाश्विनौ ॥ ७
बद्धगोधाङ्गुलिप्राणौ खड्गवन्तौ महाद्युती ।
स्थापुं देवमित्राचिन्त्यं कुमारानि पावकी ॥ ८

7 \tilde{N} V B₁ 2 D₁₀ M₄ om 7^{as} —^a D₁ (gloss) बद्धगौरी (for कलापिनौ) —After धनुष्पाणी, B₄ (gloss) धनुर्वरी । तदानुजम्मतु —^b B₄ D₁-3 5 7 11 12 °मानौ, T₃ °यतौ, Cm g k t as in text (for शोभयानौ) & Ct शोभयानौ मुगभाव आरं । & S₁ B₃ 4 D₁-3 5 7 12 महापथे, D₁₁ शुभे यथा (for दिशो दश) —After 7^{as} B₃ 4 ins 613* —^c S₁ D₁-3 5 7 11 12 समन्वेता, M₄ महामार्ग (for महात्मान) D₂ विश्वामित्रसमन्वेतात् —^d D₂ अशीर्षाव (for त्रिशीर्षाव) \tilde{N} V B D₁₀ 13 M₄ ताडुभौ रामलक्ष्मणौ, M₂ Cr mp पंचशीर्षाविबोरौ —S₁ D₁-3 5 7 12 G₁ om 7^{ef} —M₁ repeats 7^{ef} after 616* —For 7^{ef} \tilde{N} V B D₁₀ 11 13 M₄ subst

614* तदानुययतुर्वरी येन्यद् देवमित्रिनौ ।

[V B₁ 3 D₁₁ M₄ तदा (V₁ तम, D₁₁ ततो)नुजम्मतु (B₃ M₄ °नयतु)]

—After 7 Dt D₈ 8 (all first time) G₁ M₂ ins 1 2 of 616* then cont while D₄ 9 14 T G₂-4 M₁ 2 Cm g ins after 7

615* तदा कुशिकपुत्र तु धनुष्पाणी स्वलङ्करी ।

[Cr k t no comm G₁ 4 तथा, M₃ तत (for तत्)]

8 ^b M₄ °बलौ (for महाद्युती) \tilde{N} V B D₁₀ 13 खड्गत्पुण धनुर्वरी —After 8^{as} Dt D₄ 8 9 14 S (except M₄) Ck t ins

616* कुमारी चारुयुषी भ्रातरो रामलक्ष्मणौ ।
अनुयातौ श्रिया दीप्तौ शोभयेतामनिन्दितौ ।

[G₁ om 1 x Ck t no comm on 1 x —G₁ M₂ om 1 2 here and read before 615* M₁ om 1 2 Dt D₈ read 1 2 for the first time after 7 repeating here —(1 2) D₉ (after corr) G₂ M₁ शोभयेतात्, T₃ °मानात् (for शोभयेतात्)]

—M₁ repeats 7^{ef} after 616* —^c D₂ 11 13 T₃ स्थापु, D₁₄ repeats (for स्थापुं) S₁ °विच्यौ G₁ महा° (for ह्वाविन्द्य) \tilde{N} V B D₁₀ 13 M₄ तदा (V₁ यथा, M₄ उदा) अनुजम्मतु स्थापुं (V₃ °त) —^d V₂ 2 D₂ (gloss स्वंद वितातौ) पारकी, D₁₃ पावकं (for पाररी)

9 ^a B₁ अण्यर्थः D₁₁ °अर्थाथं (for अण्यर्थ) \tilde{N} 1 अगात्वा (hypermetric) (for गत्वा) —^b D₇ आख्यां

अध्यर्धयोजनं गत्वा सरय्या दक्षिणे तटे ।
रामेति मधुरां वार्णी विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ॥ ९
गृहाण वत्स सलिलं मा भूत्कालस्य पर्ययः ।
मन्त्रग्रामं गृहाण त्वं बलामतिबलां तथा ॥ १०
न श्रमो न ज्वरो वा ते न रूपस्य विपर्ययः ।
न च सुप्तं प्रमत्तं वा धर्षयिष्यन्ति नैरुताः ॥ ११

(for सरय्या) M₄ दक्षिणेन तु (for दक्षिणे तटे) —After 9^{as}, B₃ 4 ins

617* दक्षिणेन निवासाय नचास्तीर ततो ययौ ।
while M₄ ins

618* ते तत्र वै निवासाय देश कचिदुपायतु ।

भुक्तवन्तमुपासीनं तत्रावेक्ष्य तु राघवम् ।

—^c V₁ च मधुर (for [इ]ति मधुरा) —After 9, B₃ 4 ins

619* उवाच राममामङ्ग्य हित वचनमर्धवत् ।

10 ^a D₂ सलिलं रामत्, D₁₂ वत्स *लिल, M₃ सलिलं वत्स (by transp) (for वत्स सलिल) \tilde{N} V B D₁₀ 13 वत्स (V₁ राम) राम जल (V₃ 4 °न) ताय (V₁ °*)द, D₁₁ वत्स राघव भद्र ते —After 10^{as} \tilde{N} V B D₁₀ 11 13 ins

620* विषिवत्समष्टुमहंसि ।

उपदेक्ष्यामि ते श्रेयो

[(1 x) V₁ विषिना D₁₁ सलिल (for विषिवत्स) V₃ B₃ 4 प्र (V₃ छ)ष्टु (sic) (for स्मष्टु) B₁ अहंसि —(1 2) V₁ B₁ उपदेक्ष्यामि (sic) B₃ रेद्वेते in marg]

—^b V₄ D₁ 4 Cm g °विपर्यय, Cr k t as in text (for कालस्य पर्यय) D₂ तत्कालस्य विपर्यय —^c S₁ D₂ 5 7 12 [इ]मं, D₂ [ए]न, Ck t as in text (for त्वं) \tilde{N} V B D₁₀ 11 13 गृहाण द्वे (V₂ B₃ D₁₀ त्वम्) इमे त्रयो —^d B₄ अतिबलं (sic) M₄ तदा, Ct तथा (as in text)

11 ^a G₁ 2 M₂ वा (for second n) S₁ D₁-3 5 7 11 12 M₄ जरा, D₄ भ्रमो, Ct as in text (for ज्वरो) T₃ M₃ transp श्रमो and ज्वरो S₁ D₁-3 5 7 तुभ्य, D₁₁ जातु, D₁₂ तुल्य (for वा ते) —^b S₁ D₁-3 5 7 11 12 [उ]प सक्षय (D₁₁ °यं) G₂ [अ]पि सक्षय, M₄ [अ]ति सक्षय, Cg t as in text (for विपर्यय) —For 11^{as} \tilde{N} V B D₁₀ 13 subst

621* न ते श्रमो जरा चाभ्या भविता नाह्नैरुत्तम् ।

[\tilde{N} 1 (m) च (for ते) \tilde{N} B₁ आभ्यां V₃ आख्यां (sic) B₃ व्यर्थ, D₁₃ वापि (for आभ्यां) V₃ चांग, V₄ नाह्नै, D₁₁ °कृति (for नाह्नैरुत्तम्)]

—^c S₁ D₁-3 5 7 11 13 त्वा (for च) B₃ मुत्तं च (by transp) B₁ प्रवर्त, D₂ प्रमत्ता (sic) (for प्रमत्त) —^d Dt भर्तं (sic) G₂ M₁ आच° (for धर्षयिष्यन्ति) D₁₁ G₂ 2 राक्षसा, D₁₃ नैरुता (sic) (for नैरुताः)

न बाहोः सदृशो वीर्ये पृथिव्यामस्ति कश्चन ।

त्रिषु लोकेषु वा राम न भवेत्सदृशस्तन ॥ १२

न सौभाग्ये न दाक्षिण्ये न ज्ञाने बुद्धिनिश्चये ।

नोचरे प्रतिपत्तये समो लोके तजानघ ॥ १३

एतद्विद्याद्वये लब्धे भविता नास्ति ते समः ।

बला चातिबला चैन सर्वज्ञानस्य मारौ ॥ १४

क्षुत्पिपासे न ते राम भविष्येते नरोत्तम ।

बलामतिबला चैन पठतः पथि राघव ।

विद्याद्वयमधीयाने यज्ञश्चाप्यतुलं भुवि ॥ १५

12 ") \tilde{N} V B D10 13 M4 च ते, D2 T3 बाहुः, D11 चान्य, M5 बाहो, Cg as in text (for बाहो) \tilde{N} V B D10 13 M4 राम (for वीर्ये) —^a) S1 D1 3 5 7 11 12 तव, T2 अग्नि, Cg k as in text (for अस्ति) \tilde{N} V B D10 13 M4 वीर्यण्यो भविष्यति —^a) D3 G3 चै (for वा) —^a) G2 M1 त्वया (for तव) D4 भविष्यति तजानघ —For 12^{ad} S1 D1 3 5 7 11 12 subst

622* भविष्यति महाबाहो त्रिषु लोकेषु वा पुन ।

[D1 lacuna (for मदावाते) D3 लोकेः S1 D5 12 कश्चन (for वा पुन)]

On the other hand \tilde{N} V B D10 13 M4 subst

623* सदैव नरनामेषु लोकेर्विह पुमांसिषु ।

[B3 [अ]नुर (for नर) M4 [अ]ग्नि (for [र]ह) V3 बन्धि (for त्रिषु)]

—After 12, Dt D4 8 8 T3 G3 read 15^{ad} (var) repeating (except T3) it in its proper place

13 ") S1 सौभगे —^a) T3 विज्ञाने, G2 M1 न रूपे, Cr m k t as in text (for न ज्ञाने) S1 D1 3 5 7 12 M3 न च (M3 ज्ञाने) बुद्धिनिश्चये, \tilde{N} V B D10 11 12 M4 न बुद्धि भुक्ति (\tilde{N} B1 D10 M4 "त)वीर्ये; Cr m k t as in text (for ^a) —^a) V2 D3 5 7 10 नोचरे (D10 "र) (for नोचरे) V3 "यतो वा, V4 D10 "कृत्ये, Dt D4 8 8 T3 G1-3 M2-3 Ct "कृत्ये (for प्रतिपत्तये) —^a) S1 D12 समस्तभविता न ते, \tilde{N} 1 तुल्यो वापि भविष्यति, \tilde{N} 2 V B D10 13 M4 त्व (V4 B3 त) सुव्योम्यो (V14 B1 3 4 वा, V3 " V2 D13 न, M4 हि) भविष्यति, D1 2 1 7 9 11 समस्त (D1 *मश्र) भवितानघ (D11 पुमांस) D3 स समस्त (ditto) भविभनघ

14 ") T3 G2 M1 3 पुते Cg as in text (for एतद्) S1 \tilde{N} V B D1 3 5 7 10-13 M4 द्वयं (for द्वये) M3 विषये त्वया (for विद्याद्वये) S1 D1 2 5 7 11 राम \tilde{N} V B D10 13 प्राप्य, D3 रामे, D11 नाम, M4 द्वावा (for हृत्वे) —^a) S1 D1-3 5 7 11 13 गृहीत्वा (for भविता) \tilde{N} V B D10 13 यदाश्चाप्य (V3 "स) यमाप्स्यति (V3 "ति) Dt D4 8 Ct न भवेयमदास्तन, T3 भयतो नास्थितो सम, Cg as in text (for ^a) — \tilde{N} 1 V2 om 14^{ad}-15 D12 om (hapl) 14^{ad} 15^{ad} D1 reads 14^{ad}-15^{ad} in marg (sec m) —^a) D14 T1 G2 M4 तु (for first ch) S1 \tilde{N} 2 V1 4 B2-4 D12-3 5 7 10 11 M4 use accu sing for nom sing omitting च B1 बलादतिबलं, G4 बलाप्यतिबलाद् (for बला

चातिबला) G2 M1 [इ]ति (for [ए]व) —^a) \tilde{N} 2 V1 3 4 B D10 13 M4 ज्ञानविज्ञान, D1 सर्वविज्ञान, T3 सर्वज्ञानाश्च (sic), Cr m t as in text (for सर्वज्ञानस्य) D3 पठतो रघुनन्द

15 \tilde{N} 1 V2 om 15 D12 om 15^{ad}, D14 reads 15^{ad} in marg (cf v1 14) G2 M1 transp 15^{ad} and 15^{ad} —^a) D13 क्षुत्पिपासा (for क्षुत्पिपासे) \tilde{N} 2 V1 3 4 B D10 11 13 च ते, M4 त्वया (for न ते) —^a) M1 नरो मम (sic) (for नरोत्तम) S1 D1 2 6 7 11 मासादूर्ध्व (D3 "दूर्ध्व) भविष्यति (D1 5 "ति), \tilde{N} 2 V1 3 4 B D10 13 M4 नात्वर्थ पीडयिष्यत (V3 D13 "ति), D3 *सार्धं भविष्यत (sic) Dt D4 8 8 G3 repeat 15^{ad} here (first time after 12) T3 reads 15^{ad} after 12 —^a) M1 [ए]ति (for [ए]व) D3 "बला च श्रैव (sic) D14 स्वति" (for अतिबला चैव) —^a) Dt (second time, om first time) D4 8 (both both times) G3 (first time) तात, T3 G3 (G3 second time) तव (for पथि) —After 15^{ad}, S1 D1-5 7 11 12 T3 G3 M1 ins

624* गृह्णान सर्वलोकस्य गुप्तये रघुनन्दन ।

[D1-3 5 7 11 प्रमाण (for गृह्णान) G2 M1 नद्र कावृत्त्य (for सर्वलोकस्य) G2 2 M1 माप्यस्ते (for गुप्तये) S1 D12 मातरी बहुमानद D1 3 5 7 11 प्राप्तेषि बहुमान (D1 "द) D2 प्राप्तेषि त्व बहुमान (for the post half)]

—G2 om 15^{ad} —^a) S1 D1-3 5 7 11 12 14 G1 3 M1 3 4 "यान Cr m g k t as in text (for अधीयाने) —^a) S1 सर्वम्, D5 11 M4 शब्दम्, D12 कीर्तिम् (for यशस्व) S1 D13 13 एवानुल (D12 "ला) Dt D4 8 8 चाय (D5 m after corr) भवेद्, M1 च परम Cip as in text (for चाप्यनुल) D1 यशश्चाप्ययमाप्स्यति, D2 3 7 प्रमाण बहु प्रा (D2 *)प्यति —For 15^{ad}, \tilde{N} 2 V1 3 4 B D10 13 subst D11 M4 ins after 15^{ad}

625* जयश्व दुर्गवान्ताप्रदेशेष्वदपीषु च ।

मारता त्रिषु लोकेषु गमिष्यमि च राघव ।

[No comm —(1 1) V1 त्व तु V3 त्व ते तुड V4 चतुर्गम D13 तयैव" (for जयश्व दुर्ग) V4 जयतो दुर्गमातारे (for the prior half) V3 B1 D11-प्रदेशेषु (for -प्रदेशेषु) V4 [अ]ग्नि (for च) —(1 2) V2 देखन (for सारता) V4 गमिष्यमि च (sic) B1 3 गमिष्यति च B2 त्व गमिष्यमि (for गमिष्यति च)]

B3 cont

पितामहसुते ह्येते निधे तेजःसमन्विते ।

प्रदातुं तव काकुत्स्थ सदृशस्त्रं हि धार्मिक ॥ १६

कामं बहुगुणाः सर्वे त्वय्येते नात्र संशयः ।

तपमा संभृते चैते बहुरूपे भविष्यतः ॥ १७

ततो रामो जलं स्पृष्ट्वा प्रहृष्टवदनः शुचिः ।

प्रतिजग्राह ते निधे महर्षेर्भाषितात्मनः ।

निधासमुदितो रामः शुशुभे भूरिनिक्रमः ॥ १८

गुरुकार्याणि सर्वाणि नियुज्य कुशिक्रान्तजे ।

ऊयुस्तां रजनीं तत्र सरय्यां सुसुखं त्रयः ॥ १९

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे एकाविंशः सर्गः ॥ २१ ॥

626* यक्षो वा राक्षसो वापि न त्वा बाधितमहंति ।

16 * D₂ हे*, D₆ हो*, D₁₃ चेमे (for होते) —^d S₁ D₁₋₃ 5 7 11 12 विद्ये (S₁ बुद्धि, D₂ विद्युत्, D₁₁ 12 विद्धि) तेजोमये शुभे, N V B D₁₀ 13 विद्ये आ (V₂ D₁₃ ह्या, B₁ चा both to remove hiatus) युर्वेलाग्ने (V₄ D₁₃ °लप्रदे) —^c S₁ सददी, D₁ 3 5 7 11 12 M₄ सददो, G₂ M₁ प्रदा, G₃ M₃ प्रदास्ये, Cg t as in text (for प्रदातु) D₁₂ ते च (for तव) S₁ D₁ 3 5 7 11 12 M₄ प्रदातु (for सददास्य) D₂ transp प्रदातु and सददास्य D₁₂ त्वा (sic) (for त्वं) G₂ M₁ तु, Ck as in text (for हि) S₁ D₁ 3 5 7 9 11 G₁ 2 M₁ 3 4 Ck धार्मिक, Dt D₆ 8 पार्थिव (for धार्मिक) N V B D₁₀ 13 पात्रत्वमित काकुत्स्थ विद्ययोर्महर्षेणनयो (V₄ ह्यो)

17 * D₂ कामस् (for काम) S₁ D₁ 3 5 7 12 खलु, D₂ तस्य (for बहु) D₄ धीरे (for सर्वे) T₃ काम च बहुना ह्येते —^b S₁ D₁ 5 12 तवैवेते न, D₂ 3 7 11 तवैव च न, T₃ त्वये (द्ये) वात्र न, M₄ तव चैते न, Ck as in text (for त्वय्येते नात्र) D₆ (before corr) संसाय —^c S₁ D₁ 3 5 7 11 12 तपोभि (for तपसा) D₃ समृत्त्ये (sic) D₁₁ सवृत्ते, D₁₂ सस्ते, all Cs as in text (for समृत्ते) S₁ D₇ 11 12 ह्येते, D₃ हो*, D₅ त्वेते, M₄ भृते (for चैते) D₂ तपो विवृमते ह्येते —^d D₁ 3 5 7 °पोपे, D₂ °दोप, D₁₁ °घोपे, M₄ भूय एव, all Cs as in text (for बहुरूपे) D₂ 3 भविष्यति (sic) —For 17 N V B D₁₀ 13 subst

627* स्वभावनैर्गुणैर्दिव्यैर् कामैरप्यतुलैर्युत ।

भूयसात्र गुणोत्कर्षमैते निधे कल्पित ।

[(1 x) V₂ स्वभावज, D₁₃ स्वभावज (for स्वभावजै) B₁ द्रव्यै (sic) D₁₂ युक्त (for दिव्ये) N₁ V₁ 4 काममस्य (for कामैरपि) V₄ [अ] गुणैर् (for [अ] तुलैर्) V₂ युत, D₁₃ मत् (for युत) V₃ काममाप्यतःश्रुत B₁ वाननैर्बहुभुज (for the post half)]

18 * V₄ B₁ 4 रामे (sic) (for रामो) D₅ रामस्ततो

(by transp) (for ततो रामो) S₁ D₁₋₃ 5 7 11 12 [अ] जलि कृत्वा (D₁₁ बहूना) Cg k as in text (for जलं स्पृष्ट्वा) —^b N V B D₁₀ 13 प्राजलि प्रण (V₂ °य) त स्थित —^c N V B D₁₀ 13 निधासिनात्तपोधनात् —S₁ D₁ 3 5 7 11 12 om 18^c —^d G₄ सद्य, Cg mgt as in text (for विद्या) T₃ भूय (for राम) —^e Dt D₆ 8 सीम°, T₃ राधवसदा, M₄ [अ] व्यधिक तदा, Ck as in text (for भूरिनिक्रम) —After 18 Dt D₆ 8 9 14 S Ck t ins

628* सहस्ररश्मिर्भगवान्भारद्वाज दिवाकर ।

[M₄ समग्र (for सहस्र)]

19 N V B D₁₀ 13 om 19^{ab} —^a D₁ (gloss) गुरुदक्षिणाप्रणामादीनि (for गुरुकार्याणि) S₁ कार्याणि (for सर्वाणि) —^b S₁ D₁ 5 12 प्रयुज्य, D₂ 3 7 निवेद्य, D₁₂ प्रयुज्य, M₄ प्रयुज्य (for नियुज्य) D₃ Ck t कुशिक्रान्तज, Cg mgt as in text (for °रान्तजे) —For 18^c 19^b N V B D₁₀ 13 subst

629* गृहीतविवोऽनुज्ञातस्ततो रामो महायया ।

D₁₁ repeats 19^{ab} consecutively —^a D₃ नेयुस् (sic) (for ऊयुस्) D₁₄ T₁ 2 G₂ 4 M₁ 3 तीरे, Cg k as in text (for तत्र) N V B D₁₀ 13 (first time) तनोवात् (B₁ °पवात् [hypermetric]) निशामेका —^d D₁₄ T₁ 2 G₂ 4 M₃ सरय्या, Cg t सरय्या (as in text) S₁ समुत्स्रस्त, N V B D₁₀ 13 (first time) सहलक्ष्मण, D₁₋₃ 5 7 9 T₃ G₄ समुख°, D₁₂ 13 (second time) °तत, M₅ (after corr sec m as in text) समुत्स्रस्त, Cg k as in text (for समुख त्रय) —After 19 S₁ D₁ 3 5 7 9 11 13 ins

630* कथयन्त कथाक्षिना प्रीयमाणा परसरम् ।

[No comm D₁ कथा चित्रां D₁₁ प्रीतिमत (for प्रीयमाणा)] D₃ cont while Dt D₆ 8 14 S (except M₄) and all Cs ins after 19

२२

प्रमातायां तु शर्वयां निधामित्रो महामुनिः ।
अभ्यभापक काकुत्स्थं शयानं पर्णसंस्तरे ॥ १
कौसल्या सुप्रजा राम पूरा संध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाहिन्म् ॥ २
तस्यैः परमोदारं वचः श्रुत्वा नृपात्मजौ ।

631* दशरथनृपमुत्तमभाया
शुश्रूषयन्नेऽनुचिते तदोपिताभ्याम् ।
कुशिकमुत्तमचोऽनुललिताम्या
सुरमिव सा विश्वौ विभावरी च ।

[(1 1) T₃ अथ दशरथ Cr mg t as above (for दशरथनृप) — (1 2) D₁₄ T₁ तनो° T₂ G₁ M₃ महो°, M₂ मुखो° (for तदोपिताभ्याम्) — (1 3) M₃ (before corr) वय (sic) (for वचो)] D₉ [अ] नि (for णु) छे Ch t कुशिकमनवचोऽनुललितसं । छे — (1 4) M₂ क्षणम् (for सुखम्) D₄ G₁ स सापि°, T₃ (changing the metre) सा वगौ, all Cs as in text (for सा विश्वौ) Dt D₄ ६ १ १ G₁ M₂ ३ (changing the metre) om T₃ दु (for च)]

Colophon D₁-३ ७ om (cont the sarga) — *Āṇḍa* name S₁ N̄ D₁ 10 11 om V B आदि° — *Sarga* name S₁ D₁ 13 विद्याप्रदा (D₁ * * *) निर्वो नाम, N̄ V B D₉-11 विद्याप्रदान — *Sarga* no (figures words or both) S₁ N̄ V₁ १ B₁ 4 D₁ 11 17 om both N̄ ३ ३ 24 V₂ 27, B₂ 5 D₉ 10 25 Dt D₄ ६ १ १ S 22 — D₁₃ ह्यपि राखकाडे प्रदान सगै (dash indicates lacuna) — After colophon T₃ concludes with श्रीरामचन्द्राय नमः, G₁ २ ४ श्रीरामाय नम, G₂ श्रीने रामानुजाय नम, M₂ श्री - न

22

D₁ २ ७ cont the previous sarga

1 °) V₂ च, V₄ om (for तु) —^a S₁ D₁ 12 नृपि, B₂ तपा, D₁₁ सुनि (for महामुनि) —^d D₁₃ प्रत्य° (for अभ्यभापक) S₁ Dt D₁ ३ ५-९ 12 14 T₁ ३ G₁ ३ ४ M₂ ३ (after corr sec m) काकुत्स्थौ शयानौ (for काकुत्स्थं शयानं) V₁ कुश°, T₃ वृण°, M₄ दर्भ°, Cr mg h t as in text (for पर्णसंस्तरे)

2 °) N̄ V B D₁₀ 13 M₄ मातरत्तिष्ठ, D₅ नाम, Cr mg k as in text (for सुप्रजा राम) छे Ct सुपुत्रा नोमनपुत्रवती । छे Cg (also) k take° as a समस्तपद —^d S₁ V₂ B₁ D₁ ३ ७ T₃ पूर्ण, V₄ ४ B₁ D₁₃ पूर्वा, Cr mg h t as in text (for पूर्वा) V B₄ D₁₃ संध्याम् (for संध्या) N̄ V B D₁₀ 11 उपल्लाघ, D₁₃ उपल्लघ (for प्रवर्तते) —^a S₁ D₁-३ २ ७ 11 12 त्वं महामाया, Cg as in text (for नर शार्दूल) —^d D₁-३ ७ पूर्वम्, Cr mg t as in text (for

स्वात्मा कृतोदकौ वीरौ जेषतुः परमं जपम् ॥ ३
कृताह्निकौ महानीयौ निधामित्रं तपोधनम् ।
अभिनाद्याभिसंहृष्टौ गमनायोपतस्थतुः ॥ ४
तौ प्रयातौ महानीयौ दिव्यां त्रिपथां नदीम् ।
ददृशाते ततस्तत्र सरय्याः संगमे शुभे ॥ ५

दैवम्) S₁ D₁ 11 12 कुरु पूर्वाह्निका (D₁₁ पौर्वाह्निकी) त्रिया
— For 2°^d, N̄ V B D₁₀ 13 M₄ subst

632* पौर्वाह्निक विधि कृतं तात कालोऽधमागत ।

[V₂ पौर्वाह्निकः, V₃ B₄ पूर्वाह्निक V₄ M₄ पूर्वाह्निक (for पौर्वाह्निक) D₁₃ वृत्ता (for कृतं) V₄ तत् (for तात) M₄ transp कृतं and तात M₄ शुपगत (for धमागत)]

3 °) V₄ ऋषेस्तु, D₁ तस्यपि (sic) G₁ ३ महोप, Cg as in text (for तस्यै) B₄ D₆ परमोदार (for परमोदार), —^b S₁ D₁ 12 मनोनुग, N̄ V B D₁₀ 11 13 तु (V₂ [अ] ज, D₁₀ [अ] य) राघवौ, Dt D₁ ३ ६ १-२ T₃ G₁ ३ M₂ ४ न (D₉ व) रोचमौ (for नृपात्मजौ) —^c D₅ ७ तत (for छाया) S₁ D₁-३ ५ ७ ९ 11 12 T₃ कृताह्निकौ, M₃ कृतोदक, Cr mg h t as in text (for कृतोदकौ) N̄ om, B₄ चीरी (for वीरी) —^d V₂ ४ B₄ D₂ ४ T₃ G₂ ६ जपतु (sic), D₉ जपत, G₁ जेषते (for जेषतु) N̄ V B D₁₀ 13 जप्या V₄ जप, B₁ जाप्य, B₄ वत् माह्निक (D₁₀ मुचम) D₁ ३ पदै, M₃ (after corr as in text) जप, Cr mg h t as in text (for परम जपम्)

4 °) N̄ V B D₁₀ 13 M₃ ४ वृत्ता (D₁₃ त्वा) ह्निकः, D₁₄ कृताह्निकौ, Cg as in text (for कृताह्निकौ) N̄ V₁ ३ ४ B₁ ३ D₁₀ 13 त्रियौ चापि, V₂ त्रियो वापि, B₄ कृतौ चापि, D₇ G₁ वीरौ, M₄ त्रिय चापि (for महानीयौ) —^b D₇ विश्वा शयम्, S₁ D₁-३ ५ ७ 11 12 ऋषि तत (D₁-३ ७ द्वा) N̄ V₁ ४ B D₁₀ 13 निधि (for तपोधनम्) —^c D₄ अभिवद्य (for अभिवाद्य) S₁ तु लो चीरी Dt D₆ ४ [अ] जि°, D₁ ३ ५ ७ 11 13 ततो (D₁₁ लौ [sic] वीरौ, D₉ M₂ [अ] य°, T₃ G₂ [उ] प° (for [अ] मिसहृष्टौ) N̄ V B₁-३ D₁₀ 13 अभिनादयितु तत्र, B₄ अभिवाद्यतनुत्र, M₄ पूतयिवा ह्यतिरम्य —^d N̄ V B D₁₀ 13 सहिताम् (for गमनाय) S₁ D₁ 12 प्रचक्रमे V₄ [उ] पम्, Dt D₂ ६ Cg k t [अ] मि° (for [उ] पतस्थतु)

5 °) Dt D₂ M₄ Ct प्रयातौ, D₂ श्यातौ व D₇ प्रयातौ च, T₃ प्रतपौ, Cg as in text (for तौ प्रयातौ) S₁ D₁ ३ 11 12 M₄ महानीयौ, D₂ ३ ७ G₄ महानीयौ (for महानीयौ) N̄ V B D₁₀ 13 तत प्रययतुश्चापि —^b B₄ त्रिपथामिनीं (for त्रिपथा नदीम्) —^c S₁ D₁ ७ सरय्या वै, D₁-३ 11 12 सरय्या वै, D₂ वदा तत्र, D₄ महानीयौ (for ततम्य) M₄ अपश्येता सनुदिक्कौ —^d D₉ सरयो (sic) (for सरय्या)

तत्राश्रमपदं पुण्यमृषीणामुग्रतेजसाम् ।
 बहुवर्षसहस्राणि तप्यतां परमं तपः ॥ ६
 तं दृष्ट्वा परमप्रीतौ राघवौ पुण्यमाश्रमम् ।
 ऊचतुस्तं महात्मानं विश्वामित्रमिदं वचः ॥ ७
 कस्यायमाश्रमः पुण्यः को न्वस्मिन्वसते पुमान् ।
 भगवन्श्रोतुमिच्छामः परं कौतुहलं हि नौ ॥ ८
 तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा प्रहस्य मुनिपुंगवः ।

Śi D1-3.5 7 11 12 संगमे पुण्यसेमिते —For 5^d, N V B
 (B3 marg) D10 13 subst

633* गद्गा देवनदीं द्रष्टुं सख्या अमिदूत ।
 [V4 दिव्या (for गद्गा) B4 स्वेविदूत (sic)]

6 * D3 G2 तत्राश्रमः, D12 तमाश्रमः, Cg k t as in
 text (for तत्राश्रमः) D9 इम (for पद) D1 पुण्य (for
 पुण्यम्) N V B D10 13 तस्यास्तीरा(D13 "रादा")श्रमपदं
 —^b Śi D1-3 7 11 12 मुनीना (for ऋषीणाम्) Śi Dt
 D1-3 6-8 11 12 भाविततमना, N V B D10 13 पुण्यकर्मणा, D14
 अग्निः, T1 G2 M1 अग्र्यः, T2 अग्र (for उग्रतेजसाम्) D5
 विश्वामित्र महासुनि —D3 om 6^c-7 —^c N V B D10 13
 रम्यं ददशतु पुण्य (B3 तत्र) —^d Śi D2 3 7 यत्र ते, N1 B1
 तपताम्, V2 तप्यताम्, D1 11 12 तत्र ते, Cg k t as in text
 (for तप्यता) Śi D1-3 7 11 12 तेपिरे, N V B D10 13 उत्तम
 (for परम)

7 D5 om 7 (cf v1 6) —^a D2 तद् (for त)
 D2 राघवौ, D4 परम (for परम) —^b D2 परमौ (for राघवौ)
 G3 पुण्यकर्मणौ (metricausta) (for पुण्यमाश्रमम्) D13
 om 7^c-8^c —^c D9 तु, M4 तौ (for त) Śi D1-3 7 11 12
 मधुर वाच्य (for त महात्मान) —^d Śi D1-3 7 11 12 M4
 महासुनि (D12 "नि") (for इदं वच) —For 7 N V B
 D10 13 (1 r for 7^{ab}) subst

634* दृष्ट्वा तदाश्रमपदं जातकौतुहलौ मुनिम् ।
 पश्यन्तुस्तदा वरं तावमौ रामलक्ष्मणौ ।

[[(1 r) V8 तम् (for तद्) N2 B3 D10 तदाश्रमपदं दृष्ट्वा (by
 transp) (for the prior half) V3 कौतुहलौ B4 D10
 कौतुहल (for कौतुहलौ) V3 मुनि (for मुनिम्) —D13 om
 1 2]

8 D13 om 8^{ab} (cf v1 7) —^a N V B D10 ब्रह्मन्
 (for पुण्य) —^b N V B D10 11 कश्च, M4 को वा (for
 को नु) Śi D5 [अस्ति, V3 [अ]सौ D2 3 7 [अ]स्य, D11 [अ]त्र
 (also रि) D12 [अ]नि (before corr as in text) Śi (for
 [अ]स्मिन्) Cmg k t वसते (as in text) Śi D5 12
 इरुप पुं, N V2 B D10 11 इरुजो मुनि, V1 D1-3 7 इरुजो
 मुनि V4 इरुजो मुनि, M4 इरुजो महात् (for वसते पुमान्)
 D2 om 8^c 9^b —^c D11 भग च (for भगवन्) V1 D2

अत्रवीच्छ्रूयतां राम यस्यायं पूर्व आश्रमः ॥ ९
 कन्दर्पो भूतिमानासीत्काम इत्युच्यते बुधैः ॥ १०
 तपस्यन्तमिह स्थापुं नियमेन समाहितम् ।
 कृतोद्वाहं तु देवेशं गच्छन्तं समरुद्रणम् ।
 धर्षयामास दुर्मथा हुंकृतश्च महात्मना ॥ ११
 दग्धस्तु तस्य रौद्रेण चक्षुषा रघुनन्दन ।
 व्यशीर्यन्त शरीरात्स्वात्सर्गमात्राणि दुर्मतेः ॥ १२

इच्छामि (for इच्छाव) —^a M4 भुव (for पर) D9 न,
 D12 तौ (for नौ)

9 D2 om 9^{ab} (cf v1 8) —^a G1 तु (for तद्)
 —^b N V B D10 13 T3 M1 प्रह (B3 *) सन्, Ck t as in
 text (for प्रहस्य) Cg प्रभामाधुर्वात् प्रहास 1 Cg N V
 B D10 13 मुनिरत्रवीत् Śi D1 3 5 7 11 12 विश्वामित्रो महामुनि
 —^c N V B D10 13 उमाभ्या (for अत्रवीच) Śi D1-3 5 7,
 11 12 वसौ (for राम) —^d T3 कस्य, Cg k t as in text
 (for यस्य) N V3 4 B1 3 D10 13 पुण्य, V1 2 पुण्यम्,
 B4 परम्, D1-3 7 11 12 M2 पूर्वम्, Ck t as in text (for
 पूर्व)

10 * Śi D2 3 5 7 12 भूतिमान्नाम (D2 3 5 12 "नाम")
 कदर्पः, D1 महर्षिर्नाम कदर्प Cmg k as in text (for*)
 —^b D1 राम (for काम) N V B D10 11 13 [अ]स्मिन्विश्रुत,
 D1 [अ]नुमुद्रम, M4 [अ]त्र मुद्रम (for [उ]च्यते बुधैः)

11 * T3 इव (for इह) —^b G1 2 समाहित (G2
 "ते"), Cmg k as in text (for समाहितम्) —l or 11^{ab},
 Śi D1-3 5 7 9 11 12 subst

635* स चकार तपो घोरं स्थापुं चेदुर्मर्दमौ ।

[D2 3 7 चकार (for चकार) Śi D5 12 विघ्न (for घोर) Śi
 D5 12 अनिहित (for अरिदमौ)]

—^a D3 ins ते before देवेश (hypermetric) D5 12
 अतिष्ठत् (for गच्छन्त) D2 गच्छन् देवेश (by transp)
 D11 अतिवसन् मरुद्रण —^b Śi D1-3 5 7 11 12 चेदुक्ताम स
 (Śi D2 12 "मश्र, D3 11 "स सु), Cmg k t as in text
 (for धर्षयामास) —^c Śi D1 3 5 7 11 13 सोष (D1 7 12 "पा")
 ध्यातो, Cmg k t as in text (for हुंकृतश्च)

12 * Śi D2 3 5 7 12 अपध्यातस्य (D2 3 7 "श्च") Dt
 D1 3 5 9 अवध्यातश्च (D1 9 "स्य") D4 T3 अय दग्धस्तु, D11
 अपध्यातस्य, G1 3 अय तस्य च, M2 3 अवज्ञातस्य, Cmg
 अवदग्धस्य (for दग्धस्तु तस्य) Dt D1-9 11 12 T3 M2 3 रुद्रेण
 (for रौद्रेण) —^b D11 चक्षुषा (for चक्षुषा) D1-3 7 11
 रघुनन्दनौ —^c T3 व्यशीर्यन्त (sic) (for व्यशीर्यन्त) Śi
 D1-3 5 7 12 [अ]स्य सहसा, D12 ते दत्तस्य (sic) (for
 शरीरात्स्वात्) —^d Śi D5 12 ततो, G1 तस्य (for सर्व)
 Śi D1-3 5 7 11 12 चीमत, G4 दुर्मते (for दुर्मते) —For
 11-12 N V B D10 13 M4 subst

तस्य गात्रं हतं तत्र निर्दग्धस्य महात्मना ।
अशरीरः कृतः कामः क्रोधादेर्बध्नेन ह ॥ १३
अनङ्ग इति विख्यातस्तदा प्रभृति राघव ।
स चाङ्गविषयः श्रीमान्यत्राङ्गं स मुमोच ह ॥ १४

636* स्वायुं स इह तपन्तं पुरा किल महत्तप ।
आवेष्टुमन्यवार्णं कृणोद्वाहमुमापत्तम् ।
स बुद्ध्वा तत्र रुद्रेण दासं किल महात्मना ।
अथ शशस्य रुद्रेण तस्य वै रघुनन्दन ।
रोपशापाभिनिर्दिग्धं तच्छरीरं व्यशीर्यत । [5]

[(1 1) V₂ स्वायु (sic) (for स्वायु) M₂ ते स हि (for स इह) V₂ पर (for महत्) —(1 2) V₄ आराकुम्, D₁₂ प्रवेष्टुम् (for आवेष्टुम्) B₂ (marg) पृष्णं, M₂ शाला (for तृष्णं) —(1 3) V₁ D₁₂ स बुद्ध्वा, B₂ बुद्धा स (by transp.) (for स बुद्धा) V₄ तेन (for तत्र) —N₁ om. 1 4, B₂ reads 1 4 and 5 in marg —(1 4) B₁ [प]व, D₁₂ [प]व M₂ [अ]व (for वै) M₂ रघुनन्दन (for रघुनन्दन) —(1 5) V₁ रोपाव, V₂ विधिः, D₁₂ रुद्र (for रोप) V₂ नापाभि- (for-शापाभि) B₁ व्यशीर्यत (for व्यशीर्य) M₂ शरीर समशीर्य (for the post half)]

13 B₂ reads 13 in marg D₂ om 13rd D₂ om from तत्र 10th up to the end of ^b —^a) D₂ तस्यागान्वपत (for तस्य गात्रं हतं) Dt D₂ transp तस्य and तत्र S₁ N V B D₁ 2.5 7 10-15 T₂ G₂ M₂ तस्यागा(M₂ ना) व्यपतत्राम (S₁ N₁ V₁ 2 4 D₁ 7 M₂ द्याम [except M₂ sic]) —^b) D₂ विदग्धस्य, Cg as in text (for निर्दग्धस्य) Dt D₂ G₂ महात्मन, Cg as in text (for तत्र) S₁ D₁ 2.5 7 10-12 हिम(D₁ 2.7 विष्णु)शीलसमीपत, N V B D₁₂ सद्य सर्वाण्य शेषत, M₂ सद्य अस्तान्यशेषत —^c) B₂ अशरीरः D₂ अशरीरि, T₂ ते शरीरि (sic) Cg as in text (for अशरीर) —^d) Ck हि: Ct ह (as in text) S₁ D₁-3 5 7 11 12 तेन महात्मना, M₂ देवेन चमुपा (for देवेष्वरेण ह) N V B D₁₂ 13 M₂ एव कोपान्महात्मना (D₁₂ न)

14 B- transp 14th and 14th —^a) D₁ स एवावस (for विख्यातस्य) N₁ V B D₁ 7 10 तत (for तदा) B₁ राघव, D₁₂ राघवौ (for राघव) M₂ तत प्रभृति कामध व्यापनोर्ग इति प्रभो —^c) D₁ सुनाह (for स चाह) D₁₂ विषय (sic) (for विषय) —^d) S₁ B₂ D₁-3 5 7 यत्रागानि D₂ स्वशरीर (for यत्राङ्गं स) T₂ (after corr sec m as in text) 3 G₂ हा Ck as in text (for ह) D₁₂ 11 12 यत्राग(D₁₂ ना) प्रमुमोच ह —For 14th N V B₁ 3 4 D₁₂ 13 M₂ subst while B₂ 13 as for 14th

637* अनङ्ग इति देशोऽयं व्यात कामाद्रनामानात् ।

[M₂ अग इति स (for अनङ्ग इति) N V₁ B₂ कामाद् (for कामाद्)]

15 After 15th N V B-4 D₁₂ 13 M₂ ins.

तस्यायमाश्रमः पुण्यस्तस्येमे मुनयः पुरा ।
शिष्या धर्मपरा वीर तेषां पापं न विद्यते ॥ १५
इहाद्य रजनीं राम वसेम शुभदर्शन ।
पुण्ययोः सतिर्तोर्मध्ये श्वस्तरिष्यामहे वयम् ॥ १६

638* कामस्य रघुनन्दन ।
तस्यायतनमग्नेर्दे
[[(1 2) B₂ आनश्च, D₁₂ आयश्चन् V₄ B₂ एव (for वय)]

On the other hand M₂ {discards ^{bcd} with + sign below them} ins (inf lin sec m)

639* श्रीहृदस्य महामन ।
अतोऽत्र मुनयो राम कुर्वन्ति तप उत्तमम् ।
मोक्षधर्मपरा वीर तेषां पापं न विद्यते । (cf 15th)
शिष्या धर्मपरा भूत्वा पुण्या कुर्वन्ते सदा ।

—^b) N₁ यस्येमे; V₂ तस्यैते; D₂ ततोस्य (for तस्येमे), N V B D₁₂ 13 M₂ परमरय B₁ कामस्य रघुनन्दन (= 1 1 of 638*) —^c) S₁ D₁₂ 3 7 11 12 तिहा, Cg k.t as in text (for शिष्या) S₁ D₂ 3 G₁ वीरा (D₂ G₁ शस्य), D₁₂ 13 वीरा (D₁₂ ना), K (ed.) नित्यं (for वीर) —^d) S₁ D₁₂ 11 12 पैषा, Cg k.t as in text (for तेषां) D₁₂ पाप (sic) (for पाप) S₁ D₁₂ 11 12 हि, Cg k.t as in text (for न) —For 15th, N V B D₁₂ 13 M₂ subst, while D₁₂ ins after 15

640* तपोदमरता शिष्या पुराणा ब्रह्मादिन ।
निवसन्त्यत्र निरतास्तपोनिर्भूतकल्पना ।

[B₁ D₁₂ om 1 1 —(1 1) N₁ धर्मः V₂ B₂ D₁₂ दान (for दम) N V B (except B₁) D₁₂ 13 सर्वे (for शिष्या) M₂ सत्य (for दान) —(1 2) V₄ [आ]यः, B₁ [अ] * (for [अ]य) V₁ B₂ निवतात् (for निरतात्) D₁₂ तपोनिर्भूतक मया (for the post half)]

16 ^a) D₁₂ 1 2 ना (for रजनीं) N V B D₁₂ 13 M₂ एका (for राम) —^b) S₁ N V B D₁₂ 3 7 10-12 T₂ वसाम, D₂ *साम, D₂ 3 वस्याम (for वसेम) V₂ श्लोचन; V₃ D₁₂ 11 दशन, B₂ दशन, D₁₂ G₂ दशन (for दशन) M₂ मुने वस्यामहे वयं —M₂ om 16th —^d) D₂ विचिर् (for स्वस्तरिष्यामहे) S₁ N V B D₁₂ 13 तति N₂ V₂ 4 मविष्याम (B₂ मि) प्रपद्य वै (N₂ परेमुहि [sic] N₂ V₁ 3 B D₁₂ परेहनि V₄ परिषदि), D₂ 3 वस्याम समुत्तं निरा D₁₂ 13 मविष्याम परेहनि —After 16 all MSS (except D₂ 3 7 M₂) Cg k.t ins

641* अभिगच्छामहे सर्वं शुचय पुण्यमाश्रमम् ।
इह यान् परोऽन्तार्कं मुनं वस्यामहे निनाम् ।
आश्रमं हृत्तप्याद्य तुहत्या वरोत्तम ।

तेषां संयुक्तां तत्र तपोदीर्घेण चक्षुषा ।
निज्ञाय परमप्रीता मुनयो हर्ममागमन् ॥ १७
अर्घ्यं पाद्यं तथातिथ्यं निवेद्य कुशिकात्मजे ।

रामलक्ष्मणयोः पश्चादकुर्वन्नतिथिक्रियाम् ॥ १८
सत्कारं समनुप्राप्य कथाभिरभिरक्षयन् ।
न्यवसन्सुसुप्तं तत्र कामाश्रमपदे तदा ॥ १९

इति श्रीरामायणे वालकाण्डे द्वाविंशः सर्गः ॥ २२ ॥

[Śī D1 s 12 om 1 r and 3 D1s T1 2 G4 om 1 2
N̄ V B D10 11 13 M4 om 1 3 D9 G1 2 M1 s transp 1
2 and 3 —(1 r) Ck अभिगच्छामहे व्यलयात्तु हे इति
पृथक्पद वा । परो युक्तर । Ck V9 B1 M4 सत्त्वा G4 शीघ्र (for
मर्ते) N̄ V1 2 4 B2 4 D10 13 अभिगच्छाम च सत्त्वा, D11
अभिगच्छ महाबाहो (for the prior half) D11 उभये M4
मुनीना (for शुक्ल) —For ins see below —(1 2) M4
वास (for वास) G1 3 M1 4 परो (G1 परा, G2 पुते M4 इम)
राम (for परोऽस्माक) Śī N̄ V B D1 s 9 13 इह कामाश्रमे राम,
M4 इहैव सत्त्वना राम (for the prior half) V2 स्वय (for
सुख) M4 वय (for निशाम्) Śī D1 s 9 11 12 वलयात् ससुख
निशा (= 16^d in D2) (for the post half) Cg k t no
comm on 1 2]

—After 1 r D11 ins

642* गङ्गायाश्च सरस्वाश्च संगमे सखिलो हुमे ।

17 D1 om from तत्र up to 17^b —^a) N̄ 2 B3
D10 प्रवदताम्, B4 समुद्यताम्, D3 सवदताम् (sic) D5
सवसताम्, T2 सुवदता, Cr m g k t as in text (for सवदता)
Śī N̄ 2 V1 s 4 B1 3 D5 7 9-13 एत, N̄ 1 V2 B4 D2 3 एव, Ck
as in text (for तत्र) M4 अथ तानागतान्द्वया —^b)
M4 तत् सिद्धेन (for तपोदीर्घेण) —^c) D7 परम प्राप्य, Ck
परम^o (for परमप्रीता) M4 प्रागेव च महात्मान —D7 om
(hapl) 17^d—19^a —^d) M4 ऋषयो Śī D5 12 द्रष्टुम्,
D1-3 9 11 [S]भ्याहम्, Cg k as in text (for हर्मम्) Śī
D1-3 5 9 13 आताता, Ck as in text (for आगमन्)

18 D7 om 18 (cf v1 17) —^a) N̄ V1 B D10
M4 तेव्यं, V2 तेषा, Cg as in text (for अर्घ्यं) T3 पाद्यमर्घ्यं
(by transp) N̄ V1 s B D10 M4 च विधिर्व, V4 च
विधि, D2 s 11 13 अथा, G1 तयातिथ्य (sic) Cg t as in
text (for तथातिथ्य) —^b) N̄ V1-3 B—4 D10 M4 प्रयु
(V3 °य, B4 °य)य, V4 B1 पूजा च, D11 निषद्य, T3
विज्ञाप्य (for निषेध) —^c) V4 लक्ष्म^o N̄ 1 एव, N̄ 2 V
B D10 13 एवम् (for पश्चाद्) —^d) M1 [अ]कुर्वन्त, M4
प्रायुजन् (for अकुर्वन्) N̄ 1 [अ]कुर्वन्नतिथिसक्रिया

19 D7 om 19^a (cf v1 17) —^a) Śī N̄ V B
D1 s 5 10-13 परम^o, D3 परम प्राप्त, Cm g t as in text (for
समनुप्राप्य) M4 प्राप्य ता तत्रिया तत्र —^b) Śī N̄ V1 s B
D3 s 7 10-12 M4 अग्नि (B4 D12 +*) रम्य च, V2 4 D1 2 13
°गम्य च, Cr m g k as in text (for अभिरक्षयन्)
Ck Ct अभ्यरक्षयन् अडभाज् जापे । तदाश्रमस्थानुपीनिनि
शेय । यद्वा सत्कारं समनुप्राप्य त प्राप्य निशामिनादींस्तदाश्र
मस्था ऋषयोऽभ्यरक्षयन्नित्यर्थे । Ck—After 19^{ab} Dt D4 6
8 9 14 S (except M4) Cm g k t ins

643* यथाहमजपन्सध्यामृपयस्ते समाहिता ।

तत्र वासिभिरानीता मुनिभि सुवतै सह ।

[(1 r) D4 16 T1 s G4 M4 मुनयस् (for ऋषयस्) —(1
2) D6 °र (for वासिभिर्) D9 तत्र स्वामीभि (भी) रात्री ता
(for the prior half) M4 सुवतैस् (for सुवतै)]
—^a) Śī N̄ V1 s 4 B D2 s 5 7 9-12 न्यवसन्ते (D9 °स्तु) V2
न्यवसेत्, Dt D1 न्यवसन्तु (D1 °स्त), D13 अवसन्ते, T3
न्यवसत् (sic) M4 नावसन्ते N̄ V B D10 13 महात्मान
(for सुख तत्र) —^d) V2 कामाश्रमपदे Śī Dt D1 s
(after pr m corr as in text) 7 8 11 तथा, N̄ V B
D10 13 M4 सुखे, D3 सदा (for तदा) —After 19 Dt
D4 6 8 9 14 S Cg ins

644* कथाभिरभिरामाभिरभिरामौ वृषात्मजौ ।

रमयामास धर्मात्मा कौशिको मुनिपुत्र ।

[(1 r) M4 अनु (for first अभि) M2 अनुस्ते (for
अभिरामौ) —(1 2) M4 [s]नुपमपुति (for मुनिपुत्र)]

Colophon —Kanda name Śī N̄ 2 D1 4 10-12 om
V1-3 B आदि, D3 अयोध्या —After Kanda name,
B1 2 4 ins बालचरिते —Sarga name Śī N̄ V B D1-3 s
7 9 10 12 कामाश्रमनिवास (V2 °गमन) D11 ताडकाप्रवेश —
Sarga no (figures words or both) Śī N̄ 1 V1 4 B1 4
D5 5 11 13 om both N̄ 2 B2 s D9 10 26 V2 28 V3 25
Dt D4 6 8 12 S 23 D7 19 D2 20 D15 -काडे यो
दि धमनि-नाम (dash indicates lacuna) —After coloph-
on T3 concludes with श्रीरामचन्द्राय नम, G1 2 4
श्रीरामाय नम, G3 धीमेते रामानुजाय नम, M2 धी ... म

२३

ततः प्रभाते निमले कृताह्निकमरिदमौ ।
 विश्वामित्रं पुरस्कृत्य नद्यास्तीरमुपागतौ ॥ १
 ते च सर्वे महात्मानो मुनयः संशितव्रताः ।
 उपस्याप्य शुभां नापं विश्वामित्रमथानुवृत् ॥ २
 आरोहतु भगान्नापं राजपुत्रपुरस्कृतः ।
 अरिष्टं गच्छ पन्थानं मा भूत्कालस्य पर्ययः ॥ ३
 विश्वामित्रस्तथेत्युक्त्वा तानृषीन्भिषूज्य च ।

ततार सहितस्ताभ्यां सरितं सागरंगमाम् ॥ ४
 अथ रामः सरिन्मध्ये पप्रच्छ मुनिपुंगवम् ।
 वारिणो मिद्यमानस्य किमयं तुमुलो ध्वनिः ॥ ५
 राधस्य वचः श्रुत्वा कौतूहलसमन्वितम् ।
 कथयामास धर्मात्मा तस्य शब्दस्य निश्चयम् ॥ ६
 कैलासपर्वते राम मनसा निमित्तं सरः ।
 ब्रह्मणा नरशार्दूल तेनेदं मानसं सरः ॥ ७

23

1 " M₂ विमलौ, Cg as in text (for विमले) —^d)
 D₂ ६ १० ११ M₂ कृत्वा (for कृत) B₄ *रिदमौ —D₇ om
 1^{cd} —^c) V₁ नमस्कृत्य —^d) N V B D₁० M₄ उपेयतु,
 Dt °गमत् (sic) D₁३ प्रपगमत् (for उपागतौ)

2 " B₄ D₄ M₄ तु, Cg as in text (for च) S₁
 D₁-३ ५ ७ १२ सर्व एव (D₇ °तन्), D₁१ सर्व ते वै (for ते च
 सर्वे) D₁ महात्मानं —^d) S₁ D₁-३ ५ ७ ११ १२ ऋषय (for
 मुनय) S₁ N V B D₁ ३ ५ ७ १०-१३ M₄ सुयवर्चस (M₄
 °तेजस), D₃ शसितं, M₃ सशति° (for सशितव्रता) —^c)
 S₁ Dt ३ ५ ७ १२ °तस्यु, V₄ °तृप्य, Cm g t as in text (for
 उपस्याप्य) D₁ वाच (for नाव) —B₄ om (hapl) 2^d—
 3^d —^d) D₁ यथा (for अथ) D₁३ [अ]वकीत् (sic)
 (for [अ]नुवृत्)

3 B₄ om 3^o (cf v 1 2) —^a) B₁ आरोहयत् (hy
 permetric) D₆ °हत्, Cm g as in text (for आरोहत्)
 D₄ ९ M₃ शुभा (for भवान्) N₂ V₃ B₃ D₁० आरोह
 भगवत् (B₃ °वान् also in m) T₃ वल्लत् (for नाव) —^d)
 V₄ विश्वामित्र, B₄ रा*पुत्र S₁ Dt ३ ५ ७ ११ १२ पुर सर (D₁
 °र) V₁ °स्तव, D₁२ पुर राय, Cg k t as in text (for
 पुरस्कृत) D₁० मा ते कालायो ह्यमृत (= 3^d in D₁०)
 —^c) V₂ ६ B* (marg also) अवग्रि Cr m g k t as in text
 (for अरिष्ट) —^d) D₄ Cg k °विपर्यय (for कालस्य पर्यय)
 N V B D₁० १३ M₄ मा ते (M₄ च) कालायो हि (N₂ om
 हि[submetric]) भूत् (V₁-३ B D₁० ह्यमृत, V₄ D₁३
 भवत्, M₄ °स्तु ते)

4 " T₃ तदा (for तथा) —^d) B* तापसान् (for
 तानृषीन्) S₁ D₁ ३ ५ ७ ११ १२ प्रत्यक्षवत्, N V B₁-३ (m
 also as in B₄) Dt D₆ ९ १० १३ M₄ प्रति (Dt °त्य) पूज्य च
 (V₁ स), B₄ प्रतिगृह्य, D₃ प्रपूजयत् (submetric) T₂
 (after corr sec m as in text) अरिष्टं, G₁ ३ वाच्य च
 (for अविषूज्य च) —^c) S₁ N V B D₁ ३ ५ ७ १०-१३ सरित
 पुण्यां (for सहितस्ताभ्यां) —^d) S₁ N V ६ B (B₃
 marg) D₁-३ ५ ७ ११ १३ सरयु, V₁ B₃ आह्वीर् (for सरित)
 N V B D₁० १३ विमलोदरा D* ११ सागरागता Cg k t as

in text (for सागरगमाम्) —After 4 Dt D₆ ९ १० १३ S
 (except M₄) ins (Cg comm on l १ Ck on l १ २
 and Ct on l १-३)

645* तत् शुश्राव वै शब्दमतिमरम्भवर्धितम् ।
 मध्यमागम्य तोयस्य तस्य शब्दस्य निश्चयम् ।
 ज्ञातुकामो महातेजा सह राम कनीयसा ।

[(1 १) Dt D₆ ९ तत्र (for तत्र) D₁३ T G₂-४ M₁ °त,
 G₁ M₂ ३ शुश्र (G₁ °श्रा [sic]) वत् (for शुश्राव वै) Dt D₆ ९
 तोय M₃ अभि (for अति) T₃ नवीर (for सरस्म) D₆
 भर्षित (for नर्षितम्) —(1 2) D₃ १३ T (except T₂) G
 M₁ ३ om the post half of l २ and the prior half of
 l ३]

5 " N V B D₁० तत्र, D₁३ ततो, Cm g k, as in text
 (for तत्र) S₁ D₁-३ ५ ७ ११ १२ राधव (D₇ °र) स्तु (for अथ
 राम) —^d) V₁ प्रपच्छ (for पप्रच्छ) V₃ °सत्तम, M₄
 कुशिकामज (for मुनिपुंगवम्) —^c) V₂ B₄ वारिणा,
 Cm g as in text (for वारिणो) N V B D₁० १३ मिद्यत
 इच (V₂ °ते तीर), Cm g k t as in text (for मिद्यमानस्य)
 S₁ D₁-३ ५ ७ ११ १३ वा (D₁१ गि) रिणा (D* वीराणा) मिद्य
 मानता —^d) S₁ Dt ३ ५ ७ ११ १२ एव, N B न्वय (B₁ °र्थ),
 V₃ D₁० M₄ ल्यय, V₄ मुने (for भय) S₁ D₁१ १३ विमलो°,
 N V B D₁० १३ बलवान् स्वन, D₁-३ ७ विपुलो°, D₃ तुमुलो°,
 Cg k as in text (for तुमुलो ध्वनि)

6 " N V B₁ ३ ६ D₁० १३ M₄ इति राम, B₂ इति तस्य
 Cm g k as in text (for राधवस्य) S₁ D₁ १३ तु तत् (for
 वच) G₃ M₃ रामस्य वचन —^d) N₂ V₃ B₄ D₃ १० M₄
 सन्मन्वि (for D₁-३ ५ ७ ११ १२ जातकौतूहल) वच (D₂ ३ ७ ११
 °लो मुनि) —^c) D₁३ कृपयामास (sic) N V B D₁० १३
 भगवान् (for धमाभा) —^d) N V ३ B D₁० ११ १३ विस्तर
 (V₁ °र), V₄ काण Cm g t as in text (for निश्चयम्)

7 " D₁ ३ ५ ७ १२ °से (for कैलास) N V B D₁० १३
 M₄ दिखरे (for न्यते) Cg कैलासपर्वते (as in text)
 D₁ ११ रस्ये (for राम) —^d) V₄ ब्रह्मणा, D₁ om (hapl)
 म in मनसा V₁ निमित्त (for निर्मित) B₁ transp मनसा
 and निर्मित N₁ V₁ शर (sic) Dt D₆ ९ परः Cg as in

तस्मात्सुखाव सरसः सायोध्यामुपगृहते ।
 सरःप्रवृत्ता सरयूः पुण्या ब्रह्मसरश्च्युता ॥ ८
 तस्यायमतुलः शब्दो जाह्नवीमभिवर्तते ।
 वारिसंक्षोभजो राम प्रणामं नियतः कुरु ॥ ९
 ताभ्यां तु तावुमौ कृत्वा प्रणाममतिधार्मिकौ ।

text (for सर) — $\tilde{N}2$ V₃ G₄ om (hapl) 7^{ad} —^c
 $\tilde{S}1$ D₅ 11 12 रघु, G₂ M₁ मुनि (for नर) $\tilde{N}1$ V₁ 3 4 B
 D₁₀ 13 ब्रह्मणा प्रागिदं य (V₁ त) स्माद् —^d $\tilde{N}1$ V₁ 3 4 B₁ 3
 D₁₀ 13 तदभूत् (V₁ अभूत् [by transp] V₄ य) B₄
 तस्मात्तद् (for तेनेद्) $\tilde{S}1$ D₁ 3 5 7 11 12 मानस नाम (D₂
 मान [metathesis]) तेन तत्

8 ^a) $\tilde{S}1$ D₁ 3 5 7 9 11 12 प्रसूता सरयू, M₂ सरयू (for
 सुखाव सरस) — $\tilde{S}1$ D₃ 7 om (hapl) 8^{bc} —^b D₁
 अभ्यधावत्, D₂ अभ्यगात्पूर्ति, D₅ 12 अभ्यमावयत्, D₁₁
 अभिमागमत् (sic) M₄ गृहति, Cr mg as in text (for
 उपगृहते) —For 8^{ab}, \tilde{N} V B D₁₀ 13 subst

646* सरसो मानसात्स्मादयोप्यामु शोभना ।

[V₃ नामसाद् (metathesis), V₄ स्म् (for मानसाद्) B₃
 द्याद् (for नरमाद्) V₂ यत् (for अनु) V₁ गोचरा B₃ (m
 also) 4 शोभना (B₄ ता) (for शोभना)]

—^c \tilde{N} V B D₁₀ 13 नदी प्रसूता, D₁ 2 5 9 11 12 M₄ प्रसूता,
 Cm t as in text (for सर प्रवृत्ता) \tilde{C} Ck तस्या सर
 प्रवृत्तवाद् सरयूरिति नाम । \tilde{C} —^d D₅ ब्रह्मरसच्युता

9 ^a) M₂ 3 Cm तुमुल्, Cg as in text (for अतुल)
 $\tilde{S}1$ D₁ 3 5 7 11 12 शब्दोय विपुलस्तस्या (S₁ स्था), M₄ एष
 तस्य महान्शब्दो —^b $\tilde{S}1$ D₁ 3 5 7 11 12 जाह्नव्याम्, Cm t
 as in text (for जाह्नवीम्) M₄ अतिवर्तते —For 9^{ab}, \tilde{N}
 V B D₁₀ 13 subst

647* जाह्नवीमभिवर्तिन्यालस्या शब्दोऽयमिदं ।

[$\tilde{N}1$ V₂ 4 B₃ 4 (both m also) अभि (B₃ रति) वृथायत्
 V₁ D₁₀ 13 अति (for अभिवर्तिन्याम्)]
 —^c $\tilde{S}1$ $\tilde{N}2$ V₃ B₂ 3 (m also) D₁ 2 5 10 13 सयपेजो, $\tilde{N}1$
 V₁ 4 B₁ 3 4 संहर्षेजो, V₄ संहर्षेजो, D₃ 7 सयदृजो, Cg k as in
 text (for संक्षोभजो) —^d D₅ प्रणामो (sic) G₂ प्रमाण
 (metathesis) (for प्रणामे) $\tilde{S}1$ \tilde{N} V B D₁ 3 5 7 10 13
 प्रय (V₁ ण) त, D₁ त Cg as in text (for नियत)

10 ^a) $\tilde{S}1$ D₁ 3 5 7 M₄ उभाभ्या, D₁₁ प्रणामः D₁₂
 तुल्याभ्या, G₂ M₁ तस्या, Cr mg k t as in text (for ताभ्यां
 तु) M₄ एष तौ (for तावुमौ) —^b D₁₁ सगमे नरसत्तमौ
 —For 10^{ab}, \tilde{N} V B D₁₀ 13 subst

648* चयनुस्ती नमस्ताभ्या नदीभ्यामय रायरी ।

[V₄ नमस्ता (for नदीभ्याम्) (metathesis) (for नमस्ताभ्यां)
 V₄ नदी ताम् (for नदीभ्याम्) B₃ अभि (for अय)]

B₃ cont.

तीरं दक्षिणमासाद्य जग्मतुर्लघुविक्रमौ ॥ १०

स वनं घोरसंकाशं दृष्ट्वा नृपरात्मजः ।

अनिप्रहृतमैश्वाकः पप्रच्छ मुनिपुंगवम् ॥ ११

अहो वनमिदं दुर्गं ह्लिङ्गिह्मगणनादितम् ।

भैरवैः श्वापदैः कीर्णं शकुन्तैर्दारुणारवैः ॥ १२

649* प्रणाम प्रयतौ कृत्वा सगमे नरसत्तमौ ।

B₃ cont (after 648*)

650* विश्वामित्रस्य वचसा भक्त्या परमया युतौ ।

—D₁₁ om (hapl) 10^{ad} —^c \tilde{N} V₁ 2 B₁ 3 (B₃ m
 also as in text) D₁₀ 13 पर समासाद्, V₃ 4 B₄ परम् (for
 दक्षिणमासाद्य) —^d D₁₂ विक्रमे (sic)

11 ^a) $\tilde{S}1$ D₁ 3 5 7 9 12 तद्, Cm g as in text (for
 स) $\tilde{S}1$ D₁ 3 5 7 12 समाद्, D₉ (marg gloss) भयंकर
 दर्शनं, Cg k t as in text (for घोरसंकाशो) —^b D₁₁
 transp नृप and वर $\tilde{S}1$ Dt D₁ 3 5 7 9 12 G₂ 3 M₁ 3 नर
 वरामजौ (Dt D₄ 3 G₂ 3 M₁ 3 ज) (for नृपवरात्मन)
 T₃ वृष्टवावृष्टारामज —^c $\tilde{S}1$ D₃ 12 तत् समतात्तौ वीक्ष्य,
 D₁ 3 7 ततो वनं तदिदंश्वाक (D₃ 7 काद्) (for ^a) $\tilde{S}1$
 D₃ 5 7 12 आश्चर्येता मुनिं तु तौ (D₁₂ तदा) D₁ संवृच्छेता मुनिं
 च तौ (for ^d) D₂ ततो नमनविश्याकावपृच्छता मुनिं उभौ,
 D₂ तदा पप्रच्छतुभ्यो मुनिमिदंवावुनदनी —For 11, \tilde{N} V B
 D₁₀ 13 M₄ (1 2 only) subst

651* अयानुपदमेवान्यद्वन घोरमरिदमौ ।

दृष्ट्वा पप्रच्छतुभ्यो मुनिं तं नृपरात्मजौ ।

कस्येदं मेघसंकाशं वनं घोरं प्रकाशते ।

[(1 x) V₂ अथल् (sic) V₄ एद् B₃ (marg also
 as above) तथा (for अयानुपदम्) V₃ वत् (sic) (for
 वन) D₁₀ अनिदितौ (for अरिदमौ) —(1 2) $\tilde{N}1$ पप्रच्छ*
 $\tilde{N}2$ B₃ (marg also as above) D₁₀ वीरौ (for मूले) V₂
 D₁₁ नृप D₁₂ तौ (for त नृ) B₁ दशरथात्मजौ M₄ वन
 नृपमूले मुनिं (for the post. half) —After 1 2 M₄ reads
 1 2 of 652* —(1 3) V₃ वत् (sic) (for वन) D₁₂
 प्रच्छते (for प्रकाशते)]

12 ^a) $\tilde{S}1$ D₃ 11 13 घोरं, D₂ दीर्घं (for दुर्गं) \tilde{N} V₁ 3
 B D₁₀ 13 दुर्गं (V₂ B₁ री) पक्षिगणकीर्णं, V₄ बहुपक्षगणकीर्णं
 (sic) —^b V₁ D₁₁ T₃ G₁ 3 M₄ हलित्तरा, V₄ विदिक्का;
 D₂ उहीका (sic) Cm g k t as in text (for सिद्धिका)
 D₂ नवन, D₁₂ नान (for नान) Dt D₄ 3 संयुतं (for
 नादितम्) —D₁₁ reads 12^{ad} after 652* —^c $\tilde{S}1$
 D₁ 3 5 7 11 च समासीर्णं, D₄ 9 12 T₃ 3 G₁ 4 M₂ 3 एतुं; M₄
 घोरं (for श्वापदै कीर्णं) D₁₂ घोरवेपथमाकीर्णं (sic)
 T₃ श्वापदैर्हिपचुमुनि —^d D₁₁ 11 12 G₁ M₄ शङ्करीर (for
 शङ्करीरैः) $\tilde{S}1$ D₃ 5 7 11 12 G₂ दारुणारवैः D₄ 9 12 S
 (except G₂) Cm दारुणा (D₄ M₄ णैर) जै (T₃ यतः
 M₄ युतैः); Cr.k.t as in text (for दारुणारवैः)

नानाप्रकारैः शुकुनैर्वायस्यैर्भैरवस्वयैः ।
सिंहव्याघ्ररहैश्च वारणैथापि शोभितम् ॥ १३
घनाश्वरुर्णककुभैर्विल्वतिन्दुकपाटलैः ।
संकीर्णै उदरीभिश्च किं न्विदं दारुणं वनम् ॥ १४
तमुवाच महातेजा निशामित्रो महासुनिः ।
श्रूयतां वत्स काकुत्स्थ यस्यैतदारुणं वनम् ॥ १५

13 S1 D1 3 5 7 12 om 13 and 14 —^d D4 भैरवै
स्वयै —^d D4 14 T G1 2 4 M1 3 चोप, D9 चैव, G3 उप
(for चापि)

14 S1 D1 3 5 7 12 om 14 (cf v1 13) —^a D4
घनाश्वरुर्णककुभैर्विल्वतिन्दुकपाटलैः —^d Cg मरु- (for
विल्व) D4 विभुक् (for तिन्दुक) —^d Dt D8 8 तु,
Ct as in text (for तु) D4 9 T3 Ck किं चेतद्, D14 T1 2
Ga-4 M1 3 किं चेतद्, G1 किं चेतद्, Cg as in text (for
किं न्विदं) —For 12^c 14 N V B D10 11 12 M4 (D11
M4 for 13 14 only) subst

652* नानाधरागणैर्वैद्यादामनैर्विनादितम् ।
सिंहव्याघ्रराहर्षेणपन्निकुञ्जरसेनितम् ।
घनाश्वरुर्णककुभैर्विल्वतिन्दुकैः ।
दुम्भे कटकिमिश्रैश्च कीर्णैः किल्विदमुच्यतम् ।

[V2 4 D11 13 om (hapl) 1 1 —(1 1) D10
नानाधरा* B1 वायस्यनिर (sic), B3 (marg as above)
व्यायस्यनिर (for वायस्यनिर) M4 नानाप्रकारैश्च शुकुनैर्विभैरैस्वै
(cf 13^{ab}) —M4 reads 1 2 after 1 2 of 652* —(1
2) N1 बराहस्य V1 D13 बहि V2 B4 D11 M4 खड्ग (for
पन्निकु) —(1 3) V2 3 भराष* V4 वराष* D11 ***
(for भवाश्वरुण) N1 वायस्यनिरिन्दुकैः, V4 पाटलाशोकवपकै
D11 विल्वतिन्दुकवपकै (for the post half) D13 भवाश्व
रुर्णकपाटलातिन्दुकैः —(1 4) D11 तथा (for दुम्भे) V2
B1 D13 इदम् (for चित्दम्) V4 B1 3 (marg also) उच्यते
D11 सगौष समावृत्त (for the post half)]
—Thereafter D11 reads 12^{ed}

15 D14 reads 15 in marg (sec m) —^a N V
B1-3 D10 13 ताव, B4 ताम् (sic) (for तम्) N V B D10 13
M4 तयोर् (B2 M4 ततो, B4 *) वाच्यं (for महातेजा) S1
D1-3 5 7 9 11 12 तयो (D11 *) सतद्रघव शुभ्या —^d S1 D13
महानृपि N V B D10 13 M4 शुभ्येदं (V1 त्वैव B3 [marg
also] 4 त्वैव) भगवा-मुनि (B1 M1 नृपि) —^c N V
B D10 13 M4 हास्यपामन्य, D1 घनच घन्यौ, D2 2 7 11 घन्यौ
(D3 घन्य, D11 वरस्य) काकुत्स्थौ (for घन्य काकुत्स्थ) —^d
S1 D1 3 5 7 9 11 [इ]दं भैरवै, Cg k as in text (for [ए]
तदारुणं) N V B D10 13 M4 आगतौ रामरुद्रमणौ D11 भैरव
स्वनमुच्यते

एतौ जनपदौ स्फीतौ पूर्वमास्तां नरोत्तम ।
मलदाथ करुपाथ देवनिर्माणनिर्मितौ ॥ १६
पुरा वृत्रपथे राम मलेन समभिप्लुतम् ।
शुधा चैव सहस्रांश्च ब्रह्महत्या यदामिशत् ॥ १७
तमिन्द्रं स्नापयन्देवा ऋषयश्च तपोधनाः ।
कलशैः स्नापयामासुर्मलं चास्य प्रमोचयन् ॥ १८

16 ^a S1 D1-3 5 7 11 12 शिवौ N V B D10 13 भय,
Cm g k as in text (for एतौ) N V B D10 13 'पद', G4
'पद' (for जनपदौ) S1 N V B D2 3 5 10 12 13 श्रीमान्,
D1 7 9 श्रीमत्, Cm g k t as in text (for स्फीतौ) —^d D1
सर्वम् (for पूर्वम्) S1 D1 3 7 11 M4 नरोत्तमौ N V B
D10 13 पूर्वमासीन्महर्षिमान् —^c S1 D1-3 7 9 11 12 मलवश्र,
N V1 B3 4 D10 मलनाश्र, V2 4 B1 2 (after corr as in
N) मलजश्र, D3 मलवश्र (sic) D13 मलवाश्र (sic),
Cr m g k t as in text (for मलदाथ) S1 V2 B1 D1 5 11-13
करुपा (D11 'पा)श्र, V4 करजश्र, B1 D2 7 10 करुपा (B2 [after
corr] D10 'पा)श्र, D2 सकारुपो, D9 कुरपश्र, Cr m g k
'ताश्र (for करुपाश्र) V3 मलयकरुपाश्रैतौ —^d D13 देव
(for देव) N2 V1 B3 4 D10 13 निर्मिता (for निर्मितौ)
Cr m g t as in text (for ^a) Ck देवनिमाणेन निर्मित
नामधेयौ Ck

17 ^a N V B D10 13 सखा (B4 'हा)य नमुचि द्वा
—^d N3 मनेन (sic), B1 (marg also) पापेन, T3 मनेन,
Cg k t as in text (for मलेन) S1 N V B D1 2 5 7 9-13 M4
सममि (V4 *) द्रुत, D3 समभिद्रुत, Cg as in text —^c
S1 D1-3 5 7 11 13 शुभ्य (D1 'शि[sic])या च, N V B D10 13
क्रोधाचै (B2 'चै)व Dt शुभ्यौ (sic) D9 तद्रुपाच, G1
शुभ्यैव, Ck cites as in text (for शुभाचैव) Cg t
शुभा शुभ्यया 1 Ck S1 N V B D1-3 5 7 9-13 M4
सहस्रांश्च (D1 'क्षे) —^d S1 D1-3 5 7 9 11 12 'हत्या Cg k t
ब्रह्महत्या (as in text) Dt D2 4 6 8 T3 M4 Cg समा, D1 2
तदा, D11 यथा (for यदा) N V1-3 B D10 13 मित्रमुग्म
(B 'छग्म; D13 'दृग्म) गया (V1 *व) किल, B4 मित्रमुग्म
वायुता M4 ब्रह्महा मायाकिल

18 ^a D2 7 तद् (for तम्) S1 D1 3 5 7 9 11 12 (D2
वि)पय, Dt D8 8 मलिन, Cm g as in text (for क्षापयन्)
S1 D1 3 5 7 9 11 12 सर्व (for दवा) N V B D10 13 M4
तमिह खा (V1 2 4 चा, B2 4 M4 स्या)पयामासुर —^d M4
कलशैश्च Cr m k as in text (for ऋषयश्च) S1 D1-3
5 7 9 11 12 सर्व (S1 D12 'वै D3 ** D11 'वै) देवग
(D1 'गुणि सह, N V B D10 13 देवा सर्पिणश्च पुरा
(V1 2 तथा), M4 देवो सर्पिणश्च मुरा —^c) V2 किल
(sic) M4 ऋषय, Cr m g k t as in text (for कलशै)
N V B D10 13 M4 पुष्य (B2 पुणै)सलिलै (for क्षापया-

इह भूम्यां मलं दत्त्वा दत्त्वा कारुण्यमेव च ।
शरीरजं महेन्द्रस्य ततो हर्षं प्रप्रेदिरे ॥ १९
निर्मलो निष्करूपश्च शुचिरिन्द्रो यदाभवत् ।
ददौ देशस्य सुप्रीतो वरं प्रभुरनुचमम् ॥ २०
इमौ जनपदौ स्फीतौ ख्यातिं लोके गमिष्यतः ।

मासुर. Ś1 D1-3 5.7.9 11 12 स्त्रा(Ś1 D1 2 5 11 12 स्त्रा)
पयाचकुरमलेः (D2 3 7 °कृ. सलिलेः). —^d D2 मले (for
मले) M4 व्यपोहयन् (for प्रमोचयन्). Ś1 D1-3 5.7.9 11 12
सलिले(D2 3 7 अमले)मेलनुद्यये; N V B D10 13 पूर्णे(N
B2 3 पुण्यै; B1 * *)मेल(V2 4 °मान)समन्वितं (V1 4 B1.2
समापितं; B3 marg also as in V1 B4 and मपातितं; B4
D13 विशोषयैः); Cg as in text (for ^a).

19 D11 repeats 19-20^{ab} after 20^{ab}. —^a D11
(second time) अस्यां (for इह). Ś1 D1-3 5.7.12 तस्यां
(D12 °स्य; [sic]) भूमौ (Ś1 D1 12 °म्यां as in text); N
V B D10 11(first time) 13 M4 सोहिमन्देदो (for इह
भूम्यां). V2 मनस् (for मलं). Ś1 D2 3.5.7.11(second
time).12 देवाः; N V B D10 11(first time).13 G3 M4
हस्त्वा (for दत्त्वा). —^b N V2 4 B1-3 D10 11.13 देवः; V1
देवः, V2 B4 D6 (before corr. as in N) देवः; Dt D6 देवाः;
D1 हवाः; G3 ल्यत्वा.(for दत्त्वा). N2 V1 B1-3 D2.7.10.13
काल(B2 °ल.)व्यम्(B3 marg. also कौरुष्यम्); V2 कल्पम्;
V3 कल्पम्; B4 कौरुष्यम्; D4.11 (both times, first
time before corr. as in N2)कालव्यम्; G1.2 कल्पम्;
Cr.m.g कारुष्यम्; Ct as in text (for कारुष्यम्). D1 ह
(for च) D2 दुरा कालुषकं तथा; M4 देहतः कार्यमेव च. —^c
M4 शरीरेजे महेंद्रस्तु. —^d D11 (first time) अवाप्तवान्;
M4 अवाप्त सः (for प्रप्रेदिरे). —For 19^{ab}, N V B D10 13
subst.:

653* मित्राभिद्रोहसंयुक्तं परं हर्षमवाप्तवान् ।

[V4 मित्राति. N2 V2 B3 4 संभूतः; V1 सख्य (for
संयुक्त).]

20 D11 repeats 20^{ab} (cf. v.l. 19). —^a N2 B2.3 D10
ल्लपः; V1 2 D2 5 निष्करूपः; B3 (m. also). 4 निष्कुरूपः;
D11 (second time) निष्करूपः; T2 °स्त्रस्र (for निष्क-
रूपः). —^b Dt D6 8 शुद्धः; D3 शुद्धः; Cg as in text (for
शुचिर्). D6 चेदो (sic) (for इन्द्रो) V3 तथा; Dt
D3 5 7.9 11 T2 3 G4 M3 (before corr.) यथा; D1.11 (first
time) तदा; M4 ततो (for यदा). V B1.2 D2 स्वभूतः; D1
[अ]न्यभूतः; D13 ह्यभूतः (for [अ]भक्तः) D2 3 7 ह्यभूतदा.
—^c N V B D10 T3 तदा; Dt D2 3 5 7 9 11 ततो (for ददौ).
T3 सीदो (for सुप्रीतो). —^d Dt D6 8 प्रादाद्; D4 प्रयुद्
(sic) (for प्रयुद्) M3 अनुत्तमः; Ś1 D1.3 5 7 9 11 तौ
परमर्दिमः; N V B D2 3 7 13 ददौ परमर्दिमः (V1 °मो);
D10 ददौ परमर्दिमः.

मलदाश्च करुपाश्च ममाङ्गमलधारिणौ ॥ २१
साधु साध्विति तं देवाः पाकशासनमश्रुवन् ।
देशस्य पूर्वा तां दृष्ट्वा कृतां शक्रेण धीमता ॥ २२
एतौ जनपदौ स्फीतौ दीर्घकालमर्दिमः ।
मलदाश्च करुपाश्च मुदितौ धनधान्यतः ॥ २३

21 °) V2 B1 °पद्- (for जनपदौ). Ś1 D1-3 5.7.9 12
ख्याति (for स्फीतौ). —^a Ś1 D1-3 5.7.9 12 कृते; V1 °ति;
Cg.k cite as in text (for ख्यातिं). B2 (m.) लोके.
D11 T3 transp. ख्याति and लोके. V4 गमिष्यति (sic).
—After 21^{ab}, D1 ins. (gloss ?).

654* मलः पाप्मा विनिर्दिष्टः कारुण्ये देहजं मलम् ।

—^a Ś1 D2 9 11-13 मालवः; N B2-4 D1-3 7 10 मलजः;
V B1 मलज(V3 °य)श्च; Cg.k as in text (for मलदाश्च).
Ś1 V B1 D2 11-13 करुपाश्च; B2 कलुपाश्च; D3 कुरुपाश्च (for
करुपाश्च). —T3 G4 om. (hapl.). 21^d-23°. —^b Ś1 °सह°;
D1-3 7.9 12 °सहच्चा(D7 °वा)रिणः (D2 12 °णौ); D11 °हारिणौ;
Cr.m.g k t as in text (for -मलधारिणौ). N V2 4 B2 3
D10 [इ]ल्यंगजेन म(V4 स)माकितौ; V1 B1 4 D13 M4 हं
(V1 B1 D13 अं [with huatus]) गजेन ममाकितौ; V2
[अ]नंगजेन समन्वितौ.

22 T3 G4 om 22 (cf. v.l. 21). —^a N V B
D10 13 M4 एवमस्तु; D3 °ः (for साधु साधु). —^b Ś1
D1-3 5.7.9 11.12 शरंसुः पाकशास(D2 °शास)न. —^c Ś1
D1-3 5.7.9 11 दे(D2 ६)शपूर्वा (D3 °ज्या)च(Ś1 तु); D12
देश° पूर्वा; M3 देवस्य°; Ck.t as in text (for देशस्य पूर्वा)
Ś1 कृत्वा (for दृष्ट्वा). —^d M3 कृतं (sic) (for कृतं). D2
धीमता. (sic).

23 T3 G4 om. 23^{ab} (cf. v.l. 21). —^a Ś1
D1.3.11 13 पुनः; Cg.k as in text (for पुनौ) D12 °पद्-
(for जनपदौ). Ś1 D2.7.9 (after corr. as in text) धीमत्
(D2 7 °मान्); D1-3 12 धीमत् (for स्फीतौ). —^b Ś1
D2 3 5 7.9 12 तुल्यकालम् (D1 12 °मः; D2 °लात्); D1
कामतुल्योः; D11 तस्मिन्काले (for दीर्घकालम्). D1-3 7 9 11
अ(D1 11 ह्य)र्दिमौ (for अर्दिमः) —For 22°-23°, N V
B D10 13 M4 subst.

655* देशस्य नाम निर्दिष्टं श्रुत्वा तां वामवेतिताम् ।
एवमेतौ जनपदौ हर्षमेव विनाशितम् ।

[(1. 1) B4 M4 देशस्य (for देशस्य). V1 D13 वृषा (for
श्रुत्वा तां). V4 वाम (sic) वेतिता. —(1. 2) D13 च°; M4 [अ]र्दिम°
(for विनाशितौ). B4 repeats through oversight 21^b
for the post. half.]

—^a Ś1 D2 9 11-13 मालवः; N B2 मलजः; N2 V1 2 4
B (B2 m. also) D2 3 7 10 मलजः; V2 मलया; D1
मालराश्च (for मलदाश्च). Ś1 V2 D3 9 11-12 °वृक्षश्च; V2

कस्यचिन्मथ कालस्य यक्षी वै कामरूपिणी ।
बलं नागसहस्रस्य धारयन्ती तदा ह्यभूत् ॥ २४
ताटका नाम भद्रं ते भार्या सुन्दस्य धीमतः ।
मारीचो राक्षसः पुत्रो यस्याः शक्रपराक्रमः ॥ २५
इमौ जनपदौ नित्यं विनाशयति राघव ।

करुणाश्रेति, B₂ 'कल्लु' (m also 'सा')श्च (for च करुणाश्च) —^d S₁ समुद्रौ, N V₁ 2 B D₄ 6 8 10 13 T₁ M₅ मुदितौ (V₁ D₁₃ 'ताव्'), V₄ आहितौ, Dt T₃ मुदितौ (sic), D₁-3 7 सपूणौ (D₂ 'र्णा'), D₁₃ 13 सपूणौ (for मुदितौ) N V B D₁₀ 11 13 M₅ नक्षिसपदा (D₁₁ 'सयुत', D₁₃ 'सयुतौ', M₅ 'मत्तरा'), D₈ घ-न्वत् (for घनधान्यत्)

24 *) N V B D₁₀ 13 M₅ अथ कालस्य महतो —^d N V B Dt D₈ 8 10 13 T₃ M₅ यक्षिणी, Cg as in text (for यक्षी वै) S₁ Dt 3 5 7 11 12 यक्षी दुः (D₁₁ 'तु [sic]') छत्रचारिणी (D₁₃ 'णौ [sic]') —^d V₃ वन (sic) (for बल) —^d S₁ Dt 3 5 7 9 (after corr m as in text) 12 [अ] निश युधि (D₀ 3 7 सदा), N V B D₁₀ 13 M₅ महाबला, D₁₁ [अ] बला सती, D₁₁ T₃ तथा, Cg as in text (for तदा ह्यभूत्)

25 *) N V B D₁₀ 13 M₅ सुदस्य, Cg k t as in text (for भद्रं ते) —^d N V B D₁₀ 13 M₅ देव्य (V₁ देव्य [sic]) पतेभूत्, D₁₄ सुदाय (for सुन्दस्य धीमत) —^d D₂ [स] ज स्यात् (for पुत्रो) —^d V₄ यस्य (sic), D₂ तुल्य (for यस्या) T₂ शुक्र (for शक्र) D₁₁ पुरोगम (for पराक्रम) —After 25 V₂ (after 660*) 3 ins

656* पशुमानुषसंयुक्तमक्षयत सर्वदा ।

while B₃ ins

657* यस्या भयान्न चलति देवाना च विमानक ।

—After 25 Dt D₄ 6 8 9 14 S (except M₄) Cg k ins

658* वृत्तबाहुर्महाश्रीयो विपुलास्वतुर्मुहान् ।

राक्षसो भैरवाकारो नित्यं त्रासयते प्रजा ।

[[1 r] D₁₄ T G₂ 4 M₁ 3 'थीयो' (for महाश्रीयो) —(1 2) D₉ [आ] रावो (for [आ] कारो) G₂ त्रासयते (sic) (for त्रासयते)]

26 *) M₅ सोय (for इमौ) —^d Dt राघव, D₉ दुष्टी (for राघव) —For 26^{ab} S₁ Dt 3 5 7 11 13 subst

659* उल्पादयति सा नित्यमेतौ जनपदाधुमौ ।

[S₁ उल्पादयति (sic) D₂ [अ] मौ (for सा) D₁₃ तिनयौ (sic) (for जनपदाव्) S₁ D₁₃ 11 12 तिमो (D₁₃ 'मौ [sic]') (for उभौ)]

while N V B D₁₀ 13 subst

660* सेयं जनपदं राम समुसाद्य सुदारणा ।

मलदांश्च करुणांश्च ताटका दुष्टचारिणी ॥ २६
सेयं पन्थानमाचार्यं वसत्यल्लर्ययोजने ।
अत एव च गन्तव्यं ताटकाया वनं यतः ॥ २७
स्वबाहुबलमाश्रित्य जहीमां दुष्टचारिणीम् ।
मन्त्रियोगादिर्म देशं कुरु निष्कण्टकं पुनः ॥ २८

[N₁ सम V₁ तेम V₂ सेया (for सेय) V₃ जनपदो (sic) N₂ V₁ B₃ D₁₀ नाम (for राम) N₂ V₄ B₁ 3 सत्तुच्छाय (B₃ m also 'त्वाच) V₂ समासाय, D₁₃ सत्तुच्छाय (for समुत्साय) V₄ सुदायणा (sic) —After 660*, V₂ ins 656*]
—^d S₁ Dt 3 5 7 11 12 मालवाश्च (for मलदाश्च) N V B D₁₀ 13 अद्यापि साधि (V₁ 'ध्या', V₂ 3 B₃ (m) 4 'नि, V₄ 'यवसति (V₄ 'ते) —^d N₂ V B D₁₀ 13 ताड (V₁ 'छ) का (here and elsewhere below), G₁ राक्षसो (for ताटका) B₂ D₁₃ नाम (for दुष्ट) N V B D₁₀ 13 यक्षिणी (for चारिणी) S₁ यक्षी वै विशिवादिनी, D₁-3 5 7 11 12 यक्षी (D₂ यक्षिणी [hypermetrnc]) विशिवादिनी

27 D₁₀ reads 27^a-28^b in marg —^d S₁ D₂ 5 7 12 13 एषा, N V₁ B₁ 3 D₁₀ एत (N₁ D₁ 'न), V₂ 4 B₂ 4 पुत्र, D₁₁ सौल, M₅ हृद्, Cmg k t as in text (for सेय) N V B D₁₀ आनम्य, Dt D₄ 6 8 9 11 13 T₃ Cmt बाहु (D₁₁ 'श्रि) ख, D₁₂ आसाय, Cg as in text (for आचार्य) —^d S₁ Dt 3 5 7 12 13 निवसत्यर्थे (D₂ 7 'न'), D₄ 6 8 9 14 G₂ 4 M 'ध्यर्थे, G₁ 3 विष्ट (for वसत्यर्थ) G₁ योजन (for-योजने) Ck आचार्योति वृद्धिश्चन्द्रन्ती । आह्वय विरुध्यति वायत् । अजिह्वान्तोऽर्थमल्लयं तत कर्मधारय ।

. अर्थयोजने दूरे पन्थानमाचार्यं निवृत्ति । यथेदं ताटका वनमस्मानिर्गन्तव्यं अत एव हेतो । Cg N V₂ 4 B D₁₀ साध्य (V₂ 'य्य, V₃ 'र्था, D₁₀ 'द्य) र्धाद्यो (V₄ 'व्याया, B₄ 'यो) जनादित, V₃ सा-र्था योजनार्थि —M₅ om 27^a-28^b —^d B₄ ताट, D₁ अत, D₁₁ G₁ 3 हृद्, Cg as in text (for अत) S₁ D₂ 12 Cr n, D₁-3 7 हि, D₁₁ [अ] मि (for च) Cm अत एव न, Cmt अत एव च V₂ T₂ (before corr) गन्तव्य (for गन्तव्य) —^d S₁ ताटकायोजन, N₁ D₁ 3 5 7 11-13 ताड (D₂ 12 'ट) काभवनं N V B D₁₀ 13 14 M₂ प्रति, D₇ तत्, D₁₁ स्वया, G₁ स्वत, Cmg t as in text (for यत)

28 M₅ om 28 (cf v l 27) S₁ Dt 2 5 12 om 28 and 29 D₁₀ reads 28^{ab} in marg (cf v l 27) —^d B₁ D₁₃ सु (for स्व) D₃ -रम् (for -रम्) Dt reads माश्रित्य जही in marg —^d N V₁ 3 B D₃ 7 10 11 13 M₁ जहि ता (N₁ स्व), V₄ वतते, T₃ [आ] जहिता (sic) Ct as in text (for जहीमा) N V B₄ D₁₀ 13 यक्षिणी (for -चारिणीम्) —D₂ 7 om 28^a-29^b —^d V₂ सन् (for मन्) V₃ इदं (for इमं) V₄ लोक (for देश) —N₂ reads 28^a and 29^a in marg

न हि कश्चिदिमं देशं शक्रोत्थागन्तुमीदृशम् ।
यक्षिण्या घोरया राम उत्सादितमसह्यया ॥ २९

एतत्ते सर्वमाख्यातं यथैतदारुणं वनम् ।
यक्ष्या चोत्सादितं सर्वमद्यापि न निरर्तते ॥ ३०

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे त्रयोविंशः सर्गः ॥ २३ ॥

29 Śi D1-3 5 7 12 om 29 Ns reads 29^a in marg (cf v1 28) —^a) D11 (before corr) देशे (for देश) Ns V4 B3 4 Dt D3 5 10 11 G1 Mi शनो (B4 °नो) हि (V4 B4 D11 °मि, M1 [1nf lru]°मि) (for शनोति) M4 [आ]इतुम् (for [आ]गन्तुम्) G3 शक्रोत्थागन्तुं देशम् (by transp) B3 ईश्वर, D10 ईश्वरा (for ईश्वरम्) —D11 reads ^a in marg —Note hiatus between ° and ^a —°) N V B D10 11,15 घोर (V1 मोघ)रूपिण्या (for घोरया राम) —^a) D11 उच्छादितम् D12 G1 5 Mi 5 (all to avoid hiatus) ह्य°, Cm as in text (for उत्सादितम्) N V B D10 11 13 अना (V1 °वा)वैया, Cg as in text (for अलक्षया)

30 °) N V B D10 13 M4 इति Cg k as in text (for एतत्) V1 om (submetric) B3 marg (for ते) N V1 3 4 B D10 13 सत्य°, D4 Ts वयितं सर्वे, Cg as in text (for सर्वमाख्यात) Ck चया यक्षयोत्सादितमेतत्समाख्याम् । Ck —^a) D4 Ts यद्, D13 यया G1 अय, G3 मया (for यया) Śi N V B D1-2,3 7 10-13 M4 [इ]दं (for एतत्) Cg यथैतत् (as in text) —°) Śi N V B

D10 11 16 यक्षिण्योत्सादित, D1-3 5 12 °यत्सादि (D3 °*)तं, D7 °यु * * *, D13 यक्षिण्यु° (for यक्ष्या चोत्सादितं) N V B (B3 m also as in text) D10 11 13 M4 पूर्वम् (for सर्वम्) —^a) Śi N V B1 2 4 D1-3 5 7 10-13 [उ]त्साद्यते [B4 D12 °दित] तया (N1 V1 D3 1° तथा, V2 B3 यया, D1 3 7 [S]मया, D13 सदा), B3 [उ]च्छाद्यते य (marg also न)या, M4 तु न शान्त्यति Cg as in text (for न निवर्तते) Cr m k t as in text (for ^a)

Colophon D1-3 7 om (continue the previous sarga) —*hānda name* Śi N V4 Dt D4 10-12 om V1-3 B आदिकारि —*Sarga name* Śi N V B D3 5 10 13 तादकावनप्रयत्, D11 तादकावय —*Sarga no* (figures words or both) Śi N V1 4 B1 4 D3 12 om V3 29 V1 26 B2,3 D3 10 27 Dt D4 5 11 14 S 24 D13 इत्यादि—कदि ता—वनप्र—सर्गे (dash indicates lacuna) —After colophon Ts concludes with श्रीरामचन्द्राय नमः ; G1 2,4 श्रीरामाय नम G3 श्रीमते रामानुजाय नम M4 श्री न

२४

अथ तस्याप्रमेयस्य मुनेर्वचनमुत्तमम् ।
 श्रुत्वा पुरुषशार्दूलः प्रत्युनाच शुभां गिरम् ॥ १
 अल्पवीर्या यदा यक्षाः श्रूयन्ते मुनिपुंगव ।
 कथं नागसहस्रस्य धारयत्यगला बलम् ॥ २
 विश्वामित्रोऽज्जरीढाक्यं शृणु येन बलोत्तरा ।
 वरदानकृतं वीर्यं धारयत्यगला बलम् ॥ ३

24

D1 27 cont the previous Sarga

1 ") \tilde{N} V B D10 12 इति, D7 अतस्, Cm g k t as in text (for अथ) D11 तयापनेयस्य (sic) (for तस्या प्रमेयस्य) —^b) \tilde{S} 1 \tilde{N} 2 V B D1-3 710-12 अनुत, \tilde{N} 1 जमवीत् (for उत्तमम्) —After 1^{ad}, D1 27 ins

661* चित्ररूप महाय च स्वार्थसाधनमुत्तमम् ।

[D3 उत्तम (for उत्तमम्)]

—G1 reads 1^r in marg —^c) D3 11 पुरुषशार्दूल —^d) D7 शुभ (for शुभा) D3 गिरा —For 1^{ad} \tilde{N} V B D10 13 subst

662* श्रुत्वा रामस्ततो भूय परिपन्नल सदायम् ।

[V3 सगम V4 सादर (for सदायम्)]

2 ") \tilde{N} 2 B3 D10 स्वल्, B1 वीर्या, D11 जामवीर्यात्, G1 वीर्यस्य (for मल्पवीर्या) V3 D3 9 G1 सदा, D11 सः, T1 यथा (for यदा) V3 B4 दक्षा, Dt D1 2.4.6 8 T3 G3 M3 Cmp t यक्षी, G1 यक्ष्य, G4 यक्ष्या, Cm as in text (for यक्षा) V4 अल्पवीर्यं हि यक्षिण्या —^b) V1 4 Dt D3 4 6 9 11 13 T3 G1 3 M3 Cmp t श्रूयते Cm g k as in text (for श्रूयन्ते) D2 11 13 पुगव, D3 पुगववत् (sic) M4 "सत्तम (for मुनिपुंगव) \tilde{C} Cr यदा यक्षा सृष्टा तदा प्रभृति अल्पवीर्या श्रूयन्ते । \tilde{C} —D3 om 2^c-3^c —^c) B3 नाम (for नाग) —^d) B4 धा-यति, D12 धारयतु, M3 धारयती, Cr m g k as in text (for धारयति) —After 2 Dt D1 8 11 T3 G-3 M1 3 (inf lin sec m) ins.

663* तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रामस्य विदितमन ।
 हर्षयन्मृच्छगया बाचा सलक्ष्मणमरिदम् ।

[No comm —(1 1) Dt D4 4 सलुक् (D4 "क) (for तस्य तद्) Dt D4 8 13 T3 राघव्याभिर्गोचय, G2 M1 राघवस्य महात्मन (for the post half) —D4 11 T3 G-3 M1 om 1 2]

3 D3 om 3^{ad} (cf v1 2) T1 om (hapl) 3 —^b) Dt D4 8 13 (before corr as in text) T3 बलोत्तरा, \tilde{C} "त्ता (as in text) \tilde{N} V B D10 13 विश्वामित्रस्ततो रामे (N1

पूर्वमासीन्महायक्षः सुकेतुर्नाम वीर्यवान् ।
 अनपत्यः शुभाचारः स च तेपे महत्तपः ॥ ४
 पितामहस्तु सुप्रीतस्तस्य यक्षपतेस्तदा ।
 कन्यारत्नं ददौ राम ताटकां नाम नामतः ॥ ५
 ददौ नागसहस्रस्य बलं चास्याः पितामहः ।
 न त्वेन पुत्रं यक्षाय ददौ ब्रह्मा महायशाः ॥ ६

वाक्य) श्रुत्वाति पुनरववीत्, M4 तमुवाच ततो राम विश्वामित्रो महातपा —^c) V4 राम (for वीर्यं) \tilde{N} V1-3 B D10 11 12 M4 शृणु राम यथा (B1 "दा, D11 यतम्) यथा (V2 "व, M4 बयेद सा) \tilde{C} g k cate as in text —^d) E4 *रयति —For 3 \tilde{S} 1 D1-3 (D1 2 only for 3^{ad}) 7.12 subst, while D11 subst 1 1 for 3^{ad} and ins 1 2 after 3^{ad}

664* पृथक्कुत्वा वचस्तस्य विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ।

वरदानमहाबाहो यथैषा कामरूपिणी ।

[(1 2) D2 "नाम (for महाबाहो)]

4 ") D11 (after corr sec m as in text) पूर्णम् (for पर्वम्) V4 एव, T3 जस्मिन् (for भास्तिन्) D1 7 9 12 T1 G4 M2 महार्, D3 "क्ष (for महायक्ष) —^b) \tilde{N} 3 स्वकेतुर (for सुकेतुर) \tilde{S} 1 D1-3 5 7 12 "धार्मिक, \tilde{N} V B D10 11 13 M4 इति त्रिभुत (for नाम वीर्यवान्) —^c) \tilde{N} V B D10 11 13 प्रकाकाम, G4 सदा (for शुभाचार) —^d) \tilde{N} V1-3 B D10 13 स तेपे सु, V4 सुखि सु, D11 स तेपे च (by transp) (for स च तेपे) D2 5 महातप

5 ") D1 च सु, D2 3 7 तत, D4 12 तु स (for तु सुदीतस्य) —^b) T1 तथा (for तदा) —For 5^{ad} \tilde{N} V B D10 13 subst

665* तस्मै साक्षास्वयं ब्रह्मा तपसा परिनोषित ।

—^c) M6 कन्यामेका (for कन्यारत्न) M3 reads रत्न inf lin sec m V3 तस्मै, D2 रस्य (for राम) —^d) V D9 11 ताटका, D3 ताटका (for साटका)

6 ") \tilde{N} V B D10 13 14 11 2 G4 M3 transp ददौ and बल \tilde{S} 1 D1-3 5 7 12 तस्या, D11 चास्यै, T3 चास्या, M4 अस्यै (for वास्या) —^c) \tilde{S} 1 अन्य व, D3 न त्वेप, D4 न त्वेव, D7 न च पुत्र स, D9 यत्तव, D12 न त्वेपु (for न त्वेव पुत्र) D3 यक्षाय (sic) —D3 om (hapl) 6^c-7^c —^d) \tilde{S} 1 पुत्र, Dt D4 8 चासी (for ब्रह्मा) D7 *यक्षा, G4 "तपा (for महायशा) —For 6^c \tilde{N} V B D10 13 subst

666* काङ्क्षोऽप्यस्य पुत्र हि न यक्षाय ददौ प्रभु ।

[V3 पुत्रत्वं (for पुत्र हि) B2 (marg also) न यक्षाय B4 न यक्षाय D12 यक्षाय न (by transp) (for न यक्षाय)]

तां तु जातां निवर्धन्तीं रूपयौनशालिनीम् ।
जम्भपुत्राय सुन्दाय ददौ भार्यां यशस्विनीम् ॥ ७
कस्यचिन्मय कालस्य यक्षी पुत्रं व्यजायत ।
मारीचं नाम दुर्धर्षं यः शापाद्राक्षसोऽभवत् ॥ ८
सुन्दे तु निहते राम अगस्त्यमृषिसत्तमम् ।
ताटका सह पुत्रेण प्रधर्षयितुमिच्छति ॥ ९

7 D2 om 7^{abc} (cf v1 6) —^a Dt D2 8 बाला (for जाता) M4 विवृद्धातीं (for निवर्धन्तीं) S1 N V B D1 3 5 7 9-13 वर्धमाना च (S1 D1 3 5 7 9 11 12 हि D13 तु) तां दद्या (S1 D5 11 12 राम, D1 3 7 9 तातो) —^b S1 D5 11-13 कुम, N1 B2 धुधु, N2 V3 B3 4 D10 धुधु, V1 धुधु, V2 4 धुधो, B1 धुधु, D1 3 7 9 रुह, D14 S (except T3 M4) हह, M4 वस, Ct as in text (for जम्भ) ☞ Ck tp खञ्जो पुत्र खञ्जपुत्र 1 ☞ —^d N V1 2 4 B D10 13 अन्ति दितां, V3 अनुत्तमा (for यशस्विनीम्)

8 ^b D1-3 7 9 transp यक्षी and पुत्र N1 M4 व्यस्ययत, T3 व्यजायते, G1 Cg अजायत, Crt as in text (for व्यजायत) —^c N V B D10 13 विव्याते (for दुर्धर्षं) V1 reads *inf lin* within brackets सतीच यज्ञं राम —^d M2 भवेत् (for अभवत्) S1 N V1 2 4 B D1 3 5 7 9-13 शापा (V1 साक्षा) द्राक्षसता गतं, V3 शापाचद्रक्षता गत

9 ^a B4 दिनते (metathesis) (for निहते) N V B D10 13 तस्मिन् (for राम) S1 D2 3 5 7 11 13 साभ्येत्य (S1 सोभ्येति, D5 13 सोपेत्य) निम (D3 °ह [sic]) त मोहाद्; D1 सोभ्येत्य च ततो मोहाद् —^b V1 3 अगस्त्य, D4 9 14 स सागरस्यम् (for अगस्त्यम्) V1 3 D13 मुनिसत्तमं, D4 T3 मुनिपुत्रं —^c D13 पुत्रसहिता (for सह पुत्रेण) —^d N V B D10 13 उचता, D1-3 7 11 पेच्छत, Cg k t as in text (for हृच्छति) —After 9 Dt D4 6 8 14 S (except M4) ins (Cm comm onl 2 Cg onl 1 x and 2 Ck t onl 1 x)

667* भक्षार्थं जातसंरम्भा गर्जन्ती साम्प्रधावत ।
आपतन्ती तु तां दद्या पुनस्तस्यास्त्वामगमजम् ।
मुद हृत्तानुसङ्गाश भगस्त्यो भगवानृषि ।

[(1 1) Dt D2 8 भक्षार्थं, T3 भक्षार्थं (for भक्षार्थं) T3 [अ]भक्षार्थं — M3 reads 1 2 and 3 *inf lin sec m* — (1 2) D14 तं (for तं) M3 तामापतन्ती ददा स (for the prior half) —All except G3 M3 om from पुन in l 2 up to संगाश in l 3 —(1 3) M3 भगस्त्यो M3 अभूत् (for कपि)]
—After l 1, M3 (*inf lin sec m*) ins.

668* आपान्ती सह पुत्रेण सक्वाणं सा महायज्ञे ।
रूपं दद्या पुनस्तस्य भगवत्स्य वरं गता ।
साविता कामधार्णयि पुत्रणी सा दिग्मयरा ।
रत्यर्थं हृत्तरम्भा गायन्ती साम्प्रधावत ।

राक्षसत्वं भजस्वेति मारीचं व्याजहार सः ।
अगस्त्यः परमकुद्रस्ताटकामपि शप्तवान् ॥ १०
पुरुषादीं महायक्षी निरूपा निवृत्तानना ।
इदं रूपमपाहाय दारुणं रूपमस्तु ते ॥ ११
सैषा शापकृतामर्षा ताटका क्रोधमूर्छिता ।
देशमुत्सादयत्येनमगस्त्यचरितं शुभम् ॥ १२

10 ^a S1 D7 13 भवेत्येव, D1 2 भवत्ये (D1 °त्ये [sic]) वं, M2 भवत्येति (as in D2) Cm k t as in text (for भजस्वेति) N V B D3 5 9-13 G3 राक्षसस्त्व (D3 °स्त्व) भवे (N1 V1 2 4 D12 °व) त्ये (D12 °त्ये) व (D3 भवत्येव, D3 G3 भवत्येति, D11 भवे पात्र) M4 राक्षसीच भवत्येति (sic) —^b D12 व्याजहाः D14 T1 2 G4 M1 3 ह, G3 हा (for स) M4 महिष्यर्षाजहार ता —^c V3 B3 D1 3 परम्, Dt D2 8 परमामर्ष्य, D11 परम् (for परमकुद्रस्त) —^d S1 D1 3 11 चापि, N V B D10 13 चे (N1 ह) दमत्रयीत्, D3 7 M4 अन्ति, D12 चापि (for अपि शप्तवान्) ☞ Cm यत् पुरपादनादिगुणयुक्ता अतो राक्षसत्वं भजस्वेति शप्तवान्, Ct शप्तवान् राक्षसत्वं भजस्वेति । ☞

11 ^a S1 पुरुषादा, N V1 B1 (gloss पुरुषानन्ति) 3 (marg as in B4 also) D10 M4 °दि (sic) V2 3 B4 D3 7 11-13 °दा, B2 पुरपादिनी (hypermetric) Cm (see above) g k t as in text (for पुरपादी) S1 °यर्षी, N V1 3 B D10 13 M4 घोररूपा (N1 °पा च, B4 °पा या [both hypermetric]) V2 दीर्घरूपा च (hypermetric) (for महायक्षी) V4 परया घोररूपा च —^b S1 Dt D1 2 6 8 9 13 G1 3 विवृता (S1 °ता), N V B D10 13 M4 यक्षी त्व, D3 7 राक्षसी, D5 विवृती, D11 (marg) भज त्वं (for विरूपा) S1 विवृत्तानना, B2 वित्तानना (for विवृता नना) ☞ Ck दीर्घकोपवशात् विरूपविवृत्ताननात् । ☞ —^c S1 D1-3 5 7 11 13 शुभं, B2 हुम् (sic) Ck as in text (for इदं) S1 N V B D1-3 5 7 11-13 M4 परिश्रम्य, Dt D2 8 विहायाशु (D2 °य), G3 विस्त्रय्याय (for अपाहाय) ☞ Cm विहाय स्त्रया च, Cg त्वं इदं रूपं विहाय । ☞ —^d S1 D1-3 5 7 13 आस्थिता (for अस्तु ते) N V B D10 11 13 वि (V3 मन्) कृता (D11 दारुण) त्वं भविष्यन्ति, M4 विरूपा विचरिष्यन्ति, Cg t as in text (for °द)

12 ^a S1 D2 13 ता (D3 स [sic]) धै, T3 नैषा, Cm g as in text (for सैषा) S1 D2 13 पाप (for नाप) S1 D2 7 12 13 T1 3 G3 °हृतामर्षाद्, N V B D10 13 M4 -समापि (N1 B2 °दि) हा T3 हृतामर्षं (for °हृतामर्षा) ☞ Cm भमया भसहमनाः । Ct भमयादभमनात् । ☞ —^b D4 द्राक्का (for ताटका) S1 D3 13 नाम राक्षसी, N V B D10 11 13 दुष्टयस्त्रिणी (N1 °चारिणी, S1 राक्षसी) । D2 3 7 कामरूपिणी (for शेषमूर्छिता) —^c D2 2 7 दिशम् (for देशम्) N3 उरुजदयनि, V1 D3 6 उपादाय (V1 °ये) द्; B4

एनां राघव दुर्दृष्टां यक्षीं परमदारुणाम् ।
गोत्राब्जनिहितायां जहि दुष्टपराक्रमाम् ॥ १३
न ह्येनां शापसंस्पृष्टां कथिदुस्तहते पुमान् ।
निहन्तुं त्रिषु लोकेषु त्वामृते रघुनन्दन ॥ १४
न हि ते स्त्रीवधकृते घृणा कार्या नरोत्तम ।
चातुर्गुण्यहितायां कर्तव्यं राजसूनुना ॥ १५

उत्पादयति, G₁ उत्साधयति (for उत्सादयति) S₁ D₁ 12
[ए]तद्, V₂ B₁ D₁ [ए]वम्, D₂ [ए]ताम्, D₃ 7 ए
नाम्, M₄ [ए]तम् (for [ए]नम्) D₁ दिता तु छाद्यानाम्
—^a) S₁ D₁ D₂-9 12 Ct [आ]चरित (D₇ 'चाय'), N₁ V B
D₁₀ 12 M₄ [आ]च्यु (D₁₃ 'च्यु'चिते, D₁-3 [आ]चरिता,
Cg as in text (for 'चरित') Ck Ck देशोक्तादने हेतुगर्भ
विशेषणमगस्त्यचरितमिति । Ck S₁ D₂ 5 तदा, N₁ V B D₁₀ 13
पुता, D₁ 3 11 12 सदा, D₇ सदा (for शुभम्)

13 ^a) S₁ N₁ V B₁ 3 D₁ 10 12 13 एव, D₁ 2 7 11 M₄
एता, Cg as in text (for एता) N₁ V B₁-3 D₁₀ 13 M₄ ता
राम (B₁ marg as in B₄ also) (for राघव) D₁ 11 दुर्धर्षा
(for दुर्दृष्टा) B₄ एता ता र्वं सुदुर्दृष्टा —^b) D₃ परमदारुणी
—D₁₃ om 13^a-14^a —^c) V₁ 3 हितायाच, V₄ हितामय,
Ct as in text (for हितायाच) —^d) N₁ V B D₁₀ घोर^e,
D₁₁ 'यशस्व' (sic) (for दुष्टपराक्रमाम्) G₄ M₄ जहीमा
दुष्टचरिणी

14 D₁ 5 om 14^a (cf v1 13) N₁ V B₁ om
(hapl) 14 —^a) D₁ 2 [ए]ता (for [ए]ता) S₁ D₁ 3 8
7 11 14 T₁ 2 'सदृष्टा (D₁₁ 'ष्ट [sic]), D₄ 9 Cmg 'सदृष्टा,
D₁₃ पापसदृष्टा, G₁ M₄ 'सदृष्टा, M₄ रूप^e, Ct as in text
(for 'शापसदृष्टा) —For 14^a N₂ B (B₁ om) D₁₀
M₄ sub^t

669^a न हि वीर्यमदोग्धतामेता परमदारुणाम् ।

[B₂ को (marg as above also) (for हि) B₄ M₄
'नो' (for 'अनेनकम्) M₄ घोरपराक्रमा (for परमदारुणाम्)]
—^a) N₂ B₂ 3 D₁₀ निहति (B₂ 'ता), D₁₃ की हति, G₂
निहंतु (for निहन्तु) M₄ कथिदुस्तहते हतु ल्यतेत्य पुमानिह

15 ^a) S₁ N₁ V₁-9 B₁-3 D₂ 9 7 10-13 'च ते, V₄ 'लया,
B₄ 'चाद्र, G₁ निहते, Cg as in text (for न हि ते) S₁
'वधे होय, N₁ V B₁-3 D₁₀ 11 13 G₁ 'हृता B₄ M₄ 'वध
हृत्वा D₁ 3 5 7 12 'वधेत्ते (D₂ 'वै, D₃ 7 'व्ये'व, Cm as
in text (for स्त्रीवधकृते) —^b) N₁ V B D₁₀ 13 M₄ कथच
न, T₃ रघुत्तम: Ck t as in text (for नरोत्तम) —^c) D₁
चतुर्वर्ण (for चातुर्वर्ण्य) S₁ D₁ 3 5 7 11 12 हित ताठ, Dt
D₄ 9 Ct हितार्थं हि, Ck as in text (for हितार्थाय) N₁
V₁ 2 4 B D₁₀ 13 M₄ प्रजाना हि (B₁ तु, D₁₃ च) हित (V₄
'तां'मित्ये, V₃ प्रजाना च हितार्थं च —^d) N₁ V B D₁₀ 13 M₄
रानसूनुमि —After 15 B₄-4 Dt D₄ 3 9 12 S (except

राज्यभारनिष्ठुक्तानामेप धर्मः सनातनः ।
अधर्म्यां जहि काकुत्स्थ धर्मो ह्यस्या न विद्यते ॥ १६
श्रूयते हि पुरा शक्रो विरोचनसुतां नृप ।
पृथिवीं हन्तुमिच्छन्तीं मन्थरामम्पसदयत् ॥ १७
विष्णुना च पुरा राम भृगुपत्नी दृढव्रता ।
अनिन्द्रं लोभमिच्छन्तीं काव्यमाता निषूदिता ॥ १८

M₄) ins while N₂ D₁₀ 11 Cr mg k t ins after 16
670^a नृशसननृशस वा प्रजारक्षणकारणात् ।
पातक वा सद्योय वा कर्तव्यं रक्षता सदा ।

[(1 1) G₁ पाप कपि (for नृशसम्) B₂ अनृश कपि (sic)
(for अनृशस वा) D₁₀ राजवर्षेभिराताना (for the prior
half) —(1 2) N₂ B₂-4 M₄ पावन (for पातक) D₃ श्लोप
(for सद्योय) T₃ नद्योय वाप्योय * (for the prior half)
N₂ B₂-4 D₁₀ 11 नात्र सद्यय, D₄ 11 T G₂ 'सता (G₂ 'ता'),
D₃ यक्ष्या (sic) तदा, G₂ रक्षता तदा (metathesis) (for
रक्षता सदा)]

16 ^a) D₁ G₁ राज्यभार, D₃ 3 7 राज्यभार (D₂ '*'),
D₃ राज्यभारे, D₁₁ राजधर्म N₁ V B (B₁ missing up to
मि) D₁₀ 13 M₄ राजवरे (D₁₃ 'शा')मि (N₂ V₄ हि, M₄ म)
जातानाम् —^b) D₁₂ एव (for एव) D₃ सनातन —^c)
S₁ D₂ 11 13 तस्मात्तव, N₁ V B D₂ 7 10 13 M₄ अधर्म, T₃
अधर्मो, Cg k t as in text (for अधर्मो) V₄ ह्यन, D₂
न हि (for वाहि) —^d) D₁ 'यस्या, D₂ धर्मोदाह्य; D₄ 7 11
G₁ 'हस्या (for धर्मो हस्या) N₁ V B D₁₀ 13 M₄ कुरु
धर्मं प्र (D₁₀ प्र [sic]) जाहित —After 16, N₂ D₁₀ 11
Cr mg k t ins 670^a

17 ^a) T₃ श्रूयता, Cg k t as in text (for श्रूयते)
S₁ D₁-3 5 7 11-13 राम, N₁ V B D₁₀ M₄ [अ]न्येव, D₃ तात
(for शक्रो) —^b) S₁ D₁ 3 5 7 9 11 12 विरोचनसुतानवद्;
N₁ V B D₁₀ 13 'सुता (N₁ V₄ D₁₀ 'तर) किल, D₃ 'सुता
भवत (sic) M₄ 'किलसुत (sic) —For 17^a S₁ N₁
V B D₁-3 5 7 9-13 M₄ sub^t

671^a तक्षशी दीर्घविह्वेति विज्याता वामरूपिणी ।

विह्वेते सुमहद्वृत्ता वा वषट् कालनिलोपमम् ।

जिषामु पृथिवीं कुरुष्व शनैः विनिपातिता ।

[(1 1) D₁ 3 7 दीर्घविह्वेति विज्याता राक्षसी (by transp)
D₁₁ वामरूपिणी —(1 2) B₁ विह्वता (for विह्व) N₁ V₁ 2 8
B₁ 2 8 D₁₀ 13 वषट् कृता (by transp) V₂ वषट् कृता, B₂
D₁₁ वषट् कृता (for कृता वषट्) N₁ B₁ 3 D₁₀ 'नक्षत्रम्, D₁₁
वक्षी^a (sic) (for वामरूपिणी) —(1 3) N₁ V B D₁₀ 13
प्रमती M₄ निम्न (for निम्न) S₁ D₂ 11 12 तर्वा (D₁
'तर्वा') (for कुरुष्व) D₂ 3 7 विनिपातिता (for विनिपातिता)]

18 D₂ om (hapl) 18 —^a) D₃ हि (for च) —^b)
Dt D₃ 9 पतिव्रता, M₄ यशस्विनी (for रघुव्रता) S₁ N

एतैश्चान्यैश्च बहुमी राजपुत्र महात्मभिः ।

| अर्धमनिरता नार्यो हताः पुरुषसत्तमैः ॥ १९

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे चतुर्विंशः सर्गः ॥ २४ ॥

२५

मुनेर्वचनमह्नीयं श्रुत्वा नरवरात्मजः ।

राघवः प्राञ्जलिभृत्वा प्रत्युवाच दृढव्रतः ॥ १

पितुर्वचननिर्देशात्पितुर्वचनगौरवात् ।

वचनं कौशिरुस्येति कर्तव्यमविशङ्कया ॥ २

अनुशिष्टोऽस्म्ययोध्यायां गुरुमप्ये महात्मना ।

पित्रा दशरथेनाहं नाप्यज्ञेयं च तद्वचः ॥ ३

सोऽहं पितुर्वचः श्रुत्वा शासनाद्ब्रह्मणादिनः ।

करिष्यामि न संदेहस्तादृशधमुत्तमम् ॥ ४

V B D1 3 5 7 10-13 शक्रतुल्यपराक्रमा —^c N V1 3 B D10 11 13 अर्षादि, V4 अपा तु, D1 3 12 Ck t अनिद्र Ctp as in text (for अनिन्द्र) —^d V2 D13 निपातिता (for निपुडिता)

19 " D14 T2 G2 4 M1 अन्यैश्च (for चान्यैश्च) —^b Dt D4 6 8 T3 पुत्रैर् (for राजपुत्र) —For 19^{ab} S1 N V B D1-3 5 7 10-13 subst

672* एवमन्यैरिषि पुरा राजभिर्धर्मचारिभि ।

[V3 एवमन्वादिभि पुरा (for the prior half) B1 राजभिर् (sic) D2 3 7 दे (D7 दे) वेदे, D10 *जभिर् (for राजभिर्) B1 धर्मरूपिभि D12 एवमन्वादिभि पुरा राजभिर्धर्मचारिभि (sic)] —^a B1 Dt D4 6 8 T3 G1 3 M2 3 सहिता (for निरता) —^d V4 निहता (hypermetric) (for हता) S1 N V B1 3 D1-3 5 7 10-13 M4 *सत्तम (V4 D2 13 *म [sic]) (for पुरुषसत्तमैः) B2 4 नि (B4 *) हता पुरुषोत्तम —After 19 S1 D1-3 5 7 9 11 12 13 ins

673* तस्मादस्या वधाद्राम प्राणिन सन्तु निर्भया ।

[D3 तदस्यास्तु D11 तस्मात्तस्या (for तस्मात्तस्या)] while Dt D4 6 M2 Ct ins

674* तस्मादेनां घृणा लब्ध्वा जदि मच्छासनाचृप ।

Colophon S1 D1 3 5 7 12 om (Sarga cont) — Kanda name N2 Dt D4 10 om V1 3 B D11 मादि, whereafter V3 B1 ins बालचरिते (B1 ते), V4 reads only बालचरिते —Sarga name N V B D10 तादृको रूपि (V1 3 *सिक्चन) —Sarga no (figures words or both) N1 V1 4 B1 4 om N2 B2 3 D10 11 28 V2 30 V3 27 Dt D4 6 8 14 S2 25 D2 26 D13—कादे—रूपितानम (dash indicates lacuna) —After colophon T3 con cludes with धीरतमच द्वाय नमः G1 2 4 धीरताय नमः, G2 धीरते रामानुजाय नमः, M2 धी ... (lacuna)

25

Readings of Vivekatilaka a commentary by Udari Varadaraja are also entered from this Sarga onwards as Cv along with other C readings As Cv was procured late its readings for Sargas 1 24 will be given at the end S1 D1-3 5 7 12 cont the previous sarga

1 " V2 G1 3 अक्लिष्ट, V4 lacuna D3 illeg च (for अह्नीय) —^b S1 N V B2-4 D1-3 7 10-13 M4 नृप, B1 नृपसुतस्तत, D3 वरनृप (for नरवरात्मज) —^c S1 D1-3 5 7 11 12 वाच्य (for भूत्वा) —^d S1 D1 5 11 12 M4 *तः N1 (with hiatus) इदं वच, N2 V B-4 D10 13 एतवत (V4 त) B1 शुभमत, M3 महामति (for दृढव्रत)

2 " S1 D1-3 5 7 11 12 निर्देशो, Cv m g k t as in text (for निर्देशात्) —^b Cg पितृवचन S1 D1-3 5 7 11 12 ममा (D1 माम [by metathesis], D2 12 मया) यमृपिसत्तम (D2 5 *म) Cv m k t as in text (for ^b) —^c D11 वसन (sic) (for वचन) D3 कौशिकाय (for कौशिकस्य) D1-3 7 11 G2 [ए] व, Cm g as in text (for [इ] ति)

3 " D3 *शिष्टि (sic) D11 *ति+सि (for अनु शिष्टोऽस्मि) —^b G1 महामर्क (for महारमता) —^c G1 3 राजा (for पित्रा) S1 D1 3 5 7 11 12 [ए] वम्, D4 [अ] पि (for [अ] ह) —^d S1 अनुदप्ये च Dt D4 6 14 T1 3 G4 *हि, D1 3 5 7 12 अनुदप्ये (D3 7 *चदे) च, D2 अनुवाच्य च, D11 अनुरधेन (sic) Ck as in text (for नागशय च) D7 तद्वन (sic) G2 (after corr inf lin as in text) तवत, Ck t as in text (for तद्वच) M4 मित्रमप्ये वचोदित —After 3 M4 ins 1 2 of 675

4 " T2 3 G2 (after corr as in text) M4 Ck विर (for विनुर) S1 वच विनुर (by transp) S1 कुर्यात्; D1-3 5 7 11 12 M4 कुर्वन्, Cg as in text (for कुर्यात्) —^b

गोत्राक्षणादितार्थाय देशस्यास्य सुखाय च ।

तव चैराग्रमेयस्य वचनं कर्तुमुद्यतः ॥ ५

एवमुक्त्वा धनुर्मध्ये बद्धा मुष्टिमर्दिमः ।

ज्याशब्दममरोत्तीर्णं दिशः शब्देन पूरयन् ॥ ६

तेन शब्देन निवस्तास्ताटमाननासिनः ।

ताटका च सुसंदुद्धा तेन शब्देन मोहिता ॥ ७

तं शब्दमभिनित्याय राक्षसी क्रोधमूर्छिता ।

श्रुत्वा चाभ्यद्रवद्देगायतः शब्दो निनिःसृतः ॥ ८

तां दृष्ट्वा राघवः क्रुद्धां विकृतां विकृतानाम् ।

प्रमाणेनातिवृद्धां च लक्ष्मणं सोऽभ्यभाषत ॥ ९

Śi Ds.12 शासनं (for शासनाद्) Śi D1-3.7.11.12 ते (D3 च) महासुने (D11 ने), Ct प्रह्लावादिन (as in text) —^a D3 सदह (for सदहस्य) Śi D1-3.7.11.12 नि सदेह करिष्यामि —^a D1 3.7.11.12 ताटका (here and elsewhere below) वचम् D11 [अ] व वै (for [उ] वचम्) Ck एवं विनृत्य श्रुत्वा ततो निष्कम्पप्रवृत्ति सोऽहं प्रह्लावादिन तव शासनात् यथाप्राप्तकालादुत्तमं उत्तमधर्मभूतं ताटका वधं करिष्यामि । न स-देह । Ck —For 2-4 N V B D10.13 subst, while M4 ins 1 2 only after 3

675* अहं विद्या समादिष्टो माया चैव महासुने ।
विद्यामित्रस्य वचनं त्वया कार्यमिति प्रभो ।
सोऽहं विनृत्ययोगेन तव धानुपमसुते ।
करिष्ये द्रुष्टव्यक्षिण्यान्ताटकाया वधं सुने ।

[(1 x) V3 एव (for अहं) —(1 3) V1 [S] व (for अहं) N3 B3 D10 विनृत्य (for विनृत्य) V3 भवता, B1 तवपि (also as above) (for तव च) D12 [एव महासुने (for [अ] वचमसुते) —(1 4) D12 प्रभो (for सुने)]

5 * Śi D1-3.7.11.12 हितं वैव (for हितार्थाद्) —^a Śi D1-3.7.11.12 यशस्य, B3 देशस्य, D4 B3 लोकस्य (for देशस्य) Śi N V2-4 B Dt D (except D14) T3 G1 3.8 M4 च (for [अ] रस्य) Śi N V2-4 B D1-3.7.10-12 M4 सुखावहेः Dt D4 6.8 T3 G2 M2 हिलाय च (for सुखाय च) —^a D12 तदैव-प्रमेयस्य —^a Śi D1-3.7.11.12 M4 वचनं कृत (M4 वचन वचन [by transp] मस्तु मे, Ck t as in text (for ^a) —For 5^a N V B D10.13 subst. while D11 ins after 5

676* तदेवदप्रतीपेन कर्तव्यं वचनं सुने ।

[B1 तदा (for तद्) V1 अनुप्रतीपेन (sic) V3 B2 अप्रतीपेन, D12 वैव प्रीतेन (for अप्रतीपेन) D10 तस्मादतल्लयीनेन (for the prior half) N1 वचन च (hypermetric) (for वचन)]

6 G2 repeats consecutively 6^a —^a N V B1 3.8 D10.13 सज्यं, B3 सह्यं (for मज्ये) —^a Śi कृत्वा (for बद्धा) D12 सुविष्टम् (sic) (for सुविष्टम्) N V 3.8 B D10.13 कृतो (V3 D10 'तो [sic]) धम्म (V4 'हेहम् [sic]) च राघव, V2 कृतानाम् च राघव, D11 सुविष्टाय राघव —^a D3 यो D4 ज्यो (both sic) (for ज्या) Śi Dt D1-3.12 T3 G1 3.8-4 धोपम् (for शब्दम्) D1 शरातीर्णं हि (for अकरोतीर्णं) —^a Śi D1.12 देश, D1 दिश (for

दिश) T3 moth-eaten for शब्दे Dt Ds.3.8.12 T G1-3 M1 नाशयन्, D3 पूजयन् (for पूरयन्)

7 * D1 3 विप्रस्ता (for विप्रस्तास्य) —^a D1 3 वद-यासिनी N V B D10.12 शृगास्तद्वन B4 'चन [hypermetric] धारिण (D12 'वामिनि) —^a Śi D1-3.7.11.12 M3 च सुमंरुद्धा, N V B D10.12 चापि सध्माता M4 वा (for च सुसंदुद्धा) Ck सुसंदुद्धा प्रष्टव्या भविष्येति । Ck —^a Śi D1-3.7.11.12 कोविता, M4 दारिता, Cm g t as in text (for मोहिता) Ck विप्रस्ता मीना मोहिता । रिमिदानीं वर्तय्य मिनि सध्मातविता । Ck N V B D10.13 ज्याम्बन (V3 B1 'शब्द' प्रतिबो (V3 'रो, D10 'वा) धिता

8 * Śi ते (for से) Śi D1-3.7.11.12 M4 सीम (D12 सेच) निर्वाहं (M4 'घोरं), G1 * च्याय, all Cs as in text (for ममिनिन्याय) —^a M4 यक्षी सा (for राक्षसी) Cg क्रोधमूर्छिता (as in text) Śi D1-3.7.11.12 यक्षी (D2 यदा) कोपा (D11 श्रेया) मिमूर्छिता —For 8^a, N V (V3 reads after 9^a) B D10.13 subst

677* नर्दमाना भूत्वा क्रुद्धा विहृता विहृतानना ।

[V1 2 ननर्दं घोरनिर्वाहं, V3 B1 नर्दमानां घृण क्रुद्धां (for the prior half) —B1 om (hapl ?) from the post half up to 9^a V1 कृत्वा वदयतिमूर्छिता V2 कृत्वा विभोममूर्छिता, V3 विहृतां विहृताननां (for the post. half)]

—N1 om 8^a—9^a V2 om 8^a —^a Śi N3 V1 B2 3.8 D1-3.7.10-12 M4 [ए] व, Cg as in text (for च) Śi [अ] ज्यम्बवद्, N3 B3 D10 [अ] ज्यम्बवद्, V1 [अ] सुदृढ (sic) V3 [अ] ज्यम्बवद्, D4 [अ] ज्यम्बवद् (sic), Cg k t as in text (for [अ] ज्यम्बवद्) V3 4 B4 Dt D4 6.8 T3 G1 3.8-4 Cg t क्रुद्धा D12 तृणं (for वेगाद्) —^a Dt D1-3.8-8 Ct यत्र (for यत्) Śi B2 D10.12 हि^a, N3 V2 B3 D10.13 [S] मि^a; V3 समुत्थित B4 [S] वि^a, D12 T3 2 निःसृत, G1 निःस्थित (sic) (for निनि सृत) Ck as in text (for ^a)

9 N3 om 9^a B1 om 9^a (cf v l 8) —^a V1 D1 4.8.12 T3 G1 3.8 M3 'क्रुद्धो, V3 4 B3 (m also) 4 घोरवपुषां (B4 'ध' [sic]) (for राघव क्रुद्धां) V3 नर्दमाना च ता दृष्ट्वा —^a V3 4 B3 (m also) 4 विरूपा, D10 om (for विकृता) —After 9^a V3 reads 677* —^a D3 7 * सहृद्धा, D4 T3 M4 'तां च D11 'बुद्धां (sic) T3 reads च inf lin (for [अ] विहृद्धां च) Ck प्रमाण

पश्य लक्ष्मण यक्षिण्या भैरवं दारुणं वपुः ।
 भिद्येरन्दर्शनादस्या भीरुणां हृदयानि च ॥ १०
 एनां पश्य दुराधर्षो मायावलसमन्विताम् ।
 विनिवृत्तां करोम्यद्य हृतकर्णाग्रनासिकाम् ॥ ११
 न ह्येनामुत्सहे हन्तुं स्त्रीस्वभावेन रक्षिताम् ।

नातिप्रवृद्धा । ॐ —^d G1 3 4 च (for सो) S1 D1-3 5 7 11 13
 लक्ष्मण वायव्यमवधीत् ; M4 ततो लक्ष्मणमवधीत् —For 9^d
 N V B D10 13 subst

678* अतिप्रमाणाभायार्त्तो रामो लक्ष्मणमवधीत् ।

—After 9 D11 reads I 1 (var) of 680* and
 thereafter cont

679* अंबरीषो मडकाया कभाजनं तद्वृत्तसाम् । (sic)

10 D3 7 om 10 —^d N V B D10 राक्षसा, D13
 रामस्या (sic) M4 यक्ष्यास्तु (for यक्षिण्या) —^d N V B
 D10 13 विवृत्त, Cr mg t as in text (for भैरवं) M4
 transp भैरवं and दारुणं N V B D10 13 मुखे (for वपुः)
 —^d D14 भिद्येरन्, T3 विन्येत (sic) (for भिद्येरन्) M4
 दर्शनेन (for दर्शनाद्) G1 3 M1 3 अस्या (for अस्या) G1 3
 M3 वै (for च) ॐ C1 अस्या वपुः । असीरुणा चेति
 संन्यत । Ct चौऽन्यथे । असीरुणामपीत्यर्थे । ॐ N V B
 D10 13 अ (V4 प्र)तिप्रमाणं (V3 णा) कुदाया रूप चातिभयावह
 —For 10 S1 D1 2 5 11 13 subst

680* यक्ष्या लक्ष्मण पश्येन्नुप परमदारुणम् ।

मिचते दर्शनेनास्या हृदय कातरस्य च ।

[D11 repeats I 1 (var) here —(I 1) D3 यक्षी
 (for यक्ष्या) D1 2 [३] ति (for [५] तद्) D11 (first time
 after 9) सीपाय दारुण मुख (for the post half) —(I 2)
 D1 दर्शनाद् S1 १२२ हि, D1 २ रामेन (for कातरस्य च)]

11 ^a S1 N2 V B Dt D1 ६ १० १२ १३ M4 Ct एता,
 Cr mg एता (as in text) N V B D10 13 महाबाहो (for
 दुराधर्षो) —^d S1 D1 3 5 7 11 13 M4 निमिष (D11 निमिष)
 हृदया क्षितौ N V B D10 13 मद्भागेन हृदि क्ष (D1 १३)
 [sic] ता (D10 १३) ॐ Cg मायाबलमन्तर्धानयत् । ॐ
 —^c T2 विनिवृत्ता, T3 विवृता च, all Cs as in text (for
 विनिवृत्ता) D4 [५] ना (for [अ] य) —^d T3 G1 ह *
 (for हत) —For 11^d S1 D1 3 5 7 11 13 M4 subst
 681* शायाना शयने वन्ये शतपाशो मया हताम् ।

1 S1 D1 13 भन्ये, D1 वाय (for वन्ये) D1 नता,
 D2 13 वृत्त, D3 १ वन्य D3 M4 धृत (for शत) D13 हया
 (sic) (for मया) D3 हतां D11 महानिहतां ह्यदं शयानं
 रविरेक्षिता]

12 S1 D1 3 5 7 11 12 om 12 —^d D14 T1 3 G1
 (before corr as in text) * लक्ष्मि —^c G1 चायादि
 (hypermetric) (for चाया) T2 गति (for गति) Dt

वीर्यं चास्या गतिं चापि हनिष्यामीति मे मतिः ॥ १२
 एवं वृषाणे रामे तु ताटका क्रोधमूर्छिता ।
 उद्यम्य बाहू गर्जन्ती राममेवाभ्यधावत ॥ १३
 तामापतन्तीं वेगेन प्रिकान्तामशनीमिव ।
 श्रेणोरसि निव्याध सा पपात ममार च ॥ १४

D3 [५] व (for [अ] यि) —^d Dt D3 १ हन्यामिति हि,
 M4 हरि (for हनिष्यामीति) —For 11^c—12 N V B
 D10 13 subst while M4 which om I 1 subst for 12

682* निहता पतिता भूमौ रुधिरं पङ्क्तिताम् ।

इय हि राक्षसो घोरा महादुष्कृतकारिणी ।

मच्छराग्निविनिर्दग्धा धृतपापा भविष्यति ।

[(I 1) B2 विहतां —(I 2) M4 अवेय (for इय हि) V3
 दुष्कृति (for दुष्कृत) —(I 3) D13 मच्छरेण (for मच्छराग्नि)
 B4 विनिवृत्ता]

B3 cont

683* हत्युक्त्वा राघवस्तत्र कार्मुक बाणमादधे ।

13 ^a S1 N V B D1 3 5 7 10—13 M4 एवं तस्य (D11
 °दा, M4 अस्या) वृषाणस्य —^c B1 Dt D3 १ बाहू (for बाहू)
 —^d G2 3 (before corr) अभ्यधावत, G3 (after corr)
 Ck अभ्यधावत (as in text) S1 D1-3 5 7 11 13 काकुत्स्थ
 समभिद्रुता (D3 °द्रुत्, D11 °द्रवत्), N V B D10 13 वेगे
 नाभ्याशमाययौ (V1 १ता) —After 13 Dt D4 ६ १० १२ T
 G M1 3 Cr mg k t ins while M4 ins after 14^c (after
 I 2 of 685*) a passage given in App I (No 5)

14 M4 repeats 14⁶⁸⁰ after App 1 (No 5) —^a
 Dt *म् (for ताम्) S1 D3 3 5 7 9 12 अपातन्तीं तदा रामो, D1
 अपातयत् (marg as in S1 and व्यापतन्तीं also) तदा रामो;
 D11 अपाती तं तदा रामो —^d N2 B2-4 विमुक्तम्, V1
 विदीप्तम्, V2 विज्ज्ञातम्, D1 विचित्रम्, G1 सप्रसातम्, M4
 (first time) सचक्रम् (for विक्रान्ताम्) S1 N2 B1 D2 3
 5 7 9 11 12 M4 (second time) विचक्रामा (D7 M4 °म) शनी
 (D3 °दस्ता [sic]) मिव, V3 °मदारीर्त्ता, D10 विमुक्ता
 शनीमिव (submetric) —After 14⁶⁸⁰ N V B D10 11
 M4 ins

684* ताटका विहतामरा जियास्तन्तीं मुदाराणाम् ।
 महाभयमकाशा समुच्छितमुज्ज्वलायाम् ।

[(I 1) D11 विक्रान्ताम् (hypermetric) M4 विसर्ती
 (for जियास्तन्तीं) —(I 2) D11 तागेव (for महाभय) B1
 -[आ]यम् (for -चय) V1 समुच्छित V4 समुच्छत, M4 समुद्रुत
 (for समुच्छित) V2 4 महाभयम् (for मुदाराणाम्)]
 —^c D13 दारेण (for दारेण) N V B D10 13 M4 (first
 time) विम्याधोरसि बाणेन (V4 वेगेन) —After 14^c, N V
 B D10 11 13 M4 ins.

तां हतां भीमसंकाशां दृष्ट्वा सुरपतिस्तदा ।
साधु साध्विति काहृत्थं सुराश्च समपूजयन् ॥ १५
उवाच परमप्रीतिः सहस्राक्षः पुरंदरः ।
सुराश्च सर्वे संहृष्टा विश्वामित्रमथाब्रुवन् ॥ १६
मुने कौशिक भद्रं ते सेन्द्राः सर्वे मरुद्गणाः ।
तोषिताः कर्मणानेन स्नेहं दर्शय राघवे ॥ १७

प्रजापतेर्बृशथाश्चस्य पुनान्स्तवपराक्रमान् ।
तपोऽनभृतान्ब्रह्मन्नाघनाय निवेदय ॥ १८
पात्रभूतश्च ते ब्रह्मंस्तवानुगमने धृतः ।
कर्तव्यं च महत्कर्म सुराणां राजसुनुना ॥ १९
एवमुक्त्वा सुराः सर्वे हृष्टा जस्युर्थागतम् ।
विश्वामित्रं पूजयित्वा ततः संध्यां प्रवर्तते ॥ २०

685*

चन्द्रार्पाकारवर्धत्ता ।

सा तेन वज्ररूपेण बाणेन भृशविश्रता ।

वबाम रश्मि रभूति

[(1 2) V२ रुद्र (for वज्र) V४-अरण्ये, B१ पातेन (for-
रूपेण) N२ बाणेन (for बाणेन) D११ हृदि, M४ [उ]रमि (for
मृग) V२६ भृश वक्षमि तापिता (for the post. half)
—After 1 2 M४ reads App I (No 5) —M४ om 1 3
—(1 3) D११ वबाम (sic) (for वबाम) V४ सुवि, D१०
भूमी (for भूमे)]

—M४ reads ^d after the repetition of 14^{abc} —^d)
S१ संपपात, N V B Dt D२ ३ ११ १३ पपात च, D१२ सा पपा*
(for सा पपात) G२ M१ ३ ममार पपात (by transp)

15 ^a) D१३ हता ता (by transp) N V B D१० १३
पतिता भूमौ, all Cs as in text (for भीमसंकाशा) —^b)
D२ ध्रुवा (for दृष्ट्वा) —D२ reads from सम in 15^d up
to सुराश्च in 16^e in marg —^d) T३ सुरैश्च (for सुराश्च)
N१ राघवन्, V१ रोचयन्, V२ वादयन्, B४ वाचयन्, Dt
D२ ३ [अ]वयमि, D१३ नादयन्, Cg as in text Ct अमि*
(for समपूजयन्)

16 D२ reads up to सुराश्च in marg (cf v 1 15).
—^a) S१ D२ १३ वासव°, N V B D१० १३ च (V४ सु, B१ स)
भृश°, D१ ३ चाय सु°, D२ ३ ७ चाति (D२ °ह [sic]) सहृष्ट,
D११ [अ]य सुस° (for परमप्रीति) —^b) N१ V१ ३ ३ B१-३
D१३ M४ [अ] ज्वरे (D१३ °र) स्थित (B३ m also सुरेश्वर)
V२ [५] सुरे स्थित (sic) B४ स्वेश्वर, D१० वरे स्थित (for
पुरंदर) —^c) S१ D२ सतीता, D११ सुतीता (for संहृष्टा).
N V B D१० १३ सह सर्वाभिरागैर् —^d) D११ विश्वामित्र
(sic) S१ N V B D१ २ ५ १०-१३ इदं वच, D२ ७ अपूजयन्,
M४ महासुमि (for अथाब्रुवन्)

17 ^a) D१ सेने (sic) (for मुने) N V B D१०
पदवासान् (for भद्रं ते) —^b) D२ reads from the por-
tion after सेन्द्रा up to प्रजापतेर् in 18^e in marg
S१ D१ ३ ५ ७ ११-१३ सेन्द्रा सुरगणास्त्वया, N१ V१ ३ B१-२
देवान्संभ्राणय (V१ °*) शिखाय, N२ B३ (m also as m
N१) D१० देवा संभ्राण (B३ °द) पुरोगमान्, V४ देवान्संभ्र
सुपथितान् (sic) —^c) N V B तोषिता (for तोषिता)
V३ B१ D१२ G२ M२ तेन, D२ सर्वे (for [अ]नेन) —After
17^e, N V B D१० ११ १३ M४ ins

686*

रामस्यामिततेजस ।

अस्त्रयोगोनाग्रद्र ते

[(1 2) V१ २ M४ अस्मिन्, B२ D१० अरमान् (for अरमान्)]
—^d) D२ तदर्थ (sic) (for दर्शय) —After 17 D११
(var) ins 687*

18 ^a) D२ reads प्रजापतेर् in marg. (cf v 1 17)
S१ Dt D१-३ ६-११ १३ T३ वृशा° (for भृशथाश्चस्य) —^b)
S१ मंत्रान्, D१ (gloss) अस्त्रमंत्ररूपान्, D११ सुतान् (for
पुत्रान्) S१ D१-३ ५ ११ १३ दिव्य°, T३ परमधामिकान् (also
as in text) G१ °क्रम (for सत्यपराक्रमान्) —^c) S१
D१ ५ ११ तेजो (for तपो) S१ D१ ११ १२ सुतान्, Dt
D४ ६ ६ भूतो, D१ वतो, G१ हूतान् (for भूतान्) T३
सर्वान् (for ब्रह्मन्) D२ ३ तेजोबलसमायुक्तान् —^d) S१
D२ ११ १३ प्रदापय, D१-३ ७ प्रदापय, Cm as in text (for
निवेदय) —For 18, N V B D२ १० १३ M४ subst (D२
subst 1 3 only for 18^{ed}) while D११ ins after 17

687* तपोयोगबलैर्नैमाम्याययितुमर्हति ।

प्रजापतिमुत्तामैव वृशधाधाज्ञासत्तमान् ।

यान्यवासाति तेऽस्त्राणि तान्यस्मै प्रतिपादय ।

[(1 1) N२ V४ B३ (inf l:m also) ६ D११ [ए]जम्,
D१० [ए]जम् (for [ए]जम्) V२ आरवापयितुम् —(1 2)
N२ V२ D११ प्रजापतिद्वारा N२ हाने (for वैव) —(1 3) B२
चाह्मणि (for [अ]वाह्मणि) V४ तान्यस्मै (for तेऽस्त्राणि) N२
तायथो, V४ श्वाणि, D२ तान्येन (for तान्यस्मै)]

19 ^a) S१ D१ ५ १२ ह्यय तेपा, D२ ३ ७ ह्यय विप्र (for च
ते ब्रह्मस्य) S१ Dt D२ ९ रत, D२ ५ १२ १३ वृत, Cm g k as in
text (for वृत) N V B D२-११ १३ M४ पात्रभूतो हि ते
शिष्यो (N२ शिष्यस्ते, V२ ते सरयो [sic] B२ D१० शिष्योय)
रामो (V२ राम शिष्यो [by transp]) दशरथात्मन —
After 19^{ed} D११ ins

688* प्राश्नाच्छे वै ह्यय तेपा तवानुगमने वृत ।

—^a) S१ N१ B२ Dt D२ ९ सु (for च) N१ कृत्यम्, N२ V
B D२ १० १३ M४ कार्यम् (for कर्म) —^d) N V B D१० १३
M४ अस्त्राक (for सुराणां)

20 ^a) Dt T३ M२ उक्ता (sic) S१ Dt D१ ११ १३
T३ G२ M२ अमुद्गृह्य (by transp) Dt D२ ९ विहायस, D१
गता (for पथागतम्) N V B D१० १३ M४ एवमुक्त्वा सुर
(B२ स्व*) गणा विश्वामित्र पुनर्यु —^c) S१ D१ ३ ५ ११ १३

ततो मुनिवरः प्रीतस्तादृक्प्रथतोषितः ।
मूर्ध्नि राममुपाग्राय इदं वचनमब्रवीत् ॥ २१

इहाद्य रजनीं राम वसेम शुभदर्शन ।
श्वः प्रभाते गमिष्यामस्तदाश्रमपदं मम ॥ २२

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे पञ्चविंशः सर्गः ॥ २५ ॥

G₁ समाधा (D₅ 12 °धा, G₁ °दा) य, Dt D₆ 8 Ct पूजयंतस्, Cg पुरस्कृत्य, Ck as in text (for पूजयित्वा) Ñ V B D₁₀ 13 M₄ य (B₁ 7 [sic]) धामतेतेव (B₂ [marg as in Ñ₁ also] °न हि) पया —^a) S₁ Ñ₁ V₂ 4 B D₁—3 5 7 10—13 M₄ [अ]भ्यवर्तत, Ñ₂ स्ववर्तत, all Cs as in text (for प्रवर्तते) V₁ 2 सप्यामवर्तत

21 °) Ñ V B D₁₀ 13 M₄ विश्वामित्रोपि (B₄ °धि, M₁ °य) भगवात् —^b) V₂ -तोषित (for -तोषित) —Note hiatus between ° and ° —^c) Ñ V B₂ 4 D₁₀ 13 M₄ राम (D₁₃ M₄ °म) मूर्ध्नि (for मूर्ध्नि रामम्) —^d) S₁ D₁ 2 5 7 11 12 मधुर वाक्यम्, Ñ V B D₁₀ 13 वचनं चेदम् (for इदं वचनम्)

22 °) D₂ 5 9 रजनी Ñ V B₂—4 D₁ 10 11 13 M₄ सीर (for राम) —^b) S₁ D₅ 12 वसामि, Ñ V B D₁—4 10 11 13 T₃ G₁ वसाम, Dt D₁ 2 3 6 9 G₂ 4 M₄ वसाम (for वसेम) B₁ °दर्शन (sic) D₂ 7 11 °दर्शनां, D₁₃ °दर्शना, G₂ °दर्शने (for शुभदर्शन) —After 22^{ab} S₁ D₁ 5 9 12 13 ins while D₂ 7 7 ins after 22

680* अयं सिद्धाश्रमो राम मथसादाद्रविष्यति ।

[D₁ एय (for अय) S₁ D₁₃ नाम यत्प्रमाणम् D₂ राम यत्प्रमाणम्]

—^a) S₁ D₁₃ प्रभाते च, Ñ₁ सु° (for च प्रभाते) V₁ 2 D₁ 9 M₄ (after corr as in text) गमिष्यामि (for गमिष्यामम्) —^d) S₁ D₂ तया (for तद्) T₂ -पर (for -पदे) S₁ D₁₃ मित्रं, B₁ तत, G₁ महत् (for मम) —After 22 Dt D₂ 4 5 9 14 S Cg ins (C v r k t comm on l 3 and 8 Cm on l 3 5 and 8)

690* विश्वामित्रवचं श्रुत्वा हृद्यो दशरथात्मज ।
उवास रजनीं तत्र ताटकाया वने सुखम् ।
मुक्तशर्पा वन तच्च तस्मिन्नेव तदाहनि ।
रमणीयं विवभ्राज यथा चैत्ररथ वनम् ।
निहत्य ता यक्षमुत्ता स राम [5]
प्रभातस्थानं सुरसिद्धस्यैव ।
उवास तस्मिन्मुनिना सहैव
प्रभातवेलां प्रतियोज्यमानः ।

[(1 x) T₃ हृद्यो दशरथात्मजो —(1 2) G₁ वन —For ins after l 3 see below —(1 4) D₂ मुवि°, G₁ हि वि°, G₂ °भ्रात्रे (sic) G₃ हि°, M₁ °भ्राज (for विवभ्राज) M₄ तथा (for वनम्) G₁ transp यथा and वन —M₄ om l 5-8 —(1 5) D₂ (changing the metre) पराक्रमात् (for स राम) —(1 6) G₂ सिद्धि (for सिद्ध) —(1 8) D₂ परि (for प्रति)]
—After l 3 G₁ ins

691* चम्पकाशोकपुनागमल्लिकार्घ्यं सुरोमितम् ।
चूतैश्च पनसै र्यैनालिकेरैश्च दोमितम् ।
वापीरूपतडागैश्च दीर्घिकामिरलङ्घ्यम् ।
मालिकामण्डपैश्च मण्डपैरुपशोभितम् ।

Colophon —Kāṇḍa name S₁ Ñ₂ V₄ D₁ 4 10—15 om V₁—3 B आदि°, D₂ अतोप्या° —Sarga name S₁ Ñ V B D₁—2 5 7 9 10 12 हाटकाय, D₁₃ अद्यप्रदानं —Sarga no (figures words or both) S₁ Ñ₁ V₁ 4 B₁ 4 D₂ 4, 10 om both Ñ₂ B₂ 3 D₂ 10 29 V₂ 31 V₃ D₁₃ 28 Dt D₂ 4, 11 14 S 26 D₁ 7 20 D₂ 21 D₁₃ -कान्दे-य्यो नाम 26 (dash indicates lacuna) —After colophon T₃ concludes with श्रीरामचन्द्राय नमः (G₁ 2.0 श्रीरामाय नमः ; G₂ श्रीमते रामाजुजाय नमः M₂ श्री .. अ

२६

अथ तां रजनीमुष्य त्रिधामित्रो महायशः ।
प्रहस्य राघवं वाक्यमुवाच मधुराक्षरम् ॥ १
परितुष्टोऽस्मि भद्रं ते राजपुत्र महायशः ।
प्रीत्या परमया युक्तो ददाम्यस्त्राणि सर्शः ॥ २
देवासुरगणान्वापि सगन्धर्वारिगणानि ।
यैरमितान्त्रसद्वाजो वशीकृत्य जयिष्यमि ॥ ३
तानि दिव्यानि भद्रं ते ददाम्यस्त्राणि सर्शः ।
दण्डचक्रं महद्विष्यं तत्र दास्यामि राघव ॥ ४
धर्मचक्रं ततो वीर कालचक्रं तथैव च ।

त्रिष्णुचक्रं तथात्पुष्पमैन्द्रं चक्रं तथैव च ॥ ५
वज्रमखं नरश्रेष्ठ शैवं शूलरं तथा ।
अस्त्रं ब्रह्मशिरश्चैव ऐपीरुमपि राघव ॥ ६
ददामि ते महानाहो ब्राह्ममस्त्रमनुचमम् ।
गदे द्वे चैव कावृत्त्य मोदकी शिखरी उभे ॥ ७
प्रदीपे नरशार्दूल प्रयच्छामि नृपात्मज ।
धर्मपादाग्रं राम कालपाशं तथैव च ॥ ८
वारुणं पाशमखं च ददाम्यहमनुचमम् ।
अशनी द्वे प्रयच्छामि शुष्काद्रे रघुनन्दन ॥ ९

26

In N 1 B D10 13 Sarga 26 which deals with the names of the Astras presented to Rama by Viśvamitra differs considerably from the text and their version is given separately at the end

1 ^a) M₁ चुव्य, Cg k t as in text (for उव्य) S₁ D₁-5 7 9 11 12 प्रभाताया तु (D₁₁ च) शर्वयो —^b) S₁ D₁-5 9 11 12 सुनि, D₂ 3 7 तया (for महायया) —^c) D₁₄ T G M₁ 3 प्रहस्य M₁ प्रहस्य, Cg t as in text (for प्रहस्य) Ck Ck प्रहास सनुते । मन्दस्मित कृत्वेति यावत् । Cg G₁ राघव, G₁ राघव M₁ मधुर (for राघव) S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 प्रहस्यवाक्य (D₂ क्य) तत्पश्चम् (D₂ 3 7 त्व D₁₁ जो) —^d) D₁ D₆ 8 T₃ G₁ 3 M₂ 4 मधुरस्वर D₁₁ राम वचनमवधीत्

2 ^b) 16' S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 दल (D₁₂ ल) D₁₄ (after corr sec m) G₂ M₁ 3 यशस्य, Cg k as in text (for महायश) —^d) All C₈ सर्वश (as in text) S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 सर्वास्त्राणि ददामि ते

3 For subst in S₁ etc see 4 —^a) M₂ च (for वा) —^b) D₁ D₁ सुनि, D₆ G₂ M₂ 4 युनि (for अवि) —^c) M₁ रक्षासि (for अनिनाम्) —^d) D₁₄ T₁ 2 G₂ M₁ विजेत्यसि (archaic), G₂ विजेत्यसि, M₁ [जा] शु जेत्यसि Cg k t as in text (for जयिष्यसि)

4 ^a) G₄ [ज] वयानि (for दिव्यानि) —^b) M₂ ददामि —^c) M₁ दृढमख ह दिव्य —^d) G₁ दास्यामि तव (by transp) M₁ ददामि तत्र (for तव दास्यामि) —^e) For 3 and 4 S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 subst 1 5-9 of 700*

5 M₁ om (hapl) 5-11^b —^a) D₁₁ 14 T₁ 2 G₂ 4 M₁ तथा (for ततो) S₁ D₁-3 5 7 9 11 12 T₁ 2 G₂ 4 राम (for वीर) —^d) D₁ reads 5^a in marg —^e) D₁ तथेयुप्रम्, D₄ तथा ह्युप्रम्, T₃ ददाम्युप्रम्, M₂ ततोयुप्रम् (for तथालुप्रम्)

—^a) S₁ D₁-3 5 7 11 G₂ M₁ दृढ, D₁ 8 9 T₃ G₁ ऐन्द्र, D₁₂ ईन्द्र, D₁₄ T₁ 2 G₂ 4 M₁ ऐन्द्रमख (for ऐन्द्र चक्र)

6 M₁ om 6 (cf v 1 5) D₉ reads 6 in marg —^a) D₂ 3 7 ततो राम (for नरश्रेष्ठ) —^b) D₁ शूल, G₂ नैव (for शैव) S₁ D₁ 12 पाशुपत, D₁ D₆ 8 Ct यत, D₂ 7 वर, D₉ वर, Cg k tp as in text (for शूलवर) S₁ D₁ तत —After 6^a S₁ D₁-3 5 7 11 12 read 7^a —^c) Note hiatus between * and ^a S₁ [ए] वम् (to avoid hiatus) M₂ [अ] पि (for [ए] व) —^d) D₁ ऐपीरुम्, D₄ 5 G₂ ए, D₉ ए (for ऐपीरुम्)

7 M₁ om 7 (cf v 1 5) —^a) G₂ त (for ते) —^b) S₁ D₁-3 5 7 11 12 ह्यस्त्र शखव (S₁ D₁ 5 च) तथा —After 7^a, S₁ D₁ 3 5 7 11 (marg) 12 ins 1 15 of 700* —S₁ D₁-3 5 7 11 12 read 7^a after 6^a —^c) S₁ D₁ 3 5 7 11 [अ] पि (for [ए] व) D₁₁ सगृहाण द्वे गदे दिव्यौ (hyper metric) —^d) J₂ M₂ शिखरे (for शिखरी) All C₈ मो (Cr कौमो) दकी शिखरी (as in text) D₁ D₆ 8 शुने S₁ D₁ 3 5 7 9 11 12 कौमोदकिशियोदके

8 M₁ om 8 (cf v 1 5) D₁₁ reads 8 in marg —^a) S₁ D₁ 3 5 7 11 12 अपि (S₁ ति [sic]) ते (for प्रदीपे) D₁₄ T₁ 2 G₂ 4 रघु, G₂ M₁ नृप (for नरशार्दूल) —^b) G₁ नरोत्तम, M₂ तवानय (for नृपात्मज) —D₃ repeats 8^a 9^b after 17 —^c) D₃ (second time) धर्मे, T₃ बल, Cg as in text (for धर्मपादम्) S₁ D₁-3 (both times) 5 7 11 12 इम राम, G₂ बहकार (for बह राम) —^d) D₁₁ इम तथा (for तथैव च)

9 M₁ om 9 (cf v 1 5) D₃ repeats 9^a (cf v 1 8) —^a) S₁ D₁ 3 (both times) 5 7 11 12 रवे (for पाशमख) —^b) S₁ D₁ 3 (both times) 5 7 11 12 [ए] वम् (for [अ] हम्) D₁ तव दास्ये तदुत्तम —^c) D₃ अन्वी —^d) D₃ शुकाद्रे (for शुष्याद्रे)

ददामि चास्त्रं पैनाक्रमस्त्रं नारायणं तथा ।
 आग्नेयमस्त्रं दयितं शिखरं नाम नामतः ॥ १०
 वायव्यं प्रथमं नाम ददामि तव राघव ।
 अस्त्रं ह्यशिरो नाम क्रौञ्चमस्त्रं तथैव च ॥ ११
 शक्तिद्वयं च काकुत्स्थ ददामि तव चानघ ।
 कङ्कालं मुसलं घोरं कापालमथ कङ्कणम् ॥ १२
 धारयन्त्यसुरा यानि ददाम्येतानि सर्वशः ।
 वैद्याधरं महास्त्रं च नन्दनं नाम नामतः ॥ १३

असिरस्त्रं महाबाहो ददामि नृवरात्मज ।
 गान्धर्वमस्त्रं दयितं मानवं नाम नामतः ॥ १४
 प्रस्थापनप्रशमने दक्षि सौरं च राघव ।
 दर्पणं शोषणं चैव संतापनविलापने ॥ १५
 मदनं चैव दुर्धरं वन्दर्पदयितं तथा ।
 पैशाचमस्त्रं दयितं मोहनं नाम नामतः ।
 प्रतीच्छ नरशार्दूल राजपुत्र महायशः ॥ १६

10 M₄ om 10 (cf v l 5) —^a S₁ D₃ 11 13 देवा (D₁₁ दिव्या) छमपि नागास्त्रम्, D₁-3 7 देवा (D₁ देवा) छमपि नागेयम् —^b D₃ illeg (for तथा) —^c D₄ दयितं, G₁ जयितं, G₂ mgk t as in text (for दयित) —^d D₁ शिखिनं, D₂ 3 7 मोहन Ct as in text (for शिखर) D₃ नामतं (for नामत) S₁ D₁ 11 12 दे (S₁ दे) वतास्त्रं तथैव च Cm k as in text (for ^a) —After 10 D₃ reads 13^{cd} 16^{ef} 17^{gh} as in text for the first time repeating them (var) in their proper places

11 M₄ om 11^{ab} (cf v l 5) D₂ 3 7 om 11-12^{ab} —^a T₁ M₂ प्रथमं, T₂ प्रथनं, G₃ सधनं, G₄ प्रमदं, M₃ Cm प्रथनं, Ct k as in text (for प्रथमं) D₃ G₁ राम Ck as in text (for नाम) D₁ 11 अस्त्रं सुमहद्, D₂ 11 अस्त्रं दयितं (for प्रथमं नाम) S₁ वायव्यास्त्रं च दयितं —^b Dt D₂ 9 G₁ 3 M₂ 'चानघ' M₃ च तवानघ (for तव राघव) —D₁₁ om (hapl ?) 11^c-12^d —^c D₁₂ हृदिस्त्रं —^d M₄ पादम् (for श्रीपादम्) D₄ om च (submetric)

12 D₂ 3 7 11 om 12^{ab} (cf v l 11) —^a M₄ ददामि M₃ च तव (by transp) S₁ D₂ 9 3 T₂ M₂ राघव, M₃ धारिव (for चानघ) Dt D₂ 11 शरीरं इ पुरवस्थाप्य विद्वन्नामि वपुश्चम (D₁ 'इह' —D₃ reads 12^c-16 (16^{ef} repeated) D₂ 12^c-14 (om 13^{cd}), while D₁ 12^{cd} after 19 —For 12^{cd}, D₁₁ subst 1 26 of 700^a —^b S₁ कङ्काले D₁-3 1 7 मुसले D₂ चैव (for घोर) —^c D₂ कपोलम्; D₂ 7 9 11 13 G₁ M₂ कपालम् (for कापालम्) S₁ Dt D₂ 4-9 T₂ M₂ द्विजनी (for कटुणम्)

13 For D₂ cf v l 12 B₁ which substitutes for the Sarga reads lines of 13 and 14^{ab} after l. 35 of 700^a —^a M₄ राम (for धारि) S₁ D₂ 13 धारय त्वं हि सीताय (D₂ 13 'राम') B₁ D₂ 1 9 धारयन् (B₁ गृहाण) परीतम् Dt D₂ Ct कथारं श्रम्यं वाति; D₁ धारय त्वं हि तु धारि; D₁₁ गृहाण मनोवर्षीतम् (hypermetric) —^b B₁ M₄ इदामि M₃ [च 'चानि' (for [च न हि) S₁ B₁ D₂ 9 11 13 नेत्रय (for सर्वत्र) D₂ 2 9 देवाजेषो भविष्यति (D₂ 'नि' —D₂ 9 om 13^{cd}, D₂ first time reads 13^{cd} after

10 repeating it here (cf v l 10) —^a S₁ B₂ D₁ 2 9 (second time) 11 12 अस्त्रं वि (B₂ D₁ 11 चै) चापर नाम —^b S₁ D₁ 5 नैदिक D₂ 9 (second time) 11 M₄ नद् (D₂ 'दा') कं, D₁ 3 नैदिक, G₄ धनद, all Cs as in text (for नन्दनं) S₁ D₂ 11 'चापर, B₂ D₂ 9 चापि राघव, D₂ (second time) M₄ 'राघव, D₁ 9 वा पर (for नाम नामत)

14 For D₂ cf v l 12 M₄ om 14-16^{cd} —^a M₃ (after corr sec m as in text) सिखरदे (for असिरदे) D₂ 7 ण्वमादीनि चास्त्राणि —^b B₂ ददामि S₁ B₂ D₂ 3 7 9 11 13 मनुजाधिप (for नृवरात्मज) —After 14^{ab}, G₂ M₁ ins

692^a सत्यमस्त्रं महाबाहो महामयुगनाशनम् ।
 —Dt D₂ 8 repeat M₃ read 14^{cd} after 16^{ab} —^a)
 Dt D₁ 4-6 9 11 13 T₂ G₁ 2 3 M₂ मोहनं (for मानवं)
 —After 14 D₂ 7 read 693^a G₂ reads 16^{ef}

15 For D₂ cf v l 12 M₄ om 15 (cf v l 14) D₂ 7 G₁ om (hapl) M₃ reads inf lin sec m 15^{cd}-16^{cd} —^a S₁ Dt D₂ 9 9 9 G₂ प्रस्थापन, D₁ 11 13 प्रस्थापन, G₄ प्रस्थापन (for प्रस्थापन) S₁ D₂ 9 9 11 13 प्रमथनं; Dt D₂ 9 G₂ Cm t प्रमथनं, G₄ प्रमथनी (for प्रमथने) Cg as in text (for ^a) —^b Dt D₂ 9 'सौर्य', D₁ 11 2 G₂ M₁ 'सौर्य', T₂ 'माद'; G₂ M₂ सौर्यं दधि; G₄ तम सौर्यं (for दधि सौर्य) G₄ om च (submetric) S₁ D₂ 9 13 विनयति तयानय; D₁ 11 तथैवोत्पादने तथा —^c Dt D₂ 9 (before corr as in D₁) 11 धरणी; D₂ 9 तर्पणी; D₂ T₂ धरणी; Cg as in text (for धरणी) —^d D₂ रिपानयनं (for रिपानयने) S₁ D₂ 11 मगानयमिति मु (S₁ मृत्) न D₂ मगानवादि र्पेयने; D₁ 11 दुर्धरं च तथैव च Ck सिन्धायति परिदधयतीति । C

16 D₂ 1 G₁ M₄ om M₃ inf lin 16^{ab} (cf v l 15 14) D₂ reads 12^c-16 after 19. —^a) S₁ D₂ 2 3 13 दमनं; Dt D₂ Ct मादनं; D₂ मदनं; T₂ 9 मयनं; G₂ मदनं; Cm r k as in text (for मदनं) —^b S₁ T₂ कं T₂ कौ नृवं (for कन्दर्पं) D₂ 2 9 11 'द्विजानी' (D₂ च; D₁ 11 'न दे (S₁ C)) ; G₂ कथं कन्दर्पेन —After 16^{ab}, Dt D₂ repeat M₃ 9

ऊचुश्च मुदिता रामं सर्वे प्राञ्जलयस्तदा ।
इमे स्म परमोदार किंकरास्तव राघव ॥ २३
प्रतिगृह्य च काकुत्स्थः समालम्ब्य च पाणिना ।

मानसा मे भविष्यध्वमिति तान्यभ्यचोदयत् ॥ २४
ततः प्रीतमना रामो विश्वामित्रं महासुनिम् ।
अभिवाद्य महातेजा गमनायोपचक्रमे ॥ २५

इति श्रीरामायणे वाल्मीक्ये पट्विंशः सर्गः ॥ २६ ॥

23 ^{as} D₉ तु, G₃ प्र (for च) D₁₄ T₁ s G₄ सर्वे रामं
(by transp.) D₉ प्राञ्जल्यस् —^a) M₄ धये (for इमे)
Dt D₉ s च, M₄ हि (for स) Dt पर*** (for परमोदार)
—^d) D₁₄ राघवे (for राघव) —For 23 S₁ D₁—s s 7 11 12
subst

696* ऊचुश्च रामं सयाणि प्राञ्जलीनि नृपामजम् ।
इमानि स्म महोदार किंकराणि तवानय ।

[(1 x) D₁ s तु (for च) D₁₁ [अ]मन्य (for राम)
—(1 2) S₁ च, D₂ s 7 11 स्मे (for स्म) D₁₁ महादारो (for
महोदार) D₁ इमान्यक्षाय्यो वीर (for the prior half) S₁
D₂ 12 [ह] इ (S₁ च) मुनत (for तवानय) D₁₁ वीर किंकराणाम्हे
(for the post half)]

—After 23 Dt D₉ s T₃ 1ns

697* यद्यदिच्छसि भद्र ते तत्सर्वं करवाम ये ।
ततो राम प्रसन्नात्मा तैरित्युक्तो महाहले ।

24 ^a) Cm g प्र प्रतिगृह्य S₁ D₂ 12 Cr °गृहीन्, D₁ °तु,
D₁₄ °लम्ब्य च (for प्रतिगृह्य च) —^d) D₄ T₃ समालम्ब्य,
Cr m g k t समालम्ब्य (as in text) D₁₁ स (for च) —^d)
D₉ s G₃ M₂ तान् (for तानि) T₂ [अ]*** (moth eaten)
दयत्, Ck as in text —For 24^{ad} S₁ D₁ s s 7 11 12
subst

698* सर्वाणि मे मानसानि भवन्त्विलम्ब्यभापत ।
[D₉ ते (for मे) D₁ s 7 मव स्तानि (for मानसानि) D₁ 11
भवतेति D₂ भवति तु (for भवन्त्विति)]
On the other hand M₄ subst

699* स्मृवा हि मां भजेयेति शशास परमद्युति ।

25 ^a) D₄ प्रीति (for प्रीति) M₄ तान्यवाप्य ततो रामो
—^d) D₄ महतेजो, G₁ महादारो (for °तेजा) —For
Sarga 26 N° V B D₁₀ 13 subst

700* { प्रभाताया तु शर्वयो विश्वामित्रो महासुनि ।
(1) { प्रहसन्नात्माभाप्य मधुर वाक्यमब्रवीत् ।
(2) { तुष्टोऽस्मि राम भद्रं ते कर्मणालयजुस्तेन वै ।
{ प्रीतिदाय च दास्यामि सर्वान्यक्षाण्यदोषत ।
यान्यहं वेत्ति काकुत्स्थ पात्र तेषां नतोऽस्ति मे । [5]
ब्रह्माक्ष प्रथम राम दिव्यमेतद्ददामि ते ।
त्रयाणामपि लोकानां पिण्डतला भयावहम् ।

(4^{ad}) { तथैव दृग्दमक्ष ते प्रनासहारकारकम् ।
{ ददामि राम शत्रूणां केनाश्चप्यो भविष्यति ।
(5^{ad}) { धर्मांश्च महावाहो कालकल्प ददामि ते । [10]
{ कालाक्षमपि चासह ददामि दयितं प्रभो ।

(5^{ad}) विष्णुचक्र च ते दिव्यमिन्द्रचक्र च दुर्जयम् ।

(6) { पद्ममक्ष च दुर्घर्षं शैलं शूलवर तथा ।
{ अक्ष यक्षशिरश्चोष्मपीक च ददामि ते ।
{ शक्राक्ष च वीरास्य गृहाणेद् मयोद्यतम् । [15]
{ गदाद्वय चाप्रतिम गृहाणारिभयावहम् ।

(7^{ad}) वीमोर्द्धं चाप्रतिमा तथेमा लोहितासुखीम् ।

(8^{ad}) धर्मपादा तथैवाक्ष कालपाशं च दुर्जयम् ।

(9) { धारणं चापि ते पाशं ददामि परमार्थितम् ।

{ शु°रादं चादानीं राम गृहाणेमे मयोद्यते । [20]
{ पैनावमपि चैवाधमर्षं नारायण तथा ।

(10) { आग्नेयमपि चासह वायव्यं च ददामि ते ।

(11) { प्रमर्दनं प्रमथन तथैवारिबिदारणम् ।

{ अक्ष ह्यशिरश्चैव वृद्धाक्ष चापराजितम् ।

(12) { शक्ती च द्वे गृहाणेमे बलामतिबला तथा । [25]
{ तथैव कालमुसलं कङ्कालमयं किङ्किणीम् ।

(13) { प्रस्वापनं मोहनं च सन्भनं च ददामि ते ।

(14) { वरुणं शोषणं चैव तथैवारिनिवृत्तनम् ।

(15^{ad}) मद्वोन्मादने चैव कन्दर्पदयिते विभो ।

(16^{ad}) गन्धर्वान् तथैवेदं मोहनं च ददामि ते । [30]
{ तेजोद्युतिहरं सौरं दानुषक्षप्रापनम् ।

(17^{ad}) रथिरासिर्पैशाचं कौरव च ददामि ते ।

{ राक्षसं चापि शत्रूणां श्रीष्टितिप्राणनाशनम् ।

{ मूर्छनं तापनं चाक्षं कम्पनं चापि कर्षणम् ।

(18^{ad}) सवर्तमपि चावर्तं मौसलं च ददामि ते । [35]
{ सख्यं चैवानृतं चाक्षं महामायाक्षमेव च ।

(19) { भयोद्यै वैजसं चैव परतेजोऽपकर्षणम् ।

{ सोमाक्षं शिशिरं नाम त्वाहं चारित्ययाकरम् ।

{ मानव चाक्षमजितं दैत्य दानवमेव च ।

(20) { एवमादीनि चान्यानि ददामि दयितोऽस्ति मे । [40]
{ गृहाणेतानि भक्तस्त्वसखाणि नृवरात्मन ।

(21) { जयास्तौ प्राञ्जुलो भूवा शुचिर्नृनिवरस्तदा ।

{ ददौ र माय सुप्रीतो मन्त्रप्राममनुचमम् ।

(22) { जयतोऽद्य सुनेसस्य मन्त्रप्राममनोद्यत ।

{ उपतस्थुर्महाक्षाणि स्मृतिमति नृपामजम् । [45]
{ ऊचुर्धनं ततोऽभ्यस्य तान्यक्षाणि समन्तत ।

{ प्राञ्जलीनि महादारो दाप्यस्मानिति राघवम् ।

(23) { तान्यवेक्ष्य ततो राम समालम्ब्य च पाणिना ।

{ सा भजप्य स्मृतं नीतिं भवार्णवेवाभ्यभापत ।

(24) { तान्यवाप्य ततो रामो विश्वामित्रं महासुनिम् । [50]
{ प्रणिपत्य यथान्यायं गमनाय मनो दधे ।

[Śi D1-3:5791113 ins some lines of 700*, so their variants are also given in the notes along with the above given MSS —(1. 1) Ṇ V B (except B1) D10 13 read! 1 as 1st in Śi V3 च (for तु) B1 अथ ता रजनी व्युद्य (for the prior half [cf v1 1st]) —(1. 2) V2 स^o (for प्रसूतम्) —(1. 3) B3 हुद्येति, B4 प्रीतोस्मि (for हुद्येस्मि) V1 om, B2 D13 हि, B3 (m. also) च (for [अ]ति) D13 वे (for वै) —(1. 4) V2 प्रीतिदान B2 ह्यत्त (for [अ]दिपत्त) —For ins in B3 see below —Śi D1-3:5791113 subst 1 5-9 for 3 and 4 —(1. 5) Śi V2 B1 D1-3:5712 वेद (for वेद्य) B2 (m. also) स्वर्णि (for कालुष्य) V2 पात्रो Ṇ1 V2 B4 देवा, Ṇ2 D10 एवा, B1 होष (for तेवा) Ṇ2 V4 क्तो (for मत्तो) V4 हि (for स्ति) B1 न (for मे) V1 गमिष्यमि (for मत्तोस्ति मे) Śi D1-3:5791213 पात्रमोमि मे यत्त (D2 9:12 यत्त), B2 (m. also as in B4) पात्रमेवातोमि मे (for the post half) —(1. 6) Śi D1-3:57912 परम् (for प्रथम) Śi V2 D1-3:57912 अथ (for एतद्) V2 ददामि —(1. 7) Śi D1-3:5791112 सर्वेषाम् (for त्रयाणाम्) Śi D1 591112 एव, V2 चाष (for अरि) Śi V1 2 D1-3:579-13 पी, V1 D1 7:10 पितृना (for पिष्टिपताना) Śi V2 B4 D5 11-13 भयापह —D7 transp 1 8 and 9 —(1. 8) V4 त्वेवेदमत्त (for submetric) (for the prior half) Śi D1 3:5791112 ददमत्त मत्ता (Śi D5 12 महद्, D9 छमह)पोर (Śi D1 5912 अथ ददामि खनदन (D2 3:7 तव राषव) —(1. 9) Śi D1 3:5791112 सर्वदा (D2 3:7 शत) Ṇ1 V3 ददामि (for ददामि) V4 शृणाना, B1 D11 शृणाना (for शृणुया) D9 जेता (for येन) Śi D1-3:5791112 [अ]ज्ये (for [अ]ज्युषे) B1 3 (m. also) D2 7:11 मविष्यति —(1. 10) V3 धर्माख्य D13 धर्माय (for धर्माय) D13 ददामि —B1 om (hapl) from वे in 1 10 up to ददामि in 1 11 —(1. 11) Ṇ V2 3 B2 3 D13 ददामि Ṇ1 V B1 4 D13 विभो (for प्रभो) —(1. 12) Ṇ V2 3 B1 4 D13 वज्र, D10 ददाम (for दद्वक) B2 मु (for च) B4 दाहव (for दुर्गम) —(1. 14) V2 औपधीय, B4 एषिक (for ऐषिक) Ṇ2 V2 3 B3 D13 ददामि —Śi D1-3:57911 (marg) 13 ins 1 15 after 7th —(1. 15) Śi शार्कराच D2 प्र (for च) and [र]म (for [र]द) Śi D1 3:57912 मत्तो (D2 हो)चन, D13 दित (for मत्तोचनम्) —(1. 16) V1 2 4 B2 (m. as above) [अ]ति (for [अ]ति) Ṇ1 मयावया^o (ditto), B1 भवकर (for मयावहम्) —(1. 17) V2 तथेत्त, B4 lacuna (for तथेत्त) V4 लोदिभ्युदी —(1. 18) V2 4 धर्मपाद (for पाद) Ṇ2 B2 (m. also as above) D10 तथा चाच (for तथेवाच) —(1. 19) B3 दारव (for दारव) Ṇ V2 3 B2 D13 ददामि (for ददामि) B1 हृन् (for परमाधितम्) —(1. 20) Ṇ1 V1 4 (with hiatus) अरनी, V2 वाग्नी, B2 वाग्नी (for वाग्नी) B2 (before corr) गृहाण मे (for गृहाणे) D13 मत्तोदिरे —(1. 21) Ṇ1 B1 देवाख्य, V2 विनाय, B2 (m. केनाख्य) देवाख्य (for केनाख्य) V3 अय (for अरि)

Ṇ1 B2 नादेयम्, V3 पैशाचम्, B1 पैनाकम् (for पैशाखम्) Ṇ2 D10 om (hapl) अख B1 तदा (for तथा) —(1. 22) V2 ते, D13 वा (for च) V3 अथ (for [अ]लक्ष) V2 3 B2 3 (m. also) D13 ददामि (for ददामि) D13 च (for वे) —After 1 22, B3 reads 1 28, prior half of 1 29 and the post half of 1 24 repeating them in their proper place —B3 repeats 1 23 consecutively B4 reads 1 23 after 1 27 —(1. 23) D10 प्रमदने B3 (first time) प्रथमन (for प्रथमन) B3 (first time *sup lin*) -मु^o (for विदारणम्) —(1. 24) V2 ह्यसिर (for ह्यसिर) V2 वैर, V3 वैर (for वैर) —(1. 25) V3 B (B. m. also) D13 (note the hiatus) अमोषा विजया (B2 य) तथा (for the post half) —D11 subst 1 26 for 12th —(1. 26) B2 (m. also as above) मत्तु (for कालमुत्त) V1 किराणी —(1. 27) Ṇ2 V2 3 B2 3 D13 ददामि (for ददामि) —After 1 27, B4 reads 1 23 —B4 om 1 28 —(1. 28) Ṇ1 विहतन, V2 विकर्तन, V3 -निधून, V4 -विवर्तन, B3 विदारण (for निधूननम्) —For ins see below —(1. 29) V2 3 B3 (second time) भोग्मादन, V4 नान्मयन (for मदनो म्मादने) Ṇ2 प्रभो, V3 दक्षि^o, V4 तथा, D13 दक्षिणातुगौ (for दक्षिणे विभो) —(1. 30) B1 गणदक्ष V4 [अ]त्र (for [र]द) Ṇ1 मोहः Ṇ1 V2 3 B2 3 D13 ददामि —V2 om 1 31 and 32 B3 repeats 1 31 after 1 35 (after the lines of 13 and 14th) —(1. 31) V1 3 4 B2 (second time) कर (for घुतिहर) Ṇ1 V2 4 शौर, B1 4 D10 शौर, B2 (second time) सौम (for सौर) D13 तेनेव्याहरण वैयम् (for the prior half) D13 अरि (for राघु) B2 (second time) सवरायु निरहण (for the post half) —D11 ins 1 32 and 33 after 16th —(1. 32) Ṇ V2 D10 11 ह्यसिराभिपद (Ṇ1 द^o) (hypermetric) V1 B2 (before corr as above) रत्नाभिपद, B2 ह्यसिराभिपद (sic) (for ह्यसिराभिप) Ṇ V2 B2 3 (m. as above) D13 ददामि ते, D11 नानव तथा (for च ददामि ते) —(1. 33) V4 राख्या (for राख) Ṇ1 V4 B1 सेव्याना, D11 देव्याना (for दय्याना) V4 धृति (for धृति) Ṇ2 B2 (m. as above) रयति, D10 om (for प्राण) —D11 ins 1 34 after 16 —(1. 34) B1 हाटन (for हापन) D11 [अ]ति (for [अ]ति) Ṇ1 V1 3 B2 (m. also) D11 [अ]ति^o, V4 B1 [अ]ति^o, B1 नि^o, D13 [अ]ति कन (for [अ]ति कनम्) —D11 om 1 35 —(1. 35) Ṇ1 V1 2 4 B1 शौरा, V2 मौल्य (for मौल्य) Ṇ V2 4 (V4 m. also) B2 3 ददामि (for ददामि) —After 1 35 B2 ins the lines of 13 and 14th, then repeats 1 31 (for lines of 13 and 14th in B2 cf v1 13 and 14) —(1. 36) B4 शन् (for चाप) V4 [अ]नुनाय च —(1. 37) V1 अमोद Ṇ1 V1 B1 देवन्, V4 जीवन् (for तेवन्) —(1. 38) B2 मयाव (for मयाव) Ṇ1 B1 3 4 D13 रयन् V2 रयन् च (for ह्यसिर नाम) V2 रयन्, B4 चाद्र (for रयद्र) Ṇ1 B4 चाति, V4 चाति (for चाति) V2 रयन् चातिव्याकर (sic) (for the

प्रतिगृह्य ततोऽस्त्राणि प्रहृष्टवदनः शुचिः ।
गच्छन्नेव च काकुत्स्थो विश्वामित्रमथावब्रीह ॥ १
गृहीतास्त्रोऽस्मि भगवन्दुरार्षभः सुरैरपि ।

अस्त्राणां त्वहमिच्छामि संहारं मुनिपुंगव ॥ २
एवं भुवति काकुत्स्थे विश्वामित्रो महामुनिः ।
संहारं व्याजहाराथ धृतिमान्मुवतः शुचिः ॥ ३

post half) —(1 39) $\tilde{N}i$ मान* V_4 °वत्तमजिन, B_3 (m also as above) मानवास्त्रान् चारिणि (for the prior half) $\tilde{N}i$ V_2 B_1 B_4 दैव (for दैव) V_2 दानवनाशन —(1 40) B_4 [अ]स्त्राणि (for [अ]न्यानि) V_2 B_1 B_3 D_{13} ददामि (for ददामि) —(1 41) V_2 तानि, V_4 [ह]मानि (for [ह]तानि) B_1 च नृपामन —(1 42) V_3 B_1 तथा (for तदा) — B_1 om (hapl) from the post half of 1 43 up to the prior half of 1 44 —(1 43) $\tilde{N}i$ मप्रक्रमम्, V_4 B_2 (m also as above) अल°, D_{13} चाल° (to avoid hiatus) (for मप्रग्रामम्) — V_4 om 1 44 and 45 —(1 44) V_4 (with hiatus) अलग्रामम्, B_4 तालग्रामम् (sic) (for मप्रग्रामम्) B_3 विशेषत (for अशेषत) —(1 46) B_3 (m also) B_4 तथा (for ततो) V_2 B_4 [S] नेन्य, B_4 [S]भ्ये* (for °भ्ये) D_{13} ऊनुध राममन्ये (for the prior half) $\tilde{N}i$ समन्*, V_2 समन्त (for समन्त) —For ins see below —(1 47) V_2 साध्यान्, V_3 सा°स्यान् (for साध्यान्) —(1 48) V_2 [आ]विष्य, V_4 [आ]विष्य (for [अ]विष्य) —(1 49) V_2 मा मुजत°, V_4 मा भञ्जस्मवीनीति (sic) D_{10} मां मारुष्यस्यानीति (sic) (for the prior half) V_3 [अ]वमापन (for [अ]वमापन) —(1 50) $\tilde{N}i$ [अ]जि*, V_2 [अ]जाय V_4 [अ]जात (for [अ]जाय) —(1 51) D_{13} यथाप्राय (for °प्राय) V_2 B_1 मनि (for मने)]

—After 1 4 B_2 ins

701* गृहाण तानि यत्तुभ्यं दिव्यान्वयस्त्राण्यशेषत ।

—After 1 28 B_2 ins

702* चरणे रोपण येन मंतापनशिलापने ।

—After 1 46 B_2 ins

703* दशंकिचा च रूपानि स्वकीयानि पृथक्पृथक् ।

Colophon—*Aunda name* $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V_4 Dt D_{10} 11 om V_1 B_1 आदि°, D_{13} अयोध्या°. —*Sarga name* $\tilde{S}i$ D_9 अष्टमप्रहणे, $\tilde{N}i$ V_1 B_1 B_2 B_3 अष्टमप्रहणं, $\tilde{N}i$ B_3 अष्ट दानं, V_2 विश्वामित्रादष्टग्राममाहि, D_{13} B_1 B_2 B_3 अष्टमप्रहणं, D_{10} अष्टदशं, D_{11} अष्टमहावज्र(जु?)मक्षप्रदानं, D_{13} सहस्र(?)प्रहणं —*Sarga no* (figures words or both) $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V_1 B_1 B_2 D_{13} 11 om $\tilde{N}i$ B_{12} D_{13} 30 V_2 32 V_2 29 Dt D_{10} 11 S 27 D_{13} 21, D_{13} 22 D_{13} हृष्या—रामा—बालकाण्ड—नाम रि—मरी (dash indicates lacuna) —After colophon G_1 B_2 conclude with श्रीरामायणम् G_2 श्रीमते रामानुजाय नमः M_1 श्री - नम

27

1 T_2 begins with श्रीरामचन्द्राय नम — a) M_1 प्रतिलम्ब्य, Cm g k as in text (for प्रतिगृह्य) — b) $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V B D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 दिव्यानि प्रीत (B_1 B_2 D_9 7 °ति) मानस (D_9 7 °थ), D_{11} दिव्यान्वयप्रतिमानि स — c) $\tilde{S}i$ D_{13} इव, V_4 D_3 एव (for एव) $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V B D_{13} 7 10-13 तदा ($\tilde{N}i$ V B D_{10} 13 °तो) रामो, D_1 G_1 B_2 M_1 [अ]य°, T_3 हि°, M_2 महाबाहुर् (for च काकुत्स्थो) — d) $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V B D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 उवाच ह, D_9 °भुवन्, T_3 यदा°, M_2 अभापत (for अथाववीत्)

2 a) V_4 हि, D_3 [S]पि, D_{13} [S]सि, Ck as in text (for इस्मि) D_3 भगवान् — b) D_4 T_3 सुरासुरे (for सुरैरपि) $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V B D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 अयेवधिदशैरपि — c) $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V B D_{13} 13 सु (V_1 B_2 B_3 B_4 च) ममेतेषां, D_3 स्वहिम्*, M_2 महिम्° (for स्वहमिच्छामि) — D_{13} om from 2^d up to the prior half of 704* — d) Dt D_9 Ct संहारान्, Crg as in text (for संहार) $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V B D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 वज्रु (D_1 कर्तुं) महसि, T_3 °सत्तम (for मुनिपुंगव) Ck Cm संहारो नाम यदुक्तस्वाश्रय मप्रतिरोपेण पुन रराषीनीकृणम् ।

3 D_{13} om 3^{ab} (cf v 1 2) M_1 repeats 3^{ab} as in text in brackets — b) M_2 तथा (for एव) $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V B D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 इत्युक्तयति रामेय ($\tilde{S}i$ D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 °तु, D_3 °रि [sic]) — b) Dt D_9 M_1 नपा, D_4 T_3 यथा, D_9 G_1 B_2 मना (for मुनि) — c) Dt D_{13} संहारान्, Ck k as in text (for संहार) — d) D_9 धृतिमान् (for धृतिमान्) —For 3^{ab} , $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V B D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 subst

704* आचरत्यो परमाज्ञायां सरहस्य निरन्तरम् ।

[D_{13} om the prior half (cf v 1 2) $\tilde{S}i$ D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 उक्तान् (D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 $\tilde{N}i$ illeg D_1 आये (for आचरत्यौ) $\tilde{S}i$ D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 संहारं च D_3 संहारय (for संहार्ये) D_3 निरन्तरं (sic) (for निरन्तरम्)]
All cont., while M_2 ins after 3.

705* उक्त्वा संहारमज्ञायां रामायामिर्निरन्तरं ।
दशै मप्र पुण्मवलायां यदीकरणमुत्तमम् ।

[$\tilde{S}i$ D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 om L 1 —(1 1) L_2 संहारदशानां, $\tilde{N}i$ नैरन्त्रा (for नैरन्त्र) —(1 2) $\tilde{S}i$ D_{13} अयं, V_4 पाथं (for मयं) $\tilde{S}i$ $\tilde{N}i$ V B D_{13} B_1 B_2 B_3 B_4 नम (D_{13} °न) सन्तं (for नृमन्त्रान्), M_2 अयं चणुपुन]

सत्यन्तं सत्यकीर्तिं घृष्टं रमसमेव च ।
प्रतिहारतरं नाम पराङ्मुखमाङ्गुलम् ॥ ४
लक्षाक्षत्रिमौ चैव दृढनाभसुनाभकौ ।
दशाक्षशतवक्त्रौ च दशशीर्षशतोदरौ ॥ ५
पञ्चनाभमहानाभौ दुन्दुनाभसुनाभकौ ।
ज्योतिषं कृशं चैव नैराश्यमिलाबुभौ ।

4 For 4-8 $\bar{S}i$ N V B D1 3 5 7 10-13 M4 subst 708* —^a) D₅ 'मत्त (for सत्यवन्त) —^b) D1 T3 G1 4 दृष्ट, G2 M1 3 घृष्ट, G3 दृष्ट (for घृष्ट) T3 भवन्तम् (for रमसम्)

5 Cf v1 4 and 8 —^a) Dt G1 3 M2 लक्ष्या (M2 'क्षा) लक्षा (G1 3 'क्ष्या) विमौ, D₅ लक्षालक्ष विमौ (hypermetric) D₅ लक्षालक्षसमौ (after corr as in Dt) T3 लक्ष्या" (for लक्षाक्षत्रिमौ) G3 [क्ष]त्रि (for [क्ष]त्र) —^b) M1 सुनाभकौ (for सुनाभकौ) —^c) D₅ 'नत् (by meta thesis) D₅ दशवक्त्रश्च (for शतवक्त्रौ) —^d) D₅ दशशीर्षं शितोदरौ, G3 'दृका (sic)

6 Cf v1 4 and 8 —^a) D₅ धर्मेनाम, G₃ 'नाभं (for पञ्चनाभ) G₃ 'नाभं (for महानाभ) —^b) G1 दुन्नाभ (for दुन्दुनाभ) Ck नाभ इति नामकदेशे नामप्रहणम् । दुन्दुभिनाम इति यावत् । Ck Dt D₅ स्व" D₅ स्वमावकौ (for सुनाभकौ) —^c) D₅ 'न (sic) (for ज्योतिष) Dt D₅ 3 शकुन, D₅ कृतिरं, D₅ कृयन्, T3 कृचन्, T3 कृचिन्, G2 M1 कृचन्, M2 कृयन्, M3 कृचन् (for कृचन्) —^d) D₅ नैरस्या (sic) (for नैराश्य) —^e) G₄ om (hapl) 6^a-7^a —^a) D₅ M1 3 यो", G1 सौ" (for योगन्धर) Dt D₅ 3 T3 G2 3 M2 विविद्रौ D₅ सविद्रौ (for हरिद्रौ) —^c) G₃ प्रयमनौ (for प्रयमनौ) G₃ (before corr) तदा (for तदा) D₅ 3 T₃ M₂ मत्त" M₂ नैद्र" मदात्मनौ तदा (T₃ 'नाबुभौ) —After 6 Dt D₅ ins

706^a गुचिषाहुर्महाबाहुनिष्कलिचिरचस्तया ।

Dt D₅ cont D₅ 3 11 T G1 3 M1-3 all C₅ ins after 6

707^a सावित्रीमाली र्धामाली वृत्तिमान्चिरस्तया ।

[Dt D₅ 3 11 G1-3 M₂ C₅ सावि (for सावित्र) Dt D₅ र्धामाली D₅ 'माली, G1 3 महामाली, G₃ M1 'वाणा (for र्धामाली) Dt रुचिरम् (for रुचिरम्) T₃ तदा (for रुपा) G1 वृत्तिमान्चिरस्तया, G₃ M1 वृत्तिमान्चिरस्तया (for the post. half)]

7 Cf v1 4 and 8 G₄ om 7^a (cf v1 6) D₅ om (hapl.) 7^a-8^a —^a) D₅ विप्रोयं (hypermetric) D₅ T1 3 M2 विप्र, T₃ चित्रं G₃ चंद्र (for चित्रं) Dt D₅ 3 सौमन्मत्त (for सौमन्मत्त) —^b) M1 repeats 7^a after 7^a D₅ (before corr) वैपूत, T₃ G1 3 M1 (both times) 3 रिपूत (for रिपूत) —After 7^a (second time), M1 ins. करणी करणी चैव —^c) Dt D₅ 3 करणी

योगन्धरहरिद्रौ च दैत्यप्रमथनौ तथा ॥ ६

पित्र्यं सौमनसं चैव पिभूतमक्राबुभौ ।

करवीरकरं चैव घनधान्यौ च राघव ॥ ७

कामरूपं कामरुचिं मोहमानरण्यं तथा ।

जृम्भकं सर्पनाभं च सन्ताननरणौ तथा ॥ ८

रतिं, D₅ 'वर्नी, D₅ परवीरकनि, T1 3 G₂ M1 'कनि, T₃ 'करी, G1 'कर्त्ति, M2 'वन (for करवीरकर) —^d) D₅ T₃ पथपाथ्ये

8 D₅ om 8^a (cf v1 7) —^a) D₅ T1 3 G₂ 4 M1 3 (inf lin sec m before corr as in text) मोहन मारण तथा —^c) Dt D₅ 3 (after corr) सर्पनायं च, D₅ om G₃ सर्पनाभं (for सर्वनाभ च) —^d) Dt D₅ 3 पथान (D₅ [before corr] वदाम) वर (D₅ 'वर) गौ तथा, D₅ T₃ G1 3 M2 सघान (G1 M2 'द्वार) वर (T₃ 'र) गौ तथा (G₃ 'णबुभौ) —For 4-8 $\bar{S}i$ N V B D1-3 5 7 10-13 M4 subst

708^a सत्यवाससत्यकीर्तिश्च घृष्टो रमस एव च ।

(4^{ad}) प्रणीपातरसो नाम अवाङ्मुखपराङ्मुखौ ।

वृषारथो वृषकमा च रणुक पुरादक ।

(5^{ad}) दशाक्षो दशवक्त्रश्च शतशीर्षो शतोदर ।

(6^{ad}) पञ्चनाभो महानाभ सुनाभो दुन्दुभिस्वन । [5] ज्योतिर्भातु क्रय वम्भो मकर शक्रोऽङ्गदी ।

(6^{ad}) युगान्धरस्तयादिनो मेत्ता प्रमथन स्थिर ।

चक्र सौमनसश्चैव विभूममक्राबुभौ ।

(7^{ad}) धरो धन्य हुण्टधरो रतिभूरतिरेव च ।

कामरूपी कामरुचिर्मोह भावरणस्तया । [10]

(8^{ad}) जम्भक स्वणनाभश्च स्वन्दनो वारणिलतया ।

[(1 1) $\bar{S}i$ V2-4 B2 3 (m also) सत्यान् (for सत्यान्) V1 अणुषो (hypermetric), V2 घृष्टो, V4 दृष्टो, B3 (m also) दृष्टो (for घृष्टो) $\bar{S}i$ D₅ 11 13 दृष्ट (D₅ 'दृष्ट' D₅ 'द्रा' रमस्येव च D₅ 7 दृष्टो जमलयेव च, D₅ 11 दृष्टो दमनयेव च, M4 दृष्टो मत एव च (for the post. half) —(1 2) $\bar{S}i$ 1 4 D₅ 7 वक्रो D₅ 7 वक्रो (for रणे) V4 D₅ 10 रात (for नाम) Note hiatus between the two halves V1 रवतर (to avoid hiatus) (for अवार) M4 पताङ्गयेवाङ्गश्च प्रति पतनयेव च —(1 3) $\bar{S}i$ D1-3 5 7 13 विषाको V1 M4 वृषाणो (for वृषाणो) $\bar{S}i$ D₅ 11 13 विष", D₅ 7 विष" (for वृषकमा) V4 वृषारथो वृषरमां (for the prior half) $\bar{S}i$ 3 वेणुः V2 वेणुः (for वेणुः) V1 V2 B1 3 (m also) नय" D₅ 3 3 च प्रथम (D₅ 'त्त [sic]) D₅ 10 'विभ" M4 प्रमथनम् (for वृषाङ्ग) G₂ D₅ 11 13 नैवे नाम प्रमेयम् (D₅ 'लेमन) (for the post. half) —(1 4) $\bar{S}i$ V1 D₅ 10 नय" V2 नय", D₅ 11 दृष्टुः (for नयन्) $\bar{S}i$ 1 3 3 D₅ 12 दृष्टुः (V2 2 'ए),

रामं प्राञ्जलयो भूत्वानुन्मधुरभाषिणः ।
इमे स्म नरशार्दूल शशि किं करवाम ते ॥ ११
गम्यतामिति तानाह यथेष्टं स्थुनन्दनः ।
मानमाः कार्यकालेषु साहाय्यं मे करिष्यथ ॥ १२
अथ ते राममामक्य कृत्वा चापि प्रदक्षिणम् ।

M४ विश्वामित्र तपोधन (for the post half) —(I 3) M४ तदा (for तथा) B१ om (hapl) from १ to १२ N२ दुभक्तान् (for first जम्भकान्) V२ ३ विश्व (V४ *) M४ ध्रुव (for दिव) D१० भक्तान् (for जम्भकान्) —(I 4) N२ B२ ४ D१० ११ क्षेत्रे, M४ *पि (for ते हि)]
—After 10 Dt D२ ११ १२ S (except M४) (Cm g k t comm on l 2 only) ins

713* केचिद्भारसदृशा केचिद्भूमोपमाश्रया ।
चन्द्रासदृशा केचिद्भद्राञ्जलिगुणलया ।

[(I 1) T२ धूमोपमानदा —(I 2) D२ T२ बद्धाञ्जलि (for प्रज्ञाञ्जलि) D११ T२ पुट्य (for युगम्) T२ M२ तदा (for तथा)]

11 *) N V B D१० १३ M४ ऊचुः, G२ रास (sic) (for राम) D२ १० प्राचय्यो N V B D१० १३ M४ राम, D११ सर्वे (for भूवा) —*) N V B D१० १३ M४ तदा (for [अ]नुवन्) M४ भाषिणे S१ D२ ३ ५ ११ १२ प्राह (D२ *मु) जम्भपुराक्षर —*) B२ इति (for इमे) N२ B२ (m also as in text) D१० हि, V१ om B२ ते D२ ३ १ रस्ते (for स) Cm g k t इमे स्म (as in text) N V B D१० १३ M४ वदामा राम (for नरशार्दूल) —*) S१ D२ ३ ५ ११ १२ ब्रूहि, Cm g k t as in text (for क्षाधि) N V B D१० १३ M४ न V१ *) इत्यमि (D१० *) ति स्थितान् (M४ *ता), V३ नस्त्वमिहागतान्, D२ ३ ५ ११ किं करवामह (D२ *नम [sic]) (for किं करवाम ते) —After 11 B२ (m) D११ ins

714* वृष्मशान्त्यगताग्रम्याः स्फुरन्त्यमुपस्थितान् ।

[B२ वदन् (for स्थान्) B२ मुमुषाश्रया]

12 D२ ११ T२ G२ M४ Cv transp 12^{ab} and 12^{cd} D११ repeats 12^{ab} from तानाह and the prior half of 715* up to यथा after स्थिति in 13* —*) S१ D२ २ २ ११ (both times) १२ मया (for माह) —*) S१ D२ २ २ ११ (both times) १३ प्राह (D२ *हु [sic]) राघव (for स्थुनन्दन) —*) T२ G२ मयातः Cg k t as in text (for मयातः) —*) T२ ३ ५ ११ inf lin sec m —I or 12^{cd}, S१ D२ ३ ५ ११ १२ subst

715* मनसा मे यथाशक्तं महापार्थ मयि न्यय ।

[D११ (both times) न (for मनसा) D२ २ *न D२ *न [for न] D२ २ २ [for मनसा] D२ *न (n) D२ २ *न (n) (I २ ५ १२)]

एवमस्त्विति काकुत्स्थमुक्त्वा जम्भूर्यथागतम् ॥ १३
स च तान्नाघनो ज्ञात्वा विश्वामित्रं महाशुनिम् ।
गच्छन्नेनाथ मधुरं श्लक्ष्णं वचनमब्रवीत् ॥ १४
किं न्वेतन्मेवसंकाशं परितस्याविदूरतः ।
श्लक्ष्णपण्डितो भाति परं कौतूहलं हि मे ॥ १५

while N V B D१० १३ subst for 12

716* गम्यता स्वगत वोऽस्तु कृतकाल उपेक्ष्य ।
स्मृता माहुरविषयमिति रामोऽभ्युयाच तान् ।

[(I 1) V४ च (for वो) N१ B२ -काले, V४ -कालं, B२ कान (for -काल) N१ illeg V१ *लव (sic) V४ D११ *ता (for उपेक्ष्य) —(I 2) V२ स्मृतो (for स्मृता) V४ हि, B२ D११ [अ]पि (for स्मि)]

13 N V B D१० १३ इत्युक्त्वा (N B२ *क्त) Cg as in text (for अथ ते) D२ [आ]सता (sic) (for [आ]मड्य) —*) D२ *त्वा, D२ T२ च, D२ भूत्वा (for कृत्वा) N२ V B२ ४ D२ १० १२ १३ G२ M२ २ ४ चाभि, B२ चाभि, D२ T२ कृत्वा, D११ चैव (for चाभि) N१ प्रदक्षिण (sic) D२ १३ प्रदक्षिणा (for प्रदक्षिणम्) —*) After स्थिति in 13*, D११ repeats from तानाह in 12* up to यथा in 715* N V B D१० १३ यथैव (for काकुत्स्थम्) —*) N१ repeats * con secutively —*) N V B D१० १३ प्रति (for उक्त्वा) —After 13 M२ (inf lin sec m) ins

717* प्रणम्य शिरसा रामं सर्वं समतविश्रमा ।

ततस्तु राम काकुत्स्थ शानमाद्रक्षवादिन ।

लक्ष्मणाय च तन्स्त्वान्नहन्महम्मन्महाबलान् ।

अस्त्राणामुपसहाराण्डुराधामान्वलीयम् ।

सौमित्रये ददौ रामो मद्रघातमनुत्तमम् । [5]

14 *) M४ गान् (for म च) M४ दद्या (for ज्ञाया) S१ D२ २ २ ११ १२ गतासु ता (D२ था) मु विद्यात्, N V B D१० १३ तान्विमुच्य (V४ B२ [m also] वितत्ये) ततो (B२ यथा, D१० *तो) रामो, D११ गतु तेषु सर्वेषु M२ (sec m) म क्षाधिषे सहर्षे (before cor as in text) —D११ reads 14*—15 in marg —*) D११ एव (for एव) S१ D२ २ २ ११ १२ काकुत्स्थ (D११ *स्थ) N V B D१० १३ पुनरायं, D२ [अ]थ काकुत्स्थ (for [अ]थ मधुर) —*) Cg श्लक्ष्ण (as in text) N V B D१० १३ मधुराश्रयम्, T२ M२ इदं (for श्लक्ष्ण वचनम्)

15 D११ reads 15 in marg (cf V 1 14) —*) S१ B२ D२ २ २ ११ १२ स्वे, N V B D२ २ २ ११ १२ एतन्, T२ येतन्; M२ ३ न्विदं, M२ न्वेय (for न्वेयत्) Cg हि न्विति। Ch. हि स्थगदियादि। N B मय (for मेय) M२ *नकाण (for *नकाण) —*) V२ यत्नम् (for यत्नयम्) S१ V२ २ २ १२ विदुः (for अ विदुः) —*) S१ M२ न्वेद, D२ D२ २ २ २ १२ न्वेद D२ २ २ १२ न्वेद T२ न्वेद Cm] as in

दर्शनीयं मृगाकीर्णं मनोहरमतीतं च ।
नानाप्रकारैः शकुनैर्बल्युभापैरलंकृतम् ॥ १६
निःसृताः स्म मुनिश्रेष्ठ कान्ताराद्रोमहर्षणात् ।

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे सप्तविंशः सर्गः ॥ २७ ॥

text (for वृणद्धम्) S1 D1-3 5 7 11 12 14 T G2 M1 4 इवा^०
(for इतो भाति) —^d S1 D1-3 5 7 11 12 M4 मुने (for पर)

16 ^a) S1 D5 12 मनोज्ञं च, D1 3 7 मृग चैव, G1 3 M4
मुनिश्रेष्ठ (for मृगाकीर्णं) D11 दर्शनीयतम चापि —^b) D9 14
T1 2 G2 4 M1 2 रमम् (for मनोहरम्) S1 D1-3 5 7 12
G1-3 M4 मम चाति (G1 3 M4 चैव) मनोहर (M4 रम्), D11
सर्वेषां च मनोहर —^c) S1 D5 12 प्रभावै (for प्रकारै)
—^d) S1 D1 2 5 7 11 12 वामिर्, D3 वज्रिर्, D14 T1 2
G2 4 M1 4 नादिर, Ct as in text (for बल्युभापैर) —For
15^c-16 N V B D10 13 subst

718* वनमाभाति सुमहत्कस्यैतदमरचुते ।
आभाति रमणीयं हि वनमेतन्मनोहरम् ।
मिनादित बल्युवाग्मिर्नानामृगगणायुतम् ।

[(1 2) V2 3 ०म (for मनोहरम्) —(1 3) V2 3 ०वज्रि
(for बल्युवाग्मिर्) V2 D13 अणैर्बुधै, V4 B1 अणायित (for
गणायुतम्)]

17 ^a) V1 निष्पत्या (sic) (for निःसृता) S1 V2
D1-3 7 9 (before corr) 12 रमो, V3 सु (for स्म) D11 नर^०
(for मुनिश्रेष्ठ) M1 निस्सृतात्ममुनिश्रेष्ठ —^b) G2 कृतालाह
(for कान्ताराद्) S1 N V B D1 3 5 7 10-13 होम (D11
होक्रम [hypermetric]), Ct as in text (for रोम)
—^c) S1 N V B D1-3 5 7 9-13 अने (B4 *) नैव, G1 3 हि
(for अनया तु) S1 [आ]हु, V1 D3 7 च, D5 12 [अ]य,
D9 [अ]मि (for [अ]य) S1 V4 B1 4 D1 3 5 7 9 11-13
नष्टाम् All Cs अद्यगच्छामि (as in text) M4
अनेनाभ्युप —^d) M4 रमणीयता all Cs as in text
(for सुखवत्तया) S1 N V B (B3 m also) D1-3 5 7 9-13
देशोय सु (S1 V4 D1 9 स) सु (V2 D5 11 ०यु) खोदय (S1
N2 V3 B3 D10 ०खावह, V4 ०खोदय)

18 ^a) N V B D10 13 सुव्यक्त (V3 व्यक्त [submetric])
चापि भवत —^b) N V B D10 13 सिद्ध, M4 न हि (for
कस्य) S1 D5 13 महत्, N V1 2 B D1 3 7 10 11 13 वय, V3
स्वर्ण, V4 च यत्, M4 तव (for विद्वद्) C^० Cv इदं पूर्व कस्य
इदानीं कस्येत्येतत्सर्वं शस । C^० —^c) V2 4 B3 D10 T3 संप्राप्ते

अनया त्ववगच्छामि देशस्य सुखवत्तया ॥ १७
सर्पं मे शंस भगवन्कस्याश्रमपदं विद्वद् ।
संप्राप्ता यत्र ते पापा ब्रह्मणा दुष्टाचारिणः ॥ १८

(V2 ०स [sic]) all Cs as in text (for संप्राप्ता) S1
D1 3 5 7 9 11 13 कुत्र, D13 अत्र (for यत्र) N V B D10 13
T3 तौ पापौ (V2 विद्वद्) D11 ते पा*, G2 ते तापा (sic)
(for ते पापा) —^d) S1 D1-3 5 7 11 13 T3 M4 यज्ञा (T3
०मौ) Dt ब्रह्म* (lacuna), Ct as in text (for ब्रह्मणा)
S1 D1 2 5 11 13 राक्षस, D3 7 चेतस, T3 चारिणौ (for
चारिण) N V B D10 13 यज्ञविप्रकरो तव —After 18,
S1 D1-3 5 7 11 13 ins

719* त्वकोपनिहता पूर्व निहन्तव्या मया हि ते ।
while Dt D3 6 8 9 14 S all Cs ins

720* तव यज्ञस्य विघ्नय दुरात्मनो महाघुने ।
भगवन्धोररुपास्ते मासशोणितभोजना ।
भगवत्सत्य को देश सा यत्र तव याज्ञिकी ।
रक्षितव्या क्रिया ब्रह्मन्मया वध्याश्च राक्षसा ।
पुतस्तवै मुनिश्रेष्ठ श्रोतुमिच्छाम्यह प्रभो । [5]

[M4 om 1 x —(1 x) G2 M3 (before corr) विघ्नय
(for विघ्नय) T3 तव यज्ञह्नो दुष्टौ (for the prior half) T3
G4 दुरात्मनो D4 महामते (for ०मुने) —All the above MSS
(except G2 M1) om 1 2 —(1 3) G3 M1 कस्य, M4
न हि (for तस्य) D14 *देश G3 M1 देशोय, M4 [अ]य देश
(for को देश) M4 यज्ञम् (for याज्ञिकी) —(1 4) M4
रक्षितव्ये मया (for रक्षितव्या क्रिया) D4 T3 M4 मम (for मया)
—D9 14 T1 G4 M2 4 om 1 5 M3 reads 1 5 inf lin
sec m —(1 5) T2 तन (for एतत्) G2 M1 हुतव (for
[अ]ह प्रभो)]

Colophon D1 2 7 om (cont the Sarga)
—Kandā name S1 N1 V1 Dt D10 11 13 om V2 4 B
आदि —Sarga name S1 D5 12 विद्यासहायम् (D5 [before
corr] विद्यासम्) हण, N V B D10 13 लूभकप्रदानं (V3
prefixes रामाय and D13 suffixes प्रहणे), D9 अक्षसंमहर्षे,
D11 सिद्धाश्रमनिवास —Sarga no (figures words or
both) S1 N1 V1 4 B1 4 D1 12 13 om N2 B2 3 D9 10
31, V2 33 V3 30 Dt D4 6 8 14 S 28 —After colophon,
T3 concludes with श्रीरामचन्द्राय नमः, G1 2 8 श्रीरामाय
नम, G3 श्रीमते रामायुजाय नमः, M2 श्री ...म

२८

अथ तस्याग्रमेयस्य तद्वनं परिपृच्छतः ।
निश्चामित्रो महातेजा व्याख्यातमुपचक्रमे ॥ १
एष पूर्वाश्रमो राम वामनस्य महात्मनः ।
सिद्धाश्रम इति ख्यातः सिद्धो ह्यत्र महातपाः ॥ २
एतस्मिन्नेव काले तु राजा वैरोचनिर्बलिः ।
निर्जित्य दैवतगणान्सेन्द्राश्च समरुद्रगान् ।

28

1 ^a) S₁ [जा]श्रमे राम (sic) D₅ 12 [जा]श्रमे रम्य,
Cg as in text (for [अ]ग्रमेयस्य) —^b) Dt D₆ 8 Cm t
वचन, D₁₁ तद्वचन (hypermetric) M₄ वने तत् (by
transp) (for तद्वन) —^c) N₁ V 2 4 B D₁₀ 13 M₄
आख्यातुम्, D₆ व्याहृतम्, Cm k t as in text (for व्याख्या
तुम्) S₁ D₁ 3 5 7 11 12 आख्यातु मुनि (D₅ 12 नर) शार्दूल
सर्वमेवोपचक्रमे —After 1 Dt D₆ 8 9 11 S (M₄ subst
for 2) all Cs ins

721* इह राम महाबाहो विष्णुर्देववर प्रभु ।
वर्षाणि सुबहूनीह तथा युगकलानि च ।
तपश्चरणयोगार्थमुवाप्त सुमहातपा ।

[(1 1) M₄ बाहु (for महाबाहो) Dt D₆ 8 दमस्कन,
D₁₄ T₂ 3 M₄ 4 वरप्रभु (for देववर प्रभु) —(1 2) M₃ स
बहूनि (for ३) D₄ [ए]व D₆ [अ]व (for [इ]ह) M₄
वर्षायास्तान्येकानि (for the prior half) Cg इह तपश्चरणार्थं
इहोवासेति इहशब्दश्च निर्वह Cg इह तपश्चरणयोगार्थं इहोवासेति
इहशब्दश्च निर्वह, Cg वेचिदिह इहशब्दश्च पठन्ति तदा इह वने
तथापि इह प्रदेश इत्यर्थः । Cl. इह भूमेके इहश्रमपदे Ct इह वने
इह प्रदेशे । Cg T₃ तदा (for तथा) D₆ [अ]वुन (for युग)
M₄ [अ]पि (for च) —(1 3) D₁₁ T₁ 2 G₄ M₄ तपश्चर
णार्थं हि (with hiatus) (for the prior half) G₁ मने,
M₂ स मत्ता (for सुमहातपा)]

2 ^a) V₄ D₁₃ अय (for एष) G₃ M₂ तस्य (for
राम) —^c) M₄ सिद्धाश्रमम् G₁ lacuna from ख्या to सि
N₁ V B D₅ 9 10 13 यत्र, D₄ T₃ [अ]प्यत्र, Cg k t as in
text (for ह्यत्र) S₁ N₁ V B D₁ 3 5 10-13 यथा, D₃ 7
जगपति, Cg k t as in text (for महातपा) —For 2 M₄
subst 721* then ins 1 1 of 723* —After 2 D₁₁
ins. 1 1 2 of 723*

3 ^b) S₁ D₁ 2 5 11 12 राज्य (for राजा) D₁ 1 1 T₃ M₄
चनो, D₃ चनं, Cg as in text (for वैरोचनिर्) D₂ 6 9 G₁
M₄ बली (for बलि) —S₁ D₁ 2 5 11 12 om 3^d —
G₄ M₄ देवत (sic) (for देवत) D₃ त्रिनिर्जित्य देवगणान्
—^d) Dt D₆ 1 M₄ सह, D₆ चैव (for च स) —^e) S₁
D₁ 2 5 11 12 काशस्य (for तद्वानस्य) M₄ त्रैलोक्यभोगान्बुभुजे

कारयामास तद्राज्यं त्रिषु लोकेषु विभुतः ॥ ३
बलेस्तु यजमानस्य देवाः साक्षिपुरोगमाः ।
समागम्य स्वयं चैव विष्णुमूचुरिहाश्रमे ॥ ४
बलिर्नैरोचनिर्जिष्णो यजते यज्ञमुत्तमम् ।
असमाप्ते क्रतौ तस्मिन्स्वकार्यमभिपद्यताम् ॥ ५

—^f) S₁ D₅ 12 निर्भय, D₁ 2 M₄ निर्वय, M₂ विभुत (for
विभुत) —After 3 Dt D₄ 8 9 T₃ G₁ ins

722* यत्र चकार बलवानसुरेन्द्रो महातपा ।

[Dt D₆ 8 सुमदान्, D₄ मतिमान् (for बलवान्) Dt D₆ 8
बल, D₄ बलि, G₁ बली (for महातपा)]

4 ^b) D₆ सेंद्रा (for देवा) D₁ स्वर्गं, D₁₁ इन्द्र (for
साक्षिपुरोगमा) —^c) Cg समागम्य (as in text) Ck
समागत्य D₁ 2 5 12 [क्र]पयश्, D₁₁ विनीतास्ते (for स्वय
चैव) T₃ G₁ 3 M₃ आगम्य (G₃ त्व) न्यपयश्चैव, M₂ न्यपयश्च
समागम्य —^d) D₁₁ इद वच (for इहाश्रमे) —For 3 and
4 N₁ V (N₁ V₁ 4 om 1 1 and 2 V₂ 3 om 1 2) B
D₃ 7 10 13 M₄ (ins 1 1 after 721* and subst 1 5 6
for 4 only) subst while D₁₁ ins 1 1 2 after 2

723* विष्णुर्बामनरूपेण तप्यमानो महातप ।

त्रैलोक्यराज्येऽपहृते बलिनेन्द्रस्य राघव ।

अभिभूय हि देवेन्द्र पुरा वैरोचनिर्बलि ।

त्रैलोक्यराज्यं बुभुजे बलेनैवात्समन्वित ।

ततो बली तदा यज्ञ यजमाने भयादिता । [5]

इन्द्रादयः सुरगणा विष्णुमूचुरिहाश्रमे ।

[(1 1) D₁₁ मानव (for वामन) M₄ तप्यते स्म (for
तप्यमानो) —(1 2) B₃ [स]पहृते, D₁₀ [स]पहृते (for
अपहृते) N₂ त्रैलोक्यराज्येऽपहृते (sic) B₁ त्रैलोक्यराज्यविहिते (for
the prior half) B₁ बलेदिह —(1 3) D₃ 7 भूतो (for
अभिभूय) V₂ च B₁ स, B₄ [इ]ह (for हि) D₃ देवते (sic)
D₇ देवद (for देवेन्द्र) D₆ वैरोचनो (for चबलि) —(1 4)
D₃ भक्त च, D₇ मुक्ते च (both sic) (for बुभुजे) V₄
समाहित (for समन्वित) B₁ बलेत्तेकमन्वित, D₃ 7 बलात्ते
मन्वायुन (for the post half) —(1 5) V₃ बलेत् (for
बली) D₁₃ तदा (sic) M₄ तथा (for तदा) V₃ वज्ञे (for
यज्ञ) D₃ 7 तदा बलेनैवात्समे (for the prior half) D₂ 7
यजमान- D₁₀ यजमानेन (hypermetric) (for यजमाने)]

5 In G₁ from 1 24 1st up to 1 28 5 the original
folio has been replaced by two new folios (sec m)
—^a) D₁ 3-7 M₄ 4 वैरोचनो V₂ G₁ (after corr inf lin
as in text) विष्णु (for विष्णो) —^b) V₁ यजति (for
यजते) N₁ V B D₁₀ 13 M₄ [अ]ली महा (B₃ महामहा

ये चैनमभिवर्तन्ते याचितार इतस्ततः ।
यच्च यत्र यथापच सर्वं तेभ्यः प्रयच्छति ॥ ६
स त्वं सुरहितार्थाय मायायोगमुपाश्रितः ।
वामनत्वं गतो पिण्णो कुरु कल्याणमुत्तमम् ॥ ७
अयं सिद्धाश्रमो नाम प्रसादाचे भविष्यति ।

[by ditto] बल (N¹ वशा) (for यज्ञमुत्तमम्) —After 5^{ad} N V B D¹⁰ 12 M⁴ (M⁴ 1 x only) ins

724* कामद सर्वभूताना महर्द्धिसुराधिप ।
त त्व वामनरूपेण गत्वा भिक्षितुमर्हसि ।
विक्रमास्त्रोन्नावाहो दाता हि नियत स ते ।
भिक्षितो विक्रमानेतास्त्रीन्वीर्यबलदर्पित ।
परिभूय जगन्नाथ तुभ्य वामनरूपिणे । [5]

[(1 x) V² बहुधा^o (for अग्राधिप) —(1 2) V² तत् (for त) —D¹⁰ om 1 3 —(1 3) V⁴ विनय त, B¹ हु^o (for हि निवत) —(1 4) V³ दधितान् (for दधित) —(1 5) N¹ B² पूज्य D¹⁰ म दास्यति (for परिभूय) V² B¹ जगन्नाथ (for ज्ञाथ)]

—^o C^g असमासे (as in text) S¹ D¹-3 5 7 11 12 अपर्यवसिते, Dt D⁶ 8 Ct सप्तते, M⁴ १ सकतौ (for असमासे क्रनौ) —^{ad} S¹ D¹ 11 12 M⁴ उपप^o (D¹¹ 12 [after corr orig अमिषाद्यता] पा) D¹-3 7 अवधार्यता (D² त [sic]) G¹ सम^o, G² M¹ प्रति^o, C^g t as in text (for अमिषाद्यताम्)

6 ^o D³ य (for ये) D¹⁰ वा (for च) D¹ [ए]वम् (for [ए]नम्) S¹ D¹-3 5 7 9 11 12 भेदति, M⁴ अति^o, all Cs as in text (for अभिवर्तन्ते) —⁵ S¹ D¹ 3 5 7 12 M⁴ स्तत^o, D¹¹ 11 श्र तत्पत, C^g k t as in text (for हृतस्तत) —^o D¹-3 7 9 यत्र, M³ यस्य (for यच्च) M³ यच्च (for यत्र) D¹⁴ G³ M² transp यच्च and यत्र D¹-3 7 M⁴ च यावच (for यथावच) S¹ D⁵ 12 ये गवा य (D¹² त) ज यावते, D¹¹ यत्र यवैव यावच —^{ad} D¹⁴ सर्वं (for सर्वं) S¹ D⁵ 12 transp सर्वं and तेभ्य

7 S¹ om (hapl ?) 7 8^o —^o D⁵ 12 यव, T³ सर्वं (for स त्व) —⁵ D¹-3 5 7 11 महा, D¹² यथा (for माया) D¹-5 7 9 11 12 T³ G³ M²-4 C^g k यान G¹ स्थित (for उपाश्रित) C^g Ct माया शक्ति तस्या योग सञ्चल माश्रित । C^g —^o D⁷ ततो, D¹¹ गतततो (sic) G¹ गते (after corr as in text) (for गते) M⁴ repeats 7^o after App x (No 6) with v1 देव for पिण्णो —For 5^o-7, N V B D¹⁰ 12 subst

725* ये ह्येनममियाचन्ते लिप्समाना स्वमीप्सितम् ।
तान्कामिरीसिते सर्वान्बोत्रयलमुरेधर ।
स त्वं प्रेलोक्यराज्यं नो हतं भूयो जगत्पते ।
दातुमर्हसि निर्जित्य विक्रमैर्भूरिभिक्षिभि ।

सिद्धे कर्मणि देवेश उच्छिष्ट भगवन्निभः ॥ ८
अथ विष्णुर्महातेजा अदित्यां समजायत ।
वामनं रूपमास्थाय वैरोचनिमुपागमत् ॥ ९
त्रीक्रमानथ भिक्षित्वा प्रतिगृह्य च मानतः ।
आक्रम्य लोकोल्लोकात्मा सर्वभूतहिते रतः ॥ १०

[(1 x) B¹ वो (sic) (for ये) V¹ लीप्स्^o (sic) (for लिप्समाना) N V² 4 B² 4 समीप्सि (V² हि) त —(1 2) B¹ तत् (for तान्) V¹ अमीप्सि (hypermetric) V⁴ इप्सितम् (for इप्सिते) —(1 3) V² सर्व (for स त्व) D¹⁰ वैरोचये (for वैरोच्य) N² V¹ 3 ह्य (for ह्य) —V¹ om 1 4 —(1 4) V² भूरितिष्ठिभि (for भूरिभिक्षिभि)]

—After 7 Dt D⁵ 6 9 14 S all Cs ins a passage relegated to App I (No 6)

8 S¹ V¹ om 8^o (for S¹ cf v1 7) M⁴ om 8 —^o N¹ illeg for ^o D¹² अथ (for अथ) B² (m also) D³ राम (for नाम) —⁵ N V²-4 B D¹⁰ 12 सिद्ध (B¹ दि) कर्मा, D¹-3 5 7 11 12 त्व (D⁵ 12 य) प्रसादा (D⁷ १० ह्य, C^g as in text (for प्रसादात्) —^o S¹ D¹² देवेश —^{ad} C^g k t उच्छिष्ट (as in text) M³ वान् (for भगवन्) S¹ D⁵ 12 प्रातिष्ठ (D¹² प्रतिष्ठा [sic]) जगत्पति (D¹² चानि)-ति, D¹-3 7 प्रातिष्ठतु (D² युष्ट [sic]) भवानिति (D¹ तिति) —For 8^o-11, N V B D¹⁰ 11 (1 x and 3 and 9-10 for 8^o-9^o and 11) 12 subst 727* —After 8 G¹ M³ ins

726* एवमुक्तो हृषीकेश पीतवासा जनार्दन ।
सर्वज्ञस्तत्तत्तथेवाह काश्यपस तपस्वत ।

[(1 2) G¹ ते (for तत्) M³ स पद्वत (for तपस्वत)]

9 Cf v1 8 and 11 —^o M⁴ अयो (for अथ) D² पिण्णो (sic) (for विष्णुर्) S¹ D¹-3 5 7 12 M⁴ योर्ग (M⁴ गी) G¹ ब्राह्म (for वेना) —⁵ Dt सजायत S¹ D¹ 3 5 7 12 प्रविश्य रघुनन्दन, M⁴ जातेदित्या तदा प्रयु —^{ad} D⁵ 12 M² वैरोचनम् D¹² उपागत —After 9 G¹ and K(ed) (in parenthesis) ins a passage given in App I (No 7)

10 Cf v1 8 and 11 —^o Dt D⁶ 9 पदान्, C^g as in text (for द्रमान्) C^g Cl क्रम पदनिष्पन्नम् । C^g S¹ अपि (for अथ) S¹ D¹ 3 5 7 11 12 याचिवा, M³ भक्षित्वा (after corr sec m as in text) C^g as in text (for भिक्षित्वा) M⁴ पदानि श्रोणि —⁵ S¹ D¹-5 7 9 12 T³ G¹ M² 4 वामन, Dt D⁶ 8 मेदिनी, D¹¹ शास्त्रत, G² 3 M¹ 3 मानद (for मानत) C^g Cl मानद हति । देवानां पूजापर । C^g —After 10^o, D¹¹ ins 1 6-8 of 727* —^o Dt D⁶ 8 Ct लोकार्थी (D⁶ १० ह्य, C^g as in text (for लोकामा) —^{ad} Dt D⁶ 9 9 T³ M² श्लोक (for श्लुत)

महेन्द्राय पुनः प्रादान्नियम्य बलिमोजसा ।
त्रैलोक्यं स महातेजाश्चक्रे शक्रवशं पुनः ॥ ११
तेनैष पूर्वमाक्रान्त आश्रमः श्रमनाशनः ।
मयापि भक्त्या तस्यैष वामनस्योपशुज्यते ॥ १२
एतमाश्रममायान्ति राक्षसा विघ्नकारिणः ।

अत्र ते पुरुषव्याघ्र हन्तव्या दुष्टचारिणः ॥ १३
अद्य गच्छामहे राम सिद्धाश्रममनुत्तमम् ।
तदाश्रमपदं तात तवाप्येतद्यथा मम ॥ १४
तं दृष्ट्वा मुनयः सर्वे सिद्धाश्रमनिवासिनः ।
उत्पत्त्योत्पत्य सहसा विश्वामित्रमपूजयन् ॥ १५

11 Śi D1-3 5 7 12 om 11 —⁵) G² निश्रम्य (sic) (for 'यस्य' —⁶) D² T³ G¹ 3 सुमहातेजाश्च (for स महा⁶) —⁴) T³ चक्र⁶ (sic) (for शक्रवशं) —For 8⁶—11, N² V B D10 13 subst, while D11 subst 1 1 and 3 for 8⁶—9⁶, ins 1 6-8 after 10⁶ and subst 1 9-10 for 11

727* तस्मिन्कर्मणि ससिद्धे तव मलयपराक्रमः ।
कश्यपस्य तु वीर्येण बहिष्या गर्भसमयः ।
एवमुक्त सुरैर्विष्णुर्वामन रूपमास्थितः ।
वैरोचनिमुपागम्य ग्रीनयाचत विघ्नान् ।
लब्ध्वा च ग्रीन्माम्निषण्ण कृत्वा रूपमयाद्भुतम् । [5]
त्रिभि क्रमैस्तथा लोकानाह्वार त्रिविक्रमः ।
एकेन हि पदा कृत्वा पृथिवीं लोऽप्यनिष्ठः ।
द्वितीयेनाव्यय व्योम या तृतीयेन राधव ।
त च बद्धाञ्जलिं कृत्वा पातलतलवासिनम् ।
त्रैलोक्यराज्यमिन्द्राय वदामुद्भूत कण्टकम् । [10]

[(1 1) D11 तद्वि कर्मणि ससिद्धे (for the prior half) B³ भव, D13 न च (for तव) N² B³ D13 13 'क्रम' (D11 'म' (for सत्पराक्रम) —All the above MSS (except B³) om 1 2.—(1 3) D10 om (hapl) from the post half up to the prior half of 1 5 D11 भववाजपुनदन (for the post half) —D11 om 1 4 and 5 —(1 4) V⁴ 'वनम्' (for वैरोचनिम्) D13 'गव्य' (for उपागम्य) N² B³ सक्रमान् V² 4 पद (V⁴ 'दान्') क्रमान् (hypermetric) (for विघ्नान्) V² B³ D13 ग्रीनयाचत वि (D13 'पद') क्रमान् (for the post half) —(1 5) N² 1 ग्रीन्माम्निषण्ण, N² wrongly om क्रमान्, D13 'न्यादान' (for च ग्रीनमान्) V² पदानि वि क्रमन्विण्यु' (for the prior half) N² 1 illeg (for कृत्वा) —(1 6) B³ पदित (for क्रमेण) N² V² B³ 4 D10 तदा (for तथा) V⁴ विष्णु (for लोकान्) —(1 7) V⁴ B³ [5] 'यव' (for 'यवनिष्ठ') —(1 8) D11 [अज्यय (for [अज्यय D13 तृतीये च (for या तृतीयेन) B³ तृतीयेन हुराव्य (for the post half) —(1 9) V⁴ तथा, B³ व च, D11 तव (sic) (for त च) N² 1 V⁴ B³ 2 4 D11 बद्धाञ्जलिं B³ बद्धा⁶ (for बद्धाञ्जलिं) —(1 10) N² मिश्राय (for ददाय) V⁴ उद्भुतकटकम्]

12 —⁶) Śi V²—4 B D² D³ 4 6 8 10 14 T³ 3 Ct [ए] व, G¹ 3 M¹ [ए] व (for [ए] व) Śi 'नतम', N² V B D10 13 पूर्वोत्पुषित (V² 2 'तम्', V³ 1 'ता' [sic]) (for पूर्वमानान्त) —⁵) Śi D11 (after corr as in text) आश्रम, T³ आश्रम, M¹ त्याश्रम Śi 'दाने', N² V B D10 13 पुण्यकर्मणा, Cg as in text (for श्रमनाशन) —⁶) D13 अद्य (for

मया) Śi D² 5 12 तु⁶, V⁴ D³ 7 भक्त्यापि (by transp) (for [अ] पि भक्त्या) All MSS (except T³ 2 G² 4 M¹) [ए] व, Cg k as in text (for [ए] व) —⁴) Śi D13 M¹ [उ] पसेव्यते, N² V B D⁴ 10 11 13 G² निषेव्यते, G¹ [उ] पयुज्यते, Cg g k as in text (for [उ] पयुज्यते)

13 —⁶) D² D³ Ct एनम्, T³ वामन, G¹ M¹ एतद्, G² एवम्, Cg g k as in text (for एतम्) Śi D1-3 5 7 9 12 अत्र ते राक्षसा राम, M¹ एतत्तदाश्रमपद —⁵) Śi D1 2 5 7 9 12 मम ये (Śi D² ने), D³ समये (for राक्षसा) M¹ राक्षसौ विघ्नकारिणौ —⁶) Śi D1 5 9 12 ते त्वया, D³ 3 7 त्वया ते, D11 त्वया च, T³ तत्र⁶, M¹ यत्र⁶ (for अत्र ते) —⁴) D11 M¹ हतव्यौ दुष्टचारिणौ —For 13, N² V B D10 11 (1 1 for 13⁶ only) 13 subst

728* अत्र तौ राक्षसौ वीर यज्ञविघ्नकरो मम ।
हन्तव्यौ स्वेन वीर्येण त्वया नरवरात्मज ।

[(1 1) N² B³ D10 तत्र D13 यत्र (for अत्र) D11 राम (for वीर) N² 1 illeg V² 'कर्मविधौ' (for यज्ञविघ्नकरो) —(1 2) B³ शरवर्णेण D13 येन' (for स्वेन वीर्येण) V⁴ वत्स्या⁶ (for नरवरात्मज)]

14 —⁶) M¹ अग्नि (for अद्य) Śi N² V B D1-3 5 7 10-13 एवमे (V⁴ 4 B³ 'तदे', D1 2 'तमे', D³ 7 12 'तमे') यामि (V² 'व हि') गच्छाम (D10 pr m marg 'वानिगच्छाम') —D10 om (hapl) 14⁶—15⁶ —⁵) N² V B Dn 13 विद्या (V⁴ स्थित्वा) श्रमपद यत्र (V² सितैः, V⁴ च यत्, D11 वर, D13 मम) —⁶) Śi N² V B D1 3 5 7 11 13 M¹ स्वम्, D² विद्, D³ तथा, G¹ तत्र, Cg g k t as in text (for तद्) D1-3 7 आश्रमसिद्ध (D³ 7 'म') Śi N² V1 3 4 B D1-3 5 7 11 12 राम, V² चापि, D13 माम्, G² तौ तु (for नात) —⁴) Śi D1 5 12 तदा (D² 'था') ज्येष्ठ, B³ तथा⁶, G² यथा हेतत् (for तत्ताप्ये तद्) V² सुखी, G² तथा, Cg g k t as in text (for यथा) D² यथा तव तथा मम, D³ 7 यथा मम तथा तव —After 14, D² D³ 6 8 9 14 S (D³ 9 14 Som 1 1 Cg comm on 1 2 3, Ct on 1 3 only) ins

729* इत्युक्त्वा परमप्रीते युद्धं राम सलदमण्यम् ।

प्रविशन्नाश्रमपदं प्यरोचत महासुनि ।
शशीव गतनीहार पुनर्यमुसमन्वित ।

[(1 2) D² T³ स प्रविश M¹ प्रविशन् (for प्रविशन्) —(1 3) M¹ युद्धाय (for पुनर्यम्)]

15 D10 om 15⁶ (cf 1 1 14) —⁴) V⁴ B³ D² 3 7 तत् (for त) M¹ transp त and दृष्ट्वा Śi D1-3 5 7 13

यथाहं चक्रिरे पूजां विश्वामित्राय धीमते ।
तथैव राजपुत्राभ्यामकुर्वन्नतिथिक्रियाम् ॥ १६
मुहूर्तमथ विश्रान्तौ राजपुत्रापरिदमौ ।
प्राञ्जली मुनिशार्दूलमूचतू रघुनन्दनौ ॥ १७
अथैव दीक्षां प्रणिश भद्रं ते मुनिपुंगव ।

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे अष्टाविंशः सर्गः ॥ २८ ॥

M⁴ रूपय सर्वे, N¹ V¹⁻³ B¹⁻³ D¹¹ [अ]भ्यागत दूरात्, V⁴ [अ]भ्यागमन्दूरात्, B⁴ [अ]भ्यागलान्दूरात्, D¹² स्वागत दूरात् (for मुनय सर्वे) —D¹⁰ reads 15^{ed} in marg —^b) S¹ D⁵ 12 तद्, D² 7 तथा, D³ illeg (for सिद्धा) —^c) G¹ उत्पुल्लोत्पुल्ल, Cg k t उत्पल्लोत्पल्ल (as in text) S¹ D¹⁻³ 12 प्रत्युद्रम्य यथान्याय, N¹ V B D² 7 10 11 12 प्रत्युद्रम्य महामानं (D² 7 [before corr °बाहो] °नो)

16 °) G⁴ यथाप, Cg यथाहं (as in text) S¹ D¹⁻³ 5 7 11 12 वृत्ता पूजा यथान्याय —^b) D¹ धीमते, D² 7 धमेत, D³ illeg (for धीमते) —For 16^{ed}, S¹ D¹ 3 5 7 12 subst

730* काकुत्स्थयोरपि तथा पूजा चक्षुर्महर्षय ।

[D³ ककुत्स्थयोरपि S¹ D⁵ 12 तदा (for तथा)]

—For 16 N¹ V B D¹⁰ 13 subst, while D¹¹ subst 1 2 only for 16^{ed}

731* प्रविष्टाय दुदुश्चास्मै पाद्यार्घ्यासनसक्तियाम् ।

रामलक्ष्मणयोश्चापि सक्तियां प्रददुर्दिजा ।

[(1 1) N¹ B² (marg) तत् V³ च दत्तास्मै, V⁴ °लक्ष्मै (for ददुक्तास्मै) V² प्रदुक्षोपविष्टाय (for the prior half) V¹⁻³ B¹ पाद्यार्घ्यासन B² पाद्यासन (submetric) (for पाद्यार्घ्यासन) B³ सक्तिया (for सक्तियाम्) —(1 2) N¹ illeg up to सक्ति]

17 °) S¹ B¹ D² 5 6 7 12 Cg इव, D¹ तत्र, D² M⁴ अपि (for अय) D⁴ मुहूर्तमितविश्रान्तौ —^b) S¹ D¹ 3 5 7 12 महावलौ, M⁴ अनिदितौ (for हरिदनी) N¹ V B D¹⁰ 11 13 ततस्ती (D¹¹ तत्र लौ) रामलक्ष्मणौ —^c) S¹ D¹ 12 T² 3 (all sic) प्राञ्जलि (for प्राञ्जली) S¹ D⁵ 12 उवाच मयुर वच ; D¹⁻³ 7 ऊचमुधुराक्षर (D¹ °र वच) (for °) N¹ V B D¹⁰ 13 त (V³ स) मूचतुमुनि (N¹ °दिन) वर विश्वामित्र वृत्तानली, D¹¹ तमूचतुमुनिविचर रायवौ मयुर वच

18 °) V³ प्रतिश (for प्रविश) —^b) D³ तेन (hyper metric) (for ते) B⁴ सप्तम (for पुगव) —^c) G⁴ M⁴ Cg k t सिद्धि (for सिद्ध) S¹ V⁴ B⁴ D⁵ 12 तु N¹ V¹⁻³

सिद्धाश्रमोज्यं सिद्धः स्यात्सत्यमस्तु वचस्तव ॥ १८
एवमुक्तो महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः ।
प्रतिवेश तदा दीक्षां नियतो नियतेन्द्रियः ॥ १९
कुमारावपि तां रात्रिमुपित्वा सुसमाहितौ ।
प्रभातकाले चोत्थाय विश्वामित्रमवन्दताम् ॥ २०

B¹⁻³ D¹ 3 7 10 11 13 [अ]स्तु, Cg k as in text (for स्यात्) —^d) M⁴ wrongly repeats वस्तव in वचस्तव S¹ D¹⁻³ 5 7 12 सत्यमेवास्तु ते (S¹ D⁵ 12 मे) वच, N¹ V B D¹⁰ 11 13 स (V² सु) सिद्धि (D¹² °विदे) तव कर्मणि, Cg k t as in text (for °)

19 °) N¹ V B D¹⁰ 11 13 तयोरेतद्वच ध्रुवा —After 19^{ed} D¹¹ ins the post half of 1 1 and prior half of 1 2 of 732* —^b) N¹ V B² °मना, N² B³ (m also as in text) D¹⁰ 13 °मनो, Dt D² 8 14 T¹ 2 G⁴ M⁴ °चुपि (for महामुनि) —^c) D⁴ ततो (for तदा) Cg k t नियतो (as in text) N¹ V B D¹⁰ 11 13 आदिदे (V °विदे) श तयोत्पुल्लवा दीक्षा वदहरेव (D¹¹ तदेक्षेव [sic]) तु (N¹ B² 3 D¹⁰ च) —For 19 S¹ D¹⁻³ 5 7 12 subst

732* रामस तु वच ध्रुवा दीक्षा सहष्टमानस ।

जग्राह स महातेजा विश्वामित्रो महामुनि ।

[Dt transp 1 1 and 2 —(1 1) D¹ 3 7 वचन (for तु वच) —D¹¹ ins from the post half of 1 1 up to the prior half of 1 2 after 19^{ed} D¹⁻³ तां दीक्षामनस्यया D⁷ दीक्षामनुस्यया (sic) (for the post half) —(1 2) D¹⁻³ 7 प्रतिवेश D¹¹ °सु (for जग्राह स) D³ om (hapl) from the post half up to 20^{ed}]

20 D³ om 20^{ed} (cf v 1 19) —^a) Dt D² 8 G⁴ M⁴ C⁴ v r m t इव, T² 2 अथ (for अपि) D² प्राप्य (for रात्रिम्) D¹² repeats वपि वा रात्रिम् N¹ V¹⁻³ 4 B D¹⁰ 11 13 रामोदि वा तत्र निद्राम् (B¹ नि*), V² रामोपि रजनीं तत्र (with hiatus) —^b) B⁴ °पित्वा N¹ V B D¹⁰ 11 13 सहलक्ष्मण, M⁴ रघुनन्दनौ (for सुसमाहितौ) S¹ D¹ 2 5 7 12 अतिवाह्य (D¹ सुखे सुप्य, D² 7 सुपसुप्य) समा हितौ —After 20^{ed}, Dt D⁴ 8 9 14 S (Cg k t comm. on L 2-3) ins

733* पूर्वां संध्यामुपास्य च ।

प्रगृहीतं परमं ज्ञाप्य समाप्य नियमेन च ।

हुताग्निहोत्रमासीनं

२९

अथ तौ देशकालज्ञौ राजपुत्रावरिदमौ ।
देशे काले च वाक्पञ्चाशत्प्रातः कौशिकं वचः ॥ १
भगवन्भ्रोतुमिच्छा यो यस्मिन्काले निशाचरौ ।
संरक्षणायौ तौ ब्रह्मन्नातिप्रेतं तत्क्षणम् ॥ २
एवं श्रुत्वापौ काकुत्स्थौ त्वरमाणौ युयुत्सया ।
सर्पे ते मुनयः प्रीताः प्रशशंसुर्नृपात्मजौ ॥ ३

अथ प्रभृति पद्मां रक्षतं राघवौ युवाम् ।
दीक्षां गतो ह्येव मुनिर्मौनिर्वं च गामिष्यति ॥ ४
तौ तु तद्वचनं श्रुत्वा राजपुत्रौ यशस्विनौ ।
अनिद्रौ पडहोरात्रं तपोनमरक्षताम् ॥ ५
उपासां चक्रतुर्नरी यतौ परमधन्विनौ ।
रक्षतुर्मुनिवरं विश्वामित्रमरिदमौ ॥ ६

[(1 x) D₉ G₁ s M₂ सत्त्वा पूर्वम् (by transp) D₉ उपास्यत —D₉ G₁ s 4 M om (hapl) 1 2 —(1 2) T₃ Cg k ज्य (for चाय) D₁₄ T₁ 2 G₃ Cg सृष्टे (G₃ 'ष्टे' दृष्टे (T₂ G₃ 'क') शुचौ ज (D₁₄ T₁ 2 7 ण) (for the prior half)]
—^a) N V B D₁₀ 11 13 अवेदत, D₃ अविदता (for अवन्दताम्) —After 20 S₁ D₁ s 1 13 ins

734* इत्थ विनीय रजनीमथ तौ प्रभाते
कौतुहलेन धरणीरहपद्मिषुधाम् ।
पुष्पानता मृगगणैरमित प्रकीर्णं
पञ्चोत्तरा ददत्तु प्रमदाहुलाक्षौ ।

[(1 x) L (ed) धरणी (for रजनीम्) —(1 2) L (ed) धरणी सर (for धरणीरह) —(1 3) D₁₂ 12 ननं (for पुष्पानतं) S₁ प्रकीर्ण (for प्रकीर्णं) —(1 4) D₁₃ पञ्चोत्तरं (for पञ्चोत्तरा) D₃ 12 13 हृणहुलाक्षौ (submetric)]

Colophon—Kanda name S₁ N̄ s Dt D₁ 4 10 om.
V (V₁ before रामायणे) B D₁₁ अदि, D₃ अद्योप्यत
—Sarga name Dt D₄ 6 9 14 S om S₁ N̄ V B D₁ 3 5 7
9 10 12 मिद्रा (V₃ विश्वामित्रा) ध्रमनि (N̄ s om नि) वास (V₂
'घेरा'), D₁₁ राक्ष (स) वच —Sarga no (figures words
or both) S₁ N₁ V₁ 4 B₁ 4 D₃ 5 11 13 om N̄ s B₂ 3 D₉ 10
32, V₂ 34 V₃ 37 Dt D₄ 6 9 14 S 29 D₁ 7 22, D₂ 23
D₁₃ कष्टे ध्रम-नाम —After colophon T₂ G₁ s 4 con-
clude with धीरामाय नम, G₃ धीमते रामानुजाय नम,
M₂ धी .म

29

For Sarga 29 N̄ V B D₁₀ 11 13 have a different version which is given at the end

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
1 2 3 4 5 6 7 8 9 1

अथ काले गते तस्मिन्पष्ठेऽहनि समागते ।
 सौमित्रिमव्रीद्रामो यत्तो भन समाहितः ॥ ७
 रामस्यैव त्रुणस्य त्वरितस्य युयुत्सया ।
 प्रजज्वाल ततो वेदिः सोपाध्यायपुरोहिता ॥ ८
 मन्त्रवच यथान्यायं यज्ञोऽस्तौ संप्रवर्तते ।
 आकाशे च महाज्ज्वलः प्रादुरासीद्भयानकः ॥ ९
 आचार्य गगनं मेघो यथा प्रावृषि निर्गतः ।

7 ^a) T₃ रते (sic) Cg t as in text (for गते) M₅
 पष्ठे (for तस्मिन्) —^b) S₁ D₁ (marg gloss समारम्भे)
 — 57 [७ पकल्पिते, Dt D₈₈₉ तथागते, D₁ [७ पकल्पिते,
 Cv p म्भारम्भे (for समारम्भे) M₅ तस्मिन्पष्ठे गतपले — S₁
 D₁ 35712 om 7^c—8^c —^d) D₉ सामित्रम् (for सौमित्रम्)

8 S₁ D₁ 35712 om 8^{ab} (cf v l 7) D₉ om 8^{cd}
 —^e) G₂ M₂ तदा (for ततो) S₁ D₇ वेदी, D₁ 451^a वेदी
 (for वेदि) D₃ तपोवेदी —^d) S₁ D₁ 27 सोपाध्याय (for
 सोपाध्याय) S₁ ससामगा, D₁ समाहिता, D₂ समाहित,
 D₃ समाहित(r), D₅ ससामगा, T₂ पुरोहिता, T₃ पु सगा,
 G₂ पुरोहिता (for पुरोहिता) D₁ सोपाध्याया समामगा
 (sic) All Cs gloss उपाध्याय and पुरोहित almost alike
 —After 8 Dt D₁ 5311 S Cg k t ins

735* सदभं चमस्युका ससमिखसुमोचया ।
 निशामिमेण सहिता वेदिर्नज्वाल सविजा ।

[(1 x) M₁ सवर्भं (sic) (for सवर्भं) G₂ चमसि (sic)
 (for चमसं) —(1 2) G^a महता Ck मविता (for सहिता)]

9 ^b) D₁ T₃ M₄ Cm ^aवे, G₁ राज्ञो, M₂ ^aवे (for
 यज्ञोऽस्तौ) Cm k t सप्रवर्तते (as in text) S₁ D₁ 5712
 यज्ञ (D₂ ^aज्ञ) सममिवर्तते (D₁ ^aत) D₂ यज्ञ सममिवर्तित,
 D₃ यज्ञ सममि (मि)वर्तते —^c) D₆ [अ] T₂, G₄ M₂
 तु, M₃ सु (for च) S₁ Dt D₁ महा (for महान्)
 D₃ राष्ट्र (for शब्द) —^d) S₁ D₁ 35712 भयकर (for
 भयानक)

10 ^a) D₁ (marg gloss) आचार्य, D₇ आचार्य(sic) (for
 आचार्य) D₁ 3 गगनं, D₁ गगनं, G₁ गगनो(sic) (for गगनं)
 S₁ D₁ 35712 T₁ मेघा, T₂ G₁ M₂ मेघा Cv r m g k as in
 text (for मेघो) —^b) D₉ प्रावर्षि (for प्रावृषि) S₁ D₂ 557
 चामवद्, Dt D₈ दद्वते, D₁ चामवेद्, D₁ वा अवेद्, T₂
 निर्गता T₂ G₄ M₃ निर्गतौ, T₃ गर्भति G₁ नर्दित, Cg k
 as in text (for निर्गत) —^c) D₁ यथा M₂ 3 हतो,
 Cg k t as in text (for तथा) D₃ माया (for मायर्)
 S₁ D₁ 35712 प्रवृणो (for विवृणो) —^d) T₃ अथ,
 Cg k t as in text (for अन्यथायताम्)

11 D₁ तेषां (for तयोर्) D₁ 3 चातु, D₁ T₁ (sic)
 अनुचरस्य (for अनुचराम्) D₁ T₁ 2 G₂ 4 M₁ च ये T₂ तदा
 (for तथा) —^c) M₃ 4 आगत्य (M₁ ^aता) (for आगच्छ)

तथा मायां निकुर्णौ राक्षसान्भयधानताम् ॥ १०
 मारीचश्च सुगन्धुश्च तयोरनुचरास्तथा ।
 आगम्य भीमसंकाशा रुधिरौघानासृजन् ॥ ११
 तानापतन्तौ सहसा दृष्ट्वा राजीरलोचनः ।
 लक्ष्मणं त्वमिसंप्रेक्ष्य रामो वचनमव्रीत् ॥ १२
 पश्य लक्ष्मण दुर्वृत्तान्नाक्षसान्पिशिताशनान् ।
 मानान्नासमाधृताननिलेन यथा घनान् ॥ १३

S₁ D₁ 2512 ^aनिहादा (D₂ ^aदान्), D₃ 7 ^aनिहाद, D₄ T₃
 मेघं, Cg as in text (for भीमसंकाशा) —^d) D₁
^aरौघम् (for रुधिरौघान्) S₁ (sic) D₇ ^aचन्त्, T₃ अथा,
 Cm t अवासृजन् (as in text) —After 11 Dt D₁ 68811
 S (Cm k t comm on 1 x and 3 Cg on 1 3 only)
 ins

736* सा तेन रुधिरौघेण यद्विज्ज्वाल मण्डिता ।
 दृष्ट्वा वेदिं तथाभूता सातुज कोपसयुता ।
 सहसाभिद्रुतो रामलानपश्यत्ततो दिवि ।

[G₁ reads 1 x as in Dt also —(1 x) Dt D₈ T₁
 ता (for सा) Dt D₈ वेदिं (D₈ ^aवेदिं) वाक्ष्य सगुहिलो (for the
 post half) —Dt D₈ 89 T₃ G₁ 5 M₂—4 om 1 2 —(1
 3) D₁ ^aद्रुता (for [अ] मिद्रुतो) G₁ ताज (for तान्) G₂ तथो
 (for ततो) D₉ तावपश्यत् तपि हि (for the post half)]

12 ^a) G₂ [अ] पत्तौ (for [अ] पतन्तौ) S₁ D₁ 35712
 स तानापत (D₁ 2 ^aवेत्तौ दृष्ट्वा —^b) S₁ D₁ 35712 रामो
 (for दृष्ट्वा) —^c) D₉ त्वथं, G₁ च हिं, M₂ चापिं, M₃
 तमभिप्रेक्ष्य (for त्वमिसंप्रेक्ष्य) S₁ D₁ 3571^a उवाच लक्ष्मण
 वाक्य —^d) S₁ D₁ 3571^a निर्वर्ष्य (D₂ ^aव्यधा [sic])
 प्रहसन्निव D₁ इत्यर्थं प्रहसन्निव, G₁ छतिमात्रायवोदयौत्

13 ^a) S₁ D₁ 35712 दुर्वृत्त (for दुर्वृत्तान्) —^b) G₄
 भीमविव्रमात्, Cg as in text (for पिशिताशनान्) S₁ D₁ 3571^a
 राक्षसापसद मया —^c) S₁ D₁ 12 मानवेन समाधृतम्
 D₁ 37 मानवाश्च (D₁ ^aचौ [sic]) समाधृतम् (D₁ marg gloss
 मनुस्तु ^aवैवस्वत तदैवतमक्ष मानवाश्च), D₉ पावनाद्यममाधृतान्,
 Ck t as in text (for ^a) —^d) S₁ D₁ 35712 तृण G₁
 हनान् (sic) (for घनान्) —After 13 S₁ (marg) Dt
 D₁ 68 T₃ (Ct comm on 1 x) ins

737* कविष्यामि न सदेहो नोत्सहे हन्तुमीदृशान् ।
 इत्युक्त्वा घचन रामश्रापे सधाय वेगवान् ।

[(1 2) T₃ वीर्यवान् (for वेगवान्)]

On the other hand G^a M₁ ins

738* एवं यदन्त त दृष्ट्वा धनुःप्रवरपाणिनम् ।
 बालोऽयमिति विज्ञाय तमनाद्वय दुर्मनी ।
 निशामिप्रस्य ता वेदिं (M₁ ^aवेदिं) सप्तान्भयधानताम् ।
 तातुर्द्विष्य त्वरन्नाश्रयमायम्य धीर्यवान् ।

मानवं परमोदात्मन् परमसाक्षरम् ।
चिक्षेप परमकुद्धो मारीचोरामि राघवः ॥ १४
स तेन परमाक्षेप मानवेन समाहृतः ।
संपूर्णं योजनशूनं क्षिप्तः मागमंघ्रये ॥ १५
विचेतनं विघूर्णन्तं शतिघृष्टरलीडितम् ।
निग्नं दृश्य मारीचं रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥ १६
पश्य लक्ष्मण शीतेषु मानवं धर्ममहितम् ।
मोहयित्वा नयत्येनं न च प्रार्णयिष्यते ॥ १७
इमानपि बधिष्यामि निर्घृणान्दुष्टचारिणः ।
राक्षसान्पापकर्मस्थान्पद्मान्पुत्रिराशुनान् ॥ १८

इति श्रीरामायणे बालराष्ट्रे एकोनविंशः सर्गः ॥ २९॥

विगृह्य सुमहास्रमाश्रेयं रघुनन्दनः ।
सुनाहूरामि चिक्षेप स निद्रः प्रापतद्भुवि ॥ १९
शेषान्पाप्यमादाय निजवान महायशः ।
राघवः परमोदारो मृतीनां मुदमात्रहन् ॥ २०
स हन्ता राक्षसान्पान्यजन्मात्रघुनन्दनः ।
श्रुतिभिः पूजितस्तत्र यथेन्द्रो विजये पुरा ॥ २१
अथ यत्र समाप्ते तु मिथ्यामित्रो महामुनिः ।
निरीतिरा दिशो दृष्ट्वा काङ्क्षन्मिदमब्रवीत् ॥ २२
कृतार्थोऽपि महाबाहो कृतं गुण्यचस्त्वया ।
मिद्विश्रममिदं मयं कृतं राम महायशः ॥ २३

14 " D: पातनं (for मानवं) Ct परमोदार (as in text) ॥ Ck उदार श्रेष्ठ । ॥ S: S: 12 न मनो (S: मुने) परमोद्गमम्, D: 1.7 न मनो परमोद्गमम्, D: स मन्ये एवंतो द्रमम् —^d) S: D: 1.7 १० नये, D: 1.7 १० नये (for मान्वरम्) —^d) D: परम, T: 2 ममरे (for परम)

15 " D: (marg gloss) मम्यक् बलकण्ठेन समाहृत, D: G: M: ममाहृत, T: स मोहित (for ममाहृत) D: पावनेनोरि (after corr °वा) बहिर —^d) D: 12 संयुय, T: मय्ये (for मय्ये) T: नये (for नय)

16 " D: 2.7 विचेतन D: अचेतन, G: विचेतन, Cm g t as in text (for विचेतन) D: व्यर्णनं ॥ Cm t सत षट् विघूर्णमानं । ॥ —^d) S: 1.7 (for बल) S: D: 1.7 १० 12.12 T: G: M: न्यादित (for मीडितम्) —^d) T: प्रेक्ष्य, Cg t t as in text (for दृश्य) S: D: 1.7 १० 12 मारीच विह (D: °हो) ॥ दृष्ट्वा

17 " S: D: 2.7 शीताश्रं, Cm t as in text (for शीतेषु) —^d) D: मानव (for मानवं) S: D: 12 शीतित, D: D: 1.7 Ct मद्रु (for धर्ममहितम्) —^d) G: होमयिया (by metathesis) (for मोहयित्वा) S: D: 1.7 १० 12 [अ] नयद्वर —^d) S: D: 1.7 १० 12 व्ययोजयत्, D: विजययत्, D: 7 Cm व्य (D: वि sic) गुण्यत, D: निगुण्यते, Ct as in text (for विगुण्यते) D: (marg gloss) घनमानवास्त्रं पनं मार्गवं मोदयिवा नृमनयध पर मार्गं विजययत्

18 " S: D: 1.7 १० 12 इमान्पु निहिव्यामि —^d) D: काम, D: 2.7 पारकाणि (for दुष्टचारिण) D: सुराद् प्रहृष्टाह —^d) S: 1.7 न्यात् (for न्यात्) —After 18, D: D: 1.7 ins :

739* इत्तुक्त्वा लक्ष्मण चापु लायव त्वां पत्रिव ।

19 " ॥^d) T: प्रगृह्य, G: 2 M: 2 Cg संगृह्य (for विगृह्य) S: D: 1.7 १० गृहीवास्त्रमाश्रेय, D: स तु गृहीवा चापय,

D: 7 म (D: सं) गृहीवास्त्रमार्ग (for °) S: D: 1.7 १० विक्षेप, D: 12 विक्षेप (for आश्रेय) D: 1.7 T: 2 G: 2 M: 1 संगृह्याद्यं ततो रामो न्यात्माश्रेयमद्रुव (G: M: 1 युत्तम) ॥ Cg अद्रुव यथा तथा विक्षेप । ॥ —^d) D: सुनाहूरामि (sic), G: सुनाहूरामि (for सुनाहूरामि) S: D: 1.7 गृहीवा बलमि ग्याने (D: °न), D: 2 सुनाहोरेतमि द्रुव, D: 7 सुनाहोरामि म (D: न) द्रुव, D: 12 गृहीवा बलमि ग्याने (sic) —^d) M: हत (for निद्र) D: 2 च (for द्र) S: D: 1.7 सुनाहूरामि पश्यद्वि

20 " D: 12 दामाद्, Cg as in text (for दामाद्) S: D: 1.7 12 वाप्येन तु (D: 2 च) तान्दामाद्, D: वाप्येन तत दामाद्, D: दामात्तत (sic) तु तान्दामाद् —^d) S: D: 1.7 12 निद्रागान्, M: मद्राग (for महायशः) —^d) S: D: 1.7 १० 12 राम तनय (D: °सुप, D: °मय्य) मद्राग —^d) G: आदरद्, M: (after corr sec m) आदरद् (for आदरद्) S: D: 1.7 १० 12 मुनय प्रत्यययत्

21 " T: हन्ता (sic) (for हन्ता) —^d) D: रुनि राक्षानां (for रघुनन्दन) —^d) T: मम्यक् (for मय्य) S: D: 1.7 १० 12 कपित्थ प्रापतान्द्रा —^d) S: D: 1.7 १० 12 T: G: विनयी (for विजये) D: पुर, D: 12 पुरा (for पुरा) —After 21 M: ins l 45 47 of 742* with v l जयेति for जयेन in l 46

22 " M: तमिन् (for अथ) S: D: 1.7 १० 12 यज समाहृत, D: यज (sic) (for यजे समाहृत) D: 12 वा, M: [अ] ॥ ॥ (for द्रु) —^d) M: महायशः, M: महायशः (for °सुनि) —^d) S: D: 1.7 निरीतिका, D: निरातका, D: निरुत्तका, D: निरुत्तका, D: (before corr as in text) निरीतिका, D: निरुत्तका, D: निरुत्तका, all Cs as in text (for निरीतिका) S: D: 1.7 १० 12 निरी (for निरीति) D: 12 निरुत्तका निरी दृष्ट्वा, M: दृष्ट्वाश्रमं कृतशेम

23 " G: [ऽ] ह (for ऽमि) M: कृतो राम (for महायशः) —^d) T: गुण्य, Cm k.t as in text (for सखं)

Ś1 D1 3 5 7 9 12 सिद्धाश्रमनिवासः (D9 °सी) ना, D2 वनप्रस्थ
निवासाना —^d Ś1 D1-3 5 7 9 12 क्षेमः, Dt D6 8 M4 वीर
(for राम) Ś1 D1 12 महात्मना, D1-3 7 9 महाबल (D2
°ल), M2 9 महायशः (for °यशः) —After 23 Dt D6 8
ins

740* स हि राम प्रशस्यैव (Dt °व) ताभ्या सध्यामुपागमत् ।

On the other hand, Ds 13 ins Dn 13 ins after 742*

741* अथ दिह्य निशाचरमण्डलं

घननिभ शुभमे रघुनन्दन ।

तिमिरजालमतीव सुदुःसहं

दिनकरो द्वि विपुल यथाचरे ।

[(1 4) Ds प्र (marg) (for हि)]

—For sarga 29 Ñ V B D10 11 13 subst

742* { तदा च देशकालज्ञो राम तत्परात्मन ।

(1) { कालयुक्तमिदं वाक्यं विधामिन्मुखाच ह ।

(2) { भगवन्श्रोतुमिच्छामि कस्मिन्काले निशाचरो ।

{ मया तौ प्रतिपेक्ष्यौ यज्ञविभक्तौ तव ।

(3) { रामस्यैवद्वयं श्रुत्वा विधामिन्प्रादयस्तदा । [5]

{ सर्वे ते मुनयः प्रीता सप्रसंसमयावृणु ।

(4) { अथ प्रभृति राम एवं पद्मायै रक्ष तत्परि ।

{ दीक्षा गतो ह्येष मुनिर्मीनं सत्त्वपिप्यति ।

(5^{ab}) { तेषामेतद्वचः श्रुत्वा मुनीनां भावितात्मनाम् ।

{ उद्यम्य वार्तुकं तस्या रामनग्नं सलदमग्न । [10]

(5^{cd}) { अनिद्रं पुनः पद्मायै संरक्षन्मुने व्रतम् ।

{ राक्षसागमनाकाक्षी निश्चलं स्थाणुरस्थित ।

(7^{ab}) { कालेऽप्यागते तस्मिन्प्रेष्टेऽह्नि महात्मन ।

{ स्थापयामिरे येदीं मुनयः संशियावता ।

{ मध्नायवाश्रयं विधिरन् वनं समपद्यत । [15]

(8^{cd}) { प्रजगाल च सा येदीं सोपाध्याया समाहिता ।

(9^{cd}) { अयाक्रादौ समभवत्तमस्यै महात्मनः ।

{ नीलाम्बुद्वयं गगने प्रादुर्भीषाभिगन्त ।

(10) { तथा सार्धं प्रदुर्गो राक्षसायव्यपारताम् ।

(11^{ab}) { मारीचश्च सुबाहुश्च तयोश्चानुचरानया । [20]

{ भागता वेगयन्तश्च सर्वे च धातुहस्त ।

{ य तानापततो दृष्ट्वा रक्षिर्यप्रसङ्गिनः ।

{ उदाय लदमग्नं पारयं रामो राक्षीरलेचन ।

{ पश्य लदमग्नं मारीचं महाशक्तिमन्विवन् ।

{ सर्वदानुगमयान्तौ सुबाहुं च निशाचरम् । [25]

{ ज्वालयन् मया पश्य नीलाञ्जनचपोरयो ।

(13^{cd}) { अग्निमन्त्रेण समाधूतावहितेनाग्न्युदायि ।

{ मानवाद्यैः तनो राम प्रदृष्टाक्षरिणाद ।

{ मारीचोऽपि शिषोर्वातिर्योऽयमन्त्रिणः ।

(14) { य तेन परमाद्येण मानवेन समाहृत । [30]

{ मूर्च्छं चोन्नतान् दिशो वेगमितिह ।

{ य तेन दारवेगेन मीनं तामरमृषेति ।

{ पञ्चाशच्चर्मकातो जीवेर्यमुमन्विष्य ।

(16) { विचेतसं घूर्णमानं मानवाद्यैरेतितम् ।

{ मारीचं पतितं दृष्ट्वा रामो लक्ष्मणमग्रवीत् । [35]

(17) { पश्य लक्ष्मण मारीचं मानवाद्यैः समाहृतम् ।

{ मोहयित्वा न च प्राणैर्न्ययोजयत् ।

(18) { इमास्तव्यान्हनिष्यामि सुबाहुप्रभृतीषुपा ।

{ यज्ञमाप्राक्षसाचरोराष्टुरागिमिभोजनान् ।

(19) { प्रगृह्णास्वमयो दिव्यमाशेयं रघुनन्दन । [40]

{ सुबाहूरसि चिह्नैः स चिह्नो न्यपतदुवि ।

(20) { अन्यान्पि च वायव्यमक्षमादाय राघव ।

{ निजघान स रक्षासि मुनीनां वर्षयन्मुदम् ।

(21^{ab}) { एवं हवा च रक्षासि तत्र रातो महायशः ।

(21^{cd}) { समेल्य मुनिमि सर्वैर्विधामिनादिभिस्तदा । [45]

{ पूजितोऽभिपुत्रश्चैव जयेन च सभानित ।

{ विस्मिताश्चाभवन्सर्वे मुनयो रामकर्मणा ।

{ तस्मिन्पश्ये समासेऽथ विधामित्रो महायशः ।

{ दृष्ट्वाश्रमं कृतक्षेमं काकुत्स्थमिदमग्रवीत् ।

(23) { कृताधोऽस्मि महाबाहो हृतं युवचन्सुदया । [50]

{ सिद्धाश्रमपदं चेदं शृणु सिद्धतरं हृतम् ।

[(1 1) V3 तु, B3 (marg also) [अ]य, B4 [अ]थे

(for च) B2 4 कालदेशज्ञो (by transp) (for देशकालज्ञो)

Dn 11 तान् प्रभाते विमले (for the prior half) B4 om for

सत्त्वपरात्मनः —(1 2) V1 वाग्युक्तम्, B4 वाग् (for वाग्युक्तम्)

—(1 3) V4 निशाचरो (for चरो) —(1 4) V3 ते (for तौ)

Ñ1 B3 प्रतिपेक्ष्यौ (for प्रतिपेक्ष्यौ) —(1 5) Ñ2 B3 D10 तत्,

Dn 1 [ए]व (for [ए]त्) Ñ1 V1 4 Bn-3 (B3 marg)

तथा (for तत्र) —(1 6) V2 तं तु (for प्रीता) Ñ1 V1

B1 4 Dn प्रशस्यत्, V4 ताम् (for सप्रसम्) D10 प्रसमे-

हन्यमानम् (for the post half) —(1 8) V B4 दीक्षा

(for दीक्षां) V3 [ए]व (for [ए]त्) Dn दीक्षां गतो ऽ

भगवानुनिरेष वषाण (cf 4^{cd} in Ś1) —(1 9) B1 Dn

तद्वचन (for एतद्वच) —(1 10) Dn उपगम्य (for उपगम्य)

V3 दशने D10 वार्तुकं (for वार्तुकं) Dn तत्र (for तत्रो)

V2 दशने D10 वार्तुकं (for the post half) —(1 11) V2

एव (for एव) V2 दृष्ट्वा, V3 मयम्, V4 रक्षि, B1

स संरक्षन् (by transp) (for संरक्षन्) Dn अतीतो तौ तु वा

दाय रक्षमाणौ मुने वृद्ध —(1 12) V1 रमन् (for रक्षन्)

Dn [आ]काक्षी (for [आ]काक्षी) V1 विरा (for विरान्)

Dn स्वागुदगमुपुनर्वशी (for the post half) —(1 13)

Ñ1 V1 2 4 व, Ñ2 तु V3 हि Dn न (for न) Dn अथ

करोत (for करोतु) Dn [उ]त्तर (for उत्तरान्)

—(1 14) V4 मयदः Dn मादः (for मयदः) Ñ1 मयन्

(for मयन्) —D10 m 1 15-16 Dn transp 1 15 and

1 16 —(1 15) V1 संरक्षन्, V2 संरक्षन्, V3 संरक्षन्

तु ऽपि, B1 संरक्षन्, Dn संरक्षन् दवा दवा (for the prior

half) V4 तु (for तु) V3 संरक्षन्, V1 संरक्षन्, B4 मयन् च

(for मयन्) —(1 16) Dn तत्र (for तत्र देशं)

Ñ1 V1 2 4 B1 3 (before corr as above) 4 मयन् च

(V¹ °वा, V⁴ °ग) (for सोमयाया) V¹ समादिता, B¹ समन्विता, D¹¹ सदांदिता (for समादिता) —(l 17) N¹ V¹ महात्मन (for महात्मन्) D¹¹ आद्यो च महात्मन् प्रादुपानीयकर (cf 9^{cd}) —(l 18) B¹ N¹ गन्ने (for गन्ते) V¹ प्राहृणीव गन्ति, V² B¹-a (B³ after corr as above) °लानि, V³ प्राहृणीव महात्मन्, V⁴ प्राहृणी वान्निगिभिः (for the post half) D¹¹ आचार्य गन्त मेषा यदा प्राप्तिं चापवन् (cf 10^{ab}) —(l 19) D¹¹ तसो (for तया) V¹ मुहुधानौ (for प्रमुत्तनौ) D¹¹ राधुमा ** पावना (for the post half) —(l 20) V¹ °वेपा (for तयस्व) N¹ V²-a D¹¹ वन्तु, V¹ °वत्स (for चानुवत्स) D¹¹ तयोनुवत् ** (for the post half) —After l 20 D¹¹ ins the line of 11^{cd} as in D¹ with v L स्तोरिषन् —All the above MSS (except B¹) om l 21 —(l 22) B¹ [आ]पुनी (sic) (for [आ]पुनो) V¹ स तावामरणी दृष्टा (for the prior half) V¹ स्तोरिषप्रयपिणी D¹¹ रामो तानीव गेचन् (for the post half) —(l 23) N¹ B³ (marg also as in text) D¹⁰ रामो (for वाच्य) N¹ D¹⁰ पीर, B¹ वीर (for रामे) D¹¹ प्रदक्षिण रावन् (for the post half) —(l 24) N¹ महात्मन्, B² महाभिग्रहादार, D¹¹ राधुमापनर स्रजःपुत्र (for the post half) —(l 25) V² स्व, B¹ त (for स) —(l 26) V⁴ D¹¹ एही पश्य महाभारो, D¹¹ एता बहु मया स्यत् (sic) (for the prior half) N¹ °अं जल (for [अ]जने) —(l 27) V¹ क्षन्- V² रण (for क्षये) B¹ अनिदेर (for अनिदेन) D¹¹ मानदाबन्माधुपानिलेन यया वनौ —(l 28) D¹¹ पवन (for मानव) B¹ विदं वर (for विदारत्) D¹¹ स तन पवनोदय मानवात्र सुदुर्लभ —For l 29 D¹¹ reads the line of 14^{cd} —B¹ om (hapi) l 30-33 —(l 30) D¹¹ पावनेन (for माननेन) V² s समादिन, V⁴ सप्ताधूत B⁴ समादित (for समादित) —(l 31) B¹ सपुण्य (for सपुण्ये) V² क्षितो वेगात्रैर्भूत (submetric) D¹⁰ नि क्षित सागासह्ये (for the post half) —(l 32) om l 32 —(l 33) N¹ सीवेपथु, V² [अ] निवेपथु, V³ तीरे कप, V⁴ (with hiatus) अनिदेव (for मीवेपथु) —(l 34) B¹ विचनन (for विचनेत्स) D¹¹ विपुर्णन (for घूर्णमान) D¹¹ पवन (for मानव) V² वनेदेन (for वनेदितन्) D¹¹ निचनन विपुर्णन क्षिते व पदापानि (sic) —(l 35) N¹ B³ (marg also as above) D¹⁰ व्यक्षित (for पक्षित) —(l 36) D¹¹ पवन (for मानव) N¹ V² D¹¹ मा (V² दा) जन थर्मसहित, V³ B¹ साननेन समाहि (B¹ °ह) न, V⁴ लक्षणेन समाहित D¹¹ मानवेन मया हन (for the post half) V¹ माराव चान राक्षस इत्येवसमादित —(l 37) V¹

व्योजन्, V₄ B₁ विजोयव(B₁ 'ये)द, B₂ व्योमचवत् (for व्योमचवत्) —(1 35) V₂ च (for तु) D₁₁ इमान्त् निहनिथ्यामि (for the prior half) V₄ तथा, B₁ कृषा, D₁₀ तु वा —(1 39) V₃ प्नात् (for पोरात्) B₂ om D₁₁ पाविष्ठा (sic) रतिरादनात् (for the post half) —(1 40) D₁₂ शुष्ताजमयोद्विष्यमापास्य रुनन्दन —(1 41) B₁ दुरातोरेति D₁₁ पिष्ठा सुवाद्दुनरति पातयामान भूते —(1 42) V₄ B₂ अन्धानि (for श्यान्) D₁₁ जन्मन्मन्वन् *मन्मन्मेव रुनन्त —For ins see below —(1 43) D₁₂ om (hapt) from the post half of 1 43 up to the prior half of 1 44 D₁₁ दुर (for दुग्म्) —After 1 43 D₁₁ ins the line of 20^{as} as in Śī —(1 44) Ṇ₁ B₂ D₁₀ 'न्व, V₃ 'मना (for महापरा) —M₄ ins 1 45-47, after 21 —(1 45) B₁ D₁₁ सौ (for सौर्) V₁ om, V₄ B₁ : तथा (for तदा) —(1 45) V₂ विनक्षेव V₃ जनेन च (for जनेन) D₁₁ समाह्वा, D₁₂ सन्निवन् (for समाविन्) B₂ पचाद्वन भातिन् (for the post half) —(1 47) D₁₁ तुभीताद्य (for विनिताद्य) Ṇ₁ विरिन्ता मन्मन्ने (submetric) (for the prior half) D₁₁ वेन (for राय) —(1 48) B₂ D₁₁ तु (for सृ) D₁₂ महापा (for 'परा) —(1 49) D₁₁ 13 [भा]ग्रन् (for [भा]ग्रन्) Ṇ₁ B₂ कृत् (for कृन्) —(1 50) V₂ D₁₂ कृत्तारोति D₁₁ कृत्तारोति (for कृत्तारोसिन्) D₁₀ तथा (for तया) D₁₁ चेतया (sic) (for चत्तया) —(1 51) B₁ [अ]ग्रन् (for [भा]ग्रन्) D₁₁ कृत्तयेन महावन् (for the post half) D₁₂ निदाग्रनिग्रान्नां कृन् मुखवल्ग्या —After 742* D₁₁ 13 ins 741*]

743* सुबाहरसि***ब्रामादाय राघव ।

Colophon — *Kanda name* Śī N̄s D1 10 om V B
D11 शान्तिं, Ds सन्तोष्या — *After Kanda name*, V1 ins
बालपातं — *Sarga name* Śī Ds1 राक्षसपथो, N̄ V1 s
B D10 विश्वामित्रयज्ञो (V s ०ज्ञं), V2 विश्वामित्रयज्ञरक्षणे
सुवाहुवयो, D1 विश्वामित्रयज्ञे राक्षसपथो, D2 विश्वामित्रयज्ञ
समाधि, D3 यज्ञभूमति, D4 विश्वामित्रयज्ञ सुवाहुप्रपन्न
राक्षसनिग्रहो — *Sarga no* (figures words or both)
Śī N̄s V1 s B1 s Ds 51112 om N̄s B2 s Ds 10 33
V2 35 V3 32 Dt D4 s s 11 S 30 D1 7 23 D2 24
D3 -काष्ठे मित्रनाम (dash indicates lacuna) — *After*
colophon S1 concludes with श्रीरामचन्द्राय नमः, G1 s
M1 श्रीरामाय नमः, G2 श्रीमते रामाय नमः

अथ तां रजनीं तत्र कृतार्थौ रामलक्ष्मणौ ।
 ऊपतुर्मुदितौ वीरौ प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥ १
 प्रभातायां तु शर्वर्या कृतपौर्वाह्निकक्रियौ ।
 विश्वामित्रमृषांथान्यान्सहितावभिजगमतुः ॥ २
 अभिवाद्य मुनिश्रेष्ठं ज्वलन्तमिव पावकम् ।
 ऊचतुर्मधुरोदारं वाक्यं मधुरभाषिणौ ॥ ३
 इमौ सौ मुनिशार्दूल किंकरी समुपस्थितौ ।

30

1 °) Ś1 Ñ V B D10 13 तौ; Ck as in text (for तौ).
 D11 वीरौ (for तत्र) —^b) Ñ1 कृतयो; V4 D13 कृतास्त्रौ, Cg
 as in text (for कृतार्थौ) Ś1 D1-3 5 7 11 12 रघुनन्दनौ (for
 रामलक्ष्मणौ) —^c) D11 सुतौ (sic) (for मुदितौ). V1
 B3 (m. as in text also) तत्र; B4 वी* (for वीरौ) D2 3 7
 उचतुर्मधुर वाक्यं —^d) T1 G1 कृतार्थेन, Cg as in text
 (for प्रहृष्टेन) Ñ V B D10 13 मुनिभिः प्रतिपूजितौ.

2 °) Dt प्रभात्याः, Ñ1 V3 च (for तु) B4 चर्या
 (for शर्वर्या) —^b) Ñ V B D10 M1 4 -पूर्वाह्निक- (for
 पौर्वाह्निक) Ś1 कृत्वा स्नानमरिन्दमौ; D1 3 7 कृतपौर्वाह्णिक (D1
 °च)व(D3 °म [sic])रिन्दमौ, D2 5 12 कृत्वा शौचमरिन्दमौ,
 D4 9 T3 G1 3 M2 3 शौचं कृत्वा (D4 T3 कृत्वा शौचं [by
 transp.] महावह्निः (D4 समाहितौ); D11 कृतपूर्वाह्निकौ तदा;
 T2 G2 कृतपौर्वाह्णिकक्रियां. —^c) D4 सुनीय (for
 शर्वरीय) D9 [अ]न्यत् (for [अ]न्यात्). Ñ V B D10 13 M4
 राघवाय; D9 समेतान्; G4 सदैतान्; Cg k as in text (for
 सहितान्) Ñ V B D10 13 अभ्य (D13 °भि)व (V3 B1 °ने)-
 दतां, G4 M1 उप°; Cmt as in text (for अभिजगमतुः).
 Ś1 D1-3 5 7 11 12 अभ्यवादायतां गत्वा(Ś1 तत्र) विश्वामित्रं
 महामुनिं.

3 Ś1 D1-3 5 7 12 transp. 3 and 4. —^a) Ñ V B1-3
 D10 11 13 मुनीन्सवांस; B4 सुनीय*;* T3 महामानं, M4 नरधेष्टौ;
 Cmt k as in text (for मुनिश्रेष्ठ) —^b) Ñ1 V1 3 4 B1 2 4
 D1 13 तांश्च (V4 तांस्तांश्च) तावमरघुनी, Ñ2 B2 (marg
 also as in B1) D10 तांश्च तौ परमरघुनी; V9 तथा तानमरघुनीन्;
 M4 मुनिं ज्वलिततेजसं. —For 3^a), Ś1 D1-3 5 7 12 subst. :

744* एवं तौ हृष्टवदन्तौ मुनिं ज्वलन्तेजसम् ।

[D2 3 °मन्यौ (for हृष्टवदन्तौ) D2 5 -तेजसौ (for -तेजसम्)]
 —^c) Ñ V B D10 11 13 मधुरोदारः; Dt D1-3 5 7 12 13
 परमोदारः(D1 °री) —^d) G4 मधुरभाषिणं, Ñ V B D10 11 13
 भाषिणी रघुनन्दनी. Cg. मधुरोदारोऽनी हेतुः मधुरभाषिणा
 विभि. Cg

4 Ś1 D1-3 5 7 13 transp. 4 and 3. —^a) G4 उभौ

आज्ञापय यथेष्टं वै शासनं करवाव किम् ॥ ४
 एवमुक्ते ततस्ताभ्यां सर्व एव महर्षयः ।
 विश्वामित्रं पुरस्कृत्य रामं वचनमब्रुवन् ॥ ५
 मैथिलस्य नरश्रेष्ठ जनकस्य भविष्यति ।
 यज्ञः परमधर्मिष्ठस्तत्र यास्यामहे वयम् ॥ ६
 त्वं चैव नरशार्दूल सहास्माभिर्गमिष्यसि ।
 अद्भुतं च धनरत्नं तत्र त्वं द्रष्टुमर्हसि ॥ ७

(for इमौ) Ś1 तौ, V1 3 D3 11 12 T1 2 स्तौ; V2 4 B1 4
 D3 12 13 द्वौ; B2 चो; B3 (m. as in B1 also) त्वा; Dt D1 3 5
 G1 3 4 M2 3 Cg k t स्म, D1 ते, D2 च, T3 स (sic) (for
 सौ). B3 (m as in text also) नर- (for मुनि-) V4
 मुनिशार्दूलौ. —^b) Ś1 Dt D1-3 5 7 11 12 14 T1 2 G1 2 4 M1-3
 समुपगतौ; Cg as in text (for समुपस्थितौ). Cg Ck:
 उपागतौ स आगतवाभूव । Cg V1 ब्रूहि किं करवावहे. —V1
 reads 4^{cd} in marg —^c) V1 आज्ञापय; D3 आज्ञापनं (for
 आज्ञापय) Cg यथेष्ट (as in text). Ś1 D2 3 5 7 9 ते; Ñ
 V2-4 B2-4 D1 10 13 T3 M4 नो; B1 न; D11 om (for वै).
 V1 स्वधर्मं तु; Dt D6 8 मुनिश्रेष्ठ (for यथेष्ट वै). —^d) Ñ V B
 D10 13 पुनः किं; D1 शास किं (sic), G1 शाधि किं (for शासनं).
 Ś1 च., V1 3 ते (for किम्). Ñ1 V2 4 B2 3 (m also as
 in Ñ2) D10 G1 करवावहे; Ñ2 B1 4 करवावहे; Dt D3 G1 2
 करवाव किं; D1 करवावद- (sic) Cg as in text (for d).

5 °) Ñ V1 3 4 B1 D10 उत्तमः; V2 उत्कला, Ck as
 in text (for उक्ते) Dt D4 5 9 T3 G1 3 M2-4 तयो-
 र्वाक्ये (D6 T3 °वय); T2 वचनाभ्यां (for ततस्ताभ्यां).
 Ś1 D1-3 5 7 11 13 भुवतोस्तु तयोरेवं. Cg Cmt तयोरिति
 ताभ्यामित्यर्थे. Cg —^b) M4 एते (for एव) M3 मुनीधरा-
 (for महर्षयः) Ñ V B D10 13 कपयस्ते(Ñ2 °स्तु) तपोधना.
 —In B3, 5^{cd} and 6^{cd} are repeated within brackets
 after 6 —^c) D2 पुरस्त्वा. —D9 reads 5^d-6^e in marg.
 —^d) Ś1 D1-3 5 7 11 13 M4 राघवं(M4 °वौ)वाचयम् (for
 रामं वचनम्). Ś1 G4 अग्रवीत् (sic) (for अब्रुवत्).

6 D9 reads 6^{abc} in marg (cf v1 5). —^a) D13
 मिथिलस्य, Ñ V B D10 13 रघुः; D11 नरधेष्टय (for नरधेष्टौ).
 —^b) D13 महामनः; M4 महर्षिमात्र (for भविष्यति). —^c)
 D13 M4 भविष्यति महायज्ञः. —^d) D13 T3 G2 4 M1 य (M1
 inf. lin. इ also)य; Cg तस्य (for तत्र). T3 यात्रेमहे (sic)
 (for यात्रामहे). Ś1 Ñ1 V B1 2 4 D1-3 5 7 13 यास्यामस्तत्र
 वै वयः; D11 धनरत्नं महाद्भुतं. —After 6, 5^{cd} and 6^{cd} are
 repeated within brackets in B3.

7 D11 om. 7^{ab}. —^a) Ś1 Ñ V B D1-3 5 7 10 12 13
 [अ]भि; Cmt as in text (for [व]व). M1 नशार्दूल, M4

तद्वि पूर्व नरश्रेष्ठ दत्तं सदसि दैवतैः ।
अप्रमेयबलं धोरं मखे परमभास्वरम् ॥ ८
नास्य देवा न गन्धर्वा नासुरा न च राक्षसाः ।
कर्तुमारोपणं शक्ता न कथंचन मानुषाः ॥ ९
धनुस्तस्य वीर्यं हि जिज्ञासन्तो महीक्षितः ।

न शेकरारोपयितुं राजपुत्रा महानलाः ॥ १०
तदनुर्नरशार्दूल मैथिलस्य महात्मनः ।
तत्र द्रक्ष्यसि काकुत्स्थ यज्ञं चाद्भुतदर्शनम् ॥ ११
तद्वि यज्ञफलं तेन मैथिलेनोत्तमं धनुः ।
याचितं नरशार्दूल सुनाभं सर्वदैवतैः ॥ १२

व्य चानेन सह आत्रा यास्यस्वस्माभिरेव च —After 7^{ab}, B₃ ins

745* राजानो बहवस्तत्र गमिष्यन्ति न संशय ।

—^{cd} Ck धनुस्त्र D₁ (marg also) च वधुस्त्र, D₉ T₃ G₁ s
M₂ s Ck धनुस्त्र च (M₁ हि) D₁₁ वृनीव सहितोस्मामिस्, T₁ s
D₁₃ रत्न महाद्भुत तत्र, G₂ मल्यद्भुत धनुरत्न (for °) D₉ 11 12
G₂ s M₁ Cm g तद् (for त्व) D₁₃ तद्वधुस्त्र, G₁ तत्रैक (for
तत्र त्वं) S₁ N̄ V B D₁ (m also) s s 7 10 12 रत्न महाद्भुत
तत्र धनुस्तद् (S₁ V₂ D₁₃ 12 °स्व) द्रष्टुमर्हसि

8 M₂ om 8 —^a D₉ तच्च, D₁ यद्दि, M₂ तत्र, Cm g k
as in text (for तद्वि) —^b D₁ (m gloss) यज्ञवैर (for
दैवतै) —^c D₉ 12 अप्रमेयं धनुरत्न (for °) D₉ 11 12
चले) —^d S₁ D₂ s s 12 मिथे, B₂ D₁₁ मिथे, D₁ जयो,
D₇ मैथिल (hypermetric), Cg as in text (for मखे)
—For 8, N̄ V B₁ s 4 D₁₀ 13 subst while B₂ subst
l x for 8^{ab} and ins along with D₁ l 2 after 8

746* प्राग्दत्तं शिलं तत्तस्य न्यामभूतं महद्भुत ।
देवास्तु ते तदा बुद्धे वृत्ते दैवै संगतवै ।

[(1 x) V₄ तस्य हि किल D₁₃ नृपतेस्तस्य (for किल तत्तस्य)
—(1 2) V₁ 2 B₃ s D₁₀ 13 तथा D₁₁ महा (for तथा)]

9 °) S₁ D₂ 12 तत्तु, N̄ V B D₁ 7 10 13 M₂ तत्र, D₂ s
तत्र, D₉ यस्य, D₉ तस्य, D₁₁ न तद्, Cg k t as in text (for
नास्य) B₁ स (for second न) —^b S₁ D₁ 3 s 7 11 13
पञ्चमा (for राक्षसा) N̄ V B₁ s D₁₀ M₂ न (B₁ स)
यशोरगराक्षसा (V₄ °पञ्चमा), B₂ न यज्ञा न च पञ्चमा —^c
D₁₄ G₄ आरोपणे (sic), Cg k t आरोपण (as in text)
—^d D₉ केचन च (for कथंचन) —For 9^{cd}, S₁
D₁ s s 7 11 13 subst

747* अविज्य बहुमानस्य शक्ता किमुत मानवा ।

[D₁—3 °आयस्य (for आनस्य) D₂ 3 मानुषा (for मानवा)
D₁ किमु त मानवा नना (for the post half)]

while N̄ V B D₁₀ 13 M₂ subst

748* समाधर (D₁₃ °रोप)यितुं शक्ता कुत एतेनरे जना ।

10 °) S₁ D₂ धनुषा, Cg as in text (for धनुषस्य)
S₁ D₁ 3 s 7 11 12 बल, M₂ तत्र (for तस्य) D₁ च D₁₄
T₁ s G₂ s M₁ तु (for हि) D₉ धनुस्त्रस्य वीर्यं हि, D₁₀ 13
M₂ धनुष साता तस्य —^b N̄ V B D₁₀ 13 M₂ मरायिषा
(for महीक्षित) S₁ D₂ 12 जिज्ञासति महीपति —^c N̄ V

B₂—4 D₁₀ 13 M₂ आ (N₂ वा) तोलयितुम्, D₁ आलोकयितुं
(for आरोपयितुं) —^d D₁ G₁—3 M₁ s राजपुत्र N̄ V B
D₁₀ 12 अपि (V₄ समा) पर (B₁ D₁₁ तोल)यितुं कुत, D₁
(m also as in text) M₂ कुत पूरयितुं बलात्; D₁₃ अप्या-
रोपयितुं कुत

11 G₂ om (hapl) 11^b—12° S₁ D₁—3 s 7 12 transp.
11 and 12 —^b D₁₃ शक्रस्य, M₂ जनकस्य (for
मैथिलस्य) M₂ महीपते (for महामन) D₉ सुनाभ सर्व-
दै (दैवतै) (= 12^a) —^c S₁ D₂ 12 मिथेः N̄ V₁—3 B
D₁ 3 7 10 11 13 M₂ यज्ञे, V₄ यज्ञ, Cm g t as in text
(for तत्र) D₂ द्रक्ष्यामि (for द्रक्ष्यसि) D₇ शार्दूल (inf
lin also as in text) (for काकुत्स्थ) —^d N̄ V B
D₁—3 7 10 13 M₂ सहास्माभिरितो (V₂ °रतो, D₂ °स्ततो) गत,
D₁ D₂ 6 यज्ञ च परमाद्भुत —After 11 N̄ V B D₁ 3 7 10
11 13 M₂ ins

749* तथेयुस्त्वा तनो राम प्रयातुमुपचक्रमे ।
विशामित्रपुरोहितैर्महर्षिभिर्हृदार्षी ।

[(1 x) D₁ युरोवायव (for तनो राम) N̄ 1 प्रस्थानम् (for
प्रयातुम्) D₁ (m also) प्रस्थान समरोचयन् (for the post
half)]

12 G₂ om 12^{ab} (cf v l 11) N̄ V B D₁₀ 11 13
M₂ om 12 S₁ D₁ 3 s 7 12 transp 12 and 11 —^a
S₁ D₁—3 s 7 12 तेषा D₂ चेति (for तेन) —^b S₁ D₂ 3 s 7 12
मैथिला (S₁ °या, D₂ 12 मिथिला, D₂ मिथीना) धनुस्त्रम्, D₁
मिथिलाना धनुस्त्रम् (hypermetric) (नरोत्तम also in
marg and gloss तै मैथिले यज्ञाना फल तदनुस्त्रमेव प्राप्त
—^d S₁ D₁ 3 s 7 12 दुर्लभ, D₂ * * * (for सुनाभ) D₁
G₂ M₂ s (after corr sec m as in text) Cv दे (दै)वतै,
D₁—3 7 9 पार्थिवे, Cm g t as in text (for दैवतै)
C₂ सर्वदैवतभ्यः, C₂ सर्वदैवतैः दत्तस्थितिकम् ।
—After 12 D₁ D₂ 6 s 9 12 T G₁ M₁ s all Cs ins

750* आयागभूतं नृपतेस्तस्य वेदमनि रायव ।
अचितं विविर्गैर्नैषैर्पूषेभ्यश्चागमनाभिभिः ।

[(1 x) D₉ °भूते T₃ आश्वम् Cv as above (for
आयागभूत) C₁p न्यासभूतं नरपते (for the prior half)
Cv आयागभूतं धनुर्मेखेयु प्राधान्यान्वाकृतं धनुरायाग तन्त्रम् ।
—(1 2) T₃ मान्द्वर् G₁ पूषैर् (for गपैर्) D₂ मान्द्वैश्चागह,
D₂ T₂ °आयस्य; D₂ पूषेयस्य (for पूषेयागह)]

एवमुक्त्वा मुनिवरः प्रस्थानमकरोत्तदा ।
 सर्पिसंघः सकाकुत्स्थ आमन्त्र्य वनदेवताः ॥ १३
 खस्ति वोऽस्तु गमिष्यामि सिद्धः सिद्धाश्रमादहम् ।
 उत्तरे जाह्नवीतीरे हिमवन्तं शिलोचयम् ॥ १४
 प्रदक्षिणं ततः कृत्वा सिद्धाश्रममनुत्तमम् ।
 उत्तरां दिशमुद्दिश्य प्रस्थातुमुपचक्रमे ॥ १५
 तं व्रजन्तं मुनिवरमन्यगादनुसारिणाम् ।
 शकटीशतमात्रं तु प्रयाणे ब्रह्मवादिनाम् ॥ १६

13 °) M३ उक्तो, Ck t as in text (for उक्त्वा) —^b)
 S१ D१ 12 सम(S१ चम[sic])सोचयत् (for अकरोत्तदा)
 —^c) G१ वृषस्कंघ (for सर्पिसंघ) S१ D१ 12 महर्षिसंघ
 काकुत्स्थमामन्त्र्य नरदेवता —For 13 N̄ V B D१-३ 7 10 11 13
 M३ subst

751* विश्वामित्रोऽथ भगवानामन्त्र्य वनदेवता ।
 उवाचेदे ततो वाक्यं यियातु[मिथिला] प्रति ।

[(1 1) V३ [S]ति (for 5५) D३ मन्त्र्य —(1 2) D१३
 विवाच (sic) (for उवाच) D१-३ 7 M३ नदा (D३ तथा also)
 (for प्रति) D१३ तदाश्रमपद प्रति (for the post half)]

14 °) S१ V३ B१ D१ 12 गमिष्याम —^b) S१ N̄ V१-३
 B D१ 7 10-13 सिद्धा, Ck t as in text (for सिद्ध) S१
 D१ 13 वयं, N̄ V१-३ B D१ 10 11 13 M३ हत (for अहम्) V३
 सिद्धाश्रममुपादिता (sic) —S१ om 14^{cd} D२ ३ 7 transp
 14^{cd} and 15^{ab} —^c) N̄ V B D१-३ 7 10 11 13 M३ तीर,
 D१ 12 -ञ्च, Cg as in text Ck -कूले (for -तीरे) —After
 14 Dt D१ 8 G३ Ms (sec m) ins

752* इत्युक्त्वा मुनिपार्श्वे कौशिक स तपोधन ।

15 Dt D१ 8 om 15^{ab} D२ ३ 7 transp 15^{ab} and
 14^{cd} —^a) T३ तत प्रदक्षिण (by transp) N̄ V B
 D१ 10 13 M३ उपायुल, D१३ उपायम्य, D१३ अत कृत्वा (for
 तत कृत्वा) —^b) N̄ V B D१ 10 11 13 M३ तत सिद्धाश्रमं
 मुनि, D१ सिद्ध सिद्धाश्रमादह —^c) B३ D१ दिदिम्य (sic)
 S१ N̄ V B D१ 10-13 आख्याय, D१-१७ M३ आश्रित्य (for
 उद्दिश्य) —^d) S१ V३-४ B१ D१ ३ ५ 7 11 13 T१ ३ G३ पयायम्,
 B३ ४ D१३ प्रस्थानम्, G३ *भूमि (for प्रस्थातुम्) S१ D१ 13
 *चम्रु, Cm उपचक्रमे (as in text)

16 °) D१३ T१ ३ G३ M३ प्रयातं (for व्रजन्तं) —^b)
 D१ 10 11 T१ G१ ३ M३ ३ Cg अन्ययाद्, Cm as in text
 (for अन्ययाद्) T३ अन्य***यादिनां —^c) M३ शक* (for
 शकटी) D१ ३ T१ G१ ३ M३-३ च (for तु) —For 16
 S१ D१ 13 subst, B३ (m) ins after 754*

753* तं प्रयाता मुनिवरा बहुवो रेयुणागद्वरा ।
 शकटीशतमात्रेण निषामित्रपुरोगमा ।

[(1 1) D१ 13 गच्छते (for वरतो) B३ रेयुणाग-]

मृगपक्षिगणाश्चैव सिद्धाश्रममनिवासिनः ।
 अनुजमुर्महात्मानं विश्वामित्रं महामुनिम् ॥ १७
 ते गत्वा दूरमध्वानं लम्बमाने दिवाकरे ।
 वासं चक्रुर्मुनिगणाः शोणाकूले समाहिताः ॥ १८
 तेऽस्तंगते दिनकरे स्नात्वा हुतहुताशनाः ।
 विश्वामित्रं पुरस्कृत्य निपेदुरमितौजसः ॥ १९
 रामोऽपि सहसौमित्रिर्मुनीन्तानभिपूज्य च ।
 अग्रतो निपसादाथ विश्वामित्रस्य धीमतः ॥ २०

—For 16 N̄ V B D१-३ 7 10 11 13 M३ subst

754* युक्त ब्रह्मरथानां तु शतमात्रं तत क्षणात् ।
 ययौ मुनीनां भाण्डानि समारोप्यानुयायिनाम् ।

[(1 1) D१ 13 च (for तु) V३ D१३ हि तत्, B१ तु तत्, D१
 D१ ततोपि, D२ ३ 7 समतत, M३ ततोन्वयाद् (for तत क्षणात्) D१
 (m gloss) ब्राह्मणानां रथा ब्रह्मरथा तेषां शतमात्रं किन्वाप्यधिक
 —(1 2) N̄ V B D१ 10 13 ययुः, M३ तेषां (for ययौ) D१०
 [अ]नुयायिनां D१ समारोपितुवाजिना (sic) (for the post
 half) —After this B२ (m) cont 753*]

17 °) D३ *भाण्ड (for गणाश्च) V३ तत्र (for चैव)
 —^c) S१ D१३ 12 *भाण, Dt D१ *माने, D१ *बाहु (for
 महामानं) N̄ V B D१-३ 7 10 13 M३ प्रयात(D३ *यातु)मनु
 (M३ *मुप)जमुस्ते(D१३ *स्ते) —^d) Dt D१ 8 तपोधनं
 (for महामुनिम्) —After 17 Dt D१ ६ 8 T१ ३ G२-४
 M३-३ Cg k t ins

755* निवर्तयामास तत पक्षिसवाम्नुगानपि ।

[G३ missing up to या D१ M३ ३ नहृ, (for मृगान्) Dt
 D१ 8 G३ सन्निपद्य सपक्षिण (for the post half)]

18 °) M३ (after corr sec m as in text) चक्रे
 (for चक्रुः) D२ ऊपुस्ता रजनीं तत्र —^d) N̄ V B D१ 10 13
 M३ शोणतीरम्, D१ ३ ४ ७ ११ 12 14 G१ शोणकूले (D१ *कूले),
 D२ शोणक* (sic) (for शोणाकूले) Cg शोण पुनर्द स
 एव शोणयस्य व्यपदिशति, Ck t also gloss similarly Cg
 N̄ V२ D१ 13 T३ *गता, N̄ B१ D१ ३ ४ D१० M३ उपाश्रिता, V१ ३
 B२ ३ (m also) उपागत, V३ समस्ता (for समाहिता)

19 °) N̄ V B D१-३ 7 10 11 13 M३ गते त्व(D१ ३ ७ ११ चा)
 स्त (for तेऽस्तंगते) —^b) S१ D१ 11 13 ततो, N̄ V१ ३ B१ ३ ४
 D१ 7 10 छाता, D२ सर्वे, D२ illeg D१३ प्रावत् (for छाया)
 S१ D१ 11 13 [S]विनहुताशना, V३ कृतवृताशना, V३ वैव
 कृताशना, D२ छाता हुताशना, D१० *हुताशना Cg as in
 text (for *) —^d) D१० न्यपेदुर् (for निपेदुर्) S१
 D१ 11 13 धरणीकले, V१ B२ ३ M३ *स, G३ अतितेजस्य (for
 अमित्रीयम्)

20 B१ om 20-22^{ab} D१० om 20^{ab} —^a) D१ हि (for
 अपि) V३ राम सौमित्रिणा सार्धम् —^b) D१३ आभ्यर्च्य

अथ रामो महातेजा विश्वामित्रं महामुनिम् ।
पप्रच्छ मुनिशार्दूलं कौतूहलसमन्वितः ॥ २१
भगवन्को न्ययं देशः समृद्धवनशोभितः ।

श्रोतुमिच्छामि भद्रं ते वन्तुमर्हसि तत्त्वतः ॥ २२
चोदितो रामवाक्येन कथयामास सुव्रतः ।
तस्य देशस्य निखिलमृषिमध्ये महातपाः ॥ २३

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे त्रिंशः सर्गः ॥ ३० ॥

(sic) M^s अभिवाद्य, Cg as in text (for अभिपूज्य) S₁ D₅ 12 ऋषीस्तामसमपूजयत्, N̄ V B₂-4 D₁-3 7 10 11 M^s अभिवाद्य तपोधनान् (B₂ °न) —° N̄ V B₂ 4 D₁ 13 निपसाद्वा (N₁ °*) भितस्तस्य, D₃ असतो निपया- (sic)

21 B₁ om 21 (cf v. l 20) —° G₂ राजा (for रामो) N̄ V B₂-4 D₁ 2 7 10 M^s [अं] जलिं कृत्वा, D₃ बलिं कृत्वा, D₁₃ [अं] जलिं बद्धा (for महातेजा) —° S₁ N̄ V B₂-4 D₁-3 5 7 10-12 M^s ऋषिं तदा (D₁-3 7 11 °त), D₁ D₆ 8 तपोधन, D₁₃ मुनिं तदा (for महामुनिम्) —° N̄ V₁ 3 4 B₂-4 D₄ 10 12 T₃ M^s नरशार्दूल (for मुनिशार्दूल) —° V₂ D₁ D₃ M^s -समन्वित

22 V₂ (hapl) B₁ om 22^{ab} (for B₁ cf v. l 20) —° B₄ M^s भगवान् Ck किं नु (for को नु) Cg kt अय देश (as in text) N̄ V₁ 2 4 B₂-4 D₁-4 7 10 11 M^s कस्य देशीय, D₃ को ह्यय° (for को न्यय देश) —° M^s प्रहृद (for समृद्ध) G₂ M^s शोभन (for शोभित) N̄ V₁ 3 4 B₂-4 D₁ 2 5 7 10-13 M^s समृद्धजनसेवित —° N̄ V B₂-4 D₁-3 7 10 M^s तत्त्वेन, B₁ यत्नेन (for भद्र ते) —° S₁ D₅ 11 12 [अं] रोपत, D₁₃ रोपत (for तत्त्वतः) N̄ V B D₁-4 7 10 M^s त्वच प्व (V B₁ M^s °न) म (N₁ °*) हायुने (D₁-3 7 °पुते)

23 G₂ om (hapl) 23^{ab} —° D₁ D₃ 6 8 12 नोदितो,

Cm g as in text (for चोदितो) —° S₁ विस्तरात्, D₅ 13 विस्तर, T₃ सुव्रत, G₂ तत्त्वत (for सुव्रत) —° S₁ D₅ 9 12 त देशमखिल सर्वम् —° S₁ D₅ 12 तपोधन, G₂ M^s समाहित (for महातपा) —For 23 N̄ V B D₁-3 7 10 11 13 M^s subst

756* चोदितो रामवाक्येन तस्य देशस्य विस्तरम् ।
विश्वामित्रो महातेजा व्याहर्तुमुपचक्रमे ।

[(1 1) V₂ देशितो, B₁ चोदितो (sic) D₁-3 7 13 नोदितो (for चोदितो) V₄ विस्तर (for विस्तरम्) —(1 2) V₂ व्याहर्तुम् (for व्याहर्तुम्)]

—After 23 D₉ ins 757*

Colophon S₁ D₅ 11 13 om (cont the sarga) —Kanda name N̄ 2 D₄ 10 om V B बादि°, D₁₃ अयोध्या° —After Kanda name V₁ 3 B₁ ins बालचरिते —Sarga name N̄ 1 V B शोणतीरनिवास, D₁-3 7 सिद्धा श्रमोपासनन, D₉ सिद्धाश्रमनिवासो —Sarga no (figures, words or both) N̄ 1 V₁ 4 B₁ 4 D₃ om N̄ 2 B₂ 3 D₉ 10 34 V₂ 36 V₂ 33 D₁ D₄ 6 8 14 S 31, D₁ 7 24 D₂ 25 D₁₃ **कादे ** नीर* ** नाम सर्वे —After colophon T₃ G₁ 2 4 M^s conclude with श्रीरामाय नम, G₉ with श्रीमते रामानुनाय नम

ब्रह्मयोनिर्महानासीत्कुशो नाम महातपाः ।
 वैदर्भ्या जनयामास चतुरः सदृशान्सुतान् ।
 कुशाम्बं कुशनाभं च आधूर्तरजसं वसुम् ॥ १
 दीप्तियुक्तान्होत्साहान्क्षत्रधर्मचिकीर्षया ।
 तानुवाच कुशः पुत्रान्धर्मिष्ठान्सत्यवादिनः ।
 क्रियतां पालनं पुत्रा धर्मं प्राप्स्यथ पुष्कलम् ॥ २

31

Śi Ds 11 12 continue the previous Sarga —Before
 I Śi Di-3 5 7 9 (after I 30 23) 11-13 ins

757* शृणु राम कथा दिव्या देशस्य च समुद्रवम् ।

[D3 om च (submetric) Di 3 5 7 9 समुद्रवां]

1 6) Śi Ds 6 12 Ts यथा N V B Di 3 7 10 11 जना
 (Vs 4 B1 D10 नरा) विष (for महातपा) M3 कुश इत्यस्मि
 विद्युत —After 1⁶ Dt Ds 6 8 9 14 S ins

758* अद्विष्टव्रतधर्मेज्ज सन्नप्रतिपूजक ।
 स महामा कुलीनाया युकाया सुगुणोत्सवगात् ।

[(1 1) Ms (after corr sec m as above) न
 (for न) M3 (inf lin pr m) न (for प्रति)
 —(1 2) Dt Ds 6 सुमहात्मात् Ts स गुणोत्सवा G1 सुनर,
 G4 स गुणोत्सवम् M3 च गुणोत्सव Ds सुकाया गुणोत्सवत् (for
 the post half)]

—⁶) Śi Ds 12 स स्थि, N V B Di-3 7 10 11 13 स सुताम्
 (Di-3 7 सुताम्), Ds Gs Ms वैदेह्या (for वैदर्भ्या) Śi Ds 12
 [अ] जनययुग्रात्, Ds 'साम (by metathesis) (for
 जनयामास) —⁴) Gs Ms (after corr inf lin sec m
 as in text) सदा (for सदसात्) Ds Ts सदसाश्चतुर
 (by transp) Ds सुताम् (for सुतात्) Śi Ds 12 पुरपरम्,
 N V B Di 3 7 10 11 13 स्यात् (Vs 4 'ति Di [अ] व्यति)
 निम्नाम् (Di-3 7 पौरुषात्) (for सदसासुताम्) —Note
 hiatus between 'and' (in all MSS except in
 V1) —⁶) V1 सुताम् V4 यदास्ते V4 सुताम् (for
 सुताम्) Śi Ds 12 Ts सुतानां सुतांब (Śi 'अं) (by
 transp) —⁴) Śi Ns V 3 6 B1 2 4 Di-3 5 7 9 10 11 13
 अमुं (Śi Ds 'युत्) (Vs V 3 6 B1 2 4 Ds 'य) वसे N1
 V 3 B1 Ds 11 अ (V1 to avoid hiatus) [अ] (submetric)
 मूर्तेर (N1 [elsewhere 15 in V1] 'रस [sic]) जस Dt
 Di (after corr as in text) 11 Ts M1 2 4 Ct अ
 (M1 2 'आ) सु (Di 'यू Ts M1 'यू) रज (M1 'य) म V4
 (m also as in text) वज्ज Ds वसुम् Ds गये (for वसुम्)

2 6) Śi Di-3 5 7 11 13 महोत्साहान् (Di 'हं Di 'काद्
 [sic]) N V 1 2 4 B1 2 4 Ds 13 महामा (Vs V 3 B1
 'य) नो V4 महातपो B1 (m. also) 6 महामुनि (for

कुशस्य वचनं श्रुत्वा चत्वारो लोकसंतताः ।
 निवेशं चक्रे सर्वे पुराणां नृवरास्तदा ॥ ३
 कुशाम्बस्तु महातेजाः कौशाम्बीमरुतोत्पुरीम् ।
 कुशनाभस्तु धर्मात्मा पुरं चक्रे महोदयम् ॥ ४
 आधूर्तरजसो राम धर्मारण्यं महीपतिः ।
 चक्रे पुरवरं राजा वसुश्चक्रे गिरित्रजम् ॥ ५

दीप्तियुक्तान्) Śi N V B Di 3 5 7 10-13 दीप्तिमत (N1 V1
 B2 Ds 3 7 10 'मत Di 'मत), M3 महाभागान् (for
 महोत्साहान्) —⁶) N1 Vs-4 B D10 M3 नरायणान् (N1
 Vs 3 B2 D10 'णा), V1 विशारदान् (for चिकीर्षया) Śi
 Di 3 5 7 9 11-13 'समनुमतान् —⁶) Ds सुतान् (sic) (for
 कुश) —⁴) Śi Ds 12 धर्मिष्ठ, N V B Ds 10 12 Ms विनीतान्,
 Ds Ts धर्मिष्ठान् Ms धर्मिष्ठान् (for धर्मिष्ठान्) Śi Ds 9 13
 क्षत्रपाराग (Ds 'गान्), N V B Di 3 7 10 11 13 Ms युत N1
 B2 Ds 'ति D1 साक्ष Ds 3 7 वेद'पारगान्, G1 ब्रह्म (for
 सत्यवादिन) —⁶) N V B Di-3 7 10 13 Ms प्रजानां (for
 क्रियतां) —⁶) Ds Ts 3 Gs Ms धर्म्य (for धर्म) N V B
 Di-3 7 10 11 13 Ms त्रिय (Vs 3 B1 M3 'य) ता (D1 प्रजानां)
 मिति राघवा (D1 नोदित)

3 Ds 13 om (hapl?) 3 V1 reads 3 in marg
 —⁶) N V B Di-4 10 11 Ts Gs Ms 4 विरुस्ते (Vs Ds
 'स्तद् Di Ct क्रवेत्सु (for कुशस्य) Śi Ds 13 क्रवेत्सस्य
 वच श्रुत्वा —⁶) Ds चरत्वार (by metathesis) (for
 चत्वारो) Śi Ds 13 तमिनोजम् Dt Ds 6 'सत्तमा (for
 लोकसंतता) N V B Di 3 10 11 Ms लोकपालोपमा सुता
 (B-m also सुता) —⁶) G1 6 निवेशात्, Cm gt निवेश
 (as in text) —⁴) Ds पुताणि (sic) (for पुराणां) Ts
 Gs 3 Ms 3 तथा (for तदा) Śi Ds 11 13 'कुशसूतः; G1
 चतुरश्र पृथक् पृथक्

4 6) Śi कुशाम्ब, Ct कुशावर (as in text) —⁶)
 Śi कौशाम्बीम्, Ds कौशाकीम् —For 3⁶-4⁶ N V B
 Di 3 10 Ms subst while Ds 13 subst I 2 only for 4⁶

759* पुराणायामयामासु पृथक् चत्वारि राघव ।

तथा कुशाम्ब कौशाम्बी पुरीमासवच्छुभाम् ।

[(1 1) V1 पुरा (with hiatus) (for पुराणि) Ds 4 6
 Vs 3 B1 3 (m as above) Di-3 Ms इरा तु (V1 B1
 B1 'य) (for चत्वारि) —(1 2) V1 कुशाम्ब V4 कुशाम्ब (for
 कुशाम्ब) N1 V 3 Ds कौशाम्बी; V1 कौशाम्बी Di-3 7 Ms
 आसामयच्छ, Ds 'व तां (for 'सुभाम्)]

—⁶) Ds पुशानाम् Di 3 सुः Ms तदा राम (for तु
 धर्मात्मा) —⁴) Ds कुं (for कुं)

5 6) Ts अर्धरत्नयो Dt Ds 6 Ts G1 Ms नान
 (for रम) —⁶) Dt Ds 6 महामति (for महीपति) —⁶)

एषा वसुमती राम वसोस्तस्य महात्मनः ।
एते शैलराः पञ्च प्रकाशन्ते समन्ततः ॥ ६
सुमागधी नदी रम्या मागधान्विश्रुताययी ।
पञ्चानां शैलमुत्पानां मध्ये मालेव शोभते ॥ ७
सैषा हि मागधी राम वसोस्तस्य महात्मनः ।
पूर्वाभिचरिता राम सुवेत्रा सस्यमालिनी ॥ ८

Ms वाने (for वसुद) Dt Ds नाम, Ms चैव (for चक्रे)
Ms गिरिवज Ds (m also) चक्रे प्राग्व्योतिषं पुर (= post.
half of 1 of 760*) —For 5 Śi N̄ V B D1-3 7 9-13
Gs Ms subst

760* तथाभूतैरजा वीरशब्दे प्राग्व्योतिषं पुरम् ।
धर्माख्यसमीपस्थं वसुशब्दे गिरिवजम् ।

[Śi Ds 12 transp 1 1 and 2 —(1 1) Śi एषा
(sic) D1-3 7 Ms अय (for तथा) B2 [अ]भूतैरजा B4
समुत्पेया (for [अ]भूतैरजा) V1 ची०, V2 B1 3 4 वीर, D2 वीरा
(sic) Ds राम, Gs Ms नाम (for वीरद) Ds 7 चक्रे वीर
(by transp) Ds ७ ज्योतिष, D11 ७ ज्योतिष Śi Ds 9 12
धर्माख्यसमीपस्थ (Śi "ममीयन्त") (for the post half) —(1
2) Śi Ds 9 12 प्राग्व्योतिष (Śi Ds ७) पुर चक्रे, V2 धर्माख्ये
समीप तु (for the prior half) V2 स्वय Ds 9 11 वसु (sic)
(for वसुद) B1 ३ वन, Ds ३ वन Ds गिरि D12 गिरिवज
(for गिरिवजम्)]

6 ७) Śi Ds 12 तस्य, Dt Ds 8 Ts नाम (for राम)
—⁵ Śi Ds 12 वसुदस्य —For 6⁵ N̄ V B D2 3 7 10 11 13
Ms subst while D1 ins. after 6⁵

761* देशोऽय वसुनामासीदसोरमितवत्तल ।

[D11 reads from v up to 7⁵ in marg N̄ V Ds D10
Ms ७ मानासीद D1-3 ७ नास्तीद D7 ७ नास्तीद (hyper-
metric) (for वसुनामासीद)]

—Ts reads 6⁵-8⁵ in marg — Ds यत्र (for एते)
D1-3 7 11 Ms महोच्छ्रया, Cg as in text (for शैलवरा)
—⁵ Ds प्रकाशयते Cg 12 निरुत, N̄ V B D10 13
महोच्छ्रया (for समन्तत) D1-3 7 11 Ms गिरयो भाति
मास्वरा (D11 सुरा)

7 D11 reads 7⁵ Ts 7 in marg (cf v 1 6)
—⁵ N̄ ३ स्व, D10 ७ चा, D13 ७ गमा, Cg k t as in text
(for सुमागधी) N̄ V B D1 3 7 10 12 Ms ७ चाय (B2
यत्र, B4 चाय नदी [by transp]), Ts ७ रम्य, G1
रातन् । Gs M1 ७ पुण्या (for नदी रम्या) Śi Ds 11 13 एषा
ता मागधी रम्या (D11 रम्य) —⁵ Śi Dt Ds 8 9 11 Ts 2
Gs Ms ७ मागधात्, N̄ V 1 3 4 B1 3 4 Ds 8 10 12 13 Ms मा
(N̄ Ds Ms म) गधा V2 Ds 7 मगधो, B2 D11 मागधी V2
[5] ३ धुतो, B2 G1 निरुता, Ds 7 निरुतो, D14 Ts निरुता,
Ms निरुतात् (for निरुता) V2 3 4 B2 Ds 3 7 10 11 13 Ms
यथा, V2 B1 मया, B2 यत, B3 यथा, D1 गिरा, Ds 13 भुवि,

कुशनाभस्तु राजर्षिः कन्याशतमनुत्तमम् ।
जनयामास धर्मात्मा धृताच्यां रघुनन्दन ॥ ९
तास्तु यौवनशालिन्यो रूपतयः खलंकृताः ।
उद्यानभूमिमागम्य प्राट्टपीर शतहृदाः ॥ १०
गायन्त्यो नृत्यमानाश्च वादयन्त्यश्च राघव ।
आमोदं परमं जम्बुराभरणभूषिताः ॥ ११

Cg k t as in text (for [मा]ययी) B2 (m also) मगधा
विश्रुता मया —⁵ Śi Ds 11 13 भूयता मध्ये, D1 शैल⁵ (for
शैलमुत्पाना) —⁵ Śi Ds 12 13 वन (for मध्ये) Ds ७ * व
(for मालेव) B1 मध्ये मागधशोभिते

8 Ts reads 8⁵ in marg (cf v 1 6) —⁵
Cm g t सैषा (as in text) Śi Ds 9 11 12 एते ते, N̄ V B
D1-3 7 10 13 एषा सा (B1 तु, B2 सु), Ms एषा, Ms ७ सु
(for सैषा हि) Śi V1 3 4 B1 D1-3 5 7 9-13 Gs मा (V2
D1 2 Gs म) गधा (B1 Ds [illeg] गधो), Ck t मागधी
(as in text) N̄ V1 3 4 B D1-4 7 10 Gs Ms नाम, Gs M1
रम्या (for राम) G1 सैषा वसुमती राम (cf 6⁵) —⁵
= 6⁵ N̄ 2 V B D10 राम, Ds 3 7 Ms आसीत्; D13 नाम
(for तस्य) Śi Ds 9 11 12 वसुदस्य, D1 वासारीसीत् (sic)
(for वसोस्तस्य) D1 (gloss) एषा तस्य वसो पुरी चासीन्म
(हायन्) —⁵ Gs Ms ७ पूर्वाभिचरिता Ts G1 9 Ms ७ वीर
(for राम) Śi Ds 12 पूर्वाभिवसितास्तेन, N̄ V B D10 11 13
पूर्वमभ्यामिता ते (D11 ७ स्ते, D13 ७ ते) न, D1-3 7 Ms पूर्व
(D1 7 ७) राजर्षिभिर्भुक्ता (Ds ७ युक्ता, Ms ७ युक्ता), Ds पूर्व
विवासितास्तेन —⁵ Śi Ds 9 ७ जा, D11 ७ चित्रा, Cg k t as
in text (for सुसेत्रा) Śi Ds 11 12 मालिन, N̄ 2 V2-4 B
Ds ७ मालिनी (V4 Ds ७ न), Ds (m also) मालिनी (for
मालिनी)

9 ७) N̄ V B D10 11 13 [अ]वि, D1 च (for तु) —⁵
Śi Ds 9 12 कन्यानां शतमुत्तम —⁵ N̄ V B D2 3 7 10 11 13
Ms दुर्धर्षा (V4 ७), D1 दुर्धर्ष (sic) (for धर्मात्मा) Śi
Ds 12 सुपुत्रे देवकुपणां —⁵ V2 धृताया, Ds धृताया (sic)
Ms (after corr inf lin sec m as in text) धृताच्या,
Ck t as in text (for धृताया) V4 D13 रघुनन्दन

10 ७) N̄ V B D1 3 7 10 11 13 Ms हृत्, Cg as in text
(for तास्तु) —⁵ Śi Ds 12 रूपेणात्र (D12 ७ श्री [sic])
तिमा भुवि (= 12⁵) N̄ V1 3 4 B D1 3 7 10 11 13 ता
कदाचिन्म (N̄ 2 B4 D10 13 ७) लृङ्ता, V2 कदाचिन्मलं
हृत्ता, Ms ता कदाचिन्मुत्तमा —⁵ N̄ V2-4 B1 4 मा
गल, D13 ७ आमाय (for आगम्य) D1-3 7 Ms वसु
रघानमुदिश्य, Cg as in text (for ७) —⁵ Ts मेपेपु
(for प्राट्टपि) Cg शतहृदा (as in text) Śi N̄ V B
Ds 10-13 विशीदुर्षिषु (V4 lacuna for वु) लो यथा

11 ७) V1 B4 Ds गायथो (sic) Śi Ds 12 वादयन्त्य,
Ms नृत्त, Cg as in text (for नृत्यमाना) V1 ता (for

अथ तावत्सर्वज्ञियो रूपेणाप्रतिमा भुवि ।
 उद्यानभूमिमागम्य तारा इव घनान्तरे ॥ १२
 ताः सर्वगुणसंपन्ना रूपयौगनसंयुताः ।
 दृष्ट्वा सर्वात्मनो वायुरिदं वचनमब्रवीत् ॥ १३
 अहं वः कामये सर्वा भार्या मम भविष्यथ ।
 मानुषस्त्यज्यतां भागो दीर्घमायुरवाप्स्यथ ॥ १४

च) M₄ गायत्र्यश्वाय नृल्यो —^b) Dt D₈ १ तु (for च)
 D₁₀ राव*, D₁₄ T₂ G₂ 4) M₁ ३ सर्वज्ञ (for रावच) S₁
 D₅ 1३ नृल्यश्वाय यथासुख —^c) S₁ D₅ 1१ 1२ आह्लादं, all C_s
 as in text (for आमोद) D₁ ३ ७ M₄ मोदल्यो हल (D₃
 वल also) मानाश्च —^d) G₂ सर्वा (for वरा) S₁ N V B
 D₅ 1०-1२ वन (N₁ V₃ 4 B₁ ३ वर, B₄ गंध, D₁₃ वनेद) माल्यै
 (V₂ मन्त्रे [sic]) रल (D₁₀ 'नु) कृत्वा

12 S₁ D₅ 1२ om 1२ D₈ repeats 12^{ab} consecu-
 tively —^a) B₄ 'वाद् (sic) D₁₁ अ*, C_v as in text
 (for अथ तार) N V B D₁₀ 1१-१२ सर्वाणी (for सर्वाद्भिरो)
 —^b) B₃ (sup lin also) भुव, M₄ तदा (for भुवि)
 D₂ (second time) ३ ७ वनमायुरलकृता (= 11^d in S₁)
 —N V B D₁ ३ ७ (D₃ ७ hapl) 1० 1१ 1२ M₄ om 1२-1३^b
 D₉ om 1२^d —^c) = 1०^c T₃ वन*, G₂ M₁ नप्ये शोभते,
 Cmk as in text (for भूमिमागम्य) —^d) T₂ transp
 ह्व and घन

13 N V B D₁ ३ ७ 1० 1१ 1२ M₄ om 1३^{ab} (cf v 1
 1२) —^a) Dt D₈ 1४ T₁ M₃ सर्वा Cg as in text (for
 सर्वे) M₂ सपदा (for सनुता) S₁ D₅ 1३ ततन्ना रूपसंपन्ना
 यौवनेनाम्यलकृता —^c) S₁ N₁ V₃ 4 D₁ ३ ७ ७ 1१ 1२ सर्वयोगो,
 N₂ V₁ B₃ 4 D₁₀ सर्वगतो, V₂ B₁ २ D₁₁ तु सर्वो (V₂ 'शो'),
 Cg सर्वात्मनो (as in text) V₂ lacuna (for वायु)

14 —^a) S₁ D₁ ३ ७ ७ 1१ भवती (D₁ 'ती' [sic]) D₁₄
 (after corr m as in text) 'च, Cg as in text (for
 अहं च) —^b) S₁ N V B D₁-३ ७ 1०-1३ M₄ 'मे भवता
 (S₁ D₅ 1३ 'ते, N₁ V₃ 4 B D₁₀ 1१ 1२ भवत मे [by transp])
 D₃ मे *व * १) वला (S₁ D₅ 1३ 'नि वै) —^c) S₁ मानुषे,
 D₂ Ck मानुष्यर, D₁₁ मनेन, Cg t as in text (for
 मानुषम्) D₁ ३ M₄ ह्यनतां (sic) D₁₁ त्रियाण, Ck as in
 text (for स्थयतां) S₁ D₅ 1३ स्नेहो (for भावो) N V B
 D₅ 1० 1३ M₄ ह्यनता मानुष्यं भावम्, Cg t as in text
 (for) —^d) N V B D₅ 1० 1३ M₄ अमरत्वम् (for दीर्घं
 मायुर) S₁ D₁-३ ७ ७ 1१ १२ भावयन्ता D₁₀ भवाप्स्य* (for
 भवाप्स्यथ) Cg as in text (for^d) —After 14 Dt
 D₄ ३ ७ ११ (marg sec m) S (D₃ G₁ 1 2 only) Cg t
 ins

७६२° चरं हि यौवनं निर्यं मानुषेपु रिरोपत ।
 अक्षयं यौवने प्राप्ता अमरं च भविष्यत ।

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वायोरक्षिष्टकर्मणः ।
 अपहास्य ततो वाक्यं कन्याशतमथान्वीत् ॥ १५
 अन्तश्चरसि भूतानां सर्वेषां त्वं सुरोत्तम ।
 प्रभाजज्ञाथ ते सर्वाः किमस्मान्नमन्यसे ॥ १६
 कुशनाभसुताः सर्वाः समर्थास्तूनां सुरोत्तम ।
 स्थानाढ्यापयितुं देवं रक्षामस्तु तपो वयम् ॥ १७

[No comm in Cmk —(1 2) D₁₄ T₂ ३ G₂ M₁
 अक्षय D₁₄ om यौवन G₁ प्राप्य (for प्राप्ता) D₄ ३ T₃ G₁ ३
 M₂ 4 (M₃ after corr sup lin sec m as above)
 अमरात् (for अमयत्)]

15 —^a) Dt वनच (by metathesis) (for वचन)
 —^b) S₁ D₁-३ ७ ७ 1२ अमिन्, N V B D₁₀ 1३ परममगना
 (N₂ V₃ ३ 'ला) D₈ (after corr pr m as in text)
 अक्षिष्ट*, M₄ ता परमगना, Cg as in text (for अक्षिष्ट
 कर्मण) —^c) S₁ D₁ ३ ७ ७ 1२ अव (D₃ 'प) हस्य, N V B
 D₁₀ 1३ M₄ मुक्ता (N₁ B₄ त्यक्त्वा B₂ मुक्ता) हास D₈ सो*,
 D₁₁ विहस्य (submetric) Cg k t as in text (for अपहास्य)
 M₄ कल, Cg as in text (for ततो) N V B D₁₀ 1३ M₄
 सर्वा, D₁₁ वायु (also 1३ in text) Ck as in text (for
 वाक्य) —^d) S₁ D₁ ३ ७ ७ 1२ उपाय तं (for भवायवीत्)
 N₁ V₃ ३ B D₁₀ 1३ M₄ वायु (V₃ वाहो [sic] M₄ ततो)
 वचनमनुवृत्त, V₄ इद वचनमब्रवीत्, D₁₁ कन्यास्तशसुवन्त्य

16 —^a) T₃ M₄ चरति, Cg t as in text (for चरति)
 B₃ (m also) भूताना (for भूताना) V₁ D₁-३ ७
 सवपा (V₁ marg) भूताना (by transp) N V B D₁-३
 ७ 1० 1१ 1३ M₄ रिह (M₄ इह) मारत, Dt D₈ ३ सुरसत्तम,
 G₁ ३ च सु* (for एव सुरोत्तम) —G₂ om (hapl)
 1६^c-1७^c) V₄ भावज्ञाता (for प्रभावज्ञार) N₁ V₃ ३ 4
 B₂ ३ D₂ 4 ७ 1० T₃ M₁ ३ म्य, V₃ B₄ त (sic) (for च) D₁₁
 सर्वो (for सर्वा) S₁ D₅ 1३ प्रभावते विज्ञानीम, B₁ D₁ प्रभावं
 ज्ञास्यते (D₁ 'से) सया, G₁ प्रभावज्ञश्च सर्वानां —^d) Cg
 अस्मान् (as in text) B₁ D₂ हिला (B₁ 'हम [sic])
 स्माद्, Dt D₈ ३ Ct तिमर्थो (for तिमस्माद्) D₈ 'ते, D₁₁
 *स्ते (for अवमन्यसे) Ck as in text (for^d)

17 G₂ om 1७^{ab} (cf v 1 16) —^a) V₃ D₁₁ 1३
 साध्वी, V₄ साध्व्य, Dt D₈ ३ द्य, M₄ साध्या (for सया)
 —^b) D₂ समधा (sic) D₄ सधर्मा, D₁₃ क्षमस्वः M₄
 (after corr sup lin sec m as in text) 'धर् (for
 समधार) D₂ T₃ G₁-३ म्य, D₁₄ त्वं; G₂ तु; M₄ च
 (for त्वा) D₃ M₄ न (M₄ सु) रपेन (D₂ 'म) (for
 सुरोत्तम) S₁ D₁ ३ ७ ७ 1३ मममेव न मान् (D₁ 'त) ; N
 V B D₁₀ 1३ क्षमेने (V₃ D₁₁ 'मने [sic]) न हि म रत्न (B₄
 'त [sic] ; D₁₁ 'ता) ; Dt D₈ ३ ७ समन्ता सुरम् (D₈ म
 सुरो) चम् —^c) S₁ १-३ B D₁-३ ७ 1१ 1३ M₄ ३ 'दंष्ट (D₁₀

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कुशनामस्य धीमतः ।
शिरोभिश्चरणौ स्पृष्ट्वा कन्याशतमभापत ॥ १
वायुः सर्वात्मको राजनप्रथर्षयितुमिच्छति ।
अशुभं मार्गमास्थाय न धर्मं प्रत्यवेक्षते ॥ २

(hapl) from 22⁵ up to the prior half of 767* —⁵)
B₄ D₄ T₃ अति (B₄ अनु) वर्तते, Ct as in text (for अय
मन्यते) M₄ सुकुमारानना शुभा, Cg k as in text (for ⁵)
—⁶) S₁ N V B D₁ 2 5 9-13 M₄ यूयं (for सर्वा) —⁷)
Dt D₈ 8 चे? (for वेष्टन्यो) Dt D₈ 8 T₃ G₁ 4 °त, D₄
नाम्यं, Ct as in text (for नामिनामय) S₁ D₈ 9 12 विचेष्ट
त्यो (S₁ °ता, D₈ °तो [both sic]) न भाषय (S₁ °त), N
V B D₁ 2 10 11 13 M₄ समा (N₁ V₂ D₁₁ संम) नि (N₂ °दि) इय
दुरामना —After 22, S₁ D₁-3 5 7 9 12 ins

767* शसध्व किमिदं पुत्र्य कुञ्जत्वं कथमागतम् ।

[D₇ om the prior half (cf v l. 22) D₈ कुञ्जता
D₃ केन चागत]

while T₂ G₂ 3 M₁ ins

768* श्रोतुमिच्छाम्यहं पुत्र्यो यस्येदं कर्म गहिर्हत्म् ।

[T₂ त पुत्रो (sic) G₃ तत्? (for [न] इ पुत्र्यो) T₃ कर्मण
फत् (for कर्म गहिर्हत्म्)]

—D₈ T₂ G₂ 3 M₁ cont while Dt D₄ 8 14 T₁ 3 G₁ 4
M₂ 3 all Cs ins after 22

769* एव राजा विनिश्चय समाधिं संदधे तत ।

[D₄ विनिश्चय T₃ सदधे G₃ M₂ विदधे (for सदधे) G₁
damaged (for तत)]

Colophon S₁ N V B D₈ 10-13 om (continue the
Sarga) —Kandāname D₁ 3 अयोध्या —Sarganame
Dt D₄ 8 14 S om D₁-3 7 9 कन्यावृत्तकर्णो (D₈
°कन्यावृत्त) —Sarga no (figures words or both)
D₈ om both Dt D₄ 8 14 S 32 D₁ 7 25 D₂ 26, D₈
35 —After colophon T₃ concludes with श्रीरामचन्द्राय
नम, G₁ 2 4 M₂ श्रीरामाय नम, G₃ श्रीमते रामाज्जाय नम

32

S₁ N V B D₈ 10-13 cont the previous sarga.

1 ⁵) T₃ कुशनामस्य S₁ D₈ 13 ता सुता (for धीमत) D₇ om (hapl) from 1⁵ up to 1¹ of 770* —⁶)
D₈ शरण, T₂ चरण, Cm g t as in text (for चरणौ) N V
B D₁-3 10 13 गत्वा, D₁₁ नवा (for स्पृष्ट्वा) N₁ द्वयम् (for
-शतम्) G₁ M₄ अथापकीर्त्त S₁ D₈ 13 अभियाय पितु पादौ
सर्वा वचनममुवत् (S₁ D₁₃ °मयीत्)

पितृमत्यः स्म भद्रं ते स्वच्छन्दे न वयं स्थिताः ।
पितरं नो वृणीष्व त्वं यदि नो दास्यते तव ॥ ३
तेन पापालुब्धन्धेन वचनं न प्रतीच्छता ।
एवं झुपन्त्यः सर्वाः स्म वायुना निहता भृशम् ॥ ४

2 ⁵) S₁ D₈ 12 सर्वत्राग (D₁₂ °गत) मोस्मान् (for
सर्वात्मको राजन्) —⁶) Ck प्रथर्षयितुम् (as in text) Cm
इच्छति (as in text) S₁ D₈ 12 नैच्छद्वर्षयितु प्रभु (D₁₂
विभु), Cg t as in text (for ⁵) —⁷) S₁ °वैक्षत, D₈ 12
पर्यवेक्षत (D₈ °इय ता) (both sic), T₂ °वेद्यते, Cm as
in text (for प्रत्यवेक्षते) Ck Ct अशुभ अवेषते स्म Ck
—For 2 N V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ subst

770* वायुरस्मात्पागम्य बलमान्नाममोहित ।

उत्क्रम्य धर्मेनर्षादा प्रथर्षयितुमुद्यत ।

सोस्मामिरुक्त सर्वाभिवायु कामवश गत ।

[D₇ om 1¹ x (cf v l 1¹) —(1¹ x) D₁ °गल्य (for
उपागम्य) V₂ बलवत् (for बलवान्) —(1² 2) V₃ चक्रे दि,
D₃ 3 7 व्युत्क्रम्य (for उत्क्रम्य) V₃ [अ]धर्मे (for धर्मे) —(1³
3) B₃ reads from first 3¹ up to 3 in marg V₃ -स्त
(for -वत्) D₁₁ om from गत up to भगवन्नि in 1¹ x of
771*]

3 D₁₁ om 3 (cf v l 2 [770*]) D₂ om (hapl)
3⁵ B₃ reads 3 in marg (cf v l 2) —⁶) S₁ D₈ 12
°वस्यो, D₁ °सुता, D₈ °मल्यो (sic) (for पितृमत्य) S₁
D₈ 12 वय सर्वा N V B D₁ 3 7 10 13 स्म भगवत् (N₁ °*) न्,
M₄ च भगवन् (for स्म भद्रं ते) —⁷) Cg k t स्वच्छन्दे न
(as in text) S₁ D₈ 12 न स्वातन्त्र्यमुप (S₁ °पा) स्थिता,
N V B D₁ 3 7 10 13 M₄ न स्वच्छन्दचरा वय, D₈ न स्वच्छन्द
मुपस्थिता —S₁ D₈ 12 om (hapl) 3⁴-4⁵ —⁶) N V B
D₁ 2 7 10 13 M₄ नोभियाचरत्, D₈ नो प्रयो? [sic] Cg k t
as in text (for नो वृणीष्व त्वं) —D₈ om from 3⁴ up
to the prior half of 1² of 771* —⁷) Cm k दास्यते
(as in text) Cg t दास्यति N V B D₁ 2 7 10 13 M₄
न्यायतो यदि मम्यसे

4 S₁ D₈ 12 om 4⁵ (cf v l 3) —⁶) D₈ पापालु
ब्धेन —⁷) D₄ प्रतीक्षता, Cm g k t as in text (for
प्रतीच्छता) —⁸) Dt D₁ 14 G₁ 4 M₂ 3 Ck मुवत्, Cg t as
in text (for मुवन्त्य) S₁ D₈ 12 इति तेन मुवाणा स्म (D₈
स्मो) —⁹) S₁ D₈ 12 वायुनोपहता Dt D₈ °निहता, T₁
°भिमता, Cm g k t as in text (for वायुना निहता)
—For 4 N V B D₁-2 7 10 11 13 M₄ subst

771* न वयं स्वैरचारिण्य प्रसीद भगवद्विनि ।

ह्युक्त कुपितो वायु प्रविद्याह्मनि न प्रभो ।

यमज्ञ बलवोस्तेन सर्वा कुञ्जीकृता वधम् ।

तासां तद्वचनं श्रुत्वा राजा परमधार्मिकः ।
प्रत्युत्राच महातेजाः कन्याशतमनुत्तमम् ॥ ५
क्षान्तं क्षमावतां पुत्र्यः कर्तव्यं सुमहत्कृतम् ।
ऐकमत्यमुपागम्य कुलं चापेक्षितं मम ॥ ६
अलंकारो हि नारीणां क्षमा तु पुरुषस्य वा ।
दुष्करं तच्च वः क्षान्तं त्रिदशेषु विशेषतः ॥ ७

यादृशी वः क्षमा पुत्र्यः सर्वासामविशेषतः ।
क्षमा दानं क्षमा यज्ञः क्षमा सत्यं च पुत्रिकाः ॥ ८
क्षमा यशः क्षमा धर्मः क्षमायां विष्ठितं जगत् ।
विमुज्य कन्याः काकुत्स्थ राजा त्रिदशनिष्क्रमः ॥ ९
मन्त्रज्ञो मन्त्रयामास प्रदानं सह मन्त्रिभिः ।
देष्टे काले प्रदानस्य सदृशे प्रतिपादनम् ॥ १०

[Ds om up to the prior half of l 2 (cf v l 3)
D11 om l 1 except ति (cf v l 2 [770*]) —(l 2)
D10 reads from the post half up to 5⁶ in marg Ds
“व, D13 [अ]स्मात्तन (for [अ]ज्ञानि न) V1 प्रयु, D7 प्रमे
(for प्रमे) —(l 3) V1 बलात्तन (submetric) Ds ३७
बलान्तायु, D11 बलात्तात (for बलात्तेन) B4 दुष्करं (sic),
M4 दुष्करा (for दुष्कीकृता) D11 बायुतेपहता वच (for the
post half)]

5 D10 reads 5⁶ in marg (cf v l 4) —“ S1 Dt
Ds-6 ११ 12 Ts Gs Ms तु (for तद्) N V B D1-3 7 10 11 13
Ms इति तासा वच श्रुत्वा —⁵ N V B1-3 D1-3 7 10 11 13
Ms कु (N ३ द)क्षान्तो नराधिप, B4 *नामो जनाधिप
—“ Ds इत्युवाच N V B1-3 D1-3 11 13 Ms ततो राम, B4
स ततो राम (hypermetric) D1-3 7 तदा राम (D7 °m)
(for महातेजा) —“ S1 N V B D1-3 5 7 10-13 इदं वच,
Cg as in text (for अनुत्तमम्)

6 “ S1 Ds 12 भद्रं कृतमिदं, Dt Ds Ts 3 Ms
“क्षमवता, M1 “वता, all Cs as in text (for क्षान्त क्षमावता)
—Ds om 6⁵-7⁵ —“ S1 Ds 12 च, Dt सुसमाहित,
Cg k t as in text (for सुमहत्कृतम्) —“ Ds एकमत्यम्,
Gs ऐकमत्यम् (for ऐकमत्यम्) S1 उपागत्य —“ S1 Ds 13
वै रक्षित, Gs चापेक्षित, Cg t as in text (for चापेक्षित)
—For 6, N V B D1-3 7 10 11 13 Ms subst

772* यक्षान्तोऽतिप्रभो यापो कृतं तन्मे महत्प्रियम् ।
पुत्र्यो मे यच्च युष्मानि कृतचर्याभिरक्षिता ।

[(l 1) V1 स क्षान्ते, Ds क्षान्तो (sic), M4 यक्षान्तो (for
यक्षान्तो) N ३ “क्षमे, V1 “क्षम, Ds विव्रतो (sic) D7 विव्रतो
(for स्त्रिव्रतो) Ds बायु (for बायो) Ds ३ 7 तु (for मे)
V1 नराधिप, D10 *नराधिप, M4 नराधिप (for महत्प्रियम्)
—(l 2) D1 वा च मे Ds यच मे, Ds 7 युष्मानि, M4 यक्षानि
(for पुत्र्यो मे) V1 यच, D1 पुनि D-पुय युष्मानि (for यच)
Ds 7 मे पुय (for युष्मानि) N 1 V 4 B 3 (marg as
above) D1-3 7 Ms दुष्कराया V3 दुष्कराया (for दुलवया)
D1 [अ]ति (for [अ]ति) D13 दुष्कर्मिण्य रक्षित (for the
post half) D11 भद्रं कृतं च युष्मानि कृतं वै रक्षित मम]

7 Ds om 7⁶ (cf v l 6) —“ Gs अहंकारो (sic)
D11 om हि (submetric) S1 Ds 12 क्षमा पुत्र्य (D13
also क्षमायुच) (for हि नारीणां) —⁵ S1 Ds 13 विद्यो वा.

Ts G1 °हि, Ms क्षम तु, Ms क्षान्तिता (for क्षमा तु) Ds G1
च, Ck t as in text (for वा) N V B D1 3 7 10 11 13
क्षमा पुत्र्यो (D1 °त्रि, Ds 13 °त्रो [sic]) विशेषत —For
7⁶-10⁶, N V B D1 3 7 10 11 13 Ms subst a passage
given at the end of 10⁶ —“ S1 तद्वच, Dt Ds ३ तच्च
वै, D14 T1 2 Gs Ms तच्च यद्, G1 तच्च व, Gs तस्य यद्, Cv
as in text (for तच्च व) Ds स्यात् (for क्षान्त) Cg Cm
क्षान्तं तदुष्करम्, Cg व तत्क्षान्त क्षमा दुष्करं त्रिदशेषु
रूपैर्धर्मसंपन्नेषु विशेषतो दुष्करम्, Ct तच्च दुष्करं यद्विदुः
विषये क्षान्त कामवेगावहनं कृतं तद्विदुष्करम्, Cg —After 7,
S1 Ds 13 ms, while Ds ms after 9⁶

773* प्राशोऽयं देशकालश्च सुपात्रप्रतिपादने । (cf 10⁶)
Then all the above MSS (var) cont 775*.

8 Cf v l 7 and 10 S1 Ds 13 om from 8-9⁶ Ts
om (hapl) 8⁶ —“ Ds सर्वा, G1 पुत्र (sic) (for
पुत्र्य) —⁵ Ds समता च (for सर्वास्ताम्) —“ Dt Ds ६
Ts सत्य, Gs यज्ञ (for यज्ञ) —“ Dt Ds 6 Ts यज्ञश्च;
Ds यज्ञाश्च (for सत्यै) Ds G1 3 Ms ३ तु, D14 T1 2 Gs 4 M1
हि (for च) G4 पुत्रका

9 Cf v l 7 and 10 S1 Ds 13 om 9⁶ (cf v l 8)
—“ Ds M1 Cg क्षमया (for क्षमाया) Ds नि, Ds Ms
[अ]विष्ठित, D14 T1 2 Gs ६ हि स्थित, Ts विष्ठिते, Cg as in
text (for विष्ठित) —After 9⁶, Ds ms 773* —“ Ds
विस्तृत्यै (for विमुज्य)

10 “ T3 मन्त्रज्ञा (for मन्त्रज्ञो) —⁵ S1 प्रदाने,
Cm g t as in text (for प्रदान) —For 7⁶-10⁶, N V B
D1-3 7 10 11 13 Ms subst

774* देवानां च विशेषेण क्षान्त्यभिनि मे मति ।
दुष्करं च कृतं मन्ये यदापो क्षान्तमीदृशम् ।
व्यभिचारकृतं तस्मात्प्रोतोऽहं तेन सुव्रता ।
प्रदानसमयं चैव मन्येऽहं योऽयं सर्वश ।
सम्यक्तमिष्टं पुत्र्यश्चिन्तयिष्यामि यो हितम् । [5]
विमुज्य चैव ता कन्यास्ततः स नृपमत्तम् ।
तामा प्रदानं धर्मज्ञो मन्त्रयामास मन्त्रिणि ।

[(l 1) D1 ३ ७ देवेण, D13 पुता चैव (for देवानां च) B3
(marg as above) विशेषेण (for विशेषेण) V1 सुवरा (for
मे मति) —D1-3 7 om. l 2 —(l 2) V4 °तु, B1 D13

एतस्मिन्नेव काले तु चूली नाम महामुनिः ।

ऊर्ध्वरेताः शुभाचारो ब्राह्मं तप उयागमत् ॥ ११

तप्यन्तं तमृषिं तत्र गन्धर्वीं पर्युपासते ।

सोमदा नाम भद्रं ते ऊर्मिलातनया तदा ॥ १२

दुष्टत्वं, Bs D10 सुहृत्, B4 सुदृक् (for दुष्टत्वं) D11 तदा
यदेतत् (for मये यदाद्ये) V3 कामम्, M4 क्षातिम् (for क्षान्तम्)
—(1 3) V1 कालि°, D1 क्षान्तातिचारुन्, D2 क्षान्तातिचरित, D3 7
शास्त्रा (D7 °स्य) तिचरित (all sic) (for व्यभिचारकृत) V4
B1 2 D13 यस्मात् (for तस्मात्) D1 प्रीतोह मम्, D18 प्राप्तेय°
(for प्रीतोऽह तेन) D3 मुनुता (sic) (for मुनता) M4
व्यभिचार कृत्यतेन तेन प्रीतोस्मि मुनता —(1 4) B1 °सस्य
D10 प्रदान° (for प्रदानस्मय) M4 [अ]पि (for [ए]व) D3
प्रदान सर्वपंचेव (sic) (for the prior half) B4 चाप D11
वाच (for बोधय) M4 मुनता —(1 5) V1 2 इच्छत (for
इष्टा) N2 B3 4 D10 गमिष्यामि तत् पुत्र्य D11 प्रगम्यतामि
पुत्र्य D13 गम्यतामिच्छया पुत्र्य (for the prior half) V2
व्यतिष्यामि (for चिन्तिष्यामि) D3 भोक्षि —D1-3 7 M4 read
1 6 7 after 775* —(1 6) B1 विवृष्य, D2 विवृष्य (for
विस्वस्य) V2 वैव°, V4 [ए]व हि ता (for वैव ता) D11 एव
विस्वय° (for the prior half) V2 तत् स च नृपोत्तम, D2 3 7
राजा विद्वत्सिद्धम् (= 9^d) (for the post half) —(1 7)
D13 राजा (for तासा) V1 प्रधान, B4 D13 प्रधान (for प्रदान)
M4 मन्त्रज्ञो (for धर्मज्ञो) D13 चित्तवामास (for मन्त्रवामास)
D1-3 7 कथानां वर (D1 मन्त्रवामास प्रधान (D3 °न) सह (D1
गृह)मन्त्रिणि]]

N V B D1 3 7 10 11 13 M4 cont., S1 D5 9 12 ins after
773*

775* यद्वायुना च ता कन्यास्त्वत्र कुञ्जीकृता पुरा ।

कन्यादुब्धमिति ध्यात तव प्रभृति वपुरम् ।

[(1 1) D2 तद् (for यद्) D1-3 7 सर्वम् (for कन्यास्य)
S1 D5 9 12 कन्यास्त्वम् (by transp) B1 तत्, D11 त च (for
तत्र) V2 D9 12 कुञ्जा (D12 °स्त्रा) कृता N2 marg M4 पुरे
(for पुरा) —(1 2) N V B D2-4 D10 कान्य° B1 D7 11 कन्य°
(for कन्यादुब्धम्) D1 तदा (for तत्) B3 (marg also)
राज्य B4 °पर (for वपुरम्)]

—After 775*, D1-3 7 M4 ins 1 6 and 7 of 774*
—S1 N V B D1-3 5 7 10-13 M4 om 10^d —° D4
देवकाली, T3 G1 4 Cm देवकाले, Cg k as in text (for
देवे काले) Dt D4 8 च कर्तव्य, Cr mg as in text (for
प्रदानस्य) Cg Ct उचिते देवे काले सदस्ते स्वदुष्टादिसदोपात्रे
प्रदानं वर्तयामिनि सप्रणयम् । Cg

11 °) V1 तस्मिन् (submetric) (for एतस्मिन्) N2
७- (for एव) B1 after एव, तु wrongly written —°)
S1 D13 चूर्तिर, V1 2 D11 चूर्ती, V2 3 चुली, B1 चूर्पी, B2
(marg also) चुली B4 हली D1-3 7 चूर्तिर, D4 चुली,

सा च तं प्रणता भूता शुश्रूषणपरायणा ।

उवास काले धर्मिष्ठा तस्यास्तुष्टोऽभनद्रुः ॥ १३

स च तां कालयोगेन प्रोवाच रघुनन्दन ।

परितुष्टोऽस्मि भद्रं ते किं करोमि तत्र प्रियम् ॥ १४

D12 चूडिन्, T2 3 G3 4 M चूली (M4 °छिन्), G2 चूर्पी (for
चूली) S1 N V B D1-3 5 7 10-12 °नृपि, Dt D6 8 °सुति,
T3 °यसा (for महामुनि) —°) N V B D1-3 7 10 11 13
ब्रह्मचर्ये (for शुभाचारो) —°) D2 T3 ब्राह्म्य (for ब्राह्म)
S1 D6 12 ब्रह्मतेजा ह्य (S1 °जोभ्य) लकृत, N V1 B D1-3 7 10
चचार (D3 °छ) किल दुश्च (B1 °ष्क) र, V2-4 D11 13 चकार
किल दुष्क (V2 D11 °श्च) र

12 °) S1 D5 12 तप्यमान, D4 6 8 T3 तपस्यतम्, Cg as
in text (for तप्यन्तं तम्) D5 12 तु तमृषिं (for कपि तत्र)
—°) S1 D5 12 तमुवाच ह, Ck t as in text (for पर्यु
पासते) —For 12^{ab}, N V B D1-3 7 10 11 13 M4 subst

776* त ब्रह्मचारिण राम तप्यमान महचप ।

[D1-3 7 महर्षि परमद्युत, M4 ब्रह्मर्षिमन्त्रिचरित (for the post
half)]

—°) S1 D5 7 11 13 सोमपा, D2 सोपमा, D6 सोमदा, T3
सौमदा, M4 सोमगा, Ck t as in text (for सोमदा) N
V1 2 4 B D1-3 7 13 M4 गधर्षी, V3 गधर्वा, D8 भद्रे ते, D10
गंधर्वे, Ck as in text (for भद्र ते) Cg पर्युपासते
अशुश्रूषत । मये मये भद्रमस्मिन्नि प्रयोग शुभोत्तरलक्ष्मी । Cg
—°) S (except M1 4) ऊर्मिळा S1 N V B D1 3 5 7 9-13
M4 ऊ (D- व, D10 -न्) नायु (V2 °व, D1 °य, D5 12 °युर,
D9 11 °योर) दुहिता (B4 °तनया as in text) Ck t as in
text (for ऊर्मिलातनया) D4-6 12 तथा, D13 पुरा, Cg t as
in text (for तदा) —After 12 N V B D10 11 13 ins
D1-3 7 subst for 13^{ab}

777* नियम परमास्थाय सम्यक्परिचचार ह ।

पुत्रार्थिनी ततो राम महर्षेर्भातितालन ।

[(1 1) V3 नियम वरम्, D2 निय *** , D13 पर नियमम् (by
transp) D7 आदान (for आस्था) D1 3 7 वै (for ह)]

13 °) S1 V1 B1 D9 तदा, N V2 4 B2-4 D10 11 13
[अ]भवत्, V3 [अ]वसत्, D5 12 तथा, G3 तु त (for च
त) Cg Ct तमिति प्रतियोगे द्वितीया । Cg S1 N V B
D1 12 13 प्रवता (for प्रणता) —For 13^{ab} D1-3 7 subst
777* —N V B D1-3 7 10 11 13 om 13^{ab} —°) S1
D5 12 M4 कार्, Cm g k as in text (for काले) S1
D5 13 धर्मज्ञस्, D4 T1 3 धर्मिष्ठस्, D9 14 धर्मिष्ठास् (sic)
M4 धर्मज्ञास् (sic) (for धर्मिष्ठा) —°) T3 G1 M4 मुनि,
Cg k as in text (for गुर)

14 °) S1 D5 12 तथा (for च ता) Cm g k t कालयोगेन
(as in text) N V B D10 11 13 M4 स तां कालस्य भद्रम् ;

परितुष्टं मुनिं ज्ञात्वा गन्धर्वा मधुरस्वरम् ।
 उवाच परमप्रीता वाक्यज्ञा वाक्यकोविदम् ॥ १५
 लक्ष्म्या समुदितो ब्राह्मया ब्रह्मभूतो महातपाः ।
 ब्राह्मेण तपसा युक्तं पुत्रमिच्छामि धार्मिकम् ॥ १६
 अपतिश्चास्मि भद्रं ते भार्या चास्मि न कस्यचित् ।

D1-3 7 स ता (D3 तो) हर्षेण महता, D11 तत् कालेन महता
 —⁶) S1 D5 12 प्रावर्षीद् (for प्रोवाच) N V B D1-3 7 10
 11 13 M4 परितोषित (for रघुनन्दन) —⁶) T3 [अ]स्ति
 (for ऽस्मि) N V2-4 B D10 13 [अ]ह भद्रे, V1 [अ]ह
 भद्र ते (hypermetnc), D1 ते भद्रे (for भद्र ते) —^d)
 Cm g करोमि (as in text) N V B D1 10 13 M4 बृहि
 किं कस्यापि ते (B1 'महे, D10 'मि ते [sic])

15 D5 om (hapl) 15^{ab} —^a) B4 परितुष्टं N
 V1 2 4 B2-4 D1 10 13 M1 दृष्ट्वा (for ज्ञात्वा) —^b) V1 3 D3
 गन्धर्वा (for गन्धर्वा) S1 D2 3 5 7 12 'स्वरा, N V B D1 10 11
 M4 'राक्षर, Dt D6 'र स्वर, D13 'राक्षरा T2 'स्वन (for
 मधुरस्वरम्) —^c) S1 D5 12 परमोदारं, N V B D1-3 7 10 11 13
 M4 प्राजलिभूत्वा (D1 M4 'वांस्यम्), T3 मधुरं (for परम
 प्रीता) —^d) D2 13 T1 [mf] as in text) 2 'कोविदा
 (D2 'दा), D11 तद्वर्षिं तदा, Cg as in text (for वाक्य
 कोविदम्) N V B D1 10 13 M4 वाक्य (D1 M4 इदं)मात्र
 हित (B3 'तस्)तदा

16 ^a) T2 समुदितो, M3 समुदित D1 sup lin T2
 रोक, T3 ब्राह्म, all Cs as in text (for ब्राह्मया) —^b)
 M3 भूतमकल्मष, all Cs as in text (for भूतो महातपा)
 —For 16 S1 D5 9 (1 x only for 16^{ab}) 12 subst

778* ब्राह्मया लक्ष्म्यानया ब्रह्मन्दीप्यसे ब्रह्मवित्तम् ।
 त्वत्तो लक्ष्म्यानया ब्रह्मण्डुमिच्छामि धार्मिकम् ।

[[(1 x) D5 दीप्यसे (for दीप्यसे) Dr om (hapl)
 from दीप्यसे up to the prior half of 1 2 —(1 2)
 S1 त्वा (for [अ]नया) The post half = 16^d)
 On the other hand N V B D1 3 7 10 11 13 M4 subst

779* दीप्यसे परया लक्ष्म्या ब्राह्मया त्वमनया यथा ।
 तयाह पुत्रमिच्छामि त्वत्तो ब्राह्मया श्रियान्वितम् ।

[[(1 x) N1 दीप्यसे B1 M4 अल्प, D3 ब्रह्मया, D10 ब्राह्म (sic)
 (for ब्राह्मया) D3 'या (for यथा) V2 चक्ष्मण्यया यथा, D1
 ब्राह्मचर्यनया यथा, D11 यथा तद् ब्रह्मवित्तम् (for the post half)
 —(1 2) V4 om, B1 त्व, D3 illeg D7 हि (for [अ]त्) D3
 वृत्ता, D3 त्वतो (for त्वत्तो) V3 ब्रह्मे (sic) D11 13 ब्रह्म
 (for ब्राह्मया) V3 श्रिया, V4 B1 D1-3 7 'वृत्ता, B3 (marg
 as in V3 also) 4 'मित (for श्रियान्वितम्)]
 D1-3 7 cont

780* स्वयं प्रमादं नुर मे त्वा (D1 त्वा) श्रिताह सपोषन ।

17 ^a) All Cs अपतिस् (as in text) T3 [अ]स्म

ब्राह्मेणोपगतायाश्च दातुमर्हसि मे सुतम् ॥ १७
 तस्याः प्रसन्नो ब्रह्मर्षिर्ददौ पुत्रमनुत्तमम् ।
 ब्रह्मदत्त इति ख्यातं मानसं चूलिनः सुतम् ॥ १८
 स राजा ब्रह्मदत्तस्तु पुरीमध्यवसत्तदा ।
 काम्पिल्यां परया लक्ष्म्या देवराजो यथा दिवम् ॥ १९

(sic) (for [अ]स्मि) S1 D1-3 5 7 9 12 न पतिश्चास्ति मे
 ब्रह्मन् —^b) S1 D1-3 5 7 G1 न भार्या चास्मि (by transp)
 D12 न भार्या चास्मि (for भार्या चास्मि न) —^c) All Cs
 उपगतायाश्च (as in text) S1 D1 2 5 7 12 ब्रा (D2 ब्र)ह्मणेन
 तु (D1 च) सयुक्त, Dt D6 ब्राह्मेणो, D3 ब्राह्मेण तु सयुक्त,
 D3 T3 G2 M3 ब्राह्मेणो, D3 ब्राह्मेण तपसा युक्त —^d) D2
 सुता (for सुतम्) D3 पुत्रमिच्छामि धार्मिक (= 16^d)
 Cm t as in text (for ^d) —For 17, N V B D10 11 13
 M4 subst, while S1 D1-3 5 7 12 ins after 17^{ab}

781* स्वयं च वरये त्वाह भर्तारमपरिग्रहम् ।
 अनन्यपूर्वो भज मा याचमाना यत्तदात्मा ।

[[(1 x) S1 D2 5 7 15 M4 [अ]ह त्वा, D1 हि त्वा, D3 M4
 [अ]ह त्वा (by transp) (for त्वाह) B2 4 वरयिष्याह S1 N1
 V2 3 B1 2 4 D2 12 13 'ग्रहा, V1 'ग्रहा, B3 सपरिग्रह, D1 3 7
 'ग्रहात, M4 'ग्रह (sic) (for अपरिग्रहम्) —(1 2) D11
 अनन्य (for अनन्य) D2 10-12 पूर्व (for पूर्वो) S1 D3
 भजमान (D3 'ना) V2 राज, D1 2 5 7 12 M4 भज (for
 याचमाना) S1 V1 3 'भज (V3 'त), N1 V2 4 भज, B1 इदं,
 D1 त्वि, D3 'वृत्ता, D10 परि, D13 वत्तु (for यत्तदात्मा)]

18 ^a) N V B D10 11 13 M4 त्वसे, D1 तत्, Cg k t
 as in text (for तस्या) N V B1-3 D3 7 10 13 त्वि, Ct
 as in text (for ब्रह्मेणिर) —^b) Dt D6 8 G1 Ct ब्राह्म,
 M3 सुतम् (for पुत्रम्) B4 repeats ददौ पुत्र S1 D5 12 13
 T1 2 G2 4 M1 तयाविध, N V B D1-3 7 10 11 13 M4 य
 (D10 *येष्विति (for अनुत्तमम्) —^c) T3 G1 2 M1
 ब्रह्मदत्तम् S1 N V B D1-3 5 7 10-13 M4 ख्यान (for
 ख्यात) —^d) N V B D1-3 7 10 11 13 M4 सोमवच् (B1 4
 D2 'त्) (for मानम्) V1 B2 (marg also) वूलिन, V2
 D11 वूलिन, B1 वूलिण, B3 (marg also) वूलिन, B4 वूलिन,
 D2 कलिन, D4 वूलिन, D5 वूलिन, D14 वूलिक, T G-4
 M Ch वूलिन, G1 Chp वूलिक, Cv वूलिक, Cg t as in
 text (for वूलिन) N V B D1-3 7 10 11 13 M4 सुत (D3
 'त) Cg k t सुत (as in text) S1 D3 1* सोमवृत्तिमुतो
 नृप

19 S1 D5 12 om (D3 12 hapl) 19 D-3 7 transp
 19 and 20 (D3 3 om 20^{ab}) —^a) G3 राज्ञ (for
 राजा) D1 1 T G-4 M4 Cg सोमदेवत्त, G3 सोमदेवत्त
 (for ब्रह्मदत्तम्) N V B D1-3 7 10 11 13 ब्रह्मदत्त म (D3
 'त्ताप, D2 'कोप्य, D7 'लोप) राज (D11 '*)पि —^b) N

स बुद्धिं कृतवात्राजा कुशनामः सुधार्मिकः ।
 ब्रह्मदत्ताय काकुत्स्थ दातुं कन्याशतं तदा ॥ २०
 तमाहूय महातेजा ब्रह्मदत्तं महीपतिः ।
 ददौ कन्याशतं राजा सुप्रीतेनान्तरात्मना ॥ २१
 यथाक्रमं ततः पाणिं जग्राह रघुनन्दन ।
 ब्रह्मदत्तो महीपालस्तासां देवपतिर्यथा ॥ २२

V B D₂ 3 7 10 11 13 M₄ पुरमध्या (V₃ °ध्वे, D₁₃ °ध्व) वसत्तदा
 (D₇ °त), D₁ पुन (र) मध्यावसेल्लदा, D₉ G₁ M₁ C₆
 पुरिमध्या° —°) N₂ D₁₁ कापिल, V₁₋₃ B₁₋₂ D₁₋₇ 13
 कापिल्य, V₄ B₃ D₁₀ कापिल, B₄ कापिल; D₂ कापिल्य, D₃
 कापिल, D₄₋₉ का (D₉ क) पिली, D₁₄ कापिल्या, G₁₋₃ M Ck
 कापिल्या (G₁ °ल्या, M₃ °ली, M₄ °व्य), Cm t as in text
 (for कापिल्यत्) N V B D₁₋₃ 7 10 11 13 नाम (B₄ भूमौ)
 काकुत्स्थ (D₂₋₇ नगर), M₂ भक्त्या (for परया लक्ष्या)
 —°) D_t G₁ दिनि (for दिवम्) N V₁₋₂ B D₁₋₃ 7 10
 11 13 देव (D₁₃ वेद metathesis) राजसमद्युति, V₃ देवराजसम
 क्षितौ —After 19 D₂₋₇ 13 ins 782*

20 D₂₋₃ (both om 20^{ad} —°) 7 transp 20 and 19
 —°) S₁ D_t D₂ 8 T₃ सु, D₄ स्, Cm g k as in text
 (for स) S₁ D₂₋₃ 7 12 M₄ अक्रोद्, Cm as in text
 (for कृतवान्) S₁ राजन् (for राजा) —°) D₂ कुशनाम D₂
 स, G₃ तु (for सु) —For 20^{ab} N V B D₁₋₁₀ 11 13
 subst while D₂₋₇ 13 ins after 19 (transp)

782* त श्रुत्वा परया लक्ष्या कुशनामोऽन्वित नृपम् ।

[D₂ repeats 782* after 1 x of 784* D₁ तत् (for
 त) B₄ [S] क्षित (for क्षित) B₄ नृप D₁₋₃ 7 11 गुणे (for
 नृपम्)]

—D₂₋₃ om 20^{ad} —°) N V B D₁₋₁₀ 11 13 ता कन्या
 (for काकुत्स्थ) —°) D₂ 12 दत्त, Cm as in text (for
 दातुं) D₁₂ om तदा N V B D₁₋₁₀ 11 13 प्रदातु (V₂ °दत्ता)
 सुपचक्रो, D₁ दातुकाम स भूपति —After 20 D₁ ins

783* पूजयामास धर्मज्ञो धर्मदत्तं महाव्रतम् ।

21 S₁ om (hapl) 21-23 D₂ repeats 21 after
 782* (r) —°) T₃ त, M₄ सम (for तमाहूय) N
 V B₁₋₃ D₁₋₁₀ 11 13 स तमाहूय धर्मज्ञो (V₄ °ज्ञ), B₄ स त
 माहूय धर्मज्ञो —°) V₂ धर्मदत्त N V B₁₋₃ D₁₋₁₀ 13 T₃
 G₁ M₄ °पति, D₁ नराधिप, D₁₃ °पते (for महीपति)
 —°) N V₂ 4 B D₁₋₁₀ 11 13 M₄ तस्मै, D₃ रा*, C₆ as in
 text (for राता) V₁ ददौ तस्मै कन्याशत

22 S₁ om 22 (cf v 1 21) —°) D_t D₂ 3 G₁ तदा,
 D₂ तथा, D₁₂ यथा, C₆ as in text (for तत्) K(ed) C₆
 पाणिश्रु —°) D₁₂ तथा (for यथा) —For 22 N V B
 D₁₋₃ 7 10 11 13 M₄ subst

स्पृष्टमात्रे ततः पाणौ निवृज्जा निगतज्वराः ।
 युक्ताः परमया लक्ष्म्या बभूवुः कन्या शतं तदा ॥ २३
 स दृष्ट्वा वायुना मुक्ताः कुशनामो महीपतिः ।
 बभूव परमप्रीतो हर्षं लेभे पुनः पुनः ॥ २४
 कृतोद्वाहं तु राजानं ब्रह्मदत्तं महीपतिः ।
 सदरं प्रेषयामास सोपाध्यायगणं तदा ॥ २५

784* यथाक्रमं स सर्वोत्तमो तासामनुपमद्युति ।
 जग्राह विधिव पाणीन्ब्रह्मदत्तो नराधिप ।

[(1 x) N₂ तु, B₄ हि, D₁₁ 13 च (for न) —After
 1 x, D₂ repeats 782*, 2x 1 x (784*) —(1 2) D₁₁
 विधिश्च V₄ D₁₃ M₄ पाणि, D₁ 2 11 पाणी (for पाणीन्)]

23 S₁ om 23 (cf v 1 21) —°) D_t D₂ 3 M₂ Ct
 तदा, C₆ k as in text (for तत्) —°) D₉ विस्मृज्जा
 (corrupt) (for निवृज्जा) D₉ ज्वर, T₂ स्वरा (for
 ज्वरा) D₂₋₃ 7 12 विज्वर निमले (D₂ °*) युधि (D₂ °धि)
 —D₂ 7 transp 23^{ad} and 24^{ab} —°) D_t D₂ 3 5-9 12 14
 युक्त (for युक्ता) —°) D_t D₄ 6 9 T₃ G₁ 3 4 M₂ 3 Ct
 बभूव, C₆ k as in text (for बभूव) Ct शत T₃ तथा (for
 तदा) G₃ damaged for शत तदा D₂₋₃ 7 12 कन्याशत
 (D₁₂ °*) मभूचदा C₆ C₆ शतं कन्या बभूव । विसर्गलोप
 आप । बभूव कन्याशतमिति पाठ 1, C₆ कन्याशतमिति शकार
 लोप आप । C₆ —For 23 N V B D₁₋₁₀ 11 13 M₄ subst
 while D₂₋₇ 13 ins after 23 (D₂ 7 after 24^{ab} transp)

785* तेन च स्पृष्टमात्रेण ता पाणिषु गतव्या ।
 बभूवुः सर्वश कन्या रूपोदार्यगुणान्विता ।

[D₂₋₇ om 1 x —(1 x) V₄ तेनाशु (for तेन च)
 M₄ तत् (for ता) V₃ गतावय D₁ ज्वरा (for गतव्या)
 D₁₁ तेन सस्पर्शयामास ता सर्वो भागा गतव्या —(1 2) D₁₋₃ 7
 सर्वत (for सर्वश)]

24 D₂ 7 transp 24^{ab} and 23^{ad} —°) N V₁₋₃ B
 D₁₋₃ 7 10 13 ता, V₂ ता, V₄ D₁₁ M₄ ता, C₆ k t as in text
 (for स) D₂ दृष्ट्वा, D₃ दृष्ट्वा (for दृष्ट्वा) D₉ T₁ 3 G₃ 4
 M₂ Cm tp भग्ना, C₆ k t as in text (for मुक्ता) —°)
 S₁ D₁₋₃ 7 12 कुशनाम (S₁ D₁ 7 °भ) सुतासदा —After
 24^{ab} D₂ 7 ins (om 1 x) 785* —°) C₆ हर्ष (as in
 text) S₁ D₁₋₃ 7 12 हर्ष (D₁ °पद्) वाण्या (D₁ वाण्या
 [sic] D₁₂ वाक्या) कुलेक्षण —For 24^{ad} N V B
 D₁₋₁₀ 11 13 M₄ subst

786* विस्मय परम चक्रे मुमुदेऽभिनन्द च ।

[V₁ D₁₀ [S] ति, V₂ च, V₃ चाभिनन्द (hypermetric)
 (for अभिनन्द) D₁₁ मुमुदेव सेव्य (for the post half)]

25 V₂ om 25 and 26 —°) B₄ कृतोद्वाहं V₁ 2 4
 D₁ M₄ च (for तु) S₁ D₁ 11 12 राता (D₁₂ °ज्ञा) वै (for

सोमदापि सुसंहृष्टा पुत्रस्य सदृशी क्रियाम् ।

यथान्यायं च गन्धर्वी क्षुपास्ताः प्रत्यनन्दत ॥ २६

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे द्वाविंशः सर्गः ॥ ३२ ॥

राजान्) —^६) G₃ ब्रह्मदत्तो S₁ D₃ 13 महासुनि, N₁ V₂ 4 B₁ 2 4 D₁ 1 7 M₆ रघुत्तम, N₂ B₃ (m also as in B₁) V₁ D₃ 10 13 रघुद्वह, D⁺ D₃ 8 9 महोपति, D₁₁ रघुद्वहे (for महोपति) —^७) V₂ प्रिययामास स तदा —^८) G₃ damaged from जे up to सु in 26^o N₁ V₁ 2 4 B D₁ 3 10 11 13 M₆ स्व(D₃ स)पुर परमाचिद (V₂ "माचित, D₂ 3 "मर्द्धिमत्), D₇ पुरे परमयर्मेविद

26 V₂ om 26 G₃ missing up to सु (cf v l 25) —^९) S₁ D₃ सोमपाणि D₃ सोमदाया, D₁₁ सोमपायी, G₄ "तु (for सोमदापि) S₁ D₃ 13 तु (S₁ सु)ता प्राप्य, D₁ D₄ 8 9 T₃ सुतं दृष्ट्वा (for सुसंहृष्टा) —^{१०}) S₁ D₃ सरणी, D₁ M₂ "द्री, D₄ 9 14 T G₃ M₂ C v r m सरदा, D₁₂ "ता, Ck t as in text (for सरती) S₁ D₃ 12 M₂ दिया, D₃ क्रिः, Cr दिया, Cm k t as in text (for दियाम्) G₃ पुत्रस्या^{११} C₆ पुत्रसदृशी क्रियाम् । C₆ —^{१२}) G₁ तु (for च) M₂ मधर्वा —^{१३}) D₃ क्षुपाः, D₃ क्षुपाला (for क्षुपाला) —For 26^o S₁ D₃ 12 subst

१२^७* कन्या गृहोया सेव्य्य बुदाजाम तदा ययी ।

—For 26, N₁ V₁ 2 4 B D₁ 3 7 10 11 13 M₂ subst

१२^८* तं तदा सत् शरीरं त्वित पुत्रमागाम् ।

मुमुदे सोमदा मीमा दृष्ट्वा सामिनन्द च ।

[(1 1) B₁ त दृष्ट्वा, D₁ 2 13 त तया D₃ 7 ततश्च (for त तदा) D₁₁ त ददौ तदा दौरे (for the prior half). B₁ भविन (for भविन) —(1 2) D₁ 3 7 [5] ली तदा, D₁₁ 13 सोमदा M₆ सोमदा (for सोमदा) V₁ प्रीत्या, D₁ 3 7 M₆ इ(D₃ *) दृष्ट्वा D₃ तन (for श्रीता) V₂ दृष्ट्वा तामिदं D₁ 3 7 M₆ मुनी(D₃ *) "ने (M₆ ता) D₁₀ दृष्ट्वा सामिन्नवि च, D₁₁ दृष्ट्वा तेषि, D₁₃ दृष्ट्वा तामि (for the post half)]

—After 26 D₁ D₄ 8 9 14 S (except M₆) Ck t ins

१२^९* दृष्ट्वा दृष्ट्वा च ता कन्या बुदानाम प्रसस्य च ।

[D₁ T₃ G₄ M₂ दृष्ट्वा (for first M₂ for second दृष्ट्वा) D₃ तदा ययी (for प्रसस्य च)]

Colophon —*Āṇḍa name* S₁ N₂ V₂ D₁ 4 10 12 om V₁ 3 B D₁ 11 आदि, D₃ अयोध्या —Before Sarga name D₁ 3 12 बालचरिते —*Sarga name* S₁ D₁ 3 5 7 12 वैरादिको नाम, N V B D₃ 11 प्रह्लादक्षत्रिणादो(D₃ "ह) —*Sarga no* (figures words or both) S₁ N₁ V₁ 1 B₁ 1 D₁ 5 11 12 om N₂ B₁ 3 D₁₀ 35 V₂ 37, V₂ 34 D₁ D₄ 5 11 S 33 D₁ 7 26 D₂ 27 D₃ 36 D₁₃ —आदे— दत्त—नाम—त्रिदा —33 (dash indicates lacuna) —After colophon T₃ concludes with श्रीरामच दाय नम, G₁ 1 4 M₂ श्रीरामाय नम, G₃ श्रीमते रामानुजाय नम..

कृतोद्वाहे गते तस्मिन्ब्रह्मदत्ते च राघव ।
अपुत्रः पुत्रलाभाय पौत्रीमिष्टिमकल्पयत् ॥ १
इच्छां तु वर्तमानायां कुशनाभं महीपतिम् ।
उवाच परमप्रीतः कुशो ब्रह्मसुतस्तदा ॥ २
पुत्रस्ते सदृशः पुत्र भविष्यति सुधार्मिकः ।
गार्धि प्राप्स्यसि तेन त्वं कीर्तिं लोके च शाश्वतीम् ॥ ३
एवमुक्त्वा कुशो राम कुशनाभं महीपतिम् ।

33

1 ^a B₃ कृतोद्वाहो Śi D₅ 12 तदा, D₂ ३ 7 तत्स, T₂ कृते (for गते) —^b D₁₂ ब्रह्मदत्तो Śi तदा नृप, Ñ V B (B₁ marg) D₁ 2 10 13 नराधिपे, D₃ 6 7 11 12 M₂ 4 नराधिप (D₃ 7 °प), M₃ तु° (for च राघव) —B₁ reads from 1° up to 3° in marg —° Śi Ñ V B D₅ 10-13 कुशनाभोय, D₁-3 7 M₄ पुत्रकामीया, Ct as in text (for पुत्रलाभाय) —^d T₃ G₄ पौत्रम्, Cg पौत्रीम् (as in text) G₁ अकारयत् (for अकल्पयत्) Śi Ñ V B D₅ 10 13 पुत्रीयामिष्टितारभव (Ñ V₂ 4 B₂ 4 नयत्, B₁ 2 D₁₀ 13 ह्वत्) D₁-3 7 M₄ राजा चेष्टिमकारयत्, D₉ पुत्रेष्टिं समकल्पयत्

2 B₁ reads 2 in marg (cf v 1 1) —^a Ñ V B D₁₀ 13 तस्या च, D₃ इष्टा तु, D₄ °च, D₉ °प्र (for इष्टया तु) Śi D₃ 5 7 12 13 तदा नृप, Ñ V B D₁₀ 11 उपागत (B₁ °मत्), M₄ महायशः (for महीपतिम्) D₁ 2 तस्यामिष्टया तदा राम वर्तया सद्युपागत —G₃ damaged from परम up to पुत्रस् in 3° —° Dt D₄ 6 8 9 14 T G₁ 2 4 M₁ 4 परमोदार (for परमप्रीत) —For 2°^d, Ñ V B D₁ 2 10 11 subst

790* कुशो ब्रह्मसुत पुत्रमुवाच स तदा नृपम् ।

[D₁₁ तत्र (for पुत्रम्) D₁ 2 11 कुशनाभमुवाच त (D₁₁ ह) (for the post half)]

3 B₁ reads 3^{ab} in marg (cf v 1 1) —^a D₂ 7 पुनत्, G₃ damaged (for पुनस्) D₉ शक्रसदृशो, D₁₁ भविता° (for सदृश पुत्र) —^b M₂ सुधार्मिक Ñ V B D₁ 2 10 13 भविता (D₁₁ सदृशो) नयितारदिव (V₄ °ह, D₁₁ °ति) —T₃ om (hapl) 3°-6° —° D₁₂ गार्धि, M₃ (before corr sec m as in text) गार्धि (here and below) (for गार्धि) D₇ लोकेस्मिन्, G₃ M₃ येन°, Cg k t as in text (for तेन त्वं) —^d V₄ B₄ D₃ लोकेषु —For 3°^d, Ñ V₁ 3 B₁ 5 D₁ 2 10 11 M₄ subst while V₄ (reads in marg also) B₄ ins after 3

791* मम वंशो महातेजा कौशिकोऽपुनर्मवृत्ति ।

जगामाकाशमाविश्य ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥ ४
कस्यचित्त्वथ कालस्य कुशनाभस्य धीमतः ।
जज्ञे परमधर्मिष्ठो गाधिरित्येव नामतः ॥ ५
स पिता मम काकुत्स्थ गाधिः परमधार्मिकः ।
कुशवंशप्रसूतोऽस्मि कौशिको रघुनन्दन ॥ ६
पूर्वजा भगिनी चापि मम राघव सुव्रता ।
नाम्ना सत्यवती नाम ऋचीके प्रतिपादिता ॥ ७

[V₄ कौशिको D₂ तु महापति D₁₁ [°ऽपुनर्मवृत्ति]

4 T₃ om 4 (cf v 1 3) —^a Dt उक्ता (sic) M₃ मत्वा (for उक्त्वा) D₂ ततो, G₂ कु* (for कुशो) B₁ D₅ 12 M₁ Ctp नाम (for राम) —^b D₂ 10 कुशनाभ, D₇ 9 °ति —G₃ damaged from माविश्य up to त्व in 5° —° Śi D₅ 12 13 आस्थाय (for आविश्य) D₂ जगामोदिश्य चाकाश —^d Cg सनातन (as in text) Ñ V B D₁ 3 7 10 11 M₄ पुन (D₂ °प्र [sic]) रेव दयागत

5 T₃ om 5 (cf v 1 3) G₃ damaged up to त्व (cf v 1 4) —^a D₁₀ T₂ °दथ, D₁₁ कस्य किञ्चन (sic) D₁₂ °त्व* (for कस्यचित्त्वथ) —° Śi सतुष्टो, G₂ M₁ धर्मज्ञो (for धर्मिष्ठो) Ñ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ ज (D₁₃ प्र) जायत सु (V₃ त) तो राम —^d D₄ G₁ विश्रुत (for नामत) Śi D₁ 12 गार्धिनो नाम सुनस्त, Ñ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ गार्धिनो महायशः, Ck as in text (for ^d)

6 T₃ om 6^{ab} (cf v 1 3) —^a Ñ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ धर्मा मा (for काकुत्स्थ) —^b M₄ गाधि (sometimes °ति also) (for गाधि) Ñ V B D₁-3 7 10 11 13 M₄ सत्य (V₁ शक्र) पराक्रम —° G₁ प्रभूतो (for प्रसूतो) Śi D₁ 12 कुशदेव प्रसूता स्म, Ñ V B₁ 3 D₁-3 7 10 13 M₄ कुशवंशोभवद्गात्रा (V₃ °गात्रा [sic]) B₂ 4 °वशोभव चाह (B₄ राम), D₁₁ °वशोऽवस्थाह —^d Śi D₅ 13 कौशिका (sic) Ñ V B (B₂ m also) D₁₀ 11 13 गार्धिजो, Cg k t as in text (for कौशिको) D₂ नाम वन्दन, D₁₃ हे रघूदह

7 G₂ om (hapl) 7 10 G₃ damaged from सैन up to य in ° —^a Ñ V B D₂ (m also as in text) —11 13 M₄ अनुजा, Cmg k t as in text (for पूर्वजा) Śi D₅ 12 वैव, V₁ जज्ञे, D₉ वापि (for चापि) —^b D₅ 13 T₁ 2 G₂ M₁ सुवत Ñ V B D₁ 11 M₄ मम जज्ञे (V₁ चापि, V₂ युष्) शुभमया (V₁ °त), D₁₀ समजज्ञे शुभमया —° B₄ D₁ 9 G₁ राम, T₃ नामा (sic) M₄ चापि, Ct as in text (for नाम) —B₄ reads 7° in marg —^d V₃ मरीचीके (hypermetric) M₄ सार्चीके (for मरीचीके)

सशरीरा गता स्वर्गं भर्तारमनुवर्तिनी ।
कौशिकी परमोदारा ता प्रवृत्ता महानदी ॥ ८
दिव्या पुण्योदका रम्या हिमवन्तपुषाश्रिता ।
लोकस्य हितकामार्थं प्रवृत्ता भगिनी मम ॥ ९
ततोऽहं हिमवत्पार्श्वे वसामि नियतः सुखम् ।
भगिन्याः स्नेहसंयुक्तः कौशिक्या रघुनन्दन ॥ १०
सा तु सत्यवती पुण्या सत्ये धर्मे प्रतिष्ठिता ।

पतिव्रता महाभागा कौशिकी सरितां वरा ॥ ११
अहं हि नियमाद्राम हित्वा तां समुपागतः ।
सिद्धाश्रममनुप्राप्य सिद्धोऽस्मि तत्र तेजसा ॥ १२
एषा राम ममोत्पत्तिः स्वस्य वंशस्य कीर्तिता ।
देशस्य च महाबाहो यन्मां त्वं परिच्छसि ॥ १३
गतोऽर्धरात्रः काकुत्स्थ कथाः कथयतो मम ।
निद्रामभ्येहि भद्रं ते मा भूद्विघ्नोऽप्यनीह नः ॥ १४

8 G2 om 8 (cf v l 7) —^b) Cg k t as in text (for ^b) —For 8^{ab}, S1 D1-3 7 12 subst

792* भवतारमनुवर्त्यन्ती सशरीरा दिव गता ।
[D2:शरीरा D1 सा गता च सुरास्य (for the post half)]
while N V B D10 11 13 M4 subst

793* भर्तुमत्त्वाद्भर्तृव सह गत्वा मुरालयम् ।
[N V4 B2:3(m as above) D10 तवैव (for भवैव)
V2 भर्तुमत्त्वाद्भर्तृव (for the prior half) V2 तत्र गत्वा, M4
गता सह (for सह गत्वा)]

—^c) D1-3 7 M4 [हृ परिहृत्यात्ता (D2 *) (for परमो-
दारा) In N1 fol are missing for the portion
from नदी in ^a up to I 52 20^b (up to स्थाना) —^a)
S1 सात्र वृत्ता, B1 D1-3 7 M4 प्रवृत्तेय, Dt D2:3 7 T1 G1 3
M1-3 Ct प्रवृत्ता च, D10 या प्रवृत्ता (for सा प्रवृत्ता)

9 G2 om 9 (cf v l 7) —^{ab}) S1 स्वर्ग, N2 V1 3 6
B D10 13 स्वर्गा, V2 दुर्ग, D5 11 12 स्वर्गा, T3 दिव्य, Cm g
as in text (for दिव्या) D5 11 12 अपाश्रिता D1-3 7 M4
भृशे पुण्यजला राम हिमवत्प्रभवा शुभा —B1 om (hapl)
9^c—12^b G3 damaged from हित up to वत् in 10^a —^c)
Dt D2:3 Ck t-कार्यार्थ, Cm g tp as in text (for-कार्यार्थ)
N2 V B2-4 D1-3 7 10 11 12 M4 ह्य (D1-3 M4 'मे') पाव
(N2 B3 पार, D1 तार) यितु लोकान् (D1 3 7 M4 'क' —^d)
D2 प्रदत्ता —After 9 D2 3 7 10 12

794* लोकस्य हितकामार्थं (9^c) वित्याला भुवनत्रये ।

10 B1 G2 om 10 G3 damaged up to वत्
(cf v l 9 and 7) —^a) N2 V2-4 B2-4 D10 11 M4 Cm t
जतो: V1 गुता, D13 अह, Cg k as in text (for ततो) S1
D5 13 हिमवत्, D13 हि हिमवत् (for सः हिमवत्) S1 D2
पा (D1-या) र्थ —^b) N2 V B2-4 D2 4 7 9 10 13 T1 3 G1 3
M1-3 नि (B1 D13 नि) रत (for निवत्) S1 D5 13 निवसासि
वत् (S1 यथा) N2 V2-4 B2-4 D1-3 7 10 13 M4 सुखी, V1
सदा (for सुखम्) Ck t as in text (for ^b) —^c) S1
भगिन्या (sic) Dt D2 6 9 11 T G2 M1-3 Ck t भगिन्या
Dt G1 3 M4 भगिन्या N2 V B2-4 D1-3 7 9 10 13 M4
चेहोतो राम —^d) Dt D2 6 9 11 T G1 3 4 V Ck t कौशिक्या
(G1 4 'यया') N1 V B1 4 D1 3 7 10 13 M4 नियतवत

(V4^c त) (for रघुनन्दन)

11 B1 om 12^{ab} (cf v l 9) S1 om (hapl ?)
11-12^{ab} —^a) N2 V B2-4 D5 10-13 सैपा, D1-3 7 M4 'हि
(for सा तु) B2 पुण्य (for सत्य) B2 रम्या, D1 7 नाम,
D2 3 राम, D12 पुण्यात् (for पुण्या) —^b) D2 6 सत्य (for
सत्ये) D5 12 च सत्पिता (for प्रतिष्ठिता) N2 V B2-4 (B3
m also) D1-3 10 11 13 M4 सत्यधर्मे (N2 V1 B3 D1-3 10
'मत' परायणा (B4 'कृता'), D7 राम सत्यपरायणा, Cm t as
in text (for ^b) —^c) D10 महाभाग —^d) T2 G4 वर
(for वरा)

12 S1 om 12^{ab} (cf v l 11) G3 damaged from
म in ^a up to ^b —^a) N2 V1 3 B D10 13 च, V2 4 D1-3 6
7 11 12 तु (for हि) Cm g k t नियमाद् (as in text) N2
V B D1-3 7 10 13 नियम (B1 'क') कं (V1 4 B1 किं)
विद्, D5 11 12 नियमस्यास्य (for नियमाद्राम) —^b) D9
समुपस्थित (for 'पागत') N2 V B D1-3 7 10 13 आस्थातुं
(D1 3 7 'य') रघुनन्दन, D2 आस्थातुं नियम गत, D5 11 12
सिच्छय रघुनन्दन —^c) G3 *** मम् (for सिद्धाश्रमम्) S1
N2 V B1 3 4 Dt D5 10-13 M4 अनु प्राप्त D1-3 7 सिद्धा
श्रमपदं यत्र —^d) V2 D11 [5] ह (for 5 स्मि)

13 ^a) V2 B1 G4 एष (sic), D2 सैपा (for एषा) S1
V B1 3 D1 3 7 11 13 M4 मयोत्पत्ति, B4 ययोत्पत्ति, G4 M4
महोत्पत्ति, Cg k t as in text (for मयो) —^b) N2
V B D1-3 7 10 11 13 M4 चा (D2 वा) स्य (B1 राम, B2
[अयं च [by transp]] सिद्धिर्त्ति (V2 D2 'च, V2 4 B1
D13 'सि'), Dt D2 3 9 हि, D5 'महोत्पत्तिर्', G1 3 'भाग
(for च महाबाहो) —^d) V2 M4 यस्मात्, D2 3 11 यन्मा
(for यन्मा) D2 om त्वं (submetric)

14 ^a) N2 V2-4 B1 3 4 D10 11 13 M4 स्थितो, D2 गते,
D7 गता, G4 ततो, Cm g k t as in text (for गते)
D2 रात्रि, D2 रात्र, D7 9 रात्रि, Cm g k as in text
(for रात्र) —^b) S1 N2 V B D1-4 7 10-11 M4 4 कथां (D1
कथां कथा [ditto]] (for कथा) —S1 D5 13 read D1 9
repeat (var) 14^a after 796^a (D5 after 18) G3
damaged from ते in ^a up to ह in ^a. —^c) S1 N2 V B
D1 3 9-13 (D1 9 second time) भवन्, D1 (first time) 3 7
उपेहि (for अभ्येहि) D1 (first time) ते भद्रं (by

निष्पन्दास्तरवः सर्वे निलीना मृगपक्षिणः ।
 नैशेन तमसा व्याप्ता दिशश्च रघुनन्दनः ॥ १५
 शनैर्विद्युज्यते संध्या नभो नैत्रैरिवावृतम् ।
 नक्षत्रतारागहनं ज्योतिर्भिरवभासते ॥ १६
 उचिष्ठति च शीतांशुः शशी लोक्तमोनुदः ।

transp) M० उपैति निद्रा भद्रं ते —^d Cg k मा भूद्भिरो
 ध्वनि (as in text) S१ D० १ (second time) 11.12 विप्रो
 वै माध्वनोस्तु न (S१ व) , N१ V१ 5 4 B१-4 D१ (second
 time) 10 विप्रो माध्व (B१ साधु) नो (V१ माधुना) तु न , V१
 B१ विप्रज्वलो (B१ नाशो) ध्वनोस्तु न , D१ (first time) 3-7
 माध्वनो (D१ ०नुना) विप्रमस्तु न (D१ ते) , D१ (second
 time gloss) न अथन जय विप्र निशाचरेभ्य मास्तु, D१
 विप्रोय मास्तु नोनुना —After 14 B१ ins

795* प्रातरेव हि वजस्य यच्छृणुसि रघूत्तम ।

15 °) V१ ति स्वदास (sic) , D१ 14 निष्यदास, Cg k t
 as in text (for निष्पन्दास्तरवः) S१ D१-3 5 7 11 12 निष्यद
 (D१ 5 7 11 १२) स्पर्धणास्तरव —^d S१ V१ 2 4 B D१ 3 5 7
 10-12 सलीन (B१ 4 D१ 10 12 ना) , N१ V१ सलीला (V१
 ०ल) , Cg t as in text (for निलीना) D१ प्रविलीनमृगादरा
 —°) M१ [अ] व्यक्ता (for व्याप्ता)

16 °) G१ नदौर् (metathesis) (for शनैर्) Dt D० 8
 Ct त्रिष्युज्यते, Cr mg k विद्युज्यते (as in text) —^d D१
 (before corr) हव (for सव) D१ 1 T१ 5 G१ M१ अवभा
 (T१ ०पा) स्वते, G१ M१ हव भास्वते, Cr mg k t अवभासते
 (as in text)

17 G१ damaged from शी in "up to लो in ^d —^a)
 Dt D० 8 Ct उचिष्ठते, Cg k ०ति (as in text) —^c D१
 हृदयन् (sic) —^d Dt D० 8 स्वया, M१ विषु (for विमो)

18 °) G१ राजस (for राक्षस) —^d D१ ये चान्ये
 पिशिताशिन —For 16-18 S१ N१ V B D१-3 5 7 10-12 M१
 subst

796* सूक्ष्मेणाञ्जनचूर्णेन नभः कृच्छामिवाञ्जितम् ।
 ग्रहनक्षत्रवारामि काञ्चनीमिरिवावृतम् ।
 उदेति चासी शीताशूलैरवकांनो निशाचर ।
 अंशुमि स्वैर्जगच्छीतेर्धर्मात् हृदयप्रिय ।
 निशाचराणि सत्त्वानि छष्ट प्रतिकर्तन्ति च । [5]
 यक्षरक्षोगणाश्चैव ये चान्ये पिशिताशिन ।

[(1 1) D१ 7 M१ [अ] जगत् (D१ ०) जैन V१ शुभेर्नाञ्जनचूर्णेन
 (for the prior half) D१ कृष्णम् (for कृष्णम्) N१ V१
 [अ] शिखि (sic) V१ M१ [अ] शिखि V१ [अ] शिखि , B१ [अ] शिखि
 D१ [अ] शिखि, D१ 1 [अ] जगत् (sic) (for [अ] शिखि) —B१
 om (hapl) 1 2 —(1 2) D१ न ग्रहनक्षत्र (hypermetric)
 —B१ om from the post half of 1 2 up to the
 prior half of 1 3 S१ D१ 11 काञ्चनमिर् V१ अना, V१ अनाति

हृदयन्प्राणिनां लोके मनांसि प्रमया विमो ॥ १७
 नैशानि सर्वभूतानि प्रचरन्ति ततस्ततः ।
 यक्षराक्षससंघाश्च रौद्राश्च पिशिताशनाः ॥ १८
 एवमुक्त्वा महातेजा विरराम महाप्रुनिः ।
 साधु साधितं तं सर्वं मुनयो ह्यभ्यपूजयन् ॥ १९

(for इवावृतम्) D१ काचनमिर्वा कृतां (sic) , M१ काचनमिर्वा-
 वृत (for the post half) —(1 3) D१ उदितवांश —(1
 4) V१ ०रवच्छेद, B१ ०रवच्छेद, D१ ०च्छेद (for जगच्छेद)
 S१ D१ 3 5 7 11 12 स्वैर्जगत् (by transp) हृदयते (for the
 prior half) S१ V१ D१ 5 धर्मात् (D१ ०ति) V१ 2 D१ 7
 ०ति, D१ 10-12 ०ति, M१ ०ते (for धर्मात्) S१ D१ 3 5 7 11 12
 रघुनन्दन (for हृदयप्रिय) —S१ D१ 12 om 1 5 —(1 5) D१
 सर्वाणि, M१ सत्त्वानि (ditto) (for सत्त्वानि) V१ कृष्ट V१
 हृष्ट (for छष्ट) V१-4 B१ (m also) ०रि, B१ D१ M१ प्रवि, B१
 प्र, D१ ०रति (for प्रतिकर्तन्ति) D१ 3 7 हि (for च)
 D१ सत्त्वानि विचरन्ति च (for the post half) —(1 6) S१
 D१ नगाश्चैव S१ V१ M१ ०शिन, B१ [5] पि निशाचरा (for
 पिशिताशना)]

Thereafter S१ D१ 12 read D१ 9 (after 18) repeat
 14^d

19 °) D१ १ कौशिको वै (for महातेजा) —^d S१
 विश्वासिप्रो, G१ lacuna for पि (for विरराम) S१ D१ 12
 ०नुदि, D१ ०ति, D१ ०नुदि (for महाप्रुनिः) —^d S१ D१
 तत्, D१ D१ 5 12 13 M१ ते (for त) —^d D१ 9 T१ G१ 13
 M१-3 नृपयो (for मुनयो) S१ D१ 12 प्रत्य, N१ V B
 D१-3 7 10 11 13 प्रसासिर्, G१ ह्यस्य (sic) , M१ सप्त (for
 ह्यभ्यपूजयन्) —After 19, Dt D१ 5 8 9 12 S Cm g k t
 ins

797* कौशिकतामय वशो महान्धर्मपर सदा ।
 दक्षोपमा महामान कुशवदया नरोत्तमा ।
 विशेषेण भवानेव विश्वामित्रो महायशः ।
 कौशिकी सरिता श्रेष्ठा कुलोद्योतकरी वव ।
 इति तैर्मुनिपाराङ्गैः प्रशस्त कुशिकामज । [5]
 निद्रासुपागमच्छीमानस्तगत इवाशुमान् ।

[(1 1) Dt D० 8 M१ Cm g k t कुशिकानम् D१ G१ 3
 कौशिका (D१ ०) ना तु (D१ ०) नाम यशोव (for the prior
 half) D१ 9 M१ महा (for महान्) T१ महाधर्मपरस्य (sic)
 (for the post half) —(1 2) G१ महायशः (for दक्षोपमा)
 M१ च शराम् (for महात्मान्) T१ G१ नृपया M१ नृपे (for
 नृपया) —(1 3) T१ विशेषेव (sic) (for विशेषेण) G१ महा,
 M१ महातेजा (for भवानेव) D१ महायशः (before corr ०शा)
 Dt D० 8 G१ M१ Cm t विश्वामित्र महायशः (for the post
 half) —(1 4) D१ 9 T१ G१-3 M Cm च सरित्ते (T१ नदीये) क
 —(1 5) Dt D० 8 इति, M१ यव (for इति तैर्) D१

रामोऽपि सहसौमित्रिः किंचिदागतस्मियः ।

| प्रशस्य मुनिशार्दूलं निद्रां समुपमेवते ॥ २०

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे त्रयविंशः सर्गः ॥ ३३ ॥

३४

उपास्य रात्रिशेषं तु शोणाकूले महर्षिभिः ।

निशायां सुप्रभातायां विद्यामिश्रोऽभ्युपगत ॥ १

सुप्रभाता निशा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते ।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ मद्रं ते गमनायामिरोचय ॥ २

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य कृत्वा पौनर्द्वितीयं क्रियाम् ।

गमनं रोचयामास वाक्यं चेदमुपाच ह ॥ ३

G1 मुनिशार्दूल M1 (after corr as above) प्रस्थित (for प्रशस्त) D1 कौशिकालय — (1 6) G1 °च्छीप्रम्, M1 उपागत श्रीमान् (for उपागतच्छीप्रम्) D1 11 T1 1 G2 4 M1 3 4 श्रीमान् सप्तमिर्वा (G2 M1 °तां शुभम् Ctp as above (for the post hall) ॥ Ch असन्निवेशादि । अस्तमितोऽयम् एवै यस्मै स तथा । ॥

20 V1-4 B1 D1 om 20 V1 repeats 20 (var) before I 34 1 —" S1 V1 (second time) B2 D2 5 7 11 12 रात्रौपि समीमिति —" M1 कचिद् —" S1 V1 (second time first time as in B2) D2 12 प्रवर्तते, B2 4 D10 13 प्रणय, D2 प्रवर्तते, Ck as in text (for प्रवर्तते) D2 मुनिशार्दूल B2 D1 प्रशस्य मुनिश्रेष्ठ —" S1 N2 B2 4 D2 5 7 10-12 M1 निद्रानरासुपेयिवान् (M1 °पागमत्) V1 (first time) निद्रानरासुपालन, (second time) निद्रा समुपेयिवान् (submetric) Cg kt as in text (for " ॥ Ct सेवते सेवते स्म । ॥

Colophon —*Handa name* S1 N2 V1 Dt Du om V2-4 B D10 नादि, D1 बालचरित्रे, D2 अयोध्या —*Sarga name* S1 N2 V B-4 D1 5 7 11 12 (V2 adds शोणनीर नियम before विशा°) विशामित्रवचनानु S1 V1 B2 4 D1 12 °चत°वीतनं (D1 °नो), B1 D2 विशामित्रवचनार्णन, D10 विशामित्रवचनोक्तित्व —*Sarga no* (figures words or both) S1 V1 B1 4 D2 5 11 12 om N2 B2 3 D10 36 1 2 38, V2 4 35 Dt D1 4 11 12 S 34 D1 7 27, D2 28, D3 37 D11 —काटे—मित्र—वीतनं पर्वित्वा —*After colophon* T2 concludes with श्रीरामचन्द्राय नमः, G1 2 4 M1 श्रीरामाय नमः G2 भीमते रामायुजाय नमः

34

—Before 1, V1 repeats I 33 20

1 " M1 सुपुता (for उपास्य) M1 ते (for तु) S1 D2 12 रूपीणा तु तत्स (D1 °दा)तेषा, N2 V B D1-3 7 10 11 12 ते रात्रिशेषं (D2 °ते) सुपु (V2 °व्य [sic])यु —" S1 V2 4 Dt D1-5 7 9 11 12 T2 G1 शोणकूले, N2 V1 3 B D10 11 12 M1 शोणनीरे (for शोणाकूले) S1 D2 12 मनोहरे, N2 V B D1 10 11 12 M1 मह (D1 °)र्यय, D2 3 7 समाहिता (for महाभि) —" S1 D2 तु (for सु) N2 V B D1-4 7 10 11 12 M1 प्रभाताया तु (V2 3 B1 4 च) शर्षया

2 D1 reads 2nd in marg (sec m) —" S1 D1 5 12 G1 पूर्व (for पूर्वा) —For 2nd N2 V B D10 11 12 M1 snbst D1 ins after 1 while D-3 7 subst for 2 798° वासल्यामावर्त्तिष्ठ सुप्रभाता निता तव ।

{ D2 7 पुन D1 नम (for मन्त्र) B1 च ते निगा, D1 °च न (for निगा तव)]

—" M1 नरशार्दूल (for उत्तिष्ठ मद्रं ते) N2 V B D1 10 11 12 M1 पूर्वा (V2 4 °वै) सत्यामुपास्येन (M1 °त्येन) —" S1 D2 12 गमनं पुन, V1 गमनायां, B2 4 गमनेनाभि, M1 गमनं चैव (for गमनायां) V1 रोचय

3 " N2 V B1 3 4 D1 10 11 12 V1 तदुक्तोपाय रामोऽपि, B2 युक्तोपाय च रामोऽपि —" S1 N2 V2 4 B2 4 D1 4 5 7 10 12 G1 पुनर्द्वितीयं (S1 D2 12 °का), V2 B1 D2 M1 पुनर्द्वितीय, B2 D1 पौनर्द्वितीय, Cg as in text Ch °द्वितीय (for पौनर्-

अयं शोणः शुभजलो गाथः पुलिनमण्डितः ।

कतरेण पथा ब्रह्मन्संतरिष्यामहे वयम् ॥ ४

एवमुक्तस्तु रामेण निश्वामित्रोऽञ्जरीदिदम् ।

एष पन्था मयोद्दिष्टो येन यान्ति महर्षयः ॥ ५

ह्रिं^१ Dt D₃ ६ ८ T₂ कृतपौर्वाहिकत्रिय (T₂ °या [sic])
—^१ Śi V₄ D₅ 12 G₃ नो (V₄ G₃ चो) दयामास —^२
G₁ ३ [ए] तद् (for [इ] दम्) N₂ V B D₁-3 7 10 11 13 M₄
वचन चेदमवधीत्

4 D₂ 3 7 read accu sing for nom sing in 4^{ab}
—^३ D₄ (before corr) तोय (for शोण) कृ Ch t
शोणैव शोण इति व्यपदिश्यते । कृ Śi V B D₁-3 5 7 10 11 13
M₄ शुचिजलो (D₂ 3 7 °ल), N₂ शुचिन्तो, D₁₂ शुचिजालौ
(sic) (for शुभजलो) —^४ V₁ अगाथ (hypermetric)
D₁ गवा, D₁₀ Cm k t [अ] गाथ, Cg as in text (for
गाथ) Śi D₅ 11 13 द्वागाथ पुलिनान्वित, D₉ गाथ पुलिन
मारिष्यत —^५ Śi D₅ 11 कथमेप (Śi °ते), V₁ 2 B₁ 2 4
D₁₁ 13 कतमेन, V₂ वय वेन (for कतरेण) Śi D₉ 9 12 14
यथा, B₄ ततो (for पथा) —^६ Śi D₅ 13 तरिष्याम सुखे,
N₂ V₂-4 D₁₀ 11 13 तरिष्याम इमे, V₁ भविष्याम इमे (sic)
Cm g t as in text (for सतरिष्यामहे) V₂ 4 स्वय (for
नयम्) —After 4 Śi D₅ 11 12 ins 1 4 of 800*

5 Śi D₉ 9 11 13 om. 5^{ab} —^७ N₂ V B D₁₀ 13 ह्यलुक्
प्रत्युवाचाय, G₁ राधवेणैवमुक्तस्तु —^८ N₂ V B D₁₀ 13 इदं
वच, G₁ °ह्वच (for 5^{प्रवीदिदम्}) —After 5^{ab} N₂ V B
D₁₀ 13 (B₂ D₁₃ repeat 1 3 after 7 and 7^{ab} respy)
ins 1 3-4 of 800* —^९ D₅ 10 मयादि (D₁₀ °द) दो
—After 5 B₂ ins

799* अनेव राम गच्छाम सुखेन च निरामयम् ।

—After 5, K(ed) ins

799a* एवमुक्ता महर्षयो विश्वामित्रेण धीमता ।
पश्यन्तरणे प्रयाता वै यनानि विविधानि च ।

6 °) D₁₁ दीर्घम् (for दूम्) —^{१०} N₂ V B D₅ 10 13
च (for 5^च) N₂ B₂ D₁₀ 13 G₂ तथा (for तदा) —^{११}
B₄ सरित V₄ जाह्वीं तु मरिच्छेदा —^{१२} D₁₁ * * तु (for
दृष्टुर) N₂ V B D₅ 10-13 परमर्षय (for मुनिसेविनाम्)

7 D₁₀ om 7^{ab} —^{१३} N₂ V B D₁₃ तां ते शुचिजलं
दृष्ट्वा —^{१४} Cg k t सारस (as in text) D₈ ईससार
समन्वितो, T₁ ईससारद्वयपुता —^{१५} Śi B₂ (after 7) D₅ 9
(after the first occurrence of 10^{ab} here) 12 13 (B₂
D₁₃ read 1 3 & 4 after 5^{ab}, B₂ repeating 1 3 after
7 D₁₃ after 7^{ab} respy) ins after 7^{ab} N₂ (N₁
missing) V B₁ 4 D₁₀ ins 1 3-4 only after 5^{ab},
D₁-3 7 M₄ subst for 4°-7^{ab}, while D₁₃ ins 1 4 only
after 4

ते गत्वा दूरमध्वानं गतेऽर्धदिवसे तदा ।

जाह्नवी सरितां श्रेष्ठां ददृशुर्मुनिसेविताम् ॥ ६

तां दृष्ट्वा पुण्यसलिलां हंससारससेविताम् ।

बभूवुर्मुदिताः सर्वे मुनयः सहाराधवाः ।

तस्यास्तीरं ततश्चक्रुस्ते आनासपरिग्रहम् ॥ ७

800* (4^{ab}) कथमेता तरिष्यामो गन्तव्यं वा कुतो मुने ।

(5^{ab}) ह्यलुक् प्रत्युवाचेद विश्वामित्रो महासुनि ।

राम कमलपत्राक्ष हर्षयश्चिदमवधीत् ।

गाथ एष महाबाहो तरितव्यो यथासुखम् ।

इतस्त्रियोजनादूर्ध्व संतरिष्याम जाह्नवीम् । [5]

अस्मिन्नेव समुत्तीर्य तीर्थं शोणमिमं नदम् ।

(5^{ab}) एष पन्था शिव क्षेम स्वाहुमूलफलोदक ।

अनेन राम यास्याम पथा सुखमनामयम् ।

(6) { ते तमप्यानमक्तिरासुखेनोत्तीर्य जाह्नवीम् ।

{ ददृशुर्मुनय सिद्धा आश्रमं श्रमनाशनम् । [10]

(7^{ab}) तां ते शुचिजला दृष्ट्वा गत्वा मुनिरनप्रियाम् ।

[(1 1) D₁-3 7 M₄ क (D₁ य, M₄ त) रिम-देये (for

कथमेता) D₂ गमिष्यामो (for तरि°) B₂ च, D₁ तु (for

वा) B₂ D₅ महा, D₁₂ गतो (for कुतो) D₁ मम, D₉ वय

(for मुने) —(1 2) D₁-3 7 °यथा, M₄ शुभजन (for

महासुनि) —(1 3) N₂ V B D₁₀ 13 M₄ (B₂ D₁₃ first

time) तदा संदर्भयति (for the post half) —D₁ 5 7 9 M₄

om Śi D₅ 11 13 ins 1 4 after 4 —(1 4) Śi D₅ 11 13

सोमवीक्षाद्य एषोत्र (for the prior half) Śi V₁ B₄ D₅ 13

°तव्य N₂ V₃ भवि°, B₁ °ष्यामो (for तरितव्यो) —(1 5)

D₁-3 7 रि M₄ [5] र्ध (for रि) B₂ D₄ M₄ संतरिष्यामि

—(1 6) B₂ तरिष्य D₁-3 5 7 13 M₄ कीर्षं Śi D₅ 9 M₄ इद

(for इम) M₄ जन् (for नदम्) —(1 7) D₁ पय (for एष)

—(1 8) D₉ तात (for राम) B₂ D₁ 9 12 यथा (for पथा)

D₃ 7 देतोय तु (D₃ तु) कुतोव (D₃ °व) (for the post

half) —(1 9) D₉ आविष्य (for अविष्यत्) B₂ M₄ ततस्ते

शोण (M₄ °ष्याम) मक्तिराय (for the prior half) M₄ [अ] नील

(for [उ] तीर्य) —(1 10) D₂ दर्श (sic) (for दृष्टुर)

D₉ शुभा (for सिद्धा) M₄ नाश्रममन्विता (for the post

half) —(1 11) The prior half = 7° in D₁₃ B₂ अंतः

D₃ वे तां (by transp) (for तां वे) B₂ दृष्टा (for दृष्टा)

D₂ ततस्ते विमर्शं दृष्टा (for the prior half) D₁₃ -[अ] शिर्या

(for विषयम्)]

—^{१६} D₉ बालाकः (for बभूवुर) D₁₁ मुनय (for मुदिता)

D₁₁ मुष्यान्दिता (sic) (for मुनय) N₂ V₄ B₂ Dt

D₁-4-8-9 T₂ G₁ M₄ transp मुदिता and मुनय Dt

°राधय, D₁-3 7 राधय (D₁ °वत्) तदा (for सहाराधवा)

Śi D₅ 9 13 राधयो मुनयस्तदा (D₅ °या) (for °) V₂

अस्याय Śi D₅ 13 च त V B₁ 4 D₁ 2 7 11 13 G₂ M₄ तदा,

D₂ alleg (for तनय) Dt D₂ 6 9 T₂ तदा तर्ष (for

ततः स्नात्वा यथान्यायं संतर्प्य पितृदेवताः ।
 हुत्वा चैनाग्निहोत्राणि प्राश्य चामृतवद्भविः ॥ ८
 निमिशुर्जाह्नवीतीरे शुचौ सुदितमानसाः ।
 विश्वामित्रं महात्मानं परिचार्य समन्ततः ॥ ९
 संप्रहृष्टमना रामो विश्वामित्रमथाब्रवीत् ।
 भगन्ञ्श्रोतुमिच्छामि गङ्गां त्रिपथगां नदीम् ।
 त्रैलोक्यं कथमाक्रम्य गता नदनदीपतिम् ॥ १०
 चोदितो रामवाक्येन विश्वामित्रो महामुनिः ।
 वृद्धिं जन्म च गङ्गाया वक्तुमेवोपचक्रमे ॥ ११

तत्तत्कृत्स्नम् — After 7°, T₂ wrongly repeats 7° —
 Ñ₂ V₃ B₁ D₁₀ T₁ 2 G₂ M₁ 3 त अ° (without hiatus) B₁ तीर्त्वा°, B₂ G₁ 3 M₂ तदा°, Dt D₁ 6 8 T₃ चतुर्विंश°, D₁ तोया°, D₁₁ सर्पा°, D₁₃ तत्रा°, G₂ M₂ तत्र°, M₃ सदा° (for ते आवास) S₁ D₂ 9 5 7 9 12 निवासं मुनयस्त्वदा (D°श्च ते)

8 °) S₁ D₂ 11 12 सर्वे (for छाया) S₁ Ñ₂ V B D₉ 9 10 12 13 M₂ काले, D₁—3 7 11 काम Cg as in text (for न्याय) —°) Ñ₂ V₂ 4 B₁ 2 4 D₁₀ कृत्वा (for हुत्वा) —°) V₃ प्राप्य, D₃ illeg (for प्राप्य) D₁₄ T₁ 2 G₄ [अ] वुत्तम हवि, Cmg k t as in text (for [अ] मृतवद्भवि)

9 °) Dt D₈ 6 शुभा, Cg as in text (for शुचौ) —°) D₃ विश्वामित्र (for विश्वामित्र) —°) Ñ₂ परिचयं —After 9 Dt D₂ 6 8 Ct ms

8or* विष्टिताश्च यथान्याय राघवी च यथाहृत ।

10 D₉ reads 10° after 7° repeating here —°) S₁ Ñ₂ V B D₂ 3 5 7 9 (second time) 13 G₂ M₂ Cg अथ (S₁ D₂ वसत्, D₁₁ वाक्य) तत्र तदा, D₂ अथ° (for संप्र हृष्टमना) —°) S₁ Ñ₂ V B D₂ 9 (second time) 13 G₂ M₁ अमापत, D₁—2 7 G₁ M₂—4 अष्टच्छत, Cg as in text (for अथानवीत्) —°) D₂ इ* (for इच्छामि) —°) S₁ D₂ M₂ use nom sing for accu sing Ñ₂ V B D₁—3 7 10 11 13 M₂ वयेये सरिता वरा, Cg t as in text —°) M₂ कथं त्रैलोक्यम् (by transp) Ñ₂ V B₂—4 D₁₀ 13 M₂ त्रिलोकः (Ñ₂ V₁ 2 4 D₁₃ त्रैलोक्य) पथगा गगा, B₁ त्रैलोक्य पावनी गंगा, D₁₁ त्रैलोक्यपथमागम्य —°) V₂ तदा तत्र (for गता वद्)

11 °) S₁ D₁—3 5 7 9 12 13 नोदितो, V₁ 2 D₁₁ देशितो (for चोदितो) —°) V₃ भूना, D₁ तदा° (for महामुनि) —°) Cmg k t वृद्धि (as in text) Ñ₂ V B D₁ 10 13 M₂ जममश्नुति (for वृद्धि जमच) —°) Ñ₂ V B D₁ 10 M₂ प्रोवाच प्रमथाम (M₂ अर्थ) D₂ प्रोवाच भगवत्स्वदा, D₁₃ प्रावदप्रमथाम

12 °) Ñ₂ द्विधरात् (for हिमवात्) B₁ Dt D₂—3 T₁ 2

शैलेन्द्रो हिमवान्नाम धातूनामाकरो महान् ।
 तस्य कन्याद्वयं राम रूपेणाप्रतिमं भुवि ॥ १२
 या मेरुदहिता राम तयोर्माता सुमध्यमा ।
 नाम्ना मेना मनोज्ञा वै पत्नी हिमवतः प्रिया ॥ १३
 तस्यां गङ्गेयमभनृयेष्टा हिमवतः सुता ।
 उमा नाम द्वितीयाभूत्कन्या तस्यैव राघव ॥ १४
 अथ ज्येष्ठां सुराः सर्वे देवतार्थचिकीर्षया ।
 शैलेन्द्रं वरयामासुर्गङ्गां त्रिपथगां नदीम् ॥ १५

G₃ राम (for नाम) —°) S₁ D₁—3 5 7 11 12 रत्नात् (S₂ °*) म्, Cmg k t as in text (for धातूनाम्) Ñ₂ B₁ 2 4 D₁₀ 13 रत्नाकरसमन्वित, V₁ वृहद्विश्वरशिताचित (sic) V₂ B₂ रत्नाकरसमाचित (B₂ m also °शता), V₃ रत्नाकरम दाचित, V₄ रत्नाकरशताचित, M₂ नैकरत्नसमाचित —°) D₁₁ कदा (sic) (for कन्या) V₃ स्वय (sic) (for दूय) Ñ₂ V B D₁—3 7 10 11 13 M₂ जज्ञे, G₃ जात (for राम) —°) V₁ 2 4 B₄ D₂ T₂ [अ] प्रतिमा (for [अ] प्रतिम)

13 °) S₁ D₂ 5 9 11—13 सुमेरोद्, Ñ₂ V B D₁₀ मेरोस्तु, D₁ 3 7 सुमेरो, M₂ मेरोया, Cg k t as in text (for या मेरु) Ñ₂ B₂ D₁₀ M₂ नाम (for राम) —°) D₂ तन्मेरोद् (sic) (for तयोद्) T₃ सुमध्यम —°) G₂ M₁ मेना (for नाम्ना) D₁₄ reads वै in marg S₁ Ñ₂ V B D₁—3 5 7 9—13 T₁ 3 G₂ M₁—3 (M₂ after corr sec m as in text) Cg मनोरमा (V₃ था) देवी (S₁ D₂ 3 5 7 11 12 T₁ 3 Cg नाम, D₉ M₂ 3 राम, G₂ M₁ नाम्ना), D₄ G₁ 5 च मेनका रा (D₄ ना) म (G₃ °*) M₂ मेनेति या राम (for मेना मनोज्ञा वै) G₄ मेना मनोज्ञा वै नाम्ना (by transp) Ck मनोरमेति मेनाया नाम 1, Ct या मेरुदहिता मेना नामा Ck —G₃ damaged for —°) Ñ₂ V₁ 3 4 B D₁—3 7 10 11 13 M₂ हिमवतोमवत्, V₂ हिमवतोमवत्, D₉ हिमवतश्च या (for तं प्रिया)

14 S₁ D₂ 9 12 G₃ om 14 —°) V₃ 4 B₁ D₂—4 7 T₃ तस्य, Dt D₁₁ T₂ M₂ तस्या Cg t as in text (for तस्या) V₃ [अ] भनृयेष्टा, B₂ G₁ मममवच (for [इ] यममवच) V₁ गतादेवी महाभाग —°) V₃ श्रेष्ठा (for ज्येष्ठा) D₂ सुता (sic) (for सुता) —D₁₀ om 14° —°) D₁ च, D₂ 3 7 11 तु (for [अ] भृत्)

15 °) D₂ तस्य श्रेष्ठा (for अथ ज्येष्ठा) S₁ D₂ 9 12 राम (for सर्वे) —°) Dt D₈ 8 G₂ 3 M₁ Ct देवकार्य, T₂ (sec m) देवतार्थ, Cmg k t as in text (for देवतार्थ) S₁ D₂ 9 12 द्या सत्रचिकीर्षव —S₁ wrongly repeats 15° 16° after 21° —°) G₁ त्रिपथा (submetric) Cmg k t as in text (for त्रिपथगा)

ददौ धर्मेण हिमांस्तनयां लोकापावनीम् ।
 स्वच्छन्दपथगां गङ्गां त्रैलोक्यहितकाम्यया ॥ १६
 प्रतिगृह्य त्रिलोकार्थं त्रिलोकहितकारिणः ।
 गङ्गामादाय तेजश्छन्दकृतार्थेनान्तरात्मना ॥ १७
 या चान्या शैलदुहिता कन्यासीद्रघुनन्दन ।
 उग्रं सा व्रतमास्थाय तपस्तेप तपोधना ॥ १८

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे चतुर्विंशः सर्गः ॥ ३४ ॥

उग्रेण तपसा युक्तां ददौ शैलरः सुताम् ।
 रुद्रायाप्रतिरूपाय उमां लोकनमस्कृताम् ॥ १९
 एते ते शैलराजस्य सुते लोकनमस्कृते ।
 गङ्गा च सरितां श्रेष्ठा उमा देवी च राघव ॥ २०
 एतत्ते सर्वमाख्यातं यथा त्रिपथगा नदी ।
 स गता प्रथमं तात गतिं गतिमतां वर ॥ २१

16 Śī repeats 16^{ab} (cf v1 15) —^a) Ds हि-
 वास, Ts हि सुरास्, Gs भगवान् (for हिमवान्) Ms तनयां
 हिमवील् (by transp) Ds 12 भाविनी (for -पावनीम्)
 —For 15-16^a, Ns V B D1-3 7 10 11 Ms subst

802* अथ ज्येष्ठा हिमवत सुता गङ्गामनिन्दिताम् ।
 वरयाञ्जलिरे देवा आनकार्यचिकीर्षव ।
 ददौ चापि स धर्मेण तेभ्यश्चैलोक्यपावनीम् ।

[D10 om 1 1 —(1 1) Vs हि हिमवान् (for हिमवत)
 Vs वन्यां (for सुतां) Vs दातुमुपचक्रे (hypermetric) Ds
 श्रद्धाम D7 ज्येष्ठाम (for गङ्गामनिन्दिताम्) —(1 2) D10 वरप
 चक्रेरे Vs B1 D7 आनकार्य, Ms स्वात्माम (for आनकार्य)
 B2 विनीतया (for चिकीर्षव) —(1 3) V1 स्व (for स)
 Ms transp चापि and m D11 धर्मना (for धर्मेण) V1 D11
 -पावनां (for -पावनीम्)]

—^a) Śī Ds 11 12 स्वच्छा त्रिपथगा(D11 **) Ds *गा,
 Cm g.k.t as in text (for स्वच्छ-दपथगां) Ns V B D1-3
 7 10 12 Ms देवीं (for गङ्गां) —Gs damaged from
 म्य in 16^a up to ति in 17^a —^d) Ns V B D10 12 सुतां
 गंगां (Ns V 1 *गा) महानदी D1 3 देवपत्नी महानदी Ms सर्वी
 गंगां महापद्मा

17 Ds 7 12 om (D12 hapl ?) 17^{ab} Gs damaged
 up to ति in 17^a (cf v1 16) —^a) Śī Ds 9 10, Ns V
 B3-4 D12 Ms च गंगा ते D1 3 10 च सा गंगा D14 T1 3 Gs
 Ms ततो देवा, Ct 15 in text (for त्रिलोकार्थं) B1 प्रगृह्य च
 ततो देवा, D11 संप्रगृह्य च तां देवीं —^b) Ds 3 Ts Cm त्रैलोक्य,
 Cg as in text (for त्रिलोक) Śī Ds -काम्यया, Dt
 Ds 8 -कारिण Cm g 15 in text (for -कारिण) Ns V
 B3-4 Dt 2 10 11 12 Ms त्रैलोक्य Ms त्रिलोक) त्रिपथगिणी B1
 गंगां त्रैलोक्यपावनीं —^c) Śī Ds 2 7 9 12 ते अगुरुः D14
 T1 3 G Ms 3 ये गच्छन् Ms चागच्छन् (for तेऽगच्छन्)
 C Cm गच्छन् आगच्छन् Ct दुष्टोपलब्धमगच्छन् C Śī
 D2 3 7 12 दृष्टाया(Ds 7 ध)स्त्रीरात्मनि (for *) Ns V
 B1 D1 2 10 11 12 Ms दयावत् दयुर्दयावत् (D12 *दा) पूर्ण
 मनोरथा

18 *) V2 B1 3 D13 सा (for वा) Ns V B Ds 3 7
 8-12 Ms सु, D1 om (submetric) (for च) Ns V B
 D1 10 11 12 Ms शैलद्र, D14 illeg (for [अ]न्या शैल)
 Ds -सुविता, Ds 12 12 -तनया (for -दुहिता) Śī वावत्सा
 शैलतनया —^b) Cg t कन्या (as in text) Ns V B D1-3
 7 10 11 12 Ms द्वितीया (for कन्यासीद्) —^c) Ct उग्र (as in
 text) Dt Ds 8 उग्र सु, D11 सा चोर्ग्र (for उग्रं सा) Ns
 Vs B3 4 Ds 7 सोर्ग्र (by transp) वरव (Vs तप)मुपाश्रित्य
 (Ds 7 *निद्र, V1 2 4 B1 2 Ds 2 उग्र (V1 सा सु, D1 सार्ध,
 Ds सोर्ग्र) वरमुपाश्रित्य, D10 12 सेयं (D12 जीर्) वरमुपाश्रित्य
 —^d) D11 सुमध्यमा, D14 (before corr as in text) *धन
 (for तपोधना)

19 *) Ns V B D1-3 7 10 11 12 ताम् (Ds *)प्लु (V1 3
 *लु)प्रतप सिद्धा, Ms अयुप्रतपस सिद्धा —^a) Śī -पति
 (for -र) —Note hiatus between * and * —^b) D14
 illeg from द्रा to ति Śī Ds 12 *वीषाय, Ns V B D10 11 12
 याचमानाय, D1-3 7 Ms याचते (Ds *) पथीम्; Cg as in
 text (for [अ]प्रतिरूपाय) —^c) B1 रद्र B4 हमां Ds 3
 उमा, D11 परीं (for उमा) Vs भार, Ms लोक (for लोक)
 Śī Ds 9 12 लोकसंपत्तिनामुमा (Śī ता सुतां)

20 D14 reads 20^{ab} in marg —^a) Ns V B1 3 4
 D10 11 12 हृष्येते Bs हृष्ये, D1 पृथे ते, Ds 3 7 उमे ते, Gs ण्ते
 हि, Gs ण्तेत (sic) (for ण्ते ते) Ms ण्तेते शैलमर्तु —^b)
 Ns V B D1 10 11 12 Ms राम दभृष्टु (for लोकानमस्कृते)
 Śī Ds 12 उमे (Ds कन्ये) सु (Ds तु) दधि (Ds *चदि [b,
 metathesis]) ते सुते Ds 7 कन्ये समुद्रिणे नुमे —^c) D10 om
 20^a-21^a Note hiatus between * and * —^d) V4
 Ds 12 Ts गंगां (sic) Vs श्रेष्ठां (sic) —^e) Śī Ds 12 देवी
 चोमा तपुष्मः Ns V 1 3 B D1-3 10 12 Ms देवी (B1 *ता)नां
 वा(B1 D12 Ms *नाम)नुमा वरा, Vs देवतां च उमा वरा
 14 देवतानामुमा वरा D11 देवी नाम उमा वरा

21 D1 om 21^{ab} (cf v1 20) —^a) Dt Ds 8 Ts
 Ct t *गामिनि Cm 15 in text (for त्रिपथगा नदी) —After
 21^a, Śī wrongly repeats 15^a-16^a —Śī om 21^{ab}

३५

उक्तवाक्ये मुनी तस्मिन्मौ राघवल्क्ष्मणी ।
प्रतिनन्द्य कथां वीरावृचतुर्मुनिपुंगवम् ॥ १
धर्मयुक्तमिदं ब्रह्मन्कथितं परमं त्वया ।
दुहितुः शैलराजस्य ज्येष्ठाया वक्तुमर्हसि ।

—¹) Ds 5 7 9 11 12 गा, Cr m g k t as in text (for ख)
D11 illeg from ग to थ Ds 5 7 11 12 Ts राम, Ds चाम, Ck
तावत् (for तात) —²) Cr m g k t गति (as in text) Ds
वरा (for वर) Ds 5 7 9 11 12 गंगा मतिमता वर —For 21,
N2 V B D1 2 10 11 12 Ms (Ds 11 for 21^{ab}) subst

803* तत्र पावयितुं लोकानिमाखीन्स्वेन तेजसा ।
गङ्गा प्रवर्तते राम सर्वभूतहिते रता ।

[(1 1) Ds तत्र (for तत्र) N2 पारयितु (for पावयितु)
D1 3 11 Ms श्रीनिमान् (by transp) V1 स्वे* [for स्वेन]
Vs श्रीमैश्वर्यतेजसा (for the post half) —(1 2) Ds
Ms वृते (for प्रवर्तते) B2 (m also as above) Ds लोक
(for भूत) Ms स्वलोकमस्तृणा (for the post half)]
—After 21 Dt Ds 5 9 12 S (except Ms) Cn g
(Ck t comm on 1 2 only) ins

804* सैषा सुरनदी रम्या शैलेन्द्रस्य सुता तदा ।
सुरलोकं समाकृत्वा विषया जलवाहिनी ।

[Ds om 1 1 —(1 1) Gs सुरया विमला (for सुरनदी
रम्या) Ds तया (for तदा) —(1 2) Ds Ts विषाय Gs
[अ] नल (for जल)]

Ds cont Ds 5 7 11 12 ins after 21

805* उमा च देवं भर्तारं सप्राप्ता च सुमन्यमा ।

[Ds उवाच (sic) (for उपा च) Ds 7 देवी (for देव) Ds
उमादेवी च सप्तर (for the prior half) Ds सपाल (sic)
(for सप्राप्ता) Ds 7 9 रत्नन्यप (for च सुमन्यमा)]

Colophon. —Kanda name S1 N2 V1 Dt Ds 10 12
om Vs 4 B D11 जादि, Ds 3 ज्योष्या* —Sarga name
S1 N2 V B D1 5 7 10 12 गतोपति, Ds गगानगर
—Sarga no (figures words or both) S1 V1 4 B 4
Ds 5 11 om S1 B 5 D10 37 Vs 39 Vs 36 Dt Ds 5
12 13 35 Ds 1 7 28 Ds 29 Ds 38 Ds बालकाण्डेऽस्य
सप्तत्रिंश (dash indicates lacuna) —After colophon
Ts G1 2 Ms conclude with श्रीरामाय नमः, Gs श्रीमते
रामानुजाय नमः

35

❧ N1 missing sarga 35 (cf v l I 338)

1 ^a) S1 Ds 9 11 Ms 4 तो राम (for राघव) —²) Ds
मतिम् (for सत्य (for प्रतिनन्द) Ds एताम् (for वीराव)
—³) S1 Ds 12 Ms वक्तुम् (for उच्यते)

विस्तरं विस्तरज्ञोऽसि दिव्यमानुषपतंभम् ॥ २
श्रीनयो हेतुना केन पावयेल्लोकपावनी ॥ ३
कथं गङ्गा त्रिपथगा त्रिश्रुता सरिदुत्तमा ।
त्रिषु लोकेषु धर्मज्ञ कर्मभिः कैः समन्विता ॥ ४

2 ^a) S1 Ds 12 सुकरूपम्, Ds (before corr) ब्रह्म*,
Ts धर* (sic) Cn g as in text (for धर्मयुक्तम्) Ds रम्य
(for ब्रह्मन्) —²) S1 Ds 9 12 Ms मधुराक्षर (for परम त्वया)
—After 2^{ab} S1 Ds 9 12 ins 1 3 of 806* —³) Ds
reads ज्योष्या in marg —Ts om 2^{ab} —⁴) Ds द्व
देव्या या (for विस्तरज्ञोऽसि) —⁵) Dt मानस (for
मानुष) S1 Ds 12 कथना दिवि चेह च, Ds त्रिश्रुता
सरिदुत्तमा (—⁴) Ms कथना देवमानुषे —After 2 S1
Ds 12 Ms (om 1 4) ins 1 4 6 of 806*

3 ^a) Ts त्रिपथो, Cr m g k t श्रीनयो (as in text)
—²) Dt Ds (before corr) प्रावयेल् Ms Cg k t प्रावयेल्,
Cgp प्रावयेल् (for पावयेल्), Ds Ms पाविनी (for लोक
पावनी)

4 For 1 4^b, N2 (N1 missing) V B D1 3 7 10 11 12
subst while S1 Ds 12 (all read 1 3 after 2^{ab}) ins 1
3 6 Ms 1 5 6 after 2 and all subst 1 7 8 for 3^a—4^b
Ds ins 1 3 only (om all others) after 2^{ab}

806* उक्तवाक्ये मुनी तस्मिन्नाम पश्यत् तपुन ।
विश्वामित्र सुखासीनं महात्मानं कृताञ्जलि ।
कथेयं कथिता ब्रह्मगुण्यध्रवणकीर्तना ।
या त्वया ता पुन श्रोतुमिच्छामि बहुविस्तराम् ।
उमा केनामर्षदेवी कौमारवतचारिणा । [5]
अवाप देवप्रवरं पतिं भूतमहेश्वरम् ।
हेतुना केन चैवेयं गङ्गा त्रिपथगामवन् ।
कथं देवमदी येय मानुष्यं समुपागता ।

[Ms om 1 1 4 S1 Ds 12 om 1 1 2 —(1 1)
D1 3 7 11 उच (Ds *ऊ) वाच्य D1 3 7 तु त (D1 वे) मान्वा, D11
तु तमयो (for मुनी तस्मिन्) D1 3 7 11 पुनरुच्यन् (Ds *त,
D11 *वे) (for पश्यत् तपुन) —(1 2) Vs तपुन सुखासीन
महात्मानं V1 इतान्तरि वर (for the post half)
—S1 Ds 12 read 1 3 after 2^{ab} —(1 3) Ds इया (for
ब्रह्म) Vs कीर्तिनी, Ds 3 कीर्तन Ds कीर्तनात् Ds कीर्तिना
(for कीर्तना) —(1 4) Vs ता, Ds 7 तु D11 तयात्मानं
(for या त्वया ता) D1 3 7 11 ब्रह्म (for श्रोतुम्) Vs Bs
विस्तर (for विस्तरम्) D1 3 7 11 श्रोतुमिच्छामि विस्तरम् (for
the post half) S1 Ds 12 पुनतां श्रोतुमिच्छामि त्वच्छेदं श्रुतिस्तर
(S1 *त) —For ins. see below —Ds reads 1 5-8
after 4^a —(1 5) Ds [अ] मर्यद् Vs कीर्ति (for देवी)
S1 *पारिणी, N2 1 6 Ds 3 10 12 कौमार (Ds कुमार) ब्रह्मवारी,

तथा ब्रुवति काकुत्स्थे विश्वामित्रस्तपोधनः ।
निखिलेन कथां सर्वामृषिमध्ये न्यवेदयत् ॥ ५
पुरा राम कृतोद्वाहः शितिकण्ठो महातपाः ।
दृष्ट्वा च स्पृहया देवीं मैथुनायोपचक्रमे ॥ ६
शितिकण्ठस्य देवस्य दिव्यं वर्षशतं गतम् ।
न चापि तनयो राम तस्यामासीत्परंतप ॥ ७

D₃ कौमा °, M₄ °*वारिणी (for the post half) —(1 6) Śi D₁₋₃ 5 7 11 12 M₄ अवाप्य (for अवाप) D₃ देवप्रवर D₁₋₃ M₄ °देव, D₂₋₃ पतिदेव (D₂ °*) D₇ °देव (for पति भूत-) —(1 7) V₄ °गामिनी, B₁ ग गता त्रिषाभभव (for the post half) —(1 8) V₃ भूला, D₁ लेय (for चय) Ń₂ V₁₋₃ B D₁₀₋₁₃ मालुगन् (V₁ B₁ °य) (for मालुभ्य) V₄ मर्धनेकपुत्रपागता, D₁₋₃ 7 11 M₄ मलुप लोकमाग (M₄ °त्रि) ता (for the post half)]

Śi D₅ 12 cont while D₂ ins after 1 4 of 806*

807* वथ त्रिषयगा गद्गा प्रोच्यते देवमानुषे ।

[D₂ देवमानुष cf 1 7 of 806*]

—D₁₋₃ 7 M₄ om (hapl ?) 4^{cd} —^c D₉ (before corr) विश्व (for त्रिपु) V₂ 4 D₃ धर्मज्ञा, D₁₀ रिप्याता (for धर्मज्ञ) —^d T₂ M₃ समन्विता, Ct °ता (as in text) Śi 2 V B D₂ 5 10-13 कैश्च धर्मैः D₂ पुण्यैरधि (Śi Ń₂ D₂ 5 12 °नु)ष्टिवा —After 4^{cd} D₂ reads 1 5 8 of 806*

5 °) Ń₂ V B D₁₋₃ 7 10 11 13 M₄ एव, G₁ 2 इति, Cm g as in text (for तथा) D₁₀ काकुत्स्थो Śi D₅ 12 तथा तपोस्तु सुवरोद् —^b Śi Ń₂ V B₂ 4 D₁ 5 10 12 13 महातपा, B₁ महातपा (sic) D₆ G₁ महामुनि, D₂ 7 M₄ महाशरा (for तपोधन) —^c Ń₂ V B B D₁₋₃ 7 10 13 M₄ विस्तरेश, Cm g k t as in text (for निखिलेन) Śi D₅ 12 द्विष्याम्, Ń₂ V₁₋₃ B D₁₋₃ 7 10 11 13 M₄ पुता, V₄ पुता, Cg as in text (for सर्वम्) —^d Śi D₂ 5 7 12 ततोयधीद्, D₉ निवेदयद् (for न्यवेदयद्) Ń₂ V B D₁ 2 10 11 13 M₄ व्या (V₁ M₄ आ)स्यानुमुपचक्रमे.

6 °) D₁ श्रुत्वा (for पुरा) D₁ हृतोद्वाह —^b V₃ °बृह, D₁₀ T₂ 2 G₁ नील (for निखिलेन) D₁ निखिलं सुमापति —^c D₁ D₆ 8 9 (before corr as in text) भगवान्, Cg as in text (for स्पृहया) D₆ G₁ देवी, Ck as in text (for देवी) Śi (marg as in D₆ also) Ń₂ V B D₂ 5 10-13 M₄ उता च (D₂ उताप, M₄ उता रि) स्पृहया देवी (B₄ D₃ M₄ वी), D₁ उतापि च उता देवो, D₁₀ उता चाप्य द्रिया देवी —^d Śi Ń₂ V₁₋₃ B D₁₋₃ 7 10-13 [उ °प (Śi °* B₁ [अ रि) तमत्] V₄ [उ पचयद्, Cg as in text (for [उ पचयते) —After 6, Śi (marg) D₁ D₆ 8 9 (inf lin sec m) ins, while D₄ ins after 7^{ab} -

ततो देवाः समुद्रिषाः पितामहपुरोगमाः ।
यदिहोत्पद्यते भूतं कस्तत्प्रतिसिंहियते ॥ ८
अभिगम्य सुराः सर्वे प्रणिपत्येदमब्रुवन् ।
देवदेव महादेव लोरुस्यास्य हिते रत ।
सुराणां प्रणिपातेन प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ ९

808* तस्य सत्रीडमानस्य महादेवस्य धीमत ।

[Śi च स्पृधे° (for सत्रीडमानस्य)]

7 °) V₁ D₆ शितिकण्ठ Śi Ń₂ V₁ 2 4 B D₁ 2 5 10-13 देव्याश्च, D₂ 7 देव्यास्तु, Cm as in text (for देवस्य) —^b T₂ वपं, Cg as in text (for वपे) —After 7^{ab}, D₁ G₁ 3 ins

809* एव मन्मथयुदे तु तयोनीसीत्पराजय ।

—D₄ ins 808* after 7^{ab} —^c M₄ [अ]स्यां (for [अ]पि) T₂ °म, M₁ नाम (for राम) —^d G₄ परतप M₄ तस्यासीत्परम तप —For 7^{cd}, Śi Ń₂ V B D₁₋₃ 5 7 10-13 subst

810* न चैकैकतरस्यासीत्तयो राम पराजय ।

[Śi D₂ 11 12 [अ]न्यतरस्य, D₁ तस्यातस्य, D₅ [अ]नतरस्य (for [ए]कतरस्य) V₄ न वैकतमस्यासीद्, D₂ 7 न वैक गन्नि-यवद् (for the prior half) Ń₂ B₁ 2 4 D₂ ततो, D₂ तयो, D₂ 7 न च (for तयो) D₁ पर जय]

8 °) D₁ D₆ 9 सर्वे, Cm g k as in text (for ततो) D₁ D₆ 9 9 G₁ 3 Cgp k t समुद्युता, T₂ सगधवां, Cg tp as in text (for समुद्रिषा) Śi Ń₂ V B D₁₋₃ 5 7 10-13 ततो देवाः (D₁₀ °व्या)यसु (B₄ °हु [sic])क्षिता —After 8^{ab}, B₃ ins

811* कथं भवेद्विरामश्च अनयोरेव साप्रतम् ।

—^a Śi D₁ 5 12 यदि चो (D₁ वो)त्य (Śi °*)स्वत्ये, Ń₂ V B D₂ 7 10 11 13 यद्द्रोषत्य (V₁ °त्ये)ते, Cm g t as in text (for यदिहोत्पद्यते) Ck. यदि लोकवरेवपुरुषमुपपत्ते। Ck. Śi D₅ 12 पुत्र, V₂ वीर; D₂ 7 रूपं, M₃ भूता (sic) (for भूतं) —^b D₁ D₆ T₂ G₄ M₃ महिव्यति, Cm g k t as in text (for प्रतिमहिव्यते) Śi D₂ 5 7 12 मोदा कस्त (D₆ transp) भविव्यति, Ń₂ V₁ 2 4 B D₁ 2 10 11 13 मोदा वो (B₄ व°जय भविव्यति, V₂ मोदा कस्य भवेदिति, D₆ कस्तु तं प्रमहिव्यति

9 °) Śi Ń₂ V B D₂ 5 7 10-13 तेषामगम्य, M₄ ह्युपेयः Cg k as in text (for अभिगम्य) D₁ [अ]मुपन्यसि D₁₀ हृतोद्वाह (for सुरा सर्वे) D₁ उपेय सद्गता सर्व —^b Śi Ń₂ V B D₂ 5 10 13 वृषपत्नी; M₃ (before corr) [इ]दममर्षाद् (for [इ]दममवृन्) D₂ 7 रत्न (D₁ सुरा) वृषनमवृन्; D₁₀ तिनिन्द (sic) उमापति —After 9^{ab}, Ń₂ V B D₁₀ 11 13 ins

न लोका धारयिष्यन्ति तव तेजः सुरोत्तम ।
ब्राह्मेण तपसा युक्तो देव्या सह तपश्चर ॥ १०
त्रैलोक्यहितकामार्थं तेजस्तेजसि धारय ।
रक्ष सर्वानिमोहोकाबालोक्तं कर्तुमर्हसि ॥ ११

देवतानां वचः श्रुत्वा सर्वलोकमहेश्वरः ।
बाढमित्यब्रवीत्सर्वाण्युत्तरेदमुवाच ह ॥ १२
धारयिष्याम्यहं तेजस्तेजस्येव सहोमया ।
त्रिदशाः पृथिवी चैव निर्वाणमधिगच्छतु ॥ १३

812* क्षितिकण्ठं महात्मानमिदं वचनमनुवन् ।

[B₄ D₁₅ क्षितिकण्ठ, D₁₁ प्रणिपल तत सर्वं (for the prior half) D₁₁ सुरा (for इर) D₁₃ अजवीव]

—^a) D₅ 12 देव (D₁₅ ^aव) देव, T₃ धनदेन (sic), C_g as in text (for देवदेव) N₂ V B₁₋₃ (marg as in text) D₅ 10 12 13 महाभाग (D₁₅ 12 ग), D₁₋₃ 7 11 M₄ नमस्तेस्तु, G₁ महाबाहो (for महादेव) C_g देवदेवैत्यनेन महादेव शब्दार्थे उच्यते । C_g —^d) S₁ N₂ V B D₅ 10 12 13 सर्वभूत, D₁₋₃ 7 11 M₄ सर्वलोक (for लोकस्यास्य) V₄ D₁₃ 9 M₄ रत, D₅ 12 रत (for रत) —^e) D₇ T₃ G₂ प्रतिपातेन, C_g प्रणि (as in text) C_g Ck प्रणिपातोऽन्यथातिक्रिया तत्प्रादुर्भावपतनम् । C_g

10 For 10-12, N₂ V B D₁₋₃ 7 10 11 13 M₄ subst 813* S₁ om 10-11^a —^a) G₂ लोक (sic) G₄ लोकान्; Ck t as in text (for लोका) —^b) G₁ देव (for तव) D₅ 12 [अ]पत्य, T₃ देवस्त (sic) C_g k as in text (for तेज) D₅ 12 सुरोत्तमे —^c) Dt D₅ 8 9 ब्राह्मेण, C_g k t ब्राह्मेण (as in text) D₅ 12 ब्रह्मचर्येण सयुक्तो

11 D₁₂ om (hapl) 11-12^a S₁ om 11^a (cf v l 10) —^a) D₅ काम्यस्य, G₂ M₄ काम्यार्थ, C_g as in text (for काम्यार्थ) —^b) D₅ तेनो धारय तेजसा —^c) D₄ नालोकात्, D₅ भारोग्य, Ck t as in text (for नालोक) S₁ वय च शरणं याता न लोकान्हुतमर्हसि —D₅ subst 1 12 of 813* for 11^c

12 D₁₂ om 12^a (cf v l 11) —^a) T₃ C_g पितामह, C_g as in text (for महेश्वर) —^b) M₄ देवान् (for सर्वान्) —^c) G₂ हा (for ह) —For 10 12, N₂ V B D₁₋₃ 7 10 11 13 M₄ subst D₅ subst 1 12 only for 11^c

813* न तेष्वस्य धारयितुं शक्ये पृथिवी त्रिमो ।
न लोका सर्वशक्तेर्मोहो ते कीर्यसम्भवम् ।
आर्त्तनाशान्नस्तपस्य धारयितुमर्हसि ।
सहानयेव देव्या त्वं ब्रह्मचारी भवेव च ।
अस्माकं च धारयाथ लोकानां बाधुकम्पया । [5]
धारयाभमर्षं तेज स्वयमेवोमया सह ।
मिथस्ता हि गत तेज तवोमयाथ दाकर ।
सादयेदपि लोकस्त्रीसदृशविनोदरोगान् ।
सम्भरव धारयात्मानं त्रैलोक्यहितकाम्यया ।
ब्रह्मचर्येण शयुक्तो देव्या सह तपश्चर । [10]
त्रैलोक्यहितकामस्त्वं तेनो धारय तेजसा ।

रक्ष लोकानिमादेव न लोकान्हुतमर्हसि ।

इति तेनो वचः श्रुत्वा देवानां भगवाञ्छिव ।

शिवेन मनसा युक्तो देवान्वचनमब्रवीत् ।

[D₂ 10 om 1 1-3 (hapl) and 10-11 D₁₃ om 1 7-11 N₂ V B D₁₁ M₄ om 1 10-11 —(1 1) D₅ 8 मो, D₁₃ प्रमो (for विमो) —(1 2) V₂ सव वा (रा) दाता, V₄ वैव सर्वेभ्यो (for सर्वशक्ते) D₁₃ न हि शक्ता सुराशेने (for the prior half) M₄ रोह (for रोह) D₁₃ 7 M₄ [अ]पत्य (for नीव) —(1 4) D₁₀ व (for [ए]व) M₄ देवा (for देव्या) V₄ महेश्वर, D₅ नरेवेश्वर (sic) [for भवेश्वर] —(1 5) B₄ D₅ 1 M₄ om third च D₁₁ हितपा दे, D₁₃ [अ]पि काम्यया (for [अ]नुकम्पया) —(1 6) D₅ धाम्य V₁ [आ]मि भव, V₂ [आ]त्मवत् (both sic) (for [आ]त्मव) —N₂ 2 om (hapl) from the post half of 1 6 up to the prior half of 1 7 B₁ समुद्भूत सहोमया (for the post half) —(1 7) V₂ B₁ मिथिता, B₂₋₄ D₂ मिथित, M₄ मिथिता (for मिथिता) V₂ 8 वय च (for हि) D₅ शरण्य (for गत) B₁ शरन् —(1 8) V₄ दायेदपि, D₇ वदेदपि (for सादयेदपि) B₄ सदैवपि, D₁₁ सर्वपिथ (for सदैवपि) D₅ पुरोगमान्, D₇ नरोमान् (for नरोमान्) D₅ सदृशकामोमान्, M₄ सदृशवि-दानवान् (for the post half) —(1 9) D₅ 8 श्लोक्य, D₇ त्रैलोक्य (for त्रैलोक्य) —For 1 10 cf 10^c —(1 12) V₁ B₂ देवान् (for देव) V₁ om n (submetric) V₄ B₃ D₂ 7 लोक (for लोकान्) —(1 13) D₅ भवाना (for देवानां) —(1 14) B₄ नमसा (for मनसा) D₅ repeats (d.tto) वचनम्]

13 S₁ D₅ 12 om 13 —^a) N₂ V₂₋₄ B D₁₋₃ 7 10 11 13 समुद्भूत, V₂ मुहूर्तं तु, Dt D₅ 8 तेजस्येव, D₄ G₂ तेनस्यैव, M₄ शैल्युपा (for तेजस्येव) —M₄ om (hapl ?) 13^c 25 T₃ om 13^c 16^c D₁ reads 13^c after 18 —^c) D₁₋₃ 7 पृथिव्या सह सर्वेपि (D₁ 8 ते सर्वे) (for °) D₇ निमाणम् D₁ जगम्भु (sic) D₂₋₄ 7 गच्छय (D₅ 8 त), G₄ Ck नमि (for अधिगच्छतु) D₁ (gloss) निराणं सुरा ते सर्वे देवा M₄ अधिगच्छतु निर्वाणं पृथिवी त्रिदशा अपि (by transp except अपि) —For 13^c N₂ V B D₁₂ 11 12 subst

814* निर्वाणं भवतेत्येव पुनश्चेदमुवाच ह ।

[V₁ 3 4 D₁₂ 11 निवृत्त, V₂ D₁₀ निवृत्ता V₄ तु (for [ह]ति) D₁₃ मुनीन् (for पुनश्च) B₁ [ए]जन् (for [ह]जन्)]

—After 13, D₅ reads 19^a as in D₁ repeating it in its proper place and ins thereafter ref क्षिप उवाच

यदिदं क्षुभितं स्थानान्मम तेजो ह्यनुत्तमम् ।
 धारयिष्यति कस्तन्मे नृणन्तु सुरसत्तमाः ॥ १४
 एवमुक्तास्ततो देवाः प्रत्युचुष्टुपमध्वजम् ।
 यचेजः क्षुभितं ह्येतच्छ्रुत्वा धारयिष्यति ॥ १५
 एवमुक्तः सुरपतिः प्रमुमोच महीतले ।
 तेजसा पृथिवी येन व्याप्ता सगिरिकानना ॥ १६

14 T₃ M₄ om 14 (cf v1 13) —^a D₁ यतश्च,
 D₁₃ यचेदं, G₂ तदिदं, Cm g k t as in text (for यदिदं)
 Śi क्षोभित, D₂ प्रच्युत (for क्षुभित) D₁ तेज, G₄ स्थानं,
 Cm g k t as in text (for स्थानम्) D₇ यदि प्रमुच्य तं
 स्थानम् —^b V₁ [अ]ति, M₂ तु (for हि) D₁ स्वस्था
 नोद्गतमुत्तम —^c D₁₄ धारयिष्यति D₁ शूर, D₃ त वै,
 D₁₅ त भो (for तन्मे) —^d Śi N₂ V B D₁ 2 5 10-13
 प्रोच्यता, M₂ ब्रूयत (sic) Cg as in text (for ब्रुवन्तु)
 T₂ मुनिसत्तमा D₃ इति व सत्यमीरित

15 T₃ M₄ om 15 (cf v1 13) —^a D₃ त
 प्रत्युचुस् (for एवमुक्ता) D₇ तदा (for ततो) —^b V₂
 पमच्युत् (for प्रत्युचुत्) D₃ 7 भगवत् वृष (D₂ वृषभ
 [hypermetric]) प्वज —^c Śi N₂ V B₂ 3 D₂ 3 5 7 10-13
 यचद, D₁ यत्त त, B₄ यत्त त, D₁ यतश्च (for यचेज) Śi
 क्षोभित, D₇ [अ]द्य च्युत् (for क्षुभित) Śi N₂ V B
 D₁ 3 5 7 10 12 13 तेजस् (D₁ 'तेजो'), D₁ D₄ (marg) ११ ह्यद्य,
 D₁₁ स्थानम्, M₂ तेज, M₃ यद्यत् (for ह्येतत्) —^d V₂
 तत्त्व हि, V₄ तत्त्व वै, D₃ धरा च (for तद्वरा) V₃ 4 धारयिष्यति
 (sic) D₁ धारयिष्यति ते धरा

16 M₄ om 16, T₃ om 16^{abc} (for both cf v1
 13) —^a N₂ V B D₁₀ 11 13 सुरभे (B₄ 'ज्येष्ठ', D₁
 (marg gloss) शिव, Cg k as in text (for सुरपति)
 —^b D₁₂ om 16^b-17^b —^c V₂ प्रमुमोद च (hyper
 metric) Śi N₂ V B D₁ D (except D₁₃ 14) M₂
 महाबल (for महीतले) —^d Śi N₂ V₁-3 B D₁ 3 5 7 11 13
 तेजस्तत्, Cm g k as in text (for तेजसा) V₄ D₃ तेन,
 D₁₀ सर्वा (for येन) —^e Śi D₅ व्याप्त तद्विरिकाननं

17 M₄ om 17 D₁₂ om 17^{abc} (cf v1 13 and 16
 resp) —^a Śi D₅ सुरपति, D₁₁ पुन ब्रह्मरिद (sic)
 G₁ 3 सगधर्वा (for पुनरिदम्) —^b Śi D₂ 3 5 7 मोक्ष,
 G₁ 3 पुनर्, G₄ ह्युचुत्, Cg as in text (for उचुत्) Śi N₂
 V B D₁ 3 5 7 10 11 13 सर्वं, D₁ D₈ चापि, D₂ देव, G₁ 3
 ऊचुत्, M₃ चैव (for चाप) —^c Śi D₁ D₈ 3 G₁ 3 M₂ 3
 आविश, D₁₁ प्रविश्य (sic) Cm k as in text (for प्रविश)
 V₃ 4 B₁ D₃ T₃ G₁ महातेजा D₂ विप्रस त्वद् तेजो (sic)
 —^d V₁ 2 D₃ 3 समन्वित, D₃ 7 समीरित, Cg k t as in
 text (for समन्वित)

ततो देवाः पुनरिदमूचुश्चाथ हुताशनम् ।
 प्रविश त्वं महातेजो रौद्रं वायुसमन्वितः ॥ १७
 तदग्निना पुनर्व्याप्तं संजातः श्वेतपर्वतः ।
 दिव्यं शरवणं चैन पावकादित्यसंनिभम् ।
 यत्र जातो महातेजाः कार्तिकेयोऽग्निसंभवः ॥ १८
 अथोमां च शिवं चैन देवाः सर्पिगणास्तदा ।
 पूजयामासुरत्यर्थं सुप्रीतमनसस्ततः ॥ १९

18 M₄ om 18 (cf v1 13) —^a V₄ B₂ (marg
 also) D₁ D₃ 11 तदाग्निना, D₁ तमग्निना, D₂ तदग्निना (sic)
 Cg t as in text (for तदग्निना) D₃ हुत वाक्य, D₃ 7 युत्
 व्याप्त (for पुनर्व्याप्त) —^b Śi D₂ 13 स जात, N₂ V₂-4 B
 (B₂ marg also as in V₁) तजात, V₁ D₁₁ तन्नात, D₁
 D₈ 3 G₄ M₂ 3 सजात, D₁₀ तत्तेज (for सजात) V₁ D₁
 D₈ 3 T₃ G₄ M₂ 3 'पर्वत', D₃ 7 तेन' (for श्वेतपर्वत) Cg as
 in text (for ^b) Cg Ct उक्ताग्निना बालनपूर्वकप्रवेशात्तत्ते
 जोबद्ध सत्तेवलश्वेतपर्वतरूप जात तदूर्प तेजो । Cg —^c V₂
 'बल, V₄ 'वर, D₁ (gloss) कारक, D₂ शिवरिण, T₃ च
 वरण, Cg k t as in text (for शरवण) —^d V₄ om (hapl)
 18^b-19^b —^e D₁ श्रुतक (for पावक) Śi D₁ 3 5 7 11 13
 'सर्वस, B₂ सप्रभ, B₃ (marg also as in text) 'समवे
 (for सनिभम्) D₂ पावकादित्यतेजसं, Ck t as in text
 (for ^a) —^f N₂ V₁-3 B₁ D₁₀ om 18^{ef} —^g G₄ repeats
 consecutively 18^{ef} —^h G₁ तेजो, Ck as in text (for
 जातो) G₂ महादेवा (for महातेजा) —ⁱ D₃ [अ]ति',
 D₁₄ T 'सनिभ, G₁ 3 महाबल, Cg as in text (for
 3सनिभम्) B₂ 4 कार्तिकेय (B₄ '*')ग्निसंभव Cg Ct
 अग्निना एत्वा मोक्षमाणात्वाद्ग्निसंभवत्वम् । Ck
 किंचित्काल एतत्वात्कार्तिकेयत्ववदेवाग्निसंभवत्व बोध्यम् । Cg —^j After 18,
 D₁ reads 13^{cd}

19 M₄ om 19 V₄ om 19^d D₂ reads first time
 19^{ab} after 13 (cf v1 13 and 18) —^a Śi N₂ V₁-3
 B D₂ 3 5 7 10-13 ततो देवी (D₂ 3 'वी' (for नयोमा च)
 G₂ शिर (sic) (for शिव) D₁ उक्तावाक्ये शिव दयात् —^b
 D₁ D₂ 3 तथा (for तदा) N₂ V B D₁₀ 13 सर्वव्य (B₄
 'अ')पूजयन्, D₃ ऋषि', M₃ सुर' (for सर्पिगणास्तदा) D₁
 तत् सर्वव्यपूजयन् —^c D₁ D₈ 3 T₃ G₁ 3 M₂ 3 G₄
 तदा, D₄ तथा (for तत्) Śi D₂ 3 5 7 13 सुरा (D₃ 'रा'
 सुरपति) D₂ 'शित' तदा (D₂ 7 'था'), D₁₁ बह्नाजलिपुटास्तदा
 —^d For 19^{cd} N₂ V B D₁₀ 13 subst, while D₂ 3 7 11
 ins after 19

815* ब्रह्मान्तशिर काया साधु साध्विति चाद्यन् ।

[V₂ 4 ग्यान (V₄ 'ग')त, B₄ प्रज्ञानत (sic) (for
 प्रज्ञानत)]

अथ शैलसुता राम त्रिदशानिदमब्रवीत् ।
समन्युरशपत्सर्गान्क्रोशंसरक्तलोचना ॥ २०

यस्मान्निगारिता चैन संगता पुत्रकाम्यया ।
अपत्यं स्वेपु दारेषु नोत्पादयितुमर्हथ ।

अथ प्रभृति युष्माकमप्रजाः सन्तु पत्नयः ॥ २१

20 M₄ om 20 (cf v l 13) —^b N₂ V B D₁-3 7 10 11 12 अनिवीक्ष्य तान् (for इदमब्रवीत्) S₁ D₁ 12 सर्वानेव तदा (D₁ 12 महा) सुरान् —After 20^{ab}, D₁ T₁ 3 G₂ 4 M₁ 3 ins

816* अग्रियस्य कृतस्याय फल प्राप्स्यथ मे सुरा ।
इत्युक्त्वा सरिल गृहा पार्वती भास्करप्रभम् ।

[M₃ reads] x inf lin sec m —(1 x) G₄ अग्रीतस्य T₂ त्रियस्य, M₁ तु तस्य (for कृतस्य) M₃ हे (for मे) —M₂ om 1 2 —(1 2) k(ed) भास्करप्रभा]

—^c) B₄ अभभत् (for अशपत्) S₁ D₅ 9 12 देवी (for सर्वान्) V₄ शशाप त्रिदशान्देवी —^d) S₁ D₅ 9 12 रोषाद् (for क्रोध)

21 M₄ om 21 (cf v l 13) S₁ D₅ 9 12 om 21^{ab} —^a) T₃ निवारिता, G₁ 3 M₂ निवारितश्च, Cg k as in text (for निवारिता) Dt D₆ 6 8 [अ] ह् (for [ए] व) —^b) T₃ संतति (sic), G₁ 3 M₂ समत (for समता) G₁ 3 पुत्रवाक्षया —For 21^{ab}, N₂ V B D₁ 10 11 12 subst 1 x of 818* —D₁ om 21^{cd} —^c) N₂ B₃ (marg also as in text) 4 D₁ 10 च स्व (B₄ सु) दारेषु (for स्वेपु दारेषु) —^d) S₁ D₅ 9 12 युष्माके न भविष्यति, N₂ V B D₁ 10 12 यूयं नोत्पादयिष्यथ Cg k तस्माद्युयमभि (Ck om यूयमभि) अपत्य नोत्पादयिष्यथ । Cg —N₂ V B D₁ 10 12 om 21^{ef} —For 21^{ef}, S₁ D₅ 9 11 12 subst

817* आयात्र योऽय प्रभृति भगिन्यन्त्यप्रजा सुरा ।

[S₁ भावयाय प्रभृति दे (sic) (for the prior half) D₁ 12 भविष्य*]

—For 21, D₁-3 7 subst while N₂ V B D₁ 10 11 12 subst 1 x only for 21^{ab}

818* यस्मादपत्यं सदृशमस्य मम नेच्छथ ।
युष्माकमपि तस्माद्भि न प्रजास्यन्ति पत्यव ।

[(1 x) V₁ सदृशमपत्यम् (by transp) V₄ तान् दि मन, B₁ गम जात दि (for अमरा मन) N₂ B₃ (marg also नेच्छा) 4 D₁ 10 12 नो (B₄ D₁ 10 न) भवद् (for नेच्छथ) D₁ 9 7 12 नेच्छथममरा मन (for the post half)]

—After 21, Dt D₁ T₃ G₁ M₁ ins.

एवमुक्त्वा सुरान्सर्वाञ्छशापं पृथिवीमपि ।
अवने नैकरूपा त्वं बहुभार्या भविष्यसि ॥ २२
न च पुत्रकृतां प्रीतिं मन्त्रोद्धमलुपीकृता ।
प्राप्स्यासि त्वं सुदुर्मेषे मम पुत्रमनिच्छती ॥ २३
तान्सर्गान्नीडितान्दृष्ट्वा सुरान्सुरपतिस्तदा ।
गमनायोपचक्राम दिशं वरुणपालिताम् ॥ २४

819* पत्न्यो न जनयिष्यन्ति ह्ययं प्रभृति चात्मजान् ।

[Dt D₄ (with hiatus) ज्ञातजान्, T₃ वा⁰, M₂ चानमि (for चालमान्)]

22 M₄ om 22 (cf v l 13) V₄ om 22-23^b —^a) N₂ V₁-3 B D₁ 10 12 उक्त्वा (V₁ °क्त) चैव (B₄ °व) D₁ (marg also as in text) —3 7 11 एव शरत्वा, Ct as in text (for एवमुक्त्वा) D₁ 12 om सुरान् B₄ om सर्वान्. —^c) D₁ 12 वैव (for नैक-) T₂ [अ] पि (for त्वं) S₁ D₅ 9 11 12 ए (D₅ नै) करूपावनि त्व (S₁ °वने त्व, D₁ °व नित्य) च —^d) S₁ D₅ 9 11 12 भोज्या, Cg t as in text (for भार्या) D₅ G₂ भविष्यति —For 22^{cd}, N₂ V₁-3 B D₁-3 7 10 12 subst while D₁ ins after 22^{ab}

820* त्वमप्युरसकीर्णा भविष्यसि वसुधरे ।

[B₄ त्वयम् (sic) (for त्वम्) B₁ [उ] पल (for [क] पर) D₁ 3 सकीर्णे D₁ 10 त्वमप्यय (sic) सकीर्णे (for the prior half)]

23 M₄ om 23 V₄ om 23^{ab} (cf v l 13 and 22 resp) —^a) S₁ N₂ V₁-3 B D₁-3 7 9-12 [अ] पत्य (D₁ 12 °*) Cg k t as in text (for पुत्र) S₁ मैत्री (for प्रीति) —^b) V₁ तत्प्रोच, M₃ मत्प्रोच (for मन्त्रोच) V₁ 2 G₂ कृता (for कृता) —^c) Dt D₆ 8 प्राप्स्यसे, Cg k °सि (as in text) —^d) Dt अनिर्गती, T₂ अनिच्छयि, Cg k t as in text (for अनिच्छती) —For 23^{cd}, S₁ D₅ 9 11 12 subst

821* ममापत्यमनिच्छन्ती चैव त्वमपि लप्स्यसे ।

[D₅ 12 अनिच्छन्ती, D₅ अनिष्पत्ती (for अनिच्छन्ती) D₅ 12 एव, D₅ जातु (for चैव) D₅ लप्स्यसे (sic) D₁ 12 लप्स्यते (for लप्स्यसे) D₁ 12 प्राप्स्यति त्व च सुद (वसुध) रे (for the post half)]

—Thereafter S₁ (marg) ins परत्रिनोष्याय

24 M₄ om 24 (cf v l 13) —^a) Dt D₆ 8 Ck t दीडितान्, D₄ 2 व्यथितान्, D₁ 12 दीडितान्, T₂ 2 G₁ M₁ 3 दीडितान्, Cg as in text (for दीडितान्) S₁ D₅ 9 12 ता दृष्ट्वा दीडिता देधीम् —^b) S₁ D₅ 9 12 उता (for सुरान्) —For 23^{cd}-24^{ab} N₂ V B D₁-3 7 10 12 subst while D₁ subst 1 2 only for 24^{ab}

822* प्राप्स्यसि त्वमभीप्स्यन्ती न चापत्यमभीप्स्यितम् ।
ता दृष्ट्वा व्यथिता देधीमुतां देधो महश्च ।

स गत्वा तप आतिष्ठत्पार्श्वे तस्योत्तरे गिरेः ।
हिमवत्प्रभवे शृङ्गे सह देव्या महेधरः ॥ २५

एष ते विस्तरौ राम शैलपुत्र्या निवेदितः ।
गङ्गायाः प्रभवं चैव शृणु मे सहलक्ष्मणः ॥ २६

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे पञ्चत्रिंशः सर्गः ॥ ३५ ॥

[(1 1) V1 नैव वसुधे (hypermetric) B1 अपीच्छती,
D1 7 अनीप्सति, D3 अनीप्त (sic) (for अनीप्सन्ती) V4 om न
(submetric) D1-3 7 मम (for न च) V1 मनसेषित (sic)
(for अनीप्सितम्) — (1 2) B4 om D1-3 7 एव (for
देवीम्) D1 2 सुरासुरमहेधर, D3 7 सुरासुरनमस्कृता (for the
post half)]

—^c) Ś1 D5 9 12 मर्ति चक्रे, Cg k t as in text (for
[उ]पचक्राम) N2 V B D1-3 7 10 11 13 गंतु समुपचक्राम
(D1 १२ [sic])

25 M4 om 25 (cf v1 13) —^{ab}) D11 आदिष्टद्,
D12 आतिष्ठद् (for आतिष्ठत्) D14 T1 G4 Cm गिरौ, T3
दिशि, Cg k t as in text (for गिरे) Ś1 N2 V B D5 9-13
उत्तमे क्षेपितप्रत (V3 ०त) (for ^d) D1-3 7 तस्योत्तरे दिक्षा
भागे तप आ (D1 प्रा, D2 चा) तिष्ठदुत्तम — D6 om (hapl)
from प्रभवे up to गङ्गाया in 26^c —^c) V1 प्र*१, V2
प्रवृत्ते, M3 प्रमुखे, Cm g as in text (for प्रभवे) Cc Ct
हिमवत्प्रभवाप्ये शृण्वे । Cc N2 V B3 4 D10 दिव्ये, B1 देवो
(for शृङ्गे) —^d) G2 देव्या सह (by transp) D1-3 7
ततो देव सहोमया

26 D6 om up to गङ्गाया (cf v1 25) —^a)
D1 3 7 11 M4 इति, Cg t as in text (for एष) D13 च्यस्तरौ
(sic) M4 रा* (for राम) G1 3 एतत्ते राम चरित —^b)
B4 शैलपुत्र (sic) G1 3 निवेदित, Cm g k t ०त (as in
text) —^c) V3 कारुष्येन (for गङ्गाया) Ś1 V1 4 B
D5 10 12 13 शृणु बालक्य (B1 हृल्ले) न, V3 lacuna T1 3 G* 4

M1 3 चापि (for प्रभव चैव) —^d) Ś1 N2 V1 2 B D5 12
प्रभाव, V3 4 D10 13 प्रभव (for शृणु मे) Ś1 त्वे स*, D3
शृणु* (sic) (for सहलक्ष्मण) — For 26^{cd}, D1-3 7 11 M4
subst

823* उमाया शृणु गङ्गाया विस्तर त्ववतारणे ।

[D11 वदतो मम, M4 त्वम पर (for त्ववतारणे) D3 7 तर्हि
संघ सलक्ष्मण (for the post half)]

—After 26 B3 ins

824* ये श्रुत्वा च नरो यानि कैवल्य स्थानमेव हि ।

B3 D2 3 7 11 cont, whereas Ś1 N2 B2 (marg) 4
D5 10 13 ins after 26

825* कुमारसमव चैव बह्वर्थं सुरपूजितम् ।

[D3 कुमारसम* चैव (for the prior half) D2 सु-पूजित]
Colophon Ś1 D5 12 om (sarga cont) —Kānda
name N2 V1 4 D4 10 om V2 3 B आदि*, D1 3 अयोध्या*.
—After Kānda name, B2 4 ins बालचरिते —Sarga
name N2 V B D5 10 उमामाहास्य (D3 ०चरित), D1-3 7
देव (D2 ०व्या) प्रसूतिर —Sarga no (figures words
or both) V1 4 B1 4 D3 11 om N2 B2 3 38 V3 40
V3 37, Dt D4 3 8 14 36 D1 7 29 D2 30 D3 39 D4
इत्यार्येयणेकादे उमा नाम 38 (dash indicates lacuna)
—After colophon T2 G1 2 4 M3 conclude with
श्रीरामाय नम, G3 श्रीमते रामासुजाय नम

३६

तप्यमाने तपो देवे देवाः सर्षिणणाः पुरा ।
सेनापतिमभीप्सन्तः पितामहमुपागमन् ॥ १
ततोऽञ्जुवन्सुराः सर्वे भग्नन्तं पितामहम् ।
प्रणिपत्य शुभं वाक्यं सेन्द्राः साक्षिपुरोगमाः ॥ २
यो नः सेनापतिर्देव दत्तो भग्नता पुरा ।
स तपः परमास्थाय तप्यते स्म सहोमया ॥ ३
यद्वानन्तरं कार्यं लोकानां हितराम्यया ।

संविधत्स्व विधानज्ञ त्वं हि नः परमा गतिः ॥ ४
देवतानां वचः श्रुत्वा सर्षलोकपितामहः ।
सान्त्वयन्मधुरैर्वाक्यैस्त्रिदशानिदमब्रवीत् ॥ ५
शैलपुत्र्या यदुक्तं तच्च प्रजास्थ पतिषु ।
तस्या वचनमक्लिष्टं सत्यमेव न संशयः ॥ ६
इयमाकाशगा गङ्गा यस्यां पुनं हुताशनः ।
जनयिष्यति देवानां सेनापतिमरिदमम् ॥ ७

36

§ N₁ missing sarga 36 (cf v 1 I 33 8) S₁
D₁ 12 continue the previous sarga

1 °) Dt D₈ 8 T₃ तदा, D₁₂ 12 महा (for तपो)
Cm t देव (as in text) S₁ तप्यमान तदा देव (for °)
T₃ तदा, M₃ (after corr sec m) पुन (for पुरा) Dt
D₈ 8 सेंद्रा साक्षिपुरोगमा (for 8 [- 2^d]) Ctp सेंद्रा (for
देवा) and सर्षिणणा पुरा (as in text) N₂ V B
D₁ 3 7 10 11 13 M₄ तप B₃ D₇ 7 तत्त्व (V₂ M₄ प) ति
देवेदेो व्यक्ते विवृतास्त - °) D₁₃ सेनापत्यम् D₁ 3 7
अरिन्दत (for अभीप्सन्त)

2 °) S₁ S₂ V B D₁ 10-13 अजुवन्न (for ततोऽञ्जुवन्)
D₁ 3 7 M₄ तेष्वस्त्रिदशान्तर - G₁ 3 om 2nd - °) D₁ 3 7
M₄ समुपेत्य (for भगवन्त) - °) S₁ D₁ 11 12 शुना वाणी,
N₂ V B D₁₀ 13 [अ] जलि वङ्गा Dt D₈ 8 सुरा राम,
D₁ 3 7 M₄ [अ] जलि (M₄ लि) प्रह्ला Dt Cg सुरा सर्वे, T₃
संदेहेण (for शुभ वाक्य) Ck अत्र 'सुरा सर्वे' इति
पुनरुक्तम् । अत पाठान्तरमन्वेष्टनीयम् । द्वितीयार्धे 'सुराराम' इति
पाठ रामसंबोधन चेतत् । Ck - °) N₂ V B D₁₀ 13 'वङ्ग',
D₁ 3 'वाणि', D₇ 7 'अजि', T₃ दवा °, M₄ सेंद्रवङ्गि (for
सेन्द्रा साक्षि) Cm g साक्षिपुरोगमा (as in text) S₁
D₁ 11 13 सुयदाचलि इङ्गल

3 °) Dt D₈ 8 M₄ Cm k t येन, D₇ 7 यत् Cg as
in text (for वो न) S₁ B₃ दव D₇ 11 देवा (sic)
(for देव) - °) S₁ D₁ 13 हृतो (for दत्तो) - After 3rd
D₄ ms

8-6* स न जातोऽय भगवत्समद्वैतिविबहण ।
सपिता भगवान्द्रवो हिमवन्तिप्रसालय ।

- °) N₂ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ स प्रह्वचर्मम्, M₂ पुनर,
Cm तप परमम्, Ct as in text (for स तप परम्) D₃
वाक्य (for आस्था) - °) N₂ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄
तपस्तेषु ° च Cg k as in text (for तप्यते स्म) S₁
D₁ 13 विषत सुमहद्विषत

4 °) N₂ B₃ (m also as in text) D₁₀ अण्यत्रात्र

(for अत्रानन्तर) - °) N₂ V B D₁ 3 7 10 13 M₄ सर्वे (V₃
°) लोकोक्तिमह (V₄ D₁ 3 'ह' - °) S₁ D₁ 11 12 M₄ तद्
(for स) Cg t सविधस्व (as in text) Ck सविधस्व
G₁ 3 विधानज्ञ N₂ V B D₁ 13 तद्विषय (V₄ ° च)
श्रुतार्ताना, D₂ 3 7 तद्विषय श्रुतार्ताना, D₁₀ तद्विषय
शालाना

5 °) N₂ V B D₄ 9-11 13 M₄ देवाना वचन (D₁₁ च
वच) - °) S₁ D₁ 13 ब्रह्मा, D₁₂ ब्रह्म (for सर्वे) N₂ V B
D₁ 3 7 10 11 13 नमस्कृत (for पितामह) - °) S₁ D₁ 13
सात्वयन्मधुरया वाचा, N₂ V B D₁ 3-7 10 11 13 M₄ ब्रह्मा
मधुरया वाचा - °) D₁₂ 13 इदं ब्रह्म G₂ M₁ वाक्यम् (for
इदम्) D₃ इदं ब्रह्मवत्.

6 For 6-11 N₂ V B D₁₀ 13 subst 827* - °) S₁
D₁ 12 प्रयुक्ता स्य (S₁ स), D₁ 3 7 M₄ यदुक्ता स्य, D₁₁
प्रयुक्त यत्, M₃ ° क नो, Cm g as in text (for यदुक्त तत्)
- °) Dt D₈ 8 Ct प्रजा स्वासु, M₃ प्रजास्व (inf in sec
m) य (for प्रजास्थय) S₁ D₁ 3 5 7 11 12 प्रजा (D₃ पुनो)
वो न (S₁ नो वो) भविष्यति D₉ न प्रजा स्यासपत्तिषु,
M₃ अत्रा स स्वपत्तिषु (sic) M₄ न पवोषु प्रजास्थ
(by transp) - °) T₃ G₂ M₁ मङ्गिषु, Cm g k t as in
text (for मङ्गिष्ट) S₁ पवोष्विति च चापिष्ट, D₁ 3 5 7 11
पवोष्विति वषोष्टि (D₃ 12 'क्षि')ष्ट, D₁₁ पवोष्विति वच पूरं
- °) M₃ एतत् (for एव) S₁ 3 5 7 11 12 त (D₃ तत्
[ditto]) स्य नात्र सद्य, Cg as in text (for °)
Ck वचस्मात् नैलपुत्र्या अत्रा भविष्यत्येयुक्त तस्मात् न
प्रजा सन्ति व अत एव न एवमवस्थाप्रजा । छान्दस इकारान्त
प्रयुक्तत्तुगुण । Ct वचस्माच्छैलपुत्र्या अत्रा भविष्य इत्युक्त
तत्तस्माच्छैलपुत्र्या स्वासु पवोषु न प्रजा सन्त्यादि शेष । परिनिधि
हन्त्वं छान्दसम् । यतस्तथा वचनमहितमनोयम् । एव च
'प्रजास्थय' इति पाठस्थया छान्दसवचनत्वात् च निष्पद्यते । Ck
- After 6 D₁ 3 7 ms 1 2 of 827*

7 For 7 11 D₁ 11 M₄ subst 1 3-12 of 827*
- °) D₁ 12 वेद्यम् (sic) (for इयम्) S₁ D₁ वेद्यमकार
गोषम् (D₃ 'गापु'), D₈ 8 इयमाकाशगा च - °) M₂ 3
यस्या, Ct यस्या (as in text) S₁ D₁ 3 12 उ (D₃ दु

येष्ठा शैलेन्द्रदुहिता मानयिष्यति तं सुतम् ।
 उमायास्तद्रुमतं भविष्यति न संशयः ॥ ८
 तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य कृतार्था रघुनन्दन ।
 प्रणिपत्य सुराः सर्वे पितामहमपूजयन् ॥ ९
 ते गत्वा पर्यंतं राम कैलासं धातुमण्डितम् ।
 अग्निं नियोजयामासुः पुत्रार्थं सर्वदेवताः ॥ १०
 देवकार्यमिदं देव समाधत्स्व हुताशन ।

[to avoid hiatus] पश्य हुताशनं —For 7^{ab}, D₃ 7 subst 1 3-4 of 827* —^d G₂ सेनापतिर् (sic) G₄ अनुचमं (for अरिदमम्)

8 D₃ 7 om 8^{ab} —^d S₁ D₅ 12 G₁ जनं, Cm g k t as in text (for मानयिष्यति) S₁ D₅ 12 च, D₄ T₃ Cm g तत् (for त) —^c S₁ बहुमतो D₅ 5 7 9 12 स ड (D₅ शत [sic]) माया बहुमते

9 For 9-11 D₃ 7 subst 1 7-12 of 827* —^a M₃ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा (by transp)

10 ^{ab} S₁ D₅ 12 गत्वा तु (for ते गत्वा) Dt D₆ 8 परम (for पर्यंत) Ck ते कैलासपर्यंतं गत्येति शेष १, Ct कैलासपर्यंतं गत्येत्यन्वय १ Ck —^b S₁ D₅ 12 रत्न (for धातु) G₁ 3 भूषित (for -मण्डितम्) —^d T₃ (after corr sec m as in text) देवा (submetric) Cv m g दैवता (for देवता)

11 ^{ab} Cg संविष्यत्य S₁ D₅ 12 देवताना कृते साधु पुत्र जनय पावक —^c D₁₄ T₁ 2 पुत्र्या, G₂ पुत्रा (sic), Ct as in text (for पुत्र्या) S₁ D₅ 12 आ (D₁₂ *) ग, D₃ G₁ सेजा, Cg k t as in text (for तेजो) —^d D₅ 12 तेज (D₁₂ *) उत्तम G₁ गंगायास्तीरमुत्तम Ck शैलपुत्रास्तेज उच्छेजेति Ck —^b N₂ (N₁ missing) V B D₁₀ 13 subst for 6-11 D₁ 2 (both ins 1 2 after 6) 11 M₄ subst 1 3-12 for 7-11 while D₃ 7 ins 1 2 after 6 subst 1, 3 and 4 for 7^{ab} and 1 7-12 for 9 11

827* यथा हि धूमसुमया राजा सासृज्यया पुरा ।

(6) तथा तद्वचनं देवा न दाव्यं कर्तुमन्यथा ।

(7^{ab}) इय त्वाकाशगङ्गा या शैलराजसुतापरा ।

उमाया भगिनी ज्येष्ठा ततोऽपत्यं हुताशन ।

(7^{cd}) जनयित्वास्मदीयेण तेजसातुपमपुति । [5]

भविव्यति स व श्रीमत्सेनापतिरिनीषित ।

(9) पृथक्श्रुत्वा वचो देवा प्रणिपत्य पितामहम् ।

प्रहृष्टमनस सर्वे कृतार्था पुनरागत ।

(10) तत कैलाससिखरमगल्य सहिता सुरा । [10]

अग्निं विज्ञापयामासुर्गङ्गां च रघुनन्दन ।

(11) हितार्थमेव लोकानामप्येतोऽप्युद नुह ।

आकाशपथचारिण्या समूय सह गङ्गाया ।

[D₁ 3 7 om 1, D₁, D₅ om 1 1 and 2 —(1 1)

शैलपुत्र्यां महतेजो गङ्गायां तेज उत्सृज ॥ ११
 देवतानां प्रतिज्ञाय गङ्गामभ्येत्य पावकः ।
 गर्भं धारय वै देवि देवतानामिदं प्रियम् ॥ १२
 इत्येतद्वचनं श्रुत्वा दिव्यं रूपमधारयत् ।
 स तस्या महिमां दृष्ट्वा समन्तादवकीर्यत ॥ १३
 समन्ततस्तदा देवीमभ्यपिञ्चत पावकः ।
 सर्वस्रोतांसि पूर्णानि गङ्गाया रघुनन्दन ॥ १४

V₂ संस्रया (sic) —(1 2) D₁ तस्या D₃ 7 यथा (for तथा) B₃ (m also as above) D₃ 7 10 श्रुत्वा (for देवा) Dt श्रुत (sic) (for श्रव्य) B₁ वक्तुम् (for कर्तुम्) —(1 3) N₂ B₁ 3 D₁₃ -आ गमा, V₄ ० वै (for -आ या) D₁ 3 7 11 M₄ श्य त्वा (D₁₁ M₄ चा) काशमगल्य (for the prior half). —(1 4) V₁ गमा (for ज्येष्ठा) B₂ तन्म, D₁ (with hiatus) अतो, D₂ आप्यापय (sic) D₃ 7 (with hiatus) उपसृत्य, M₄ सा श्र (for ततोऽपत्यं) D₃ 7 11 M₄ हुताशनात् (D₇ न [sic]) —D₃ 7 om 1 5 and 6 —(1 5) N₂ V₂ -4 D₁ 13 जनयत् (V₄ D₁₃ ० ति) B₂ जनयिता, B₃ जनयत् (for जनयिता) V₃ [अ] य (for [आ] य) D₁₁ M₄ जनयिष्यति (D₁₁ ० ति हि [hypermetric]) कीर्ण (for the prior half) V₂ परम (for [अ] पुनम) M₄ पुति N₂ B₃ (m also as above) D₁₀ 13 तस्या परमपुति (for the post half) —(1 6) V₁ B₂ D₁ 2 11 M₄ स भविष्यति (by transp) V₂ सुत, B₁ D₁₃ च स (D₁₃ स च [by transp]) (for स व) V₄ समविष्यति श्रीमाम् (submetric) (for the prior half) —(1 8) N₂ -वचन (for -मनस) D₁₁ रघुनन्दन, M₄ गमय (for पुनरागत) —(1 9) D₁ -3 7 11 आरुह्य, M₄ आगम्य (for आगल्य) —(1 10) V₁ अस्मि (sic) (for अग्निं) V₄ बहि (sic) (for गङ्गा) —(1 11) V₁ हिन वम् (for हितार्थम्) D₃ 11 अये D₁₀ सव (for अये) —(1 12) V₄ [उ] परि (for पथ) D₁₁ संहित, D₁₃ सम्भूत (sic) (for सम्भूय)]

12 ^a N₂ V B D₁₀ 13 तथेति च, D₁ -3 7 11 M₄ तत्तथेति, all Cs as in text (for देवताना) —^b S₁ D₅ 12 प्रोवाच (for अभ्येत्य) N₂ V B D₁ -3 7 10 11 12 M₄ वचस्ते पा हुताशन (D₂ न [sic]) —^c G₁ 2 देहि (for देवि) N₂ V B D₁ 3 7 10 11 12 M₄ उवाच गंगा मत्सेनो धार्यतामिति राव

13 M₄ om 13 and 14 —^a D₄ Cm g तस्य^{ab}, D₁₄ T₁ 2 G₂ 4 M₁ अग्रेस्तु (for हत्येतद्) S₁ D₅ 12 कर्तव्यमिति सा श्रुत्वा —^b G₁ 4 दिव्य, Cg k t as in text (for दिव्यं) S₁ D₅ 12 गर्भम् (for रूपम्) —^c S₁ D₅ 13 दृष्ट्वा तं महिमानं सा —^d S₁ D₁₃ जन्यकीर्यत, Dt D₆ 8 T₁ Ck t अवकीर्यत, D₃ एव कीर्यते, Cr m g अवकीर्यत (as in text)

14 M₄ om 14 (cf v 1 13) —^a S₁ D₅ 12 च ता, G₁ ततो, G₂ तु ता (for तदा) —^b D₅ 12 अभिषिच

तमुवाच ततो गङ्गा सर्पदेवपुरोहितम् ।

अशक्ता धारणे देव तव तेजः समुद्भूतम् ।

दक्षमानाग्निना तेन संप्रव्यथितचेतना ॥ १५

अथान्नगीदिदं गङ्गां सर्पदेवहृताशनः ।

इह हैमवते पादे गर्भोऽयं संनिवेश्यताम् ॥ १६

(D12 'विचि'त (sic) G1 अन्यवर्णत, Cmg k t 'विचत' (as in text) —^c) D3 सर्वश्रेयासि पुण्यानि —^d) S1 D3 12 तस्या ह्यासत् (S1 'सन्धै' नरोत्तम

15 ^b) Dt D3 14 T1 : G2 4 M1 3 (after corr *inf* *lin* *sec* *m*) Ct 'गम, Cg k as in text (for पुरोहितम्) —^d) S1 D3 12 शक्ता (D12 'त्वा) धारयितु नास्मि (for °) Dt D3 8 तेनत्वद् (by transp) S1 D3 12 T1 : G2 4 M1 3 'द्यत, Dt D3 'द्भूत, D3 'द्वत, T3 'त्तम, Ct as in text (for समुद्भूतम्) Cv r m तद्वि तेन समुद्भूत, Cg k t as in text (for °) —^c) S1 D3 12 अती तु दक्षमानाहं (S1 'हा), M3 दक्षमानानां (ditto) हि तेनोमि, Cv r g as in text (for °) —^c) Dt (after corr as in text) 'चेतनां, T3 'चेतना, Cv m g t as in text (for 'चेतना)

16 ^a) S1 D3 12 तत्र (for गङ्गा) —M3 om (hapl) 16^b—17^a —^b) S1 D3 12 गंगा देवो, D3 'देवो, T3 'देवी (sic) (for सर्वदेव) M2 पुरोहित, M3 पुरोगम, Cmg k t as in text (for 'हुताशन) —^c) S1 साधु, D3 12 गच्छ, T3 ह्य (sic) (for इह) T2 हैमवती (sic) (for 'वते) S1 Dt D3 8 G2 M1 3 पादौ, Cg as in text (for पादे) —^d) S1 D3 13 गर्भमेनं निवेशय

17 M3 om 17^a (cf v1 16) —^a) M3 सा (for तु) S1 D3 12 श्रुत्वा तस्यापि वचन —^c) S1 D3 12 त सप्तनं S1 Dt D4 4 8 14 M2 3 (after corr *sec* *m*) Cg महातेज, M3 महतेज —^d) Cg k t स्रोतोन्मो (as in text) T3 स्रोतोन्मोद् तपायाया (sic) M3 सासद्वती तदा नृप, Cv r m cite as in text —For 13 17 N3 V B D1 3 7 10 11 12 subst while M3 subst 1 x and 2 for 15^a and ins 1 10 after 17

828* तमुवाच ततो गङ्गा हुताशनमिदं वच ।
अशक्ताह धारयितुं त्वत्तेनो भगवद्विति ।
तमुवाच ततो गङ्गा हुतमुग्धगवायुन ।
प्रमुग्ध गन्धे सत्तेन वैलेऽस्मिन्स्य विसर्जय ।
तथेयुक्ता ततो गङ्गा सत्तेन प्रत्यपयत ।
प्रतिगृह्य च सरोऽमृद्विह्वला भृशिता च सा ।
असद्वन्ती तनो गर्भे नै धारयितुमोक्ता ।
वैल्यामशिवेदं राम साधितं सुपात तद् ।
अनामसा प्रसक्तं सदसा भूतिरेतजम् ।
रम्ये शरवणोद्देशे समुच्यम् तनो वचै ।

श्रुत्वा त्वमित्रचो गङ्गा तं गर्भमतिमास्वरम् ।

उत्सर्ज्य महातेजाः स्रोतोभ्यो हि तदानय ॥ १७

यदस्या निर्गतं तस्मात्तप्तजाम्बूनदप्रभम् ।

काञ्चनं धरणीं प्राप्तं हिरण्यममलं शुभम् ॥ १८

ताम्रं कार्णायसं चैव तैक्ष्ण्यादेवाभिजायत ।

मलं तस्याभनत्रत्र त्रुपु सीसक्रमेण च ॥ १९

[D3 repeats consecutively 1 and 2 —For 1 2, D11 reads the line of 15^a as in S1 —(1 2) M3 न शक्ताह V4 B3 4 तत्तेन —(1 3) V4 D2 9 7 11 प्रमु, D1 प्र 11 (sic) (for पुन) —(1 4) D3 प्रत्यक्ष (for प्रमुक्ष) V2 च (sub-metric) (for गङ्गा) D10 तेज (sub-metric) (for मत्तेन) D13 शैरेदे (for शैरेऽस्मिन्स्य) N2 B3 तद्, V4 तु D1 11 त (for त्व) V2 विषयेय (sic) (for विसर्जय) D3 7 समुत्पादय सतपि (for the post half) —D3 7 om 1 5 —(1 5) B3 प्रतिपल च, D1 प्रतिगृह्य तु D3 प्रत्यक्षान् D13 प्रति (for प्रत्यक्षत) —(1 6) D13 प्रतिपय (for 'गृह्य) V4 तदेवाभूद्, D1 2 11 तु तत्तेनो (for च सरोऽमृद्) D3 7 प्रमु (D3 'स) द्य गगा तत्तेनो (for the prior half) D11 विक्रय (for विह्वल) V1 [उ]त्सा, V4 B1 2 [ह] व सा, D1 11 तत, D3 सी, D7 om (for च सा) D1 मूर्च्छनं गगा —(1 7) D3 अस्तस्वी D3 illeg नं in गर्भे D1 3 7 त (for त्व) V1 वारयितुम् (for वारयितुम्) D2 अक्षया (for ओजसा) —(1 8) D10 सा पति (hyper-metric) (for साधि) V4 'जेज (for रेत) N3 नदापत्त, V2 D1 ह्यवाच V3 ससार तद् V4 समुद्भव, D3 7 समुद् (D7 द्या) उन्नत (for सुपात तद्) —D1 reads 1 9 after 20 —(1 9) B3 (m also) अग्न्यामर and अनामसायां N3 V1 3 B1 प्रसक्त (V1 'च) V4 'श्रो (sic) D10 प्रसक्त (for प्रसक्त) D3 7 'चेजत (sic) (for 'जेजसद्) —(1 10) D2 शरवणोद्देशे]

18 D3 7 M3 om 18—20 D2 om 18 —^a) D3 12 T3 निर्गते, all Cs as in text (for निर्गत) S1 N3 V B D1 5 10 12 तदिदं तस्याह (for यदस्या) and तस्याम् resp) —^b) D10 तत्र, D13 तदा (for तत्त) D1 सुवर्णं रजतं तस्या, all Cs as in text (for °) —D1 om 18^a —^c) V2 B2 3 G1 3 M3 काचनीं, all Cs as in text (for काञ्चनं) —^d) S1 N3 V B D2 9 12 वा (V2 9 अ) अवतत्ता (S1 'त्वा, V2 'सुता), Dt D3 8 G1 3 M3 भूतुप्रभ, Cv g t as in text (for मलं शुभम्) Cg r रजतऽपि हिरण्य शब्दो वधेते, Ck हिरण्यशब्द स्वर्णरत्नतत्पायाया ॥ १९

19 Before 19 D2 reads 21 and 22 D3 7 M3 om 19 (cf v1 18) —^a) G1 M1 हृत्पायस, Cv m g कार्णायस (as in text) S1 N3 V B D2 9 10 12 ताम्रं हृत्पा (B1 कार्णा [sic]) यत पायि (D1 'विक्रसा [sic]), D1 हृत्पायस पायि वषाद् —^b) S1 V1 3 B1 D3 9 12 13 वषाद्, N3 V B 4 D1 रक्षाद्, V2 त्यक्त्, D3 मुचद् (sic) G3 वैद्यवम्, Cv r m g t as in text (for

[5]

[217]

तदेतद्वर्णीं प्राप्य नानाधातुरवर्धत ॥ २०
निक्षिप्तमात्रे गर्भे तु तेजोभिरभिरक्षितम् ।
सर्वं पर्वतसंनद्धं सौवर्णमभवद्वनम् ॥ २१
जातरूपमिति ख्यातं तदा प्रभृति राघव ।
सुवर्णं पुरुषण्याघ हुताशनसमप्रभम् ॥ २२
तं कुमारं ततो जातं सेन्द्राः सहमरुद्गणाः ।
क्षीरसंभावनार्थाय कृत्तिकाः समयोजयन् ॥ २३

तैक्ष्ण्याद् (1) S1 N2 V B D2 5 9 13 एतदजायत (S1 ते), D14 T1 2 G M1 2 एवासिजायते, M3 Cg एवाभ्यजायत D1 एव एवोपपद्यते — (2) S1 V B D1 2 5 11-13 चावि (D1 थ) N2 D10 मलतश्च (for मल तस्य) — (3) V2 रग, D1 Cv त्रपु, G1 म्बु (for त्रपु) D9 तत्पुष्पीकमुच्यते

20 N2 V B D7 10 13 M4 om 20 (for D7 7 M4 cf v1 18) — (4) D1 2 M2 एव, D9 एव (for एतद्) D11 धरणीं (ditto) — (5) S1 D1 2 5 9 11 12 नानाधातुत्वमागत. — After 20 D1 reads 1 9 of 828* D2 ins 830*

21 D2 reads 21 and 22 before 19 — (1) D1-4 (D4 after corr as in text) 7 निक्षिप्त, D5 G2 निक्षिप्त्य, Cm g k t as in text (for निक्षिप्त) V4 शिखरे, D1 3 7 च, M4 थ (for गर्भे तु) — (2) S1 V B1 2 4 D5 11 12 तेजसास्यातु (S1 D5 12 च्यत्, V4 म्बु B1 म्बुत्, B4 D11 च्यतु) D1-3 7 M3 तत्तेजोभ्यनु (D1 2 च्यतु, M4 रग) (for तेजोभिरभि) D5 सतिव (for रक्षितम्) N2 B3 (m also as in B2) D10 12 तेजसा भूरितेजसि — (3) G1 पर्वत सर्वत (sic) (for सर्वे) B1 सर्वत्र (for पर्वत) S1 N2 V1 4 B4 D9 (before corr) 10 12 13 G1 M2 सवद्, V2 3 B2 (before corr) 3 सवध, D1 7 M4 श्रम तत्, D3 श्रमवद्, D11 सवसवद् (sic), M3 म्यपच, Cgt as in text (for सनद्) — (4) S1 सौमद्रम्, D5 सौधम् (for सौवर्णम्) N2 V B D1 10 11 13 M4 तदा, D2 3 7 तत् (for वन) — After 21, S1 M3 (inf l m sec m) ins

829* त देवा तु ततो यद्वा सम्रायेदमभापत ।

जातस्य रूपं यत्तस्माज्जातरूपं भविष्यति ।

[(1 1) S1 [य]जम् (for [र]जम्) — (1 2) S1 जातरूपस्य]

22 D2 reads 21 and 22 before 19 — (1) D3 द्वा* (for द्यात) — (2) S1 N2 V1 2 4 B D1-3 5 7 11-13 तत्, Cm g k t as in text (for तदा) M4 काचन (for राघव) — S1 D5 13 om 22^{ed} — (3) N2 V B D1-3 7 10 11 13 M4 सुवर्णं (D5 थ) मादुरभवदक्षितेजोभ (V1 4 B4 D1 2 13 M4 न्) वं शुचि — After 22, N2 V B D1- (D2 after 20) 3 7 10 11 13 M4 ins

830* कुमारश्चाभवत्तत्र तरुणार्हसमुत्पत्ति ।

वक्षितेजोभव धीमान्मात्रादुत्पत्तिरित्युत ।

ताः क्षीरं जातमात्रस्य कृत्वा समयमुत्तमम् ।
ददुः पुत्रोऽयमस्माकं सर्वासामिति निश्चिताः ॥ २४
ततस्तु देवताः सर्गाः कार्तिकेय इति युवन् ।
पुत्रस्रैलोक्यविरुध्यातो भविष्यति न संशयः ॥ २५
तेषां तद्वचनं श्रुत्वा स्कन्धं गर्भपरिस्त्रवे ।
स्वापयन्परया लक्ष्म्या दीप्यमानमिवानलम् ॥ २६

[(1 1) D1-3 7 M4 से (for च) D1-3 (all with hiatus) अरुणां — (1 2) V1 2 4 B4 D1 2 M4 — [उ]त्तव V3 [अ]मवच (for मव)]

while D9 14 S (except M4) Cg k ins

831* तृणवृक्षलवागुल्म सर्वं भवति काञ्चनम् ।

[M2 वृणुगुल्मलवावृक्ष (by transp) (for the prior half)]

23 (1) D14 T2 G2 4 M1 तदा, T1 तथा, Cg k t as in text (for ततो) M4 सुदुर्मारस्य जातस्य — (2) S1 N2 V B D1-3 5 7 10-13 M3 द्वा (M4 तस्य) सेन्द्रा (S1 D5 12 देवा, D11 देव), G4 * M2 देवाम् (for सेन्द्रा सह) M4 दियौकस (for मरुद्गणा) Cg k मरुद्गणा देवगणा सह युगपत् । Cg — (3) N2 V B D10 13 M4 तदा क्षीरं (D10 *) प्रदानार्थं, D1-3 7 11 क्षीरसपादनार्थाय, Cm g k t as in text (for *) — (4) B4 D5 कृत्तिका (D5 कां) S1 V1-3 B D13 M4 स (V2 ते) न्ययोजयन् (V2 B4 त [sic]), D4 8 M3 समपज (M3 चोद) यन्, Cg k t समयोजयन् (as in text)

24 For subst cf v1 27 — (1) S1 D5 1* तत् and मात्राय (for तत् and मात्रस्य respy) — (2) S1 D5 13 ददौ पुत्रार्थमस्माकं सर्वासां प्रकरिष्यति

25 (1) S1 N2 V B D5 10-13 ता and ऊतु (for तु and सर्वा respy) — (2) S1 D4 5 9 13 M3 कातिवेयम्, Cm g k t as in text (for कार्तिवेय) S1 D5 13 त्रपु, N2 V B D10 11 13 त्रपु, Cm g k t as in text (for युवन्) Cg r इति युवन् । एतच्च पदद्वयमस्य श्लोकस्यान्ते योज्यम् । Cm इति युवजिति पदद्वयमस्य श्लोकस्यान्ते न सहाय इत्युपरि द्रष्टव्यम् । Cg — S1 D5 13 om 25^{ed} — (3) N2 V B D10 11 13 पुत्रोय जगति ख्यातो — (4) B2 reads from श in संशय up to 26* in marg

26 B2 reads 26* in marg (cf v1 25) — (1) S1 N2 V B D5 10-13 देवानां ता (S1 B2 D5 11 12 वताना, V1 4 B1 दत्) वच धृत्वा — (2) S1 D5 13 सर्वं, N2 V1 4 B D11 13 पूर्व, V2 3 D10 पूर्व, D4 G2 (before corr as in text) स्कन्ध, Cm m g k t as in text (for स्कन्ध) S1 D13 गर्भं, V3 श्रव, V4 स्त्रे, G1 सुनं, Cv m g k t as in text (for सर्वे) — After 26^{ed}, D11 ins

स्कन्द इत्यनुवन्देवाः स्कन्धं गर्भपरिस्रवात् ।
कार्तिकेयं महाभागं काकुत्स्थं ज्वलनोपमम् ॥ २७
प्रादुर्भूतं ततः क्षीरं कृत्तिकानामनुचमम् ।
पण्यां पडाननो भूत्वा जग्राह स्तनजं पयः ॥ २८

गृहीत्वा क्षीरमेकाह्वा सुकुमारवपुस्तदा ।
अजयत्स्तेन वीर्येण दैत्यसैन्यगणान्निभुः ॥ २९
सुरसेनागणपतिं ततस्तममलद्युतिम् ।
अभ्यपिञ्चसुरगणाः समेत्याधिपुरोगमाः ॥ ३०

832* गङ्गाभसि परिश्रुतं तं गर्भं सर्वकृत्तिका ।
—^a G1 तान^a (sic) (for छापयत्) Ś1 D₁₂ १२ छपया
मासुरथ त—^d Ś1 Dt D₄₋₆₋₉₋₁₂ T₁ G1 यथानल (Ś1
D₁₂ १२ ररि)

27 ^a D₉ एत (for इति) —^b D₄ स्कद, Cg as in
text (for स्कन्न) Dt D₈₋₉ G₂ M₁ Cm g स्त्रवे, D₁₉ T₃
M₂ न्नुत (for न्नुत्वा) Cg स्कदत्वात् स्कन्द इत्यन्वयं
नाम । Ck स्कन्ध (nd before corr) नाम परिश्रुतत्वं हेतो
स्कन्द इत्यन्वयेनाम च चकु । Ct स्कन्ध (परिश्रुत इत्यर्थे) स्कन्द
इति । Cg —^c Ś1 D₁₁ यो, V₂ कृत्ति^a (for कार्तिकेय)
Ś1 V₁ B₂₋₄ D₅₋₁₁₋₁₂ तेजा (V₁ जे, B₂₋₃ ज), N₂ V₂₋₄
D₁₀₋₁₃ महत्तेज (V₂ ज [sic]) B₁ यमान, Dt D₈₋₉₋₁₀ G₂
M₂₋₃ वाहु (for महाभाग) —^d Ś1 D₁₁ म, V₄ जनो
(sic), D₁₂ प्रम (for ज्वलनोपमम्) —D₁₃ ३७ M₄ subst
for 24-27 N₂ V B D₁₀₋₁₁₋₁₂ subst 1 १-2 for 24
and 1 6-7 for 26^a 27^b, while Ś1 D₅₋₁₂ subst 1 7
only for 27^a

833* ता क्षीरं तस्य देवस्य समयेन ददुमदा ।
स्वादस्मास्मय पुत्रं रयातो नाश्रिण राखव ।
तयेति वै तदा देवेशप्रोक्त्वा संनिधौजिता ।
कार्तिकेय इति क्वात स कुमारस्ततोऽभवत् ।
गङ्गाक्षिपरिलस्त तं गर्भं समुपेत ता । [5]
कृत्तिका स्कन्दयामासुलमादित्यसमनुमिम् ।
स्कन्द इत्येव त इष्टा प्रोत्रुप्रतिमौजसम् ।

[(1 1) D₃ ता (sic) (for ता) D₂₋₇ अय (for
तस्य) V₁ D₁ ३७ M₄ बालस्य (for दत्तस्य) —(1 2) D₂
कथ्ये (for राखव) V₄ रयातिमाश्रिण राखव, D₃₋₇ सेनालीरिति
कीर्त्तये, M₄ ख्यातो नाम्ना भविष्यति (for the post half)
—For ins see below —(1 3) D₂ तैय (for वै) M₄ तथा
तु चोपेतो दैवैय (for the prior half) D₂ प्रहित (for
निधौजिता) —(1 4) M₄ कुमार स (by transp) —(1
5) D₂ श्रुत (for न्नुत्वा) D₂ M₄ तद, D₇ om (hapl)
(for त) —(1 6) D₁₁ क्षीर ७ (for कृत्तिका) B₁ न्नामुय,
D₁₋₃₋₇ M₄ क्षाप^a, D₁₂ च्छद^a (for स्कन्दयामासुत्) V₂ तदा
(for तम्) V₁ D₁₂ प्रम (for दृष्टम्) D₁₋₃₋₇₋₁₁ M₄
वरुणादित्यमनिभ (D₁₁ M₄ वर्षस) (for the post half)
—D₂₋₃₋₇ M₄ om 1 7 —(1 7) D₁₂ सुत (for स्कन्द)
B₄ त (sic) D₃ ते (for न) Ś1 D₁₋₃₋₇ दना कुत्र (for
इष्टा प्रोत्रु)]
—After 1 2 V₄ ins

834* अन्धोऽप्येयं शिवनानाम् स्तन्यमनुमुखाति पद ।
समभूतगन्धादाहो पयमुत्स्तेन विधुत ।

28 D₁₁ om 28^a —^a Cm g k t as in text (for
प्रादुर्भूत) —^c Dt यस्मात् (for पण्या) T₃ यता^a (sic)
G₁ तद्वदो, Cg t as in text (for पडाननो) Ck तत्
पण्या स्तनजक्षीरमचिन्त्यशक्तित्वाद् दाहातिशयेन च पण्मुखो
भूत्वा जग्राह । Cg —^d Ś1 D₁₁ १२ सुरज (D₁₁ छा [शु] पय)
स्तदा (for स्तनज पय) —For 28 N₂ V B D₁ 10 13
M₄ subst

835* प्रसूतानां तत क्षीरं पण्या तासां पडानन ।
भूत्वा स बालो ह्यपि कृत्तिकानां परिश्रुतम् ।

[(1 1) V₁ B₄ प्रसूतानां, V₂₋₄ प्रसूतानां, B₃ (m as
above) D₁₂ प्रसूतानां (for प्रसू) D₁₋₂ M₄ तदा (for तत)
D₃₋₇ पण्कृत्तिकानां तत्क्षीर (for the prior half) D₁ तामा
पूर्ण, D₂₋₃₋₇₋₁₂ M₄ तामा पण्यां (by transp) —(1 2)
D₂₋₃₋₇₋₁₃ [अ]पि (for हि) B₁ [अ]पि, D₁ [अ]पि च
(for [अ]पिक्व) M₄ भूत्वा बालो गोमपिक्व (for the prior
half) B₄ कृत्तिकायाः V₃ स्तुति (sic) D₁ रत्न, D₂₋₃₋₇ स्त
(for न्नुत्वा)]

29 Ś1 D₉₋₁₀ om 29 and 30 —^a N₂ V B
D₁₋₃₋₇₋₁₀₋₁₁ M₄ तत् (N₂ V₁ तत [hypermetric] B₁ प्र)
पीत्वा (for गृहीत्वा) G₂ क्षिप्रम् (for क्षीरम्) V₁₋₂ ह,
V₄ lacuna for ह्य, B₁ D₁₁ पुत्र^a, B₃ (orig एकस्मा, m
also) ^a प्र, D₁ ह, M₃ (after corr sec m) ^a ह्नि,
Cm g k t as in text (for एकाह्वा) D₁₂ पीत्वा तासां च
तत्क्षीर —^b V B ^a D₁₋₃₋₇₋₁₁ (for सु) V B ^a D₁₋₃₋₇₋₁₁
वरम्, B₄ यत्स (for न्नुत्वा) N₂ B₃ D₁₀₋₁₂ स (B₃
सु) कुमारो न्य (B₁ ह्य) वर्षत (B₃ m also सुवस्तदा), M₄
सुकुमारस्तदाभवत् —After 29^a D₁₁ ins

836* कार्त्तिकेय इति व्यातस्तदा प्रभृति राखव ।

(cf 1 4 of 833*)

—^a N₂ अक्रमन्, B₁ अवजत् (by metathesis) D₂
अजेय (for अचयत्) D₁ अय सर्वेन —^b V₃ सेना, V₄
सर्वदेव्य (for दैत्यसैन्य) N₂ V B D₁₀₋₁₃ बहून्, T₃ प्रभु
(for विभु) D₁₋₃₋₇ M₄ देवसेनागणा (D₂ सम) विवत्

30 Ś1 D₉₋₁₀ om 30 (cf v 1 29) —^a V₂ समं
(for सेना) B₃ (m) पति D₁₋₃₋₇ M₄ दैत्यसेनापति
(D₂ रि) गण, D₁₂ देवसेनापति तत्र —^b B₃ (m also)
देवाय (for तस्मै) G₂ ते, Cm t as in text (for तम्)
N₂ V B₃₋₄ D₁₋₃₋₇₋₁₀₋₁₁₋₁₂ M₄ अमर, B₁ असम, D₄ अतुल,
G₂ अतुल, G₄ त मथा (for अमल) Dt D₈₋₉ अन्यदि
चन्महाद्युति —^c V₁ D₁ G₁ अमिषिचन् (D₁ विष्य) Dt
D₈₋₉ तत्तल्लममरा सर्वे —^d B₁ पुरोगणा (sic)

एष ते राम गङ्गाया विस्तरोऽभिहितो मया ।

| कुमारसंभवश्चैव धन्यः पुण्यस्तथैव च ॥ ३१

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे पट्विंशः सर्गः ॥ ३६ ॥

३७

तां कथां कौशिको रामे निवेद्य मधुराक्षराम् ।
पुनरेवापरं वाक्यं काकुत्स्थमिदमनूनी ॥ १
अयोध्याधिपतिः शूरः पूर्वमासीन्नराधिपः ।

सगरौ नाम धर्मात्मा प्रजाकामः स चाप्रजः ॥ २
वैदर्भदुहिता राम केशिनी नाम नामतः ।
ज्येष्ठा सगरपत्नी सा धर्मिष्ठा सत्यवादिनी ॥ ३

31 *) Cg k t एष (as in text) Śi Ds 7 12 *विस्तरो
रामः Ns V B Ds 1 10 11 12 Ms हूति ते कथितो (Bs *त) राम
—*) Cl. विस्तरो (as in text) Śi Ns V B Ds 1 10 11 12
Ms गंगाया (Ns V 1-4 B Ds 10 *गोमा) सम्बो (Śi Ds 7 12
कीर्तितो) मया Ds Ms *मि (Ms रि) निवेदिन, Cv as in
text Cg विस्तरो दिव्यसंभव (for *) —*) Śi Ds 11 12
सुसायद् (for तथैव च) —For 31*, Ns V B Ds 1-3 7 10 12
Ms subst

837* देवस्य च कुमारस्य संभव पुण्यसीदेन ।

[Ds om च (submetric) Vs कीर्तिवर्धन Bs (m
also as above) Ds 3 7 Ms *कर्मण (for पुण्यसीदेन)]
—After 31, Dt Ds 1 10 11 12 S (except Ms) Cmg k t
115

838* भक्तस्य च काशिराजे काकुत्स्थ सुमि मानय ।
जायुष्मापुत्रप्राप्यैव स्कन्दसलोक्यतां धनयेत् ।

[[(1 x) Gs मन्त्र, Ts Gs काशिराज (sic) Ms transp
—and काशिराजे Gs बुद्धौ सुनन्त (for the post half)
—(1 2) Ds Ts Gs *प्राप्य Ds *आप्यता Ts Gs Ms 2
—सागेव (Ts Ms सायुष्य) मामपाय (Ms *माय)]

Colophon *Jāṇḍa name* Śi Ns Vs Ds om 1 1-3
B Ds 10 मन्त्रिः, Ds बालचरित्रः Ds कथोपमा —*Sarga
name* Śi Ns V B Ds 1-3 7 9-12 कुमारो (Bs स्कन्दो) लपति
(Ds *रमन्) —*Sarga no* (figures words or both)
Śi 1 1-4 Bs Ds 11 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
Ds 10 अर्चति गर्ग 39. —After colophon Ts Gs 1 1-4 Ms
conclude with धीमाताय नमः Gs धीमते राम पुत्राय नमः

37

Ns missing sarga 37 (cf v 1 I 33 8)

1 *) Ns Vs 1-4 B Ds 10 11 *तथा, Vs तथा स (for तां कथां)
Vs राम Ds रामो (sic) (for रामे) Ms तत्तां कुशिको
—*) Ns V B Ds 10 11 Ms मधुरां कथां (lacuna before था
in Bs is filled up with राम राम राम राम), Ds Gs 1 Ms 2
क्षरी Cg cites कुशिकामज (for मधुराक्षराम्) —) Gs
damaged for काकुत्स्थ —For 1, Ds 3 7 11 Ms subst.
Ns V B Ds 10 11 subst 1 2 only for 1*

839* तां कथां कथयित्वैव रामायामिततेजसे ।
पुनरेव कथामेतां कथयाम स वीरिणः ।

[[(1 x) Ds 7 [ए] ज्ञा, Ms च (for [ए] ज्ञा) Ds 11 कथयते
—(1 2) Ds नपुल्ले (metathesis) (for पुनरेव) Vs Ds
रिषा Ds 3 7 11 Ms पुण्या (for एतां)]

2 *) Vs Gs 1 कथोपमाया एतन् Ns V B Ds 1-3 7 10
11 12 Ms 4 धीमातुः Dt Ds 8 वीरः Ds Ts Ms दूर (for
नूर) —*) Lacuna before मा in Bs is filled up with
र म राम राम राम Ts lacuna for ममता —*) Ds मया
Ms त था Cm as in text (for त च)

3 *) Ds 11 Gs Ms विदुर्मः Cmg k as in text (for
वेदुर्मः) Ns V B Ds 1-3 7 10 11 Ms विदुर्मतामदुहिता (Ns
Bs Ds 11 *तनया) —*) Vs वेतिगः Ds वेतिगः Ds वेतिगः
Ds वेतिगः (for वेतिगः) Ds reads second नाम in
many Ds 3 7 हनुवद् (Ds *न [sic]) —*) Ds सगरा-
Ns 1 1-4 B Ds 1-3 7 10 11 Ms नववर्षादिः 1 2 नववर्षा-
Ds नववर्षा (for नववर्षा ता)

अरिष्टनेमिदुहिता रूपेणाप्रतिमा भुमि ।
द्वितीया सगरस्यासीत्पत्नी सुमतिर्मेजिता ॥ ४
ताभ्यां सह तदा राजा पत्नीभ्यां तप्तगांस्तपः ।
हिमयन्तं समासाद्य भृगुपुत्रप्राणणे गिरौ ॥ ५
अथ वर्षयते पूर्णे तपसाराधितो मुनिः ।
सगराय वरं प्रादाद्भृगुः सत्यवतं वरः ॥ ६
अपत्यलाभः सुमहान्भविष्यति तजानघ ।

कीर्तिं चाप्रतिमां लोके प्राप्स्यसे पुरुषर्षभ ॥ ७
एका जनयिता तात पुत्रं वंशकरं तव ।
पटिं पुत्रसहस्राणि अपरा जनयिष्यति ॥ ८
भाषमाणं नरव्याघ्रं राजपट्वयौ प्रसाद्य तम् ।
ऊचतुः परमप्रीते कृताञ्जलिपुटे तदा ॥ ९
एकः कस्याः सुतो ब्रह्मन्का बहुजनयिष्यति ।
श्रोतुमिच्छान्वे ब्रह्मन्सत्यमस्तु वचस्तव ॥ १०

4 °) Ds 115 नेमेद्, Cv as in text (for नेमि)
—^a) V2 4 B1 3 m also धर्मेण, D1 रूपेमा (sic)
(for रूपेण) D1 27 [ब] सट्टशी (for [ब] प्रतिमा) Dt
Ds 8 सुपणमगिती तु सा —^c) D12 G2 4 Ms (before
corr) साग° (for सगराय) —^d) N2 V B D1 10 13
परमधार्मिका (V2 B2 °की), D1 11 धर्मपरायणा, D2 धर्म-
परिग्रहा, T2 °शिका (for सुमतिर्मेजिता) D2 7 परिधर्म
परायणा

5 °) S1 N2 V B D1 10-13 महेष्वाय, Dt Ds 8 G2
M1 2 महाराज (Ms °ज), Ds °राम (for तदा राजा) D1-3 7
M1 तान्म्या स राधा सहित —^b) V2 वृष (for तप) —
S1 Ds 12 G2 3 ड (Ds ब) पात्रिय, G2 M1-2 °ध्रिय (for
समासाद्य) N2 V B D1-3 7 9-11 13 M4 वयस्यकाम काकुल्य
(V4 D2 7 °ल्यो, D11 °*) —^d) D2 °ध्रवणे, D13 प्रवरणे,
Cm g k t as in text (for प्रववणे)

6 °) N2 V B D1 10 11 13 तस्मै (D11 जय) वर्षमहसाते,
Cm g as in text (for °) N2 B2 m also as in
text) D10 परिशेषित, D2 Ms तोषितो (for [ब] राधितो
मुनि) —^c) D12 सागराय —^d) B4 तुष्ट (for भृगु)
V2 सत्यवती° (sic) D1-3 7 प्रवप (D1 °ह [sic] ता°, D11
सम्पत्ता°, D12 सत्यवद्°) (sic) G1 °पराक्रम, M4 दृष्टपरावर
(for सत्यवता वर)

7 °) V2 पुत्र (submetric) (for अपत्य) G4 स
(for तु) Cg सुसहस्रपविषयत्वासुमहत्त्वम् (C—^a)
S1 Ds 11 13 भविता ते नरेभ्यः (D11 12 °र [sic]) N2 V B
D1-3 7 10 13 तव राजन्मविष्यति —^c) N2 B2 D10 13 ब°,
D1 3 7 9 वैवातुता, T2 च° (sic) (for चाप्रतिमा) Ds
(before corr as in text) लोच° (for लोके) N2 V2-3 B
D1-3 7 9-11 13 M4 सतातोय (D1 °वा [sic]) मवाप्ययति
(for °) V4 कीर्तिमाभीरिमहोने सतातस्ते भविष्यति

8 °) V4 एषा (for एका) S1 Ds 11 13 राजन्, N2 V B
D2 7 10 13 G1 3 पुत्र, D1 M4 पत्नी, Cg k t as in text
(for तात) —^b) N2 V B2 4 D2 3 7 10 13 पत्नी (for पुत्र)
N2 V2 4 B2 4 D10 13 °धर, Cm as in text (for वंशकर)
D2 सुत (for तव) B2 तव वशनिवर्धने, G1 3 वंशकारांसेय

हि —^a) V2 D2 3 7 11 पटि, V4 T G1 3 4 Ms पटि, Ck t
as in text (for पटिं) S1 Ds 12 सहस्राणाम् (for
सहस्राणि) —Note hiatus between ° and ° —^d) S1
Ds 13 एकावि, N2 V B D1-3 7 10 11 13 M4 द्वितीया (V2 °य
[sic]), G1-3 M1 ह° (to avoid hiatus) (for नपरा)

9 °) D2 भावमान (sic) (for भाषमाण) D4 1 14 T
G2 4 M1 3 महात्मान, M4 तथा तवै (for नरव्याघ्र) S1 N2
V B Ds 10-13 मुनिमेव (S1 Ds 11 1° एवं मुनि [by transp.])
भाषमाण (D1 °ण), D1-3 7 हृल्येव भाषणं तु (D1 त),
G1 3 इति समापमाणे तु —^d) Dt Ds 8 Ms Cg k t पुत्री,
D1 पत्नी (sic) T2 पुत्र्या (sic) G4 M4 पुत्री (sic) (for
पत्न्यौ) Cg राजपुत्र्यायिति छत्रिन्यायात्कुम्भम् Cg S1 मदेश्वर,
Ds 11 12 नरोत्तम (D12 °म [sic]) Ds प्रसाधनि (sic)
G2 3 प्रणय्य°, G2 °तौ (sic) M3 प्रसाद्य, M4 °तु (for
प्रसाद्य तम्) N2 V B D1 3 7 10 13 सत्यधर्म (D1 2 °मै)
तपोनिधि (B4 °नित) —^c) T2 G2 परम (sic) (for
परम) Ds G4 प्रीते (sic) (for प्रीते) —^d) T2 (with
hiatus) उने (for तदा) —For 9° N2 V B D1-3 7 10 13
subst

840° ते पट्वयौ समरस्येदे हृत्वाञ्जलिभाषणम् ।

[B2 है (for वे) V2 [ह] म (for [ह] र) N2 V1 3 B2 4
D2 3 13 कृतान्तिम् (B4 D2 °ली) B2 बद्धा° (for वृत्ताञ्जलि)
V4 अभाषत (sic)]

10 °) D12 कस्या (for कस्या) Ms (after corr
sec m as in text) सुते (sic) (for सुतो) N2 V B
D1-3 7 10 11 13 एक का (°कैक) तनय ब्रह्मन् (D1 3 7
जनयेत्सुते) —^b) B2 बहुन्का (by transp.) B4 °बहुन्
(for का बहुन्) —^c) T2 इच्छ महे, Cm t °बहे (as in
text) D1 T1 3 G2 4 M1 सत्यक (for ब्रह्मन्) S1 2 V B
D1 10-13 भगवच्छ्रो (S1 Ds 11 12 हृल्येच्छो) तुमिच्छाय (V1
°मि also) D1 3 7 श्रोतुमिच्छामि (D1 °व) भगवद् (D2 वो
भवद् [sic]) —^d) S1 Ds 11 M4 मय चस्तु (D11 °*) D12
सम वास्तु, G2 °वस्तु (for सत्यमस्तु) M4 वस्त (for वचम्)
N2 V B1 3 Ds 13 सत्य (B1 3 D10 13 °य) तोलु करो दि
वै, B4 सत्य वस्तु वरौ दि नौ, D1-3 7 सत्य एतौलु (D2 °य
स) नो (D1 ते, D2 वो) वर, Cg as in text (for °)

तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा भृशः परमधार्मिकः ।
 उवाच परमां वार्णीं स्वच्छन्दोऽत्र तिथीयताम् ॥ ११
 एको वंशकरो वास्तु बहवो वा महानलाः ।
 कीर्तिमन्तो महोत्साहाः का वा कं परमिच्छति ॥ १२
 मुनेस्तु वचनं श्रुत्वा केशिनीं रघुनन्दन ।
 पुत्रं वंशकरं राम जग्राह नृपसन्निधौ ॥ १३
 पटिं पुत्रसहस्राणि सुपर्णभगिनी तदा ।

महोत्साहान्कीर्तिमन्तो जग्राह सुमतिः सुतान् ॥ १४
 प्रदक्षिणमूर्ध्नि कृत्वा शिरसाभिप्रणम्य च ।
 जगाम स्वपुरं राजा सभायौ रघुनन्दन ॥ १५
 अथ काले गते तस्मिङ्द्वेष्टा पुत्रं व्यजायत ।
 असमञ्ज इति ख्यातं केशिनीं समरात्मजम् ॥ १६
 सुमतिस्तु नरव्याघ्र गर्भतुम्भं व्यजायत ।
 पटिः पुत्रसहस्राणि तुम्बमेदादिनिःसृतः ॥ १७

11 °) Śi D1-3 7 11 12 तु वचन, N2 V B D10 13 M4
 एतद्वच (for तद्वचन) —^a) N2 V B D10 13 M4 स मुनि
 (B1 °ति) प्रवरस्तदा (V2 °था) —^c) Śi D5 11 12 14 T2
 (after corr.) G4 M4 मधुरा, N3 V B D10 13 मधुर, D1-3 7
 परम (for परमा) N2 V B D1-3 7 10 13 वाच्य (for वार्णी)
 —^d) D12 स्वच्छन्दे N2 V B D1-3 7 10 13 स्वच्छन्देन
 ददामि (N2 V3 B3 4 D10 13 °ति) वा (V3 वै, B3 व,
 D3 का), M4 स्वच्छन्देनाभिधीयत, Cg as in text (for °)

12 °) Śi यो°, G2 स्तु (for वास्तु) —^a) Śi यो
 (for वा) —^c) D4 महोत्साह Śi D5 15 एव का (for का वा
 क) D12 इच्छति (for इच्छति) D11 कीर्तिवतो महोत्साहा
 न्नाव श्वा वाच इच्छति (corrupt) —For 12 N2 V B
 D1-3 7 9 10 13 subst while D11 ins 1 2 only after 12

841* एका वंशकर पुत्रमेका चारुताकान्यहून् ।
 यथेष्टं मा वरयता यस्या यदमिकाक्षितम् ।

[(1 2) D1 3 7 यदक्ष —V4 om from the post
 half up to 13° V1 4 B3 (m also) 4 [अ] वरयत (V2
 °थ) रात्, D1-3 9 वाचसात् D13 वरासात् (for वाच
 सात्) N2 reads वरु in marg —(1 2) D3 7 यथेष्ट,
 D9 येष्ट (sic) N2 D10 13 वरय, B3 °थि, B4 °ति (sic)
 D-3 7 9 °वत्, D11 °यु (for वरयता) D5 वय (for यस्या)
 D13 तथा दायामि वाञ्छित (for the post half)]

13 V4 om 13^{ab} (cf v1 12) —^a) D1 पुनर
 (for मुनेत्) N2 V1-3 B D1 3 7 10 13 एतद् (D1 °व व) च,
 D3 4 11 M4 हून् (for तु वचन) —^b) B3 (after corr.)
 एतानी, D2 केशिनी (sic) (for केशिनी) —T3 om
 (hapl) T2 reads in marg 13°-15° —^c) N2 V2 3
 B D3 7 10 13 वंशकर, Ck as in text (for वंशकर) V1
 G4 नाम (for राम) —^d) N2 V B (B3 alter corr.)
 D1-3 7 10 13 M4 [ए] वमनिन्ता, D3 12 °समदि, Ck t as
 in text (for नृपसन्निधौ)

14 T3 om, T2 reads in marg 14 (cf v1 13)
 —^a) V2 D3 4 9 13 पटि; G1 24 पटि, Cg 15 in text
 (for पटि) D4 स्रष्टव्याः Śi D5 12 पुत्रसन्निधौ —^b) V2
 मधुर, D1 12 13 G2 मुपुर्ण, D3 मुपुर्णः; Ck t as in text
 (for मुपुर्णभगिनी) D1 (Glos) सुमतिः (Śi D5 11 13

तत, N2 V B1 3 4 D1 4 7 10 13 M3 तथा (for तदा) —^c)
 D14 महोत्साहो (sic) Dt D4 6 9 14 कीर्तिमन्तो (sic) Śi
 D5 11 12 M3 कीर्तिपुत्रमहोत्साहार् (for °) Śi D5 11 12
 तदा (for सुतान्) N2 V B D1-3 7 10 13 M4 जग्राह कीर्ति
 (V4 श्रीति) युक्तानि (D- °ना, D13 °यित्यामि [sic]) सुमतिर्व
 (D1-3 7 °हद्) रमीषित

15 T3 om T2 reads in marg 15 (cf v1 13)
 —^a) N2 V B D1-3 7 10 13 M3 तत, Cg as in text
 (for क्षयि) —^b) Śi D5 11 वाभि (D1 °भ्य [sic])
 वा (Śi [before corr.] °व) ध, D9 सुप्रणः (for [अ]
 भिप्रणम्य) Dt D4 8 M° त (for च) N2 V B D10 13 M4
 भृशु (V2 युर्) परमे (V2 D10 कर्म) भृता वर (V4 °र, B3
 [m also] 4 °परायण), D1-3 7 भृशु ब्रह्मविद् वर —^c)
 D11 जगाम (sic) (for जगाम) N2 D10 स, D2 स्व D13
 सु (for स्व) —^d) D11 सहभार्यो (hypermetric) V4
 D2 15 रघुनन्दन —After 15 B3 ins

842* यः ह्यग्रेभिरभि राक्ष सगरस्तु प्रवापवान् ।

16 °) Dt D4 8 तस्य (for तस्मिन्) N2 V B
 D1-3 7 10 13 M4 अथ बलिन् महा —^b) Śi V2 D1 13
 पुत्र ज्येष्ठ, N2 V2 4 B D10 13 M3 पुत्रे ज्येष्टा (by transp.)
 V2 D13 अनापत, D7 °ता (for व्यजायत) —D° om
 (hapl) 16°-17° —^c) Śi D5 M3 अतममम्, V1 3 4
 B1 3 D1 11 °मवा, V2 D10 13 °मजसम् (V2 °स [all
 hypermetric]) B4 °मजी, D3 अतमं नाम (hypermetric)
 (for असमजम्) V2 4 D3 11 ह्यात (for ह्यात) —^d) Śi
 N2 V B D1 3 7 10 13 वाहुम्य (V4 D3 7 °म्य; B3 D11
 °रथ्य) (for वेशिनी) V2 4 D3 11 समरात्मन (D3 °)

17 D2 om 17^{ab} (cf v1 16) —^a) N2 V B
 D10 सुमति, G4 सुमतम् N2 V B D1 3 7 10 13 [अ] पि
 (B4 [अ] पि, sic) D1 7 11 तु, D2 सु, D3 च) सुबुध (for
 तु नरव्याघ्र) —^b) Śi N2 V B D1 3 11 नर्म (V2 °र्म) (for
 नर्म) B4 om D2 7 अ, लोठ, G2 मुन, all Cs as in
 text (for नुम्ब) B1 व्यमुत्त, M4 अ (for व्यजायत)
 D1 गमार्द्धं व्यजायते (sic) and Glos गर्भं प्राप्य व्यजायत
 —M3 transp 17^{ab} and 18^{ab} —^c) Śi V2 3 D3 4 12 13
 पटि, V1 B4 Dt D1 3 7 10 13 M4 पटि, Cg k t 15 in text
 (for पटि) V2 पुत्रे पटि (sic) —^d) Śi D1 3 7 11 13

घृतपूर्णेषु कुम्भेषु धान्यस्तान्ममर्चयन् ।
कालेन महता सर्वे याननं प्रतिपेदिरे ॥ १८
अथ दीर्घेण कालेन रूपयौवनशालिनः ।
पटिः पुनमहस्त्राणि सगरस्याभर्गस्तदा ॥ १९
स च ज्येष्ठो नरश्रेष्ठ सगरस्यात्मसंभारः ।
बालान्गृहीत्वा तु जले सरण्या रघुनन्दन ।

तुवे मित्रे (D₃ मेते [sic]) N₂ V B D₁₀ 12 मित्रे तुवे, D₃ कुम्भे मित्रे, D₃ मध्याद् (for तुम्यमेदाद्) S₁ N₂ V₁ 2 B D₃ 5 7 10-12 विनिर्यु, V₃ व्यनयत्, Dt विनिसृता, D₁₁ T 'मिषुवा (D₁₄ वा), M₄ ततो नयत् (for विनि सृता) D₁ तस्मिन्नेवामरत्तदा and gloss या द्वितीया सुमतिनाम्नी

18 M₃ transp 18^{ab} and 17^c —^a) D₃ om, G₁ कुड्यु (for कुम्भेषु) S₁ B₂ D₃ 9 12 transp पूर्णेषु and कुम्भेषु —^b) S₁ N₂ V₁ 3 B D₁₀ 12 अभ्य (B₂ 'भ्य) वर्चयन् (S₁ 'त्), V₃ अभ्यभूषणे (sic) D₁ 3 7 M₄ च व्य (D₁ वि) वर्चयन्, D₃ 'यत् (sic) D₁₁ अभ्यवर्चनयत् (sic) M₃ 'ययन् (for समरर्चयन्) —^c) M₃ कियत् (for महता) S₁ D₁ 3 5 7 11 12 ते तु (for सर्वे) N₂ V B D₁₀ 12 M₄ ते च (M₄ 'य) कालेन महता

19 ^{ab}) S₁ D₁ 12 दीर्घस्य कालस्य Cm g t दीर्घेण कालेन (as in text) N₂ V B D₁ 2 3 7 10 11 13 M₄ समानर (D₃ 'यस सर्वे तुल्यदीर्घपराजना —^a) V₁ B₁ D₁ 7 11 पटि, D₂ 3 9 11 पटि (for पटि) V₃ c B₁ 4 मरुत्तला S₁ D₃ 12 पुत्रा पटि^c —^d) D₁ 3 7 11 M₄ तान्वेवम्, D₁₂ सागरस्य S₁ D₁ 12 तदामवत् (by transp) N₂ V B D₁₀ वयम् इ (N₂ B₂ D₁₀ हि, V₁ हा), D₁₁ [ज] *^o (for [ज] भवस्तदा)

20 ^a) M₃ (after corr sec m as in text) ज्येष्ठो, G₁ k t as in text (for ज्येष्ठो) S₁ D₁ 12 G₂ ज्याम, ज्येष्ठ (for ज्येष्ठ) D₁ 2 D₃ 8 G₁ —For 20^{ab} N₂ V B D₁ 2 7 10 11 13 M₄ subst

843^a स च ज्येष्ठोऽभवत्तेषामसमज्जा परतप ।

[B₂ सच (for स च) V₃ सत्ता वदन्त यत्नेषाम् (sic) (for the prior half) V₂ सन् तप, D₁₂ 13 M₄ अमनन (for प्रमनजा) B₂ 3 D₃ M₄ वनन]

—N₂ V B₁ 2 D₁ 3 5 7 10 11 13 M₄ om 20^{ab} S₁ reads 20^{ab} 12 in marg —^a) M₃ वलद् (for यलद्) M₁ तु, M₃ [अ] ज (for तु) —^b) S₁ Dt D₃ 9 T₂ 3 G₂ M₃ मरुत्ता D₁₄ illeg (for मरुत्ता) —^c) S₁ Dt D₃ 2 T₂ G₂ M₁ Ck t प्रहयन् (Ck t 'हय्), M₃ प्रहयन् (metathesis) Cm g tp as in text (for प्रहयन्) —^d) D₁ 3 M₃ निरी (M₃ समी) सते (D₃ 'त), D₁₁ T₂ 3 G₂ M₃ स समीर्य य

प्रक्षिप्य प्रहसन्नित्यं मज्जतस्ताम्रिरीक्ष्य वै ॥ २०
पौराणामहिते युक्तः पित्रा निर्वासितः पुरात् ॥ २१
तस्य पुरोऽंशुभाभ्राम असमञ्जस्य वीर्ययान् ।
संमतः सर्वलोकास्य सर्वस्यापि प्रियंवदः ॥ २२
ततः कालेन महता भतिः समभिजायत ।
सगरस्य नरश्रेष्ठ यजेयमिति निश्चिता ॥ २३

Ch. t मज्जतस्ताम्रिरीक्ष्य —For 20^{ab}, B₂ D₁₁ subst and read after 21

844^a पौराणा बालकाकी वा रदतोऽपि दिने दिने ।
सख्यास्तु प्रवाह्यु प्रवाहयति निर्दय ।

[(1 2) D₁₁ मज्जतश्च (sic) (for मरुत्ताश्च)]

—After 20, S₁ Dt D₃ 8 9 11 S (except M₃) Cm g k t ins

845^a पूव पापसमाचार सज्जनप्रतिपाद्यक ।

[G₂ स जन (for मजन) D₁₄ M₄ -वारक (sic) (for -वापक)]

21 ^a) G₁ अधियो (for अधिने) N₂ V₁ B₁ 3 D₁₀ रक्त (for युक्त) —^b) N₂ निर्व्यसित (sic) V₁ B₂ D₃ पुरा (for पुरात्) V₃ पुरापित्रा निवासित —After 21 B₂ D₁₁ read 844^a

22 D₃ om (hapl ?) 22 —^a) S₁ D₁ 12 भार्याद्, N₂ B₂ ताम (for नाम) D₁₁ तस्यानुभाभ्राम सुत —Note hiatus between ^a and ^b —^b) D₁ 3 अमर्त्यम्, Cm k t असमनस्य (as in text) N₂ V B D₁ 3 7 10 13 वयम् इ (B₁ D₃ अ [with hiatus]) अमर्त्यम् (V₁ 'जय), D₁₁ सयभूषामनाम —^c) V₃ सर्वलोकायु (for 'लोकास्य) M₄ सम सर्वस्य लोकस्य D₁ om from स up to रि नि —^d) S₁ D₁ 3 5 7 11 12 सर्वस्यैव (D₁₁ 'वै), N₂ V B D₁ 10 13 G₁ 3 M₄ सर्वलोक (for सर्वस्यापि)

23 ^a) S₁ D₁ 12 तस्य, N₂ V B D₁ 3 7 10 13 M₄ शय Cm g as in text (for सन) D₁₁ काञ्चन महता तस्य —^b) S₁ D₁ 3 5 7 11 12 भार्यान्महामन, N₂ V B D₁ 10 13 पूव (V₁ 'व) म (V₂ 4 B₂ व्य) नायनः D₁ समभिजायते, Cm t as in text (for समभिजायत) M₃ सुमति समजा, M₄ सुदिनस्य वयम्, G₂ as in text (for ^b) —^c) D₃ मयाभ्य N₂ V B D₁ 3 7 10 13 M₄ [अ] अमेधेव (for नरश्रेष्ठ) —^d) D₃ जयेयम् (metathesis) (for यनयम्) S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 10 13 M₄ रायन्, G₂ निजिन, G₂ 15 in text (for निजिना)

स कृता निश्चयं राज्ञा सोपाध्यायगणस्तदा ।

यज्ञकर्मणि वेदज्ञो यतुं समुपचक्रमे ॥ २४

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे सप्तत्रिंशः सर्गः ॥ ३७ ॥

३८

निश्चामित्रवचः श्रुत्वा कथान्ते रघुनन्दनः ।
उनाच परमप्रीतो मुनिं दीप्तमिमानलम् ॥ १
श्रोतुमिच्छामि भद्रं ते विस्तरेण कथामिमाम् ।
पूर्वको मे कथं ब्रह्मन्यज्ञं वै समुपाहरत् ॥ २
निश्चामित्रस्तु काकुत्स्थमुनाच प्रहसन्निव ।

श्रूयतां विस्तरो राम सगरस्य महात्मनः ॥ ३
शंकरश्चशुरो नाम हिमवानचलोत्तमः ।
विन्यपर्यतमासाद्य निरीक्षिते परस्परम् ॥ ४
तयोर्मध्ये प्रवृत्तोऽभ्युद्यज्ञः स पुरुषोत्तम ।
स हि देशो नरव्याघ्र प्रशस्तो यज्ञकर्मणि ॥ ५

24 *) Cg t निश्चय (as in text) Śi कृत्वा (sic) V: तत्र, D1: T1: 2 G2 M1 राम (for राजा) N2 V1-3 B D1-3 7 10 11 13 M4 "निश्चिता बुद्धि" —^b) N2 V B D1-3 7 10 13 M4 वृष, D4 T1 G4 तथा, M3 (after corr "sec m as in text) सदा (for तदा) —^cd) Cg as in text (for *) N2 V B D1-3 7 10 11 13 M2: सगरो यदुमारमे कृत्वा द्रव्य (M: यद्) परिग्रह —After 24 Śi D3: 7 11 13 ms 845* तत्र तस्यात्मजा राम प्रविष्टा का (D1: क) विल यतु ।

Colophon D3: 12 om (continue the sarga) Śi reads colophon in marg —Kanda name Śi N2 D4 om V B D10 11 प्रादि, D1: 3 अयोध्या* —Sarga name N2 V B D1-3 10 11 सगरपुत्रजन्म, D7 सगरजन्म, D9 पुत्रजन्म —Sarga no (figures words or both) V1: 4 B1: 4 D3: 11 om Śi Dt D4: 8 14 S 38 N2 B2: 2 D10 40 V2: 42 V3: 39 D1: 7 31 D2: 32 D9 41 D13 —यणे— काडे—ष्टा—जन्म नाम —After colophon, T2 G1: 2 M3 conclude with श्रीरामायणं नम, G3 श्रीमते रामानुजाय नम

38

—D3: 12 continue the previous Sarga —Before 1 B1 (marg) ins

847* आदी रामायणे चैव पुराणे भारते तथा ।
आदानां च मध्ये च हरि सर्वत्र गीयते ।

ॐ रामचन्द्राय

1 *) V2 कथारते (sic) B3 तपुः* —^a) D1: 7 M4 रामो भूयते Ck as in text (for परमप्रीतो) —^d) D1: दीप्ति (for दीप्तम्) D13 लोचनं (hypermetric) (for [अ]लम्) D1-3 दीप्तानलसमदुर्त (D1: 'ति), M4 'दीप्तानलमुनि

2 *) Śi N2 V B D1-3 5 7 10 11 13 M4 भगवन्; D1: दशमिभगवन् (sic) (for भद्र ते) —^b) Dt विस्तारेण —^c) Cg k पूर्वको (as in text) Śi D5 पूर्व को मे, V2-4 B4 Dt D1: 2 6-9 12 T1 पूर्वको मे (V3 'लोके, V4 'मेको, D1: 7 9 'काले), D3 पुर (illeg) काले, G2 सवु (sic) (for पूर्वको मे) N2 V B D1-3 7 9-11 13 M4 यथा (D2 कथ) यज्ञ (for कथ ब्रह्मन्) —^d) Cmg समुपाहरत् (as in text) Śi D3: 13 यज्ञा (Śi 'ज्ञ) समवाप (Śi 'व्य) ह, N2 V B D1-3 7 9-11 13 M4 सगर समवाप (D2: ** यान्) —After 2 Dt D3: 14 T1: 2 G4 M3 3 ms

848* तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कौतुहलसमन्वितम् ।
[G2 M1 कुतूहल Dt D3: 8 समन्वित]

3 T2 reads 3 and 4 in marg —^a) N2 V B D1-3 7 10 11 13 M4 ततो रामम् (for तु काकुत्स्थम्) —^b) B4 om प्रहसन्निव G2 M1 हृद वचनमवधीत् —^c) N2 B3 (m also as in text) D10 विस्तार —^d) D13 सागरस्य N2 V B D1-3 7 10 11 13 M4 कथां प्रति (for महात्मन)

4 T2 reads 4 in marg (cf v1 3) —^a) V4 दीकरस्य गुरु (for दीकरशशुरो) N2 V B D1: 3 7 10 11 13 M4 श्रीमान्; Dt D3: T1: 3 G1: 3 नाम्ना D2 चासीद्, D3: 8 M3 राम, D13 नम (for नाम) —^b) Dt D3: 8 इति ति (D3: *) शत (for अचलोत्तम) —After 4^{ab}, M3 (inf lin sec m) ins

849* इन्द्रदत्तवर धीमानद्रिराज्येऽभिषेचित ।
—^a) D3: 12 विप्रे (for विन्य) Śi D3: 11 विप्रेश्च पर्वतश्रेष्ठे छ: Cv भाग्यधेनि । रियत इत्यवरकार्यम्, Cmg आस्ताव रियत इति दोष । छ: —^b) D1 M1 निरीक्षेत्, D1: 'क्षते, T2 G2: 4 M3 'दयेते, G1 कीदयेते च all Cs as in text (for निरीक्षेते)
5 *) Dt D3: 8 समवाप; G1: 2 'सो G2 प्रवृत्तो; Cg as in text (for प्रवृत्तोऽभ्युद्यज्ञ) —^b) Śi D3: 13 यतो वै रघुनन्दन —For 4^a-5^a N2 V B D1-3 7 9-11 13 M4 subst

तस्याश्चर्या काकुत्स्थ दृढधन्वा महारथः ।
अंशुमानःकरोत्तात सगरस्य भते स्थितः ॥ ६
तस्य पर्याणि तं यज्ञं यजमानस्य वाससः ।
राक्षसीं तनुमास्थाय यज्ञियाश्वमपाहरत् ॥ ७
हियमाणे तु काकुत्स्थ तस्मिन्मध्ये महात्मनः ।
उपाध्वायगणाः सर्वे यजमानमथाबुवन् ॥ ८

अयं पर्याणि वेगेन यज्ञियाश्वोऽपनीयते ।
हर्तारं जहि काकुत्स्थ हयश्चैवोपनीयताम् ॥ ९
यज्ञिच्छिद्रं भवत्येतत्सर्वेषामशिवाय नः ।
तत्तथा क्रियतां राजन्ययाच्छिद्रः क्रतुर्भवेत् ॥ १०
उपाध्वायवचः श्रुत्वा तस्मिन्सदसि पार्थिवः ।
पठि पुत्रसहस्राणि वाक्यमेतदुवाच ह ॥ ११

850* विन्ध्यश्च स्वर्धपाग्न्येन्य यत्र देशे निरिक्षताम् ।
तस्मिन्देशे स यज्ञोऽभूत्सगरस्य सहात्मन ।

[(1 x) V3 D1 विन्ध्य V2 यत्र देश, V3 स्वर्ध, D1 3 7 9
M2 यस्मिन्, D2 यस्मिन्हेतो (for यत्र देशे) V1 3 B1 2 *क्षत्र, B4
D10 *क्षत्र, D1-3 7 9 11 स्वर्धपा (D1 9 'त), M2 निराक्षिणी
(for निरिक्षताम्) —After 1 x D3 7 ins as a gloss for देशे
हिमविन्ध्ययोर्मध्य यज्ञायितवशनाभि । प्रत्यगेव प्रयागाश्च सप्तदेश
प्रतिर्नित । (Manu II 21) —N2 reads 1 2 from ये
in देशे in marg —(1 2) D2 तयोर्मेधे, D3 7 व* (for
तस्मिन्देशे) B1 *ज्ञो D11 * (for यज्ञोऽभूत्)]
—C) M2 ह, Cg as in text (for हि) D11 तेशो (sic)
(for देशो) N2 V B1-3 D10 13 M4 मनुष्येषु (V2 *यज्ञ,
V4 also *यज्ञ), B4 रघुध्रेष्ठ (for नारयाध्र) —d) T3
प्रराह्यो, Cn g k t प्रराह्यो (as in text) N2 V B D10 13
M4 स्वात (B4 मदा) गुणयजना (M4 *का) धित (V2 *धय,
B2 *नित, M2 *वृत्)

6 * D1 कार्य (for चर्या) N2 V B D1 3 7 9-11 13
तस्य चा (D2 3 7 9 11 अश्वत्था) बुच (D10 *नित) रो राम (V2
वाचय, D2 7 नाम, D3 *म) —b) V4 दृढ रावा, M2 *यत्वा
(sic) (for दृढधन्वा) B1 D3 -रथ, D11 *रल (for -रथ)
—c) N2 V B D1-3 7 10 11 13 अमवद्वोर (B1 *र, D2 *च्युर,
D3 last two letters illeg) (for अकरोत्तात) —d) D2
*alleg ग-रथ (for सगरस्य) Cn g t मते (as in text)
S1 D12 महात्मन, N2 V B D1 3 7 10 11 13 तदाज्ञया (for
मते स्थित)

7 * D1 S1 12 रायव (for वासव) —d) D2 14 G1 3
M2 3 दा (D11 *) क्षीय, Cn g k यक्षीय, Ct यक्षिय (as
in text) D4 14 T3 3 G2 4 M1 उपा, M2 सभा, Cg as
in text (for अपाहरत्) S1 D12 केनाप्यश्वस्त (D12 *न) दा
हत

8 D2 G4 om (hapl) 8^h-9^h —b) S1 D1 12 कलि,
M2 यज्ञे (for अश्वे). —d) D2 11 12 read sing for the
plural

9 D2 G4 om 9^h (cf v1 8) —b) S1 D1 12
यज्ञिको (D12 *क), T3 G1 3 M2 3 inf fin sec m,
before corr as in text यज्ञिय, G2 M1 Ct यज्ञिको (for
यज्ञिय) —c) Dt T3 हतार, Cn t as in text (for
हृत्तार) D2 G1 [ए] योनीयता S1 D1 12 हर्तारमस्य राजेद

जहि माश्व प्रयाययु —For 7-9 N2 V B D1 (7^h-9^h)-3
10 11 13 M4 subst

851* यजवस्तस्य त यजमुत्थाय धरणीतलान् ।
तमश्च यज्ञियं नागो जहारानन्तरूपवान् ।
हन्तश्चे यज्ञिये तस्मिन्मर्त्ये ते द्युनन्दन् ।
यानका समुपायाय यजमानं वदामुवन् ।
केनापि नागस्त्वेण हवस्तेऽथ स यज्ञिय । [5]
हत्वा तमश्चद्वर्तार तमेवाश्च त्वमानय ।

[D1 om 1 x —(1 x) V2 (with hiatus) तपसे,
D11 *श्च (for त यजय) —(1 2) D11 *यो, M2 या* (for
यज्ञिय) D7 भालो (for नागो) N2 V4 B4 D10 11 *हृक्,
V2 नृक्, V3 *क, कित, B1 न ह* (for [अ]नन्तरूपवान्)
—(1 3) D1 M2 वा*, D2 illeg (for यज्ञिये) D11
तत्र (for तस्मिन्) D1-3 7 M2 repeat the post half of
1 x D11 नागेन धरणीतलान् (for the post half) —(1 4)
D1 यज्ञिका (for यानका) V2 तया, V3 D1-3 7 अय (for
तदा) For 1 4 D11 reads the line of 8^h —After
1 5 D2 7 read the line of 9^h as in G2 with v 1
केनेन (for वेगेन in D7) —(1 5) V2 सगरस्यो D2 च, M2 तु
(for स) D1 2 M2 यज्ञिय V2 हतोश्च स च*, D3 7 हतस्ते
यज्ञियोषक, D11 हनोश्चतन* (for the post half) —D10
om 1 6-10^h —(1 6) D11 13 हतार (for -हर्तार), D1
हर्तारमस्य राजेद (= 9^h in S1) (m also) हयनामश्चद्वर्तार,
D3 7 त हत्वा (by transp) चाच* (for the prior half)
D12 त्व* (for त्व) D13 त्व*, M2 रद (for त्वम्) V1 3
D3 7 त्व (V1 3 स) मानय, V3 गुण* (for त्वमानय)]

10 D10 om 10^h (cf v1 9 [851*]) D2 9 12 11
T1 G1 3 om 10 S1 reads 10 in marg —c) D7
यज्ञिच्छिद्रे (sic) N2 V1 B1 D1 2 7 11 13 M2 महडि, V2 4
B2 4 महत्तु, B1 अमृदि, Cg h as in text (for अमृदि)
V2 म यज्ञिच्छिद्रं महद्भवतु ते (hypermetric) —d) V2
अनुभाय, D1-3 7 11 M2 अद्विताय, Cg h as in text (for
अद्विवाय) —e) D12 तथा त्व (by transp) M2 तयैव,
Ch as in text (for तत्तया) —f) D11 चाय (for
[अ]च्छिद्र) S1 Dt D2 3 T3 यनोच्छिद्र हृ (Dt त) तो
अधेय

11 * D1 D2 3 9 G1 3 Ch t गोपाव्याय, Cg उपा*
(as in text) —b) V2 देशे स (for तदसि) V4 गो

गतिं पुत्रा न पश्यामि रक्षसां पुरुषर्षभाः ।

मन्त्रपूतैर्महामागैरास्थितो हि महाक्रतुः ॥ १२

तद्वच्छत विचिन्वध्वं पुत्रका भद्रमस्तु वः ।

समुद्रमालिनीं सर्गां पृथिवीमनुगच्छत ॥ १३

* (lacuna) प (for पाथिय) —^c V₃ 4 D₂ 3 10 T₂ 3 G₁ 3 4 पठि (V₃ 4 D₂ 3 °पि) (for पठि) S₁ सहस्राणां —^d M₁ एतम्; Ck as in text (for एतद्) N₂ V B D₁-3 7 10 11 13 M₄ समाह्वयेदमनवीत्

12 ^a S₁ D₂ 3 5 7 11 न गतिरदृश्यते तावद्, Cg k as in text (for for ^a) —^b S₁ D₂ 12 °स, Cg g k t as in text (for रक्षसा) D₇ 11 पुरपथम् —^c S₁ D₂ 5 11 12 निद्रिद्र, Cg k t as in text (for पूतैर्) —^d Dt D₂ 8 8 [अ]पि, G₃ (before corr as in text) [अ]द्, Cg k t p as in text (for दि) G₃ महाक्रतुं S₁ D₂ 5 11 12 अधि (D₁ °नु) हितमिदं सद (D₁ °दा) —For 12, N₂ V B D₁ 10 13 M₄ subst while D₁ (ins 1 2 after 12) 11 subst 1 1 for 12^{ab} and D₂ 7 1 2 only for 12^{ad}

852* अनगतिं राक्षसानां पश्यामीदं महाक्रतौ ।

नागानां चापि यज्ञोऽयं रक्षयते हि महापतिम् ।

[(1 1) D₁ 10 M₄ न गतिं राक्षसानां हि (M₄ एव परवामि) (for the prior half) M₄ राक्षसानां (for परवामीद्) V₁ सम (for महा) —D₁ 11 om 1 2 —(1 2) V₂ [अ]पि (for [अ]पि) D₁ 3 चान्येषां (for यज्ञोऽयं) V₃ पित्राभाभविषं (hypermetric) (for the prior half), N₂ B₄ D₁ 10 वक्ष्यते, V₂ D₃ रक्षते (sic), D₂ रक्षिते (for रक्षयते) D₁ 3 मह (D₁ °*) पित्रा (for महापतिम्)]

—Thereafter all the above MSS (D₁ ins after 12) cont (D₇ 1 only)

853* वेनावि तु म देवेन हनोऽधो नागस्त्विति ।

अमरैताच्छिद्रमेव हृद्भुः दीक्षामुपागतम् ।

योऽन्वी रतागच्छगतो यदि वास्तपैले स्थित ।

[D₂ om from 2^{ae} up to 2^{ae} in 1 3 —(1 1) V₁ हुं, V₂ D₁-3 7 च, V₃ स तुल्येन, D₁ 10 म हि (M₄ तु [by transp]) (for तु स देवेन) —(1 2) D₁ 3 °पिना (for भवन्तां) D₁ 3 मतामयेता (D₁ °पि य म) छिद्र M₄ माममरैषां छिद्रे (for the prior half) V₂ हृत्ता (for हृद्भुः) V₄ छिद्रम् (for दीक्षाम्) D₂ उगतम् —(1 3) D₁ 11 M₄ मेरे, D₂ अघो (for क्षेपम्) V₃ स च मेन, D₂ रतागते (for रतागते) V₄ B₁ D₁ 10 च, M₄ तु (for वा) V₃ (with hiatus) वरे अन्वीरे, D₂ °वास्तपिना (sic) D₁ 11 वपिणे वनगविना (for the post half)]

13 ^a Dt D₂ 8 8 T₂ M₄ (after corr sec m as in text) मन्त्रपूतः Ck °त (as in text) S₁ D₂ 13 समुपुत्राः

एकैकं योजनं पुत्रा विस्तारमभिगच्छत ॥ १४

यात्रचुरगसंदर्शस्तावत्सनत मेदिनीम् ।

तमेव ह्यहर्तारं मार्गमाणा ममाज्ञया ॥ १५

दीक्षितः पौत्रसहितः सोपाध्यायगणो ह्यहम् ।

इह स्थास्यामि भद्रं वो यावत्चुरगदर्शनम् ॥ १६

D₂ °न्वतु (for विचिन्वध्व) N₂ V B D₁-3 7 10 11 13 M₄ त (D₁ 10 ते) हत्वा न (D₇ ममामरैषां) यताथ मे —^a S₁ D₂ 11 पुना (D₁ °ता), N₂ VB D₁ 10 13 M₄ हृत्ता, D₁-3 7 11 पृथ्वी (for सर्वा) —^d S₁ B₃ (m also as in text) D₂ 12 °मार्गय (D₂ °त, D₁ 12 °थ), V₂ Dt D₂ 8 Ct °थ, V₄ G₁ 3 अन्यगच्छय (V₄ G₁ [before corr] °त), B₁ D₁ 13 °त, M₂ उप°, Cg g k as in text (for अनुगच्छत) D₁-3 7 11 हृत्ता स (D₇ ता) सुपगच्छय (D₁ °ति)

14 M₂ om (hapl) 14 —^a V₁ 3 D₂ 3 7 11 M₄ एकैको (V₂ D₁ °क) (for एकैक) M₄ योजनाद् N₂ V B D₁-3 7 10 M₄ भूमेर (V₄ °मौ), D₁ 11 G₂ पुन, D₁ 13 भूमि (for पुत्रा) —^b S₁ Dt D₂ 8 G₁ 3 [अ]मि (S₁ °नु) गच्छय, D₁ 11 12 T₂ [अ]नु (T₂ °पि) गच्छत N₂ V₁-3 B D₁ 13 निद्र (B₄ D₁ 10 वि) भिद्र (N₂ B₃ °मिद्र [sic]) तोनु (V₁ 3 °दसतु) गच्छन, M₃ °रादपिगच्छत, V₄ निमिच्छयं तु गच्छतु D₁-3 7 M₄ भिद्र (D₁ सिध) मानोनुगच्छतु (D₁ °त)

15 ^a D₂ 9 सदसं (for सदसं) —For 15^{ab}, N₂ V B D₁-3 7 10 11 13 M₄ subst and read before 14

854* प्रोत्तरन्तत् प्रयथेन यावत्चुरगदर्शनम् ।

[V₃ शप्यो (sic) B₁ °नथ, B₂ °नत, D₁-3 7 M₄ सत (D₁ °न्य) नाना (for प्रात्तरन्तत्) V₂ तगर (for तुग) M₄ दर्शनाद् (for दर्शनम्)]

—After 15^{ab}, M₃ (inf lin sec m) ins

855* नागलोकं समापद्य विचिन्वध्वं शिषोपत ।

विश्रागानानदीन्दं च येनतेयं च मातुलम् ।

क्रामद्य मुल्लोकं वै विचिन्वध्वं शिषोपत ।

उदयाचलमारुह्य निवृत्त्यान्मयं गिरिम् ।

निवृत्तयं सतु रगा भालोऽयं ब्रह्मणो गृहम् । [5]

—D₁ 3 11 om 15^{ad}, S₁ reads 15^{ad} in marg —^a D₁ 11 T₂ 3 G₂ 4 M₁ तं सैव (for तमेव) N₂ V B D₁-3 7 10 11 13 B₄ अस्माक (V₁ अथ तः) D₁ 3 7 M₄ युगमाक (मयहर्तारं) —^b V₁ 4 B₁ D₂ 3 7 मार्गमाणा, D₁ 11 समापद्य

16 ^a B₂ दीक्षितं (sic), D₂ °क्षित, N₂ V₁-3 B₂ 3 (m also as in text) 4 D₁-3 7 9-11 पुन (for पौत्र) D₂ 7 रक्षित (for रक्षित) 12 Ck पौत्रम् यावत्तु गच्छयिष्य एव शिषामि 11 so also Ct 8^{ab} (D₁ 11 अगात् (for गते) N₂ V₁-3 B₁ D₁ 12 3 6 10 11 13 M₄ लहं V₂ D₂ हदा, G₁ 3 [अ]रुह्य (for ह्यहम्) —D₂ om from

इत्युक्ता हृष्टमनसो राजपुत्रा महाबलाः ।
जग्मुर्महीतलं राम पितुर्नचनयञ्चिताः ॥ १७
योजनायामनिस्तारमेकैको धरणीतलम् ।
निभिदुः पुरुषव्याघ्र वज्रस्पर्शसमैर्धुजैः ॥ १८
शूलैरयनिरुपैथ हलैश्चापि सुदारुणैः ।

भिद्यमाना वसुमती ननाद रघुनन्दन ॥ १९
नामानां बध्यमानानामसुराणां च राघव ।
राक्षसानां च दुर्धर्यः सत्त्वानां निनदोऽभमत् ॥ २०
योजनानां सहस्राणि पटिं तु रघुनन्दन ।
निभिदुर्धरणां वीरा रसातलमनुत्तमम् ॥ २१

16° up to the end of the Sarga —^a) G1s वस्यामि, M3 [आ]ख्या° (for ख्यास्यामि) D1s ते (for वो) —^d) M4 दर्शनात् (for दर्शनम्) —After 16 N2 V B D1 3 7 10 11 13 M4 ins

856* असमाप्तमनुत्तमवदन्विषामीह पुत्रका ।
युष्मानभियावदद्यो मे न प्रत्यादित्यते पुन ।

[(1 x) D1 3 7 M4 अस्मात् B4 °ति, D1 3 7 M4 °ष्यति हि (D2*) (for अनिष्यामीह) —(1 2) V4 अस्माकं (for युष्मानिर्) N2 V2 B3 (m also as above) D10 क्रियते, D11 °दिश्वते M4 प्रीत्या° (for प्रत्यादित्यते) D1 M4 ह्य D3 7 तत् (for पुन)]

17 D2 om 17 (cf v l 16) —^a) S1 Dt D1-4 8 9 12 T3 G1s ते सर्वे, V B1 3 4 M4 ह्य (V2 प्र)त्युक्त्वा (V4 °को) (for इत्युक्ता) D3 ह्य (for हृष्ट) G4 मनसा —^b) N2 V B D1 7 10 11 13 M4 विनाय (V2 4 पुत्राश्च, M4 °तु) सतरिण ते (B1 वै, D1 च, D11 हि), D3 विनासयगोरेण ते (sic) —After 17^{ab}, D4 M2 (D4 after 17) ins

857* नाचा तु पृथिर्वी मवानदद्या च (D4 त) महाबला ।

On the other hand M3 ins

858* प्रणम्य शिरसा तस्मै कृत्वा चापि प्रदक्षिणम् ।

—^a) Ds चक्षुर (sic) D1s चक्षुर (for जगुर) Ds क्षितितल T3 पितु (for पितुर) S1 वचनमास्थित्वा N2 V B D1 3 7 10 11 13 M4 निभिदुर्धुषया and -काणि, Cg k t as in text for the latter (for जग्मुर्महीतल and -यञ्चिता respy)

18 D2 om 18 (cf v l 16) —^a) S1 D1 13 तेषा षोडशनिखिलेभ्यः —^b) V2 D1 T3 षडैक Ck t °को (as in text) V4 धरणीतले —^c) S1 V1 B1 3 D1 5 12 विभेद (B1 °हु), Cg k t as in text (for विभिदु) D1s पुराण (for पुरर) N2 V 3 4 B1 4 Dt D2 8 9 13 M4 व्याघ्रा, V1 D12 व्याघ्रै (for -व्याघ्र) D7 11 M4 तेषां विभेद वत्सा —^d) Ds घातायुध (for वज्रस्पर्श) Ds नलैर् (for -समैर्) N2 V B D1 3 7 10 13 M4 वज्र (V2 चक्र) मातसुतेर् (N2 B3 D1 13 °जैः V1 3 D1 3 7 M4 °नो) बलात् (N2 B3 D1 13 क्षमात्, V3 भवद्, D1 3 7 M4 बली), D11 तद्वामं सुयुतो वर्त्त

19 D2 om 19 (cf v l 16) —^a) Dt om from 19 up to I 39. 6 —^b) Ds शूलैर् (s c) (for शूलैर्) —^b)

Ds भलेष्ट, G4 वज्रैर् (for हलैष्ट) Ds च (for सु) —For 19^{ab} N2 V B D1 3 7 10 11 13 M4 subst

859* कुहलै परियै शूलैर्मुसलै दक्षिन्मिस्तथा ।

[D1s उद्गच्छे V2 दक्षिन्मिर्मुसलै (by transp) I 3 तत्र M4 युने (for तथा) D1 3 7 11 दक्षिन्मिथ यथा (D1 तथा D11 यथा) वृत्ते (D1 युने) (for the post half)] —After 19^{ab}, M3 ins

860* सुदिभिश्चरणैर्दन्वैर्दभोलिस्सहस्रेनै ।

—^a) D12 विद्य, G2 अभ्य° (sic) (for भिद्यमाना) —^d) S1 (after corr as in text) D1 12 विद्वेदे (S1 °जे) (for ननाद्) N2 V B D1 3 7 10 11 13 M4 तैरावै (B4 °वापै [sic]) व ननाद् सा (D1 3 7 ह, M4 च)

20 D2 om 20 (cf v l 16) —^a) S1 D1 13 हस्य°, V1 च्यय, M4 चापि सत्त्वानाम् (for वध्यमानानाम्) —^b) N2 V B D1 3 7 10 11 13 M4 सर्पाणां V2 दक्षिणी पीणा, D1 3 7 11 सत्त्वाना M4 अन्येषां च महौ (B1 क्षमिन्ते) जसा —^c) Cg g दुर्धर्ये (as in text) S1 D1 13 घोराणां; D1 9 13 T2 G4 M1 °दुर्धर्ये (G4 °पा) Ds दुराधर्ये (for च दुर्धर्ये) —^d) G4 मधेत् (for अभवत्) S1 D1 13 ना (D1 12 अ) ह सयुपलभ्यते

21 D2 om 21 (cf v l 16) —^a) G1s पटित्, Ck as in text (for पटिं) M4 ते (for तु) D1 13 (with hiatus) अद्वीति रघुनन्दन —^b) D4 8 राम, D4 पीरा, G1s वीर (for वीरा) —^c) S1 D1 13 सर्वे यावद्रसातल Cg Cv धरणीमिव्यादि । रसातल वाताल यथा भवति तथा धरणां विभिदु l, so also Cg mg Cg —For 20°-21 N2 V B D1 3 7 10 11 13 M4 (1 x and 3 only for 20° and 21° respy) subst

861* रक्षसानसुराणा च बधूबलैस्त्वो मदान् ।

पटिं हि योजनाना ते सद्व्याणि महौचन ।

धरण्या विभिदु मुद्रा सर्वे यावद्रसातलम् ।

[(1 x) V4 उत्पन्नां B4 °पा (for अनुत्पन्नां) V4 राक्षसानां गुणज च (for the prior half) V2 4 D1 13 M4 °स्त्वो, D13 तैर्वचो (sic) (for [पा] तैर्वचो) —(1 2) B1 च (for दि) V1 योजन ते हि V4 °* ते B4 °* नां ते (for दानन्नां ते) D3 7 transp दि and ते D3 7 हास्यात् —(1 3) V4 परदे, D2 परिण (sic) (for धरण्या) The post half = 21° in S1 etc. D1 3 10 11 M4 रसातलम् ति (D11 °विभर) (for the post half)]

एवं पर्यंतसंवाधं जम्बूद्वीपं नृपात्मजाः ।
 खनन्तो नृपशार्दूल सर्वतः परिचक्रमुः ॥ २२
 ततो देवाः सगन्धर्वाः सासुराः सहयन्त्रगाः ।
 संभ्रान्तमनसः सर्वे पितामहमुपागमन् ॥ २३
 ते प्रसाद्य महात्मानं विपण्णपदनास्तदा ।

ऊचुः परमसंस्तः पितामहमिदं वचः ॥ २४
 भगवन्पृथिवीं सर्वां खन्यते सगरात्मजैः ।
 बहवश्च महात्मानो बध्यन्ते जलचारिणः ॥ २५
 अयं यज्ञह्नोऽस्माकमनेनाश्वोऽपनीयते ।
 इति ते सर्वभूतानि निघ्नन्ति सगरात्मजाः ॥ २६

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे अष्टात्रिंशः सर्गः ॥ ३८ ॥

22 D₂ om 22 (cf v l 16) —^a D₁ M₄ नाना,
 D₃ 7 तत (for एव) B₄ T₃ सर्वत्र (for पर्यंत) V₄ सवद्ध,
 D₁ 3 7 M₄ निष्ठश्च (D₃ °द्य [sic]) D₉ सवध, Cg t as in
 text (for संवाधं) V₁ एव पूर्वसंवाधं Ck सभेद्
 नैविद्य यस्य तत् तथा । C —^b S₁ N₂ V B₁ 3 D₁ 3 7 10 13
 नृपात्मन (V₃ 4 °मज D₁ 3 7 °ज्ञया), G₁ 3 M₂ महाबला
 (for नृपात्मना) —^c T₁ 2 G₁ M₁ नर° (for नृपशार्दूल)
 S₁ N₂ V B₂—4 D₅ 10 12 13 खनतस्ते नृपसुता B₁ °स्ते
 सुता सर्वे, M₄ खनमाना नृपसुता (for °) N₂ V B D₁ 10 13
 °बध्नु D₉ °तु (for परिचक्रमुः) D₁ 3 7 11 खनमाना
 अतिविण्णा (D₁₁ प्रयत्नेन) पर्यन्नामन्नमपि ता

23 D₂ om 23 (cf v l 16) —^a S₁ D₃ 12 तदा
 (for ततो) D₁ 3 7 11 देवप्रीधर्वा (for देवा सगन्धर्वा)
 —^b D₄ ससुरामुर, D₃ 3 समुरा° (for सासुरा सह) N₂
 V B D₁ 3 7 10 11 13 म(B₂ स)होरसगणान्नाया(D₃ 7 °दा)
 —^c T₃ lacuna for स in मनस B₁ om सव —S₁
 reads 23^d—24^c in marg —^d S₁ N₂ V B D₁ 10—13
 °प्रवन् (D₁₁ °याव [sic]) D₁ 3 7 अयागमन् (D₁ °मुवन्)
 D₉ डुते° (for उपागमन्)

24 D₂ om 24 (cf v l 16) S₁ reads 24^{ab} in
 marg (cf v l 23) —^a Cg प्रमाय (as in text)
 G₂ सदा (for तदा) N₂ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ तेषिमाय
 (D₁ 3 7 M₄ °गम्य D₁₁ तेष प्रप [sic] D₁₁ °वध) महामानं
 सभ्रान्तमनसं सुरा —^b S₁ D₃ 12 सभ्राता D₃ नतसा
 (for सप्रमा) N₂ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ भद्रुन्परमप्रमा
 —^c S₁ D₃ 12 सर्वध्रमम् (for पितामहम्) —After 24
 S₁ B₂—4 D₅ 11 13 ins while D₃ ins before I 39 1

862* सपर्वतयना देव समरिहृपस्तुला ।

25 D₂ om 25 (cf v l 16) —^a M₄ भगवन्पृथी
 हृष्या (sic) —^b V₂ 4 सागराः D₁₂ हि नृपाः, M₄ सगरा*
 (for सगरात्मजैः) —^c S₁ D₃ 11 13 महोत्तर (for बहवत्तर)
 D₁ (m.) सु (for च) —^d D₃ 14 बध्यन्ते, M₄ हन्यन्ते (for

बध्यन्ते) D₁₄ T₁ 2 M₃ Cg ज(M₃ Cg त)लवासिन
 —For 25^{cd} N₂ V B D₁ 3 7 10 13 M₄ subst

863* खनन्निश्चयं तैर्बद्ध महासस्ववधं हृत ।

[D₁ 3 7 M₄ खनमानैश्च तैः सर्वैः (M₄ ब्रह्मन्) (for the prior
 half) V₂ 3 D₁ 3 7 महान् (for महा) D₁₃ हृत्यते मुनयस्तथा
 (for the post half)]

26 D₂ 13 om 26 D₁₃ om 26^{ab} (for D₂ cf v l
 16) S₁ reads 26 in marg —^a G₂ अहं (sic) (for
 अय) N₂ V₃ B D₃ 7 10 न(D₃ 7 च) यज्ञहा, V₁ 2 स
 यज्ञ(V₁ तुर)गो, V₄ यज्ञापहा, Dt D₃ 11 M₄ °हरो, Cm gp tp
 as in text (for यज्ञह्नो) N₂ V B₂ 4 D₁₀ ब्रह्मन्
 (for ऽस्माकम्) D₁ अय(यो)चन्यज्ञाहासाकम् —^b V₁ 3
 नागेन B₄ इद्रेण (for अनेन) N₂ V₁ 2 B D₁ 3 7 10
 M₄ न्हादित V₃ 4 D₁₁ हासित (V₄ राहित [meta
 thesis]) Ckt as in text (for नीयते) —G₁ om
 26^{cd} —^c V₂ 3 M₂ तै (for ते) —^d S₁ D₃ 10
 T₃ G₂ 3 M₁ 3 हिसति D₃ वि° (for निम्रित) M₄ हिस्यते
 सगरात्मजै —After 26 B₄ 4 ins

864* एतच्छृवा महावीर्यं समाधिं कर्तुमर्हसि ।

यायस्यप्राणिनः सर्वाश्च हिमन्यथसारिणः ।

[(1 1) B₄ महावीर्यं B₄ हतुम् (for वतुम्) —(1 2) B₄
 न्नाधिण (sic) (for सारिण)]

Colophon D₂ 11 13 om S₁ reads colophon in
 marg —Kāṇḍa name S₁ D₄ 6 om N₂ V B D₁
 आदि°, D₁ 3 अयोध्या° —Sarga name N₂ V₁ 3 B₂ 4
 D₁₀ पृथिवीदारणं V₂ 4 B₁ 3 पृथिवीविदारणं; D₁ 3 7
 अशानुम(D₁ °हृ)रगो —Sarga no (figures words
 or both) V₁ 4 B₁ 4 D₃ om S₁ D₄ 6 14 S 39
 N₂ B₂ 3 D₁₀ 41 V₂ 43 V₂ 40 D₁ 3 32 D₃ 42 D₁₃
 —काँटि—दारणं सर्ग 41 —After colophon T₃ G₁ 14
 conclude with श्रीरामाय नमः; G₂ धीमत रामानुपाय नमः;
 M₂ 2 धी ...म

३९

देवतानां वचः श्रुत्वा भगवानैव पितामहः ।
 प्रत्युवाच सुमंत्रस्तान्कृतान्तबलमोहितान् ॥ १
 यस्येयं वसुधा कृत्स्ना वासुदेवस्य धीमतः ।
 कापिलं रूपमास्थाय धारयत्यनिशं धराम् ॥ २
 पृथिव्याद्यापि निर्भेदो दृष्ट एव सनातनः ।
 सगरस्य च पुत्राणां विनाशोऽदीर्घजीविनाम् ॥ ३

39

§ N₁ missing Sarga 39 (cf v l 1 33 8)
 Ds 11 12 continue the previous Sarga

1 Before 1, Ds ins 862* Dt om 1-6 (cf v l 1 38 19) —T₁ damaged from वतान् in 1^a up to स्य in 2^a —^a S₁ Ds 8 12 देवाना वचनं, N₂ V B D1-3 7 10 13 M₄ इति तेषां, Dn देवाना च, G₁ वच (sic) (for देवताना वच) Ck देवानामिषादि । Cg —^a N₂ V B D₁ 3 7 10 13 M₄ देवाना (for भगवान्) S₁ N₂ V1-3 B D1-3 7 10 13 M₄ प्र, V₄ च (for वै) Ds सर्वलोकपितामह —^a S₁ Ds 8 12 तान्प्रत्युवाच सप्रस्तात्, N₂ V B D1-3 7 10 13 M₄ प्रत्युवाच भयो (V₂ तदो) द्विधात् —^a T₃ G₁ चोदितान् (for मोहितान्) S₁ N₂ V1 2 4 B Ds 8 10 13 13 सर्वान् (S₁ N₂ B₃ 4 D1-3 सर्व, Ds सपिं देवानिद वच, V₃ देवान्सर्वा निदे वच, D1-3 7 11 देवान्देवपितानम्, M₄ देवालोकात्महेतव, Cv m k t as in text (for ^a) Cg हत अन्तो जननाशो यस्ते कृतान्ता सगरपुत्रा । Cg

2 T₁ damaged up to स्य in ^a (cf v l 1) —^a Ds 12 [ह]द, G₂ [ह]व (sic), Cm k as in text Ct [ए]या (for [ह]य) Ds 12 वसा, Ck as in text (for ह्यसा) —^a S₁ (after corr as in text) धीमते, Ds 8 धीमते, D12 धीमते (for धीमत) —After 2^a, S₁ (marg) Ds ins

865* मदिपि माधवस्यैषा स पृथ (D₄ °प) भगवान्मसु ।

—^a S₁ Ds 12 ह्यस्तेनाय (Ds 12 °पि) वाहित, D₄ हयो येनापवाहित, D₉ धारयन्-दशमुत्तरा —For 2 N₂ V B D1-3 7 10 11 13 M₄ subst

866* विभक्तिं यो जग कृत्स्नं यस्त्वोपति न विद्वहे ।
 वेनाशो वासुदेवेन कपिलेनापवाहित ।

[(1 1) D12 सर्व (for ह्यस्ते) V₂ B1 3 (before corr as above) D1-3 7 11 M₄ [उ]त्तरिद (for [उ]त्तरि) V₂ B1 4 D1 2 11 विप्रे, D₂ ह्यस्ते (for विप्रे) —(1 2) V₄ [ए]य (for [म]यो) N₂ D₂ [अ]पि वा, V₂-4 B₄ D12 [अ]पिवादि (V₄ B₄ °पति [metathesis])न (for [अ]-पवादिन)]

—After 2 D₄ 8 10 15 S (except M₄) ins

पितामहवचः श्रुत्वा त्रयस्त्रिंशददिमाः ।
 देवाः परमसंहृष्टाः पुनर्जगुर्धृथागतम् ॥ ४
 सगरस्य च पुत्राणां प्रादुरासीन्महात्मनाम् ।
 पृथिव्यां भिद्यमानायां निर्घातिसमनिःस्वनः ॥ ५
 ततो भिद्या महीं सर्पा कृत्वा चापि प्रदक्षिणम् ।
 सहिताः सागराः सर्वे पितरं वाक्यमब्रुवन् ॥ ६

867* तस्य कोपमिनिर्दग्धा भविष्यन्ति नृपालका ।

[D₄ 8 9 T₃ M₃ नोपाधिना दग्धा]

3 °) M₃ पृथिव्या, Cm g k °प्यात् (as in text) N₂ V1 3 4 B D1-3 7 9-11 13 [ए]य (for [अ]पि) N₂ V B D1-3 7 10 13 M₄ भेदोद, D₄ निहादो, Dn भेदोपि, Ck as in text (for निर्भेदो) Cg Ct पृथिव्या विभेदश्च सनातन । Cg —T₁ damaged from एव in 3^a up to जं in 4^a —^a S₁ सृष्ट, G₂ सृष्ट (sic) (for दृष्ट) S₁ Ds 8 12 पुरातन, Cm g k as in text (for सनातन) N₂ V B D1 10 11 13 M₄ द [V₂ पि] ह्यस्तेनेति से मति, D₂ 3 7 द्ययते चे (D₂ ने) वि से मति —V₂ om (hapl) 3^a-4 —^a S₁ Ds 11 तु, D₁ om (symmetric) M₃ [अ]पि (for च) M₄ दु (सु) पुत्राणा (for च पुत्राणा) —^a N₂ V1 3 B D1-3 7 10 13 M₄ [अ]मिततेनसा, V₁ [अ]पि भविष्यति, Ds 12 Ct दीर्घवर्तिना (for दीर्घजीविनाम्) Dn प्रादुरासीन्महात्मना Cg Cv m g अदीर्घजीविनामिति छेद 1, Ct यद्वा अदीर्घवर्तिनामिति छेद 1 Cg

4 V₂ om 4 (cf v l 3) T₁ damaged up to जं in ^a (cf v l 3) —^a Cm g t त्रयस्त्रिंशद् (as in text) Ds 8 12 13 T₂ 3 G₂ 8 M₁-3 अदिदं (D12 °म) N₂ V1 3 4 B1 3 4 D1 3 7 10 13 M₄ तत्सर्वे त्रिदशा (V1 B1 D1 3 7 13 दिवा)लया, B₂ Dn सर्वे ते त्रिदिवालया —^a N₂ V1 3 4 B D1 3 7 10 11 13 M₄ देवर्षिपितृगंधर्वा —^a S₁ Ds 8 12 सर्वे, N₂ V1 3 4 B D1-3 7 10 13 M₄ प्रति, Dn दृष्टा (for पुनर्द)

5 °) S₁ Ds 8 11 दु, D1-3 7 11 [अ]पि (for च) —^a V₂ दुर्धर्षणा (for प्रादुरासीद्) S₁ Ds 8 14 T G₂ M₂ महात्मन, N₂ V B D1-3 7 10 11 13 M₄ महात्मन, Ds 12 M₂ महात्मन (for महात्मनाम्) —^a S₁ Ds 8 12 निर्घातिस्वन वचसा, Cm t as in text (for ^a) Cg निघात उच्चात विशेष । Cg —For 5^a N₂ V B D1-3 7 10 11 13 M₄ subst

868* सनाता पृथिवीं सद्यो वज्राजालिसम्वन ।

[V₂ सनात (sic) (for सनाता) V1 4 B₃ 4 D1 2 10 पृथिवी (for पृथिवी) V1 वज्रात् (for वज्राजालि) D1 अजनिता, D12 सम स्वत (sic) Dn समस्वते (sic) (for समवच)]

6 T₁ damaged from यो in ^a up to हा in 7^a —^a D₁ हिवा, D14 T G₁ 3 M₂ Cv g मया, Ctp as in text (for

परिक्रान्ता मही सर्वा सत्त्ववन्तश्च सृदिताः ।
 देवदानवरक्षांसि पिशाचोरगकिन्तराः ॥ ७
 न च पश्यामहेऽथं तमश्चहर्तारमेव च ।
 किं करिष्याम भद्रं ते बुद्धिदत्र विचार्यताम् ॥ ८
 तेषां तद्वचनं श्रुत्वा पुत्राणां राजसत्तमः ।
 समन्धुरब्रवीद्वाक्यं सगरो रघुनन्दन ॥ ९

भिषा) G⁴ damaged for ततो मिरा S¹ D⁸ s 12 G¹ s
 कृत्वा, D⁹ M³ Cg सर्वे (for सर्वा) N² V B D² s 7 10 11 13
 M⁴ ते भिरवा पृथिवीं सर्वा (V¹ B⁴ D² 11 कृत्वा), D² ते
 जित्वा पृथिवीं कृत्वा —^b) S¹ V¹ B³ s 4 D⁴ s 8-10 12 14 T³
 M¹ 2 Cm [अ]मि, V² [अ]ति (for [अ]पि) B¹ D¹-3 6 7 9
 प्रदक्षिणा —^c) S¹ D⁸ s 11 12 पाथिव, N² V B²-4 D¹-3 7
 10 13 M⁴ उपेल, B¹ उत्पल, D⁴ सहिता (sic) Ck as in
 text (for सहिता) S¹ D⁸ s 11 13 सगर (for सागरा)
 —^d) M⁴ सगर (for पितर) S¹ अन्नवीत् (sic)

7 Dt resumes (cf v l 1) T¹ damaged up
 to क्षा in ° (cf v l 6) —^a) B¹ परिभ्राता, M³ (after
 corr as in text) परिभ्राता, B² reads मही सर्वा in marg
 —^b) M² बलवत्त, Cg t as in text (for सत्त्ववन्तश्च) S¹
 D¹ s 12 महान्सत्त्ववध कृत, N² V B D² s 7 10 11 13 M⁴
 म (D¹¹ स म [hypermetric]) हृदिशसन (V² B⁴ नशन)
 कृत —^c) T³ यक्षाश्च (for यक्षांसि) S¹ D⁸ s 12 गधर्व
 (D¹² यैव्य [hypermetric]) यक्षवृक्षा (D⁸ सर्पा)णा
 (for °) S¹ D⁸ s रक्षसा, Dt D⁸ T³ पक्षगा, D¹² राक्षसा
 (for किन्तरा) N² V B D¹ s 7 10 11 13 M⁴ यादोगममहा
 (M⁴ महामद) प्राहदेवदानवरक्षसा

8 °) G¹ s हि (for च) Dt D⁴ T³ M² ते (with
 hiatus) (for तद्) S¹ D⁸ s 12 पश्यामो न च त राजन्,
 N² V B D¹-3 7 10 11 13 M⁴ न च (V¹ 2 B³ D¹⁰ चा)
 पश्याम (B³ म्) ति (D¹-3 7 11 M⁴ हे, D¹³ ते) राजन् —^b)
 S¹ N² V B D¹-3 8 9 10-13 M⁴ यत्प्रविकर तव —^c) D⁹
 करिष्यसि, Cm g k t as in text (for करिष्याम) S¹
 D⁸ s 11 12 य (S¹ D⁸ त [करिष्यामहे नृपय, N² V B D¹-3
 7 10 13 M⁴ किं कुर्महे पुनस्ताव (V³ वद्) —D¹ reads 8^d-9
 in marg —^d) S¹ D⁸ s 11 12 तद् (D⁸ त्वं) बुद्ध्या साधु
 चित्वा, N² V B D¹-3 7 10 13 M⁴ विनिश्चित्य प्रसाधि न

9 D¹ reads 9 in marg (cf v l 8) —^a) S¹
 D⁸ s 12 पुत्राणा वचनं, N² V B D¹-3 7 10 11 13 M⁴ तेषामि
 तद्वच (for तेषा वद्वचनं) —T¹ damaged from 9^b up to
 कृ in 10^d —^b) D¹-3 7 11 सगरो (for पुत्राणा) N² V
 B D¹⁰ 13 M⁴ समस्तदा (V³ था), G² रा समत (for
 राजसत्तम) S¹ D⁸ s 12 तेषा तु रघुनन्दन (D³ न) —^c) D¹¹
 चर (for वारय) N² B³ D¹⁰ 13 तिथिलोवाच तान्मान्, V
 B¹ 4 D¹-3 7 M⁴ ति (V¹ मिनि [hypermetric]) थिलोवाच

भूयः खनत भद्रं वो निर्भिद्य वसुधातलम् ।
 अश्वहतीरमासाद्य कृतार्थाश्च निवर्तय ॥ १०
 पितुर्वचनमास्थाय सगरस्य महात्मनः ।
 पठिः पुत्रसहस्राणि रसातलमभिद्रवन् ॥ ११
 खन्यमाने ततस्तस्मिन्दृष्टुः पर्वतोपमम् ।
 दिशागजं विरूपाक्षं धारयन्तं महीतलम् ॥ १२

सर्वा (V⁴ M⁴ पुत्रा)स्तान् —^a) S¹ D⁸ s 12 सगर
 पुरपर्यन्त, N² V B D¹-3 7 10 11 13 M⁴ पुन पुत्रानि (D⁸
 पुनरि, M⁴ सर्वानि) दृ वच

10 T¹ damaged up to कृ in ° (cf v l 9) —^a)
 N² V B D¹-3 7 10 11 M⁴ भूयो मृगयताश्च त (B⁴ मे, D⁸ 12
 तु), D¹³ भूयो मृगयताश्च —^b) D¹¹ निर्भिद्य (for निर्भिद्य)
 N² V B D¹-3 7 9 10 13 M⁴ विमिषेद (V¹ B² s D¹⁰ विमिषेद,
 V² विमिषेदो; V³ विमिषेय, V⁴ विमिषेत, B¹ विमिषेत, B³
 निर्भिद्य त, D⁸ निर्भिद्यत, M⁴ विनिर्मिद्य) रसातल —^c) V¹
 आहय (for आसाद्य) N² V⁴ B³ s D¹⁰ 13 सन्यवर्तत, V¹ s
 B¹ 2 M⁴ सनिवर्तत, D⁴ T³ M² 3 (after corr sec m as
 in text) च निवर्तत (for च निवर्तय) Cg Cm g k निवर्तय
 निवर्तयन्, Cc निवर्तत निवर्तयन्मिल्ये अपर्येतत् ॥ Cg S¹
 D¹-3 5 7-9 11 12 कृतार्था सनिवर्तय गृहीत्वाश्वापहारिणः S¹
 D⁸ s 12 वाहक) —After 10 B³ ins

869* केन मे नीयते चाक्ष पुनरेव हि यज्ञत ।

11 °) S¹ D⁸ s 12 आज्ञाय, Dt D⁸ s आज्ञाय, D⁴
 आज्ञाय, T² सस्थाय (for आस्थाय) N² V B D¹-3 7 9-11 13
 M⁴ पितु (D¹³ पुन) रितद्वच श्रुत्वा —^b) D⁸ (after corr
 as in text) 10 सागरस्य N² V B D¹⁰ 13 [आ]त्म (V²
 [अ]म, B⁴ [आ]त्मज [hypermetric]) समवा, D¹-3 7
 9 11 M⁴ [आ]त्मजास्तत (for महात्मन) —^c) N² B³
 D² 3 7 9 10 13 सागरा (D² s 7 9 तदा ते) पठिताहसा, V¹ s
 B¹ 2 4 D¹¹ M⁴ सर्वत पठि (D¹¹ पथि [sic]) साहसा (B⁴
 स), V² 4 D¹ सर्व (D¹ ते तु) पठि —^d) S¹ D⁸ s 12
 अयाद्रवन्, N² V B D¹-3 7 9-11 M⁴ उपाद्रवन्, T³ अभिद्रवन्,
 Cg अभिद्रवन् (as in text) D¹³ पितामहमुपागमन्

12 T¹ damaged from स्त in 12^a up to या in 13^a
 —^a) Cm g t खन्यमाने (as in text) Ck खान्यमाने S¹
 D⁸ s 12 तदा, M² तले (for तलस्य) N² V B D¹⁰ 13 पुन
 खनतस्ते तत्र, D¹-3 7 9 11 M⁴ खनमानास्तु (D³ तु [sic]) ते
 तत्र (D¹¹ तस्मिन्, M⁴ सर्व) —^b) V³ B³ सर्व, D⁸ त्तम
 (for पर्वतोपमम्) —^c) S¹ D⁸ s 11-13 आशा, N² V¹-2
 B⁴ दिता, B¹-3 D³ 7 9 विदो, Cg k as in text (for
 दिशागज) Cg Ct दिता हत्यान्तम् ॥ Cg —^d) S¹ N² V B
 D¹-3 5 7 9 10 13 महीमिमा (N² V B D¹³ हमां मही [by
 transp]) M⁴ वसुधरा (for महीतलम्) D⁸ पदार्थ
 धारयत मदी

सर्पतवनां कृत्वा पृथिवीं रघुनन्दन ।
शिरसा धारयामास निरुपाधो महागजः ॥ १३
यदा पर्वाणि काकुत्स्थ विश्रमार्थं महागजः ।
खेदाचालयते शीर्षं भूमिकम्पस्तदा भवेत् ॥ १४
तं ते प्रदक्षिणं कृत्वा दिशापालं महागजम् ।
मानयन्तो हि ते राम जग्मुर्भिर्या रसातलम् ॥ १५

ततः पूर्वां दिशं भित्त्वा दक्षिणां विभिदुः पुनः ।
दक्षिणस्यामपि दिशि ददृशुस्ते महागजम् ॥ १६
महापद्मं महात्मानं सुमहापर्णतोपमम् ।
शिरसा धारयन्तं ते विस्मयं जग्मुर्लुप्तम् ॥ १७
ततः प्रदक्षिणं कृत्वा सगरस्य महात्मनः ।
पटिः पुत्रसहस्राणि पश्चिमां विभिदुर्दिशम् ॥ १८

13 T₁ damaged up to या in ° (cf v1 12) —^b)
S₁ D₅ 12 स नरोत्तम, D₉ स गजोत्तम (for रघुनन्दन)
—For 13^{ab}, D₂ subst 1 1-2 of 870* —^c) S₁
D₅ 5 12 सदा विभर्त्तं काकुत्स्थ (D₅ शिरसा) Dt D₅ G₁ 3
M₂ 3 transp शिरसा and धारयामास —S₁ om (hapl)
13^a—14^a —For 13 D₁₁ subst 1 1 of 870*

14 S₁ om 14^a (cf v1 13) —^b) S₁ D₅ 11
विश्रमार्थं, Cg as in text (for विश्र) S₁ D₅ 8 11 स
वारण, G₁ बल (for महागज) —^c) G₁ तथा (for
तदा) —T₁ damaged from भवेत् up to क्षि in 16^b D₅
भवेत्, D₁₄ T₂ 3 [ग]भवत् (for भवेत्) S₁ D₅ 8 11 12
इषञ्चालयते रुध्र कपते मेदिनी तदा —For 13-14 N₂ V
B₁ D₁ 3 7 9 10 13 M₄ subst D₂ subst 1 1-2 for 13^{ab}
and 1 3-4 for 14, D₁₁ subst 1 1 only for 13

870* शिरसा नरशार्दूल सरोलवनकाननाम् ।
नानाजनपदावीर्णां नानापत्तनशोभिताम् ।
यदा च पर्वणि गज खेदाचालयते शिर ।
सर्पतवना राम तदेव चलति क्षमा ।

[V₄ reads nom sing for all accu sing in 1 x
and 2 —(1 x) D₁ 3 7 9-11 रुशार्दूल —D₂ 7 om 1 2
—(1 3) D₂ 2 M₄ स यदा (for यदा च) V₅ [ग]सौ गजवर
(for पर्वणि गज) D₂ 7 9 स वै यदा राम (D₂ 7 पणि [sic]) गज
(for the prior half) D₇ चाभवे (for चालयते) B₂
transp गज and शिर —(1 4) N₂ reads वना राम in
marg D₁ [य]न (for [य]य) V₁ चलित् V₄ D₁ 3 7 9
M₄ चलते मही (for चलति क्षमा)]

15 T₁ damaged (cf v1 14) —^a) S₁ B₄
D₅ 5 8 12 13 ते त (by transp), D₉ त्ते (for त ते)
D₂ 3 7 11 प्रदक्षिणं कृत्वा (D₂ ° क्त्वा), D₉ प्रदक्षिणा कृत्वा
—^b) S₁ D₁—3 7 9-11 13 दिग्पालं वज्रोत्तं (D₂ 7 9 °प)म,
N₂ V B₁ D₁₀ 13 M₄ विशो (N₂ V₄ B₄ M₄ °शा, V₂ 8
D₁₀ °शा) गजपरिदम् (D₁₀ M₄ °सा) —D₂ om S₁
reads in marg 15^a 16^a —^c) Cg k मानयत् Ct हि
(as in text) N₂ V B₁ D₁₀ 11 13 M₄ मन्यमाना (V₂
°न, V₄ °ना [both sic]) दिशा (D₁₀ °शा, M₄ °शा)
पालं, D₁ 3 7 9 मन्यमाना दिशो (D₁ °शा, D₂ °शा) रक्षं, D₅
खनमाना दिशं रक्षन्, D₉ खन्यमाना दिशो रक्ष, D₁₂ मन्यमाना
दिशा रक्षा —N₂ V B₁ 3 4 D₁₀ 13 M₄ om 15^a—16^a —^d)

D₃ G₄ जिवा, D₉ तीर्त्वा, G₂ टित्वा (for भित्त्वा) M₃
भित्त्वा जग्मु (by transp) B₂ D₁ 3 5 7-9 11 12 G₃
वसुधरा (for रसातलम्)

16 T₁ damaged up to क्षि in ° (cf v1 14) D₂
om, S₁ reads in marg 16 whereas N₂ V B₁ 3 4
D₁₀ 13 M₄ om 16^a (cf v1 15) G₁ om (hapl)
16 17 —^a) M₃ पुन, Cg तत (as in text) D₂ 7 पूर्वं
(for पूर्वां) D₅ दिशा Dt D₅ हित्वा, G₃ गत्वा, Cg as
in text (for भित्त्वा) —^b) D₁₀ 13 विभिदुर्दक्षिणा (by
transp) N₂ V B₁ D₁₀ 13 M₄ दिश (for पुन) —After
16^b M₄ ins

871* रसातलादिति महीं खनमाना महाबला ।

—^a) B₄ °पि च, D₁₂ °विम् (metathesis) G₄ °मसि
(for दक्षिणस्यामपि) N₂ V₁ ° 4 B₁ D₁ 3 5 7 9 10 12 13 पुनर्, D₁₁
तथा, G₂ inf in (for दिशि) —^d) N₂ V B₁
D₁ 3 5 7 9 10 13 गजोत्तम (for महागजम्)

17 G₁ om 17 (cf v1 16) —^a) D₁ °नाग (for
महामान) V₄ महात्मान महापद्म (by transp) —^b) S₁
B₂ तिष्ठत, D₉ G₁ M₃ Cg सुमहत् (for सुमहा) N₂ V
B₁ 3 4 D₁ 3 5 7 9 10-13 तिष्ठत सदरोपम (D₁₂ °त्तम), M₄
मेरुमदरवर्चस —V₁ damaged from 17^a up to the prior
half of 872* T₁ damaged from रय in 17^a up to या
in 19^a —^c) S₁ Dt D₁ 3 5-9 (D₉ before corr हि) 11 12
G₄ या (for ते) N₂ V₂ 4 B₂—4 D₁₀ 13 त च दृष्ट्वा महाकाया
B₁ त दृष्ट्वा तु महामान, M₄ त दृष्ट्वा च महालम् —^d) N₂ V₂—
B₁ D₁₀ 13 M₄ परम ययु (for जग्मुर्लुप्तम्) S₁ D₁ 3 5 7 8
11 12 ते दृष्ट्वा विस्मय गता (D₁₂ ययु)

18 T₁ damaged (cf v1 17) —^a) Dt D₅ 9 ते
त, M₂ त ते Cg as in text (for तत) —For 18^{ab},
N₂ V B₁ D₁ 3 7 10 13 M₄ subst

872* कृत्वा तमपि नागेन्द्रं प्रदक्षिणमर्दिम ।

[V₄ damaged for the prior half (cf v1 17) D₇
तद् (for तय) B₂ D₁ 3, 7 M₄ अर्दिम]

—^a) D₅ 9 पटि N₂ V B₁ D₁—3 7 10 13 M₄ स (D₂ हा)
रर (N₂ °) स्वामना (D₂ °) राम —^d) D₅ दक्षिण (for
पश्चिमा) D₉ M₄ विभिदु पश्चिमा (by transp)

पश्चिमायामपि दिशि महान्तमचलोपमम् ।
दिशागजं सौमनसं ददृशुस्ते महानलाः ॥ १९
तं ते प्रदक्षिणं कृत्वा पृष्ठा चापि निरामयम् ।
खनन्तः समुपक्रान्ता दिशं सोमवती तदा ॥ २०
उत्तरस्यां रघुश्रेष्ठ ददृशुर्हिमपाण्डुरम् ।
भद्रं भद्रेण वपुषा धारयन्तं महीमिमाम् ॥ २१

19 T1 damaged up to या in ^a (cf v l 17) —^a) M1 पश्चिमलामपि S1 D1 3 5 7 12 तदा, D11 तथा (for दिशि) —^b) N2 V B D10 13 M4 कैलासशिखरोपम —^c) S1 D1 13 दिशुत्तर, N2 V B D10 13 आशा, D3 7 दितो, D6 11 दिशा (for दिशागत) S1 D1 3 5 7 11 12 M4 सुमनस, V2 सौमनस (hypermetric) Cg as in text (for सौमनस) —^d) S1 N2 V2 4 B3 4 D1-3 5 7 10 13 M4 महाबल, B1 गजोत्तम

20 ^a) S1 B4 Dt D 8 12 13 ते ते (by transp) V1 ते ते (sic) V3 तत्तु, G3 तत (for त ते) —^b) D2 दृष्टा (for पृष्ठा) —T1 damaged from यम् up to न्त in 21^d Cm g k t निरामय (as in text) S1 D1 3 5 7 12 [ए]वमनामय N2 V B D10 13 M4 [अ]नामय तत, D11 [ए]व समानय (sic) (for [अ]पि निरामयम्) —^c) G2 नलत (metathesis) M2 3 खनितुं, Ck as in text (for खनन्त) S1 D5 12 समतिक्रान्ता (D5 12), Dt D4 6 8 14 G1 2 4 M1 2 समुपा, Cgk as in text (for समुप) N2 V B D10 11 13 प्रोत् (V2 आ) खनतो ययुर्वीरा (V1 10 सर्वे), D1-3 7 M4 खनमाता ययुर्वीरा (for ०) S1 N2 V B D1 5 7 11 13 T2 3 M4 Cgk हेम, D10 हैमवतीम् (metathesis) Ct as in text (for सोमवती) N2 V B D1-3 7 10 M4 अपि, D4 11 G4 तथा, D13 14 T2 G2 M1 3 तत, Ck as in text (for तदा) G3 ततो हैमवतीमाशा खनतस्तेभिचक्रमु

21 T1 damaged up to ते in ^d (cf v l 20) —^a) N2 V1 B4 अपि तथा (V1 B4 तु ते), V2 3 D1 3 7 G1 M4 अपि च ते (V2 G1 M4 दिशि D2 ते ते [ditto]) V4 अपि ततो (for रघुश्रेष्ठ) —^b) D2 ते ददुर (sic) (for ददृशुः) B4 D11 T2 G M दिग्माडर —^c) M4 धारयती (sic) S1 D1 2 5 11 12 धाम् (for महीम्) N2 V B D10 13 इमा महीं (by transp)

22 ^a) M3 तनालम्य, Cg k t समा (as in text) S1 D2 15 च ते G1 च त (for तत) N2 V B D1 3 7 10 13 M4 तमापालम्ब्य (D1 3 ह्य) ते सर्वे (D10 सर्वे [by transp]) (for ०) N2 V1 3 B D10 M3 [अ]भि, V2 [अ]भि, V4 D 1 [ए]व D13 M4 [अ]पि (for [ए]तं) D11 ते ते प्रदक्षिणी एवा दृष्टा सौमनस्य — S1 D1 10 राघुप्रास्तवो भूयो

समालम्य ततः सर्वे कृत्वा चैनं प्रदक्षिणम् ।
पटिः पुनसहस्राणि विभिदुर्धसुधातलम् ॥ २२
ततः प्रागुत्तरां गत्वा सागराः प्रथितां दिशम् ।
रोपादन्यसन्तस्ते पृथिवीं समरात्मजाः ॥ २३
ददृशुः कपिलं तत्र बासुदेवं सनातनम् ।
हयं च तस्य देवस्य चरन्तमनिदूरतः ॥ २४

N2 V B D1 3 7 10 11 13 M4 सहिता पुनरेवेद —^d) D12 विवेधुर, G2 विदुभिः (metathesis) (for विभिदुर) S1 N2 V B D3 12 13 M4 धरणीतल

23 D7 om 23^{ab} T3 damaged from रो in 23^a up to ल in 24^a —^a) N2 V B D10 13 M4 प्रागुत्तरा दिश D5 12 Ck ०त्तर, Cg t as in text (for तत प्रागुत्तरा) —^b) T3 सागरा (sic) M1 सागरा D9 14 T2 3 M1 3 प्रथिता, G3 प्रस्थिता, Cg t as in text (for प्रथिता) S1 D5 12 य (D13 या) जियि (D12 ०या) पृथिवीमिमा, N2 V B D10 12 तत (V4 पुन) रते स (V1 सा) गरात्मजा, D1 3 11 M4 दिश ते (D1 ते दिश [by transp]) समरात्मजा —^c) M3 पूर्व (for सर्वे) S1 (after corr as in text) D5 12 अभ्यधु (D12 ०भु) पित्वा सर्वे —^d) S1 D1 12 कावुरस्थ (for पृथिवी) —For 23^{cd} N2 V B D1-3 7 10 11 13 M4 subst

873^a अमर्षवन्मापसाक्षरानुरेव धरामिमाम् ।
तत्राय प्रोखनन्तस्ते क्षोणीमपि समतता ।
तत्र ते तु रघुश्रेष्ठ सगरस्यामनास्त ।

[D7 om 1 1 —(1 1) D1 अनर्ष च समापसाक्षर (for the prior half) V2 चायुरे (sic), B1 illeg D11 रुने (sic), M4 चखनश्च (for चखुनेव) B1 वपुधरा B2 धरातल, D1-3 11 M4 रमात (for धरामिमाम्) —D11 om (hapl ?) 1 2 —(1 2) V1 [आ]गु (for [अ]ग) D1 3 7 M4 तत्रापि (M4 ०य) क्षमनास्तो महीमितिनेजस —All the above MSS except D11 om 1 3]

—After 23 S1 (after 24^{ab}) Dt D4 6 8 9 14 T2 3 G M1 3 Cm g ins

874^a ते तु सर्वे महामानो भीमवेगा (G2 ०य) महाबला ।

24 T3 damaged up to हं (cf v l 23) —^a) N2 V1 3 B D1-3 7 10 11 13 M4 नाम, V4 राम (for तत्र) —^b) S1 D5 12 महाबले (for सनातनम्) N2 V B D1 3 7 10 11 13 M4 देवं नारायण प्र (V2 4 वि) भुं —After 24^{ab}, S1 ins 874^a S1 D1 3 5 7 9 13 M4 om 24^{cd} —^c) D11 om च (submetric) D13 ययि तस्य (for तस्य देवस्य) —^d) B3 M1 अपि दूत B4 विचरामदूत —After 24 Dt D4 6 8 14 S (except M4) ins

875^a प्रदर्यमतुल प्राहा सर्वे ते रघुनन्दन ।

ते तं यज्ञहन् ज्ञात्वा क्रोधपर्याकुलेक्षणाः ।
अभ्यधावन्त संकुद्धास्तिष्ठ तिष्ठेति चावुवन् ॥ २५
यस्माकं त्वं हि तुरगं यज्ञियं हूतवानसि ।
द्रुमेधस्त्वं हि संग्रामान्विद्धि नः सगरात्मजान् ॥ २६

श्रुत्वा तद्वचनं तेषां कपिलो रघुनन्दन ।
रोपेण महताविष्टो हुंकारमकरोत्तदा ॥ २७
ततस्तेनाग्रमेयेन कपिलेन महात्मना ।
भस्मराशीकृताः सर्वे काकुत्स्थ सगरात्मजाः ॥ २८

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे एकोनचत्वारिंशः सर्गः ॥ ३९ ॥

25 °) V₁ ते तु; B₁ 2 D₁ 3-5 7 11 12 T₃ M₃-4 तं ते (by transp.), Cmg k as in text (for ते ते) —T₁ damaged from न up to य in 26° S₁ B₄ D₁ 11 12 °हर; N₂ B₃ (marg also as in text) D₁ 14 T₁ 2 G₂ 4 M₁ 2 ह्यहर्, D₁ 2 7 °वध, D₁ 3 °ह्य, Cmg k t as in text (for यज्ञहन्). N₂ V₁-3 B D₁ 3 7 10 11 12 M₄ मत्वा, V₄ रत्वा (sic), D₂ दृष्टा (for ज्ञात्वा). —After 25^{ab}, S₁ (marg.) Dt D₄ 5 6 9 14 T₂ 3 G M₁-3 ins

876° खनित्रकाल्पयरा नानावृक्षशिलायरा ।

—°) D₁ 12 ते° (for संकुद्धा). S₁ (marg. also as in text) D₁ 12 अभ्यधावन्तरेष्ठ; V₃ B₁ 2 4 D₁-3 7 M₄ अभ्यधावन्तुस (V₃ °न्त्ययं) कुद्वा, G₂ अभ्यधावन्तवः कृत्वा. —D₅ 11 12 ins. after 25, S₁ ins. after 27

877° संमूढा न विदुस्तं वै देवमक्षयमभ्ययम् ।

26 T₁ damaged up to य in ° (cf. v.l. 25). N₁ V B D₁-3 5 7 10-13 om., S₁ reads in marg. 26-27. —°) M₄ वैयथा (for तुरगं) —°) D₂ T₃ G₂ 4 M₁ 3 5 पाहिषं; M₃ राशीय (sic) (for यज्ञिय). —°) D₂ M₄ °हवां; G₂ दुर्मेया°; M₃ °तं (for दुर्मेयस्तं). M₄ संभ्राम् (for संग्रामम्).

27 N₁ V B D₁-3 5 7 10-13 om., S₁ reads in marg 27 (cf. v.l. 26). —°) D₂ 14 T₂ G₂ M₁ तु (for तद्). —°) G₂ गोपेन (for रोपेण). —T₁ damaged from तिष्ठे up to the end of this Sarga. —After 27, S₁ ins. 877°

28 T₁ missing (cf. v.l. 27) —°) S₁ (sup. lin. also as in text) यस्तदा ते; N₂ V₁ 3 B₁-3 D₁ 15 M₄ तेष (B₁ °यि; M₃ °य) ध्याता; V₂ तेजोनीता, V₄ तेजोभावा; B₄ D₁ 2 (with hiatus) अपध्याता (D₁ °त्वा); D₂ कपिलेन, D₃ [अ]प्येते द्रष्टा, D₁ 12 [अ]प्येते द्रष्टा (D₁ द्रांवा) (for कपिलेन). D₂ 7 (with hiatus) अपध्यातात्मना (D₂ °त्वा) ध्याता, —°) G₂ नाताः (for -कृताः). —°) N₂ V B D₁-3 7 10 11 12 M₄ तमेवा. (for काकुत्स्थ). V₁ सारा°; D₂ °राज्ञा. (for सगरात्मजा) —After 28, M₃ (sup. lin. sec. m) ins.

878° ततस्तु राजा बभूवमानि दृष्ट्वा
वीरो निमित्तानि कृतेषु भस्म ।
पुत्रेषु पुत्रात्मजेषु वीक्ष्य
पितरिन्द्राय च विसिन्धिये च ।

Colophon. T₁ missing, S₁ D₅ 11 13 om. (continue the sarga). —Kanda name Dt om. N₂ V B कादि°; D₁ 3 अयोध्या°. —After Kāṇḍa name, N₂ V₁ 3 D₁ 10 ins बालचरिते. —Sarga name: N₂ V B D₁-3 7 10 कपिलदर्शन. —Sarga no. (figures, words or both) V₁ 4 B₁ 4 D₂ 3 om. N₂ B₃ 3 42, V₄ 44, V₅ D₁ 41. Dt D₂ 4 5 14 S (except T₁) 40, D₁ 4 7 33 D₁ 5 —काटे—मुनि द— —After colophon, T₂ G₂ 4 M₃ conclude with श्रीरामाय नमः; G₂ धीमते रमायुजाय नमः.

पुत्राधिरगताञ्जात्वा सगरो रघुमन्दन ।
 नसारमब्रवीद्राजा दीप्यमानं स्वतेजसा ॥ १
 शूराश्च कृतविद्यश्च पूर्वैस्तुल्योऽसि तेजसा ।
 पितृणां गतिमन्विच्छ येन चाक्षोऽपहृरितः ॥ २
 अन्तर्भौमानि सत्त्वानि वीर्ययन्ति महान्ति च ।
 तेषां त्वं प्रतिघातार्थं सासिं गृहीप्स कर्षुकम् ॥ ३
 अभिग्राधाभिवाद्यांस्त्वं हत्वा निम्नकरानपि ।

40

ॐ N₁ missing Sarga 40 (cf v1 I 33 8)
 D₁ 11 12 cont the previous Sarga

1 Before 1 D₁ 11 ins ref सु-उ-च —^a) S₁ D₁ 6 चिर
 (for चिर) N₂ V₁ 2 4 B₂-4 D₁-3 7 10 11 13 मचा, V₃
 (marg also as in N₂) दृष्ट्वा (for द्वा वा) —^b) D₂
 रघुमन्दन —^c) S₁ N₂ V₁ 3 4 B₂ D₁ 10-13 वाचय, V₂ वाचा,
 D₆ राम (for राजा) —^d) V₁ D₁ दीप्यमान (sic) S₁
 स्वतेजस, V₂ सुते, D₁ 11 महौ, D₂ 1 2 इवीजसा (for
 स्वतेजसा) —After 1 N₂ V B D₁ 13 read 881*

2 D₁ 14 reads 2^{ab} in marg —^a) S₁ D₁-3 6 7 9 11 13
 शूरस्व, N₂ V B D₁ 13 शूरोसि, M₁ श्रुतश्च, M₂ वीरस्व,
 Cm g as in text (for शूरश्च) V₄ विशोसि (sic) T₃
 वीरेश्च (for विशश्च) —T₁ missing from स्तु in 2^b up
 to st in 3^d on a damaged fol —^b) G₃ पुत्रैश्च,
 Cg k t as in text (for पुत्रैश्च) S₁ D₁ 13 समर्थश्च
 महाबल (D₁ 12 ला), N₂ V B D₁ 3 7 10 11 13 पूर्वैश्च (D₁
 1^{ab}) तुल्यपराक्रम —After 2^{ab} N₂ B₂-4 D₁ 13 ins

879* श्रीगन्धर्वायाहि भद्र ते यथा धर्मो न लुप्यते ।
 —^a) G₁ अन्विच्छन् (for लच्छ) N₂ V B D₁-3 7 10 11
 पितृनाञ्च त्वमन्वेष्टु, D₁ 13 पितृणा च त्वमन्वेष्टु, Cg as in text
 (for °) —^d) G₁ याहि (for येन) D₂ चारय, D₁ 12 *क्षो,
 G₃ Ck चाक्षो (for चाक्षो) S₁ N₂ V₁ 4 B₂ Dt D₁-3 5-6 12 13
 G₁ 3 M₂ 4 Cg k t [s] पवाहित, G₄ महानित, Cm as in
 text (for अपहारित)

3 T₁ missing up to सा in ° (cf v1 2) —^a)
 D₂ अन्तर्भौमानि (sic) D₁ 12 अन्तर्भौमानि (sic) (for अन्त
 भौमानि) D₂ सत्त्वानि, G₁ भूतानि, Cm k t as in text (for
 सत्त्वानि) —For 3^{ab} N₂ V B D₁-3 7 10 11 13 subst

880* अन्तर्भौमिनिवासीनि सन्ति सत्त्वान्यनेकत ।

[V₂ 4 अन्तर्भू (for अन्तर्भूमि) V₂ B₂ भूतानि (for
 सत्त्वानि)]

—^a) Dt D₂ 3 M₂ तु, T₂ त (for त्वे) N₂ V B D₁-3 7 9
 10 13 प्रतिविधानार्थं (V₂ 4 धातां च, V₃ D₁-3 7 9 धाताय),

सिद्धार्थः संनिवर्तस्व मम यज्ञस्य पारगः ॥ ४
 एवमुक्तोऽंशुमान्तम्यक्सगरेण महात्मना ।
 धनुरादाय खड्गं च जगाम लघुतिक्रमः ॥ ५
 स खालं पितृभिर्मार्गमन्तर्भौमं महात्मभिः ।
 प्रापद्यत नरश्रेष्ठ तेन राज्ञिभिचोदितः ॥ ६
 दैत्यदाननरक्षोभिः पिशाचपतगोरगैः ।
 पूज्यमानं महातेजा दिशागजमपश्यत् ॥ ७

D₁ 11 त्व प्रवि° (for त्व प्रतिघातार्थं) —^a) M₂ धारय (for
 गृहीप्स) N₂ V B D₁ 13 गृहीत्वा ब्रज कर्षुक, D₁-3 7 9
 गृह्णायुधमितो (D₂ 1^{ab}) घञ, D₁ सायुधस्यमितो ब्रज

4 ^{ab}) G₄ [अ] भिवाचय, Cm k t as in text (for
 बाधाय) D₆ तु, T₃ M₂ च (for स्त) S₁ D₁ 12 अस्मिन्ना
 भिवाचयस्य सहस्र च रिपुषि —^c) D₄ G₃ न्व, T₃ तु, Ck
 as in text (for स) —For 4 N₂ V B D₁-3 7 10 11 13
 subst (N₂ V B D₁ 13 read after 1) while D₂ subst
 1 1 only for 4^{ab}

881* तानासाद्य पितुस्तात हत्वा विप्रकर च मे ।
 कृतायै सनिवर्तथा यज्ञादुच्चारयस्व माधु ।

[[(1 1) D₂ ताना°, D₁ सना° (for तानासाद्य) V₁ त्रा*,
 V₂ तत्र, D₂ 7 9 तावद्, D₁ तावल् (for ताल) D₂ तानापिद
 स्तानात् (corrupt) (for the prior half) D₁ 13 यत् (for
 हत्वा) D₁ 11 मम (for च मे) —(1 2) D₁-3 7 11 सिद्धाय
 (for कृताय) V₁ सनिवर्तते तदा (hypermetric) B₁ 1^{ab} स
 D₁-3 सनिवृत्ता (D₂ 1^{ab}) य D₇ सनिवर्तथा (for सनिवर्तथा)]

5 T₁ missing from नोऽंशु up to द्वा in 6° on a
 damaged fol —^a) S₁ N₂ V₃ B D₁ 3 1^{ab} 1^{ab} 1^{ab} राम,
 V₁ 3 4 D₂ 11 12 नाम, D₁ 13 तेन (for सम्मत्) D₁ 13
 *रामना (for महात्मना) —^c) D₁ 13 आषाय (for आदाय)
 D₂ om च (submetric) —^d) M₂ रघुतिक्रम, Cg लघु°
 (as in text) S₁ N₂ V B D₁-3 6 7 10 12 M₂ दयौ त्व (D₁
 3) रितविक्रम (B₄ 1^{ab} मानस)

6 T₁ missing up to प्रा in ° (cf v1 5) M₂ om
 (hapl ?) S₁ reads in marg 6 —^a) Cm t वात (as
 in text) G₄ सहित, Cg as in text Ck तु° (for स
 खात) —^b) D₂ 13 अंतर्भौमी महर्षिनि —^c) D₂ प्रपद्यत,
 Cm k t प्रापद्यत (as in text) T₃ नरश्रेष्ठ D₆ 13
 पूज्यमानो रघुश्रेष्ठ जगाम लघुविक्रम

7 ^a) Dt D₂ 3 दैव, Cg as in text (for दैव) —^b)
 D₂ पितायै दयगोरगै —^c) S₁ D₁ 13 पूज्यमानो, D₂ 3 G₃
 1^{ab} मानो (for पूज्यमानं) —^d) M₂ अवैक्षत, Cg as in
 text (for अपश्यत) S₁ D₁ 13 दिगम्ब स ददत्त द —For
 6-7, N₂ V B D₁-3 7 10 11 13 subst

स तं प्रदक्षिणं कृत्वा पृष्ठा चैन निरामयम् ।
पितृन्त परिपश्यच्छ वाजिहर्तारमेव च ॥ ८
दिशागजस्तु तच्छ्रुत्वा प्रीत्याहांशुमतो वचः ।
आममज्ज कृतार्थस्त्वं सहाश्वः शीघ्रेमेप्यसि ॥ ९
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा समानेन दिशागजान् ।

यथाक्रमं यथान्यायं प्रष्टुं समुपचक्रमे ॥ १०
तैश्च सैर्दिशापालैर्नाक्यैर्नाक्यकोपिदैः ।
पूजितः सहयश्चैन गन्तासीत्यभिचोदितः ॥ ११
तेषां तद्वचनं श्रुत्वा जगाम लघुविक्रमः ।
भस्मराशीकृता यत्र पितरस्तस्य सागराः ॥ १२

882* तमेव पितृमियात पन्थानमनु सचरन् ।
ययौ वेगेन महता पितृस्त्वान्द्रुमजत्रा ।
वीक्ष्यमाणो विदासन तं कृत यश्चरक्षसाम् ।
सोऽपेक्षत विरूपाक्षमाशागजमवस्थितम् ।

[(1 1) V1 स नु* स्मरन्, V2 D1-3 7 11 अनु समरन् (for अनु सचरन्) — (1 2) V1 B1 2 D1 3 7 अवेष्टुम्, V2 4 वै द्रष्टुम् (for ता द्रष्टुम्) D1-3 7 आज्ञया (for अज्ञसा) — (1 3) V4 D1-3 7 पश्यमानो (for वीक्ष्यमाणो) B4 विनशन (for विदासन) D13 transp तै and कृन् D1 reads (marg also) पूष्यमानो दिशौ नाये स्तुतिमिर्वक्षरक्ष्ण for 1 3 — (1 4) V4 सौवेष्टन (sic), B1 सौषिष्टन, D1 2 सोपश्यच (D1 °त) D3 7 सोपश्यच, D1 ददर्श स, D13 सौवेष्टन (sic) (for सौपेक्षन) D1-3 7 दिशो (D1 2 °शा) गजम् D11 दिग्गज सन् (for आशागजम्) V2 4 उपस्थित]

8 T1 missing from ग कृत्वा up to कृता in 9° on a damaged fol —°) D2 7 प्रदक्षिणीकृत —°) N2 B D12 स्मृष्टा G2 दृष्टा (for पृष्टा) D12 T2 G2 4 M1 चापि, M2 [पृ]व च (by transp) M3 [अ]पि च (for चैव) Cm t निरामय (as in text) S1 D5 12 M4 चैन (S1 °व) मनामय, N2 V B D1-3 7 10 11 13 चानामय तत (for चैव निरामयम्) —°) S1 N2 V B D5 10-12 तान्, D1 3 7 13 स्वान्, D14 G2 4 M1 2 स (for स) D5 स पितृन् (by transp) —°) N2 V B D1-3 7 10 11 13 हय° (for वाजिहर्तारम्)

9 T1 missing up to कृता in ° (cf v1 8) —°) S1 D5 11 12 दिग्वाण (D5 °णा, D11 °णो) स्तु, N2 V B D10 13 आशागजोपि, D3 7 दिशो गजोपि, D4 दिशो गजस्तु (for दिशागजस्तु) —D7 om (hapl) 9°-10° —°) S1 D5 11 12 सौष्यमशुमतो वच, N2 V B D1-3 10 13 M4 दृच्छोनु (M4 °*) मजो वच, Dt D5 3 प्रत्युवाच महामति, Pृच्छोनु (M4 °*) मि प्रत्याहा° M3 प्रीत्या चा° —°) S1 N2 V1-3 B D1-3 5 10-12 अनुवाच, V4 उवाच त, D5 आसमाज, Cm g t as in text (for आममज्ज) Ck आसन असमन्मुत् । Ck —°) D5 12 T3 पृव्यति, Ck °सि (as in text) S1 हय प्राप्य समेति च (marg also लवेम च), N2 V1 2 4 B2-4 D2 10 11 13 M4 पृव्यसी (V1 °*) जमिति स्थित (N2 V2 B2 D2 10 M4 °त) V3 पृव्यसीत्यभिहित स्थित (hypermetric) B1 पृव्यसीत्यभिवाणित, D1 3 5 12 हय त प्राप्यसीति च

10 D7 om 10° (cf v1 9) —°) Cg तस्य (as in

text) N2 V B D1 2 10 11 13 इति तस्य वच श्रुत्वा —B3 T2 read 10°-12° in marg —°) D3 om M3 सर्वानपि (for सर्वानिव) S1 V B D1 3 5 7 11-13 हि (D1-3 7 11 स) दिग्गजान्, D5 दिशो° (for दिशागजान्) —°) B4 यथाकाम, D11 यथाक्रम्य (for °क्रम) D1 2 11 M4 समासाद्य (for यथान्याय) —°) G3 एवोपचक्रमे, Cg as in text (for समुप°) D1 2 11 M4 पचक्रमो मुकमानस

11 B3 T2 read 11 in marg (cf v1 10) T1 missing from 11 up to भस्मराशीकृ in 12° on a damaged fol —°) M3 तु (for च) D4 दिशा°, M3 दिशानागैर (for दिशापालैर) S1 D5 3 7 11 12 दिक्पालैः स तु (S1 सत, D3 7 स च) तै सैर्वर —°) D3 7 वारैर्, D5 11 12 14 T2 G4 वाक्ययो (for वाक्यैर) Ck Gg यद्वा परवाक्याशयज्ञै । Ck T3 G M1-3 ऋविद्, Cg k as in text (for ऋविदै) Ck Ct द्वितीयवाक्ये कृत । Ck —For 11°°, N2 V B D1 2 10 13 M4 subst

883* एतदेव च तैरुको गजैराशुपराक्रम ।

[D3 °* M4 वचकोको (for च तैरुको) V4 गजम् (sic), B1 D1 3 M4 जगाम (for गजैर) V3 पराक्रम (sic), V3 D13 पराक्रमे (for पराक्रम)]

—D1 3 M4 om (hapl) 11°-12° (cf 883*) —°) D10 पूजित (for पूजित) V4 स गजैश्च, B4 सहजश्च, D5 12 सहितैस् (for सहयश्च) D5 12 तैस्तु (for तैश्च) D11 चैव सहयो (by transp) —°) V1 गतासीद्, V4 B1 Dt D5 8 G1 Ck [अ] गतासि, D3 गतासि (sic) D7 गतासि, G3 इतासि (for गन्तासि) S1 D5 3 7 12 °आपित, N2 V1 3 B3 4 D10 13 [ह] र्व्य (V1 अं) शुमानपि, V3 B1 2 [ह] र्व्यशुमानि (B4 °मति) नि, V4 शशुमानि, D5 °आवित, Cg as in text (for [ह] र्व्यमिचोदित)

12 B3 T2 read 12° in marg (cf v1 10) T1 missing up to कृ in ° D1 2 M4 om 12°° (for both cf v1 11) —°) N2 V B2-4 D10 13 स, B1 D5 11 12 तु (for तद्) B1 तद्वच (for वचन) —°) S1 D7 [अ] लघु°, V1 धरणीतल, B1 रघुनन्दन, B4 बहु° (for लघुविक्रम) —°) D2 reads यत्र in marg —°) T3 G2 3 M1-3 Ct तत्र, Cg k as in text (for तस्य) M2 सागर, Ck त °त (as in text) —After 12 T2 M3 Ck ins

884* दृष्ट्वा भास्करमकाशान्भस्मराशीकृतान्वहन् ।

स दुःखवशमापन्नस्त्वसमञ्जसुतस्तदा ।
 चुक्रोश परमार्तस्तु वधात्तेषां सुदुःखितः ॥ १३
 यज्ञियं च ह्यं तत्र चरन्तमविदूरतः ।
 ददर्श पुरुषव्याघ्रो दुःखशोकसमन्वितः ॥ १४
 स तेषां राजपुत्राणां कर्तुर्कामो जलक्रियाम् ।
 सलिलार्थी महातेजा न चापश्यजलाशयम् ॥ १५
 विसार्य निपुणां दृष्टिं ततोऽपश्यत्स्वगाधिपम् ।

13 ^a) D₁ स दुःखशोकमिहतः; D₂ दुःखशोकेनाभि-
 हृतः. —^b) N₂ V B D₁₀ 13 सुतोय द्य(B₂ °यूद;
 D₁₀ °ह्यप्य)समञ्जतः; D₁-३ ७ तनयोयासमञ्जतः; D₁₁
 पुत्रयैवासमञ्जतः. —^c) S₁ चुक्रोष, D₂ चुक्रोष (for चुक्रोश).
 Cg परमार्तस् (as in text). S₁ °यसो, D₂ ५ ७ 12 M₂ °यस्तो
 (for परमार्तस्तु) —^d) D₂ 12 वधे (for वधात्) —For
 13^a, N₂ V B D₁ ३ 10 11 13 subst

855* चुक्रोशार्तस्वरं दृष्ट्वा भस्माशरीरकृतान्पितृन् ।
 [B₁ [आ] त्वं स्वप, D₁₁ [आ] त्वस्वतो (for °स्वर) V₄ om.
 दृष्ट्वा, B₄ अवि (for पितृन्)]

14 T₁ missing from च in 14^a up to सलिलार्थी in
 15^a on a damaged fol —^a) D₂ G₂ M₂ ४ याज्ञी (D₂
 °वि)यं; D₁₁ T₁ G₁ M₂ Cg यज्ञीयं (for यज्ञियं). N₂ V B
 D₁ ३ 10 11 13 अपश्यत्तु (D₁₁ °इयं तु[sic])रग तं च (N₂ B₂
 D₁₀ 13 तु) —^b) B₁ om चरन्त, B₃ अवि; D₂ इव; D₁₁
 °स्तः (for अविदूरतः) —^c) D₂ ७ T₂ व्याघ्र (for व्याघ्रो).
 —^d) D₂ ७ समाहृतः (for समन्वितः) —For 14^a, N₂ V
 B D₁ ३ 10 11 13 subst.

886* तदा पर्यणि नागेन हत वेलावने स्थितम् ।

[D₁ (marg.) glosses पर्यणि पौर्णमास्यां प्रधानयज्ञकाले वा ।
 “पर्यणपद्धते चाथे यथाज्ञितं प्रजापते । अर्पणि ह्ये चान्यो नियोज्यो
 यज्ञकर्त्तृणि ॥” N₂ D₂ हत (for हन). V₁ D₁ ३ वेलावनः (for
 वेलावने).]

15 T₁ missing up to सलिलार्थी in ^a (cf. v.l. 14).
 —^a) D₁₁ illeg. for तेषां. —^b) S₁ D₁-३ ५ 11 12 [अ] जलि;
 Cg as in text (for जल). —^c) S₁ D₁ ३ 11 13 सलिलार्थः;
 D₂ स जलायः; D₁₂ 14 सलिलार्थं (for सलिलार्थी). —^d)
 S₁ D₂ 12 तदा (for न च). N₂ V B D₁-३ ७ 10 11 13
 नापश्यत्सलिलं कश्चित्.

16 ^a) D₂ विशीयः; G₂ प्रसार्यः; Cm g t as in text, Ck
 विधाय (for विसार्य). G₂ निपुणः; M₂ विपुलः, Cm g k.t as
 in text (for निपुणां). N₂ V B D₂ ३ ७ 10 11 13 पात (V₂
 पते)यैक्षामि (D₂ ३ ७ °यन्तव्यं)तो दृष्टिः D₂ विचारयत्तो दृष्टिम्;
 D₂ 13 विचार्य निपुणं दृष्ट्वा. —^b) G₂ तपोः; G₂ स च (for
 तपो). M₂ स्वगाधिपः; M₂ शत्रोत्तमे (for स्वगाधिपम्). S₁
 (marg. as in text) N₂ V B D₂ ३ ७ 10 11 13 तत्तत् (V₂
 D₂ ७ तत्र)तत्र ददर्श द् (V₂ सः); D₂ ३ अपश्यत् स्व (D₂

पितृणां मातुलं राम सुपर्णमनिलोपमम् ॥ १६
 स चैनमब्रवीद्वाक्यं वैनतेयो महाबलः ।
 मा शुचः पुरुषव्याघ्र वधोऽयं लोकसंमतः ॥ १७
 कपिलेनाप्रमेयेन दग्धा हीमे महाबलाः ।
 सलिलं नार्हसि प्राज्ञ दातुमेषां हि लौकिकम् ॥ १८
 गङ्गा हिमवतो ज्येष्ठा दुहिता पुरुषर्षभ ।
 भस्मराशीकृतानेतान्पावयेह्लोकपावनी ॥ १९

°त्पत)गोत्तमः; D₁₁ अपश्यत् स्वगेधरं. —^a) D₂ रामः; D₁
 नाम (for राम). —T₁ missing from नि in 16^a up to
 दग्धा in 18^a. —^a) V₂ सौवर्गः; B₂ सुपर्ण (for सुपर्णम्).
 N₂ V B D₁₀ 13 पतोगोत्तमः; T₂ ३ G₂ ४ अचलोपम, Cm g.k.t
 as in text (for अनिलोपमम्)

17 T₁ missing (cf. v.l. 16). —^a) G₂ न (for स)
 D₂ [ए]तम् (for [ए]नम्). G₂ रामः; G₂ वाक्यः (sic)
 (for वाक्यं) —D₂ 13 om. (hapl. ?) 17^a-18^a. S₁ reads
 17^a-18^a in marg. D₁ damaged after ए in ^a up to यं
 in ^a. —^a) D₂ दुःखशोकसमन्तः.

18 T₁ missing up to दग्धा in ^a (cf. v.l. 16).
 D₂ 13 om., S₁ reads in marg. 18^a (cf. v.l. 17)
 —^a) N₂ V₁-३ B D₁-३ 10 11 13 M₂ °ह्येतः; V₄ °ह्येतः;
 D₂ हुताः; D₇ °ह्येतः, G₂ निर्दग्धा हि (for दग्धा हीमे).
 M₂ प्रमाः (for महाबलाः). —^a) S₁ नार्हसि सलिल (by
 transp.), N₂ V₂ B₂-४ D₂ T₂ ३ ६ ७ 10 11 13 सलिल (D₂ ७
 °ले) नार्हसि; V₂ ३ ४ B₁ नार्ह (V₂ इह)से सलिलः; D₂ 13 अर्हसि
 सलिलः; Cm g k t as in text (for सलिल नार्हसि). S₁ N₂
 V₂-४ B D₁-३ ५ ७ 10-13 वीर, V₁ ह्येषां (for प्राज्ञ). —^a) M₂
 कर्तुम्; Cm g k t as in text (for दातुम्). S₁ V₂ B₁ D₁ 13
 एभ्यो नतोत्तम (D₂ °मः); N₂ V₂ B₂-४ D₁₀ 13 °त्वमन्वतः
 (N₂ B₂ D₁₀ °था, V₂ °मः), V₂ एभ्यो न चान्वतः; D₁-३ ७ 11
 एषां (D₂ °भ्यो) महापुते; G₂ अर्हसि; M₂ एषां महात्मना
 (for एषां हि लौकिकम्) V₁ वीर दातुं त्वमन्वतः.

19 ^a) D₂ हिमवतां (for हिमवतो). G₂ ज्येष्ठः (for
 ज्येष्ठा). —^a) V₂ कन्या हि (for दुहिता). N₂ V B D₁-३ ७
 10 11 13 M₂ सरितां वराः; T₂ °मः (for दुरपर्यन्त). —After
 19^a, B₂ ins. .

887* प्रमिता त्रिपु लोकेषु सन्निवे भुरासुतः ।
 On the other hand, T₂ ins. .

888* सा नीयतां त्वया प्राज्ञ ततो यावत्पत्ति ते दिवम् ।
 T₂ cont., whereas S₁ (marg.) D₂ D₂ ६ ७ १० 11 T₂ ७
 M₁-३ ins after 19^a;

889* तस्यां कुरु महाबाहो पितृणां सलिलक्रियाम् ।

[M₂ तस्या (for तस्य). —T₁ missing from कुरु up to
 20^a on a damaged fol. D₂ °प्राज्ञ (for महाबाहो). D₂ 14
 T₂ G M₁ ३ कुरु-; M₂ हि ज- (for मणि-).]

तथा किञ्चमिदं भस्म गङ्गाया लोकात्तया ।
पटिं पुत्र सहस्राणि स्वर्गलोकं नयिष्यति ॥ २०
गच्छ चाश्वं महाभाग संगृह्य पुरुषर्षभ ।
यज्ञं पैतामहं वीर निर्नर्तयितुमर्हसि ॥ २१
सुपर्णपचनं श्रुत्वा सौंशुमानसिर्वीर्यवान् ।

त्वरितं हयमादाय पुनरायान्महायशः ॥ २२
ततो राजानमासाद्य दीक्षितं रघुनन्दन ।
न्यवेदयद्यथा वृत्तं सुपर्णपचनं तथा ॥ २३
तच्छ्रुत्वा घोरसंकाशं वाक्पमंशुमतो नृपः ।
यज्ञं निर्वर्तयामास यथाकल्पं यथानिधि ॥ २४

—^a) M^a सर्वान् (for एतान्) —^d) Śī N^a V B^a 4 Dt D^a 3-5-8-11 12 G^a M^a Cg k l झावेल्ल (B^a D^a 3 ^aये), D^a 10 पावनी, G^a पायवेल (for पावयेल) V^a D^a G^a ^aपाविनी, V^a ^aभागिनी, V^a ^aभाविनी, B^a 4 ^aतारिणी, D^a ^aभावन, D^a 13 ^aभावनी (for लोकपावनी) T^a झावयिव्यति पावनी

20 T^a missing 20^{ab} (cf v l 19 [889*]) —^a) N^a तयान् (sic) V B D^a 10 13 यावत्, G^a यदा, Cg as in text (for तथा) D^a 3-7 भस्मानसिद्ध (D^a 1 ^aष्टु, D^a 2 ^aहु)ष्ट (for किञ्चमिदं भस्म) —^b) D^a तयो (sic) D^a गताया, D^a G^a गताया (for गङ्गाया) V^a B^a ^aश्वया, D^a ^aमायया (for लोककांतया) —^c) T^a 3 G^a 3 M^a पटि, Ct as in text (for पटि) Śī D^a 12 तानि (for पुत्र) —^d) M^a मल्ललोक Dt D^a 8 T^a गमिष्यति, G^a 3 M^a 3 नयिष्यति, Cg k tp as in text (for नयिष्यति) Śī D^a 12 मल्ललोकाय धा(Śī या)सति Ck Dt इदं भस्म हे पुत्र पटिं सहस्राणि सागरान्स्वर्गलोकं गमिष्यति प्रायिष्यत्यतीत्यर्थे । Ck

21 ^a) Cg गच्छ (as in text) Śī Dt D^a निर्गच्छा श्व, D^a निर्गच्छ त्व, M^a गन्नाश्व च (for गच्छ चाश्व) Śī D^a 13 ^aतेज, G^a 3 M^a 3 ^aबाहे (for महाभाग) —^b) Śī D^a 13 प्रगृह्य (for संगृह्य) Ck Ct अश्व गृहीत्वा निर्गच्छ । Ck —For 20^a—21^a, N^a 2 (N^a missing) V B D^a 3 7 10 11 13 M^a subst while Dt D^a T^a G^a 3 M^a 3 ms l 2 3 (T^a M^a om l 3) after 20 then D^a alonesubst l 4 for 21^{ab}

890* यदैषा भविता तात स्वर्गमेव्यन्ति ये तदा ।
गङ्गामानय भद्रं ते देवलोकांमहीतलम् ।
नियता यदि शक्नोषि गङ्गाया अवतारणम् ।
गच्छाश्वमेमादाय पुनरेव यथागतम् ।

[(1 x) V D^a 11 यद्, D^a 3 सदा, Dt तदा (for यदा) B^a 4 [ए]व (for [ए]व) N^a D^a om (hapl) second ता D^a तत्, D^a त* (for तात) B^a (marg as above) इष्यति (for एष्यति) V^a हे (for ये) D^a स्वर्गं श्रेष्ठं तत्तानि, D^a स्वर्गं यन्निष्यति ये तत् (hypermetric) (for the post half) —(1 2) D^a 13 नाह* (for देवलोकाय) —(1 3) V^a 4 Dt D^a 3 7 9 13 G^a शक्नोषि (for शक्नोषि) V^a Dt G^a 3 M^a गणापातस् (V^a ^aशा)वतारण, D^a 3 7 9 11 गणावतारण नृप M^a गणापातारण (for the post half) —(1 4) V^a D^a 3 7 9 13 एवम् (for एतत्) D^a 10 आसाद्य (for आदाय) V^a यथागत* (for यथागतम्)]

—Śī reads 21^a—22 in marg —^a) B^a 2 ^aय, D^a 2-7 9

दीप (for दीर) —T^a missing from v in 21^a up to ra in 23^a on a damaged fol —^a) Śī V^a 3 D^a 12 13 T^a G^a M^a निवर्तयितुम्, D^a 11 G^a 3 Cg ग स्वर्तयितुम्, T^a स्वर्धयितुम्, Ct as in text (for निवर्तयितुम्) D^a इच्छति D^a 9 गत्वा कारोऽन्यमादिति, D^a 7 9 मा त्वा (D^a त्वा) कारोऽय (D^a ^aय)मादिति

22 T^a missing Śī reads in marg 22 (cf v l 21) —^a) M^a सुपर्णस्य वच श्रुत्वा Ck Cg सुपर्णेति Ck —^b) D^a 11 12 ना (D^a रा)म नामत (for अतिपीर्यवान्) N^a V B D^a 3 7 10 13 M^a धीर्यवा (D^a 13 ^aसा)नशुमानय (V^a ^aमानिति, D^a 2 M^a ^aमस्तत, D^a ^aमास्तथा, D^a ^aमास्तदा) —^c) N^a 2 V B D^a 3 7 10 11 13 G^a M^a त्वरितो (for त्वरित) —D^a om 22^a—23^a —^d) N^a V^a 2 B D^a 12 10 11 13 यश्म, M^a पुरीम्, M^a गृहम् (for पुनर्) Śī Dt D^a 8 9 G^a 3 ^aत्वा, D^a 2 ^aत्यन, T^a महीपति (for महायशः) V^a मल्लस्थानमपानयत्

23 T^a missing ततो रा (cf v l 21) D^a om 23^a (cf v l 22) —^a) Śī N^a V B D^a 2 5 7 10-13 M^a स राजानं समा(Śī D^a ^aनमथा, D^a ^aनमिहा)साद्य —^b) D^a न्यवेदम् (sic) D^a निवेदयद् (for न्यवेदयद्) G^a तथा (for यथा) D^a तत्त्व, D^a [आ]त्त्व त्व, Cg g t as in text (for वृत्त) N^a V B D^a 3 (first time) 10 11 13 M^a ह (D^a ह)रुम् (N^a B^a ^aरिम्, B^a ^aर्यै) निवेदयामास Ck यथा वृत्तमिति वितृविषयकमिति शेष । Ck —After 23^a, D^a reads 24^a as in V^a (repeats in its proper place) and thereafter repeats 23^a —^c) D^a 12 सुपर्ण (for सुपर्ण) Śī D^a 3 5 7 12 तत्, V^a 2 B^a 2 D^a 10 13 M^a तदा, V^a D^a 11 13 T^a G^a 3 M^a यथा, Cg g t as in text (for तथा)

24 ^a) N^a 2 V B D^a 3 7 10 11 13 M^a व्यथितो राजा (for घोरसंकाशः) —T^a missing from मते in 24^a up to गते in 25^a on a damaged fol —^b) N^a V B D^a 3 7 10 M^a वचम्, Dt om (for वाक्पमम्) N^a V B D^a 3 7 10 M^a वच, D^a 3 नृप, D^a 1 [स]भवत् (for नृप) D^a 13 राववाशुनृतो वच —After 24^a G^a M^a [inf lun see m] 125

891* मुहूर्तं दोहमवस्य स्थिरचित्तो बभूव ह ।
स तेनाश्वेन नीतेन पौत्रेणामुमता नृप ।
[(1 2) M^a तेनाश्वेन* (for the prior half)]

स्वपुरं चागमच्छ्रीमानिष्टयज्ञो महीपतिः ।
गङ्गायाश्चागमे राजा निश्चयं नाध्यगच्छत ॥ २५

अगत्वा निश्चयं राजा कालेन महता महान् ।
त्रिंशद्वर्षसहस्राणि राज्यं कृत्वा दिवं गतः ॥ २६

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे चत्वारिंशः सर्गः ॥ ४० ॥

—^c) Ś1 D2 9 11 14 T2 3 G2 M3 निवर्ते^०, N2 V B D1 10 13
M4 समाप^०, G4 निर्वोप^० (for निर्वर्तयामास) —^d) Ś1
D2 (second time) 5 11 12 रच्य (D1 12 °च्य [sic]) D14
T2 G M1 2 °तत्त्व, Gg as in text (for यथाकल्प) D9 °विधि
(for यथाविधि) N2 V B D1—(D2 first time) 3 7 10 13
M4 नातिहृष्ट (N2 B3 °कृष्ट, V3 B1 °हृष्ट, V4 °हृष्ट) मना इव

25 T1 missing up to गमे in ° (cf vl 24)
—^a) Dt D6 8 तु (for च) Ś1 D6 12 [अ]गमदीमाद्,
N2 V2 4 B1 2 D10 13 ययौ धीमाद्, V1 B3 4 M4 ययौ
श्रीमाद् (for [अ]गमच्छ्रीमाद्) —^c) V2 [अ]सिगमने, V3
[अ]वतरणे, V4 [आ]गम^०, Ck t as in text (for
[आ]गमे राजा) D1-3 7 M4 गंगावतरणे वन्न —^d) T2 M2
°गच्छति, G3 नाधिगच्छति, Ct as in text (for नाध्यगच्छत)
Ś1 N2 V B D1-3 5 7 10-13 नाप्य (V2 °प्या, D1 °प्य) मच्छत्स
(Ś1 D2 3 5 7 11 12 °द्रि, V2 B4 °त, D1 °द्रि, D13 °स्तु)
निश्चयं Ck निश्चयमुपायनिश्चयम् । अध्यगच्छतेति । Ck

26 °) Cm g अगत्वा (for अगत्वा), N2 V B D10 11 13
चापि (for राजा) —^a) Dt महतो, Gg as in text (for
महता) N2 V B D1-3 7 10 11 13 युयु (V4 सस्व) ने काल्प
(D1 3 °क) मेणा —^d) Ś1 D2 3 7 11 12 ययौ, Gg as in text

(for गत) N2 V B D1 2 10 13 पालयित्वा महीमिमा
—After 26 Ś1 D5 11 12 13

892* विधाय सोपायमिव क्रतु स
प्रतापविद्योतितभूमिपृष्ठ ।
आरह्य देवालयमुग्रतेजा
धिमिह देवेषु मनोरमेषु ।

On the other hand B2 ins

893* जगाम त्रिदिव राजा जितं हवेनैव कर्मणा ।

Colophon T1 missing from colophon up to
अंशुमत in 1 41 1^d —*Kaṇḍa name* Ś1 D4 6 om N2
V B D10 11 आदि^०, D1 3 अयोध्या^०. —After Kaṇḍa
name B2 4 D9 ins बालचरिते —*Sarga name* Ś1 N2
V B D1-3 5 7 10-12 सगरयज्ञ (V4 °ज्ञ) समाप्ति (V4 °ह)
D9 सगरयज्ञपरिसमाप्ति —*Sarga no* (figures words or
both) Ś1 V1 4 B1 4 D2 5 11 12 om N2 B2 3 D10 43
V2 45 V3 42 Dt D1 6 11 14 S (except T1) 41 D1 3 7
34 D9 44 D13 इत्यार्षे—यणे—कडे—समाप्तिर 43 —After
colophon^० T2 concludes with धीरामचन्द्राय नमः, G1 2 4
धीरामाय नमः, G3 श्रीमते रामानुजाय नमः, M1 2 श्रीम

४१

कालधर्मं गते राम सगरे प्रकृतीजनाः ।
राजानं रोचयामासुर्गुणानन्दं सुधार्मिकम् ॥ १
स राजा सुमहानासीदशुमात्रघुनन्दन ।
तस्य पुत्रो महानासीदिलीप इति निश्चुतः ॥ २
तस्मिन्नाज्यं समावेश्य दिलीपे रघुनन्दन ।
हिमगच्छसरे रम्ये तपस्तेपे सुदारुणम् ॥ ३
द्वारिश्च सहस्राणि वर्षाणि सुमहायशाः ।

तपोनगतो राजा स्वर्गं लेभे तपोधनः ॥ ४
दिलीपस्तु महातेजाः श्रुत्वा पैतामहं वधम् ।
दुःखोपहतया बुद्ध्या निश्चयं नाध्यगच्छत् ॥ ५
कथं गङ्गापतरणं कथं तेषां जलक्रिया ।
तारयेयं कथं चैतानि चिन्तापरोक्षमत् ॥ ६
तस्य चिन्तयतो नित्यं धर्मेण निदितात्मनः ।
पुत्रो भगीरथो नाम जज्ञे परमधार्मिकः ॥ ७

41

ॐ N 1 missing Sarga 41 (cf v 1 I 33 8)

1 Before 1 D13 ins ref सूच-च T1 missing up to अंशुमन्त on a damaged fol —^a) D5 12 धर्म, Cm g k as in text (for धर्म) N 2 V B D1-3 7 10 11 13 M 4 तव प्रहृतयो राम —^b) N 2 V 4 B D1 3 7 11 M 4 स्वर्गते नृपे, D5 12 जन, Cm g k as in text (for प्रहृतीना) V1 स्वर्गसुपतिते नृपे, V 2 D10 13 स्वर्गते (V 2 दास्यति) सगरे नृपे —^c) N 2 V B D1 3 7 10 13 M 4 धार्मिक (for राजानं) S1 चो², D1-3 7 स्थाप², D5 12 भास (with hiatus) Cm g k as in text (for रोचयामासुर्) Ck cites ^a as in text —^d) S1 D5 12 महाद्युति, N 2 V 2 B D1 3 7 10 13 M 4 नराधिप V 2 महीपति (for सुधार्मिकम्)

2 ^a) S1 D5 12 राजा च (for स राजा) G1 3 तु (for सु) D13 स राजासुमागसीद्, Cg as in text (for ^a) —^c) S1 D5 12 तेजा, N 2 V B D1 3 7 10 11 13 सम (V 1 ^a) भवद् (for महागसीद्) M 4 तस्य पुत्र वमभवद्

3 ^a) Dt D 4 6 8 तस्मै, Cm g as in text (for तस्मिन्) V 4 राज्ये (for राज्य) S1 देश्य, V 1 सनिवेश्य, V 2 निवेश्याद्, B1 D 2 3 G 2 निश्य, Dt D 8 दिश्य (for समावेश्य) —^b) D14 T 2 G 2 M 3 अंशुमात्र (with hiatus), Ct as in text (for द्विरीरे) N 2 V B D1 2 7 9 (before corr) 10 13 M 4 [5] या (B 2 m M 4 नौ) अंशुमानि (B 2 D 2 निति), T1 damaged (for रघुनन्दन) — T1 damaged from 3^a up to महा in 4^a —^c) N 2 V B D10 13 राम, D1 3 7 9 14 T 2 G 2 M 2 (also as in text) पुण्ये (for रम्ये) —^d) D13 ते* (for तेषे) S1 D5 11 13 तदारुणम्, N 2 V B D1-3 7 10 13 महायशा (B 1 तपा) M 4 तपोधन (for सुदारुणम्) — After 3 N 2 V B D1 3 7 10 11 13 M 4 ins

894* गङ्गावतरणं पुण्यं विकीर्णमरघुति ।

भनवायैव तं कामं स पं नृपतिस्ततम् ।

[(1 2) M 4 राम (for पुण्य) V 1 3 B1 D 2 11 13 M 4 नमिन् दुर्न — D13 om (hapl ?) 1 2-4^a — (1 2) V 4 च त^a (hypermetric); D11 राजा, M 4 वैच स (for त कान) D 2 3

तनो, M 4 काम (for स वै) D1 2 नृपतिर् (D 2 गत स नृ) वसत्तम्, D11 काम नृपेचाम (submetric) (for the post half)]

4 D13 om 4^a T1 damaged up to महा in 8^a (cf v 1 3) —^a) S1 N 2 V 1 3 B 2 4 D10 M 4 निशते (S1 त, V 2 D10 त), V 4 D 3 7 11 12 स द्वा (V 4 कृत्वा) निशता (D 2 ^a) त, B 1 द्वाविशत् (submetric) B 2 (m also as in N 2) द्वाविशति (for द्वाविशत्) Dt D 6 द्वाविशत्तयाहस —^b) G1 3 तप कृत्वा (for वर्षाणि सु) D14 T 2 G 2 M 3 सुमहायशा S1 N 2 V B D1 3 7 10-12 M 4 वर्षाणा (D12 ^a) समर (S1 D1 5 11 12 नित्य) द्युति (S1 D1 5 11 13 M 4 प्रम, D 3 7 11 प्रमु) — T1 om (hapl ?) 4^a —^c) K (ed) नृपोवच D14 T 2 G 2 M 1 राम (for राजा) S1 D5 11 13 तपोवने तप कृत्वा, N 2 V B D1 3 7 9 10 13 M 4 तपस्तत्त्वा महाधोर (M 4 सुधोर स) —^d) S1 G 2 लोके, Cg as in text (for लेभे) S1 D5 11 13 M 4 स्वर्गमेत (M 4 स्ति, M 4 णा), N 2 V B D10 13 महामना, D1 3 7 16 T 2 G 2 M 1 महायशा (for तपोधन)

5 N 2 V 3 B1 D10 13 om (hapl) B 3 reads in marg 5 7 —^a) V 1 2 B 2 4 D1-3 7 11 M 4 णिलीपेसि —^d) D 2 पितामह (sic) V 4 B 2 4 D 2 3 वच D12 विधि, Cg k as in text (for वधम्) —^c) M 2 हित्वा, Cm g as in text (for हृतया) V1 lacuna V 2 तमेवाङ्कितयशाय, D1-3 7 9 11 M 4 तमेव वितयशये (D11 द्विय) —^d) D 2 14 S (except M 4) नाथिगरुडति, Cm g नाथगरुडत्त (as in text) S1 V 4 B 2 4 D 13 नाथगरुडत्त (V 4 च) निश्चय

6 N 2 V 3 B1 D10 13 om B 3 reads in marg 6 (cf v 1 5) —^a) D 5 गता (for तेषा) T1 missing from न्रिया up to महा in 8^a on a damaged fol —^c) B 4 देह, D14 दैन (for तारयेय) S1 V 1 4 B 2 4 D 13 दं (V 1 लैना) भूद्, V 2 D 2 3 7 9 रवेना, D1 रवेना, D14 T 2 M 4 चैना, G 4 वैय (with hiatus) (for कैना) —^d) M 3 चित्ताकुले (for पते)

7 N 2 V 3 B1 D10 13 om B 3 reads in marg 7 T1 missing (cf v 1 5 and 6 respy) —^a) D11 चित्तयम् V 1 2 D 3 7 9 11 रवेच (V 1 ^a) (for न्रिय) —^b) S1 V 4

दिलीपस्तु महातेजा यद्वैर्बहुभिरिष्टान् ।
 त्रिशद्वर्षसहस्राणि राजा राज्यमकारयत् ॥ ८
 अगत्वा निश्चयं राजा तेषामुद्धरणं प्रति ।
 व्याधिना नरशार्दूल कालधर्ममुपेधिवान् ॥ ९
 इन्द्रलोकं गतो राजा स्वार्जितेनैव कर्मणा ।

Ds 12 M4 विप्रितामन्, Ct as in text (for विदि°) V1 2
 D1-3 7 9 11 कथामेता (D11 नृपते सु) महामन् —° B3
 राम, D2 7 9 जसे (for नाम) —° V1 om D2 7 9 सर्व, D3
 7 9 (for जसे) V1 2 3 7 9 लोक (V1 ** D3
 सर्वलोक [hypermetric]) परिक्षुत

8 T1 missing partially * (cf v l 6) —° N2 V
 B D1-3 7 9 11 13 द्वितीयोपि —° N2 V B1 3 4 D1-3 7
 10 11 द्विजि (V1 3 B4 'यि)वान् (for इष्टवान्) S1 Ds 12
 यज्ञैश्च बहुभिर्यजन् (D12 'जैयन् [metathesis]) —G4 om
 (hapl) 8°-9 —° S1 V B1 3 Ds 11 12 विप्रानि (V3
 'तिरु) वै, N2 B3 'च वै, B4 विप्रानि द्वे, D1 (m also)
 दशवर्ष, D10 13 'चैव (for त्रिशद्वर्ष) V4 'घाणां (for
 सहस्राणि) —° Cmg t अकारयत् (as in text) S1
 N2 V B Ds 10-13 वषाणा गा (V1 *) मषालयत्

9 G4 om 9 (cf v l 8) —° S1 Ds 12 तांस्तु (for
 राजा) —° G4 M1 उत्सारणं (for उद्धरणं) S1 Ds 12
 समुद्रमुमराणुयन्, M4 गगावतरण प्रति —l or 9^{ab} N2 V B
 D1-3 7 9 11 13 subst

895° निश्चयं व्याधिरात्रैव गङ्गावतरणे तत ।

[D1-3 7 9 11 सेवि (for चापि) B1 [अ]गत्वा D11 'न
 (for [अ]गत्वा) D2 गंगावतरण (for 'तरणे) V4 D2 7 नृप
 D3 गत (for तत)]

—° S1 Ds 12 7 11 13 विधिना, V2 व्याधिवान्, Cmg k t as
 in text (for व्य धिना) —T1 missing from नर up to र्धा
 in 11^{ab} on a damaged fol Ds 10 'शार्दूल (for 'शार्दूल)
 —° D4 धर्मं (for धर्मैश्च) D2 समी° Cg as in text
 (for उपेधिवान्) N2 V B Ds 12 7 9 11 13 M4 कालस्य
 वषासीधिवान् (V4 'तां गत, Ds [after corr] 'मेधिवान्)

10 T1 missing (cf v l 9) —° V1 Ds इन्द्रलोकात्;
 D1 2 7 9 11 स्वर्गं प्राप्य (D2 7 'य, D11 'वान्) ततो, G2 इन्द्र
 नीलं गतो, M4 स्वर्गं पुण्यगतो, Cg as in text (for इन्द्रलोके
 गतो) —° S1 Ds 12 M4 स्व (D2 सो: M4 स्वा) त्रिंश्च स्वेन,
 N2 V B4 D2 7 9 12 13 सोत्रि (N2 B4 D10 'धि) तं (B4 'त)
 पुण्य, B1 [आ]त्मानिश्च पुण्य; B2 D1 11 स्या (D1 स्व) त्रिंश्च
 (D1 'त) पुण्य; G4 M1 'देव्य (for स्वात्रितेदेव) D2
 तेजसा G2 M1 कर्मणि (for कर्मणा) —° Ds रात्रे (for
 रात्र्य) N2 V B D1 2 7 9 11 13 M4 रयं मगीये पुत्र Ck
 as in text (for °) —° V4 निक्षिप्य च; Cg k as in text

राज्ये भगीरथं पुत्रमभिषिच्य नरर्षभः ॥ १०

भगीरथस्तु राजर्षिर्धार्मिको रघुनन्दन ।

अनपत्यो महातेजाः प्रजाक्रामः स चाप्रजः ॥ ११

स तपो दीर्घमातिष्ठोद्वेगं रघुनन्दन ।

ऊर्ध्वबाहुः पञ्चतपा मासाहारो जितेन्द्रियः ॥ १२

(for अभिषिच्य) T2 G4 'अ, G1-3 M1 2 'अ (for नरर्षभ)
 S1 N2 V1-3 B D1-3 7 9-13 M4 निक्षिप्य (D2 'क्षिप्य)
 पुरुषर्षभ (S1 D2 'अ, V1-3 B1 D1 2 M4 'अ B3 4
 D10 'भे)

11 T1 missing up to र्धा in 5 (cf v l 9) —°
 Ds स (for तु) S1 N2 V B D1-3 7 9 10-13 M4 भगीरथोपि
 (V1 3 B2 3 D13 य) राजाभूत् —D1 3 (after 11) 11 ins
 after 11^{ab}, D2 7 9 subst for 11^{ab}

896° तस्यापि परमो यत्नो गङ्गावतरणेऽभवत् ।

—Ds 12 om 11°-12° S1 reads 11°-12° (including
 897°) in marg —° S1 Dt D6 8 'राज, N2 V B
 D10 11 13 M4 सदा (D12 'चा) काश्चन् (D10 13 'क्षेत्) (for
 महातेजा) —° S1 Dt Ds Ct च प्रजा, D1 यत्नत, G4 च
 प्रज (sic) Cmg as in text (for चाप्रज) N2 V B
 D10 11 13 M4 सद्यसीमामन् प्रजा —After 11 S1 Dt
 D6 8 14 S (except M4) Cg t ins

897° मन्त्रिणावाद्य तद्वाद्यं गङ्गावतरणे रत ।

12 Ds 12 om S1 reads in marg 12^{ab} (cf v l
 11) —° N2 V B D1-3 7 9 11 13 M4 महद् (for दीर्घम्)
 N2 V4 B D11 जातस्ये (for आनष्टे) S1 Dt Ds 12 10
 तपो दीर्घं समातिष्ठ (D10 'तेपे) Cg t गङ्गावतरणेऽप्युत्तप
 आतिष्ठत् Cg —° N2 V B D1 2 7 9 13 M4 [S]नुपम
 (D1 '*) पुत्रि, D10 [S]नुपमसुते (for रघुनन्दन) D11
 राजा कनुपमपुत्रि —° D2 सदा (for पञ्च) —° S1
 Ds 12 मिता, M4 मान° Cmg k t as in text (for
 मासाहारो) N2 V B D1-3 7 9 11 13 M4 प्रीत्ये (V4 प्रीत्येन
 [sic]) भूत्वा (D1-3 7 9 M4 transp प्रीये and भूत्वा)
 य (D1 2 7 13) तवत् —After 12 N2 V B D1-3 7 9 11 13
 M4 ins.

898° जलनायी च हेमन्ते वर्षास्यभ्रातृवर्णिक ।
 श्रीगणेशगृहग्राहो यतात्मा यतमैश्वर ।

[[1 2] V4 दिन (for जन) N2 V1 B1 प्राप्त° (sic),
 Ds 12 7 9 10 'काश्र्च D11 [आ]काशवर्णिक, D12 [अ]
 वतनलया M4 'वाणि (for [अ]प्रावर्णिक) —(1 2) D1
 यत्र (for यत्र) After इत्यादि D2 erroneously repeats
 from 1 in 11^{ab} (cf 12^{ab} in D1) up to प्रा in post.
 half of 1 D1 2 7 9 10 13 'दि (for वनावा) N2 B3 D1-4
 7 9 10 13 M4 दिन (for वप)]

तस्य वर्षसहस्राणि धोरे तपमि तिष्ठतः ।
 सुप्रीतो भगवान्ब्रह्मा प्रजानां पतिरिश्वरः ॥ १३
 ततः सुरगणैः सार्वभुषागम्य पितामहः ।
 भगीरथं महात्मानं तप्यमानमथाव्रवीत् ॥ १४
 भगीरथ महाभाग प्रीतस्तेऽहं जनेश्वर ।
 तपसा च सुतप्तेन वरं वरय मुनत ॥ १५
 तमुवाच महातेजाः सर्वलोकपितामहम् ।

भगीरथो महामागः कृताञ्जलिरवस्थितः ॥ १६
 यदि मे भगवान्प्रीतो यद्यस्ति तपसः फलम् ।
 सगरस्यात्मजाः सर्वे मत्तः सलिलमाप्नुयुः ॥ १७
 गङ्गायाः सलिलछिन्ने भस्मन्येषां महात्मनाम् ।
 स्वर्गं गच्छेयुरत्यन्तं सर्वे मे प्रयितामहाः ॥ १८
 देवा च संततिर्देव नामसीदेकुलं च नः ।
 इक्ष्वाकूणां कुले देव एष मेऽस्तु वरः परः ॥ १९

13 T₂ moth eaten up to धोरे in ⁸ —^a) D₃
 तपस्य (sic) (for तस्य) S₁ D₃ 5 7 11 r सहस्रेण, N₂ V B
 D₁ 10 13 M₄ सहस्रान्ते (for सहस्राणि) —^b) S₁ D₁ 12 13
 तपस्युमे महामन, N₂ V B D₁ 3 7 10 13 M₃ तपयो (V₄ *)
 म्रेण तोरित —After 13^{ad}, S₁ (m) Dt D₁ 6 8 9 14 S
 (except M₄) Cr mg t ins

899* अनीतानि महाबाहो तस्य राज्ञो महामन ।

—^c) Cv r mg t सुप्रीतो (as in text) S₁ D₁ 11 12
 ब्रह्मा (D₁ 3 वर) प्रीतोभवद्राम N₂ V B D₁ 3 7 10 13 M₄
 आनगाभाधत ब्रह्मा (D₂ 3 7 भमयो) —^d) D₁ हुवाण, D₁ 2
 प्रजा*, M₄ चतण (for प्रजानां) S₁ N₂ V B D₁ Dt D₁ 5 6 8
 10 12 G₁ M₂ 8 प्रसुर (for पतिर) D₂ 3 7 9 ब्रह्मा (D₃
 सर्व) लोकपितामह, Ch as in text (for *)

14 Dt reads 14 twice —^a) N₂ V B D₁ 3 7 9 11 13
 M₄ वृत्, Cg as in text (for तत) S₁ V₂ 4 D₁ 3 (D₃
 om) 5 7 9 11 12 सर्वे N₂ V₁ 3 B D₁ 10 13 M₄ श्रीमान् (for
 सार्वभू) —^b) S₁ D₁ 11 12 तह लोक (D₁ 11 के) M₁ उप°
 (for उपागम्य) N₂ V₁ 3 B D₁ 3 7 9 10 13 M₄ विमानवर
 मास्थि (D₁ 11 त) (D₂ 7 ते), V₂ श्रीमानवरमास्थित, V₄
 श्रीमानस्यद्वनमास्थित —^c) N₂ V B D₁ 3 7 9 10 13 M₄ स
 पुन (N₂ V D₁ 10 11) सामान्ये (M₄ साय) तदा (D₃ illeg
 for व्य तदा) (for *) D₃ illeg D₂ 9 दीप्यमान (for तप्य
 मानम्) S₁ D₁ 11 12 तप्यमानं महामन (by transp) S₁
 D₁ 11 12 वचो, N₂ तम्, V₁ 2 4 B₂ 3 D₂ 7 10 M₄ ततो, V₃
 B₁ 4 D₁ 13 ततो, G₁ 3 M₃ तदा, Cg as in text (for अथ)

15 *) Dt D₂ 9 राज; D₄ T₃ G₁ 3 M₂ 3 (after corr
 sec m राज) तेन, M₄ बाहो (for महाभाग) —^b) S₁
 N₂ V₁ 3 B D₁ 3 7 9 11 13 नरे, V₄ सुरे, Dt D₁ 4 6 8 11 T₃
 क्मा (D₂ 11 नरा) थिय, D₂ 10 नरोत्तम (for जनेवर) M₄
 भगीरथ मद्राथ —^c) S₁ D₁ 11 12 त्व (for च) Cm t तपसा
 च (as in text) Du सुववर (for सुववेन) —^d) Du
 दाते (sic) (for वर) —For 15^{ad}, N₂ V B D₁ 3 7 9 10 13
 M₄ subst

900* गृहाण वरमस्मत् काङ्क्षितं प्रयिवीपते ।

[V₄ B₁ त्व (V₄ om [submetric]) वर मत्त (for
 वरमस्मत्) D₂ वर गृहाण मत्तत्त (for the prior half) D₁
 काङ्क्षित (for काङ्क्षित)]

16 *) N₂ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ त्वो हृष्टा (B₁ D₁
 M₄ राता), Cg as in text (for महातेजा) S₁ D₁ 12 उवाच
 सु (D₁ 3 स) महामान —^b) N₂ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄
 ब्रह्माण स्वयमागत —^c) S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 10 12 T₃ G₁
 M₂ 4 तेजा, Dt D₂ 8 बाहु, D₁ 9 नरछेष्ट (for महाभाग)
 —^d) N₂ V B D₁ 10 11 13 M₄ हृद् वच, D₂ 3 7 अभापत,
 D₄ 9 T₃ उप° (for अवस्थित) S₁ D₁ 12 G₁ 3 M₂ बद्धा
 शिरस्ति चाङ्गलि, Dt D₂ 9 हृताङ्गलिपुट स्थित —After 16,
 B₃ ins

901* उवाच वृषशार्ङ्ग ममया च नतकन्धर ।

17 *) S₁ मा, B₄ ते (for मे) V₂ D₂ 5 6 9 11 12 14 T₃
 G₁ M₂ 3 Cm वन् (for भगवान्) —^b) N₂ V₂ 4 B D₁ 10 13
 बल, V₁ बल (sic) (for फलम्) —^c) N₂ V B D₁ 3
 7 10 13 M₄ तत (D₁ 3 हता) सगरपुत्रास्ते (V₂ स्तु) —^d)
 D₁ 3 सगरम् (for सलिलम्) D₂ आमुयात् (sic) Ch cites
 * as in text

18 D₂ om 18 —^a) Ck cites * as in text —For
 18^{ad}, S₁ D₂ 12 subst

902* गङ्गासलिलसङ्घिने ते भस्मनि महीजस ।

N₂ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ subst

903* गङ्गाजलकुते तस्मिन्वेदभस्मनि पाविता ।

[V₄ कुल (sic) D₂ *ते D₂ *ल, D₁ 3 M₄ जल° (for
 जलपुने) D₂ 3 7 दे (D₃ *) ये M₄ देहे (for तस्मिन्) V₂ B₁
 D₁ 3 देहे, M₄ तस्मिन् (for देह) V₂ पाविता, D₁ 3 चान्च (for
 पाविता) D₁ 3 7 तस्मिन् (D₁ देहे न) स्मनि झा (D₂ 7 पा) विदे
 (for the post half)]

—^c) T₃ M₂ 3 (after corr sec m) *र्थ, Cg as in text
 (for अत्यन्त) N₂ V B D₁ 3 7 10 11 13 M₄ गच्छेयुरमला
 (V₄ *रा) स्वर्ग (B₂ सर्व [sic]) Cm t as in text (for *)
 —M₄ om 18^{ad}—20^{ad} —^d) S₁ D₁ 3 7 M₂ 4 ते, N₂ V B
 D₁ 10 11 13 n, Dt D₂ 8 च (for मे)

19 M₄ om 19 (cf v 1 18) —^a) S₁ N₂ V B
 D₁ 3 5 7 9 13 ह्य, M₄ परा Cm g t as in text (for देवा)
 D₂ से, D₁ 11 Cg as in text (for च) Dt D₂ 8 देव
 याचे ह (D₂ *ह) सत्ये —^b) S₁ D₁ 13 नावसानं कदाचन,
 N₂ V B₂ 4 D₁ 10 13 नावसाद् (V₄ *मानं) कथचन, B₁

उक्तवाक्यं तु राजानं सर्वलोकपितामहः ।
प्रत्युवाच शुभां वार्णां मधुरां मधुराक्षराम् ॥ २०
मनोरथो महानेप भगीरथ महारथ ।
एवं भवतु भद्रं ते इक्ष्वाकुकुलवर्धन ॥ २१
इयं हैमवती गङ्गा ज्येष्ठा हिमवतः सुता ।

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे एकचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४१ ॥

तां वै धारयितुं राजन्हरस्तत्र नियुज्यताम् ॥ २२
गङ्गायाः पतनं राजनृथिवी न सहिष्यते ।
तां वै धारयितुं वीर नान्यं पश्यामि शूलिनः ॥ २३
तमेवमुक्त्वा राजानं गङ्गां चाभाष्य लोककृत् ।
जगाम त्रिदिवं देवः सह सर्वैर्मरुद्गणैः ॥ २४

नावसीदेक्यंचनः D1-3 7 9 11 M⁴ नोच्छिद्येत कथं (D1 11 M⁴ 'दा'चन. Cg m g t यया (Ct यया) नः कुलं नावसीदेद् । Cg —^o) G⁴ देक्ष्याकृष्णं. B1 कुल (for कुले). S1 N⁴ V B D⁴ 10 12 13 गच्छेद् (for देव). D1-3 7 9 11 इक्ष्वाकुराज (D⁴ 'वंश'प्रमवा. —^o) S1 V1 3 B⁴ वरो वरः; N⁴ V⁴ B⁴ D10 13 [अ]परो वरः; V⁴ B⁴ वरोपरः; B⁴ Ch. परो वरः (by transp.), D1⁴ वचोमम (for वरः परः). D1-3 7 9 11 M⁴ वरमेन (D1 11 M⁴ 'तं, D⁴ 'क' वृणोम्यहं (D⁴ 'तोस्म्यहं; M⁴ 'नोमि ते); D⁴ एष तेस्तु वरो मम.

20 M⁴ om. 20⁸⁰ (cf. v.l. 18). S1 repeats 20⁸⁰ in marg. —^o) Cg उक्त- (as in text). N⁴ V B D1-3 7 9 11 M⁴ इत्युक्त (B⁴ D⁴ 3 'क्या, B⁴ 'कं [sic]) वाक्यं (V⁴ D⁴ 'वंतं) (for उक्तवाक्य तु). —^o) V⁴ इत्युवाच. Cg शुभां (as in text). D1-3 7 9 11 M⁴ तदा (M⁴ 'तो) राम (for शुभां वार्णां) —^o) Cg मधुरां (as in text). D⁴ reads मधुरा in मधुराक्षराम् in marg. S1 N⁴ V B D⁴ 10 12 13 मधुराक्षरमृतितां (V⁴ 'समिता; B⁴ 'निभृषिता [hyper-metric]), D1-3 7 9 11 M⁴ वाक्यं शुभि (D1⁴ सुत) मुखावहं; M⁴ मधुर मधुराक्षरं.

21 ^a) T⁴ महा; Cg k t as in text (for मनोरथो). D⁴ T⁴ 'राज; G1 M⁴ 'तेजा (G1 'जो [sic]), G⁴ 'भाग (for महानेप). S1 N⁴ V B D1-3 7 9 13 लपोधन महाभाग. —^b) V⁴ 'मना; D1⁴ 'बलं (sic) (for महारथ) —Note hiatus between ^a and ^b. —^o) N⁴ V B D10 13 M⁴ [अ]विच्छिद्यम्; D⁴ 'व; D1⁴ 'च (for भद्रं ते). —^o) S1 'बुलनंदन, N⁴ B⁴ D10 13 'बुलसभवं (D1⁴ 'व; V B1 2 4 D1-3 7 9 11 13 G1 3 M⁴ 'जु (B1 3 'जलमय्यं (for 'बुलवर्धन) —After 21, B⁴ ins. 904^a.

22 ^a) C⁴ r m. cite ^a as in text. Dt D⁴ 8 transp. गंगा and ज्येष्ठा. —For 22^a, S1 D1-3 7 9 11 13 subst., while B⁴ ins. after 905^a, whereas B⁴ ins. after 21.

904^a या सा देवदत्ता गङ्गा ज्येष्ठा हिमवतः सुता ।

[B⁴ गङ्गा (for ज्ये).]

—For 22^a, N⁴ V B (B⁴ reads after 904^a) D10 13 subst..

905^a इदं तु गङ्गा सरितां प्रवता स्वर्गं पशुना ।

[N⁴ V⁴ B⁴ च (for तु). V⁴ प्रवता सरितां (by transp.).] —Thereafter N⁴ V B (B⁴ after 904^a) D10 13 cont.

906^a दारयैष्टुर्विधो हृन्मनो निपतन्ती महोचिनी ।

[D1⁴ सर्वां (for हृन्मनो). B1 निपतन्ती.]

—^o) D⁴ तु (for वै). M⁴ Cg दाक्षो (for राजन्). N⁴ V B D10 13 तदस्या धारणे राजन्. —^a) T⁴ रहस् (metathesis), M⁴ (before corr. as in text, after corr. inf. lin. sec m.) नरस्; M⁴ शिवस् (for हरस्). M⁴ प्रयुज्यतां. S1 N⁴ V B D1-3 7 9 13 शिवो (D1⁴ महा) देवः प्रसाद्य (B⁴ 'सेव्यतां, C⁴ r m g as in text (for ^a).

23 ^a) D1⁴ तरणं (for पतनं). N⁴ V B D1-3 7 10 11 13 व्यकं (for राजन्). —^b) Cg पृथिवी (as in text). T⁴ स नहिष्यते (metathesis), G1 3 4 C⁴ 'ति (for न सहिष्यते). S1 N⁴ V B D1-3 7 9 13 भूमिः सोढुं न शक्यति (V⁴ B⁴ 'क्यति [sic], V⁴ 'क्यते; D⁴ 'वाशवंदयति [sic]) —After 23^a, S1 D1-3 7 9 11 12 ins.

907^a अतिथेगात्पतन्ती गां मिषा पातालमाभिसेत ।

—^o) D⁴ om. वै (submetric). C⁴ m धारयितुं (as in text). Dt D⁴ 8 T⁴ राजन् (for वीर). S1 N⁴ V B D1-3 7 9 13 तस्या (V⁴ 'रमाद्) धारयितारं च. —^a) S1 N⁴ V B D1-3 7 9 13 शंकराद् (for शूलिनः). —For 23, M⁴ subst.

908^a दारयैष्टुर्विधो हृन्मनो पतमाना महोचिनी ।

यदस्या धारणे देवं दिवं तावत्प्रसादय ।

मगनाप्रयुतां राजन्म एतां धारयिष्यति ।

नान्यस्तस्माद्विषादस्या. दाक्षो वेगो हि दुःसहम् ।

सोढुं निपतमानायास्तस्मात् तं प्रसादय । [5]

[For the prior half of l. 1. cf. that of 906^a.]

—After 23, N⁴ V B D10 13 ins.:

909^a वेगो मुदु महं ह्येके तस्मात् तं प्रसादय ।

[V⁴ श्रेष्ठ (sic). —For the post. half cf. that of l. 5 of 908^a. V⁴ B⁴ 8 तं तं (by transp.); V⁴ तं * (for तं तं).]

24 ^a) M⁴ स (for तम्). V⁴ राजर्षि (for राजानं).

—^b) S1 M⁴ जामात्यः; D1⁴ जाम्य* (for जामात्यः).

४२

देवदेवे गते तस्मिन्तोऽनुष्ठुप्राग्रनिपीडिताम् ।
कृत्वा वसुमतीं राम संतत्सरमुपासत ॥ १
अथ संतत्सरे पूर्णे सर्वलोकनमस्कृतः ।

Ñ: V B D10 13 M4 भगवा (M4 °व) ऋ (V4 °वास्तु) पितामह
—After 24^{ad}, S1 ins 912*, while D1 (m) ins

910* गच्छ देवि धरादृष्ट भगीरथमुनेच्छया ।

इत्युक्त्वा प्रययौ ब्रह्मा सर्वद्वनमस्कृत ।

—S1 reads 24^{ad} in marg —° S1 Dt D4 8 M4 द्ये
(for देव) —° Cmk t देवर् (for सर्वर्) S1 Dt D4 8
M4 सर्व सह (by transp) Cmgk t मरुद्रेण (as in
text) —For 24^{ad}, Ñ: V B D10 13 subst

911* कामाय च महीं गन्तु गन्ना स त्रिदिप ययौ ।

[B4 om च (submetric) B4 reads (after corr)
from ही up to त्रि in marg Ñ: V3 B1 3 4 D10 13 नेतु (for
गन्तु) V2 4 transp गतु and गमा V1 दिनि (metathesis)
(for त्रिदिप)]

On the other hand D1 3 5 7 11 12 M4 subst while S1
ins after 24^{ad}

912* नियुज्य जातां गन्तु गन्ना प्रविश्यौ तत ।

पुराण देवसदन सपदेयनमस्कृत ।

[(1 1) S1 D3 5 11 12 नियुज (D4 °युक्ता [sic]) D1
°लेप, D7 °कवा (for नियुज्य) M4 च महीं (for जातौ) M4
तुन (for तत) —M4 om 1 2 —(1 2) D1-3 5 11 वी
(D1 तु) ण ब्रह्मपदन (for the prior half) D5 नमस्कृत
(for नमस्कृत)]

Colophon D1-2 3 7 12 om (Sarga cont) —Kanda
name S1 Ñ: V1 4 D4 om V2 3 B D10 11 कादि° —Sarga
name Ñ: 2 भगीरथप्रसाद, V1 2 4 B D10 11 भगीरथ (Du
om) वरप्रदान (D10 °ने), V3 भगीरथवरप्रसादन, D7 गंगा-
वत्पण —Sarga no (figures words or both) V1 4
B1 4 Du om S1 Dt D4 8 11 S 42 Ñ: B2 3 D10 44
V2 46 V3 43 D4 45 D13 —कडि—रप—प्रदान सर्ग 44
—After colophon T2 concludes with श्रीरामवन्दनाय
नम, G1 2 4 M1 2 श्रीरामाय नम, G2 श्रीमते रामानुजाय नम

42

Ñ: missing Sarga 42 (cf v1 1 33 8)

1 Before 1 D3 ins सूत उवाच —° Ñ: V B
D10 13 प्रनापतौ Cmgk t as in text (for देवदेव)
D1 11 गते (sic) (for गते) S1 D1 3 5 7 9 11 राम, M4
राजा (for तस्मिन्) —° Ñ: V B D10 13 M4 अनुष्ठुप्राग्र
(for सोऽनुष्ठुप्राग्र) Ñ: V3 B2 D10 13 प्रपीडित, V1 2 4 B1 2 4

उमापतिः पशुपती राजानमिदमब्रवीत् ॥ २

प्रीतस्तेज्जं नरश्रेष्ठ करिष्यामि तप प्रियम् ।

शिरसा धारयिष्यामि शैलराजमुतामहम् ॥ ३

D11 G4 M4 निपीडित (D11 G4 °त) (for निपीडिताम्)
S1 D1 12 नैपुण्येण पीडिता —° Ñ: V B D10 13 M4
महीतल (for वसुमती) S1 Ñ: V B D1-3 5 7 9-13 राजा
(for राम) —° S1 Ñ: V B D1-3 5 7 9-13 उपावसत्
(S1 °गतम्, V1 D1 3 7 9 °वितात्, D2 °वसत्) M4 अविष्टत,
Cmg as in text (for उपासत) D4 4 6 T1 वत्सर समुपावसत्,
M3 समुपासत सप्ता नृप छे Ct समुपासतेत्यापे बहुवचनम्
समुपास्तेत्यर्थे । छे —After 1, S1 (m) N2 V B D10 11
13 14 T1 2 G M (M3 inf lin sec m) ins

913* ऊर्ध्वगुहिरालम्ब्य बाहुभक्षो निराश्रय ।

अचल ह्यागुगृह्णित्वा राक्षसिद्वनतः त्रित ।

[M3 transp 1 x and 2 —(1 1) B1 2 अवा° (for
निरालम्बो) S1 B1 2 °मक्षो (for बाहुभक्षो) M3 निराश्रय, M4
[5] नवाश्रय (for निराश्रय) —(1 2) V1 3 B1 4 D11 12 13
T1 2 G M अवल S1 निवृ (for शिखत्) M3 निराश्रय (for
राक्षसिद्वन) S1 उपावसत् Ñ: V1 अतवित, D12 T1 2 G1 2 4
M1-3 अरिदम (T1 G2 4 M1 3 °म, T2 °म [sic]), M4
अवाश्रयत् (for अर्धाश्रित)]

2 V1 om 2^{ad} —° Ñ: B2 D10 13 [5] तीते (for
पूर्णे) —° S1 Ñ: V2 4 B D1-3 5 7 9-13 सर्वदेव (for
सर्वलोक) M4 सर्वभूतपरि शिव —° Ñ: V B D10 13
M4 भगीरथमभाषत

3 ° Ñ: V2 4 B D10 13 प्रिय महत्, V1 प्रिय तव (by
transp) (for तव प्रियम्) —° N2 V1 3 B D10 11 13
पतनी, V4 निपतनी (hypermetric), Cg as in text (for
शिरसा) D2 धारयिष्ये M4 धारयिष्यामि शिरसा (by
transp) —° D1 °वेष्ट (for राज) D11 महत् (sic)
(for अहम्) Ñ: V B D10 13 दिवस्त्रि (V3 दिनात्रि [sic],
B2 देवीं त्रि) पथया नदीं (V4 °गामिनी), M4 पतनीं गगनाब्जदीं
—After 3 Ñ: V B D10 13 M4 ins S1 D1-3 5 7 9 11 13
ins after 4^{ad}

914* नतो हिमवत उन्नतपिच्छ मदेष्ट ।

निपतेत्यब्रवीद्गङ्गानामाभ्याकाशमा वदा ।

जटाकलाप विपुल विनिकीर्य समन्तत ।

बहुषोचनविस्तार शैलकन्दरसंक्रिमम् ।

[(1 1) S1 D1 3 5 7 9 12 त (D9 ग) त स दिव्यत त (D4
सत्) D1 12 त स हिमवत्पौर (for the prior half) S1 अनिरुद्ध
—(1 2) S1 D1 3 5 7 9 13 M4 पतत् D1 प्रवत (for निवत).
D1 पत तन्मिष्यब्रवीद्गङ्गा (hypermetric) (for the prior
half) B4 नगे (for तता) —(1 3) S1 D1-3 5 7 9 11 13 M4

ततो हैमवती ज्येष्ठा सर्गलोकनमस्कृता ।
तदा सातिमहद्रूपं कृत्वा वेगं च दुःसहम् ।
आकाशादपतद्राम शिवे शिवशिरस्युत ॥ ४
नैव सा निर्गमं लेभे जटामण्डलमोहिता ।
तत्रैवावधमदेवी संवत्सरगणान्वहन् ॥ ५

प्रति (D11 M4 विप्र) कीर्त्य, V3 विर्वीयं स (for विविकीर्द्य)
—(1 4) V4 पच (for बहु) B1 बहुशो जलसंभार (for
the prior half) V1 कुजर (for कन्दर) B4 शोभित
(for सज्जिमम्)]

On the other hand M4 (inf lin sec m) ins
after 3

915* उमापतेर्वच श्रुत्वा गङ्गा क्रोधममन्यता ।

4 For subst see 7 —^a) G2 M4 ज्येष्ठा (for ज्येष्ठा)
S1 D1 3 5 7 9 11 12 ततो हैमव (D2 'त्र [sic]) तीं ज्येष्ठा
—^b) S1 D1-3 5 7 9 11 12 नमस्कृता —After 4^{ab}, S1
D1-3 5 7 9 11 12 ins 914* —^c) G1 सातिमय रूप, G3
सा सुम^c (for सातिमहद्रूप) —^d) D4 T3 M2 3 रागा (for
राम) —^e) T3 [अ]ध, Cg k as in text (for [उ]त)
—After 4 Dt D4 5 14 S (except M4) all Cs ins.

916* अचिन्तयच्च सा देवी गङ्गा परमदुर्भरा ।
विशाम्यह हि पालाह्योतसा गृध्र शक्रम् ।
तस्यात्रलेपने शाखा ब्रह्मस्तु भगवान्द्र ।
प्रितोभाचयितुं बुद्धिं चक्रे त्रिनयनस्तदा ।
सा तस्मिन्पतिता पुण्या पुण्ये क्लृप्स्य मूर्धेति । [5]
हिमव प्रविसे राम जगन्मण्डलगङ्गरे ।
सा कथंविमर्ही गन्तु नाशक्रोद्यत्तमास्थिता ।

[(1 1) —For ins see below —(1 4) D14 T1 3
G1 3 4 M2 3 विप्रनयन् T3 G2 M1 तथा (for तदा) —(1 5)
D14 पतिता (sic) (for पतिता) G2 रौद्रस्य —(1 6) G4
रप्ये (for राम)]

—M4 ins 1 1 and 2 after 1 1 and 3 of 910* resp

917* मौढ्यान्महेश्वर देवं सर्वभूतनमस्कृतम् ।
शितकिण्ठो महानस्या मोक्षयिन्येवलेपनम् ।

5 Cf v1 4 and 7 —^a) Dt D3 जटामण्डलमेतत्, Cg
'मोहिता (as in text) —^b) G1 3 सा Ck.t as in text
(for [पू]व) D4 T3 G1 [अ]विभ्रमद्, G4 illeg all Cs
अवभ्रमद् (as in text) —After 5 Dt D4 5 14 T G
M1-3 (Cg k t comm on 1 2 only) ins.

918* रथी भगीरथो पीमान्त्वो वै गोपतिष्वेव ।
तामपश्यन्नुत्तर तप परममास्थित ।

[Except M4 all the above MSS om 1 1 —(1 2)
Dt D4 5 8 अचयन्, M4 अचि (for तप)]

अनेन तोषितश्चासीदत्यर्थं रघुनन्दन ।

विससर्ज ततो गङ्गां हरो विन्दुसरः प्रति ॥ ६

गगनाच्छंकरशिरस्ततो धरणिमागता ।

व्यसर्पत जलं तत्र तीक्ष्णशब्दपुरस्कृतम् ॥ ७

6 Cf v1 4 and 7 —^a) Dt D3 8 Ct स तेन, Cmg k
as in text (for अनेन) D14 T1 3 [अ]भूद्, M2 [अ]सी,
Cg k as in text (for [आ]सीद्) —^b) Dt D3 अचयत्,
M2 नचयं (for अचयं) —^c) G1 विसस, (damaged)
G4 damaged after ने in ^c up to विन्दु in ^d —After 6
Dt D4 5 14 S (except M4) Cg (Cm comm on 1 8
Ck t on 1 7-8) ins

919* नस्या विसृज्यमानाया सप्त क्षोतासि जशिरे ।
ह्लादिनी पात्रनी चैव नलिनी च तथैव च ।
तिस्र प्राचीं दिशं जग्मुर्गङ्गा शिवजला शुभा ।
सुचक्षुश्चैव सीता च सिन्धुश्चैव महानदी ।
तिस्रश्चैता दिशं जग्मुः प्रतीचीं तु दिशं शुभा । [5]
सप्तमी चाव्यगात्तासा भगीरथरथं तदा ।
भगीरथोऽपि रात्रिपेदिष्य स्यन्दनमस्थित ।
प्रायादग्रे महातेजा गङ्गा त चाप्यनुवज्जत् ।

[(1 2) T3 नदिनी (for नलिनी) M2 तु (for second च)
D14 T1 3 G2 4 M1 3 (after corr sec m) तथापरा (for
तथैव च) —(1 3) D4 गगा शिवजला शुभा T3 गगा शिवजला शुभा
(both sic) (for the post half) —(1 4) D4 सीता
(for सीता) D4 T3 G1 3 M2 शुभा (for सप्त) —(1 5)
D4 तु वा, D14 1 G2 4 M1-3 चैता (for चैता) D14 illeg
for सीचीं in प्रतीचीं M2 च (for तु) D4 14 S (except
M4) शुभेयका (for दिशं शुभा) —For ins see below
—(1 6) D4 14 S (except M4) भगीरथरथो नृप (for
the post half) —(1 7) = 21^d Dt T3 दिच (for
दिष्य) —(1 8) T3 गगा (for गङ्गा) D14 T3 [अ]नुवज्जत्,
G1 3 त गगा पृथगेनगात् (= 21^d) G2 M1 3 गगा त चाव्यगा
च्छेने (M4 'गादुर) (for the post half)]

—After 1 5 T3 G2 M1 3 (inf lin sec m) ins

920* तथैवालकनन्दा च विधुता लोकपावनी ।

[K (ed) चारिका नाम]

7^b) G1 3 आस्थिता, G2 M1 3 आश्रिता (for आगता)
S1 D1-3 5 7 9 11 12 ततश्च धर्णी गता (D3 'तत्), D12 ततश्च
धर्णीलत् —After 7^{ab}, S1 D1-3 5 7 9 11 12 ins 922^a
and read 7^c after 1 2 of 921^a —^d) S1 D1-3 5 7
9 11 12 उत्सर्ज (D3 om [hapl] second स) Dt D3
असर्पत (for व्यसर्पत) D14 यल (sic) (for जल) —^e)
G1-3 M1 सीमवेग (for तीक्ष्णशब्द) D2 3 7 9 G1 3 पुरसर्
Ck t cite ^a as in text. Cg गगनादिति तीक्ष्णशब्दे

ततो देवर्षिगन्धर्वा यक्षाः सिद्धगणास्तथा ।
व्यलोरुयन्त ते तत्र गगनाद्वां गतां तदा ॥ ८

विमानैर्नगराकारैर्हयैर्गजयैस्तथा ।
पारिप्लवगताश्चापि देवतास्तत्र निष्ठिताः ॥ ९

हेतुरयम् । — For 4-7. $\hat{S}_1 \hat{N}_2$ (\hat{N}_1 missing) V B
D1-3 5 7 9-13 M6 (\hat{S}_1 D1 3 5 7 9 11 13 for 4°-6) subst

missing) VB D10 is (after 9^{ad}) ins 1 r after 9 l
2 after 17^{ad} and 1 3-5 after 928*

921* तस्मिन्पथात् भगवान्द्रष्टुं देवतदी च्युता ।
 येनेन महता राम शिरस्थमिततेजस ।
 माक्रानागक्रामासाय धारयामास शकर ।
 तत्र सखस्तर पुण्यं वधान्तर परिमोहिता ।
 गङ्गा क्षिरक्षिते देवस्थ नि स्ता पोषायाहिनी । [5]
 तत प्रसाद्याम स पुनरेव भगीरथ ।
 गङ्गाया परिमोक्षार्थं महादेवमुमापातम् ।
 तस्याय वचनान्द्रष्टुं ससजं भगवर्दन ।
 जटामेकां समाक्षिप्य क्षीत सजनयन्स्थयम् ।
 क्षीतस्या तेन मुखात् गङ्गा त्रिपथगाग्निनी । [10]
 पावयन्ती जगद्गाम पुण्या देवतनी शुभा ।

923* स्वयं चानुजगमैना मया लोकपितामह ।
नागाश्च शीथयामसुमार्गं तस्या महौचस ।
जेपुदैवर्षयो जप्यं सिद्धाश्च परमर्षय ।
जगुश्च देवगन्यर्वा ननुतुश्चाप्सरोगणा ।
मुनिषा मुमुक्षुरे प्रहृदं जगदमुवत् । [5]

[(1 1) V४ तस्मात् D२ वि॒ (for च्युत्) — (1 2) V४ B४ D१० दिवस्य D२ दिरसा (for शिरसि) After 1 2 S२ D२-३ ४ ७ ११ १२ read 7^{cd} — N२ V B D२-१३ M२ om 1 3 — (1 3) D२ आभ्यान्व(सि) D७ ९ आभ्या॒ (for आसाप) — (1 4) S२ D२ १३ तत्, B४ अ॒व (for त॒व) N२ D२ १३ प्रमोदिता D२ ७ परिव्रज्या॒ (by transp) मो॒दिता (for the post half) — (1 5) S२ B४ D२-३ ७ १२ वि॒धुता, V२ D११ वि॒रु॒ध्ता, V२ वि॒रु॒ध्ता (sic) V४ B२ वि॒रु॒ध्ता D२ वि॒रु॒ध्ता, M२ वि॒रु॒ध्ता (for नि॒रु॒ध्ता) V४ [उ॒ग्र॒वा॒हि॒नी, D२ *गमि॒नी (for वै॒ग॒वा॒हि॒नी) — After 1 5 D२ ३ ७ ११ (D२ ११ १ only) ms 924* — D७ om 1 7-9 — (1 7) D२ १ प्र॒मो॒क्षा॒य॒ M२ सि॒ हि दे॒व्य॒ (for म॒हा॒दे॒व्य॒) — (1 8) V४ तस्य३ D२ तस्य३,

[(1 1) D₅ चात्र D₁₂ बात्र (for चातु) S₁ स्वय चात्राजानीनां,
 V₅ स्वय जगाम तत्राय, V₄ स्वयभूतजगानीना (for the prior
 half) S₁ ब्रह्म (for ब्रह्मा) V₅ वितामह (sic) — (1 2) D₁
 माश्व V₅ माश्वयामासुर, D₁ gloss रोये मय इति केवि वदन्
 प्व तावा वप्रिभूता V₁ रोषवा* (for रोषवामासुर) B₁ 3 B₂
 M₅ अश्व, B₁ 3 : D₁₀ 13 आय, D₉ तस्य (for तत्वा) V₅ न-
 मापय (sic) (for मायं तस्य) — (1 3) S₁ पन्, V₅
 B₂ D₁₀ रेपुर (for जेपुर) D₂ 7 दिय, D₉ 9 11 12 13
 (for जय) — S₁ D₁₂ om 1 4-5 — (1 5) S₂
 मुनिसत्त्वा, B₁ ० सिंहा (for मुनिसत्त्वा) V₃ व मुदिरे (sic).
 V₆ B₁ D₁₀ आशवान् (sic) B₂ 4 आश (B₄ ५ [sic] ५-
 D₁₃ आप व (for आशुव) D₁₁ काद नवदीसत्र (c) 12
 जह्वाद् जगदय* (for the post half) D₁ 3 7, ५-७-८
 मुदितो हृदयजगदयज्य]

—After 7 Dt D₄ 8 3 1 4 S (except M₆) ins D_{1-2,2,2,2}
(D_{2,1,1} 1 only) ins after 1 5 of 921*

924* मत्स्यकच्छपसवैश्च शिशुमारगणैर्नय।

ततो हैमवती ज्येष्ठा सर्गलोकरनमस्कृता ।
तदा सातिमहद्रूपं कृत्वा वेगं च दुःसहम् ।
आकाशदपतद्राम शिवे शिवशिरस्युत ॥ ४
नैव सा निर्गमं लेभे जटामण्डलमोहिता ।
तत्रैवावभ्रमदेवी संतत्सरगणान्नहून् ॥ ५

प्रवि (D11 M4 विप्र) कीर्त्य, V3 विरीयं स (for विनिकीर्त्य)
—(1 4) V4 पंच (for बहु) B1 बहुतो जलसभार (for
the prior half) V1 नुजर (for नन्दर) B4 शोभित
(for सञ्जितम्)]

On the other hand M4 (inf lin sec m) ins
after 3

915* उमापतेयं च शुवा गङ्गा क्रोधयमन्विता ।

4 For subst see 7 —^a) G2 M3 श्रेष्ठा (for ज्येष्ठा)
S1 D1 3 5 7 9 11 12 ततो हैमव (D2 'व [sic] तीं ज्येष्ठा
—^a) S1 D1 3 5 7 9 11 12 नमस्कृता —After 4^a, S1
D1 3 5 7 9 11 12 ins 914* —^a) G1 सातिमहद्रूपं, G3
सा सुमं (for सातिमहद्रूपं) —^a) D4 T3 M2 3 गंगा (for
राम) —^a) T3 [अ]थ, Cg k as in text (for [उ]त)
—After 4 Dt D4 6 8 14 S (except M4) all Cs ins

916* अचिन्तय च सा देवी गङ्गा परमदुर्धरा ।
विशाम्बुद्दि पाताल स्रोतसा गृह्य शकर्म ।
तस्यावलेपनं ज्ञात्वा कङ्कस्तु भगवान्धर ।
त्रिभोमावयितुं कुर्वि चक्रे त्रिनयनस्तदा ।
सा तस्मिन्पतिता पुण्या पुण्ये रुद्रस्य मूर्धनि । [5]
हिमवप्रतिसे राम जटामण्डलगङ्गरे ।
या कथंविन्मूर्ध्नी गन्तु नाशक्रीचलमास्थिता ।

[(1 1) —For ins see below —(1 4) D14 T1 3
G1 3 4 M2 3 विजयनस्, T3 G2 M1 तथा (for तदा) —(1 5)
D14 पतिता (sic) (for पतिता) G2 रौद्रत्व —(1 6) G4
रत्ये (for राम)]

—M9 ins 1 1 and 2 after 1 1 and 3 of 910* respay

917* मौढ्यान्महेश्वर देवं सर्वभूतवमस्कृतम् ।
शिविकण्ठो महानरया मौड्यापिन्येऽवलपनम् ।

5 Cf v 1 4 and 7 —^a) Dt D2 जटामण्डलमत, Cg
मोहिता (as in text) —^a) G1 3 सा, Ckt as in text
(for [ए]व) D4 T3 G1 [अ]विभ्रमद्, G4 illeg all Cs
अवभ्रमद् (as in text) —After 5, Dt D4 6 8 14 T G
M1 3 (Cg k t comm on 1 2 only) ins

918* रथी भगीरथो धीमान्तवो ये गोपतिध्वजे ।
तामपश्यन्नुनस्तत्र तप परममास्थित ।

[Except M9 all the above MSS om 1 1 —(1 2)
Dt D4 6 8 अपश्यद्, M9 अवि (for तत्र)]

अनेन तोषितश्चासीदत्यर्थं रघुनन्दन ।

विससर्ज ततो गङ्गां हरो विन्दुसरः प्रति ॥ ६

गगनाच्छंखरशिरस्ततो धरणिमागता ।

व्यसर्पत जलं तत्र तीव्रशब्दपुरस्कृतम् ॥ ७

6 Cf v 1 4 and 7 —^a) Dt D2 3 Ct स तेन, Cm g k
as in text (for अनेन) D14 T1 2 [अ]भूद्, M2 [अ]सौ,
Cg k as in text (for [आ]सीद्) —^a) Dt D2 आस्थित,
M2 नचयं (for अचयं) —^a) G1 विससर्ज (damaged)
G4 damaged after 5 in ^a up to विन्दु in^a —After 6
Dt D4 6 8 14 S (except M4) Cg (Cm comm on L 8
Ckt on 1 7-8) ins

919* तस्या विचूज्यमानाया सप्त स्रोतासि जङ्घिरे ।
ह्लादिनी पात्रनी चैव नलिनी च तथैव च ।
तिष्ठ प्राचीं दिश जग्मुर्गङ्गा शिवजला शुभा ।
सुचक्षुर्धैव सीता च सिन्धुधैव महानदी ।
तिष्ठश्चेता दिशं जग्मु प्रतीचीं तु दिश शुभा । [5]
सहस्री चान्वागतासा भगीरथरथे तदा ।
भगीरथोऽपि रात्र पॅदिष्व स्थन्दमानस्थित ।
प्रायाद्ये महातेजा गङ्गा त चाप्यनुवजत् ।

[(1 2) T3 नन्दिनी (for नलिनी) M2 तु (for second च)
D14 T1 2 G2 M1 3 (after corr sec m) तथापरा (for
तथैव च) —(1 3) D4 गगा शिवजला शुभा T3 गगा शिवजला शुभा
(both sic) (for the post half) —(1 4) D4 सीता
(for सीता) D4 T3 G1 3 M2 शुभा (for महा) —(1 5)
D4 तु ता D14 1 G2 4 M1 3 चेता (for चैता) D14 illeg
for सीचीं in प्रतीचीं M2 च (for तु) D4 14 S (except
M4) शुभोक्ता (for दिश शुभा) —For ins see below
—(1 6) D4 14 S (except M4) भगीरथमयो नृप (for
the post half) —(1 7) = 21^{ab} Dt T3 दिव्य (for
दिव्य) —(1 8) T3 गगां (for गङ्गा) D14 T3 [अ]नुवजत्,
G1 3 त गगा पृथगेन्यत् (= 21^a) G2 M1 3 गगा न चान्वाग
च्छने (M9 'गाङ्गा' (for the post half)]

—After 1 5 T3 G2 M1 3 (inf lin sec m) ins

920* तथैवालकनन्दा च विधृता लोकपावनी ।

[K (ed) चालिका नाम]

7 ^a) G1 3 आस्थिता, G2 M1 3 आश्रिता (for आगता)
S1 D1 3 5 7 9 12 तत्रश्च धरणीं गता (D2 'ता), D11 तत्रश्च
धरणीत —After 7^a, S1 D1 3 5 7 9 11 12 ins 922^a
and read 7^a after 1 2 of 921^a —^a) S1 D1 3 5 7
9 11 12 उत्ससर्जे (D2 om [hapl] second s) Dt D2 3
असर्पत (for व्यसर्पत) D14 दल (sic) (for जल) —^a)
G1 3 M1 सीतवेग (for तीव्रशब्द) D2 3 7 9 G1 3 गुरसरं
Ckt cite ^a as in text. Cg गगनादिति । तीव्रशब्दे

ततो देवर्षिगन्धर्वा यक्षाः सिद्धगणास्तथा ।
व्यलोकयन्त ते तत्र गगनाद्गां गतां तदा ॥ ८

विमानैर्नगराकारैर्हयैर्गजवैस्तथा ।
पारिप्लवगताश्चापि देवतास्तत्र विष्टिताः ॥ ९

हेतुरयम् । — For 4-7, Śi N̄2 (N̄1 missing) V B D1-3 5 7 9-13 M̄s (Śi D1-3 5 7 9 11 12 for 4^c-6) subst

921* तस्मिन्पथाव गगनाद्गता देवर्षी च्युता ।
वेगेन महता राम शिरस्यमिततेजस ।
आकाशगङ्गामासाद्य धारयामास शक्रः ।
तत्र सवत्सर पूर्णं यन्त्राम परिमोहिता । [5]
गङ्गा शिरसि देवस्य नि च्युता वेगवाहिनी ।
ततः प्रसाद्यामास पुनरेव भगीरथ ।
गङ्गाया परिमोक्षार्थं महादेवमुमापतितम् ।
तस्याय वचनाद्गङ्गामु ससर्पेन भगान् ।
जटामेका समाक्षिप्य द्यौत सजयन्स्त्वयम् ।
स्रोतसा तेन सुखाय गङ्गा त्रिपथग मीनी । [10]
पावयन्ती जगद्गाम पुण्या देवर्षी शुभा ।

[(1 1) Ds तन्मात्, D2 शिव (for च्युता) — (1 2) V̄s B̄s D10 शिरस्य, D2 शिरसा (for शिरसि) After 1 2 Śi D1-3 5 7 9 11 12 read 7^cd — N̄s V B D10 13 M̄s om 1 3 — (1 3) Ds आभास्य (sic) D7 9 आभास्य (for आभास) — (1 4) Śi Ds 12 तत, B̄s अत्र (for तत्र) N̄s Ds 13 परमोहिता D7 परिवन्त्राम (by transp) मोहिता (for the post half) — (1 5) Śi B̄s Ds 2 7 9 12 विष्टिता, V̄s D11 विस्तृता, V2 विष्टृता (sic) V̄s B̄s विष्टृता Ds विष्टृता, M̄s विष्टृता (for विष्टृता) V̄s [उ] जगद्गतिना, D1 °गमिनी (for वेगवाहिनी) — After 1 5 D1-3 7 9 11 (D2 11 1 1 only) ins 924* — D7 om 1 7-9 — (1 7) D1 Ds परमोक्षार्थं M̄s स हि देवर्ष (for महादेवर्ष) — (1 8) V̄s तस्याय, Ds तस्याय, M̄s तस्याय (for तस्याय) Śi D2 3 5 9 12 जगत्सि (D2 3 °क्ष) हा, V2 D11 महेश्वर, V2 चन्द्रार्द्र, B̄s तदा हर, D1 गगान (marg gloss गगानरस्य अर्द्रं रहः (for गगान) — (1 9) V̄s कीम् (sic) (for जटाम्) Śi Ds 11 12 समाक्षिप्य, D2 9 °विष्य (for समाक्षिप्य) Ds सज्जन् V2 सज, V̄s मम D11 त्रय (for स्वयम्) V2 निर्वमन्त्रार्थं द्यौत शिव (hypermetric) (for the post half) — (1 10) Śi V̄s B̄s D1-3 5 7 9 11 12 M̄s तद्वत् (V̄s B̄s D11 ममा गता) त्रिपथगा नदी (for the post. half) — (1 11) Śi V̄s B̄s D1 5 11 12 प्रावयन्ती, V̄s प्रावयम्, Ds °वदी (for प्रावयन्ती) D2 जटार्द्र (for जटार्द्र) Śi Ds 12 धाम (for राम) M̄s गता (for पुण्या)]
— N̄s B̄s D10 M̄s cont Śi D1-3 5 7 9 11 12 ins. after 7^cd

922* ता प्रप्लवगमुपिगणा शिरसा जघ्नुस्तदा ।
सेन्द्रे सुरगणैः साद्यै पूजयन्तो महावदीम् ।

[(1 1) Śi Ds 2 5 11 12 प्रप्लवगम्, Ds प्रप्लवा (for प्रप्लवा) N̄s B̄s D10 तदा (for तदा) — (1 2) D1 पूजयिता]
— Śi D1-3 5 7 9 11 (1 2 after 17^cd and 1 5 after 928^c) 11 M̄s (second time) cont, while N̄s (N̄s

missing) V B D10 13 (after 9^cd) ins 1 1 after 9 1 2 after 17^cd and 1 3-5 after 928^c

923* स्वयं चातुजगामैना ब्रह्मा लोकपितामह ।
मागाश्च शोधयामासुर्मार्गं तस्या महाजस ।
जेषुर्देवर्षयो जप्य सिद्धाश्च परमर्षय ।
जगुश्च देवगन्धर्वा नम्रुश्चाप्सरोगणा । [5]
मुनिसया मुमुदिरे प्रह्लादं जगदासुवत् ।

[(1 1) Ds वाच, D13 वाच (for चातु) Śi स्वयं चात्रजगामैता, V̄s स्वयं जगाम तदाय, V̄s स्वयंभूताजगामैता (for the prior half) Śi ब्रह्मा (for ब्रह्मा) V2 पितामह (sic) — (1 2) D1 नगाश्च V̄s नापयामासुर्, D1 (gloss रोषो वप इति केपि पवता एव तस्या वशीभूता) 9 रोषय° (for शोधयामासुर्) V1 3 B̄s M̄s जस्या, B̄s 3 4 D10 13 त्रय, Ds तस्य (for तस्या) V̄s नाग मानस्य (sic) (for मार्गं तस्या) — (1 3) Śi तन्म् V̄s B̄s D12 जेषुर् (for जेषुर्) D2 7 शिव Ds 9 11 12 जप्य (for जप्य) — Śi Ds 12 om 1 4-5 — (1 5) V2 मुनिसया, B̄s °सिद्धा (for मुनिसया) V1 च मुदिरे (sic) V̄s B̄s D10 आसुर्मार् (sic), B̄s 2 4 आस (B̄s °सु [sic]) एव, D13 आर च (for आसुवत्) D11 द्वाद् जपदीप्तवत् (sic) M̄s जगद् जगदयम् (for the post half) D1-3 7 9 मुनिसंयक्ष मुदिरो ह्यारवणदयम्]

— After 7 Dt Ds 6 9 14 S (except M̄s) ins D1-3 7 9 11 (D1 11 1 only) ins after 1 5 of 921*

924* मन्त्यकच्छपसचैश्च शिशुमारणैस्तथा ।
पतति पतितैश्चान्यैर्गरोचत वधुषरा ।

[(1 1) D11 Gs (before corr) शिशुमारै (for शिशुमार) D1-3 7 11 औक्ष (for औक्ष) Ds Ts तदा (for तथा) — (1 2) Dt Ds 8 प [for (for औक्ष) Dt D1 8 वधुषरा]

8 M̄s om 8-11 Ds 11 om 8^cd D1 transp 8^cd and 8^cd — Śi Ds 12 जगु (Ds °गु)श्च देवर्षयर्षा, Ds 7 G1 °गपद, M̄s ततो देवा सप्तर्षा — Dt D1 4 6 9 Ts M̄s यक्ष (for यक्षा) B̄s सिद्धा (for सिद्ध) B̄s तदा (for तथा) — N̄s V B D10 13 om 8^cd — G1 M̄s ता (for ते) Śi D1 3 5 7 9 11 12 त्वाहुज (D10 °ह) ए (Ds पा) तिता गागा, Ts स्वलोकायन्ततो तत्र — D2 G1 गताम् (for गता) Śi D1 3 5 7 9 12 तथा, M̄s नदी (for तदा) — After 8, Ds 13 श्रीमते रामाजुवाय नम

9 M̄s om 9 (cf v1 8) — Śi D1-3 5 7 9 11 12 गार्देहैर्देहै, N̄s V B D10 13 विविधै राम, D1 12 Ts G1 Cm गगताम्, Cg as in text (for गगताकारैर्) — V̄s नर, Gs M̄s नाग, Ck as in text (for गज) Dt Ds 8 G2 तदा (for तथा) G4 गार्देहैर्वैस्तदा — After 9^cd, D13 ins 1 1 of 923* — D13 om 9^cd — Śi V̄s B̄s D1 4 Ds 8

तदद्भुततमं लोके गङ्गापतनमुत्तमम् ।

दिदृक्षो देवगणाः समेयुरमितौजसः ॥ १०

संपतद्भिः सुरगणैस्तेषां चाभरणौजसा ।

शतादित्यमित्राभाति गगनं गततोयदम् ॥ ११

शिंशुमारोस्मरणैर्मनैरपि च चञ्चलैः ।

त्रियुद्धिरिव विक्षिप्तैराकाशमभनत्तदा ॥ १२

परिह्व, D₁ 2 °ह्व, D₁₀ तपरिह्व (sic) D₁₁ परिह्वुत (for परिह्व) S₁ D₁ 3 5 7 9 11 -गताश्चान्या (S₁ D₁ 9 °न्ये) B₁ गनैश्च, D₄ -गताश्चापि (sic) (for -गताश्चापि) C₁ V परिह्वगता, Cr m k t परिह्वगता, C₂ परिह्व गते C₁ —^a) V₂ B₁ T₁ (also within bracket) G₁ 3 चापि (G₁ °नि) (for तत्र) S₁ D₁ 3 5 7 9 11 12 विह्विता, B₁ वेहिता B₁ [अ] विह्विता, D₂ T₂ निह्विता, G₁-3 M₁ 3 (sic m) विस्मिता, C₂ as in text (for विह्विता) —After 9 N₂ V B D₁₀ read 1 1 of 923*

10 M₁ om 10 (cf v 1 8) —^a) B₄ G₁ 3 त, C₂ as in text (for तद्) S₁ N₂ B₂ Dt D₁ 8 9 °स्मिन्, B₃ °मय, D₂ °ममूल (for अद्भुततमं) V₁ लोक (for लोक) —^b) Dt D₁ 8 गगानतरम्, D₁₂ गगानभनम् V₁ उचम (for उचमम्) —^c) S₁ N₂ V₂ -B Dt D₁ 3 5 7 9 11 G₁ 3 समीयुर V₂ अभितौजस (hypermetric) D₂ °स, D₁₄ °सा, C₂ h as in text (for अभितौजस)

11 M₁ om 11 (cf v 1 8) D₂ transp 11 and 12 —^b) S₁ V₁ B₁ D₂ 5 7 9 11 M₂ om च S₁ D₁ आभरणौजसा (sic), B₁ आभरणनले In place of ^b Dt erroneously reads 12^b D₁₂ मेधापादासमोजसा —^c) V₁ समादित्यम् S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 9 11 12 [आ] स्तीत्तद् D₁ 13 V₂ °श्च, V₂ 4 °श्च, C₂ as in text (for [आ] भारि) D₁₁ शतादित्यनिर्भ स्वासीर, D₁₂ शतादित्यमेवा र्हीत् (corrupt) —^d) V₂ दात (for दात) —After 11, S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 9 11 12 read 14-15*

12 D₂ transp 11 and 12 —^a) N₂ V B D₁ 3 5 7 9 11 सिपुमार —^b) V₂ मयैर, B₁ *र (for मीरैर) M₁ om च (submetric) D₁₁ मुपचले D₁₂ वयैर (sic) T₂ निमनैरिव चंचरी —After 12^a, D₂ 7 ins

925° शोभमना भग(D₂ °*) वर्णा द्रुते प्रविषी वदा ।

—^a) V₁ D₁ M₁ C₂ विहितम्, D₁₂ °विहितैः T₂ G₁ 3 विहितैर, C₁ k t as in text (for विहितैर) —^b) S₁ N₂ V₁ 3 B₁ 3 D₁ 10-12 वृत्ता V₂ B₂ D₂ 1 2 द्रुते, D₁ एतं D₁ मार्य D₁₂ द्रुतं (for वदा)

13 °) S (except T₂) पौर्णैः C₁ m^a as in text B₁ after corr as in text) सन्निवेशी, D₁ (gloss)

पाण्डुरैः सलिलोत्पीडैः कीर्यमाणैः सहस्रधा ।

शारदाभ्रैरिवाकीर्णं गगनं हंसतंष्ट्रैः ॥ १३

कचिद्भुततरं याति कुटिलं कचिदायतम् ।

निनतं कचिदुद्धूतं कचिद्याति शनैः शनैः ॥ १४

सलिलेनैव सलिलं कचिदभ्याहतं पुनः ।

मुहुरुर्ध्वपथं गत्वा पपात वसुधां पुनः ॥ १५

केन, D₂ 7 °चारे, D₁₁ °है शीतै, D₁₂ °त्पातै, all Cs as in text (for सलिलोत्पीड) —^a) S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 9 11 की (V₂ D₁ 3 7 12 का) र्यमाणं, C₁ m g k कीर्यमाणै (as in text) G₂ 4 M₁ 3 सहस्रधा (G₄ °थ) —^b) M₂ [आ] भारि, C₁ m g as in text C₂ k [आ] कीर्ण (for [आ] कीर्ण) S₁ V₂ B₁ D₁ 3 5 7 9 11 12 दारचुद्धूत (V₂ B₁ D₁ 11 12 °श्च) मिवाभाति (D₂ °कीर्ण), N₂ V₂ 4 B₁ 3 D₁₀ शारदभ्र (V₁ B₁ °चद्) मिवाभाति, V₂ D₁₂ शारदाभा (D₁₂ °दुषा [sic]) मिवाभाति, M₂ शारदाभ्रमिवाभाति —^c) N₂ B₂ 4 D₂ 12 हसतिपृष्ठै, all Cs °सपृष्ठै (as in text)

14 S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 9 11 12 read 14-15^a after 11 —^b) S₁ N₂ V B D₁ 10-12 प्रायात्, D₂ T₂ याति; D₂ यायात् (for याति) —^c) N₂ B₂ D₁₀ 12 चावतं वचित् (D₁₂ महत्) —^d) S₁ D₁ 11 12 विनयं, V₂ 4 B₁ 3 D₁ 3 7 9 11 T₂ G₂ M₁ 4 विवत, V₂ विवत, D₂ विनतं, C₁ m g t विनतं (as in text) S₁ D₁ 11 12 उद्धूत, N₂ V₂ 3 B D₁ D₁ 3 4 7 10 T₂ C₁ m g उद्धूत, V₂ अन्वृत्त, D₂ अश्रुतं; C₂ उद्धूत, Ct as in text (for उद्धूतं) V₁ विनतं कुचितं एतं —^e) S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 9 11 12 M₁ दारै (B₁ समै) रपि (D₁₁ °*) पुन (D₁₂ पुन पुन [sic]) कचित् (S₁ पुन), D₂ दान शनैरिव पुन वचित् (hypermetric)

15 S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 9 11 12 read 14-15^a after 11 —^b) B₂ सलिलैः सलिलैरेव (by transp) —^c) S₁ D₁ 11 12 अभ्या (D₁₂ °भ्य) दहत्; N₂ V B D₁ 12 अभ्या (B₁ D₁₀ °भ्य, B₂ °प्या) वपीत्, G₂ °गतं, C₂ as in text (for अभ्याहतं) —After 15^a, S₁ D₁ 3 5 7 9 11 (repeats after 930*) 12 ins. N₂ V B D₁ 12 M₁ ins. after 930*

926° स्ववेगोद्गमितत्वा पेनमाचारनयदा ।

महान्वायवर्षा महावेगमयाग्नि ।

[(1 1) N₂ V₁ B₁ G₁ (for स्व) S₁ D₁ 2 3 7 9 11 (first time) 12 एव (D₂ m D₁₁ गु) वेगत् (D₁ 1 7 9 °ज्ञ) विनय, V₂ 4 G₁ (V₂ 4 7) वेगत्, अत्रय (for the prior half) N₂ P₂ (m also as above and (m) D₁₀ 12 एव T₂ D₁₂ एव [sic] (for एव) V₂ 4 B₁ 3 (m also) [म] र्वाग्नि —(1 2) B₁ अत्रय मयाग्नि D₁ अत्रय मयाग्नि D₂ अत्रय मयाग्नि (hypermetric) Dt (first time) अत्रय

तच्छंकरशिरोभ्रष्टं भूमितले पुनः ।
व्यरोचत तदा तोयं निर्मलं गतकल्मषम् ॥ १६
तत्रपिगणगन्धर्वा वसुधातलमासिनः ।
भवाङ्गपतितं तोयं पवित्रमिति पस्पृशुः ॥ १७
शापात्प्रपतिता ये च गगनाद्वसुधातलम् ।
कृत्वा तत्राभियेको ते बभूवुर्गतकल्मषाः ॥ १८

नदी (for अलावर्तवती) S₁ D₁ 3 5 7 9 11 (first time) 12
येन (for वेग) V₁ 2 4 B₁ प्रमायिनी V₃ D₁ प्रवर्तिनी (for
भवाङ्गिनी)]

Thereafter N₂ V B D₁₀ 11 (after 926* r) 13 M₂
read 931* —°) N₂ V₃ B₃ 6 D₁₀ 13 पुनर, V₂ स्वर्गाद्
G₂ 3 M₂ कविद् (for सुहृद्) S₁ N₂ V B D₁ 3 7 9 11 13
ऊर्ध्वमधो (V₁ 2 4 पथा, V₃ 6 D₁ 3 7 9 10 मधो), D₄ 6 गति,
D₁₄ T₁ 2 G₄ सुख (for ऊर्ध्वपथ) V₃ 6 गंगा (for गत्वा)
D₅ सुहृत् स्वमयो भूया, D₁₂ सुहृत्तौर्ध्वमयो गत्वा C₁
ऊर्ध्वपथगमने सलिलयोरभ्याघातो निमित्तम्] So also C₂ C₃
—°) D₁₄ T₁ 2 G₄ तत् (for पुन) S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7
9 13 धर्तृमतेले (V₁ 2 4 ल), D₄ T₂ G₁ 3 M₂ वसुधातल (M₂
ले) —After 15 M₂ ins

927* नागलोकापदिभ्रष्टा ह्यत्रसित्वेन्दुमण्डलम् ।

16 T₁ om 16^{ad} —°) S₁ तज ह्र, B₄ तनु शिव,
Cm g as in text (for तच्छकर) —°) S₁ N₂ V₂ 4
B D₁ 3 5 7 9 13 M₂ गत, V₁ गत, D₅ om (hapl)
M₂ भ्रात (for भ्रष्ट) N₂ V B D₁ 3 7 9 13 M₂ भूमितल
पथ (D₁ 3 5 7 9 11 13 पुन) —N₂ V B₁ 3 D₁₀ 13 om
16^{ad} —°) S₁ B₄ D₁ 3 5 7 9 11 13 विरराज, M₂ विसर्प
(for व्यरोचत) B₄ नदी, D₂ तम्, M₂ तथा (for तदा)
—°) T₂ मिमले (for निम्ले) D₁ बल्लुख (sic) D₂
तोयद् (for कल्मषम्)

17 °) Cm g तत्र (as in text) S₁ (after corr as
in text) महा सगन, N₂ V B D₁ 3 5 7 9 13 प्रज्ञा सगन,
D₁₄ T₁ 2 G₄ देवपि (for तत्रपिगण) —After 17^{ad} N₂
V B D₁₀ 11 13 ins 1 2 of 923* —D₄ reads from t
in ° up to ° in marg —°) S₁ (m also as in text)
N₂ V B D₂ 3 5 7 9 13 सग (D₂ °*) ते तोये (B₁ °तोये च)
D₁ गथासगते तोये —°) Cm g 1 पस्पृशु (as in text)
S₁ D₁ 3 5 7 9 11 13 पवित्रवापु (D₂ 11 °सु, D₃ 7 9 °स्य)
पुजिते, N₂ V₁ 2 4 B D₁₀ 13 पवित्रे तत्र पुजिते, V₂ पाविते
तत्रपुजिते

18 S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 9 13 transp 18^{ad} and
18^{ad} —°) D₃ 7 G₂ M₂ प्रतिगता (for प्रपतिता) S₁
D₁ 3 5 7 9 13 तु (for च) D₂ शापापृषति तोयं तु —°)
N₂ V B D₁₀ 13 कृत्वाभियेको ते सर्वे —°) D₁ कल्मषा
(sic), M₂ (after corr inf lin as in text) तत्, M₂
°किंविषा, Cm t as in text (for गतकल्मषा)

भूतपापाः पुनस्तेन तोयेनाथ सुभास्वता ।
पुनराकाशमाविश्य स्वाँल्लोकान्प्रतिपेदिरे ॥ १९
सुमुदे सुदितो लोकस्तेन तोयेन भास्वता ।
कृताभियेको गङ्गायां बभूव विगतकल्मः ॥ २०
भगीरथोऽपि राजर्षिर्दिव्यं स्पन्दनमास्थितः ।
प्रायादग्रे महातेजास्तं गङ्गां पृथतोऽन्वगात् ॥ २१

19 °) D₁ पुरस्, M₂ तत्स् (for पुनस्) —°) D₂
M₂ तोयेन च (M₂ °नैव) (for तोयेनाथ) Dt D₅ 8 सुभा
न्विता, T₂ सुखान्विता (for सुभास्वता) G₁ 3 4 तोयना
देन (G₄ येनायुत) भास्वता; G₂ M₂ 4 गङ्गातोयेन भास्वता
(M₂ देहिन) —S₁ reads 19°-20 in marg —°) S₁
**न (for लोकाद्) G₁ 3 लोकान्त्वान् (by transp)
—For 19 N₂ V B D₁ 3 5 7 9 13 subst while S₁
subst for 19^{ad}

928* पूतामान पुनस्तेन सलिलेन दिव गता ।

[V₂ B₁ पुनस्तले, V₄ तत्, D₁ पुनस्तले, D₁₁ °तु D₁₃ °च
(for पुनस्तेन) B₄ पथा (for गता)]

—Thereafter N₂ V B D₁₀ 13 ins 1 3-5 D₁₁ 1 5 of
923*

20 D₁ 3 5 7 9 12 om S₁ reads in marg 20 (for
S₁ cf v 1 19) —°) M₂ सुमुदे (for सुमुदे) G₁ 3
M₂ च सतो, all G₂ (except C₂) as in text (for सुदितो).
N₂ V B D₁₀ 11 13 त्रयोपि लोका सुदित गङ्गातरणे तदा
C₂ C₃ अत्र पूर्वसुदितो लोक तदानीं सुमुदे । मोदानिशय-
प्रदर्शनाय उभयपदप्रयोग । C₂ —N₂ V B D₁₀ 11 13 om
20^{ad} —°) M₂ कृताभियेक गङ्गाया —°) M₂ मिमले (for
बभूव) Dt D₅ 8 T₂ M₂ गतकल्मष, C₂ g as in text (for
विगतकल्मष)

21 °) Dt D₅ 8 T₂ दि (for 5पि) —°) D₁₂
आश्रित (for आश्रित) S₁ D₁ 3 5 7 9 11 13 दिव्यमारुह वै
रथे —After 21^{ad} B₂ ins

929* पूजितो विविधैर्लङ्कैर्गङ्गायनकर्मणा ।

—°) V₂ पयावग्रे Dt D₅ 8 राजस् (for तेनास्) M₂ ययौ
प्रदर्शयन्मार्ग —°) B₁ 2 D₃ 13 M₂ पृष्ठ (B₁ परि[sic])
तोन्वयात् —After 21 N₂ V B D₁₁ 11 13 M₂ ins

930* महातद्वर्द्धयती प्रवृत्त्यन्तीव रावय ।

[V₂ महातत्प्राप्तवती (for the prior half) V₂ सुवृत्तीव
(submetric)]

—Thereafter read (D₁₁ twice) 926* Then all
cont

931* प्रययौ विरहस्तीव भगीरथरथानुया ।

[V₄ विहसती D₁₂ च (for [व]) B₁ D₁₁ 13 M₂ पथा (M₂
°थानुया)]

देवाः सर्षिगणाः सर्पे दैत्यदानराक्षसाः ।
गन्धर्वयक्षप्रगराः सर्किनरमहोरगाः ॥ २२
सर्माश्वाप्सरसो राम भगीरथरथानुगाः ।

गङ्गामन्वगमन्त्रीताः सर्पे जलचराश्च ये ॥ २३
यतो भगीरथो राजा ततो गङ्गा यशस्विनी ।
जगाम सरिता श्रेष्ठा सर्वपापनिनाशिनी ॥ २४

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे द्वित्रिंशः सर्गः ॥ ४२ ॥

22 V₃ om 22-23^b —^b) T₂ -रक्षसा G₂ दैत्यराक्षस
दानवा (by transp) —^c) V₂ गन्धर्वयक्षसिद्धौवा, D₁₂
गन्धर्वा यक्ष प्रवर —^d) S₁ गगामनु महोरगा —For 22
M₂ subst

932* देवा सिद्धर्षयश्चैना सर्किनरमहोरगा ।
सदैत्यदानवगणा सहस्रिणि मृगपथिनि ।

23 V₃ om 23^{ab} (cf v. 1 22) —^a) V₄ D₂ :
T₂ G₁ : सर्षिगण (for सर्षिगण) V₁ सवाप्सरोगणा G₁ नाम
(for राम) —^b) D₁ : M₂ C₂ -र(D₂ प)थानुगा, D₁₁
M₂ -यथा(M₂ द्वा)नुगा, C₂ t -रथानुगा (as in text)
—^c) V₁ D₁₂ गगामनुगमन्त्रीता, V₂ : B₁ : गंगानुगमन
(V₃ देव)क्षीना V₄ गगदेवी मन म्रिता —^d) V₄ D₂
जलधराश्च —For 23^{cd} M₂ subst, while B₁ ins
after 23

933* गंगामनुययुस्तत्र (B₁ भिययुस्ते च)सर्वाश्च सरित शुभा ।
24 —^a) S₁ D₁ : तथा V₃ M₂ ततो, C₂ k t as in text
(for यतो) V₄ भगीरथो यतो (by transp) V₁ यातो B₁
गच्छेत् (for रात्रा) —M₂ om. from 24^a up to I 43
x^a —^b) S₁ D₁ तथा V₄ D₂ तत्र, C₂ k t (implied)
as in text (for ततो) V₄ सतिद्वरा (for यशस्विनी)
—^c) S₁ N₂ V B D₁ : 3.7.10-12 नरसाङ्ग (for सरिता
श्रेष्ठा) D₂ D₂ : G₂ M₁ प्रणाशिनी (for विनाशिनी)
S₁ N₂ V B D₁ : 3.7.10-12 सर्वलोका (B₁ देव)नमस्कृता
D₁₂ जगाम नरसाङ्गमय धोवनमस्कृता —After 24 S₁ (sec
m on an additional fol) D₂ D₂ : 3.7.14 T G M₁ :
C₂ k t (Cv r comm onl 9 only Cm onl 3-9) ins

934* ततो हि धजमानस्य जहोत्प्लुतकर्मण ।
गङ्गा संज्ञावयामास यज्ञात् महात्मन ।
तस्यात्रलेपेन ज्ञात्वा मुदो जहस्तु राघव ।
अभिषक्तु जलं सर्वं गङ्गाया परमाद्भुतम् ।
ततो देवा सगन्धवा क्रपयश्च मुनिस्मिता । [5]
पूजयन्ति महात्मानं जह्नुं पुरुषसत्तमम् ।
गङ्गां चापि मयति क्व दृष्टिपुत्रे महात्मन ।
तत्सुष्टो महातेजा शोभायामसृजत्पुन ।
तत्कामाद्भुतम् गङ्गा शोभ्यते ज प्रीति च ।
जगाम च पुनर्गङ्गा भगीरथरथानुगा । [10]
सागरं चापि संसाधा सा सरिप्रवरा तदा ।
रमात्तनुपागच्छति यदर्थं तस्य कर्मण ।
भगीरथो हि राजर्षिर्गङ्गां न दाय यद्यत ।
नितामहात्मनस्तृणानवश्योत्तयेतन ।

अथ तद्वत्सना राक्षो गङ्गासलिलमुत्तमम् । [15]

ज्ञावय पूतपाप्मान स्वर्गं प्राप्ता रघुत्तम ।

[(1 1) T₂ वा (for हि) —(1 3) D₂ T₂ G₁ : राजा
D₁₂ T₂ : G₂ यन्वा (for जह्नुः) S₁ स D₂ D₂ : च G₂ [अ]
थ (for तु) C₂ Cm तस्या इति । C₂ तस्या इति । वलेपन गवैम् ।
Ct तस्या अवलेपन गवमिलने । C₂ —(1 4) S₁ G₁ : तज्ज्व D₁₂
T G₂ च^a G₂ M₁ : सलिल (for तु जव) —(1 5) D₂ T₂
G₁ : M₁ च (for स) G₂ M₁ मुनयश्च (for क्रपयश्च) —(1
6) S₁ om जह्नु —(1 7) G₂ M₁ C₂ p [अ]तु (for [अ]
पि) G₂ दृष्टिपुत्र —For ins see below —(1 8) D₂ M₂
महाराज (for देव) G₂ M₁ व्यसृजत् S₁ D₂ D₂ प्रभु
(for पुन) —For ins see below —(1 11) G₁ : विवेश
सागर चापि (for the prior half) —For ins see below
—(1 14) S₁ D₂ D₂ : नतयेतन (S₁ नान्) D₂ : G₂
M₁ : चेतसः (for दीनयेतन) —(1 15) D₁₂ T₂ : G₂ : M₁ :
तत् M₂ प [तद] (for तद) —(1 16) D₂ : ज्ञावयेत् T₂
पूतपाप्मानो M₂ पूत^a (for पूतपाप्मान) M₂ अभ्यर्षिचलनस्तेन
(for the prior half)]
—After 1 7 M₂ ins

935* भगीरथोऽपि राजर्षिस्तुष्टान द्वित्रिंशत्तमम् ।

—After 1 8 G₂ M₁ : (inf li : sec m) ins

936* विमृश्य गङ्गां जह्नुश्च ज्ञात्वा प्राप्त भगीरथम् ।

पूजयित्वा मुनिरय यज्ञात्पूजयामगम् ।

[(1 1) M₂ राजैर् T₂ : (lacuna) (for जह्नुः ज्ञात्वा)

—(1 2) M₂ कपायार्थं (for मुनिरय)]

—After the prior half of 1 13 G₁ : M₁ ins.

937* दिश्यं स्वन्दनमास्थित ।

दितं प्रागुत्तरं प्रायात्

—After 934* G₂ M₁ cont

938* ततस्तु गङ्गां प्रतिलम्ब्य राजा

दिलीपमुनुरंगनाथ संकरात् ।

हृष्टोऽप्यपानु तूपाच जहो

संसाधयामास रितामहात्मन ।

Colophon N₂ V B D₁ : 3.7.10-12 M₂ om (for M₂
cf v. 1 24 the rest continue the Sarga) —*Anda*
name D₂ om —Sarga name D₂ गंगायवर्ण —Sarga
no (figures words or both) S₁ D₂ D₂ : 3.7.14 S
(except M₂) 43 D₂ 46 —After colophon T₂ con-
cludes with धीरामवन्नाय नमः । G₁ : 3.8 धीरामाय नमः । G₂
धीमत रामानुजाय नमः । M₂ धी - न

४३

स गत्वा सागरं राजा गङ्गायानुगतस्तदा ।
प्रविशेश तलं भूमेर्यत्र ते भस्मसात्कृताः ॥ १
भस्मन्यथासुते राम गङ्गायाः सलिलेन वै ।
सर्पलोकप्रभृन्नेहा राजानमिदमब्रवीत् ॥ २
तारिता नरशार्दूल दिवं याताश्च देवन् ।

पठिः पुत्रसहस्राणि सगरस्य महात्मनः ॥ ३
सागरस्य जलं लोके याप्तस्यास्यति पार्थिव ।
सगरस्यात्मजास्ताप्तस्वर्गे स्थास्यन्ति देवन् ॥ ४
इयं च दुहिता ज्येष्ठा तव गङ्गा भविष्यति ।
त्वत्कृतेन च नाम्ना वै लोके स्थास्यति निश्रुता ॥ ५

43

६२* \tilde{N}_1 missing Sarga 43 (cf v l I 33 8) \tilde{N}_2 V B D₁ 3 6 7 10-13 M₄ continue the previous sarga

1 M₄ om 1^a (cf v l I 42 24) —^a) D₉ repeats (ditto) न D₂ सागरो \tilde{N}_2 B₂ D₁₀ 11 राम (for राजा) —^b) V₁ B₁ 3 4 D₂ 6 8 (before corr) 9 11 12 T₂ G₂ 4 M₁ 3 गगाया (for गङ्गाया) B₁ अनुगत्, M₄ [अ]नुगत्स (for [अ]नुगतत्) —^d) \tilde{N}_2 V B D₁₀ 13 M₄ सा (V₄ B₁ स्या)त यत् (B₄ तत्, M₄ तं) म (V₄ सा)गरान्नै —After 1 \tilde{N}_2 V B D₁₀ 11 13 M₄ ins

939* उपानीय ततो गङ्गा रसातलतल प्रसु ।
तर्पयामास तान्सर्वान्भस्मभूतावितमहान् ।
अथ गङ्गाभसा तत्र स्थाविता सगराम्ना ।
दिव्यमूर्तिधरा भूवा जगमु स्वर्गं मुदा युता ।

[V₂ om (hapl ?) 1 1-3 —(1 1) \tilde{N}_2 V₃ B₂ D₁₀ उपनीय V₄ D₁₀ 11 13 गगा —(1 2) M₄ सर्वास्तात् (by transp) D₁₀ om (hapl) from the post half of 1 2 up to 2^a (cf \tilde{N}_2 variants of 2^a) B₄ D₁₀ M₄ मसीभूतात् (for मस्य) \tilde{N}_2 विवृत्तेन महात्मना (for the post half) —(1 3) B₄ D₁₁ तेन (for तत्र) D₁₂ M₄ पविता (for प्राविता) —B₃ repeats 1 4 before 2^a (1) —(1 4) V₄ चरा (for धर) D₁₁ दिव्यरूपा सर्वे (for the prior half) D₁₂ स्वर्गे (for स्वर्ग) V₁ 2 4 M₄ [अ]न्विता (for युता)]

2 D₁₀ om 2^a (cf v l I) B₃ repeats 2^a —^a) M₄ [उ]ज (for [अ]य) S₁ D₁ 5 13 तेन, D₂ 7 9 देरो, G₁ 9 हसिम् (for राम) S₁ D₁₂ गालोदेन नरोत्तम, D₁ 3 5 7 9 शं (D₁ गा)गौदेन (D₉ वैश्व) नरोत्तम, D₁₀ विवृत्तेन महामना (for \tilde{N}_2) \tilde{N}_2 V B (B₄ both times) D₁₂ M₄ तान्द्रुप्रा स्थावितासर्गात् विवृत्तेन (M₄ मसीभूतात्) महामना (M₄ न), D₁₁ इष्टा सप्ताधिवान्सर्वामिदं (sic) स्तेन महामना —^d) D₁ 2 7 9 11 मुरुर, Ch as in text (for मसुर) \tilde{N}_2 V B D₁₀ 13 M₄ मगीत्यमुवाचेद् धम्मा सुरगौ सह (V₄ षैस्तदा)

3 ^a) D₇ रतिरास, D₂ 5 7 9 11 12 ते नृप (D₁₂ नर) श्रेष्ठ, G₂ M₁ च महाराज (G₂ जा) (for नरशार्दूल) S₁ D₁ 5 कारितानि नृपश्रेष्ठ —^d) S₁ D₁ 5 13 यातानि, D₂ 7 9 T₂

G₁ 5 M₂ याता हि (for याताश्च) D₁ देववित् (for देववत्) \tilde{N}_2 V B D₁₀ 13 M₄ त्वया पूर्वे (V₃ पूना) वितामहा, D₁₁ दिव जा (या)ता वितामहा —T₂ om (hapl) 3^a 4 —^c) V₁ B₄ D₇ 9 M₄ पठि —^d) G₂ सागरस्य —After 3 \tilde{N}_2 V B D₁₀ 11 (followed by 941^a) 13 M₄ ins

940* अथय सगरस्याय नाम्ना प्यानो महोदधि ।
व्यक्त सागर इत्येव प्यानि लोके गमिष्यति ।

[(1 1) V₁ अथय, V₄ अयु (for अथय) B₁ 3 (B₂ marg also) सा (B₃ स)गथ (for सगरस्य) V₄ [अ]स (for [अ]य) B₄ नवाप्यानो (for नाम्ना) M₄ मतिष्यति (for महोदधि) —(1 2) D₁₁ व्यक्ति, M₄ राजन् (for व्यक्त) V₄ [य]य B₄ D₁₀ M₄ [य]ज (for [य]य) V₁ लोकप्यानि, V₄ D₁₀ रपान (D₁₀ ते) लोके B₄ रपानिगेके (for रपानि लोके)]

4 T₂ om 4 (cf v l 3) —^a) D₁₂ सगरस्य S₁ D₁ 5 7 9 11 12 यागलोके (by transp) D₂ तावलोके (for लोके तावत्) D₃ पार्थिव, D₄ रायव (for पार्थिव) —M₄ reads 4^a inf lin —^c) D₉ सागरस्य D₁ D₄ 6 8 सर्वे (for तावत्) —^d) S₁ D₂ 12 लोके, D₁ D₄ 6 8 Ct दिवि (for स्वर्गे) G₂ देववित्, Ch °वत् (as in text) —For 4 \tilde{N}_2 V B D₁₀ 13 M₄ subst while D₁₁ ins after 940*

941* यागव सागरो लोके स्थितोऽयमिदं शाश्वत ।
सगर सहित पुत्रेभ्यस्त्वर्गं निवस्यति ।

[(1 1) D₁₁ यागव (for वागव) M₄ यति (for यमिद) V₁ स सन (for शाश्वत) —(1 2) B₁ 4 सहितै (for सहित) V₄ पुत्रैव (for पुत्रेभ्य) D₁₂ धर्मया सगरो राजा (for the prior half) B₃ वि° (for निवस्यति)] —After 4 S₁ D₁ 5 5 7 9 11 13 ins

942* दिव्यमालयाभ्यवरणा दिव्यगन्धासुलेपना ।
दिव्यरूपधराधिव भविष्यति गुणायिता ।

[(1 1) S₁ धना D₂ 13 भूना (for धरा) —(1 2) D₁₁ सौं (for वैय) D₂ 9 13 भविष्यति D₁ गान्विता]

5 ^a) S₁ तु, D₂ T₂ हि, C₂ as in text (for च) T₂ महिता (for दुहिता) \tilde{N}_2 V B D₁₀ 13 M₄ रानस्य, D₂ 11 G₂ 8 श्रेष्ठा (for ज्येष्ठा) —^c) S₁ D₂ 13 तु, D₁ D₂ 8 G₁ 3 M₄ [अ]य, D₂ Cm च (for वै) D₁₂ लट्तेन तव नाम्ना (sic) —^d) S₁ (marg as in text) D₁ 2 5 9 13 लोक (D₂ °क)याप्रीति (D₁ °तु) (for लोके स्थास्यति) D₂ 7

देवाः सर्पिणाः सर्पे दैत्यदानराक्षसाः ।
गन्धर्वयक्षप्रराः सर्किरमहोरगाः ॥ २२
सर्पाश्चाप्सरसो राम भगीरथरथानुगाः ।

गङ्गामन्वगमन्प्रीताः सर्पे जलचराश्च ये ॥ २३
यतो भगीरथो राजा ततो गङ्गा यशस्विनी ।
जगाम सरितां श्रेष्ठा सर्पपापनिनाशिनी ॥ २४

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे द्वित्रिवारिंशः सर्गः ॥ ४२ ॥

22 V₃ om 22-23^b —^b) T₂ रक्षसा G₂ दैत्यराक्षस-
दानवा (by transp) —^c) V₂ गन्धर्वयक्षसिद्धीया, D₁₂
गन्धर्वा यक्ष प्रवरा —^d) S₁ गंगामनु महोरगा —For 22
M₂ subst

932* देवा सिद्धर्षयश्चैवा सर्पिनरमहोरगा ।
सदैवदानवगणा सहस्रिभ्युपश्रिभि ।

23 V₃ om 23^{ab} (cf v. 1 22) —^a) V₄ D₆ s
T₂ G₁ सपाद् (for सर्वाद्) V₁ सवाप्सरोगणा G₁ नाम
(for राम) —^b) D₁ s M₂ C₂ r(D₁ r)थानुगा, D₁₁
M₂ -पथा(M₂ °दा)नुगा, C₂ t -रथानुगा (as in text)
—^c) V₁ D₁ s गंगामनुगम-प्रीता, V₂ s B₁ s गंगानुगमन
(V₃ °ने)प्रीता, V₄ गगादेवी मन प्रीता —^d) V₄ D₂
जलचराद् —For 23^d M₂ subst, while B₁ ins
after 23

933* गंगामनुययुस्तत्र (B₁ °भिययुस्तेच)सर्वांश्च सरित शुभा ।

24 °) S₁ D₁ s यथा, V₂ M₂ ततो, C₂ k t as in text
(for यतो) V₄ भगीरथो यतो (by transp) V₁ यातो, B₁
गच्छेत् (for राजा) —M₂ om from 24^b up to I 43
x^a —^b) S₁ D₁ s तथा, V₄ D₂ s तत्र, C₂ k t (implied)
as in text (for ततो) V₄ सरिद्ररा (for यशस्विनी)
—^c) S₁ N₂ V B D₁ s 7 10-12 नरदाहिल (for सरिता
श्रेष्ठा) D₁ D₂ s G₂ M₁ अनाशिनी (for निनाशिनी)
S₁ N₂ V B D₁ s 7 10-12 सर्वलोका (B₁ °देव)नमस्कृता
D₁ s जगाम नरदाहिलमथ लोकनमस्कृता —After 24 S₁ (sec
m on an additional fol) D₁ D₂ s 14 T G M₂ s
C₂ k t (Cv r comm on l 9 only Cm on l 3-9) ins

934* ततो हि यजमानस्य जहोर्द्विद्वत्कर्मण ।
गङ्गा सङ्गावयामास यज्ञात् महात्मन ।
तस्यावरलेपनं ज्ञात्वा मुचो जह्वस्तु राघव ।
भरिद्यस्तु जलं सर्वं गङ्गाया परमाहुतम् ।
ततो देवा सप्तगन्धर्वा कृपयश्च सुप्रिभिताः । [5]
पूजयन्ति महात्मानं पार्श्वं पुरयत्तमम् ।
गङ्गां चापि मयति स्म दुहितृषु महात्मन ।
तत्पुत्रो महातेजा श्रोत्रायामवसृजतुन ।
तस्माज्जुमुता गङ्गा भोष्यते ज हवीति च ।
जगाम च पुनर्गङ्गा भगीरथरथानुगा । [10]
सागरं चापि संप्राचा सा सरित्प्रवरा तदा ।
रसातलमुपागच्छा यद्वर्षं तस्य कर्मण ।
भगीरथोऽपि राजर्षिर्गङ्गां न शूय यद्यत् ।
पिनामहात्मकट्टातपयदोनेपेयन ।

अथ तद्गङ्गाया राशि गङ्गासलिलमुत्तमम् । [15]

गङ्गावयस्त्तुपाप्मान स्वर्गं प्राप्ता रघूत्तम ।

[(1 1) T₂ वा (for हि) —(1 3) D₂ T₂ G₁ s राजा,
D₁₂ T₂ s G₂ यज्ञा (for जह्व) S₁ स Dt D₂ s च, G₂ [अ]
थ (for तु) C₂ Cm तस्या इति, C₂ तस्या इति । वलेपन गर्वम् ।
Ct तस्या अवलेपन गवमिलम् । C₂ —(1 4) S₁ G₁ s तज्जल, D₁₂
T G₂ च^a, G₂ M₁ s सलित् (for तु जल) —(1 5) D₂ T₂
G₁ s M₁ च (for स) G₂ M₁ मुनयश्च (for कृपयश्च) —(1
6) S₁ om जह्व —(1 7) G₂ M₁ Ctp [अ]नु (for [अ]
पि) G₂ दुहितुल —For ins see below —(1 8) D₂ M₂
महात्मन (for °तेजा) G₂ M₁ व्यसृजत् S₁ Dt D₂ s प्रभु
(for पुन) —For ins see below —(1 11) G₁ s विप्रेष
सागर चापि (for the prior half) —For ins see below
—(1 14) S₁ Dt D₂ s गतचेतन (S₁ °नान्) D₂ f₂ G₂
M₂ °चेतस (for दीनचेतन) —(1 15) D₁₂ T₂ s G₂ s M₁ s
त, M₂ [प] जद् (for तद्) —(1 16) D₂ s ज्ञापयेत् T₂
पूजयामासो M₂ पू^a (for पूजयामास) M₂ अभ्युपिचज्जालेन
(for the prior half)]
—After L 7 M₂ ins

935* भगीरथोऽपि राजर्षिस्तुष्टान द्विजमत्तमम् ।

—After l 8 G₂ M₁ s (inf l₁ s sec m) ins

936* प्रसृज्या गङ्गा जह्वश्च ज्ञात्वा प्राह भगीरथम् ।

पूजयित्वा मुनिरय यज्ञात्पूजयामासम् ।

[(1 1) M₂ राजेद् ता^a (lacuna) (for जह्व ज्ञात्वा)

—(1 2) M₂ यथायव (for मुनिरय)]

—After the prior half of l 13, G₁ s M₁ ins.

937* दिव्यं स्यन्दनमारिषत् ।

दिवं प्रायुत्तां प्रायत् ।

—After 934* G₂ M₁ cont

938* तत्पुत्रो गङ्गां प्रतिहन्त राजा

द्वितीयमुपगंगनाथ शक्रात् ।

होष्यतां यस्तु नृपाय जहो

संभावयामास शितामहात्म ।

Colophon N₂ V B D₁ s 7 10-12 M₂ om (for M₂
cf v. 1 24 the rest continue the Sarga) —K₂ M₂ s
name D₄ om —Sarga name D₂ संभावयामास —Sar
no (figures words or both) S₁ Dt D₂ s
(except M₂) 43 D₂ 46 —After colophon T₂ c
cludes with श्रीरामबन्दाय नमः G₁ s श्रीरामाय नमः
श्रीमते रामानुजाय नमः M₂ श्रीम

राजर्षिणा गुणयता महर्षिममतेजसा ।

मत्तुल्यतपसा चैन क्षत्रधर्मस्थितेन च ॥ १०

दिलीपेन महाभाग तप पित्रातितेजसा ।

पुनर्न शङ्किता नेतुं गङ्गां प्रार्थयतानघ ॥ ११

सा त्वया समतिक्रान्ता प्रतिज्ञा पुरुषर्षभ ।

प्राप्तोऽसि परमं लोके यशः परमसंमतम् ॥ १२

यच्च गङ्गातरणं त्वया कृतमर्दिम ।

text —^d) T 2 3 नाप (T 3 °व) मार्षिता, G° M1 नैव साधिता, Cg as in text (for नापयन्तिता) N 2 V 1 3 B 1 3 D 1 3 7 9 11 13 न (D 1 3 om [hapl.]) प्राप्त (V 3 °स) काम एव (V 1 B 1 3 D 2 3 9 11 °व) हि, V 2 प्राप्ता कामयता न हि, D 1 12 प्राप्तकाम समजसा, Ct as in text

10 B 4 om 10 D 7 om 10^{ab} (for both cf v 1 g) —^d) S 1 N 2 V B 1 3 D 5 10 13 T 3 G 3 M 3 राजर्षिणा, Cg °र्षिणा (as in text) S 1 D 5 गुणयता, N 2 V B 1 3 D 10 13 पुराणना (for गुणयता) —^b) N 2 V 1 3 B 1 3 D 10 13 तेजसा S 1 महर्षिप्रतिमौजसा, D 1 3 5 9 11 12 महर्षिप्रतिमौजसा (D 5 °स [sic]) Ck as in text (for ^b) —D 1 4 reads 10°-11^d in marg —^c) S 1 N° V 1 3 B 3 D 1 3 5 7 9 12 13 अतुल्य, V 2 अतुला (sic) V 4 अनल्प, B 1 अतुला (sic) D 1 1 सुतस, Ck t as in text (for मत्तुल्य) D 1 2 5 10 13 वा (for च) S 1 N 2 V 1 3 B 1 3 D 5 7 9 11 13 M 4 [अ] पि (for [पृ] व) D 1 0 अतुल्यतेजसा चापि, G° तपसा मम तुल्येन —^d) V 1 क्षात्रधर्मे, D 1 4 क्षत्रधर्मे, Ck as in text (for क्षत्रधर्मे) V 3 रतेन (for स्थितेन) D 3 7 हि, D 1 1 12 वा (for च)

11 B 4 om 11^{ab} (cf v 1 g) D 1 4 reads 11^{ab} in marg (cf v 1 10) —^a) V 1 M 3 महाराज (for महा भाग) —^b) D 1 [अ] मितां नसा, D 3 7 11 महौजसा, G 3 [आ] दितेजसा (for [अ] तितेजसा) —^c) S 1 Dt D 3 5 8 9 11 G 4 M 3 शक्तिता N 2 V 1 4 B 1 3 D 1 10 शक्तिता, V 3 B 3 शक्तिता, D 1 3 शोधिने, G 1 3 शक्त्या वै, M 3 शक्यते, Ckp शक्तिता (for शङ्किता) S 1 गगा, N 2 V 1 3 4 B 2 5 10 12 तेन, D 1 2 7 येन (for नेतु) V 2 पुनर्न गगा ततेन, D 1 1 पुनर्न शक्या चान्येन Ck कश्चित्काकिनेति मुपोकिच्याप्याने प्रायनिष्ट । Ck —^d) S 1 तेन, V 1 2 Dt D 3 5 7 11 12 13 T 3 M 1 गगा (for गङ्गा) V 4 B 4 प्रायेयते, B 1 प्रायेयता (for प्रार्थयता) Ck Gm गङ्गामानेनु न शङ्किता । Cg k t सा पुनर्नेतु न श (Ct श) क्तिता । Ck

12 °) S 1 N 2 V B D 1 3 5 7 10-13 समनुप्रासा, M 4 Ck समनुप्रासा, Cmg t as in text (for समविश्रान्ता) —^b) M 4 समतप (for प्रतिज्ञा) D 1 1 भरतर्षभ —^c) V 2 प्राप्त च, D 3 (before corr) प्राप्नोति, D 1 1 M 4 प्राप्नोति (for प्राप्नोति) M 3 [अ] नुपुर्न (for परम) —^d) D 1 1 यश (sic) (for यश) S 1 त्रिदशमहित, N 2 V B D 5 10-13 त्रिदश (B 4

अनेन च भवान्प्राप्तो धर्मस्वायतनं महत् ॥ १३

प्रापयस्व त्वमात्मानं नरोत्तम सदोचिते ।

सलिले पुरुषव्याघ्र शुचिः पुण्यफलो भव ॥ १४

पितामहानां सर्वेषां कुरुष्व सलिलक्रियाम् ।

स्वस्ति तेऽस्तु शमिष्यामि खं लोकं गम्यतां नृप ॥ १५

इत्येवमुक्त्वा देवेशः सर्लोकपितामहः ।

यथागतं तथागच्छदेवलोकं महायशः ॥ १६

lacuna) समत, D 1 त्रिदशसत्तम, D 2 7 G 1 3 त्रिदश नमित, D 3 त्रिदशसमात (corrupt) Ct परमसमन (as in text)

13 °) Dt D 6 8 13 तच्च, D 1 2 तस्य, Cmg as in text (for यच्च) V 4 गगावतरण कृत्वा (hypermetric) —^c) S 1 N 2 V B D 1 3 5 7 10-12 M 4 महत्प्राप्त (D 1 1 सा, M 4 °तो), D 1 3 सह प्राप्त (for भवान्प्राप्तो) —^d) Cg [आ] वतनं (as in text) M 4 भवान् (for महत्) S 1 N 2 V B D 1 3 5 7 10-13 धर्मस्वान्तं (S 1 D 1 2 °ने) स्वयानघ (D 1 2 °व), Cmt as in text (for ^d)

14 °) N 2 V 1 3 B (B 2 marg as in text also) D 1 0 11 13 पावयस्व, G 1 3 प्रावयन्त, Cmg t as in text (for प्रावयस्व) S 1 D 1 2 प्रावय त्व स्वमा मान, V 4 पावय सुत मात्मान (sic) Ck परा प्रावयति स्मेत्यादिष्वसहारेण वाद । Ck —^b) N 2 V 1 2 4 B 2 D 1 3 10 11 M 4 सुरोत्तम, D 3 नरोत्तम (for नरोत्तम) S 1 D 1 2 मयोदिते, V 1 D 1 3 7 स (D 2 7) द्योदिते, V 2 सुरक्षिते V 4 सदोचिते, B 3 (marg as in text) स्पदोचिते, T 3 नरोचिते, M 4 सुरोदिते, Cmg k t as in text (for सदोचिते) —^c) S 1 N 2 V B 1 3 Dt D 1 4 6 8 13 G 1 3 M 2 4 श्रेष्ठ (for न्याय) —^d) N 2 B 3 D 1 0 12 पुण्यफलाय च, V 2 पुण्यतमो भव, V 4 B 2 पुण्य फलोद्भव (B 2 °वे), D 2 °भवेत्, D 7 °फलोदय (for पुण्यफलो भव) Ck पुण्यफलमिति मत्वर्थी योज्यन्त । Ck

15 °) S 1 N 2 V 2 4 B D 1 3 5 7 10-13 M 4 सलिलं (for सर्वेषां) —^b) S 1 N 2 V B D 1 3 5 7 10-13 M 4 च (D 1 1 त्वं, D 1 2 °) यथासुख (B 1 °कम [m °सुखं], B 3 °सुत, B 4 °स्वव) (for सलिलक्रियाम्) —^d) T 3 स्वद्, Ck t as in text (for स्व) Cg k t गम्यता (as in text) S 1 D 1 3 5 7 11 12 स्वगृह गम्यतामिति, N 2 V B D 1 0 13 स्व (V 4 पु) लोकं नर (V 3 सुनि) पुगाव, D 3 स्वर्गलोक च गम्यता

16 °) S 1 D 1 2 लोकेन्द्रा (for देवेश) N 2 V B D 1 0 13 इत्युक्त्वा भगवान्प्राज्ञा भगीरथमर्दिम (B 1 D 1 3 °म) —^d) Ck Ct यथा आगतमितिच्छेद् । Ck S 1 D 1 2 जगामाय, D 1 3 7 11 जगामासु T 3 G 4 यथागच्छद्, G 2 M 1 तद्गगच्छद्, Cg as in text (for तथागच्छद्) D 1 3 7 11 ब्रह्मलोकं S 1 D 5 ब्रह्मलोकं (D 3 °क) वितामद्, D 1 2 ब्रह्मा लोकपितामह (for ^d) N 2 V B D 1 0 13 जगाम महिलो देवैर्महिलोकं नतामयं, M 4 जगामासु °तो ब्रह्मा लोक पुण्य महायशः

राजर्षिणा गुणवता महर्षिसमतेजसा ।
मत्तुल्यतपसा चैन क्षत्रधर्मस्थितेन च ॥ १०
दिलीपेन महाभाग तप पित्रातितेजसा ।
पुनर्न शङ्किता नेतुं गङ्गां प्रार्थयतानघ ॥ ११
सा त्वया समतिक्रान्ता प्रतिज्ञा पुरुषर्षभ ।
प्राप्तोऽसि परमं लोके यशः परमसंमतम् ॥ १२
यच्च गङ्गातरणं त्वया कृतमरिंदम ।

अनेन च भवान्प्राप्तो धर्मस्थायतनं महत् ॥ १३
प्रावयस्व त्वमात्मानं नरोत्तम सदोचिते ।
सलिले पुरुषव्याघ्र शुचिः पुण्यफलो भव ॥ १४
पितामहानां सर्वेषां कुरुष्व सलिलक्रियाम् ।
खस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि स्वं लोकं गम्यतां नृप ॥ १५
इत्येवमुक्त्वा देवेशः सर्लोकपितामहः ।
यथागतं तथागच्छेत्लोकं महायशः ॥ १६

text —^d T 2 3 नाप (T 3 °व) मांरिता, G ° Mi नैव साधिता,
Gg as in text (for नावदतिता) N 2 V 2 4 B 1 3
D 1 3 7 9 11 13 न (D 13 om [hapl]) प्राप्त (V 2 °स) काम
एव (V 1 B 1 3 D 2 3 9 11 °व) हि, V 2 प्राप्ता कामयता न हि,
D 1 2 प्राप्तकाम समजसा, Ct as in text

10 B 4 om 10 D 7 om 10^{ab} (for both cf v l 9)
—^a S 1 N 2 V B 1 3 D 10 13 T 3 G 3 M 3 राजर्षिणा, Gg °दिगा
(as in text) S 1 D 3 गुणवता, N 2 V B 1-3 D 10 13 पुराणना
(for गुणवता) —^b N 2 V 1 3 4 B 1 3 D 10 13 तेजसा S 1
महर्षिप्रमितीनम्, D 1 3 5 9 11 12 महर्षिप्रतिमौजसा (D 5 °स
[suc]) Ck as in text (for ^b) —^d D 1 reads 10°-11^b in
marg —^c S 1 N ° V 1 3 B 2 3 D 1 3 5 7 9 12 13 अनुत्प, V 2
अनुत्प (sic) V 4 अनत्प, B 1 अनुत्प (sic) D 11 सुवत्,
Ck t as in text (for मत्तुल्य) D 1 ° 9 12 13 वा (for च)
S 1 N 2 V 1-3 B 1-3 D 3 5 7 11 13 M 3 जृि (for [ए]व)
D 10 अनुत्पतेजसा चारि, G ° तपसा मम तुत्येन —^d V 1
क्षत्रधर्म, D 1 3 क्षत्रधर्म, Ck as in text (for क्षत्रधर्म) V 2
रतेन (for स्थितेन) D 3 7 हि, D 11 12 वा (for च)

11 B 4 om 11^{ab} (cf v l 9) D 14 reads 11^{ab} in
marg (cf v l 10) —^a V 1 M 3 महाराज (for महा
भाग) —^b D 1 [ख]मिनीजसा, D 3 7 11 महौत्सा, G 3 [वा]
दितेजसा (for [ख]नितेजसा) —^c S 1 Dt D 3 5 9 14 G 3
M 3 शक्तिता N 2 V 1 4 B 1 2 4 D 1 10 शक्तिता, V 2 B 3 शक्तिता,
D 1 3 शोधिन्, G 1 3 शक्त्वा वै, M 3 शक्वते, Ckp शक्तिता (for
शङ्किता) S 1 गगा, N 2 V 1 3 4 B D 2 5 10 12 13 तेन, D 1 3 7 येन
(for नेतु) V 2 पुनर्न गागा तानेन, D 11 पुनर्न शक्वा चान्येव
Ck कश्चित्वाकितेन सुषोडिष्याव्याप्नोते प्रायन्ति । Ck —^d
S 1 तेन, V 1 2 Dt D 3 5 7 11 12 14 T 3 M 1 गगा (for
गङ्गा) V 4 B 4 प्राथयते, B 1 प्राथयता (for प्रार्थयता)
Ck Cm गङ्गामानेव न शङ्किता, Cg k t सा पुनर्नेतु न ना (Ct
शङ्किता) Ck

12 ° S 1 N 2 V B D 1 3 5 7 10-13 समनुप्राप्ता, M 3 Ck
समनुप्राप्ता, Cm g t as in text (for समतिक्रान्ता) —^b
M 3 सांते (for प्रतिज्ञा) D 11 भरतर्षभ —^c V 2 प्राप्त च D 3
(before corr.), प्राप्नोति, D 1 3 प्राप्नोति (for प्राप्नोऽसि)
M 3 [ख]नुपम (for परम) —^d D 1 3 यश (suc) (for
यश) S 1 त्रिदशमेहित, N ° V B D 10-13 त्रिदश (B 4

lacuna) समते, D 1 त्रिदशसत्तम, D 2 7 G 1 3 त्रिदश नमित,
D 3 त्रिदशसत्तम (corrupt) Ct परमसमन (as in text)

13 ° D 1 D 5 9 13 तच्च, D 1 3 तस्य, Cm g as in text
(for यच्च) V 4 गगावतरण कृत्वा (hypermetric) —^c
S 1 N 2 V B D 1-3 5 7 10-12 M 3 महात्मा (D 11 °हा, M 3
°हो), D 1 3 सह प्राप्त (for भवान्प्राप्तो) —^d Cg [वा]यतनं
(as in text) M 3 भवान् (for मद्वा) S 1 N 2 V B
D 1-3 5 7 10-13 धर्मस्थान (S 1 D 13 °ने) त्वयानघ (D 1 2 °घ)
Cm t as in text (for ^d)

14 ° S 1 V 1 3 B (B 2 marg as in text also)
D 10 11 13 पावयस्व, G 1 3 प्रावयस्व, Cm g t as in text (for
प्रावयस्व) S 1 D 1 2 प्रावय त्व त्वमामानं, V 4 पावय सुत
मामान (sic) Ck परा प्रावयति स्मेत्यादिरप्यसहारेण
वाद् । Ck —^b S 1 D 1 2 4 B D 1 2 10 11 M 3 सुरोत्तम, D 3
नरोत्तम (for नरोत्तम) S 1 D 1 2 मरोत्ति, V 1 D 1-3 7
स (D 2 प) दौदिते, V 2 सुरक्षिते, V 4 सदोचिते, B 3 (marg as
in text) स्वदोचिते, T 3 नरोचिते, M 3 सुरोदिते, Cm g k t
as in text (for सदोचिते) —^c S 1 N 2 V B 1-3 Dt
D 1 4 6 8-13 G 1 3 M 3 4 श्रेष्ठ (for च्याप्रा) —^d N 2 B 3
D 10 13 पुण्यफलय च, V 2 पुण्यतो भव, V 4 B 3 पुण्य
फलेद्भव (B 2 °वे), D ° भवेद्, D 7 °क्योदय (for पुण्यफलो
भव) Ck पुण्यफलमिति मवर्षी योऽनन्त । Ck

15 ° S 1 N 2 V 2 4 B D 1-3 5 7 10-13 M 3 सलिले
(for सर्वेषां) —^b S 1 N ° V B D 1 3 5 7 10-13 M 3 च D 11
त्व, D 1 ° * यथासुख (B 1 °क्रमे [m °सुरे]), B 3 °सुत,
B 4 °स्वय) (for सलिलक्रियाम्) —^c T 3 स्वर, Ck t as
in text (for स्व) Cg k t गम्यता (as in text) S 1
D 1 3 5 7 11 13 स्वयद्वा गम्यतामिति, N 2 V B D 10 13 स्व (V 4
सु) रौंके नर (V 2 सुनि) पुगव, D 3 स्वर्गलोके च गम्यता

16 ° S 1 D 1 2 लोहना (for दूधेना) N 2 V B
D 10 13 इत्युक्त्वा भगवान्ब्रह्मा भगीधमरिंदम (B 1 D 3 °भ)
—^d Ck यथा भागतमितिच्छेद । Ck S 1 D 1 2 जगामाव,
D 1-3 7 11 जगामावु T 2 3 G 3 यथागच्छद्, G 3 M 1 तद्वागच्छद्,
Cg as in text (for तथागच्छद्) D 1-3 7 11 ब्रह्मलोकं S 1
D 3 ब्रह्मलोकं (D 3 °क) पितामह, D 1 2 ब्रह्मा लोकरिनामह
(for °) N 2 V B D 10 13 जगाम सहिनो देवर्षिलोक
मनामय, M 3 जगामावु *तो ब्रह्मा लोकं पुण्य महायशः

गङ्गा त्रिपथगा नाम दिव्या भागीरथीति च ।
 त्रीन्पथो भाग्यन्तीति तत्त्रिपथगा स्मृता ॥ ६
 पितामहानां सर्पानां त्वमत्र मनुजाधिप ।
 कुरुष्व सलिलं राजन्प्रतिज्ञामपमर्जय ॥ ७

लोकधारी भविष्यति, D₁₁ लोके क्वयाति गमिष्यति —For
 5^{cd} N₂ V B D₁₀ 13 M₄ subst

943* भागीरथीति विख्याता त्रिषु लोकेषु भूपते ।

[V₁ गीषते, V₂ भूषते, V₄ B₁ 2 विद्वता (for भूपते)]

6 * S₁ D₁-3 5 7 9 11 13 गमेति प्रथित (D₇ °थम) (for
 गङ्गा त्रिपथगा) D₂ 7 राम, D₁₁ T₂ 2 G₄ राजन् (for नाम)
 N₂ V B D₁₀ 13 M₄ गमेति गमनाद्गमे (B₃ marg also
 °द्राम, M₄ °द्रुनौ), G₂ गता या त्रिपथा नाम —^d) S₁ D₁ 11 13
 तमा, N₂ V B D₁₀ 13 M₄ रयाता, D₁-3 7 9 दिव्य (for
 दिव्या) M₄ om च (submetric) —G₂ om 6^{cd} —^c)
 D₄ M₁ त्रिपथो G₄ पावयती, Cm भाव° (as in text)
 —^d) D₁ D₂ T₂ तस्मान्, D₄ तत्र, Cm as in text (for
 तत्स्) —For 6^{cd} S₁ N₂ V B D₁-3 5 7 9 13 M₄ subst

944* भविष्यति सविच्छेदा लोके त्रिपथगेति च ।

त्रिपथगेति नामास्यास्त्रिमार्गगमनादिदम् ।

[S₁ D₁-3 5 7 9 13 om 1 x —(1 x) V₁ M₄ विनेकपथगेति
 च (for the post half) B₄ cm (hapl) from च up
 to ति in 1 2 —M₄ om (hapl) from 1 2 up to 1 6 of
 945* —(1 2) D₂ 7 त्रिपथगा (for त्रिपथगा) S₁ B₁ D₁ 5 13
 त्रिपथेति च नामास्यास्त्रिमार्गगमनादिदम् (hypermetric)
 (for the prior half) S₁ कृन्, V₁ 4 इय,
 V₂ स्त V₃ मण्ड, D₁ 11 13 स्तृत्, D₂ 5 7 हुत्, D₄ स्मृता D₁₀
 अपि (for इदम्) B₁ त्रिमार्गगमनादिक D₂ त्रिनामगमनात्पुत्र (for
 the post half)]
 Then cont

945* श्रीनलोकावधायन्या ये सुरभिर्मिच्छादहम् ।

द्विषि तारयते देवाभ्यामाप्तावसेत्पथ ।

सुरि तारयते मर्यान्तेन त्रिपथगा स्मृता ।

द्वितीयं चादि गङ्गां गीं गताया विनापते ।

भागीरथीति चाप्येन द्वितीयं नाम सुवत् । [5]

भविष्यति च स्वर्गीया मलीया च त्रिपथगा ।

वाचसु सुरि गतेषु भविष्यति सहानदी ।

तारसवाश्रया कीर्तिर्नैव विचरिष्यति ।

[M₄ om 1 x-6 (cf v 1 6 [944*]) —(1 x)
 V₁-3 B₄ D₁ प्रारब्ध V₄ B₁ भा ता त्वत्ता, D₂
 तारयिता, D₁₁ प्रारब्ध (for तारयिता) V₁ D₂ उदाहता S₁ N₂
 V B D₁ 2 5 7 9 13 om 1 2 and 3 —(1 4) B₁ द्वितीया
 V₃ [म]ति (sic) (for [म]ति) S₁ V₃ D₁ 5 गीं गताया,
 D₂ गताया (for गीं गताया) —(1 5) D₁₁ भागीरथी
 S₁ D₁ [म]ति, V₁ D₁₁ [म]ति, D₂ [म]ति, D₇ 9 11 [म]ति

पूर्वकेण हि ते राजस्तेनातियशसा तदा ।

धर्मिणां प्ररेणाथ नैप प्राप्तो मनोरथः ॥ ८

तथैवांशुमता ततु लोकेऽप्रतिमतेजसा ।

गङ्गां प्रार्थयता नेतुं प्रतिज्ञा नापमर्जिता ॥ ९

(for [म]ति) D₁₁ भागीरथीति चाप्येत् (for the prior
 half) N₂ B₃ D₁₀ 13 चापि, V₄ राम, D₂ चापि (for नाम)
 S₁ D₁ 3 5 9 सुप्रम B₄ सुप्रम, D₂ सुप्रम D₇ सुप्रम, D₁₀
 सुप्रम (for सुप्रम) —D₁₁ om 1 6 —(1 6) D₂ तु (for
 first च) D₂ त्वलीया N₂ V₁ B (B₁ marg also as
 above) D₁₀ त्व (B₄ त)त्वलीया च भविष्यति (for the prior
 half) D₁₁ lacuna for मलीया V₁ °क्षणा, V₃ B₄ °क्षान,
 D₂ °क्षणा (for निवृक्षण) V₂ त्वलीया चापि मलीया भविष्यति
 निवृक्षण —S₁ D₁-3 5 7 9 13 om 1 7 and 8 —(1 7) B₄
 तु (for च) B₄ [म]ति (for [म]ति) —(1 8) V₄ B₄
 प्रचरिष्यति D₁₁ सवलेक भविष्यति (for the post half)]
 M₄ further cont

946* यावच्च कीर्तिरनुला तवेय प्रभविष्यति ।

तावत्पुण्यकृता लोके तव चासौ भविष्यति ।

महत्कृत त्वया पुण्यं गङ्गाया (म)यता दिव ।

इय लोके नृपश्रेष्ठ प्रतिज्ञा चापमर्जिता ।

7 * G₂ 3 M₄ [म]ति (for [म]ति) V₃ D₁ °प, B₄
 वसुधाधिप (for मनुजाधिप) —D₁₁ om (hapl) 7^{cd} and
 8^{cd} —^d) D₂ lacuna for प्रतिज्ञाम् S₁ B₁ D₁ 5 9 11 13
 परिपालय, V₁ 2 M₄ °वर्जयन्, B₂ (before corr as in
 text) 4 (as in text also) D₁ 3 प्रतिपालय, T₂ 3 मार्जय,
 M₂ अनुव°, Cm g k t as in text (for अपमर्जय)

8 D₁₁ om 8^{cd} (cf v 1 7) —^c) S₁ D₂ 13 पूर्व केन
 N₂ V B D₁ 3 7 9 11 पूर्वनेन, Cm g k t as in text (for
 पूर्वकृण) S₁ N₂ V B D₁ 3 7 9 10 13 G₁ 3 M₄ [म]ति
 (for द्वि) V₃ °तह, G₂ तारयत् (for ते राजस्) —^d)
 D₁ केन, D₂ स्वेन (for तेन) V₄ [म]ति, D₂ 11
 [म]ति (for [म]ति) N₂ V₁ 3 4 B₁ D₁₀ 13 15 सता, B₁
 यया, D₁ 5 सदा, D₄ T₂ तया (for तदा) V₂ तेनापि समरेण
 च, M₄ समरेण महागमना, M₄ तेनापि सत्यकर्मणा —^c) D₂
 घर्मेण (for घर्मिणा) S₁ N₂ V₁ 3 4 B D₁-3 5 7 9 11 T₂
 M₄ [म]ति, V₃ [म]ति (for [म]ति) —^d) V₃ [म]ति,
 D₂ T₂ [म]ति (for [म]ति) B₄ D₄ प्राप्ता (sic) T₂ प्राप्ता
 मनोरथा

9 * V₄ तत्र, G₂ तदा, C₂ as in text (for तया)
 D₁ [म]तिमते Dt D₄ 3 5 T₂ G₁-3 M₁-3 मयः D₂ 7 धीर
 (for नाम) —^c) V₃ प्रवितेयता —B₄ om (hapl)
 9^{cd}-11^{cd} D₇ om (hapl) 9^{cd}-10^{cd}. S₁ om 9^{cd} —^c)
 D₂ 5 9 11 13 सीमा D₁₁ T₂ प्राथम्येन (for °यता) D₂ 5 11
 धीर, D₂ धीरः D₂ 13 तत्र (for नेतुं) N₂ V₁ 3 4 B₁-9
 D₂ 13 सीमा प्राथम्यमानेन V₃ सीमा प्रथममानेन, C₁ 2 5 13

राजर्षिणा गुणवता महर्षिसमतेजसा ।
मनुष्यतपसा चैव क्षत्रधर्मस्थितेन च ॥ १०
दिलीपेन महाभाग तप पित्राति तेजसा ।
पुनर्न शङ्किता नेतुं गङ्गां प्रार्थयतानघ ॥ ११
सा त्वया समतिक्रान्ता प्रतिज्ञा पुरुषर्षभ ।
प्राप्तोऽसि परमं लोके यशः परमसंततम् ॥ १२
यच्च गङ्गावतरणं त्वया कृतमरिंदम ।

अनेन च भवान्प्राप्तो धर्मस्यायतनं महत् ॥ १३
प्राप्यस्व त्वमात्मानं नरोत्तम सदोचिते ।
सलिले पुरुषव्याघ्र शुचिः पुण्यफलो भव ॥ १४
पितामहानां सर्वेषां कुरुष्व सलिलक्रियाम् ।
स्मृतिं तेऽस्तु गमिष्यामि स्वं लोकं गम्यतां नृप ॥ १५
इत्येवमुक्त्वा देवेशः सरलोकपितामहः ।
यथागतं तथागच्छेद्वलोकं महायशः ॥ १६

text —^d) T₂ ३ नत् (T₃ °व) मार्जिता, G₂ M₁ नैव साधिता,
C₆ as in text (for नावधिता) N₂ V₁ ३ B₁ ३
D₁ ३ ७ ११ १३ न (D₁ om [hapl]) प्राप्त (V₂ °त) काम
प्य (V₁ B₁ ३ D₂ ३ ११ १३ °व) हि, V₂ प्राप्ता कामयता न हि,
D₂ १३ प्राप्तकाम समनज्ञा, Ct as in text

10 B₄ om १० D₇ om १०^{ab} (for both cf v 1 9)
—^a) S₁ N₂ V B₁ ३ D₂ १० १३ T₂ G₂ M₂ राजर्षिणा, C₆ पिणा
(as in text) S₁ D₂ गुणवता, N₂ V B₁ ३ D₁ १३ पुराणाना
(for गुणवता) —^b) N₂ V₁ ३ B₁ ३ D₁ १३ तेजसा
महर्षिप्रतिभोजन्या, D₁ ३ ७ ११ १३ महर्षिप्रतिभोजन्या (D₂ °स
[sic]) Ck as in text (for °) —D₁ reads १०°-११° in
marg —^c) S₁ N₂ V₁ ३ B₂ ३ D₁ ३ ७ ११ १३ अनुष्य, V₂
अनुष्य (sic) V₄ अनुष्य, B₁ अनुष्य (sic) D₁ सुतस,
Ck t as in text (for मनुष्य) D₂ ३ ११ १३ वा (for च)
S₁ N₂ V₁ ३ B₁ ३ D₂ ३ ११ १३ M₂ [अ] वि (for [ग] वि)
D₁ १० अनुष्यतेजसा चापि, G₂ तपसा मम हुतेन —^d) V₁
क्षत्रधर्मे, D₁ क्षत्रधर्मे, Ck as in text (for क्षत्रधर्मे) V₂
रतेन (for स्थितेन) D₂ ३ हि, D₁ १३ वा (for च)

11 B₄ om ११^{ab} (cf v 1 9) D₁ reads ११^{ab} in
marg (cf v 1 १०) —^a) V₁ M₂ महाराज (for महा
भाग) —^b) D₁ [अ] मित्रौजसा, D₂ ७ ११ १३ महौजसा, C₆ [आ]
दितेजसा (for [अ] दितेजसा) —^c) S₁ D₂ ३ ७ ११ १३ G₄
M₂ शक्ति, N₂ V₁ ३ B₁ ३ D₁ १३ शक्ति, V₂ B₃ शक्ति,
D₁ शक्ति, G₁ शक्त्या वै, M₂ शक्त्यते, Ck शक्ति (for
शक्ति) S₁ गंगा, N₂ V₁ ३ B₂ ३ D₂ ३ ११ १३ तेन, D₁ ३ ७ ११
(for नेतुं) V₁ पुनर्न गंग तातेन, D₁ पुनर्न शक्त्या चान्येन
Ck कश्चिदाशक्तिने श्रुत्योक्तिव्याख्याने प्रापयिष्ट । Ck —^d)
S₁ तेन, V₁ ३ D₂ ३ ७ ११ १३ T₂ M₁ गंगा (for
गङ्गा) V₄ B₄ प्रार्थयते, B₁ प्रार्थयता (for प्रार्थयता)
Ck Cm गङ्गाभावेन न शङ्किता, C₆ k t सा पुनर्नेतु न श (Ct
सा शङ्किता) Ck

12 ^a) S₁ N₂ V B₁ ३ D₁ ३ ७ ११ १३ समनुप्रासा, M₂ Ck
समनुप्रासा Cm g t as in text (for समनुप्रासा) —^b)
M₂ सायने (for प्रतिज्ञा) D₁ भरतर्षभ —^c) V₂ प्राप्त च, D₂
(before corr.) प्राप्तेरिति, D₁ M₂ प्राप्तेरिति (for प्राप्तेरिति)
M₂ [अ] नृप (for परम) —^d) D₁ यश (sic) (for
यश) S₁ त्रिदशवेदिने N₂ V B₁ ३ D₁ १०-१३ त्रिदश (B₄

lacuna) समत, D₁ त्रिदशसत्तम, D₂ ७ G₁ ३ त्रिदश समित,
D₂ त्रिदशसत्तम (corrupt) Ct परमसम (as in text)

13 ^a) D₁ D₂ ३ १३ तद्य, C₆ as in text
(for यच्च) V₄ गगावतरण कृत्वा (hypermetric) —^c)
S₁ N₂ V B₁ ३ D₁ ३ ७ ११ १३ M₂ महत्प्राप्त (D₁ °ता, M₂
°तो), D₁ सह प्राप्त (for भवान्प्राप्तो) —^d) C₆ [आ] यतनं
(as in text) M₂ भवात् (for मद्वा) S₁ N₂ V B₁
D₁ ३ ७ ११ १३ धर्मस्थान (S₁ D₁ १३ °ने) त्वयानघ (D₁ °घ),
Cm t as in text (for °)

14 ^a) N₂ V₁ ३ B (B₂ marg as in text also)
D₁ १३ पावयस्व, G₁ ३ पावयस्व, Cm g t as in text (for
प्रावयस्व) S₁ D₂ १३ प्रावय त्व स्वमाभानं, V₄ पावय सुत
मात्मान (sic) Ck परा प्रावयति स्मेपादिरप्यसहारेण
वाद् । Ck —^b) N₂ V₁ ३ B₁ ३ D₁ ३ ११ १३ M₂ सुरोत्तमः;
D₁ १३ सुरोत्तम (for नरोत्तम) S₁ D₂ १३ सरोचिते, V₁ D₁ ३ ७
स (D₂ प) दोदिते, V₂ सुरक्षिते, V₄ सरोचितं, B₃ (marg as
in text) सरोचिते, T₂ नरोचिते, M₂ सुरोदिते, Cm g k t
as in text (for सरोचित) —^c) S₁ N₂ V B₁ ३ D₁
D₁ ३ ७ ११ १३ G₁ ३ M₂ ३ श्रेष्ठ (for च्याप्त) —^d) N₂ B₃
D₁ १३ पुण्यफलाय च, V₂ पुण्यतमो भव, V₄ B₂ पुण्य
फलोद्भव (B₃ °वे), D₂ °भवेद्, D₇ °फलोद्भव (for पुण्यफलो
भव) Ck पुण्यफलमिति मवर्षी योऽजन्त । Ck

15 ^a) S₁ N₂ V₂ ३ B₁ ३ D₁ ३ ७ ११ १३ M₂ सलिलं
(for सर्वपात) —^b) S₁ N₂ V B₁ ३ D₁ ३ ७ ११ १३ M₂ च (D₁
स्व, B₄ स्वय) ययासुखं (B₁ °क्रम [m] सुखं), B₃ °सुत,
B₄ स्वय (for सलिलक्रियाम्) —^c) T₂ स्वर, Ck t as
in text (for स्वं) C₆ k t गम्यता (as in text) S₁
D₁ ३ ७ ११ १३ स्वगृह गम्यतामिति, N₂ V B₁ ३ D₁ १३ स्व (V₄
पु) लोके नर (V₂ सुवि) पुगव, D₂ स्वमलोके च गम्यता

16 ^a) S₁ D₁ १३ होदता (for देवता) N₂ V B₁
D₁ १३ इत्युक्त्वा भगवान्प्राप्ता भगीरथमरिंदम (B₁ D₁ १३ °म)
—^b) Ck Ct यथा भागतमितिच्छेद् । Ck S₁ D₁ १३ जगामाय,
D₁ ३ ७ ११ जगामाय, T₂ ३ G₄ यथागच्छद्, G₂ M₁ तदगच्छद्;
C₆ as in text (for तयागच्छद्) D₁ ३ ७ ११ प्रक्षालोकं S₁
D₂ प्रक्षालोक (D₂ °क) नितामद्, D₁ ३ प्रक्षालोकनितामद्
(for °) N₂ V B₁ ३ D₁ १३ जगाम सद्विने देवैर्नक्षत्रोक्त
मनामय, M₂ जगामागु °लो प्रक्षालोकं पुण्य महायशः

भगीरथोऽपि राजर्षिः कृत्वा सलिलमुत्तमम् ।
यथाक्रमं यथान्यायं सागराणां महायशाः ।
कृतोदकः शुची राजा स्वपुरं प्रविवेश ह ॥ १७
समृद्धार्थो नरश्रेष्ठ स्वराज्यं प्रशशास ह ।
प्रमुमोद च लोकस्तं नृपमासाद्य राघव ।

नटशोकः समृद्धार्थो बभूव विगतज्वरः ॥ १८
एष ते राम गङ्गाया विस्तरोऽभिहितो मया ।
स्वस्ति प्रामुहि भद्रं ते संध्याकालोऽतिवर्तते ॥ १९
धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं पुण्यमथापि च ।
इदमाख्यानमाख्यातं गङ्गावतरणं मया ॥ २०

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे त्रयश्चत्वारिंशः सर्गः ॥४३॥

17 ") Dt Ds ६९ ११ Ts तु (for ५) —^१) Ns V B
Dio १३ कृत्वा नेपा जलक्रिया, Gs Ms आया गारोमल्लेभस्ति
—After 17^{१३} Bs ins

947* हृतकृत्य तथारमानं मेने स परमयुति ।

—^०) Cg यथाक्रम (as in text) Ms जगामातु (for यथा
न्याय) Ts यथाक्रमं यथान्याय, Ct as in text (for ")

—^१) Ss Ds १३ रघूत्तम, Ds १ रघूदह (for महायशा) Dii
सर्वेषां चैव सत्तम, Ds रावणाणां रघूत्तम, Ms स्वपुरं रघुनन्दन.
—^०) C r m g t कृतोदक (as in text) Dii ततो (for
शुची) —Bs reads from 17^१ up to 18^१ in marg —^१)
Ds "गृह (for स्वपुर) Ts Gs हा (for ह) —For 17^{०११},
Ns V B Dio १३ subst

948* वितामहानां सर्वेषामयोष्यां पुनरागमम् ।

18 Bs reads 18^{०१} in marg (cf v 1 17) —^०)
Vs प्रभूतार्थो Ds Ts Gs रघुश्रेष्ठ (for नर^०) Vs
समृद्धा* **श्रेष्ठ —^१) Ds Ms स^० (for स्वराज्य) Cg
प्रशशास ह (as in text) Ss Ns V B Ds ३ १ १०-१३ राज्यं
पानुविदिता ह —^०) Ds प्रमोदं चाप (for प्रमुमोद च) —^१)
Vs Ds १३ राघवं, Ds राघव (sic) (for राघव) —Ns V B
Dio १३ om 18^१ —^०) Ds नट शोक (sic) Ds समहार्थो,
Dii समिद्धार्थो (for समृद्धार्थो)

19 ") Ns V B Dio १३ इति, C m g h t as in text
(for एष) —^१) Ds (before corr) विस्तारोः Dii
प्रमित्तारो (hypermetric) (for विस्तारो) —^१) Ss Ds
Ms [५] निव^०; Dii [५] निव^०, Gs निव^० Gs हि स^० (for
ऽतिवर्तते) Ns Vs २ ३ B Dio १३ संध्याकाल (Vs Bs "ले")
उपस्थितः Vs संध्याकालमुपागतः, Cg as in text (for ")

20 ") Bs स्वर्ग्यं (for धन्यं) —^१) Bs धन्यं (for
स्वर्ग्यं) Dt Ds Ts पुण्यं स्वर्ग्यम् (by transp) Ns V
B Dio १३ पारममेव, Ds १ ११ Ms पुण्यं (Vs "न्यं) तथैव
Ds Gs ३ Ms लोप (Ds वैष्यः Gs Ms लोच) प्रपाति
(for पुण्यमपाति) Ss Ds १३ पुण्यं स्वर्ग्यं तथैव च Ds स्वर्ग्यं
पुण्यं तथैव च Ds पुण्यं स्वर्ग्यमपाति च, Ds Ts Gs लोच्यं

(Gs "त्र) स्वर्ग्यं (Ts "न) मतीव च, Ms विन्य स्वर्ग्यमपाति च,
Ms पुण्यि स्वर्ग्यमेव च —After 20^{१३}, Dt Ds ६९ ११ S
(except Ms) ins Ss (marg , ins after 20

949* य ध्यायति विप्रेषु क्षत्रियेभ्यस्तेषु च ।
प्रीयन्ते पितरस्तस्य प्रीयन्ते देवतानि च ।

[(1 2) Gs मूयने (for first प्रीयन्ते)]

—^०) Dt Ds ३ आयुष्य, Ds १ १३ S अयमो (Ms "प्र") (for
आख्यातं) —^१) Ss Dt Ds ६९ ११ १२ १३ S शुभं, Ds १ गुरुः
Ds गुरु, Ds गुरु (for मया) —After 20, Ss (followed
by 949*) Dt Ds ६९ १३ S (except Ms) ins

950* य शृणोति च काङ्क्षत्य सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
सर्वं पापा प्रणश्यन्ति भायु कीर्तिश्च वर्धते ।

[(1 1) Ss om (submetric) Ms स (for य).
—(1 2) Note hiatus between the two halves. Ds Ts
Ms सर्वपापानि नश्यन्ति (for the prior half) Gs Ms (to
avoid hiatus) भायु (for भायु) Gs वर्धते (for वर्धते)]
Ss cont while Ds ११-१३ ins after 20

951* भारीरसीनि विदित्ता भुवनत्रयेऽस्मिन् ।
पीयूषनिर्मलजलप्रचलस्तं गङ्गा ।
प्रशान्तिनामिन्नगाक्कुमुपा धारयाम् ।
स्वैर हि शीलनि विद्वगमनस्वरम्या ।

[(1 2) Ds om जय —(1 3) Ss प्रशान्तिना (for
प्रशान्तिना)]

Colophon — Kāṇḍa name Ns Vs Ds ६९ om ११-१३
B आदि^०; Ds ३ अयोष्या^०. —Sarga name Ss Ns V B
Ds ३ २ १ १०-१३ गङ्गावतरणं (Ds २ १ १३ "ले") —Sarga १०
(figures words or both) Ss Vs १ ३ B १ ३ Ds १ १३ om
Ns Bs Ds ४५ १ ३ Ds ४६, १ ३ ४६, Ds Ds १३
S (except Ms) ४४ Ds २ १ ३५ Ds १३ द्वयार्थं—यज्ञे—काङ्गे—
वतरणं —After colophon Ts Gs conclude with
श्रीरामाय भम , Gs भीमने रामायुत्राय भमः Ms भी ...म .

विश्वामित्रचः श्रुत्वा राघवः सहलक्ष्मणः ।
विस्मयं परमं गत्वा विश्वामित्रमथाव्रवीत् ॥ १
अत्यद्भुतमिदं ब्रह्मन्कथितं परमं त्वया ।
गङ्गातरणं पुण्यं सागरस्य च पूरणम् ॥ २
तस्य सा शर्परी सर्पा सह सौमित्रिणा तदा ।
जगाम चिन्तयानस्य विश्वामित्रकथां शुभाम् ॥ ३
ततः प्रभाते निमले विश्वामित्रं महामुनिम् ।

उत्राच राघवो वाक्यं कृताह्निर्भरिंदमः ॥ ४
गता भगवती रात्रिः श्रोतव्यं परमं श्रुतम् ।
क्षणभूतेन सा रात्रिः संवृत्तेयं महततः ।
इमां चिन्तयतः मर्यां निरिलेन कथां तत्र ॥ ५
तराम सरितां श्रेष्ठां पुण्यां त्रिपथगां नदीम् ।
नौरथा हि सुरास्तीर्णा रुग्णीणां पुण्यकर्मणाम् ।
भगवन्तमिह प्राप्तं ज्ञात्वा त्वरितमागता ॥ ६

44

ॐ N₁ missing Sarga 44 (cf v 1 I 338)

1 ^a) Dt राघव (sic) N₂ V B D₁₀ 13 रामो
दशरथात्मन —^a) V₂ मवा (for गत्वा) —^a) N₂ V B
D₁₀ 13 प्रोवापेद सचत्तदा

2 M₁ om 2^{ab} —^a) V₂ इत्य, D₁₀ इत्य (for
अत्यद्भुतम्) N₂ V B D₁₀ 13 उपालयान (for इदं ब्रह्मन्)
—M₁ reads from 2^b up to the prior half of 952*
inf lin sec m —^b) D₁ परम कथितं (by transp)
D₂ मया (sic) (for त्वया) N₂ V B D₁₀ 13 त्वयाख्यातं
महामुने —S₁ om 2^{ad} —^a) D₂ [अ]वतारण —^a) Dt
D₁ 10 13 T₂ G₂ M₁ [अ]पि, D₂ प्र (for च) —After
2, S₁ (om 2^{ad} and 5^{ad}) N₂ V B Dt D₁ 3 5-13
G₁-3 M₁ 3 5 read 5^{adef} D₂ T₂ ins while G₂ M₁ 3
ins after 5

952* सतुष्टे (M₃ नौ) मनो ब्रह्मलियुक्त्वा विराम ह ।

3 D₂ om (hapl) 3 (cf Dt variant for 3^a)
—^a) S₁ B₁ 2 (before corr as in text) D₁ 3 5 7 9 11 13
तत्र, Cg h as in text (for तस्य) N₂ V B D₁₀ 13 M₁
रजनी (for शर्परी) N₂ V₁ 2 4 B D₁₀ 13 पुण्या, V₂ पूर्णा,
D₁ 7 9 11 क्षीणा, M₁ कृत्वा (for सवा) —^b) Dt D₂ 5
मम, D₁ (before corr as in text) पूर्णा (for सह) D₂
illeg for सौमित्रिणा V₂ गता, B₂ मुदा, Dt D₂ 5 7
सह, D₁ G₂ तया (for तदा) G₁ 3 transp सह and तदा
—^a) C₁ Ct विद्यामित्रेति सधोधनम् ॥ C₁ —For 3^{ad} S₁
N₂ V B D₁ 3 5 7 10-13 subst

953* गता चिन्तयतस्तस्य विश्वामित्रस्य सा कथाम् ।

[D₂ नैव (for तस्य)]

4 ^a) D₂ प्रभाते (sic) (for प्रभाते) —^a) Dt
D₂ 5 सधोधनं (for महामुनिम्) —^a) N₂ V B D₁₀ 13 राम
सहस्य (for राघवो वाक्यं) —^a) V₂ कृत्वा (for कृताह्नि
रिंदम) N₂ 1 1 2 4 B₁ 2 4 D₁₀ 13 इदं वच, D₂ M₁ भरिंदम
S₁ D₁ 3 5 7 11 13 कृत्वा (D₁ 11 'पौवा') द्विक्रिय (D₂ 7 13

^aया, D₁₁ ^aया), V₂ कृताह्निरिंद वच —After 4 D₂
reads 6^{ad}

5 M₂ reads ^{ab} after ^a —^a) M₁ नीता (for गता)
B₁ D₁₁ T₂ G₂ M₃ रात्री, C₁ रात्रि (as in text)
—^b) Dt D₂ 5 परमाद्भुत, D₁ (gloss) शानयती न कृया
स्वमादिना, यसाद्यत्परम श्रोतव्यं तच्छतमते रात्रिर्भगवती गता,
D₁₁ शुभ, G₂ M₁ अविल (for परम श्रुतम्), C₁ Cv
क्षणभूतेवेत्याह श्लोकस्य स्थानं गता भगवती रात्रिरित्येवार्थत्वा
मन्त्र पूर्वतः तु श्लोकप्रमादकृतम् ॥ C₁ क्षणभूतेव नौ रात्रिरिति
श्लोको गता भगवतीत्यर्थपरममुत्तरेण ॥ C₁ —S₁ (om 2^{ad}
and 5^{ad}) N₂ V B Dt D₁ 3 5 13 G₁-3 M₁ 3 (inf
lin sec m) 3 read 5^{adef} after 2 —^a) Cv g t क्षणभूतेव
(as in text) D₂ 5 14 T₂ 3 G₁ 3 M₁ Cg नौ, G₂ M₁ 3 नो
(for सा) T₂ क्षणभूते कथरात्री (sic) —^a) G₂ प्रवृत्तेयं
Dt D₂ 5 परतप, T₂ G₂ M₁ 3 महातपा —For 5^{ad}, N₂ V
B D₁₀ 13 subst

954* इय नो रजनी पुण्या शुभभूता भविष्यति ।

[V₂ पूर्णा (for पुण्या) B₁ नल (for शुभ)]

while D₁ 3 5 7 9 11 13 M₁ subst

955* क्षणभूता हि रात्रिर्मे वृत्तेय सुमहावत ।

[D₂ alleg from मू up to नि M₁ च मे रात्रिर् (for दि
रात्रिर्) D₁₁ त्वेय (for वृत्तेय) D₂ संवृत्तेय महत्तया (for the
post half)]

—^a) N₂ V₁ 3 B₁ 2 4 चिन्तयतामेव, B₂ चिन्तयता दृढ, D₁₀
स्व तपतामेव, D₁₂ ^aतो धैर्य, M₂ जेदय (sic) M₃ ^aतो नियं
V₂ वां चिन्तयामेव (sic) कथा —^a) D₂ मम (for तव) N₂
V B D₁₀ 13 कथां (V₂ मदा) पादमयावदा —After 5 G₂
M₁ 3 ins. 952*

6 ^a) D₂ भगवत्, D₂ 11 14 तं राम, D₂ म राम, D₂ M₁
तां राम; C₁ g as in text C₁ ताराम (for तराम) D₂ श्रेष्ठा
N₂ V B D₁₀ 13 सत् (V₂ स च) राम सहस्रश्रेष्ठा —^a) N₂
महात् D₂ रोगा, G₂ M₁ 3 गता (for पुण्या) S₁ V₂ D₂ 11
'गामिनी' (D₂ 'भी') B₂ त्रिदश, D₂ 3 13 'गामिनी' (for
त्रिपथगा नदीम्) —D₂ reads 6^{ad} after 4 —^a) D₂

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य महात्मनः ।
 संतारं कारयामास सर्पितंभः सराघवः ॥ ७
 उत्तरं तीरमासाद्य संपूज्यर्षिगणं ततः ।
 गङ्गाक्षले निविष्टास्ते मिशालां ददृशुः पुरीम् ॥ ८
 ततो मुनिरस्तूर्णं जगाम सहाराघवः ।
 मिशालां नगरीं रम्यां दिव्यां स्वर्गोपमां तदा ॥ ९
 अथ रामो महाप्राज्ञो विश्वामित्रं महामुनिम् ।

om (submetric) D₃ 7 11 च (for हि) D₁ 3 5 7 11 12
 सुविस्तीर्णा S₁ कथा श्रुता सुविस्तीर्णा —^d S₁ D₁ 3 5 7 11 12
 मुनीना, Cv r m g k as in text (for क्रीणा) D₁ पूर्व^e,
 D₁₁ भाविता मना (for पुण्यकर्मणाम्) —^d D₁₁ अनु^e, D₁₂
 प्रासा (for इह प्रास) —^e D₉ श्रुत्वा (for ज्ञात्वा)
 Cm k t स्वरितामागता (as in text) D₁-3 7 स्वा तारयितु
 मागता, D₁₁ सतारयितुमापगा —For 6^{de}, N₂ V B D₁₀ 13
 subst

956* हृदये नौ सुविस्तीर्णा सतारयितुमापगाम् ।
 भवन्त्वमिह संप्रासा हृद्वैरिति मतिर्मेम ।

{ (1 x) V₄ त्वये (sic) (for इत्य) B₂ आगता The
 post half=6^e in D₁₁ —B₁ om 1 2 —(1 2)
 V₁ अपि (for इह) V₄ B₂ 4 D₁₂ समाप्त V₄ [ए]मिर्
 (for [ए]ति) }

7 ^a Cm g तस्य (as in text) N₂ V B₄ 4 D₁₀ 13
 हृत्वेत्द् (for तस्य तद्) B₁ हृत्वेत्तद्वच श्रुत्वा —^d S₁
 D₁-3 5 7 11 12 महात्पि (D₅ मुनि) N₂ V B D₁₀ 13
 रामस्याङ्घ्रिकर्मण —^e D₂ 3 7 1* कथ (D₁₂ तार)यामास,
 Cg k t कारयामास (as in text) D₅ स नावं प्रेययामास,
 Cv r m as in text (for °) —^d D₁ 5 अदि (for
 सर्पि) N₂ V B D₁₀ 13 G₂ M₁ विश्वामित्रे (G₂ M₁
 मुनितस्यैर्) महामुनि, Dt D₂ 8 सर्पितस्य कौशिक, D₁₁
 अदिसेषस्य राघव, Cg as in text (for °)

8 D₃ om (hapl) 8-9^e —^a S₁ D₁-4 7 9 11 12 T₃
 M₃ 4 वृत्म् (for सीरम्) —^b S₁ D₁ संपूर्ण, D₂ संपू*
 (for संपूज्य) D₁₁ G₁ 3 [क]पिगणाम् (D₁ णत्) D₁₁
 णत्) All Cs संपूज्यर्षिगणं (as in text) D₂ G₂ तथा,
 D₁₄ T₁- तदा (for तत) N₂ V B D₁₀ 13 तत स
 मुनिपुंगव —After 8^{de}, G₂ M₁ ins

957* निरन्तरावपिगणं गंगारूढिनाविनम् ।

while D₁ ins 958* —D₇ om 8^e-9^e —^a S₁ D₁-3 5
 11 13 G₂ M₁ 4 तीरे (for क्षले) D₁₁ निशिष्टाव, T₂
 निशिष्टाम् (metathesis) G₂ M₁ निशिष्टाव (sic?) C₁ r
 m g निशिष्टाम् (as in text) —^d M₄ वीरान्ता —For
 8^{de} N₂ V B D₁₀ 13 subst D₁₁ ins after 8^{de}

958* अपदसन्न निरन्तरावपिगणं गंगारूढिनाविनम् ।

पप्रच्छ प्राञ्जलिर्भूत्वा विशालामुत्तमां पुरीम् ॥ १०
 कतरो राजन्शोभ्यं विशालायां महामुने ।
 श्रोतुमिच्छामि भद्रं ते परं कौतूहलं हि मे ॥ ११
 तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रामस्य मुनिपुंगवः ।
 आख्यातुं तत्समारम्भे विशालस्य पुरातनम् ॥ १२
 श्रूयतां राम शक्रस्य कथां कथयतः शुभाम् ।
 अस्मिन्देहो हि यद्वृत्तं शृणु तच्चेन राघव ॥ १३

[V₂ देवसनिमान् (for नियन्त्रात्)]

9 D₃ 7 om 9^{de} (cf v 1 8) D₁₁ reads 9^{de} as
 in N₂ for the first time before 8^{de} repeating it
 here —^a S₁ D₁₂ द्रष्टु G₁ 3 श्रेष्ठे (for तृणं) N₂ V
 B D₁₀ 13 स तान्संपूज्य विविधज् —^d N₂ V B D₁₀
 विशालस्य पुरीं M₄ वैशाली^e (for विशाला नगरीं) D₂ 9 T₂
 M₃ दिव्या रम्या (by transp) S₁ N₂ V B D₁ 3 5 7 10-13
 स्वर्गपुरीमिव, M₄ स्वर्गपुरोगमा

10 ^a N₂ B₃ D₁₀ 13 ततो, V B₁ 2 4 तत्र (for अथ)
 N₂ V B D₁₀ 13-मुद्दि, D₁₁ सेजा (for प्राज्ञे) —^b N₂
 V B D₁₀ 13 हृद् तदा (V₂ B₁ 2 वच B₂ तथा), D₂ तपोवनं
 (for महामुनिम्) —^c G₁ 3 M₂ प्राञ्जलि कृत्वा —^d N₂
 V B (B₂ marg also) D₁₀ 13 वै (B₁ वि) शालीं प्राप्य (V₂
 तत्र) तां, M₄ वैशालं पुरतस्तमं Ct विशाला परिप्रच्छ
 विशालाविषये प्रश्न कृतवानित्यर्थः ।

11 ^a N₂ V B Dt D₂ 9 11 13 कतमो, D₁₀ कतमो
 रामो (hypermetric) Cm g कतरो (as in text) B₂ राद्र
 (for तत्र) —^b S₁ N₂ V B D₂ 3 5 7 10 13 M₄ वि (M₄
 वै) शालस्य, Cm g k t विशालायां (as in text) N₂ V₁ 2 4
 B D₂ 3 7 10 13 महामन् —D₁₃ om (hapl ?) 11^e-12^e
 —^c Dt श्रोतुमि* N₂ V B D₁₀ भगवन् (for भद्रं ते)
 —^d N₂ V₂-4 B D₁₀ कौतूहल (V₄ लम्)सन्निवि (V₄ **)व

12 D₁₀ 12^{de} (cf v 1 11) —^a V B₂-4
 D₁ 3 10 [ए]त्द्, B₁ [ह]द् (for तद्) —^b N₂ V B
 D₁₀ विनि (V₁ 2 दि)तामन, G₃ * * (for मुनिपुंगव)
 S₁ D₁₂ 12 M₄ राघवस्य मुनिस्तदा D₁-3 7 11 राघवस्य महा
 मुनि —^c S₁ N₂ V B D₁-3 5 7 10-13 M₄ उपचक्राम (for
 तत्समारम्भे) —^d D₂ T₂ 3 G₂ M₃ Ct विशालाया D₁₁
 (after corr as in text) महामुने (for पुरातनम्) N₂ V
 B D₁₀ 13 विश्वामित्रो महानपा (V₁ यता, B₁ मुनि),
 Cv r m g k Ctp as in text (for °)

13 ^a Cg k श्रूयतां (as in text) S₁ D₁-3 5 7 11 13
 श्रुता (D₂ 2 तदा) मया भर्द्दस्य, N₂ V B D₁₀ 13 शुभा V₄
 तं [sic] मये (N₂ B₃ 4 मे) वै शक्रस्य M₄ श्रुते मे ताव
 शक्रस्य —^b N₂ V B D₁₀ 11 13 पुरा D₂ 7 कथा, D₁₃ om
 (for कथा) D₂ कथयता (for कथयत) N₂ B₃ कथा;
 V₁ 3 B₁ 2 D₁₀ 11 13 कथा V₄ 4 B₂ कथा, Dt D₂ Ct श्रुतां

पूर्वं कृतयुगे राम दितेः पुत्रा महानलाः ।
अदितेश्च महाभागा वीर्यवन्तः सुधामिनाः ॥ १४
ततस्तेषां नरश्रेष्ठ बुद्धिरासीन्महात्मनाम् ।
अमरा निर्नराश्चैव कथं स्याम निरामयाः ॥ १५

तेषां चिन्तयतां राम बुद्धिरासीद्विपश्चिताम् ।
क्षीरोदमथनं कृत्वा रसं प्राप्स्याम तत्र वै ॥ १६
ततो निश्चिन्त्य मथनं योक्त्रं कृत्वा च वासुकिम् ।
मन्थानं मन्दरं कृत्वा ममन्धुरमितौजसः ॥ १७

D 1: शुभा (for शुभाम्) — G 1: repeat 13rd consecutively with first time var as in S 1 —^a) Ck तस्मिन्देदो
D 1: T 2: G 2: M 1: देदो तु, G 1: M 2: हि देदो (by transp) S 1: D 1: 3 5 7 11 12 ता मे निगदतो वस, N 2: V B D 10 13
यथा विवि समा (V 2: B 1: 2 पदा) मध्ये —^a) Cg शृणु (as in text) N 2: V B D 10 13 शृण्व (V 1: 2 4 D 13 शृ) ता मम
(B 1: तामवि, sup lin also as in V 1) Ct as in text (for शृणु तत्वेन)

14 ^a) N 2: V B D 10 13 आसन्, Cg as in text (for पूर्व) S 1: D 1: 5 11 12 M 2: वीर (for राम) —^b) S 1: D 13 दिनि, Cg as in text (for दिते) —^c) D 1: अदितेश्च D 1: T 2: तु (for च) S 1: D 1: 3 5 7 11 12 समानार्था, N 2: V B D 10 13 वीया, Dt भा०, D 2: भाग M 2: बाहो (for महाभागा) — G 4: damaged from धा in 14th up to म् in 15th M 4 repeats 4th consecutively —^d) S 1: D 1: 11 12 महाबला, Ct as in text (for सुधामिना) N 2: V B D 10 13 स्व (V 1: D 13 सु) वीर्यवल्दर्यिता — After 14 N 2: V B D 10 11 13 ins while S 1 (marg) ins 1 x only after 15th

959* भातर र्स्पर्धन पुत्रा कश्यपस्य महामन ।
मातृवसेया सापत्ना परस्परजितौपय ।

{ (I 1) N 2: V 1 अतर — (I 2) V 1 मातृवसेया (hy permetric) V 2: D 1: सापत्ना }

15 G 4: damaged up to म् (cf v 1 14) —^a) Dt D 1: 6 9 T 2: G 1: M 2: व्याघ्र (for नरश्रेष्ठ) S 1: marg D 2: विपश्चिता (for महात्मनाम्) D 2: बुद्धि ११ पश्चिता (for १४) N 2: V B D 10 13 तेषा (B 1: न) किल समेताना (V 4 मर्षाना) बुद्धिरासीन्महौचना — After 15th S 1 (m) ins 1 x of 959*, then repeats 15th as in N 2: — D 1: 12 om 15th—16th —^c) Cg वचरा, Ct निचरा (for निर्नरासः) N 2: V B D 10 11 12 अनराब्रामरासः, Dt D 1: 6 9 14 T G 1: 4 M 2: अमरा विज्व (Dt D 1: 6 9 विन, M 2: वच) रासः —^d) S 1: N 2: V B D 10 13 कथं (V 3: sup lin) स्यामिति रावय

16 D 1: 12 om 16th (cf v 1 15) —^a) B 1: D 2: ण्व, B 2: ण्व, Dt D 1: 6 9 तत्र (for राम) V 2: आमन्त्रयुगे राम (cf v 1 12th) —^b) N 2: चासीद् S 1: V 4: B 1: D 1: विनिश्चिता N 2: V 1: B 4: D 10 13 मुनिश्चिता (V 1: B 4: ता) (for विपश्चिताम्) D 1: 11 T 2: G 1: M 2: बुद्धिरासीन् (G 4: ११) हामना, D 2: 7 सर्वेषा च महामना — S 1: repeats 16th consecutively with first time var as in N 2: —^c) S 1: D 1: 12 अयनाद्, D 1: 3 7 अयने, G 1: अयनं (metathesis) (for अयनं) S 1: D 1: 11 वीर, D 2: 7 चैव (for वृत्वा) D 2:

क्षीरोदमनोद्गत —^a) S 1: D 1: 3 5 7 12 सभाय (for प्राप्स्याम) Cg क तत्र (as in text) V 2: रम प्राप्स्यामहेत्र वै — For 16th N 2: V B D 10 11 12 M 4 subst

960* क्षीरोद् सागर सर्वे मक्षीम सहिता वयम् ।

{ N 2: V 4: B 2: D 10 13 क्षीरोदमागर }

All the above MSS cont (subst 1 5 for 17th) while S 1: D 1: 3 5 7 12 ins after 16

961* नार्वाण्यी समाह्वय प्रक्षिप्य च ततस्तत ।

यद्रोत्यस्यते सार तत्वास्यामस्ततो वयम् ।

नेनाजरासरा लोके मविष्यामो गतञ्जरा ।

तेजोवीर्यबलोवेता कान्तियुतिसमन्विता ।

इति ते निश्चय कृत्वा ममन्धुरवैरण लयम् । [5]

{ D 1: 3 om (hapl) 1 x — (I 1) S 1: D 1: 3 5 7 12 सर्वौषधी (D 1: वी) N 2: B 2: ह्यय D 1: श्रिय D 1: श्रिय M 2: नीय (for समाह्वय) V 2: तु ते (for तत) — (I 2) V 4 यम्, D 2: तद् (for तद्) N 2: V 2: 4 B 1: 3 D 10 M 2: तत्र D 1: जात्र (for अत्र) D 2: [ज] तलो (sic) (for [ज] लस्ते) V 4 सार्व, D 2: राम (sic) (for सार) V 4: D 1: 12 त (for तद्) V 2: विनाम्, M 2: तत्र विष्यामहे वय (for the post half) — (I 3) S 1: D 1: 12 तथा D 1: नेन (for नेन) M 2: [अ] मराज्रा (by transp) D 1: रात्र (for लेके) — (I 4) S 1: D 1: 3 5 7 9 11 12 बलोमत्ता D 1: कयाणेन, D 2: बाला दति D 2: कालीलोचन (sic) D 2: कयायातिमज्जिता (sic) M 4: सतवतो निरामया (for the post half) — (I 5) N 2: B 2: D 10 निश्चिन (for निश्चय) D 2: च कृत्वा (hypermetric) V 1: damaged for ममन्धुर }

17 ^a) D 2: मनसा G 1: 3 मयितु (for मयन) S 1: D 1: 3 5 7 12 तथ निश्चिन्त्य मनसा —^b) S 1 (gloss रज्जु) D 1: 3 5 7 12 नेत्र, Cg k 4 as in text (for योक्त्रं) G 1: M 2: transp योक्त्र and हृत्वा S 1: D 1: 2 5 7 12 तु D 2: [ज] य (for च) — For 17th N 2: V B D 10 11 12 M 4 subst 1 5 of 961* —^c) G 2: संयाद G 4: damaged from मन्धुर up to D 2: 3 5 12 चैव (for कृत्वा) —^d) S 1: वरणाह्वय D 1: 3 5 12 वरुणोचमा N 2: V B D 10 11 12 M 2: नेत्र हृत्वा च (B 2: D 10 तु) वासुकि (cf v 1 17th) — After 17 Dt D 1: 6 9 T 2: M 2: ins a passage given in App 1 (No 8) cf the remarks in Cg k below endors ng its omission from the text Cg यथयथ काण्डागुपतिरपेक्षिता तयाप्युत्तरक्याशेषेन सगामुरस्य ण्व प्रचानतयोपाच इति बोध्यम्, Cl. अत्र मम भुरश्रुतीम इत्यत्र उर हालहाहनेत्यदि प्रजिपादक पुराणान्तरस्यमत्र प्रस्थित्याम्यत्राचकार । नातामि प्राचीनमुशुद्धमुत्तमुत्तु ते श्लोका रचयन्ते । Cg

उच्चैःश्रवा ह्यश्रेष्ठो मणिरत्नं च कौस्तुभम् ।

उदतिष्ठन्नश्रेष्ठ तथैवामृतमुत्तमम् ॥ २४

अथ तस्य कृते राम महानासीत्कुलक्षयः ।

वा°) V३ B३ स्थाना, M३ मन्त्र (archaic) (for तया) V३
तेनैवा अवलम्बया (sic) (for the post half)]

24 M३ reads 24^{ab} after App 1 (No 8 g) —
Śi V B३ २ ४ D३ २ ५ ७ १०-१३ च (Śi V३ D३ १० तु, V३ [अ] ध)
तया (B३ °या) थो, M३ B३ तु भद्राथो, G३ ३ च तुरगो, G३
इति°, M३ आश्वत्थो (for ह्यश्रेष्ठो) —After 24^{ab}, G३-३
M३-३ ins

966* उदतिष्ठन्नश्रेष्ठ सोमदेवस्तथैव च ।
तुरगं देवराजाय कौस्तुभं केशवाय च ।
सुरासुरा सगन्धर्व ममन्थु क्षीरवाम्बिम् ।
ततो दीर्घेण कालेन चोत्पन्ना कमलालया । [5]
अर्थाव रूपसपत्ना प्रथमे वयमि स्थिता ।
सर्वामरणपूर्णद्वी सर्वलक्षणलक्षिता ।
मकुटाद्विचित्राद्वी नीलकुङ्किमाम्बुजा ।
वसहाटकसकताया मुक्तामरणमुपिता ।
बन्धा यस्या प्रभावेन इन्द्रं सुधैर्यमाप्नुवात् ।
चतुर्भुजा महादेवी पद्महस्ता वरानना । [10]
सा च देवी तयोपस्था पद्मा श्रीर्लोकविभुता ।
सा पद्मा पद्मनामस्य तयो वक्षस्थले हरे ।

[(1 2) M३ तुरगो (for तुग) —After 1 2 G३ M३ ins
App 1 (No 8 g) —(1 3) G३ ३ M३ च (for स) G३ ३
चुपुनुरतिथिं तदा, M३ क्षेमयामागुणय (for the post half)
—(1 6) M३ सवना (for स्त्रिता) —(1 7) G३ ३ M३
मकुटाया (for मकुटादि) —(1 8) M३ मुक्ताहवाम्बुजा
(for the post half) —G३ M३ ३ om 1 9 —Note
hiatus between the two halves —(1 9) M३ प्रभावेन
(for प्रभावेन) —(1 11) G३ ३ वनेवपूजिता, M३ पूजिता
(for श्रीलोकविभुता)]

—^a) M३ प्रतिनिष्ठम् —^a) M३ तदेव (for तथैव) —For
24^{ab}, Śi D३-२ ५ ७ ११ १३ subst 1 x of 966*

25 °) Śi D३-२ ५ ७ ११ १३ T३ M३ अमृतस्य (for अथ
तस्य) Du करो (sic) (for कृते) M३ वीर (for राम)
—After 25^{ab}, Du ins 1 7-8 of 967* —D३ २ ५ ७ ११ १३
om (hapl) Śi reads in marg 25^{ab} including
969* —^a) Śi D३ D३ २ ५ ७ ११ तिष्ठितुगानथोव (D३ °वृ) वन् ।
—For 24^{ab}-25 °) Śi V B D३ १३ subst while Śi
D३-२ ५ ७ ११ १३ subst 1 x only for 24^{ab} and cont
1 2-5 then Du only ins 1 7-8 after 25^{ab}, M३ ३ ins
1 2-5 after 1 2 of 969*

967* तस्मादेतत्समुद्भवमुद्भवमुद्भवमुद्भवम् ।
अमृतानन्तर चापि धन्वन्तरिरावत ।
पैरारुमृतस्यैव विप्रलम्भं कम्पमनुभूत् ।

अदितेस्तु ततः पुत्रा दितेः पुत्रानमृदयन् ॥ २५

अदितेरामजा वीरा दितेः पुत्राभिजग्निरे ।

तस्मिन्चोरे महायुद्धे दैत्यादिलयोर्युद्धम् ॥ २६

धन्वन्तरेस्तुद्भूत विष लोकाविषादहृत् ।
त नागा जगृहु सर्वं ज्वलनादिलयसन्निभम् । [5]
तत्रास्मृतायै देवानामसुराणां च विग्रहः ।
आसीद्विलवता राम लोकक्षयकरो महान् ।
तस्मिन्विषमर्दे महानि तेषामभिवर्तेजसाम् ।

[(1 2) Śi D३-२ ५ ७ ११ १३ पव (for एतव) —V३ D३ १०
om (hapl) from the post half up to the prior
half of 1 4 —(1 2) Śi धन्वन्तरि (for धन्वन्तरि) —(1
3) V३ om the prior half V३ औपपन्न, Du अमृतं (for
अमृतस्य) B३ [ए] व, D३ २ ५ (before corr as above) [ए] व
(for [ए] व) B३ D३ वैपराजोद् (for the prior half)
V३ D३ १३ १३ पूर्ण (for पूर्ण) —M३ transp 1 4 and 5
—(1 4) Śi धन्वन्तरि, D३ २ धन्वन्तरि V३ D३ अमृत, V३
Du अमृत, D३ तद् (for अमृत) D३ धन्वन्तरिमुद्भव (for
the prior half) Śi D३ १३ १३ विष मनविषाद (for the
post half) —(1 5) D३ २ ५ वदता, D३ तच्च नो (for त
नागा) M३ सर्वं (for सर्वं) M३ नर्वत्त (for सन्निभम्)
—For ins see below —(1 6) B३ तदा (for तत्र)
—(1 8) B३ युद्धं च (for विप्रलम्भं)]
—After 1 5 Śi D३-२ ५ ७ ११ १३ १३ ins

968* दृष्ट्वा देवान्मृतो धावन्नमृतं चापि भास्वरम् ।
[D३-२ ५ ७ ११ दृष्ट्वा (for दृष्ट्वा) D३-२ ५ ७ ११ उपा° (for ततो
धावन्) D३ वापि D३ २ ५ भास्वर]
—After 25 Śi (marg) Dt D३ २ ५ ७ ११ S ins
969* एकोऽभ्यागमन्तर्ध्वं वसुधा राक्षसैः सह ।
सुद्धमासी नदाधोर वीर त्रेलोक्यमोहनम् ।
वदता क्षय तव सर्वं तदा विष्णुमोहावले ।
अमृत सोऽहस्त्वं मायाभास्याय मोहिनीम् ।
ये तस्मिन्मुदये विष्णुमक्षरं पुत्रीणामसु । [5]
सविहासे तदा युद्धे विष्णुना प्रभविष्णुना ।

[(1 1) Śi Dt D३ २ ५ ७ ११ T३ M३ अभ्यागम्,
M३ °भ्यागम् (for एकोऽभ्यागम्) D३ १३ T३ ३ G३ M३ ३
(to avoid hiatus) वसुधा, T३ तुतये (for वसुधा) —(1 2)
G३ वीर (sic), M३ विज (for वीर) —After 1 2, G३
ins 1 2-5 of 967* —(1 3) M३ क्षय T३ गता
सर्वं G३ ३ मदा (for तदा) —(1 4) Śi अराय, M३ वा°
(for मोहनाय) M३ मोहनी —(1 5) G३ ३ M३ तदा°, M३
न्यासिमुदा (for गतिमुदा) D३ १३ S (except T३) अक्षय
—(1 6) D३ सविहासे, T३ ३ संहारा, G३ सविहासे, G३
संहारम्]

26 °) V३ चासना, D३ °जह, D३ आसनाया (sic),
M३ °जान्, G३ h as in text (for आसना) Śi D३ २ ५ ७ ११ १३

निहत्य दितिपुत्रांस्तु राज्यं प्राप्य पुरंदरः ।

शशास मुदितो लोकान्सर्पिसंधान्सचारणान् ॥ २७

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे चतुश्चत्वारिंशः सर्गः ॥ ४४ ॥

४५

हतेषु तेषु पुत्रेषु दितिः परमदुःखिता ।
मारीचं काश्यपं राम भर्तारमिदमब्रवीत् ॥ १
हतपुत्रास्मि भगनंस्तव पुत्रैर्महाबलैः ।
शक्रहन्तारमिच्छामि पुत्रं दीर्घतपोऽर्जितम् ॥ २

साहं तपश्चरिष्यामि गर्भं मे दातुमर्हसि ।
ईदृशं शक्रहन्तारं त्वमनुज्ञातुमर्हसि ॥ ३
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा मारीचः काश्यपस्तदा ।
प्रत्युवाच महातेजा दितिं परमदुःखिताम् ॥ ४

45

§ N¹ missing Sarga 45 (cf v l I 33 8)

तत्र, N² V B D¹⁰ 13 राम, D² 7 9 तेन, D⁴ T² s G⁴ M²-4
धीर (for वीरा) —⁵) D⁵ 12 दिति D² 7 9 विजसिरे N² V
B D¹⁰ 13 निजमुस्तान् (V² "अन्तस्ते, B¹ "मुस्ताश्च, B⁴ "अमुस्ते)
दिते सुताम् —N² V B D¹-3 5 7 9-13 om S¹ reads in
marg 26^d —^c) S¹ Dt D² s ऋस्मिन्, Cg k तस्मिन् (as
in text) D⁴ T² M² transp घरे and युदे —^d) S¹
दैत्येय (sic) (for दैतेय) M² दैत्यानादिलविग्रहे
27 ") Cg k च, Ct तु (as in text) S¹ N² V B
D¹-3 5 7 9-13 च (S¹ D¹-3 5 7 9 11 12 तु) दिते पुत्रान्, G²
M² "अ (for दितिपुत्रास्तु) —^e) D⁴ मुदितान् —^f) G¹
M² 4 सर्पिसय सचारण —For 27^{ad} S¹ B (B¹ 2 4 read
after 971^a) D¹-3 5 7 9 11 12 subst

970* विन्वरो निहतामिश्रो मुमुदे विवृषे सह ।

तदा तु मुदिता लोका सर्पिसंधा सचारणा ।

[(1 x) D² वै^o D⁷ विविषे (for विवृषे) —(1 2)
D¹ नादाच D⁷ सता^o (for तदा तु) D¹ कृषि (for सर्पे)]
—B² cont N² V D¹⁰ 13 subst for 27^{ad}, while
B¹ 2 4 ins after 27^{ad}, followed by 970*

971* मुनोददि परां प्राप्य सर्वदेवामिषूजित ।

[V¹ प्रनोददि, V² अमोद स्वपुर राम (for the prior half)
V² [अ]मिषूजित (sic)]

Colophon D¹-3 5 7 11 13 om (continue the
Sarga) —Kanda name S¹ N² V² D⁴ om V¹ 2 B
D¹⁰ आदि^o —After Kanda name B¹ ins बालचरिते
—Sarga name N² V² 2 4 B D¹⁰ अमृतोत्पत्ति, V²
दितिसुतवधो, D² अमृतोत्पादन —Sarga no (figures
words or both) V¹ 4 om S¹ (marg) V² Dt D⁴ 2 4
S (except M²) 45 N² B² s D¹⁰ 46 V² D² 48 D¹²
—कान्दे—मयने—त्पत्ति 46 —After colophon T² G² 2 4
M² conclude with श्रीरामाय नम, G² श्रीमते रामानुजाय
नम

1 ") Ck प्रहतेषु M² 4 दिति (for तेषु) S¹ D¹-3 7 11 13
हतेषु पुत्रेषु दिति, N² V B D¹⁰ 13 हतपुत्रा सतो देवैर्, D²
हतपुत्रेषु च दिति —^b) S¹ D¹-3 5 7 11 12 पर तु खेन मोदिता
—^c) D¹ मारीचि, D¹² मरीच, Cg g त मारीच (as in text)
S¹ N² V B Dt D¹-3 5-13 T² कश्यपे N² V¹ 4 B¹-3
D¹⁰ 13 देवी, V² 2 B² देव, Dt D² 2 6 G² M² नाम (for राम)

2 ") T² हत पुत्रास्ये (sic) —^b) S¹ Dt D¹ 2 5-6 13
महाममि, D² महामुमि (sic) (for महाबलै) N² V B
D¹⁰ 13 M² पुत्रे (V² सुते) शक्रादिमित्त्व —^c) D¹ हतारिम्
(for हन्तारम्) B² ह** (for हृच्छामि) § Cg तपोजितं
तपसा ऊर्जितं हृदम् आर्ये संधि 1, Ck दीर्घेण तपसा आर्जितं
दीर्घतपोर्जित 1, Ct दीर्घेण तपसाजितम् 1, §

3 ") B² D¹⁰ 13 करिष्यामि, D² चरिष्यास् (sic) (for
चरिष्यामि) —^b) D¹² T G² पुत्र, Cg as in text (for
गर्भं) S¹ (before corr as in N²) मे धातुम्, N² V B
D¹ 3 5 7 9-13 आधातुम्, D² आधातुम्, D¹² मां धातुम् (for
मे दातुम्) M² तदनुज्ञातुमर्हसि —After 3^{ad}, D¹² T² s G²
ins

972* बलवन्तं महैष्यासं श्रितित्तं समं (G² सौम्य) दर्शनम् ।
—D¹² M² om (hapi) 3^{ad} —^c) N² V B D¹⁰ 11 13
M² तत्र से, Dt D² 6 G² M² Cg k t ईश्वरं, Cg tp as in
text (for ईदृशं) —^d) D¹ तं त्वन्, D² 3 7 अनुज्ञातुं त्वम्
(by transp) (for त्वमनुज्ञातुम्) D² अर्हति N² V B
D¹⁰ 11 13 M² पुत्रे त्वं अनयिष्यसि

4 ") D¹² दितेय (for तस्याम्) D¹² तं (for तद्)
—^b) N² V B Dt D (except D¹²) T² ब्रह्मपत्त B¹ D¹
तथा (for तदा)

एवं भवतु भद्रं ते शुचिर्मव तपोघने ।
 जनयिष्यमि पुत्रं त्वं शक्रहन्तारमाहने ॥ ५
 पूर्णं वर्षमहमे तु शुचिर्षदि मरिष्यमि ।
 पुत्रं ध्रुवोक्तपहन्तारं मत्तस्त्वं जनयिष्यमि ॥ ६
 एरुक्त्या महावेजाः पाणिना म ममाजं ताम् ।
 समालम्प्य ततः स्वस्मीत्युक्त्वा म तपमे यया ॥ ७
 गते तस्मिन्नरथेष्ट दिनिः परमहर्षिता ।

बुधव्रतनामाय तपस्तेपे मुदात्तम् ॥ ८
 तपस्तस्यां हि बुधव्रत्यां परिचर्या चकार ह ।
 सहस्राधो नरथेष्ट परया गुणमपदा ॥ ९
 अग्निं बुधव्रत्यामपः फलं मूलं तथैव च ।
 न्यवेदयत्सहस्राधो यवान्यदपि काङ्क्षितम् ॥ १०
 गात्रमंशान्नेधैर श्रमापनयनस्तथा ।
 शक्रः सर्वेषु कालेषु दिनिं परिचकार ह ॥ ११

अथ वर्षसहस्रे तु दशोने रघुनन्दन ।
 दितिः परमसंप्रीता सहस्राक्षमथावती ॥ १२
 तपश्चरन्त्या वर्षाणि दश वीर्यवतां वर ।
 अवशिष्टानि भद्रं ते भ्रातरं द्रक्ष्यसे ततः ॥ १३
 तमहं त्वत्कृते पुत्र समाधास्ये जयोत्सुकम् ।
 त्रैलोक्यविजयं पुत्र सह भोक्ष्यसि विज्वरः ॥ १४

12 ^{ab}) \tilde{N}_2 V B D₁ 10 11 13 गते; Dt D₆ 8 पूर्णै; Cm g k as in text (for अथ) B₄ सर्वै (for वर्ष-). \tilde{S}_1 D₂ 3 5 7 12 -शते पूर्णै; Dt D₄ 6 8 9 सा; T₂ सहस्रेषु (for सहस्रे तु). \tilde{S}_1 D₂ 3 5 7 12 दशमे; V₂ दर्शने; D₁ किंचोने; G₄ संपूर्णै; Cm g,k,t as in text (for दशोने) T₂ अथ वर्षसह-
 खावसने सा रघुनन्दन. —^d) Dt D₄ 6 8 'सहस्रा; D₂ 3 5 7 12 M₄ 'सुप्रीता; D₁₁ 'संतुष्टा; D₁₄ ' (lacuna) संप्रीता (for परमसंप्रीता). —^d) \tilde{S}_1 D₂ 3 5 7 11 12 उवाच ह; T₃ अभाषत (for अथावती). —After 12, D₄ 9 14 S (except M₄) Ck ins, \tilde{S}_1 Dt D₆ 8 ins after 14.

975* याचितेन सुरश्रेष्ठ पित्रा नव महात्मना ।
 वरो वर्षसहस्रान्ते दशो मम सुतं प्रति ।

[\tilde{S}_1 reads 1 1 in marg —(1 1) D₁₄ T₁ 2 G₁ 3 4 M₃ T₃ तव पित्रा (by transp.), (for पित्रा तव) —(1. 2) \tilde{S}_1 Dt D₄ 6 8 मम दत्त (by transp.) (for दत्तो मम)]

13 ^b) D₉ (before corr. as in text) दशोनानि महामते. —For 12^c-13^b, \tilde{N}_2 V B D₁ 10 13 subst., while \tilde{S}_1 D₂ 3 5 7 11 12 M₄ subst. 1 2 only for 13^{ab}.

976* दितिः प्रीता सहस्राक्षमिदं वचनमब्रवीत् ।
 प्रीता तेऽहं सहस्राक्ष दशवर्षाणि पुत्रक ।

[(1. 2) V₃ D₂ 3 7 [अ] ह ते (by transp.) M₄ सुरश्रेष्ठ (for सहस्राक्ष) D₁ प्रीतासि तेह देवैर् (for the prior half)]

—D₉ om 13^c-14. —^c) \tilde{N}_2 V B D₁ 10 M₄ 'शेषाणि (for 'शिष्टाणि). —^d) \tilde{N}_2 V B D₁ 10 दृष्टासि भ्रातरं; D₁ द्रक्ष्यसे भ्रातरं (by transp.), T₃ 'वीक्ष्यसे (for भ्रातरं द्र-
 क्ष्यसे)

14 D₉ om. 14 (cf v 1 13). —^a) B₂ 4 तद्; Dt D₆ 8 Ct यम्; Cg k as in text (for तम्) V₄ उज्यते (for स्वकृते) D₂ T₂ G₂ पुत्रं; Ck t as in text (for पुत्र). —^b) Dt D₄ 6 8 G₁ 4 तम्; Cg k as in text (for तम्). \tilde{N}_2 V B D₁ 10 यथा तथा (D₁ transp.) (for जयोत्सु-
 कम्). —^c) \tilde{S}_1 D₂ 3 5 7 11 12 त्रैलोक्यविजयं; D₁ 13 ** क्य निखिलै; Cg k,t 'विजयं (as in text). D₄ 6 11 T G₄ पुत्रं. —^d) \tilde{S}_1 D₂ 3 7 11 12 भोक्ष्यसि; D₁₁ 'से सह विज्वरी (D₂ 'द्रे; [sic], D₁₁ 'ज्वर:); D₅ भोक्ष्यसि सह विज्वर:; T₃ सहसा

एवमुक्त्वा दितिः शक्रं प्राप्ते मध्यं दिवाकरे ।
 निद्रयापहता देवी पादौ कृत्वाथ शीर्षतः ॥ १५
 दृष्ट्वा तामशुचिं शक्रः पादतः कृतमूर्ध्वजाम् ।
 शिरःस्थाने कृतौ पादौ जहास च मुमोद च ॥ १६
 तस्याः शरीरविवरं विवेश च पुरंदरः ।
 गर्भं च सप्तधा राम विभेद परमात्मवान् ॥ १७

राक्षसेश्वर —For 14^{ad}, \tilde{N}_2 V (V₁ reads twice) B D₁ 10 13 M₄ subst.

977* सौभ्राणेयं महितस्त्वं हि राज्यमवाप्स्यसि ।

[B सौभ्राणेय (submetric) (for सौभ्राणेय). V₄ 'च, D₁ तया (for त्वं हि) V₁ (first time) सत्वाप्यसि (hyper-
 metric) D₁ 'व्यसि (sic) (for अवाप्यसि). V₂ त्वं राज्य
 समाप्यसि, M₄ reads the line of 14^d (for the post.
 half)]

—After 14, \tilde{S}_1 Dt D₆ 8 ins 975*.

15 ^a) T₁ damaged from व up to दि. Dt D₆ 8 इत्युक्त्वा च; Cm g एवमुक्त्वा (as in text) \tilde{N}_2 V B D₁ 10 13 ततः (for दितिः). Dt D₄ 6 8 9 तत्र (for शक्रं). —^b) D₁₁ मध्ये (for मध्यं) Dt D₄ 6 8 Ct दिनेष्वरे (for दिवाकरे). \tilde{N}_2 V B₂ 4 D₁ 10 13 M₄ विश्वना शक्रसन्निधौ; B₁ विश्वना रघुनन्दनम्. Cm k as in text (for ^b) —M₄ om. 15^c-16^b. —^c) \tilde{S}_1 'हतां, T₃ 'कृता, Cm t as in text (for [अ] पहता) \tilde{S}_1 देवी. D₁ 13 reads ' as in \tilde{N}_2 and om. (hapl.) 15^d-16^c. —^d) D₁₄ दृष्ट्वा; Cm g k t as in text (for कृत्वा) \tilde{S}_1 D₂ 6 7 12 तु; D₁₁ तु; G₁ 3 च (for [अ]थ). \tilde{N}_2 V B D₁ 10 कृतपादा शिरःस्थाने दिनि. सुव्याप (D₁ 'सा च) रावच.

16 D₁ 13 om 16^{ab}, M₄ om. 16^{ab} (cf. v 1 15). D₁ om 16. —^a) \tilde{S}_1 D₂ 3 5 11 12 अनुविः. —^b) \tilde{S}_1 Dt D₄ 6 8 9 11 12 G₂ M₃ 3 Ct पादयोः; Cm g पादतः (as in text). —^c) \tilde{S}_1 D₂ हतायां शिरसः स्थाने; \tilde{N}_2 V B D₂ 3 5 10 12 कृतपादां शिरःस्थाने; M₄ 'कृतपादा; Cm g k t as in text (for 'च). —^d) Dt D₆ 8 स (for first ch). \tilde{S}_1 D₅ 11 12 'मुदितो वि; \tilde{N}_2 B₂ 4 D₁ 10 मुमोद च जहास च (by transp.), V B₁ 2 D₁ 2 मुमुदे च जहास (D₁ 3 'च); D₂ 3 7 'मुमुदे वि; M₄ संमुव्याप मुमोह च, Cm as in text.

17 ^a) \tilde{S}_1 \tilde{N}_2 V B D₁ 3 5 7 10 13 शरीरं विरुतं (D₃ ***, D₁₁ 'हृतं); Cg,k t as in text (for शरीर-
 निर) —^b) D₃ (before corr.) विनिद्र. \tilde{S}_1 D₅ 7 11 13 स (for च). Dt D₄ 6 8 T₃ G₁ 3 4 Ck प्रविशेत्; D₂ स विवेश (for विवेश च). \tilde{N}_2 V B D₁ 10 13 M₄ प्रविश्य बल (V₃ रण) सृन्दन. —^c) \tilde{N}_2 V B D₁ 10 M₄ विभेद; D₁₁ तं गर्भं; D₂ 13 विच्छेद (for गर्भं च). \tilde{N}_2 V B D₁ 10 13 M₄ गर्भं (for राम). —^d) Dt D₆ 8 विच्छेद (for विभेद). D₁₁ परमात्मवान्.

मिथमानस्ततो गर्भो वज्रेण क्षतपर्षणा ।
रुदो मुखं राम ततो दितिरुच्यत ॥ १८
मा रुदो मा रुदथेति गर्भं शक्रोऽभ्यभाषत ।
विभेदं च महातेजा रुदन्तमपि वामनः ॥ १९
न हन्तव्यो न हन्तव्य इत्येवं दितिरब्रवीत् ।

निष्पपात ततः शक्रो मातुर्चनगौरवात् ॥ २०
प्राञ्जलिर्जसहितो दितिं शक्रोऽभ्यभाषत ।
अशुचिर्देवि सुप्तसि पादयोः कृतमूर्धजा ॥ २१
तदन्तरमहं लब्ध्वा शक्रहन्तारमाहवे ।
अभिन्दं सप्तधा देवि तन्मे त्वं धन्तुमर्हसि ॥ २२

इति श्रीरामायणे बालमाण्डवे पञ्चचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४५ ॥

१८ V B D₁ 10 15 M₄ वज्रेण क्षतपर्षणा (= 18^b) —After
17 S₁ N₂ V B D₁ 10 15 M₄ ins

978* एतं चैव गर्भोऽपि पुनश्चिच्छेदं सप्तधा ।
विस्फुरन्त बलाद्गम रदन्त चातेया विरा ।

[(1 1) V₁ च स (for चैव) B₄ एतं कथां वि N₂ V₄ B₄
D₁ 10 15 M₄ गर्भं स (V₄ च), V₁ °ग V₃ गर्भलान् (sic)
(for गर्भं) —(1 2) D₁ M₄ रुरन्त V₁ रुते चैव M₄
रुतं (for रुदन् च) V [आ वैमाश्यात् B₁ °भाषया M₄
°भाषये (for [आ वैमा विरा) D₁ °भावन्त (for the post
half)]

18 °) D₁ M₄ मिथमाने, Cg °नस (as in text) N₂
V₃ B₂ D₁ तथा, V₁ 2 4 B₁ 2 4 D₁ 10 15 M₄ तदा (for ततो)
D₁ M₄ गर्भं —T₁ damaged from स up to र in °
Cg k t क्षतपर्षणा (as in text) N₂ V B D₁ 10 15 M₄ वज्रेण
वक्षिणा °) V₁ M₂ स°, D₃ °ह्वर, D₁ विस्तार, M₃
विस्वरो (for सुस्वर) D₁ M₄ रुदमाने च (M₄ °वि) करण,
D₁ रुदोपमास्वर रास (sic) °) D₂ न सा (sic) (for
ततो) —After 18 B₃ ins

979* सत सयामरुदुया महाबलपरानाम ।

19 D₁ om 19-20^b °) Cg मा रुदो (as in text)
M₄ गमय (for चेति) S₁ N₂ V B D₁ 2 3 7 9 11 15 M₄ मा
रोदीरिति (D₂ °दिति च) तदाश्च °) S₁ D₂ 3 7 9 11 °चैव,
N₂ V₁ 2 4 B D₁ 10 15 प्रदत्तम्, V₁ पुरदत्तं (sic) D₁ M₄
रदमानम् D₂ °देवो, D₁ °देवम्, M₂ व्य° (for गर्भं
शक्रो) V₁ V₁ 2 4 B D₁ 10 15 M₄ अभारत V₁ अलोपयत्
(for उभयभारत) °) D₂ 7 [अ]य (for च) N₂ V B
D₁ 10 15 M₄ [ए]र्त्तं (V₄ D₁ °व) वज्रेण (for महातेजा) °)
B₃ (in also) D₁ M₄ हाध (for वाध) S₁ (in also
as in text) D₂ 3 7 9 11 15 पूर्वकं सप्तधा पुन

20 D₁ om 20^b (cf 1 1 19) °) D₁ D₂ °Ct
हन्त्ये Cg k as in text (for हन्तव्यो) D₁ D₂ °व्यम्
(for हन्तव्य) °) N₂ V B₁ 2 4 D₁ 10 15 M₄ त, B₄ इ

D₁ D₂ 11 T₁ G₁ 3 [ए]व (for [ए]र) V₁ अभायत,
D₂ चैत्राभ्यभाषत (both hypermetric) (for अर्वात्)
—D₃ om (hapl) 20°-21° °) N₂ V B D₁ 10 15 निर्वयो
च (for निष्पपात) V₄ तदा (for तत) S₁ D₂ 3 7 9 11 12
निर्वयावध (S₁ D₂ °विनि) देवेशो °) D₇ (in also as
in text) वचनमनवीत्

21 D₃ om 21^b (cf 1 1 20) °) S₁ D₂ 3 7 9
11 12 चैव (for शक्रो) N₂ V B D₁ 10 15 प्राञ्जलिश्चानवीदेनो
(B₄ °हैवी) वि (D₁ स) नि सुखाग्रन् स्थित —T₁ damaged
from हा up to यो in ° °) D₂ (before corr) द्विदि
(for देवि) °) S₁ B₂ D₃ 12 M₄ °त, D₁ °वन् (for
पादयो)

22 °) S₁ अह च (hypermetric) (for अह) D₂ 7
कुह्या °) T₂ त्रिविद्याह तवोदर, Ck t as in text —For
22^b N₂ V B D₁ 10 15 M₄ subsl

980* लब्ध्वा तदन्तरं चाह मद्रिनाद्यायमाहितम् ।

[B₄ तदन्तर (hypermetric) D₁ M₄ [ए]न्तर (for
मदन्तर) V₁ चाह V₄ मातर (for चाह) V₃ °लना दिव, B₄
°धमान (for the post half)]
°) S₁ D₂ 3 7 9 11 12 मिश्रवान्, N₂ V B D₁ 10 15 गर्भं
ते हतवान्, M₂ व्यभिद° (for अभिन्द सप्तधा) D₁ M₄ गर्भं
ते जडिषानेत (M₄ °ने) °) V₃ नवत्, D₁ यन्मे, Ck t
as in text (for तन्मे)

Colophon —Kanda name N₂ D₁ 4 6 om V B
D₁ 10 15 आदि°, D₂ अयोध्या° —Sarga name S₁ गर्भं
विभेदन् V₃ V B₂ 4 D₁ 11 विनिर्गमयेद् (V₃ B₂ D₁ 4
°रुदेद्) V₃ D₁ 2 3 7 9 11 सर्वभद्र (D₂ °भेदन्) —Sarga
no (figures words or both) S₁ V₁ 2 4 B₁ 4 D₂ 3 11 12
om N₂ B₂ 2 D₁ 47 V₃ D₂ 49 V₃ D₁ 4 6 11 S
(except M₄) 46 D₁ 7 36 D₁ 3 —आदि गर्भपरानो—मर्ग
47 —After colophon T₂ concludes with श्रीरामनन्दाय
नमः, G₁ 2 4 M₂ श्रीरामाय नमः G₃ श्रीमेतं रामाय नमः

सप्तधा तु कृते गर्भे दितिः परमदुःखिता ।
सहस्राक्षं दुराधर्पं वाक्यं सानुनयाव्रवीत् ॥ १
ममापराधाद्गर्भोऽयं सप्तधा विफलीकृतः ।
नापराधोऽस्ति देवेश तवात्र बलद्वन्द्वन ॥ २
प्रियं तु कृतमिच्छामि मम गर्भविपर्यये ।

46

ॐ N₁ missing Sarga 46 (cf v l I 33 8)

1 ") M₃ गते (for कृते) —For 1st N₂ V B₁ 3
D₁ 10 11 13 subst while B₂ (marg) 4 ins before 1st

981* एकोनपञ्चाशद्धा तु मित्रे गर्भे ततो दिति ।

[V₄ पञ्चाशद्दाम B₁ पञ्चाशत्तदा D₁ पञ्चाशन्ना (for पञ्चाशद्धा तु) B₁ छिन्न गर्भे, D₁ गर्भे छिन्न, D₁₁ कृते गर्भे (for मित्र गर्भे) D₁₁ दितिसत्ता, D₁₃ तदा दिते (for ततो दिति)]
—B₄ om (hapl) 1st —^d) D₁₂ G₂ सहस्राक्ष D₁
M₄ पुरन्दरमिदं वाक्यम् —^d) D₂ सान्वयम् (for सानुनया)
D₂ 7 सानुनयं व्रवीत् N₂ V₁—3 B₁ 3 D₁ 10 13 उवाच भृशदु
खिता, V₄ जवोचदिति दुःखिता, B₄ before corr as in
N₂) वाक्यं सा स्वयमब्रवीत्, T₃ M₃ सात्व (T₃ 'त्व)
वाक्यमयाव्रवीत्, M₄ उवाच रघुन्दन

2 ") D₅ [अ]पराधो T₁ damaged for भोऽयं स
N₂ V B D₁₀ 13 बहुधा, D₁ (marg as in text) वधाय
(for सप्तधा) N₂ N₂ V B D₁ 3 5 7 9—13 विदली*, D₁ D₈ 8
शकली*, C₁ r g as in text (for विफलीकृत) —^d) D₁
D₈ 8 हि (for दस्ति) V₃ ते शक्र (for देवेश) —^d) S₁
D₂ 5 13 तव कश्चन पुत्रक, N₂ V₁ 4 B₃ 4 D₁₀ 13 भवत्
स्व (V₁ 4 'तो मे) द्वितेयिण, V₂ 3 B₁ 3 D₁ M₄ तवाग्राम (V₃
'धं, D₁ 'य) द्वितेयिण, D₂ 7 तव पुत्रक कश्चन, D₁₁ तव कश्चिन्तु
पुत्रक

3 ") D₁ D₈ 8 G₁ 3 M₃ 3 चत्, D₄ om (submetric)
C₆ as in text (for तु) S₁ B₂ D₂ 3 5 7 11 13 इच्छेयम्,
C₆ k t as in text (for इच्छामि) C₆ C₆ गर्भस्य विपर्यये
या विपत्तिं तस्मिन्निष्ठे प्राप्ते ... कृतं सप्तधा विभागरूपं कर्म तव
यथा प्रिय भवति तथा इच्छामि । So also C₆ C₆ —^d) S₁ B₂
D₂ 3 5 7 11 13 अस्मिन् (for मम) D₂ 5 गम्भ (for गर्भं)
D₁₄ विपर्यय, G₁ विपर्यये (sic) —^d) G₁ 3 मरुत, G₄
मारुता all C₆ as in text (for मरुतं) —^d) D₁
D₂ 3 5 14 T₁ 2 G₄ ते, M₂ 3 मे (for [इ]ते) C₆ cites
^d as in text —For 3rd, S₁ B₂ D₂ 3 5 7 11 13 subst

982* सप्त स्थानानि सहेते मरुतं पालयन्तु ते ।

[D₁₁ मरुत (for मरुतं) B₂ संज्ञाता पालयन्तु च (for the post half)]

मरुतां सप्त सप्तानां स्थानपाला भगन्तिरमे ॥ ३
वातस्कन्धा इमे सप्त चरन्तु दिवि पुत्रकाः ।
मारुता इति विख्याता दिव्यरूपा ममात्मजाः ॥ ४
ब्रह्मलोकं चरत्येक इन्द्रलोकं तथापरः ।
दिनि वायुरिति ख्यातस्तृतीयोऽपि महायशः ॥ ५

4 ") B₂ D₃ 11 'स्कंधान्, D₇ 'स्कंधान् (for वातस्कन्धा)
S₁ B₂ D₂ 3 5 7 11 12 14 सदा, C₆ t as in text (for इमे)
B₂ T₁ 0 G₄ पुत्र, D₅ सुता, D₁₁ सर्वे, C₆ t as in text
(for सप्त) —^d) S₁ B₂ D₂ 3 5 7 11 12 14 मम, T₃ दिति
(for दिवि) S₁ D₁ D₈ 8 12 C₆ पुत्रक (for 'का) —^d)
S₁ B₂ D₂ 3 5 7 11 12 मरुतश्चेति, M₂ मारुता दिवि (for मारुता
इति) C₆ k as in text (for ') —^d) S₁ B₂ D₂ 11 13
M₂ महायशः (for ममात्मजा) D₂ 3 7 महायशपरिक्रमा, C₆
as in text (for ') —For 3 and 4, N₂ V B₁ 3 4
D₁ 10 13 M₄ subst while B₂ ins after 6

983* एवं गतेऽपि वसस्व त्रिये मे कर्तुमर्हसि ।
इमे ते सप्तका सप्त मरुतो नाम विभुता ।
चरन्वाज्ञाकरा सप्त वातस्कन्धेषु सप्तसु ।
सहेमिमं पुनस्त्व मरुतिर्नैहि शाश्वताम् ।

[(1 1) V₁ 3 'व वत्स (by transp) V₄ B₂ D₁ M₄
विभु (B₂ पुत्रं वच B₁ 'तद्वत् (for अपि वसस्व) —(1 2)
D₁₃ सप्तभि (for सप्तका) V₂ मनुष्या, B₄ M₄ मारुता (for
मरुतो) M₄ इति (for नाम) —(1 3) V₁ [आ]काशज (for
[आ]ज्ञाकरा) V₁ B₁ 2 D₁ M₄ शक (for सप्त) —(1 4)
N₂ 3 इहेमिर्, V₂ सहेतैर् V₄ B₂ सह तैर्, D₁₀ सप्तभिर् (for
सहेमिर्) N₂ 3 पुनस्त्व V₄ निन (sic) (for नहि) D₁ नहि शत
शतकरो (for the post half)]

5 B₂ repeats 5th after 6 (after 983*) —^d)
T₁ partially damaged V₄ 4 B (B₂ second time)
D₁ 10 11 13 M₄ ब्रह्मलोकं, C₆ as in text (for 'लोकं) N₂
V B B₂ D₂ 3 5 7 10 13 T₂ 3 M₄ चरन्तु, D₂
चरेत्, D₆ चरति, C₆ as in text (for चरतु) N₂ V₁ B₂
D₂ 10 [ए]ते (with hiatus), V₂ 3 B₂ 2 (second time) 4
D₁ 13 M₂ [ए]के (with hiatus), C₆ as in text (for
[ए]क) —^d) N₂ V₃ 4 B (B₂ second time) D₁ 10 13
M₄ इन्द्रलोकं C₆ C₆ रुद्रलोकमिति प्रचुर पाठ । C₆ V₁ B
(B₂ second time) D₁—3 5 10 13 M₄ तथा परे, T₃ तदा*,
G₁—3 M₁ तथा* (for तथापर) —N₂ V B₁ 3 4 D₁ 10 13
M₄ om 5th —^d) S₁ B₂ D₂ 3 5 7 11 13 विद्वद् (D₂ 'य)
व्यायुर्, D₁ D₈ 8 C₆ दिव्यव्यायुर्, C₆ k as in text (for
दिवि व्यायुर्) B₂ इह (for इति) —^d) S₁ B₂ D₂ 3 5 7 11 13
तृतीयस्तु G₁ 3 महान्पा (for 'यसा)

तेन चासीदिह स्थाने विशालेति पुरी कृता ॥ १२
 विशालस्य सुतो राम हेमचन्द्रो महाबलः ।
 सुचन्द्र इति विख्यातो हेमचन्द्रानन्तरः ॥ १३
 सुचन्द्रतनयो राम धृषाश्व इति विश्रुतः ।
 धृषाश्वतनयश्चापि सुजयः समपद्यत ॥ १४
 सुजयस्य सुतः श्रीमान्सहदेवः प्रतापवान् ।
 कुशाश्वः सहदेवस्य पुत्रः परमधार्मिकः ॥ १५

D₁ 9 13 °रत्र, V₄ °श्वैव । राजर्षे, D₂ 3 5 7 11 12 विशाखायोस्तु
 (D₂ °य) काकुत्स्थ —^a S₁ V₂ D₁—3 5 6 12—14 S (except
 T₁) अल्लुसायाम् —^a V₁ B₂ D₁ विशालो नाम S₁
 D₁ 12 न श्रुत, V₁ धार्मिक (for विश्रुत)

12 T₂ G₄ om (hapl) 12—14^b V M₄ om 12
 D₂ reads 12 after 10 —^a T₁ विशाला च, M₂ विशाले
 तु, Ct as in text (for विशालेति) Ct कृता (as in text)
 S₁ B D₂ 3 5 11—13 तेनेय निमिका राम (D₁₁ °जन्) वैशाली (D₂
 विदाला, D₁₁ वैशाला) नगरी शुभा (S₁ सुवि, D₁₃ पुरा)
 —For 12, D₁ subst and reads after 10

989* तेषा दितिसुताना यो विश्वग्ययुरभूतः ।
 तत्सुतेन विशालेन विशालेय पुरी कृता ।

13 T₂ G₄ om 13 (cf v 1 12) —^a B₁ विशालस्य
 च (hypermetric) D₃ विशालस्य (for विशालस्य) B₃
 (m also) D₃ (also as in text) राजा, D₁₁ रा* (for
 राम) —^a T₁ missing चद्रो महा on a damaged fol
 N₂ V₁ 9 4 B D₁₀ 13 M₄ [S] भववृष (for महाबल) V₂
 महेंद्रोप्यभववृष —^a B₃ हव (for इति) —^a S₁ N₂ V
 B D₂ 3 5 10—13 हे (N₂ V₃ D₁₁ 12 हे) मचद्रि (D₃ °द्रो, D₂
 °द्रा) महायज्ञा, D₁ M₂ हेमचद्र सुतोभवत्

14 T₂ G₄ om 14^a (cf v 1 12) —^a V₃ सुचद्र
 स्वामजो D₁ चासीद्, M₄ [S] प्यसीद् (for राम) —D₁₃
 om (hapl) °cf v 1 N₂ for 14^b —^a S₁ D₂ 9 12
 धृषाश्व, D₃ धृषाश्व, D₁₀ धृषाश्वर (hypermetric) D₁₁
 धृषाश्व (for धृषाश्व) —D₁₀ om (hapl) cf v 1 N₂ for
 15^b 14^c—15^b —^a S₁ धृषाश्व, D₂ 9 11 12 धृषाश्व, D₃
 धृषाश्व (for धृषाश्व) G₄ तन* N₂ B₂ तनयो राम
 (for) D₃ D₂ 5 सजय N₂ V B D₁₁ 13 M₂ सनयायत
 (for समपद्यत) G₄ as in text (for ^a)

15 D₁₀ om 15^a (cf v 1 14) —^a B₂ D₂ 5
 सजयस्य S₁ G₄ M₁ राम, N₂ V₂ 4 B चासीद्, V₁ 3 M₂
 चासीद् (for श्रीमाद्) —^a N₂ V₁ 3 4 B D₁₁ 13 M₂
 स्वर्णश्री (N₂ B₂ °श्री) वीरि विश्रुत (V₁ न श्रुत), V₂ स्वर्णश्री
 विरित श्रुत, D₁ सदेव इति विश्रुत, T₂ सहदेव* वाद्
 (fol damaged) —D₁₃ om (hapl) 15^c —^a
 D₂ 3 5 7 9 12 13 कृताश्व, G₄ M₁ कृताश्व (for कृताश्व)

कुशाश्वस्य महातेजाः सोमदत्तः प्रतापवान् ।
 सोमदत्तस्य पुत्रस्तु काकुत्स्थ इति विश्रुतः ॥ १६

तस्य पुत्रो महातेजाः संप्रत्येष पुरीमिमाम् ।
 आपस्तम्भप्रख्यः सुमतिर्नाम दुर्जयः ॥ १७

इक्ष्वाकोस्तु प्रसादेन सर्वे वैशालिका नृपाः ।
 दीर्घायुषो महात्मानो वीर्यवन्तः सुधार्मिकाः ॥ १८

—^a) T₁ damaged for धार्मिक —For 15^c, N₂ V B
 D₁ 10 M₂ subst

990* स्वर्णश्रीमुत्तथापि कुशाश्व इति विश्रुत ।

[N₂ B₃ स्वर्णश्री°, V₁ स्वर्णश्री°, V₂ स्वर्णश्री°, M₂
 सु*श्रीश्रीवितनय (for the prior half)]

16 °) N₂ V B D₁—3 5 7 11 12 कृ°, T₁ damaged
 G₂ M₁ कृ°, M₂ कृथा° (for कृताश्व) —D₁₃ om
 (hapl) 16^b—17^a —^a) D₂ सोमदत्त N₂ V₁ 2 B D₁ 10 13
 M₂ सोमदत्तसुतोभवत्, V₃ 4 सोमदत्तोभवत्सुत —^a) N₂ V
 B D₁ 10 13 M₂ काकुत्स्थ, D₃ °श्व, M₂ पुत्रोभूत् (for
 पुत्रस्तु) N₂ V B D₁ 10 13 M₂ सुतोभूत् (for काकुत्स्थ)
 D₂ 11 काकुत्स्थ पुत्रस्तु (by transp) S₁ N₂ V B
 D₁—3 5 7 10 11 13 M₂ जनमेजय (for इति विश्रुत)

17 D₁₃ om 17^a (cf v 1 16) D₃ om (hapl)
 17 —^a) N₂ D₁ [S] च काकुत्स्थ, V B₁ 3 4 D₁₀ M₂
 [S] च काकुत्स्थ, B₃ नरश्वान्न, D₂ महातेज, D₁₃ च काकुत्स्थ
 (for महातेजा) —^a) D₁₁ सप्रत्येय, M₂ सप्रमीह (for
 संप्रत्येय) N₂ V B D₁ 10 13 पात्येता° (V₁ °ना, B₁ यत्येता, B₃
 पात्येता, B₄ पात्येता, D₂ पातीमा, D₁₃ प्रातेता) साप्रत पुरी
 —^a) D₃ G₁ भावसत् (G₁ °न्), T₂ 3 अवसति, G₃ अवसत्
 (for भावसति) S₁ D₂ 9 7 9 11 12 अभ्यास्ते नरशार्दूल, N₂ V
 B D₁ 10 13 धर्मात्मा नर (D₁ नृप) शार्दूल, D₂ D₂ 8 अ (Dt
 अ) वसत्यमप्रख्य, M₂ निवसत्यमप्रख्य —^a) S₁ V₁ D₁₃
 प्रमितिर्, N₂ V₂—4 B D₁ 2 5 7 11 प्रमतिर्, D₂ सुमितिर्
 (for सुमतिर्) D₃ नर (for नाम) N₂ V B D₁ 10 13
 वीर्यवान्, D₁₃ स दुर्जय (hypermetric) D₁₄ T₁ G₄
 मिश्रुत (T₁ °त्), T₂ M₂ नामत (for दुर्जय)

18 B° (marg) repeats 18^a as in S₁ —^a) S₁
 D₂ 3 5 7 11 13 विशाखायो, N₂ V₁ 3 4 B D₁ 10 13 इक्ष्वाकव,
 V₂ इक्ष्वाकव (for इक्ष्वाकोस्तु) N₂ V B D₁ 10 13 सर्व
 पृथ (V₂ °ते), M₂ प्रसादेन (for प्रसादेन) —^a) N₂ V B
 D₁ 10 13 एयता (for सर्व) N₂ V₂—4 B₂—4 D₁ 10 13
 वैशालिका (D₁ °ना), G₄ k t as in text (for वैशालिका)
 M₁ नरा (for नृपा) S₁ D₂ 3 5 7 12 विशाला सर्वपार्थिया
 —^a) B₄ महाबाहो (for महात्मानो) —^a) N₂ V B
 D₁ 10 13 M₂ महायज्ञा, T₂ सु *** (for सुधार्मिका)

इहाद्य रजनीं राम सुखं उत्सामहे वयम् ।
श्वः प्रभाते नरश्रेष्ठ जनकं द्रष्टुमर्हसि ॥ १९
सुमतिस्तु महातेजा विश्वामित्रमुपागतम् ।
श्रुत्वा नरनरश्रेष्ठः प्रत्युद्बल्यन्महायशाः । २०

पूजां च परमां कृत्वा सोपाध्यायः सयान्धवः ।
प्राञ्जलिः कुशं पृष्ठा निधामित्रमथावनीत् ॥ २१
धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि यस्य मे विपयं मुने ।
संप्राप्तो दर्शनं चैन नास्ति धन्यतरो मम ॥ २२

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे पदचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४६ ॥

19 " Ns इति (for इह) V4 वीर, Dt Ds3 एका
(for राम) —⁸ Ts सुखो (for सुख) Dt Ds3
स्वप्स्यामहे Cg as in text (for वास्यामहे) Gs M1 विद्या
(for वयम्) S1 Ds3 5 7 11 12 वस्याम स (C1 D11 12
सु)सुने(S1 "या) वय —⁹ V3 Ba D1 सुमति Ns V B
D1 10 13 Ms तु(V4 च) जनकं (for नरश्रेष्ठ) —¹⁰ Ns V
B D1 10 Ms धुने(Ms वयं) द्रष्टवाम (V4 Ba D10 "मि)
रापय, D13 द्रष्टवाम धुनेनेय हि

20 " Cg सुमतिम् (as in text) S1 Ds3 5 7 12 मयायी
प्रम(S1 "मि)नी राय Ns V B D1 10 11 13 प्रम(D1 11 "मि)
तिरने(Vs4 Bs "स्तु) तन (D1 मुनि) युया —¹¹ B1 Ts
(before corr) उपामम् —¹² S1 Ds3 7 1 पुताप्रमुययी
तदा Ds3 पुताप्रत्ययी तदा (for ") Ns V B D1 10 11 13
Ms प्रमुद्रम्य महामानं पुताप्रामाय पाथिय (D1 Ms कीपेयान्)

21 " Ds मया (for कृया) Ns V B D1 10 11 13 Ms
पाया(D11 पमा)य्य सवदानेन —¹³ Ns V 12 B D10 13
सोपाध्यायपगमदा V3 Ba D10 "या —¹⁴ Ns V 12 B 3
D10 13 Ms नीने V3 D1 देय Ba देये Ds3 द्यु D11
Ms राह्या (for दृष्टा) —¹⁵ Ts damage. up to m V3
V B D1 10 13 Ms द्युदं यययमययं

22 " Ns V1 3 4 B D10 13 पुतो, V3 D1 प्रीतो, Cg as
in text (for धन्यो) Ns V B1 3 4 D10 [अ]नुगृहीतश्च
—¹⁶ B1 पश्य (for वयम्) D1 मिये, D11 [5]य
प्रियो(for विपयं) —¹⁷ V3 D13 "तमो, D1 धमे, Ck as in
text (for धन्यतरो) S1 D1 10 13 Ts Gs M मया (for
मम) —After 22 S1 Ns V4 Ba 4 D1 3 5 7 10-13 1115

99:" अद्य मे सफलं नमः सवृत्तश्च मनोरथ ।

वयसां कुशलिनं प्रहसन्परयानि ससुपागतम् ।

[(1 1) D11 संवत्स, D13 संवत्स (for संवत्स) —(1
2) S1 Ds3 7 13 वर (for वय)]

Colophon Ds3 7 11 13 om (cont the sarga)
—A Janda name S1 om V3 V3 3 B D10 नादि, D1
अयोप्या —After Kalya name D1 115 बालचरिते
—Sarga name Ns V B D10 प्रमर्तितमामग D1 lacuna
—Sarga ro (figures words or both) V3 Ba 10 n
S1 Dt Ds3 11 S 47 Ns Ba3 D10 13 4⁹ Ds 50 D13
हृत्वाय—यण—यति—समन्मो — After colophon Ts
Gs Ms conclude with धीरामाय नम, Gs धीमन
रामानुजाय नम

पृष्ठा तु बुद्धलं तत्र परस्परममागमे ।
 कथान्ते सुमतिर्यक्यं व्याजहार महामुनिम् ॥ १
 इमां कुमारौ भद्रं ते देवतुल्यपराक्रमौ ।
 गजमिहगती वीरौ शार्दूलवृषभोपमौ ॥ २
 पद्मपत्रिशालाक्षौ रत्नतूष्णीघनुर्धरौ ।
 अधिनापित्र रूपेण मधुपन्थितयौवनौ ॥ ३
 यदृच्छयैव गां प्राप्ता देवलोसादिनामरौ ।

47

✎ N̄i missing Sarga 47 (cf v l I 33 8)
 D: 3 5 7 11 13 continue the previous sarga

1 °) D: 13 पृष्ठा (for पृष्ठा) B: 1 च (for तु) N̄: B
 D: 10 प्रभं D: 1 पृष्ट, D: 7 चैर (for तत्र) V D: 13 बुद्धलप्रभं
 —^b) N̄: V B D: 10 13 M̄: परस्परममोपम, Cm as in
 text —N̄: reads 1st in marg —^c) S: D: 11 प्रमितिर्
 (D: 1 च), N̄: V B D: 3 5 7 11 13 (all except D: here
 and below) प्रमिति (D: 3 5 7 11 13 र), M̄: नृपतिस्; Cm t
 as in text (for सुमतिर्) N̄: V B D: 10 M̄: तत्र (for
 वाक्यं) —^d) D: 3 महामुनि D: 3 * मुनि N̄: V B D: 10 13
 M̄: विश्वामित्रममापत (D: 1 वृच्छत), Cm as in text

2 °) T: damaged partially for ° N̄: V B D: 10
 M̄: भगवद्, D: 1 भवत (for भद्रं ते) —^b) N̄: V B
 D: 10 13 M̄: बुत कल्य च (D: 1 अन्न [sic]) शस मे (M̄
 सत्तम) —After 2nd N̄: V B D: 10 (om 2nd-3) 10 11 13
 M̄: (owing to om from 2nd-5) read 992* —M̄ om
 2nd-5 —^c) N̄: V B D: 10 13 मिहैवम, Cm g k t as in
 text (for गजविह) T: गतिर् (sic) V: 3 वीर B:
 (marg also) गजमिहगमनी —^d) S: N̄: V B (B:
 marg also सप्तविंशती) D: 3 5 7 11 13 वृषभप्रतिव

3 D: 1 M̄ om 3 (cf v l 2) —^a) N̄: D: 3 G:
 पञ्चशालाक्ष Cm g t विशालाक्षौ (as in text) —^b) D: 3 G:
 G: तूष्णीघनुर्धरौ (G: 1 र [sic]) S: N̄: V B D: 3 5 7 9-13
 वरायुध (B: 3 रावर) धरायुधौ G: as in text —^d)
 V: 3 वीरयौ G: वीरन (sic) Cm g k t as in text
 (for वीरनी)

4 M̄ om 4 (cf v l 2) —^a) S: N̄: V B
 D: 3 5 7 9 13 क्षिति D: 3 5 M̄: (after corr 1 if lin
 sec m as in text) [ह]व, D: 14 T: [व]व स Cv g as
 in text (for [ज]व नां) —^b) M̄: देवलोकाय V: 3 हृद्
 (for हृव) N̄: 1-3 B: 4 D: 10 11 13 [आ]गती Cm g t
 as in text (for [अ]मरौ) —D: 1 om 4th —^c) T:

कथं पञ्चामिह प्राप्ता किमर्थं कस्य वा मुने ॥ ४
 भूपयन्तामिं देशं चन्द्रसूर्यानिनाम्बरम् ।
 परस्परस्य मदृशौ प्रमाणोद्भितचेष्टितैः ॥ ५
 किमर्थं च नरश्रेष्ठौ मंप्राप्ता दुर्गमे पयि ।
 परायुधधरौ वीरौ श्रोतुमिच्छामि तत्ततः ॥ ६
 तस्य तदचनं श्रुत्वा यथावृत्तं न्यवेदयत् ।
 मिद्धाश्रमनिनामं च राक्षसानां वधं तथा ॥ ७

कथ्यतां, C, t as in text (for कस्य वा) D: 13 सुतौ T: 13 सु*
 (for मुने)

5 M̄ om 5 (cf v l 2) —^a) T: damaged for
 भूपय N̄: B: 3 D: 10 हमौ D: 3 हृद् (sic) (for हमे)
 B: 3 येदौ (for देदौ) —^b) S: N̄: B: 3 D: 10 13 सूर्यवेदाय
 (by transp) —D: 1 om 5th —^c) S: D: 10 D: 3 5 7 11 13
 T: परस्परण, Cm "स्व (as in text) —^d) S: N̄: V: 3
 B: 3 D: 7 11 13 स्थिति (for [ह]रित) D: 3 चेष्टितौ V:
 B: 4 D: 3 5 9 13 प्रमाणस्थितिचेष्टितौ (D: [after corr] 1st),
 Cm g t as in text

6 D: 3 5 7 9 13 om S: 1 reads 6th in marg —^a) S:
 श्रेष्ठ D: 1 T: 3 5 मुनिश्रेष्ठ (for नरश्रेष्ठौ) —For 6th,
 N̄: V B D: 10 11 13 M̄: subst and read after 2nd

992* किमर्थं च स्वया सार्धं रमेते देवरिणौ ।

[V: 3 B: 4 भ्रमेते V: 4 भ्रवन्तौ D: 1 M̄: चरन्तौ (for रमेते)]

—D: 1 M̄ om 6th —^a) N̄: B: 3 (before corr, marg
 as in text) 3 D: 10 [अ]वर (for [आ]युध) V:
 परस्पर वरौ वीरौ

7 °) N̄: V B D: 10 13 M̄: [ज]वद् (for तद्) —^b)
 B: 4 वृत्ति D: 3 वत्ता, D: 12 13 वत्ता G: यथातत्त्व (for वृत्तं)
 D: 5 निवेदयन् D: 11 विश्वामित्रो महामुनि, Cm k t as in text
 —After 7th D: 1 ins

993* निवेदयच्च रामस्य कर्म चाद्भुतकर्मण ।

while G: 1 ins

994* अयोध्याधिपते पुनौ राज्ञो दशरथस्य ह ।
 मम यज्ञसमाधयथमागतौ रामलक्ष्मणौ ।

—Dt D: 3 om 7th —^a) S: N̄: V B: 3 D: 3 5 7 9 13
 कथा चैव (for निवास च) —^b) N̄: V B 1st च स D: 1 च
 स वध D: 1 T: 3 G: 3 M̄: 3 Cm च तद्वध T: 1 यथा (for वधं
 तथा) S: D: 11 12 रक्षसा वधमेव च D: 3 5 7 9 रक्षसा च (D: 7
 हि) वधं हि स (D: 8)

विश्वामित्रचः श्रुत्वा राजा परमहर्षितः ।
अतिथी परमौ प्राप्नोतु पुनौ दशरथस्य तौ ।
पूजयामास विधित्स्मत्काराहौ महानलौ ॥ ८
ततः परमसत्कारं सुमतेः प्राप्य राघवौ ।
उप्य तत्र निशामेकां जग्मतुर्मिथिलां ततः ॥ ९
तां दृष्ट्वा मुनयः सर्वे जनरूप्य पुरीं शुभाम् ।
साधु साधिति शंसन्तो मिथिलां समपूजयन् ॥ १०

मिथिलोपगने तत्र आश्रमं दृश्य राघवः ।
पुराणं निर्जेन रम्यं पत्रच्छ मुनिपुंगवम् ॥ ११
श्रीमदाश्रमसंकाशं किं न्विदं मुनिजितम् ।
श्रोतुमिच्छामि भगवन्कस्यायं पूर आश्रमः ॥ १२
तच्छ्रुत्वा राघवेणोक्तं वाक्यं वाक्यविशारदः ।
प्रत्युगाच महतेजा विश्वामित्रो महामुनिः ॥ १३
हन्त ते कथयिष्यामि शृणु तच्चेन राघव ।
यस्यैतदाश्रमपदं शस्तं कोपान्महात्मना ॥ १४

8 T1 partially damaged for " —^d D1 Ds s
विस्मित (for हर्षित) S1 Ds 3 7 9 11 12 विस्मित स (D.
तत्र) महापरा (D11 मुनि) N2 V B D1 (m also as
in S1) 10 13 M4 प्र (D13 M4 सु) मतिश्रुत (M4 °दृढ) विस्मित
(V1 °स्य, V2 °स्मित) —^c D1 अतिथीन्, D2 T2 अनिधि
(both sic) N2 V 2-3 B D1 10 13 M4 पूजयामास, D4 Ds
Ct परमं, T3 G4 M4 परमं (for परमौ प्राप्नोतु) S1 V4
D2 3 5 7 12 बभूव दृष्ट्वा सद्वीर्य (V4 सहृष्ट) D11 बभूव
सद्वीर्यवती —^d S1 वै, N2 B3 D10 तु, Ct as in text (for
सौ) —N2 V B D1 10 13 M4 om 8' —For 8', S1
D2 3 5 7 11 12 subst

995* अप तौ पूजयामास नृपति स यथाविधि ।
[Du अतिथी पूजयामास (for the prior half [≈8° in
N2])]]

—After 8 D4 ins श्रीरामाय नम

9 * B प्रथम (for परम) D13 सकाश (sic) (for
सत्कार) —^c S1 Ds M4 व्युत्प, D2 व्युत्पुम् (sic) D7
न्युत्प, Cg k as in text (for उप्य) N2 V B D10 13
उपिवा च (V1 तु) निशा तत्र D11 उपिवा रत्ननी (D11 तु
निशा) मेका, G1 3 M1 उपतुम् —^d M2 मिथुना S1
D2 3 5 7 12 तदा N2 V B D1 10 M4 प्रति, D13 पुरीं Cg as
in text (for तत)

10 * S1 D1 11 13 दृष्ट्वा तु D13 ते Cg तान् (for ता
दृष्ट्वा) N2 V B D1 10 13 M4 दूरत (for मुनय) —^d S1
D2 3 5 11 13 शुभा पुरीं (by transp) —^d T1 damaged
for नि शंसने मि S1 Ds सदृष्ट्वा, D2 3 7 11 13 सं (D2 त)
दृष्ट्वा (for शंसन्तो) D2 3 7 प्रत्य (D2 °3) पूजयन् N2 V
B D1 10 13 M4 सु B4 अ नयो दृष्टमनस दास्यु साधु
साधिति ।

11 * S1 N2 V B D2 3 5 7 10-13 हरिम् (for तत्र)
—Note hiatus between "and" —^d S1 N2 V B4
D2 3 5 7 10-13 प्रेक्ष्य, B1 दीक्ष्य B2 प्राप्य Cg g k t as in
text (for दृश्य) D2 दृष्ट्वा रम्याश्रमं पुनः M4 दृष्ट्वा राम
सदाश्रम —^c Ds निर्जितं (for निर्जेन) S1 D2 3 5 7 11 13
वैय G2 3 राम (for रम्यं) —^d S1 D2 3 5 7 11 13
पत्रच्छास्य महामुनि

12 * D1 Ds 3 इदम्, Cg g as in text (for श्रीम्)
—^d Ds M4 3 इद, G2 M1 विद्, Cg g t as in text
Ck न्विदं (for न्विद्) G4 वज्रं (sic) (for वज्रितम्)
—For 11°-12° N2 V B D1 10 13 M4 subst S1
D2 3 5 7 11 12 subst 1 2 only for 12°^d

996* पत्रच्छ मुनिशार्दूल किमिदं निर्जेन वनम् ।
श्रीमानविरलच्छायो मुनिसद्यविनिर्जित ।

[V1 damaged from निर्जेन up to 1 2 —(1 1) D1
M4 किमिदं मुनिशार्दूल (for the post half) —D1 M4 om
1 2 —(1 2) V3 श्रीशार्दूल V2 B4 मिद् (for स्य)]
—^c D1 M4 वन मनोज्ञ (for श्रोतुमिच्छामि) —^d Cg t
कस्याय (as in text) S1 N2 V B D1 3 5 7 10-13 M4 [जा]
सौदयम् G2 [अ] य दूत (ज्य) (for [अ] य पूर्व) Ck cites
as in text

13 * D2 * —^c G1 वाक्यविशार वर (for विशारद्)
—^c T1 damaged up to ह —For 13 N2 V B
D1 10 13 M4 subst D11 ins 1 4 only after 13

997* इति तस्य वच श्रुत्वा विश्वामित्रोऽप्यभाषत ।
कथाश्रो मुनिशार्दूल प्रदग्मनाक्यमुत्तमम् ।
विनयान्नतं वीर धमेजय सख्यार्द्रितम् ।
रामं कमलपत्राक्षमाभाय भवतु वच ।

[(1 1) D1 M4 राम (for तद) V1 damaged from
the post half of 1 1 up to वाच in 1 2 —V4 B1 D1
M4 om 1 2 3 —(1 2) V2 B2 कथाः V2 B3 4 D13 अन्वीद्
(for उत्तमम्) —(1 3) V1 B3 4 D10 13 वीर (for वीर)
—(1 4) V4 वपक्वम् (metathesis) V1 damaged from
the post half up to 14° M4 वाच्य वाक्यविशार (for
the post half cf 13°)

14 * V1 damaged (cf v1 997*) N2 B3
D10 13 इह Cg g k t as in text (for हन्त) S1 D2 3
वर्णयिष्यामि —^d N2 V B D1 10 13 M4 शृणु कस्यायमा
श्रम (V1 damaged up to सा) —^c M4 [इ] दम् (for
[ए] तद्) S1 D1 3 5 7 11 13 यथायमाश्रम (D1 illeg for
यमाश्रम ink spread) पूर्व (D1 पूर्व) N2 V B D10 13 M4
यथा शृण्वो भगवाय (D13 यथा वाच, M4 °दय), T3 वस्येदमा

गौतमस्य नरश्रेष्ठ पूर्वमासीन्महात्मनः ।
आश्रमो दिव्यसंकाशः सुरैरपि सुपूजितः ॥ १५
स चेह तप आतिष्ठदहल्यासहितः पुरा ।
वर्षपगान्यनेकानि राजपुत्र महायशः ॥ १६
तस्यान्तरं मिटित्वा तु सहस्राक्षः शचीपतिः ।

श्रमं ब्रह्मन् —^a) Śī N̄2 V B D2 3 5 7 10 12 M4 शत D14
T1 2 क्रोधान् (for कोवान्) Śī V 4 B4 Dt D1 3 5 7 11 12
Ct महात्मन, M2 महामुने Cg k as in text (for ^a)

15 B4 om (hapl) 15^{ab} V1 damaged from त
up to ते in 998* —^a) B1 3 गौतमस्य N̄2 V 2 4 B1 3
D10 13 [आ]श्रम पुण्यो, M4 [आ]श्रम पूर्वम् (for नरश्रेष्ठ)
D1 गौतमाश्रमपुण्यो —^b) N̄2 V 2 4 B1 3 D10 13 दयम्,
M4 अयम् (for पूर्वम्) Śī D2 3 5 7 11 12 महामुने (Śī
D3 11 'ने) (for महा नन) —^c) Cg k t दिव्यसंकाश (as
in text) Śī D2 3 5 7 11 12 आश्रमोय महामुण्य —For
15^{ad}, N̄2 V B D1 10 13 M4 subst while D1 ins
after 15

998* नित्यपुण्यफलोपेतं पादपैरुपसोमित ।

[V1 missing the prior half (cf v1 15) V2
-फलोपेत D1 illeg after qn]

16 ^a) Dt D2 3 चात्र (for चेह) V1 मातिष्ठम्, D2
आतिष्ठ (both sic) D2 सत्ययुक्त स आतिष्ठ —Śī reads
from सहित in 16^b up to 17^b in marg —V1 damag
ed from पुरा in 6^b up to 17^a —^b) D2 3 7 10 (here and
below) अहिल्या N̄2 V 2-4 B D2 3 5 7 10-13 मुनि, T3 तदा
(for पुरा) —^c) Cm g k वर्षपगान्, Ct 'नि (as in text)
येहृदेश्वर pressed अनेकाश्च (for [अ]नेकानि) T1 missing
from पु up to य in महायश Śī D2 3 14 M2 3 (sup lin
sec m before corr as in text) महायशा N̄2 V 2 4
B D2 3 5 7 10-13 सेव सरसद्वस्त्राणि बहूनि रघुनन्दन —For 16
D1 M4 subst

999* अतप्यत तत पूर्व वने कृवाश्रम मुनि ।

बहूनि किल वर्षाणि सह परयायकुल्या ।

[1 1] M4 तप (for तन) M4 सोत्तिश्रावने मुनि (sub-
metric) (for the post half) —[1 2] D1 illeg
from कूया up to अ in 1 of 1000*]
D1 M4 cont V2 B2 3 D1 13 ins after 16

1000* अहल्याया रघुश्रेष्ठ तरणादित्यरूपया ।

ततस्तु सुन्दरीं दृष्ट्वा काम्यरूपा पुररर ।

[V2 om 1 1 D1 illeg up to अ (cf v1 999*)
—[1 1] M4 तरण्या दित्यरूपा (for the post half)
—[1 2] V2 तपयमित्वा, B2 D13 तदयथाश्रम, D1 M4 तामयो
(D1 'त्य [sic]) चक्रे (for ततस्तां वृत्तं) D13 श्रुत्वा (for
दृष्ट्वा) B2 D13 तस्य (B2 'य्य) रूप D1 M4 काम्य (for काम्यरूप)
V2 'न्यरूपां सुरेश्वर (for the post half)]

मुनिवेषधरोऽहल्यामिदं वचनमब्रवीत् ॥ १७
ऋतुकालं प्रतीक्षन्ते नार्थिनः सुसमाहिते ।
संगमं त्वहमिच्छामि त्वया सह सुमध्यमे ॥ १८
मुनिवेषं सहस्राक्षं निज्ञाय रघुनन्दन
मतिं चकार दुर्मेधा देवराजकृतुहलात् ॥ १९

—After 16 Śī (marg) Dt G1 3 M1 3 (inf lin sec.
m) ins

1001* यदाचिद्विलसे राम ततो दूर(Śī 'र) गते मुनौ ।

17 Śī B3 read 17^{ab} in marg V1 damaged for ^a
(for Śī V1 cf v1 16) —^b) N̄2 ह, V2 4 B D2 3 10
12 13 T3 M3 [अ]थ, Dt D2 3 च, D2 7 त, D2 om (sub
metric) (for तु) D2 3 5 7 12 पुरदूर (for शचीपति)
N̄2 V 2 4 B D10 13 कामार्तिबिदोऽपि (V2 B1 D10 13 'दिवे)
श्वर, D11 कामार्ति स पुरदूर (for ^b) D1 M4 अथ ताम(D1
तस्य, then illeg up to द) तर छत्रा कामार्तिबिदोऽपि
—^c) Śī N̄2 V B Dt D1 3 5 8 10-13 भूत्वा, D7 गत्वा
(for अहल्याम्) —^d) Śī N̄2 V B Dt D2 3 5 8 10-13
सो(Dt D2 3 13 अ[with hiatus]) अहल्यानिदमब्रवीत् (V1
damaged from द up to the prior half of 1 2 of
1002*) D1 (with hiatus) अहिल्यामन्यभापत

18 V1 damaged (cf v1 17) Śī om (hapl ?)
18 19^b —^a) G2 M1 समीक्षते, Ck प्रतीक्ष (as in text)

19 Śī om 19^{ab} (cf v1 18) —For 18-19^b N̄2
V (V1 damaged [cf v1 17]) B D1 3 5 7 9 13 M4
subst

1002* ऋतुकालं प्रतीक्ष्योऽपि न प्रतीक्षे सुमध्यमे ।
संगमं दीपमिच्छति पृथुधीनि सह स्वया ।
मुनिवेषधरं शक्रं सा ज्ञा चापि पत्यप ।

[1 1] D1 M4 त(D1 *) वावायम् D2 'ने (for प्रतीक्षोऽपि)
D2 3 7 11 13 ऋतुकालप्रतीक्षो (for the prior half) N2 B4
D10 प्रतीक्ष्य V4 प्रतिक्षा (sic) (for प्रतीक्षे) D1 M4 अथा (D1
illeg after थ up to the end of the line) चाद शुचिरिति
(for the post half) —[1 2] D2 3 5 7 9 12 स्वया सह
(by transp) D1 M4 इच्छामि संगम तप(D1 'व) स्वयाद्य
(D1 'ह) गज्यामिति —[1 3] D2 3 5 7 9 11 12 ज्ञात्वा (for
शक्र) V1 damaged from पत्यप up to अवतीर in 20^a D10
पर* (for पत्यप) D2 3 5 7 9 12 13 सरसाश्च तवापि सा (for
the post half) D1 (marg also) ज्ञात्वापि चक्रे सा तं
देवराजं विदुःश्रुत्वा]

—V1 missing ^a D1 illeg, for ^a —^b) B1 G1 3 M1 3
रति, Ck t as in text (for मति) —T1 damaged from
च up to दे in ^a B1 रतिं च कारयामास —^c) Śī V4 D2-4
T3 देवराज (V2 D2 4 'ज), D1 M4 संगम, Ck t as in
text (for देवराज)

अथावशीसुरश्रेष्ठं कृतार्थेनान्तरात्मना ।
 कृतार्थोऽसि सुरश्रेष्ठ गच्छ श्रीप्रमितः प्रभो ।
 आत्मानं मां च देवेश सर्वदा रक्ष मानद ॥ २० ॥
 इन्द्रस्तु प्रहमन्नाक्षयमहत्यामिदमवधीत् ।
 सुश्रीणि परितुष्टोऽस्मि गमिष्यामि यथागतम् ॥ २१ ॥
 एषं संगम्य तु तया निश्चक्रामोऽज्ञातः ।
 स संभ्रमात्परत्राम शङ्कितो गौतमं प्रति ॥ २२ ॥
 गौतमं म ददर्शाय प्रविशन्तं महामुनिम् ।

20 ^a) Śi N̄s V-2 B D1-3 7 10-12 M̄s अत्र (D₁ ७*)
 दीप्त (D₁ ७*), V₁ damaged (for अधावशीत्); Śi
 नरश्रेष्ठ, M̄s (after corr. as in text) ७* (for सुरश्रेष्ठ).
 —Śi D₁ 11, 12 om. 20^a*, —^b) N̄s V B D₁ 3 7 10 M̄s
 कृतार्थं (D₁ 3 7 ७*) मा वचत् (V₁ ७* प्रधीत्) तदा (D₁ ७*)
 D₁ इत्यर्थं वचत्तदा; Cg as in text (for ७*) —V₁
 damaged from 20^a up to हत्या in 21^b*, —^c) V₁ 4 Dt
 D₁ 4 8 11 14 (after corr.) T₁ 3 G₁ M₁ 3 Ct कृतार्थोऽस्मि
 (T₁ ३) D₁ illeg. after यो up to च्छ in ४, G₁ नरश्रेष्ठ.
 G₁ कृतार्थोऽस्मि सुरश्रेष्ठ (sic) —^d) B₁ 3 श्रीं गच्छ (by
 transp.), D₁ illeg. from श्री up to भो, Śi D₁ 3 5 7 12
 कश्चित्; N̄s V-2 B D₁ 10 11 12 अ (B₁ 3) लक्षितः (for इत
 प्रभो). —N̄s V-2 4 B₁ 3 4 D₁ 10, 11 M̄s om. 20^a*, —^e)
 D₁ देवदेवेता (ditto). —^f) Śi Dt D₁ 4 8 9 11, 14 T₁ 3
 G₁ 3 (before corr. as in text) 4 M̄s सर्वथा, Dt D₁ 8
 गौतमात्; D₂ सादत् (metathesis) (for मानद).

21 V₁ missing up to हत्या. (cf. v.1 20). —^a)
 N̄s V-2 4 B D₁ 10 12 तानिह, M̄s इन्द्रश्च, Śi D₁ 3 5 7 11 12
 सहवाश्रमयेत्युक्तं त्वह (D₁ 3 5 7 अहि [with hiatus]); D₁
 मोहोऽर्थं देवरूपिणी —^b) Śi D₁ 3 5 7 11 12 उवाच (for
 सुश्रीणि) —D₁ illeg. from गते up to मि in ४, D₁
 illeg. for परितुष्टो, D₁ 2 [S] मि (for उस्मि). D₁ 4 T₁ 3
 G₁ 4 M₁ 3 परितुष्टोऽस्मि सुश्रीणि (by transp.). —^c) T₁
 damaged from गते up to ग in 22^a*, N̄s V B D₁ 10 12
 M̄s क्षमस्व मे (V₁ damaged from स्व up to 22^a*) (for
 वयागतम्).

22 V₁ missing ^a), T₁ missing up to ग in ^a (cf.
 v.1 22). —^b) T₁ 3 G₁ 4 च (for तु). Dt D₁ 8 M̄s तदा (for
 तया) Śi N̄s V B D₁ 3 7 10-12 M̄s एवमुक्त्वा ततोऽह्यतो.
 —B₁ reads 22^b in marg. sec. m. —^c) D₁ अयात्
 (for [उ]रजात्) Śi D₁ 11 12 G₁ तदा; B₁ मुने (for ततः).
 N̄s V₁ B₁ 4 D₁ 10 12 M̄s निष्क्राम्युत्तुङ्गादुने (B₁ चदा
 M̄s मुनीत्), V₁ 4 निष्क्राम्य उदत्तामुने. —V₁ 4 M̄s om.
 22^a*, —^d) D₁ 5 11 12 G₁ M̄s संस्रमं (G₁ M̄s मस्र);
 Cg, h, t स संभ्रमात् (as in text). Śi D₁ 12 चरन्; D₁
 पण्ड (for त्वात्). N̄s V₁ 3 B D₁ 7 9 10 12 संभ्रमावति (N̄s

देवदानवदुर्धर्षं तपोवलसमान्वितम् ।
 तीर्थोदकपरिक्लिप्तं दीप्यमानमिवानलम् ।
 गृहीतसमिधं तत्र सकृत् समिपुङ्गवम् ॥ २३ ॥
 दृष्ट्वा सुरपतिस्त्रस्तो विपण्णवदनोऽभवत् ॥ २४ ॥
 अथ दृष्ट्वा सत्सत्वायं मुनिवेषधरं मुनिः ।
 दुर्धृत्तं वृत्तमपेक्षो रोपाडचनमवधीत् ॥ २५ ॥
 मम रूपं समास्थाय कृतवानसि दुर्मते ।
 अवर्त्यन्मिदं यस्माद्विफलस्तं भविष्यति ॥ २६ ॥

^a हुनि [sic] लो राम. —^b) B₁ 4 सोतमं; D₁ om. (hapl.)
 (for गौतमं प्रति).

23 ^a) Śi D₁ 5 11 12 तु, D₁ 9 11 T सं (for स). —^b)
 Śi D₁ 3 5 7 11, 12 सत्सत्वायः (for महामुनिम्). —^c) G₁ 3
 क्लिप्त, Cg as in text (for क्लिप्तं). —^d) D₁ समिधि (sic).
 Śi D₁ 3 5 7 12 विप्रं (for तत्र). —^e) T₁ damaged from
 व up to हुं, D₁ संतुलं (for सकृत्). Śi D₁ 5 7 11 12
 पुलरंभः; D₂ च सुरंभं (for समिपुङ्गवम्)

24 ^a) Cg रिणेत्रदन Śi D₁ 3, 7 11, 12 विस्मदा मया
 नितः; D₁ विपादनमोहितः. —^b for 23-24, N̄s V B
 D₁ 10 12 M̄s subst. :

1003^a ददर्श सहायानं गौतमं दीप्ततेजसम् ।
 देवेरपि सुदुर्धर्षं तपोवीर्यवलाभयम् ।
 पुण्यतीर्थोदकक्षिप्तमायं क्लिप्तनिवालयम् ।
 समिक्लप्यं सकृत्तमादायावान्तमश्रमम् ।
 दृष्ट्वैव च तदा शङ्को विपादमग पण्ड । [5]

[(1. 1) V₁ B₁ 4 प्रविशत् ददर्श, V₃ म ददर्श समावति (for
 the prior half). —V₁ damaged from त in गौतम up to
 व in 1 2 —D₁ illeg. after गौतम up to २ in 1 2 and
 gloss इतो गौतम ददर्श (for the post. half). —(1. 2) N̄s
 B₁ D₁ 10 M̄s दुर्धर्षं D₁ सैर्व (for सैर्व). —(1. 3) V₁ अन्ते
 (sic) (for आश्रम). D₁ दीप्यमानमिवानलं (for the post.
 half [= 23^a]). —B₁ om. 1. 4. —(1. 4) D₁ illeg. for
 the prior half after first स V₁ सपेक्षलाय (for सत्सत्वाय).
 V₁ om (hapl) व in [अ]पानम्, N̄s V₁ B₁ D₁
 आदायान (D₁ ७*) त; आश्रम [submetric] त्व (N̄s त)
 मश्रम, M̄s सपुण्यलायमश्रम (for the post. half). —(1. 5)
 D₁ M̄s न इदं (for दृष्ट्वैव च). V₁ B₁ तन (for तत्र).]

25 ^a) D₁ अ* (for अथ). N̄s V B D₁ 10 12 M̄s
 सोपि दृष्ट्वैव देवर्षं (V₁ ७*) —^b) D₁ illeg. M̄s मुनिं (for
 मुनि). —^c) V₁ D₁ 5 दुर्धृत्तं, M̄s (after corr. sec. m. as
 in text) सुवृत्तं (for दुर्धृत्तं). D₁ M̄s संपद्य (for संपद्यो).
 —^d) D₁ M̄s कुडो (for रोपाड).

26 ^a) D₁ 3 मम रूपस्य रूपं. —^b) D₁ illeg. up to
 मि, D₁ T₁ 3 G₁ M₁ 3 तस्मात्; G₁ कस्मात्, Ck as in text

गौतमेनैरमुक्तस्य सरोषेण महात्मना ।
 पेतुर्वृषणौ भूमौ सहस्राक्षस्य तत्क्षणात् ॥ २७
 तथा ग्रन्था स वै शक्रं भार्यामपि च शप्तवान् ।
 इह वर्षसहस्राणि बहूनि तं निरत्स्यसि ॥ २८
 वायुभक्ता निराहारा तप्यन्ती भस्मशायिनी ।
 अदृश्या सर्वभूतानामाश्रमेऽस्मिन्नितत्स्यसि ॥ २९

इति श्रीरामायणे वाल्मीके सप्तचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४७ ॥

(for यस्माद्) —^d) G₂ M₄ अपलत्, Cm g k t ri¹ (as in text) N₂ V B D₁ 10 11 13 M₄ तस्मात्त्र विक(V₂ °ह्) लो भव, D₅ M₂ विकलत्त्र भविषति —After 26, D₁ ins

1004* भगामिलपुक् पाप यदेव परिधानसि ।
 (illeg ink spread) सहस्रभगभूषण ।
 त्यक्त प्रवृत्त यन्मुह परदारामिशनम् ।
 (illeg ink spread) ति पराजयम् ।
 पेतु(वृष)णौ चार्प सहस्रभगता गत । [5]

27 V₂ om 27^{as} —^a) T₁ damaged up to सु D₂ उक्तस्तु, D₁₄ T₁ 2 G₄ उ(T₁ damaged) केतु (for उक्तस्य) —^b) Dt D₁ 8 सुरोषेण S₁ D₂ 3 5 7 11 13 कुपितेन सदात्मना (S₁ °न) —^c) B₁ पेत्तुर V₄ lacuna for वृत् in वृषणौ D₁ चोमौ (for भूमौ) D₂ अपतत्त्र वृषणी —^d) N₂ V B D₁ 10 राघव, M₄ चीमत (for तत्क्षणात्) —After 27 N₂ V B D₁ 10 11 13 M₄ ins

1005* व्यति स तदा चासीद्वतीषा निपलीकृत ।
 धर्षितस्तपसोमेण वदमल चैनमाविशत् ।

[(1 x) D₁ सत्मा (for स तदा) D₁₃ च तदानी भूद्, D₁ illeg from वि up to धर्ष in 1 2] —(1 2) V₂ M₄ वैश, V₄ प्राप्तोस्तदा, B₁ चापि भोविशद् B₄ वैव सदा (for चैनमाविशद्)]

28 ^a) D₁₄ T₁ 2 अथ T₃ तदा (for तदा) Dt D₂ 8 च (for स) S₁ D₂ 3 5 7 11 13 तथा चोक्तवा(S₁ D₂ °फ) सहस्राक्ष, N₂ V₁ 3 B D₁ 10 13 M₄ त शत्रोर्व(B₁ 3 4 °व) मुनिवरो(B₂ °श्रेष्ठो, B₄ °बाली), V₄ त द्रष्टव्य मुनी रोयाद्, M₃ अथ शत्रुना सहस्राक्षे —^b) N₂ V₁ 3 B₁ 3 4 D₁ 10 11 13 M₄ तामपि, V₄ ता दैव, B₂ तामपि (for अरि च) D₁₄ T₁ 2 G₄ अदृश्यामपि —^d) D₁ वने निय (for बहूनि त्वं) Dt D₂ 8 बहूनि निरित्यसि —For 28^{as}, S₁ N₂ V B D₂ 3 5 7 10 13 subst

1006* वर्यणा नमव्येयारुद पापे दुष्टचारिणि ।
 [V₂ पु illeg B₄ वृणद् (for वृणद्)]

29 ^{as}) Dt D₁ 8 Ct वा 1, Cg as in text (for वायु) G₁ 3 M₁ 3 शिवा भूषा (for निराहारा) T₃ तप्यते (sic) M₄ मलिन्या भस्मशायिनी (for ^d) S₁ N₂ V B D₂ 3 5 7 10 13 तप्यमाना नि(D₂ *) राहोषा(V₁ damaged for राहणा) सतन

यदा चैतद्वनं घोरं रामो दशरथात्मजः ।
 आगमिष्यति दुर्धर्षस्तदा पूता भविष्यति ॥ ३०
 तस्यातिथ्येन दुर्धृते लोभमोहप्रिर्जिता ।
 मत्प्रकाशे मुदा युक्ता स्वं वपुर्धारयिष्यमि ॥ ३१
 एरमुक्त्या महातेजा गौतमो दुष्टचारिणीम् ।
 इममाश्रममुत्सृज्य सिद्धचारणसेविते ।
 हिमराच्छिखरे रम्ये तपस्तेपे महातपाः ॥ ३२

भस्मशायिनी, D₁ वायुनृता भस्ममाया(also °रूपा) ततो भस्म सम्प्रभा, Cg t (t वाप, rest) as in text —^d) S₁ D₁ 11 12 °र, N₂ V₁ 3 B D₁ 10 13 वनेऽस्मिन्स्त्व, V₂ 4 वने त(V₄ °)स्मिन् (for आश्रमेऽस्मिन्) Dt D₂ 8 T₃ वसिष्यति, D₂ 9 G₁ 3 M₁ 3 4 भविष्यति D₂ जातिथ्ये त्व भविष्यति —After 29, D₁ ins

1007* रूप च ते प्रजात्ये(चे)य गमि यति सुदुर्लभम् ।
 मामेव त्व सुदुर्धृते यस्मात्पापेऽनमन्यसे ।
 तदा प्रवृत्ति चाभून्मन्त्रा रूपगुणाभिवता() ।
 पुनश्चैतामुवाचैव पत्नी ता गौतमो मुनि ।

30 ॐ Ck यदा चैतद्वनं घोरमिव्यादि सार्धश्लोकद्वय गौतमेन श्रापमोक्षप्रतिपादक प्रक्षिप्तम् । ॐ Cg t disagree —D₂ 9 om (hapl) 30 T₁ damaged up to द्व in ^a —^c) V₄ D₂ यति, Cg k t as in text (for यदा) S₁ D₂ 7 12 चेद्, N₂ V B D₁ 10 13 M₄ त्विद्, Dt D₂ 8 तद्य, D₂ चैनं, D₁₁ चोद्, G₁ 3 M₁ त्वेतद्, Ck 'as in text (for चैतद्) —^d) S₁ D₂ 3 7 11 12 °दासरविर्जितु —V₁ damaged from द्य in ^a up to the prior half of 1 x of 1008* —^e) T₃ G₁ 3 °या कालमिव्यति, Ct भाग^a (as in text) N₂ V₄ 4 B D₁ 10 13 M₄ त दृष्टा (for दुर्धर्षस्) —^d) D₁ illeg for दा पूता भविष्य N₂ 2 4 B D₁ 10 13 भूतपापा(N₂ °प्या), D₂ यथा^a T₃ तन^a (for तदा पूता)

31 D₁₁ om (hapl) 31 —^a) G₁ 3 दुर्धरे —^c) S₁ D₂ 12 तदा काले, Dt D₂ 8 G₁ 3 M₁ Ct मयकात, Cg as in text (for मयकारो) —^d) S₁ D₂ 3 7 °रूप Dt D₂ 8 स्वं, D₂ 13 M₃ न्वरप, D₁₄ (sup lu) तं, Cm g t as in text (for स्य वयुर) —For 31 N₂ V B D₁ 10 13 M₄ subst

1008* तस्यातिथ्यं सुदुर्धरे हृत्वा लोभप्रिर्जिता ।
 मत्प्रमीप मुदोवेता समुपेयस्यमतयम् ।

[(1 x) V₁ missing the prior half (cf v 1 30) M₄ पात (for लोभ) —(1 2) V₂ वने, D₁ M₄ पो(M₄ पू) तपात् (for मुनेवेता) B₂ D₁ 10 मनुष्यभक्तद्वे, D₂ रं ह्य भारविष्यति, M₄ तन द्य^a (for the post half)]

32 D₁₄ damaged up to ते in ^a —^b) V₁ damaged after गो B₁ गोतमो, B₄ गोतमी N₂ B₃ m also as in

अफलोस्तु ततः शक्रो देवानामिपुरोगमान् ।
अत्रनीत्रस्तपदनः सर्पिर्मन्धान्सचारणान् ॥ १
कुर्वता तपसो विभं गौतमस्य महात्मनः ।
क्रोधमुत्पाद्य हि मया सुरस्यार्यमिदं कृतम् ॥ २
अफलोऽग्निं कृतस्तेन क्रोधात्सा च निराकृता ।

शायमोक्षेण महता तपोऽस्यापहृतं मया ॥ ३
तन्मां सुरराः सर्वे सर्पिर्वाः सचारणाः ।
सुरसाहस्रं सर्वे सफलं कर्तुमर्हथ ॥ ४
शतक्रतोर्वचः श्रुत्वा देवाः सप्तपुत्रोऽगमाः ।
पितृदेवानुपेत्याहुः सह सर्वैर्मरुद्वैः ॥ ५

text) D13 शक्रा भार्या मनीर्णिणी — १२ V1-3 B1 & D10 13
M4 om 32nd — 3rd D2 सेवित S1 V4 B2 3 5 7 11 12
पुण्य (V4 B2 ०ण्य) देश समासाद्य सिद्धचारणसेवित — For
32nd, B2 subst

1009* मनसा द्यमानेन गतवान्मुनिसत्तम ।
— १st N2 V B D13 M4 लिखर गवा, D1 10 १त्या, D2 3
०ण्ये (for लिखर रन्ये) — १st N2 V2 B2 & D10 सुदुल
(B2 ०क)र, V1 3 4 B1 M4 सुदुश्चर, D2 4 7 11 13 महायथा
(D13 ०मया), T2 moth eaten (for महायथा)

Colophon *Āṇḍa name* N2 V1 D4 11 12 14 om
V2 & B D10 आदि, D13 अयोध्या — After *Kanda*
name N2 (before *sarga name*) V2 B4 D10 ins
बालचरिते — *Sarga name* S1 N2 V2 B2 & D2 5 7 10 12
शक्रा (S1 D2 5 7 12 इन्द्रा) हल्याशाप, V1 D1 अहल्याशाप,
V2 गौतमात्माहल्याशाप, V4 अहल्याशापनाद, B1 3
शायमोक्षमि (B2 ०दि) शाप, D2 3 अहल्याशापमोक्षे, D13
शायमोक्ष — *Sarga no* (figures words or both)
S1 V1 & B2 & D2 5 11 12 om N2 B2 3 D10 49 V2 D2 5 1,
V3 D1 D2 6 14 S (except M4) 48 D1 38 D2 7 37
D13 — कडे — हल्ययो नाम 49 — After colophon
D12 4 M2 conclude with श्रीरामाय नम, G2 श्रीमते
रामानुजाय नम

48

ET* N1 missing Sarga 48 (cf v1 I 33 8)

1 १st N2 V B D1-3 7 10 11 13 M2 & Ck विकल्ह (V2
० [sic]) Cmg t 15 in text (for अफल्ह) N2 तदा,
V B D1 3 5 7 10 12 13 हृच (for तत) — १st V4 अग्नि,
G1 3 M1 साभि, C v r m g as in text (for अग्नि) D14
T1 3 G2 M2 C v r g पुरोषय, Cm as in text (for
पुरोगमान्) — १st S1 (m as in Dt) D1-3 7 11 12 तत्र
चचन (D13 चचन तत्र [by transp]) N2 V1 3 4 B (B2 m
also) D1 M1 ग्रन् (B2 हृष्ट) मनस, Dt D2 ०नयन, D2
सहग्रनयन (hypermetric) D13 उन्मत्ता रमा G2 2 रोप,
G2 M2 च सुयग्रन, Cg k as in text (for ग्रस्तपदन)
१२ C2 ग्रस्तपि प्राप्तम स्वकारणे देव्य व्ययदे । १३ — १st V2
V1 3 4 B D10 13 सह मिद्विद, Dt D2 3 4 M1 मिद्विद (D2
००) वै, D13 (with hiatus) अग्नि, D2 सिद्ध (for
सर्पिर्मन्धान्) V2 सूर्यपर्विरो दल्ह

2 D14 damaged up to त in 6th — १st D2 विभे, D11
विभो (both sic) (for विभे) — १st N2 V B D10 13 M2
प्राक्षेय रिक्थिया मया — B1 om (hapl) 2nd — 3rd S1
D2 3 5 7 11 12 T2 तु (for हि) — १st Cg k as in text
— For 2nd N2 V B2-4 D10 13 M2 subst

1010* गौतमात्पोषमुत्पाद्य सुरकार्यचिकीर्षुणा ।

[V2 गौतम, V4 ०तम, B2 गो, M4 ०तमे (for गौतमात्) V2
०वायं (for सुरकार्यं)]

3 B1 om 3 (cf v1 2) — १st N2 V1-3 B2 3
D10 13 M2 अपलोद्, V4 B2 अफलोद्, D2 अपहस्तु, Cm as
in text Ck विकलोदिमि (for अफलोडिमि) D2 G2 तत्त
(for कृतत्) — १st S1 D2 5 7 12 स च (D2 7 तु) निराहृत,
D1 सर्वे निराहृता, D2 सा तु Cm k as in text (for सा
च निराहृता) N2 B2 D10 13 क्रोदेन च निराहृत — १st M2
damaged for क्षेण D14 damaged from up to प in 4th.
N2 V1-3 B2 & D10 13 M2 तेनास्य, G2 भवता (for महता).
V4 तेनास्य शायमोक्षेण — १st N2 V B2-4 D10 13 तपोविभ
(B4 ०भ [sic]) कृतो, D2 7 ०प्यपहृत (for तपोऽस्यापहृत).
M2 तपोविभं मया कृत

4 १st S1 D1-3 7 11 12 14 T2 2 G2 M2 (M2 before corr.
as in N2 after corr sec m) 4 Ck तम्पद्, N2 ०मा,
D13 ०मे, T2 त मा (for तम्पद्) N2 V B D10 13 14 M1 गणा;
T2 सुरा (for सुररा) C v r m g as in text (for १st)
— G2 om (hapl) 4th — १st V2 (with hiatus) क्षपि;
D10 ०सिद्धा, G2 ०सधान् (sic) (for सप्तपदा) — १st S1
D1-3 5 7 11 12 ०साहाय्यकर्तार, N2 V B D2 ०० ०० ०० ००
(N2 lacuna for फल), Dt D2 ०कार्यकर युयं, D13 ०वायं
च सक्ल, T2 G2 M2 माह (G2 ०हृत्) (T2 ०त) M2
०वर्षमिदं, M2 ०वायार्थमिदं, Ck as in text (for
सर्वेष्वर सर्व) — १st T2 अर्हवि (sic) (for अर्हय)

5 १st V2 V1 3 4 B2 & D10 13 M2 दातकनुवच श्रुत्या;
V2 दातम्य तद्वच श्रुत्या D11 तस्य तद्वचन श्रुत्या — १st N2
V1 3 B D10 11 13 सप्ति, V2 तप्ति (for साप्ति) D14
damaged from सि to मा — १st Dt D2 6 8 M2 सप्त सह
(सह सर्वेद) — For 5th N2 V B D10 13 M2 subst

1011* उतु विदुमणाश्वपतिरिदं ग्रन् समगमान् ।

[V1 न दुम D11 आगनुवा M2 दृष युवा (for तत्र
मनागान्)]

अयं मेघः सट्टपणः शनो ह्यवृषणः कृतः ।
मेघस्य वृषणो गृह्य शक्रायाशु प्रयच्छत ॥ ६
अफलस्तु कृतो मेघः परां तुष्टिं प्रदास्यति ।
भवतां हर्षणार्थाय ये च दास्यन्ति मानसाः ॥ ७

—For 5 $\dot{S}i$ $\dot{D}i-3$ 5 7 12 subst., $\dot{D}9$ subst. 1 2 only for 5^{cd}

1012* तस्य तद्वचनं श्रुत्वा पितृदेवाः समागताः ।
पितृदेवानुवाचाग्निं सहितः समरुद्रणैः ।

[(1 x) $\dot{D}3$ 7 सहस्राक्षस्य धीमन् (for the post half)
—(1 2) $\dot{S}i$ पितृन्, $\dot{D}5$ इव (for पितृ) $\dot{S}i$ $\dot{D}5$ 12 समरुद्रणान्]
—Then $\dot{D}1$ reads 1016* followed by 8^{ab} —After
5, $\dot{G}1$ 3 $\dot{M}1-3$ (inf lin sec m) ins

1013* पुरा विचार्य मोहेन नृपिण्यर्षी शनकतु ।
धर्मयित्वा सुने शापात्तत्रैव त्रिषलीकृत ।
इदानीं कुप्यते देवान्देवराज पुरंदर ।

[(1 1) Note hiatus between the two halves
—(1 2) $\dot{G}1$ विकृ (sic) $\dot{M}3$ विकल (for विकरी) $\dot{M}3$
lacuna for कृत]

6 * $\dot{N}2$ V $\dot{B}3-4$ $\dot{D}10$ 13 एष, $\dot{B}1$ एष वै (hyper-
metric) $\dot{C}m$ g k t as in text (for अयं) $\dot{S}i$ $\dot{D}i-3$ 5 7
11 11 "हि मेघो वृषणी — $\dot{D}9$ reads from 6^{ab}—7^{cd} in marg
— $\dot{S}i$ $\dot{N}2$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}i-3$ 5 7 10 12 शक्रश्चा (D₅ वा) वृषणी,
 $\dot{M}3$ शक्रोस्य वृषणं कृत —For 6^{ab}, $\dot{M}4$ subst

1014* पशोर्मघस्य वृषणौ भवतां सतत म्रिय (यौ) ।

— \dot{D}^d $\dot{M}1$ $\dot{C}k$ शक्रस्य (for दाक्राय) $\dot{D}4$ $\dot{T}3$ $\dot{G}1$ 3 $\dot{M}3$ प्रय-
च्छय —For 6^{cd}, $\dot{S}i$ $\dot{N}2$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}i-3$ 5 7 10—12 $\dot{M}3$ subst

1015* अत्येमी वृषणी जिज्ञा महेन्द्राय प्रयच्छत ।

[$\dot{N}2$ (after corr m) अत्येमी, $\dot{B}1$ 2 $\dot{M}4$ तत्येमी (for
अत्येमी) $\dot{S}i$ $\dot{D}i-3$ 5 7 11 12 अस्मादहस्य वृषणी ($\dot{S}i$ $\dot{D}5$ 12 "ण)
(for the prior half) $\dot{V}1$ प्रयच्छतु $\dot{V}2$ "से (sic) $\dot{D}3$
"च्छ*, $\dot{D}5$ 7 12 "थ (for प्रयच्छत) $\dot{S}i$ सहस्राक्षे समाशु, $\dot{M}4$
दातुमर्हस्य सुमना (for the post half)]
—Thereafter, $\dot{S}i$ reads 9^{ab}

7 $\dot{D}9$ reads " in marg (cf v l 6) — \dot{D}^d $\dot{D}14$
damaged from छ to मे $\dot{D}5$ 12 "श्च, $\dot{M}4$ अक्षलोय $\dot{N}2$
 $\dot{B}3$ $\dot{D}9$ 10 13 $\dot{T}3$ $\dot{G}1$ ततो, $\dot{M}3$ तदा (for वृतो) — $\dot{S}i$
 $\dot{D}i-3$ 5 7 11—13 $\dot{C}k$ पुष्टि, $\dot{C}t$ as in text (for पुष्टि) $\dot{S}i$
 $\dot{D}i-3$ 5 7 12 गमिष्यति, $\dot{N}2$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}i$ 11 13 $\dot{M}4$ उपे ($\dot{M}4$ *)
प्यति, $\dot{D}9$ प्रया" (for प्रदास्यति) $\dot{C}m$ as in text (for $\dot{S}i$)
— \dot{D}^d $\dot{D}t$ $\dot{D}4$ 6 8 9 $\dot{C}m$ t हर्षणार्थं च, \dot{K} (ed) हर्षणार्थं
च — \dot{D}^d $\dot{D}9$ देवद्वयं महात्मने, $\dot{C}v$ r k as in text (for \dot{D}^d)
—For 7^{cd}, $\dot{S}i$ $\dot{N}2$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}i$ (reads after 1012*)—3 5
7 10—13 $\dot{M}4$ subst

1016* भवतामुपयोगेन तदवस्य सुमदचरम् ।

अप्रेस्तु वचनं श्रुत्वा पितृदेवाः समागताः ।
उत्पाद्य मेघवृषणौ सहस्राक्षे न्यवेदयन् ॥ ८
तदा प्रभृतिं काकुत्स्थ पितृदेवाः समागताः ।
अफलान्मुञ्जते मेघान्फलैस्तेषामयोजयन् ॥ ९

[$\dot{D}1$ उपायोगेन (hypermetric) $\dot{M}4$ चास्य मांसेन (for
उपयोगेन) $\dot{N}2$ $\dot{V}1$ $\dot{B}1$ 3 4 $\dot{D}10$ 13 त (V1 y) चास्य, $\dot{D}1$ न हस्य,
 $\dot{D}2$ ततोस्य, $\dot{D}3$ 7 11 तदस्य (sic ?) (for तद्वस्य) $\dot{N}2$ $\dot{B}3$
 $\dot{D}10$ 12 13 तु ($\dot{D}12$ तु) महाकर, $\dot{D}11$ "त्फल (for सुमदचरम्).
 $\dot{M}4$ परा तुष्टमविष्यति (for the post half)]

—Thereafter $\dot{N}2$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}10$ 11 13 $\dot{M}4$ cont $\dot{M}3$ ins
(inf lin sec m) 1 2 only after 1018*

1017* तस्मान्मेघस्य वृषणौ छिन्नैतौ दातुमर्हय ।
इन्द्राय सुरकार्यं पिबलाय पितमहा ।

[(1 1) $\dot{N}2$ द्वौ तौ (submetric) $\dot{V}1$ 1 $\dot{B}1$ $\dot{M}4$ "त्तेमौ,
 $\dot{V}2$ "त्तारमे (for छिन्नैतौ) —(1 2) $\dot{D}11$ महत्पन (for
महा)]

—After 7 $\dot{D}t$ $\dot{D}6$ 8 $\dot{G}2$ $\dot{M}1$ 3 ins

1018* अक्षय हि फल तेषां यूय दास्यथ पुष्करम् ।

[$\dot{M}3$ हतिता (for पुष्करम्)]

—Thereafter $\dot{M}3$ reads (inf lin sec m) 1 2 of 1017*.

8 $\dot{D}t$ om 8 — $\dot{G}2$ इत्येन्द्र (for अग्नेस्तु) $\dot{M}3$
वचनान् (sic ?) (for वचन) $\dot{C}k$ as in text (for \dot{D}^d) — $\dot{S}i$
 $\dot{M}3$ "हिता, $\dot{C}k$ t as in text (for समागता) —For 8^{ab},
 $\dot{N}2$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}10$ 11 13 $\dot{M}4$ subst

1019* श्रुत्वा चाग्निपुरोगानां देवानां विरते वच ।

[$\dot{V}1$ सग्नि, $\dot{V}2$ $\dot{B}3$ $\dot{D}11$ 12 [न] याग्नि (for चाग्नि)]
—After 8^{ab}, $\dot{D}1$ reads 6 — $\dot{D}3$ om (hapl) 8^c—9^d.
— $\dot{N}2$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}10$ 11 13 $\dot{M}4$ उत्कृष्ट, $\dot{D}5$ 9 उत्पाद्य (for
उत्पाद्य) $\dot{S}i$ $\dot{D}5$ 12 वृषण, $\dot{V}3$ $\dot{M}4$ "णा, $\dot{C}g$ as in text
(for वृषणी) — \dot{D}^d $\dot{D}5$ $\dot{M}3$ सहस्राक्ष (for "क्षे) — $\dot{D}16$
damaged for चाक्षेभ्य $\dot{S}i$ $\dot{D}i$ 3 5 7 12 समादधु, $\dot{D}6$ 8 $\dot{T}3$ $\dot{G}3$
 $\dot{M}1$ 3 न्यवेदायन् ($\dot{D}5$ $\dot{M}3$ "त्[sic]) $\dot{D}9$ निवेदयत् (sic) (for
न्यवेदयन्) $\dot{N}2$ $\dot{V}2$ 4 $\dot{B}3$ $\dot{D}i$ 10 13 इदानीं पददु ($\dot{V}4$ "पु) मदा
($\dot{B}2$ [before corr] "ययुस्तया), $\dot{V}1$ 3 $\dot{M}4$ इन्द्राय प्र ($\dot{V}3$ च,
 $\dot{M}4$ वि) ददु ($\dot{M}4$ "पु) स्तदा

9 $\dot{D}2$ om 9^{ab} (cf v l 8) $\dot{D}4$ reads 9 in marg
 $\dot{S}i$ reads 9^{ab} after 1015* — $\dot{N}2$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}10$ $\dot{M}4$ तत,
 $\dot{C}m$ g t as in text (for तदा) — $\dot{S}i$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}10$ 13 $\dot{M}4$
वितर वयमोमिन् ($\dot{V}3$ $\dot{B}3$ "जना) — \dot{D}^d $\dot{S}i$ $\dot{N}2$ $\dot{V}1$ 3 4
 $\dot{B}3$ $\dot{D}i$ (m gloss अट्टपण) —3 5 7 9—13 $\dot{M}4$ अक्षय, $\dot{V}3$ त्रिषत्,
 $\dot{C}m$ t as in text (for सप्तान्) $\dot{D}11$ मुच्यते (sic) (for
मुञ्जते) $\dot{S}i$ $\dot{V}1$ 3 4 $\dot{B}3$ $\dot{D}i$ —3 5 7 9—13 $\dot{M}4$ मेघ, $\dot{N}2$ दोष, $\dot{V}3$
लोच, $\dot{C}m$ g as in text (for मेघान्) — \dot{D}^d $\dot{M}3$ पक्षं तु न ($\dot{S}i$
पक्षम्) $\dot{S}i$ $\dot{N}2$ V $\dot{B}3$ $\dot{D}i$ —3 5 7 10—13 $\dot{M}4$ तपक्षं तु न ($\dot{S}i$

इन्द्रस्तु मेपट्टणस्तदा प्रभृति राघव ।
गौतमस्य प्रभावेन तपमथ महात्मनः ॥ १०
तदागच्छ महोत्तेज आश्रमं पुण्यरुर्षणः ।
तारयैनां महाभागमहल्यां देवरूपिणीम् ॥ ११
विद्यामित्ररचः श्रुत्वा राघवः महलक्ष्मणः ।
विद्यामित्रं पुरस्कृत्य आश्रमं प्रतिवेश ह ॥ १२

ददर्श च महाभागं तपसा द्योतितप्रभाम् ।
लोकैरपि समागम्य दुर्निरीक्ष्यां सुरासुरैः ॥ १३
प्रयत्नाधिर्मितां ध्याता दिव्यां मायामयीमिव ।
धूमेनाभिपरीताङ्गी दीप्तामग्निशिखामिव ॥ १४
सतुपारावृतां साध्नां पूर्णचन्द्रप्रभामिव ।
मध्येऽम्ममो दुराधर्षा दीप्तां ध्वयप्रभामिव ॥ १५

D1-3 7 12 ते न, N2 B2 D10 च [N2 m] न, V2 B2 न तु [by transp] सुंजते, Cv r g t as in text (for d) —

10 " S1 V2 3 4 B1 3 4 D10 12 M4 च, B2 स, Cg as in text (for तु) V4 [म] भूत्स, D2 वृषमणम्, D10 "पणे; G2 "पणौ (last three sic) (for मेपट्टणस्त) —^d S1 N2 V2 B2 3 4 D2 5 7 12 M4 तत (for तदा), D2 राघवौ —^c V2 B1 4 गौतमस्य S1 V1-3 B D1 2 5 11 प्रभावेण —^d D1 D2 4 5 6 Ct तपसा, Cg as in text (for तपसा) D12 तु, D2 3 7 11 सु (for च), T2 M2 (before corr) शापमस्य S1 D2 तपस सुमहच्छब्द, N2 V B D10 12 M4 बभूवामितवेवस, (B1 erroneously repeats after 12 from प्रभृति in 10^d up to मितवे)

11 " D1-3 7 9 तस्माद्ब्रूज D2 महाबाहो, D2 9 T2 3 G1 3 (before corr) 4 M2 महातेजा Cm k t as in text (for "तेन) S1 D1 11 12 तस्माद्ब्रूजोऽमेहे तस्य —Note hiatus between "and ^d —For 11^d, N2 V B D10 12 M4 subst

1020* तस्माद्विद्या रामाशु गौतमस्याश्रम विभो ।

[V1 lacuna for त in तस्मात् N2 B2 D10 प्रविश्व D13 प्रसाध (for प्रविश) V2 3 चाशु त, M2 राम त्वम् (for रामाशु) V1 गौतमस्य B4 प्रभो (for विभो) D13 गौतम मुनिस्तपः M4 एतमयाश्रम प्रभो (for the post half)]

—^c S1 N2 V2 3 B2-3 D1 3 5 7 10 11 12 "येना, D12 तारेय* (sic) G2 "येना, M2 सोवयस्, Cm t as in text (for तारयैना) D12 महाभाग (with hiatus) —^d S1 चाहल्या, D1 3 7 10 बहल्या, Ck as in text (for बहल्या) S1 D12 12 कामरूपिणी, N2 V2 B D10 12 M4 शापवै (B1 "वि) वृत्त (V2 B2 D12 "तात्) V1 पतिविकल्पा (sic) V2 4 पापवैवृत्ता, Ck t as in text (for दवरूपिणीम्) D1 (m gloss) दनेन ब्रह्मणा सर्वरूपेण बहल्या निर्मित

12 " N2 V B D10 12 M4 राम सौमित्रिणा सह —^c V1 lacuna for विद्यामित्र D2 om (hapl) from 12^d up to 1^c of Sarga 49 —Note hiatus between "and " —^d S1 D1 3 5 7 11 12 प्रतिवेश महावन (D11 "धम), N2 V B D10 12 M4 प्रविद्याश्रम तत (M2 तु), D12 T1 3 G2 सम धनमयाविशत् —After 12 B4 erroneously repeats from प्रभृति in 10^d up to मितवे in 10^d (cf v.l. 10^d)

13 D2 om 13 (cf v.l. 12) —^a S1 N2 V B D1 3 5 7 9 12 M2 4 म (D1 स) ददर्श (D2 ददर्श स [by transp]) Cg as in text (for ददर्श च), M2 ततस्तत्र, Cm "गस्य (for महाभाग) —^d S1 D1 (m gloss) परिपुष्टयुति 3 5 12 [अ] द्युरितप्रभा, V2 B2 M4 (before corr) [उ] द्योतितप्रभा Cm g k t as in text (for ^d), —^d D1 T1 M2 दुर्निरीक्ष्य Cm g k as in text (for ^d). —For 13^d, S1 D1 3 5 7 9 12 subst

1021* एकानव समायाच दुर्धर्षमसुरै सुरै ।

[D12 दुर्धर्षां (for दुर्धर्षणम्) D1 3 5 सतुपारे, D12 अतुता सुरै (for असुरै सुरै) D2 म्दुर्धर्षा दुरासुरै, D2 दुर्निरीक्ष्यां सुरासुरै (=13^d) (for the post half)]

while N2 V (V2 after 15) B D10 11 12 M4 subst

1022* सेन्द्रैरपि सुरै साक्षादनालक्ष्या समागतै ।

[M2 मसुरै (for साक्षर) V2 अपर्यायां (for अनालक्ष्यां) D11 सता, M2 "गने (for समागतै)]

14 D2 om 14 (cf v.l. 12) —^a B1 प्रयत्ना, M2 Ck प्रयत्न, Ct as in text (for प्रयत्नात्) V4 यद्वद् (for ध्याता) —^d V2 3 दिव्य (for दिव्या) —D1 9 T2 om (hapl) 14^d —D11 T1 3 G2 transp 14^d and 15 —^c V2 4 B2 4 D1 11 [अ] नि, D12 T1 3 G1 4 M2 4 [अ] नि, M2 च, Ct as in text (for [अ] नि) D1 परिनागा (for परीक्षाङ्गी) G2 3 M1 धूमेनाग्नादिलामधो (G2 "ता) —^d S1 दीप्तम् (sic) (for दीप्ताम्)

15 D2 om 15 (cf v.l. 12) B1 om (hapl) 15^d D11 T1 2 G2 transp 14^d and 15 —^c S1 N2 V B2 4 D1 3 5 7 10 12 तुपारेण, D2 सु, Cv r as in text (for सतुपार) V2 सर्वौ, V2 B2 4 सद्गता, D1 T2 शुभ्रा, D2 साध्ना M2 (before corr) साध्ना and after corr ser m) साध्ना, M2 सौम्या (sic) Cg as in text (for साध्ना) Ck Cv r सतुपारावृताम् । स इति वा पदच्छेद । Ck —^d D11 G2 पूर्णा, D12 T2 पूर्ण (sic) (for पूज) —D1 3 7 11 om (hapl) 15^d —^c S1 नमोमध्ये, V2 मध्यतको (sic) V4 मध्ये तको, M2 "सा, Ck as in text (for मध्येऽम्ममो) —^d B1 पूर्णचन्द्र* (=15^d), D11 दीप्ता सौम्यामिव —After 15 V2 reads 1022*

सा हि गौतमवाक्येन दुर्निरीक्ष्या बभूव ह ।
 त्रयाणामपि लोकानां यावद्ब्रामस्य दर्शनम् ॥ १६
 राघवौ तु ततस्तस्याः पादौ जगृहतुस्तदा ।
 स्मरन्ती गौतमपचः प्रतिजग्राह सा च तौ ॥ १७
 पाद्यमर्घ्यं तथातिथ्यं चकार सुसमाहिता ।
 प्रतिजग्राह काकुत्स्थो विधितयेन कर्मणा ॥ १८

16 Ds om 16 (cf v1 12) D13 om 16^{ab}
 —^a) Ds [अ]पि, Ts तु, Cg k t as in text (for हि)
 D1: 7-9-^aवाक्येन (for -वाक्येन) —^b) S1 Ns V1: 3 B4
 D3-4: 11 T Gs M1-3 Ck दुर्निरीक्षा Cg as in text (for
 'क्ष्या) —^c) S1 Ds13 Ms4 दर्शनाद्, D13 damaged
 Cm k as in text (for दर्शनम्) —After 16 S1 (marg)
 Dt D4: 6-9: 16 S Cm k t ins

1023^a सापस्यान्तमुपागम्य तेषां दर्शनमागता ।

[D13 damaged from शा to मु Ms आमाम्]

17 Ds om 17 (cf v1 12) B1 om 17 and
 18 S1 reads 17-18^a in marg —^a) Gs च Ms inf
 lin sec m Cg as in text (for तु) S1 Dt Ds11
 Ts Ms तदा (D11 *) Ds [अ]तिथी (for तत्तत्) Ms
 [अ]हत्या (for तस्या) Ns V B3-4 D10: 13 द्रष्टुं राघवौ
 (B4 वत्स) तस्या —^b) Gs Ms जग्राहुस् (sic) S1 Dt
 Ds: मुदा Ms तत (for तदा) —^c) Ms प्रीषा (for प्रति)
 S1 Dt Ds: 9 Ts G1-3 Ms हि, Ms [अ]पि (for च)
 —For 17^a, Ns V B3-4 Ds: 9: 10-13 Ms subst

1024^a सा च तौ पूजयामास स्यूता गौतममापितम् ।

[D13 [ए]ते (for तौ) Ds: 9: 11: 13 प्रतिजग्राह (for
 पूजयामास) Vs स्यूता (sic) (for म्यूता) Ms गौतमस्य
 वच स्यूता (for the post half)]

18 B1 Ds om 18 (cf v1 17 and 12 resp.)
 S1 reads 18^a in marg (cf v1 17) D13 damaged
 from च in ^a up to च in ^b —^a) Ts Gs तदा (for तया)
 —For 18^a, Ns V B3-4 D10: 13 Ms subst

1025^a पाद्यापानमन्त्रकारेण्यारधीनमानमा ।

[V B3 पाद्यापान- Ms वच-पदीभ्य B3 प्रीति (for प्रीति)]
 while Ds: 9: 11: 13 subst

1026^a श्रावण पाद्यमर्घ्यं च चकार मुनिना तयो ।

[Ds: 11: 13 अर्घ्ये (for अर्घ्ये)]

—^a) S1 Ns V B3-4 D10: 13 Ms ताम्रच (C1 B4 D11 13
 'रदा Vs 'रता); Ds: Ts G1-3 Ms: काकुत्स्थौ (sic) Ct
 as in text (for काकुत्स्थौ) —^b) S1 Ds: 9: 11: 13 Gs
 वत्स; Cm: as in text (for त्रिषि) Ns V B3-4 D10: 13
 Ms पूजा न' V: *का; B4 तौ पूजा [by transp.] विधितयेन

पुष्पवृष्टिर्महत्यासीद्वदुन्दुभिनिस्स्रवैः ।

गन्धर्वाप्सरसां चापि महानासीत्समागमः ॥ १९

साधु साध्विति देवास्तामहल्यां समपूजयन् ।

तपोनलविशुद्धाङ्गीं गौतमस्य वशानुगाम् ॥ २०

गौतमोऽपि महातेजा अहल्यासहितः सुखी ।

रामं संपूज्य विधिवत्तपस्तेषु महातपाः ॥ २१

19 Ds om 19 (cf v1 12) —^a) Ms पपातामु (for
 महत्यासीद्) —^b) S1 दिव्य (for देव) S1 Ds: 9: 11: 12: 13
 Ts: Gs-4 नि स्वन् (for निस्वने) Ms देववापानि सस्वन् ।
 Cm t as in text (for ^a) —For 19^{ab}, Ns V B D10: 13
 subst

1027^a दध्नुर्देववापानि पुष्पवृष्टि पपात स्वात् ।

[V: 3 B1: 3 सस्वन्, Vs मुमुदर, D13 दध्नुर् (for दध्नुर्)
 Vs -वापानि (for -वापानि) D13 च (for स्वात्)]

—^a) D13 damaged for अपसरसां Ds Ts वा (for च).
 Ns V B Dt Ds: 6-8: 10: 13 Gs: M1: 3 वैष (B4 *)
 (for चापि) —^b) Dt Ds: 8 Gs: M1 समुत्सव; Cg as
 in text (for समागम) Ms तप्रासीद्विनिस्स्रव

20 Ds om 20 (cf v1 12) —^a) S1 Ns V B
 D1: 9: 10-13 देवाश्च, Ms चाहल्या (for देवाभ्याम्) —^b)
 S1 Ns V B D1: 9: 9: 10-13 तदाहल्या (D13 'ह्रिया; Ds
 'देवी मपूजयन्; Ms सिद्धास्त्र शस्त्रसिरे —Bs reads 20^{ab}
 in marg —^c) Ds तपोनलद्; D13 तपोनल् (for 'नल)
 S1 विनुदा सा, Bs Ds: 9: 9: 11: 13 Ms विनुदा च (D1: 9:
 7: 11: 13 Ms तौ; Ds 'ता); Ts विपुद्गर्भी (for विपुद्गर्भी)
 Ct as in text (for *) —^d) S1 वशानुगाम्; D13
 वशानुगा (for 'नुगाम्) Ms दृष्ट्वा रामसमागमे —For 20^{ab},
 Ns V B1: 3: 4 D10: 13 subst while B3 ins after 20

1028^a विपुदां तपसोमेण तदा रामसमागमे ।

[Vs तया (for तया) Vs -समागमाम्]

21 Ds om 21 (cf v1 12) —^a) S1 Ds: 9: 9: 13
 गौतमन्; Ds गौतमो हि —^b) Ds: 9 अह्रिया; Cm t as in
 text (for अह्रिया) —^c) Ds मदापना (for 'तया)
 —For 21, Ns V B D10: 13 Ms subst

1029^a गौतमश्च महातपा दध्नु दिव्येन शशुषा ।

श्वमाश्रमवदे राममागर्तं प्रपूजयन् ।

वमन्य भार्यया धैव पूजयाहल्यां तदा ।

तथैव सहितो मृगस्तरनने मदावसा ।

[(1 2) B1 [अ]प (for च) —(1 3) Ms [ए 4 (for
 [ए 4) Ms ल्वा (for ल्वा) —(1 4) Ms ल्वा (for ल्वा)
 Vs ल्वा (for ल्वा) D13 तौ शशुषा विद्वत्पराधैव मदावसा
 —(21^{ab})]

रामोऽपि परमां पूजां गौतमस्य महामुनेः ।

| सकाशाद्विधिवत्प्राप्य जगाम मिथिलां ततः ॥ २२

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे अष्टचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४८ ॥

४९

ततः प्रागुत्तरां गत्वा रामः सौमित्रिणा सह ।

विश्वामित्रं पुरस्कृत्य यज्ञराट्पुत्रपागमत् ॥ १

रामस्तु मुनिशार्दूलमुत्राच सहलक्ष्मणः ।

साध्वी यज्ञसमृद्धिर्हि जनकस्य महात्मनः ॥ २

बहूनीह सहस्राणि नानादेशनिवासिनाम् ।

ब्राह्मणानां महाभाग वेदाध्ययनशालिनाम् ॥ ३

ऋषिसाढाश्च दृश्यन्ते शम्भुशितसंकुलाः ।

देशो विधीयतां ब्रह्मन्त्यत्र वत्स्यामहे वयम् ॥ ४

22 Ds om 22 (cf v1 12) —^a) D11 गौतमाय
D4.12 T2 M3 महामन (for 'मुने) N2 V B D10 13 M4
गौ(V1 गौ) तमादयिमत्तमाद् —^c) N2 V B D10 13
अवाप्य विधिवत्तसाप्, M4 अवाप्य पूजयित्वा तु —^d) S1
D1 2.5 7 11 12 तदा, N2 V B D10 13 M4 प्रति, M2 तप (sic)
(for तत) G2 जगाम मिथिलायि —After 22 D2 12 ins
while S1(after 1^{ab}) D1 5 7 9 11 ins before 1 49 1

1030* विचामित्र पुरस्कृत्य पश्यन्देशान्शस्तयाम् ।

[S1 देशं निनेत्, D2 7 द(D1 दे) शस्तियत् (for देशान्दियत्)]

Colophon D2 13 om (For D2 cf v1 12 the
rest cont the Sarga) —Kanda name S1 V4 D1
om N2 V2 3 B D10 आदि^o (B2 then ins बालचरिते),
D3 अयोध्या^a —Sarga name N2 V2 D10 11 अह(D10
हि) स्वपातापमोक्ष (V2 विमोक्ष), V1 2 4 B1 2 अहल्या
दर्शनं B3 अहल्यादर्शनं शापमोक्ष, B4 D7 अहल्यामोक्षण
(D7 ण), D1 3 2 अहिल्यामोक्ष —Sarga no (figures
words or both) V1 2 4 B1 4 D2 11 om S1 (m) D1
D4.2 14 S (except M4) 49 N2 B2 3 D10 50 V2 D2
52 D1 39 D7 38 D13 —कादे—दर्शन 50 —After
colophon T2 G1 4 M2 conclude with श्रीरामाय नमः,
G3 श्रोमते रामाजुषाय नमः

49

❧ N1 missing Sarga 49 (cf v1 I 33 8)
D2 13 continue the previous Sarga —Before 1
D1 5 7 9 11 ins 1030*

1 D2 om 1^{ab} (cf v1 1 48 12) S1 reads (1st
time) 1^{ab} in marg (sec m) as in text followed

by 1030*, then repeats it as in N2 etc. —^a) V1
om D1 D2 कृत्वा (for गत्वा) —^b) N2 V B D1 2 3
7 9 13 M4 दिना राम सहलक्ष्मण —^c) V2 यज्ञराज (for
'वायम्) S1 N2 V B D1 2 3 7 10 13 दर्शं ह (D11 स)

2 ^{ab}) D2 मुनिशार्दूल N2 V B D10 13 त रामो मुनि
(V1 damaged for मो मुनि) शार्दूल दृष्ट्वा यज्ञमभाषत
—^c) G2 साधु यज्ञ, M4 महती तु (for साध्वी यज्ञ) N2
V B D10 13 अहो समृद्धिर्वैजस्य (for ^a) S1 D1 2 3 7 9 11 12
साध्वयै सुसमृद्धौस्य जनकस्य महाभुत

3 D14 partially damaged for ^a —^a) D11 T ह,
G1 2 M1 च, M4 हि (for [ह] हि) V1 *स्राणि S1 D2 9
बहव दातसाहस्रा(S1 ^aदे [sic]), D1 बहुना हि सहस्राणां,
D2 2 7 बहूना हि शतसाहस्रयो(D2 ^aसा, D3 ^aस्रो), D13
वर्धोपितसहस्रा* (sic) —^b) D2 निवासिन —^c) G1
(after corr as in text) महातता (for 'भाग) S1
D1 2 3 7 9 11 12 ब्राह्मणानां समेताना (D2 transp) देश(S2
वेद)भाषाविचारिणा —After 3 D11 ins 1 2 3 of 1031*
thereafter reads 5^{ab} as in N2 etc repeating it in
its proper place

4 ^a) M2 बहव (for दृश्यन्ते) S1 D1 2 3 7 9 11 12
यज्ञराजा(D2 ^aद [sic] D2 11 12 भागा)श्च बहव —^b)
D2 2 7 9 12 च, Ct t as in text (for दात) —D14 par
tially damaged for ^a —^c) D7 दिशो (for देशो) —^d)
S1 D1 2 3 7 9 11 12 वास सुखी(D2 सुख D3 7 11 सुखो)
भवेत् (for वत्स्यामहे वयम्) —For 3^c 4 N2 V B D10 12
M4 (I only for 3^{cd}) subst D11 ins after 3

1031* समागतानां विप्राणां देशभाषाधिकारिणाम् ।
दृश्यन्त ब्राह्मणानां च वासा ब्रह्मरा कृता ।
देशं परीक्ष्यतां ह्यहो वत्स्यामो यत्र वै वयम् ।

रामस्य वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रो महामुनिः ।
निवेशमकरोद्देशे विविक्ते सलिलापूते ॥ ५
विश्वामित्रं मुनिश्रेष्ठं श्रुत्वा स नृपतिस्तदा ।
शतानन्दं पुरस्कृत्य पुरोहितमनिन्दितम् ॥ ६
ऋत्विजोऽपि महात्मानस्त्वर्घ्यमादाय सत्वरम् ।

[D11 13 om l 1 x —(1 x) M₄ इहागतानां V₁
damaged for नो विप्रा V B₂ विक्ता (B₂ 'वा) रिणं (for
[अ] विक्ता रिणाम्) —For ins see below —(1 2) V₄ रम्य
(for वामा) B₂ (m also as above) वशा (for रवा)
D11 तत (for इना) D13 निवासाथ कृषपृथक् (for the post
half) —(1 3) V₃ सवीक्ष्यतां (for परीक्ष्यतां) V₄ *
(lacuna) रय (for ह्यो) B₂ वसामो (for वारयाभो)]
—After l 1, B₂ ins

1032* ज्ञानिना सिद्धवर्गणा मुनीना च महात्मनाम् ।

5 D11 reads 5^{ab} twice (cf v l 3) —^a) D₂ वच*,
D₇ च वच (for वचनं) N₂ V B D10 13 इति रामवच श्रुत्वा
—^b) S₁ D1-3 5 7 11 (second time) 13 M₄ 'यसा, N₂
V B1 3 4 D10 13 'नता, B₂ 'तपा (for महामुनि) —^c)
V1 Dt D₂ 8 9 G₂ M₁ निवामम् (for निवेशम्) D12 देशं,
M₂ तत्र (for देशे) V₂ विवेशा नगरोद्देशे —^d) M₂ विविक्त,
Ck t 'क्ते (as in text) S₁ D₂ 11 12 सलिलापृति, N₂ V1
B₂ 4 D₂ 10 13 सलिलापूते, V₂ 4 Dt D₂ 8-9 (before corr.
as in text) G1-3 M₁ 3 Ck t सलिलापृति B₁ विविक्तसलि
लेपुते, Cm g as in text (for ^d)

6 D14 damaged for मुनिश्रेष्ठ श्रुत्वा —^a) S₁ D₂ 3
5 7 11 13 मुनिं प्राप्त, N₂ V B D10 13 M₄ ऋषिं प्राप्त, Dt
D₂ 8 9 T₂ M₁ 3 Cm अनुप्राप्त, G₁ मुनिं (for मुनिश्रेष्ठ)
—^b) V₄ damaged T₂ दृष्ट्वा (for श्रुत्वा) V1 3 B1 M₄
[अ] जय, V₂ 4 D₂ G₂ M₁ तु, B₂ च (for स) N₂ V1-3 B
D10 13 मिथिलेश्वर, V₄ M₄ मिथिलापि (for नृपतिस्तदा)
S₁ D1-3 5 7 11 13 जनक सह मत्रिमि, Dt D₂ 8 श्रुत्वा
नृपवरस्तदा —^d) S₁ D1-3 5 7 11 13 M₄ पुरोधसम्, V₁ मुपु²
(hypermetric) (for पुरोहितम्) N₂ V B D10 13
अवस्यम्, Dt D₂ 8 अनिन्दित, G₂ M₂ 3 अरिन्दम (M₁ 'म),
M₄ उपागमम् (for अनिन्दितम्) —After 6, D₂ 8 12 S
(except M₄) Cg k (position uncertain) ins, while
Dt D₂ 8 ins after 7^{ab}

1033* प्रयुज्जगाम सहसा दिनयेन समन्वित ।

[M₂ सद्यो (for सत्ता) T₂ विमयेन (for दिनयेन)]

7 ^a) M₄ ऋत्विजश्च महात्मानम् (for ^a) D14
damaged partially for 7^b G₁ 3 द्वाप्येम्; G₂ M₁ 3 अय्येम्
(for त्वयेम्) D₂ T₂ G1-3 M₁ 3 सवरा S₁ D1-3 5 7 11 13
ऋत्विजश्च (D₂ * 'तस्तुत्यमर्षे (S₁ D₂ 7 'च्ये) मादाय धर्मयि
—For 7^{ab} N₂ V B D10 13 subst

विश्वामित्राय धर्मेण ददुर्मन्त्रपुरस्कृतम् ॥ ७
प्रतिगृह्य तु तां पूजां जनकस्य महात्मनः ।
पप्रच्छ कुशलं राज्ञो यज्ञस्य च निरामयम् ॥ ८
स तांश्चापि मुनीन्पृष्ट्वा सोपाध्यायपुरोधसः ।
यथान्यायं ततः सर्वैः समागच्छत्प्रहृष्टपत् ॥ ९

1034* ऋत्विमि सहितश्चान्यैरादायार्थं त्वरान्वित ।

[N₂ V₂ B1 3 D10 सहितै (B₂ 'ता) र, B₂ (m as above)
सहित (for सहितम्) V [अ] र्थ (for [अ] र्थ)]

—^a) N₂ V1 2 4 B D10 13 सम्कृत्य, Cm t as in text
(for धर्मेण) V₂ विश्वामित्र पुरस्कृत्य —^d) S₁ N₂ V B Dt
D1-3 5 7 10 13 Ct ददौ (for ददुर्) S₁ Dt D₂ 8 Ct धर्मः
Cg as in text (for मन्त्र)

8 ^a) N₂ V B1 3 4 D10 13 M₄ स, B₂ D14 T1 3 G₂ 4
M1 च, D₂ om (submetric) (for तु) —^b) N₂ V B
D10 13 जनकान्मुनिसत्तम (V₄ 'सा) —^d) Ct यज्ञस्य (as
in text) S₁ D₂ 5 11 12 राष्ट्रे (S₁ 'ष्ट्र) चा (S₁ D₂ वा) पि;
D₂ 7 राष्ट्रे राज्ये (for यज्ञस्य च)

9 ^a) D14 partially damaged G₄ ताव् (for ताश्च).
Dt D₂ 8 9 [अ] य (for [अ] पि). D₂ G1-3 M₁ 3 मुनि-
(for मुनीन्) D₂ T₂ G₂ M₄ दृष्ट्वा (for पृष्ट्वा) —^d) T₂
पुरषत्, Cg as in text (for पुरोधस) —^c) D₂ M₂
ऋषि, G₁ 3 मुनि, G₂ M₂ मुनिवै, M₂ ऋषीन्सर्वे (sic)
(for तत सर्वे) Dt D₂ 8 यदाहंमुनिमि सर्वे, D₂ T₂ यदा
(D₂ 'या) न्यायमृषीन्सर्वान् —^d) T₂ समागम्य; Cm as in
text (for समागच्छत्) T₂ समागच्छत् प्रहृष्टपत्, Ct as in
text (for ^d). —For 9 S₁ D1-3 5 7 11 13 subst

1035* ताश्चैव स मुनि सर्वानुपाध्यायपुरोधसः ।

समागच्छत्सोपाध्याय यथाविधि यथावय ।

[(1 x) D₂ [अ] पि (for [ए] ष) D₂ -पुरोधसं, D₂ 7
पुरोगमात् (for -पुरोधस) —D₂ om (hapl) from l 2
up to 11 —(1 2) S₁ D₂ 11 विष, D₁ -वर्ष, D₂ विषं
(for विधि) S₁ D₂ [अ] र्थेन, D₂ -वच, D13 -सप (for
-वय)]

—For 8^a-9, N₂ V B D10 13 M₄ (l 2-3 for 9 only)
subst

1036* पप्रच्छानामय चैव यज्ञमामृदयमेव च ।

तांश्चैवापु मुनीन्सर्वानागवात्सम् पुरोहित ।

यथान्यायं यथायोग्यं पर्यवृच्छद्नामयम् ।

[(1 x) V₄ [अ] पि (for [ए] ष) V₄ सामर्थ्य (for
-सामर्थ्यम्) —(1 2) V₂ तथैव (for तांश्च) M₄ ऋषीन्
(for मुनीन्) V₄ B₂ पुरोहितान्, M₄ पुरोगम् —(1 3)
V₂-4 B1 3 यथायोग्यं M₄ यथायोग्यं यथावय (for the prior
half)]

अथ राजा मुनिश्रेष्ठं कृताञ्जलिरभापत ।
 आसने भगवान्नास्तां सहैभिर्मुनिसत्तमैः ॥ १०
 जनस्य वचः श्रुत्वा निपसाद महाशुनिः ।
 पुरोधा ऋत्विजश्चैव राजा च सह मन्त्रिभिः ॥ ११
 आसनेषु यथान्यायमुपनिष्ठान्समन्ततः ।
 दृष्ट्वा स नृपतिस्तत्र विश्वामित्रमथार्जुनीत् ॥ १२
 अद्य यज्ञसमृद्धिर्मे सफला दैवतैः कृता ।
 अद्य यज्ञफलं प्राप्तं भगवद्दर्शनात्मया ॥ १३

धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽसि यस्य मे मुनिपुंगव ।
 यज्ञोपसदनं प्रब्रान्नाप्तोऽसि मुनिभिः सह ॥ १४
 द्वादशाहं तु ब्रह्मर्षे शेषमाहुर्मनीषिणः ।
 ततो भागार्थिनो देवान्द्रुपमर्हसि कौशिक ॥ १५
 इत्युक्त्वा मुनिशार्दूलं प्रहृष्टपदनस्तदा ।
 पुनस्तं परिप्रच्छ प्राञ्जलिः प्रयतो नृपः ॥ १६
 इमौ कुमारौ भद्रं ते देवतुल्यपराक्रमौ ।
 गजसिंहगती वीरौ शार्दूलवृषभोपमौ ॥ १७

10 Ds om 10 (cf v 9) —^a V₂ स च (for राजा) —M₄ om (hapl) from 10^a up to 1 3 of 1037^a —D₁₁ damaged from ^a up to हे in ^a. —^a N₂ V B D₁₀ (all with hiatus) 13 भगव (V₁ व damaged) नृकुते (B₄ *हृष्ट, D₁₃ *नृकुत्सम्) D₄ 13 G₁ 5 M₃ भगवन्नास्ता —^a Dt D₄ 8 8 14 T₁ 2 G₁ 4 मुनिपुंगवै S₁ N₂ V₂ 4 B (B₁ m also as in V₁) D₁ 2 5 7 10 11 13 उपवेष्टु (S₁ D₁ 2 5 7 11 भ्रम मोकु/मिहार्हसि (B₃ reads from मिहार्हसि in ^a up to उपवेष्टु in 1037^a in marg) V₁ उपवेष्टुमर्हसि D₁₃ सम मोकुमर्हसि (submetric)

11 Ds om 11 (cf v L 9) —^a S₁ D₁ 13 पुरोहितो द्विजाश्चैव, D₁ 2 7 11 पुरोहितं वज्र (D₂ *जै, D₁₁ *द्विजै) श्वैव (D₂ सर्वै), M₄ पुरोधसा ऋत्विजैश्च

12 ^a D₁₁ partially damaged S₁ D₁ 13 आसने तु (D₂ *) D₃ समागच्छद्, D₇ 11 M₃ *च C₆ as in text (for आसनेषु) D₂ यथायोग्यम् (for यथान्यायम्) —^a Dt D₄ 6 9 T₂ G M₁ 3 उप (M₃ *[lacuna]) विष्टा C₆ *छाम् (as in text) S₁ D₁ 13 उपविष्ट (D₂ *छा) यथाविधि, D₁ 3 7 11 उपविष्टं महाशुनिं (D₇ [before corr] *नि) —^a S₁ D₁ 2 5 11 12 नरपातम्, D₃ 7 नरवरत्, G₄ हुं (for स नृपतिस्) —^a Dt D₇ अभापत (for यथापसीत्) —For 11-12 N₂ V B D₁₀ 13 M₄ I 4 only for 12^a cf v 1 10) subst while D₁₁ ins 1 4 only after 12

1037^a ननद्वैयमुक्तोऽथ विश्वामित्रो महाशुनि ।
 निपसाद सतश्चैनं स राजा सह मन्त्रिभिः ।
 उपनिष्टेषु वेद कृताञ्जलिरभापत ।
 अमृतस्यैव सम्राटिरयं मे भगवन्मुने ।

[B₃ reads up to उपवेष्टु in 1 3 in marg (cf v 1 10) —(1 1) V₂ B₂ 4 उक्त्वद् B₄ महापरा —(1 2) B₂ मन्त्रिभिः सत् (by transp) —(1 3) B₃ उपवेष्टुम् V₂ जेतै (for जेतै) V₂ 3 [ए]न B₁ [ए]व (for [ए]र) —(1 4) V₂ B₄ M₄ [ए]व (for [ए]र) V₁ 3 संवृत्तिर V₂ सवीन्द्र (for सपतिर)]

13 ^a T₂ अथ (for अद्य) G₁ (after corr as in text) हि (for मे) D₁ 2 5 7 11 12 अद्याय (D₁ 2 11 *य मे) सफलौ यज्ञौ —^a C₆ k t सफला (as in text) S₁ सहर्षं, D₁ 2 5 11 13 महर्षेर्देवतै, D₃ 7 दर्शनाद्वता, G₁ 5 *देवता, G₂ सफलै (for सफला दैवतै) S₁ D₁ 2 5 7 11 13 कृत, G₁ 5 कृता, C₆ k t as in text (for कृता) —D₁₃ M₄ om (hapl) x3^a —^a N₂ V B D₁₀ कलावासिर् —^a S₁ D₁ 5 7 11 13 तव स, D₃ मुने त्वद् D₂ भगवन् (for भगवद्) N₂ V B D₁₀ मत्तान्या (V₁ 2 *द्या V₃ ममेहा) गमनश्च

14 ^a V₄ [अ]नुगृहीतश्च —^a B₁ यदि (for यस्य) S₁ Dt D₃ 5 7 11 12 14 M₄ मुनिपुंगव N₂ V B D₁₀ 13 M₄ त्वं महाशुने —^a S₁ D₁ 2 5 7 11 13 यज्ञानसान सम्राप्तो (D₁₁ यज्ञस्वावस्य प्राप्तो) द्रष्टुं मुनिवै सह

15 ^a C₆ g k t द्वादशाहं (as in text) S₁ D₁ 2 5 7 11 12 महर्षे द्वादशाहं तु (D₃ त्वम्) —^a D₃ एवम् (for शेषम्) T₂ महर्षिभिः C₆ g h as in text (for मनीषिण) Dt D₃ 8 दीक्षामाहुर्मनस्विन —For 14^a-15^a, N₂ V B D₁₀ 13 M₄ subst

1038^a यज्ञस्वावस्य पुण्य द्रष्टासि सपदानुग ।
 द्वादशाहं च शेष मे यज्ञस्याहुर्द्विजावय ।

[(1 1) V₄ [अ]नमर (for [अ]वश्य) V₄ द्रष्टासि M₄ द्रक्ष्यसे M₄ सपदानुग —(1 2) M₄ द्वाग्गादश्च V₄ द्वाग्गा*वनेनं च (for the prior half) M₄ मनीषिण (for द्विजावय) V₃ यज्ञस्यावय मन्त्रिण्यि (for the post half)]

—^a S₁ D₁ 2 5 7 11 12 यज्ञ M₄ damaged for स (for ततो) D₃ (after corr as in text) भोगार्थिनो —^a N₂ V₁ 2 B D₁₀ 13 इह द्रक्ष्यस्यापानात्; V₄ इह भक्ष्यस्यापानात् (sic) M₄ द्रष्टासि मुनिभिः सह

16 ^a G₃ सदा (for सदा) —M₃ reads 16^a inf lin sec m —^a D₁₃ त्व (for तै) D₃ प्रति (for परित) —For subst see below

17 —I 47 2 —^a Dt D₄ 9 नृप्य (for गिह) T₂ नानिर् (sic) M₃ नानै (for नानै) —^a D₃ वृषभान्वितौ

पद्मपत्रविशालाक्षौ खड्गवृणीधनुर्धरौ ।
अश्विनामित्र रूपेण समुपस्थितयौवनौ ॥ १८
यदच्छयैव गां प्राप्नौ देवलोकादिवामरौ ।
कथं पद्म्यामिह प्राप्तौ किमर्थं कस्य वा मुने ॥ १९
वरायुधधरौ वीरौ कस्य पुत्रौ महामुने ।
भूययन्तामिमं देशं चन्द्रसूर्याभिगाम्बरम् ॥ २०

18 = I 47 3 —Dt Ds s om 18^{ab} —^a) Śi D1-3
s 7 11 12 कस्येमौ (D1: 12 'तौ') देववर्णिनौ (D11 'वर्णिनौ')

19 = I 47 4 —Śi reads 19^{ab} in marg (cf v 1
1041*) —^a) Śi Dt D4 s s G2 M1 s [इ]व, Ds [इ]ह
(for [ए]व) D4 14 T2 s सप्राप्तौ, M1 गा° (for गा
प्राप्तौ) —^b) G2 [अ]मर (for [अ]मरौ) —After 19^{ab},
G1 s M1 s (after 19 inf lin sec m) ins, while G2
M1 ins 1 5 only after 1040*

1039* पुण्डरीकविशालाक्षौ वरायुधधरावुभौ ।
बद्धगोधाहुरिप्राणौ खड्गवन्तौ महायुनी ।
काकपक्षधरौ वीरौ कुमारानि पावनी ।
रूपौदार्यगुणै पुता दष्टिचित्तापहारिणौ ।
प्रकाश्य बलमसाक मायुद्धतुमिहामनौ । [5]
[(1 4) G1 -[अ]वहारिणौ]

—^a) M1 (after corr sup lin sec m वा as in text
before corr) च T2 कस्यवा (sic) (for कस्य वा)

20 Śi reads 20 in marg (cf v 1 1041*) G1 s
om (hapl) 20^{ab} M1 reads 20^{ab} (sec m) in marg
G4 om (hapl) 20^a—21° T2 G2 M1 transp 20^{ab} and
20^{cd} —^a) Śi सूर्ययताम् —^b) Śi सूर्यचन्द्रार् (by
transp)

21 G4 om 21^{ab} (cf v 1 20) —^b) T2 G1 रूपेण
(for प्रमाण) —After 21^{ab}, G2 M1 ins

1040* किमर्थं च नरद्वेष्टौ संग्राहौ दुर्गमे पथि ।

—Thereafter cont 1 5 of 1039*

—^a) G1 s कस्य पुत्रौ मुनिधेष्ट —For 16-21, N2 s V B
D10 11 (om 1 6 and reads 18^{cd} as in text) 13 M4
sulst while Śi D1-3 s 7 11 subst 1 3-5 and 7-8 for
17-18^{ab} and 19-21 (Śi for 19^{cd} and 21^{cd} only)
respy

1041* उच्यतानिह मन्थ्रीन्मा महिमिन्द्ररादिभि ।
पुमान्वाहति सुमुखं ततो वात्यथ मन्थरा ।
एतौ च मुनिराहून् कुमारानि पावनी ।
बाह्वपक्षधरौ बस्य विपद्यं चायुधधरावौ ।
व्यसोरहरो महाबाहू खड्गवृणीधनुर्धरौ ।
अभिज्ञौ सतनौ रूपे कर्यापिदियद्वीरौ ।
विमथं मुहुमात्रावप्यनं सप्रितावुभौ ।
बालायेवत्यदात्रौ धेनुं कौतुहले मन । [5]

परस्परस्य सदृशौ प्रमाणेक्षितचेष्टितैः ।
काकपक्षधरौ वीरौ श्रोतुमिच्छामि तत्ततः ॥ २१
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा जनकस्य महात्मनः ।
न्यवेदयन्महात्मानौ पुत्रौ दशरथस्य तौ ॥ २२
सिद्धाश्रमनिवासं च राक्षसानां वधं तथा ।
तच्चागमनमव्यग्रं विशालायाश्च दर्शनम् ॥ २३

[(1 1) D1 s M4 प्रीत्यै (for प्रीत्या) V2 तिष्ठनामिह तत्प्रीत्या,
D11 उपर्या सत्कलो भवत्या (for the prior half). M4 [ए]तेर
(for [ए]भिर) V1 damaged for ऋद्ध —(1 2) N2 s B1
स्वद्वय, V4 D10 सुमुख, B2 सुमुख D11 वात्यसि (for वात्यथ)
D11 सत्कल. —(1 3) Śi D1 s 7 11 12 M4 इमौ (for एतौ)
M4 कौ (for च) D2 नर (for मुनि) V2-3 पावनी —(1
4) B2 पुच्छधरौ Śi D1-3 s 7 11 12 बीरौ (for कस्य) V1
damaged V4 चालु°, B2 बाभु°, D1 s M4 चापु° (for
चाभ्युगमनौ) Śi D1-3 s 7 11 12 कस्येमौ (D11 'तौ') मुनिपुत्र
(D2 11 'द्वौ') (for the post half) —(1 5) B1 दीर्घमुनौ
(for महाबाहू) M4 नृणी —After 1 5, Śi D1-3 s 7 11 12
read 18^{cd} as in text and om 1 6 —(1 6) V1 B4
D10 M4 अधिनौ, V3 अनयो, B1 अभियो (sic) (for अधिनौ).
V2 सद्यो रूपे, M4 रूपसदृशौ (for सद्यो रूपे) V2 [ए]मौ, D1 s
[ए]नौ (for [अ]ति) V1 दक्षिणौ —(1 7) B4 क्रितोरी
(for किमर्थं) Śi D1-3 s 7 11 12 च मुनिधेष्ट (for मुहुमात्राव)
D1 s अण्य (for अजाय) N2 B2 D10 संज्ञावुभौ, M4 वे
समागता (for सतिनावुभौ) Śi D1-3 s 7 11 12 प्रपथौ दुर्गमापथ
(D1 °युत and gloss दुर्गमानि स्थानानि) (for the post
half) —After 1 7 Śi reads 19^{ab} 20-21^{ab} in marg
—(1 8) B1 (m also originally बाण°) 4 देवानि
Śi D1-3 s 7 11 12 अव (D2 इव, D11 विर)दिनी मद्गार, M4 एव
मदोजन (for एवान्महाबाहू) Śi D1-3 s 7 11 12 इच्छाम्य (D2 12
°मि [sic])मद्य, M4 °हि मे (for कौतुहल मन)]

22 °) N2 s V B D10 तस्यैवद्, D11 स तस्यै (for तस्य
तद्) —^a) Śi D1 s 7 11 12 महामुनि T2 विधामिप्रोम्य
भायन —^b) D2 s निवेदयद् M2 4 बसेयामा (for महा
त्मानौ) Dt D2 s Ctp निवेदयद्बसेयामा —^c) N2 s V2-4
B D10 11 12 मुनी (for पुत्री)

23 D2 7 om 23° reading 23° in its place Śi N2
V B D1 s 10-12 M4 transp 23° and 23° —^a) V2
D1 s नियामर M4 निदाश्रमदात्मानं —^b) Śi V4 B1 2 6
D1-3 s 11-12 च तं वधः N2 s V1 s B2 D10 च तद्दध, G1
(also as in text) °तद्, G2 वधत्; M4 °च तं (for वधं
तथा) —After 23^{ab}, D2 wrongly repeats 22-23^{ab}
—^c) Śi B2 D1 11 12 तथा, B1 वध, Dt D1-3 s 6-9 Ct तद्यः
D1 s G2 M1 तद्ग Cm as in text (for तद्य) Śi D1 12
बाभुर्ग V1 अण्यद् D11 अजर; Cm g as in text (for
अण्यद्) M4 एवचागमनमव्यग्रं —D2 7 om 23° —^d) Śi

अहल्यादर्शनं चैव गौतमेन समागमम् ।
महाधनुषि जिज्ञासां कर्तुमागमनं तथा ॥ २४

एतत्सर्गं महातेजा जनकाय महात्मने ।
निवेद्य विररामाय निश्चामित्रो महायुनिः ॥ २५

इति श्रीरामायणे बालकाण्डे एकोनपञ्चाशः सर्गः ॥ ४९ ॥

Ñs V B D1 s 5 10-12 M6 वि (V1 s B1 M6 वै) शालरय (for
विशालायाय) D12 स (sic) (for च)

24 ⁸) G4 गौतमे तु (for गौतमेन) —^d) G2.3 M1
आरोपणं, M6 चा°, Ct as in text (for आगमनं) T3 तदा
(for तथा) —For 24, Ś1 D1-3 5 7 11 (1 2 only for
24^{ad}) 12 subst

1042* गौतमाश्रमकार्यं च गौतमस्य च दर्शनम् ।
महाधनुषि जिज्ञासां कार्यं वैषा महात्मनः ।

[D1 s om (hapl) 1 x —(1 x) D12 गौतमस्य
(through eye wandering for गौतमा) —D3 om 1 2
—(1 2) D1 2 7 कार्यं वैत महात्मने, D11 कवेष्वा च महापशा
(for the post half)]

while Ñs V B D10 11 (1 x only for 24^{ad}) 12 subst

1043* गौतमस्य च शापान्तमहल्यायाश्च दर्शनम् ।
रामस्य धनुषश्चैव जिज्ञासाधनुषायामम् ।

[D1 om (hapl) 1 x —(1 x) B3 transp the
two halves V1 B1 s गौतमस्य 2s B3 D10 [अ]पि (for
first च) D11 (with hiatus) शापश्च (for शापान्तम्).

D10 अहल्यायाय —(1 2) V6 रामश्च V1 s उपगमत् (V3 °न्),
B2-4 (B3 m also) उपगत]

25 ^a) Ñs V B D10 12 इति, Ck as in text (for
एतत्) D6 सर्वे, Ck as in text (for सर्वे) —^b) V2
न्यवेदयत्, B3 (m also as in text) युने (for महामने)
Ś1 D1-3 5 7 11 12 कौशिको जनकाय वै —^c) Ś1 D2 3 5 7 12
विररामाय, V3 धीर रामाय (sic) Ctp विरराम तदा (hyper-
metric) (for विररामाय) —^d) D11 महातया —After
25 Ś1 D1-3 5 7 11 12 12s

1044* सुनिमये स्थितं प्राज्ञो वसुनामिव पावकः ।

[D1-3 7 11 वणे (for प्राज्ञो)]

Colophon D1-3 5 7 11 12 om (cont the Sarga)
—Kanda name Ś1 Ñs V1 D4 om V2-4 B D10 आदि°
—After Kanda name B4 12s बालचरिते —Sarga
name Ñs V B D10 जनकदर्शनं (B1 कस्तमागम, D1
°सवाद्दे) —Sarga no (figures, words or both) V1 4
B1 4 om Ś1 (m) V3 Dt D4 5 8, 12 T G M1-3 50 Ñs
B3 s D10 51, V2 D3 53 D12 ह्यार्यै-यणे-कादे-
दर्शनसर्गं 51 —After colophon, G1 2 4 M2 conclude
with श्रीरामाय नमः, G2 श्रीमते रामायुजाय नमः

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रस्य धीमतः ।
 हृष्टरोमा महातेजाः शतानन्दो महातपाः ॥ १
 गौतमस्य सुतो ज्येष्ठस्तपसा द्योतितग्रभः ।
 रामसंदर्शनादेव परं विस्मयमागतः ॥ २
 स तौ निषण्णौ संप्रेक्ष्य सुखासीनौ नृपात्मजौ ।
 शतानन्दो मुनिश्रेष्ठं विश्वामित्रमथाब्रवीत् ॥ ३
 अपि ते मुनिशार्दूल मम माता यशस्विनी ।
 दर्शिता राजपुत्राय तपो दीर्घमुपागता ॥ ४

अपि रामे महातेजो मम माता यशस्विनी ।
 वन्यैरुपाहरत्पूजां पूजाहं सर्वदेहिनाम् ॥ ५
 अपि रामाय कथितं यथावृत्तं पुरातनम् ।
 मम मातुर्महातेजो देवेन दुरनुष्ठितम् ॥ ६
 अपि कौशिक भद्रं ते गुरुणा मम संगता ।
 माता मम मुनिश्रेष्ठ रामसंदर्शनादितः ॥ ७
 अपि मे गुरुणा रामः पूजितः कुशिकात्मज ।
 इहागतो महातेजाः पूजां प्राप्य महात्मनः ॥ ८